सचित्र श्री भगवती सूत्र

भाग-२

प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि



ILLUSTRATED SHRI BHAGWATI SUTRA

PART-2

Pravartak Shri Amar Muni

पंचम गणधर भगवत् सुधर्मा-स्वामी प्रणीत पंचम अंग

सचित्र
श्री भगवती सूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति)
(द्वितीय खण्ड)

मूल पाठ, हिन्दी अंग्रेजी भावानुवाद, विवेचन तथा रंगीन चित्रों सहित

❖ प्रधान सम्पादक ❖

जैनधर्म दिवाकर अध्यात्म युगपुरुष

प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी महाराज

❖ सह-सम्पादक ❖

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

पद्म प्रकाशन

पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म. सा. द्वारा सम्प्रेरित सचित्र आगममाला का उन्नीसवाँ पुष्प

- [illegible]
  [द्वितीय खण्ड]

- [illegible]
  जैनधर्म दिवाकर अध्यात्म युगपुरुष
  प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज

- [illegible]
  श्रीचन्द सुराना 'सरस'

- [illegible]
  सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

- [illegible]
  वि स २०६३, चैत्र
  ईस्वी सन् २००६, अप्रैल

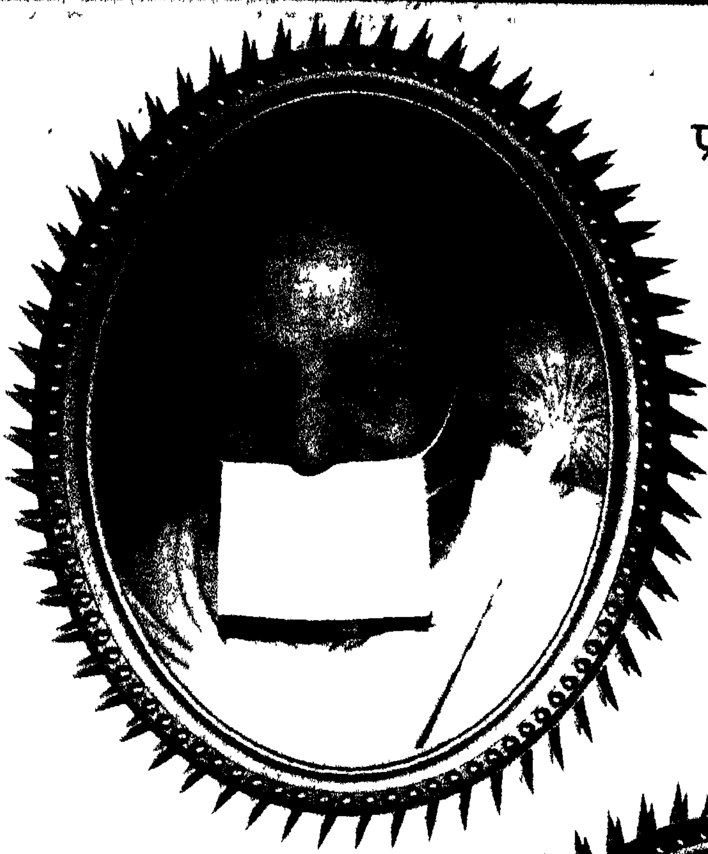
- [illegible]
  डॉ त्रिलोक शर्मा

- [illegible]
  [illegible]
  पद्म धाम, नरेला मण्डी दिल्ली- ११० ०४०

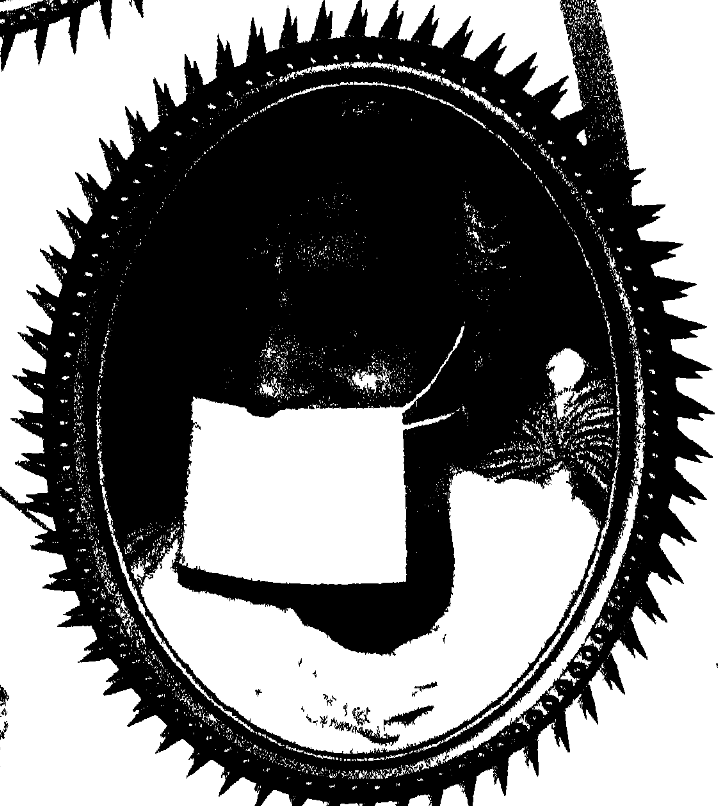
- [illegible]
  [illegible]
  [illegible]
  ए-७ अवागढ हाउस एम जी रोड, आगरा-२८२ ००२
  दूरभाष (०५६२) २८५११६५

- *मूल्य*
  छह सौ रुपया मात्र (६००/- रुपये)

Website /http/jainvision com
eMail padamprakashan@gmail com

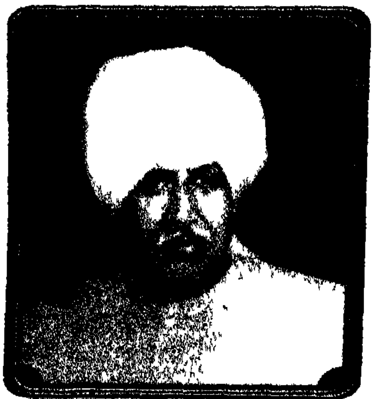


राष्ट्रसन्त, उत्तर भारतीय
प्रवर्त्तक अनन्त उपकारी
पूज्य गुरुदेव
भण्डारी
श्री पद्मचन्द्र जी
महाराज
की
पुण्य स्मृति में
सादर सविनय भेंट

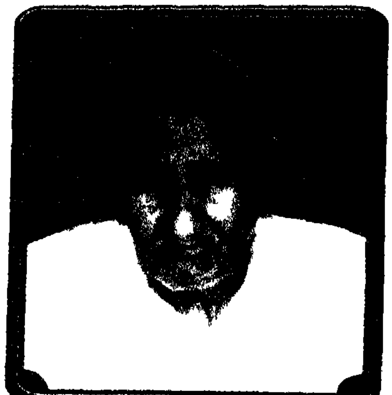


अमर मुनि
(प्रवर्त्तक)

श्रुत सेवा में सहयोग दाता



ला. किशोरचन्द जी जैन
मानसा



ला पन्नालाल जी जैन
मानसा



ला फकीरचन्द जी जैन
मानसा



डॉ. श्री के. आर. सिंगला
मानसा



श्री अरविंद सिंगला
मानसा

श्रुत सेवा में सहयोग दाता



श्रीमती सुमित्रा देवी जैन
सोनीपत



ला. शामलालजी जैन
शास्त्री नगर, दिल्ली



श्री अभयकुमार जी रेणु जैन
दिल्ली



श्री ज्ञातनंदनजी अंगूरीदेवी जैन
रोहिणी, दिल्ली



श्री कृष्ण लालजी रामप्यारी मित्तल
पद्मपुर

श्रुत सेवा में सहयोग दाता



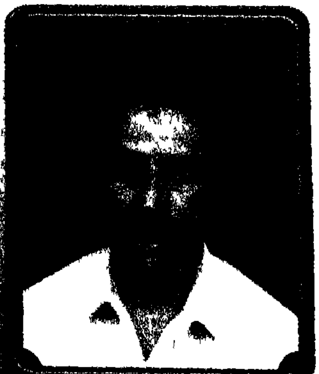
ला श्री कबूलचन्द जी जैन
पद्मपुर



ला श्री बाबूराम जैन
(पूर्व प्रधान जैन सभा) गिदड़बाहा



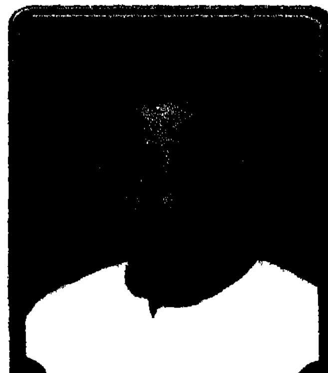
डॉ श्री मौजीराम जी जैन श्रीमती पुष्पा जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली



श्री बाबर जैन (भट्टे वाले)
मानसा



श्री राजपाल जैन
सोनीपत



श्री दिवानचद जैन
दीपक मैडीकोज, गिदड़बाहा

THE FIFTH ANGA WRITTEN BY THE FIFTH GANADHAR SHRI SUDHARMA SWAMI

ILLUSTRATED

SHRI BHAGAVATI SUTRA (VYAKHYA PRAJNAPTI)

(SECOND VOLUME)

Original Text with Hindi and English Translations, Elaboration and Multicoloured Illustrations

❖ EDITOR IN-CHIEF ❖

Jain Dharma Diwakar Adhyatma Yugapurush

Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj

❖ ASSOCIATE-EDITOR ❖

Srichand Surana 'Saras'

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

THE NINETEENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES INSPIRED BY UTTAR BHARATIYA PRAVARTAK GURUDEV BHANDARI SHRI PADMACHANDRA JI M S

- ILLUSTRATED SHRI BHAGAWATI SUTRA (VYAKHYA PRAJNAPTI)
  [Second Volume]

- *Editor-in-Chief*
  Jain Dharma Diwakar Adhyatma Yugapurush
  Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj

- *Associate Editor*
  Srichand Surana 'Saras'

- *English Translator*
  Surendra Bothara, Jaipur

- *First Edition*
  Chetra, 2063 V
  April, 2006 A D

- *Illustrator*
  Dr Trilok Sharma

- *Publisher and Distributor*
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- *Printers & Distributor*
  Sanjay Surana
  Shree Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M G Road, Agra-282 002
  Phone (0562) 2851165

- *Price*
  Six Hundred Rupees only (Rs 600/-)

Website /http/jainvision com
eMail padamprakashan@gmail com

प्रकाशकीय

सन् १९९२ मे हमने सर्वप्रथम श्री उत्तराध्ययनसूत्र का सचित्र हिन्दी-अग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशन किया था। तब हमारा यह प्रथम प्रयास, एक नया प्रयोग था। क्योकि इसके पहले इस आगम का अग्रेजी अनुवाद तो प्रकाशित हो चुका था, परन्तु उसके विषयो को स्पष्ट करने वाले भावपूर्ण चित्रो सहित ३२ आगमो मे से किसी भी आगम का प्रकाशन नही हुआ था। हमारा यह प्रयोग शत-प्रतिशत सफल रहा। जिनवाणी के श्रद्धालु पाठको ने उसका भरपूर स्वागत किया और इसकी माँग आने लगी। प्रोत्साहित होकर उ भा प्रवर्त्तक स्वर्गीय गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म सा ने अपने विद्वान् शिष्य श्री अमर मुनि जी म को आज्ञा प्रदान की कि आगमो का अग्रेजी अनुवाद तथा चित्रो सहित प्रकाशन कार्य आप प्रारम्भ करो। अग्रेजी भाषी जनता मे आज भी ज्ञान-पिपासा अधिक है। विदेशी विद्वान् जैनधर्म की मान्यताओ को बडी गम्भीरतापूर्वक पढते है और उनसे अनेक नये-नये सत्य-तथ्य उद्घाटित करने का प्रयास करते है।

अपने पूज्य गुरुदेव का मगल आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन प्राप्त कर हमारे श्रद्धेय श्री अमर मुनि जी म ने गुरुदेव की भावनाओं को मूर्त्त रूप देने का दृढ सकल्प किया। इस कार्य मे अनेक विकल्प व बाधाएँ भी आई, परन्तु दृढ सकल्प सभी विकल्पो की दीवारे तोडता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढता ही चला गया। आज निरन्तर १४ वर्षों के प्रयास मे हमने १९ आगमो का सचित्र अग्रेजी भाषान्तर के साथ प्रकाशन किया है और सर्वत्र इस अभिनव कार्य की प्रशसा हो रही है। शास्त्र नाम से डरने वाले भी अब शास्त्रो को पढने लगे है। अपने घरो की लाइब्रेरी मे इसका सग्रह करने लगे है। आज 'आगम' के प्रति जिज्ञासा और जन श्रद्धा बढ रही है।

आगम प्रकाशन का यह ऐतिहासिक कार्य अब अपने लक्ष्य के निकट पहुँच रहा है। हमे दृढ विश्वास है कि हम इसी गति से प्रगति करते हुए शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगे।

गत वर्ष श्री भगवती सूत्र का प्रथम भाग (शतक १ से ४) तक प्रकाशित हुआ था। इस द्वितीय भाग मे शतक ५, ६, ७ तथा आठवे शतक के प्रथम उद्देशक तक लिए गये है। आगे की सामग्री तीसरे से छठे भाग तक मे सम्पन्न होने की आशा है।

इस आगम के अनुवाद आदि कार्यों मे गुरुदेव के अन्तेवासी शिष्य श्री वरुण मुनि जी पूरी निष्ठा के साथ जुडे है। साथ ही आगम साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा अग्रेजी अनुवाद करने वाले श्री सुरेन्द्र कुमार जी बोथरा भी पूर्ण मनोयोगपूर्वक जुटे है। आगममाला का यह १९वाँ पुष्प पाठको के हाथो मे प्रस्तुत करते हुए हमे प्रसन्नता है।

इसके प्रकाशन मे अनेक उदारमना गुरुभक्त सुश्रावको ने सदा की भाँति अपने श्रद्धा पुष्प समर्पित कर जिनवाणी के प्रति अपना आध्यात्मिक अनुराग तथा गुरु-भक्ति का प्रदर्शन किया है। हम उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते है।

महेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
पद्म प्रकाशन

PUBLISHER'S NOTE

In the year 1992 we first of all published *Shri Uttaradhyayan Sutra* with Hindi and English translations At that time it was our first effort and a new experiment This is because till then only simple English translations had been published Not a single out of the 32 *Agams* was published alongwith multi-coloured illustrations vividly explaining the discussed topics Our experiment has been absolutely successful It received heartiest welcome from the readers of the Word of the Jina and the demand increased Encouraged by this, late Gurudev Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji M accorded permission to his able and scholarly disciple Shri Amar Muni ji M to launch the project of publication of *Agams* with English translation and illustrations The English readers have a greater thirst for ancient wisdom Even foreign scholars study Jain beliefs with great interest and seriousness They also endeavour to explore new interpretations in order to reveal hitherto unknown facts

With the pious blessings and encouragement from his revered Guru Dev, revered Shri Amar Muni ji M resolved to translate the ideas of Guru Dev into action There were many problems and hurdles on this path but the resolve never diminished and, shattering all hurdles, the work progressed as planned With unrelenting efforts of 14 years we have till date published 19 *Agams* with English translation and illustrations This path-breaking work is being praised and commended all around Those who were afraid to mention even the name of scriptures, not only have started reading them but also collecting them in their personal libraries The reverence and curiosity for *Agams* is on the increase among masses

This historical project of Agam publication is nearer its goal now We are confident that progressing with the same zeal and speed we will soon reach our goal

Last year we had published the first volume of *Shri Bhagavati Sutra* (Shatak 1 to 4) This second volume contains Shatak 5, 6, 7 complete and one Uddeshak of Shatak 8 Remaining portion of this voluminous Agam is expected to be completed in four more volumes (3 to 6)

Pujya Gurudev's able disciple Shri Varun Muni shares the responsibility of editing the *Agams* with all sincerity and devotion We are getting sincere assistance of contributing scholars and experts of *Agam* literature like Shri Shrichand ji Surana 'Saras', who has been responsible for Prakrit and Hindi portion and Shri Surendra Kumar ji Bothara, who has been responsible for English portion We are pleased to place this 19th number of *Illustrated Agam* series in the hands of our readers

Many generous and devout guru-devotees from different areas have displayed their devotion for the Guru and scriptures through their generous contributions We express our sincere gratitude for them all

—Mahendra Kumar Jain
PRESIDENT
Padma Prakashan

प्राग्वक्तव्य

जैन आगमो की स्वर्ण–मजूषा का अमूल्य रत्न है **श्री भगवती सूत्र**। यह आकार की दृष्टि से सबसे बडा आगम है। साथ ही विषयो की विविधता और रोचकता मे भी यह सबसे विशाल ज्ञान का सागर है। ज्ञान विज्ञान की विविध शाखाओ का जितना सुन्दर तथा समुचित वर्णन इस आगम मे है, वह सबसे महत्त्वपूर्ण है।

भगवती सूत्र के सम्बन्ध मे प्रथम भाग की प्रस्तावना मे मैने विस्तारपूर्वक लिखा है। अत यहाँ उसकी पुनरुक्ति करने की आवश्यकता नही है।

प्रस्तुत भाग मे हमने पचम शतक से आठवे शतक के प्रथम उद्देशक तक लिए है।

पाँचवे शतक के प्रारम्भ मे ही सूर्य के उदय, अस्त, भ्रमण आदि की चर्चा है। आधुनिक विज्ञान की मान्यता के अनुसार यह विषय विवादास्पद हो सकता है, किन्तु भारतीय ज्योतिषशास्त्र और धर्मशास्त्र सभी सूर्य को अन्तरिक्ष मे परिभ्रमण करते हुए मानते है और उनके गणित के अनुसार भी सूर्य का उदय–अस्त, ग्रहण आदि सब घटनाएँ बराबर यथासमय घटित हो रही है। इस कारण यह नही कहा जा सकता, कि वे मान्यताएँ गलत है। फिर भी इस विषय मे विवादास्पद चर्चा छोडकर हमने आगमिक मान्यता प्रस्तुत की है। इस शतक के अन्य अनेक विषय भी तत्त्वज्ञान, जीवविज्ञान, शब्द की शक्ति आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। सातवे उद्देशक मे परमाणु तथा स्कन्ध की चर्चा वर्तमान के परमाणु–विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त मौलिक तथा ज्ञानवर्धक है। २५०० वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने अपने प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर जिस परमाणु सम्बन्धी तत्त्वदर्शन का कथन किया था, वह आज के परिप्रेक्ष्य मे अनेक ज्ञानवर्धक रोचक तथ्य प्रस्तुत करता है जो आधुनिक विज्ञान के समृद्ध कर सकते है।

छठा शतक तत्त्वज्ञान और कर्मविज्ञान की दृष्टि से विशेष पठनीय है। महावेदना, महानिर्जरा का प्रकरण आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष मार्गदर्शक है। वेदना और कष्ट के समय यदि समभाव, तितिक्षा धारण की जाती है तो तीव्र वेदना की पीडानुभूति भी उतनी कष्टदायी नही होती और कर्मनिर्जरा की दृष्टि से वह विशेष लाभप्रद सिद्ध होती है। समता का यह दर्शन जीवन मे आने वाले कष्टो की पीडानुभूति कम करके सहन करने की शक्ति जगाता है। स्वाध्याय के समय यह उद्देशक और तितिक्षा विशेष रूप से मनन करने योग्य है।

छठे शतक के पचम उद्देशक मे तमस्काय का वर्णन आज के विज्ञान द्वारा खोजे गये ब्लैक होल के साथ तुलना करने पर अनेक बातो की आश्चर्यजनक समानता प्रतीत होती है। तमस्काय का यह वर्णन प्राचीन भारतीय ग्रन्थो मे एकमात्र जैन आगमो मे ही उपलब्ध होता है। ब्लैक होल के वर्णन के साथ इसकी तुलना, इस वर्णन की यथार्थता पर प्रकाश डालती है।

सातवे शतक मे भी अनेक व्यावहारिक विषयो का बडा विशद वर्णन है। श्रमणो को आहारदान का लाभ, प्रत्याख्यान आदि मे ज्ञान व अन्तर विवेक की प्रधानता, साता वेदनीय–असाता वेदनीय कर्मबध

के कारण आदि विषय जीवन–दृष्टि को और जीवन–व्यवहार को उदात्त व निर्मल सवेदना–प्रधान करुणाशील बनाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

आठवे शतक के प्रथम उद्देशक मे पुद्गल के तीन प्रकार, उनका परिणमन आदि की चर्चा आध्यात्मिक दृष्टि मे वैज्ञानिक दृष्टि का सपुट लिए हुए है।

अपने पाठको को एक बात विशेष रूप मे कहना चाहता हूँ कि आगमो को एकमात्र जिनवाणी के प्रति श्रद्धा की दृष्टि से न पढे, परन्तु श्रद्धा के साथ ज्ञान–पिपासा व जीवन- शोधन की दृष्टि भी रखे, तो स्वाध्याय का विशेष लाभ होगा।

सूत्र पाठ के भाषानुवाद के साथ जहॉ–जहाँ आवश्यकता हुई, वहाँ सक्षिप्त विवेचन भी हमने किया है। चूँकि बहुत से विषय बिना विवेचन किये पाठको को समझ पाना बहुत कठिन होता। आगमकार ने अनेक स्थानो पर प्रज्ञापनासूत्र का सन्दर्भ देखने की सूचना देकर विषय को बहुत ही सक्षिप्त किया है। हमने प्रज्ञापनासूत्र का वह अश सार रूप मे यहॉ प्रस्तुत कर दिया है, ताकि पाठक को प्रज्ञापनासूत्र देखे बिना ही पूरा विषय समझने मे सुविधा रहेगी।

इसके विवेचन मे मेरे द्वारा पूर्व मे किये गये भगवती सूत्र के विवेचन का काफी अश लिया है, साथ ही पण्डित घेवरचन्द जी शास्त्री का हिन्दी विवेचन भी बहुत उपयोगी बना है। आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा किया गया विवेचन भी हमने सामने रखकर यथावश्यक उसका उपयोग किया है। अत उक्त सम्पादको तथा प्रकाशको के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन हमारा कर्त्तव्य होता है।

इस आगम का अनुवाद कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् एक पृथक् भाग मे पारिभाषिक शब्द–कोश परिशिष्ट रूप मे प्रस्तुत करने का भी हम प्रयत्न कर रहे है।

इसके सम्पादन मे सदा की तरह मेरे शिष्य श्री वरुण मुनि, श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा श्री सुरेन्द्र जी बोथरा ने पूर्ण सहयोग दिया है। इसी प्रकार प्रकाशन मे भी जिन गुरुभक्तो ने अर्थ–सहयोग प्रदान किया है, उन सबके प्रति मै हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मेरे परम श्रद्धेय गुरुदेव उ भा प्रवर्त्तक, राष्ट्रसन्त भण्डारी श्री पदमचन्द्र जी म का आशीर्वाद पद-पद पर मेरा सम्बल रहा है। मै उन परम उपकारी गुरुदेव के प्रति विनयावनत् हूँ।

आशा और विश्वास है अग्रेजी अनुवाद के साथ सचित्र भगवती सूत्र अनेक दृष्टियो से नवीनता लिए सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

जैन स्थानक,
मानसा

—प्रवर्त्तक अमर मुनि
(प्रवर्त्तक)

PREFACE

Shri Bhagavati Sutra is the most precious gem in the golden casket of Jain *Agams* It is the most voluminous among the available *Agams* With its great variety of subjects and interesting narration, it is the largest ocean of knowledge The complete and vivid discussions of various branches of general and specialized knowledge available in this *Agam* enhances its value and importance

I have already written in details about *Bhagavati Sutra* in the preface to the first Volume, therefore, there is no need to repeat it here

This volume starts with fifth *Shatak* and ends at the first *Uddeshak* of the eighth *Shatak*

The fifth *Shatak* starts with the discussion about sunrise, sunset and the movement of the sun This is one of the disputed topics according to modern science But Indian astrology and religions accept the movement of the sun in the space All events including sunset, sunrise, and eclipse occur exactly as predicted by calculations on this basis Thus these beliefs cannot just be discarded as false However, we have avoided any discussion on the disputes and presented the beliefs as mentioned in *Agams* Many other topics in this *Shatak* are valuable in context of the contained original ideas and information on metaphysics, biology and acoustics The edifying discussion on ultimate particles and their clusters provides new and important information related to modern particle physics The information Bhagavan Mahavir revealed about ultimate particles with the help of his direct perception reveals interesting facts that may enrich the world of science

The sixth *Shatak* is specially important for ontological discussions and for the *karma* theory The topic of extensive suffering and extensive shedding of *karmas* is inspiring and revealing from the spiritual viewpoint If tolerance and equanimity is attained while suffering pain and affliction, even extreme agony becomes tolerable and highly rewarding in terms of shedding of *karmas* This philosophy of equanimity reduces the intensity of suffering torments and enhances the capacity to tolerate While indulging in self study this chapter and the subject of tolerance dealt in it call for special attention

The description of *Tamaskaaya* in the first *Uddeshak* of the sixth *Shatak* has surprising similarities with the black hole described in modern astronomy In the ancient Indian literature this description of *Tamaskaaya* is unique to Jain scriptures Comparison with black holes adds to the genuineness of this description

The seventh *Shatak* also contains detailed discussions on numerous practical themes Benefits of offering food to ascetics, importance of knowledge and sagacity in the act of renouncing, causes of bondage of pleasure and pain giving *karmas* and other such topics inspire one to acquire a generous, sensitive and compassionate view and way of life

Three types of matter particles and their transformations are included in the discussions narrated in the first *Uddeshak* of the eighth *Shatak* They add scientific angle to the spiritual inquiries

I would like to convey an important message to the readers–Do not just read *Agams* simply because you have faith and belief in the Word of the Jina Your study would be highly beneficial if you have the thirst for knowledge and the desire to cleanse your life

With the literal translation of the original text we have added brief elaboration wherever needed This is with the view that many topics are hard to understand for common readers The author of the *Agam* has referred to *Prajnapana Sutra* for the sake of brevity We have included the gist of those references from *Prajnapana Sutra* This would facilitate the reader to understand the subject without turning pages of *Prajnapana Sutra*

Large portions from my earlier commentary on *Bhagavati Sutra* have been taken in elaborations of this edition The Hindi commentary by Pandit Ghevar Chand Shastri was also found to be very useful Wherever needed, we have also referred to and used the detailed commentary by Acharya Mahaprajna It is my duty to express gratitude for editors and publishers of the said works

We are also trying to include a glossary of important technical terms as appendix in an additional volume after the main volumes are done

As always, scholarly editors like Shri Shrichand Surana 'Saras', Shri Surendra Bothara have extended their fullest co-operation Like before, many generous devotees have extended financial contributions to this pious project They all deserve thanks and commendations

The blessings of my revered teacher Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji M S have provided me support at every step I bow with all humbleness at my command to that great benefactor

I hope that with English translation and a variety of new approaches, this volume of *Illustrated Bhagavati Sutra* will prove to be useful for all

Jain Sthanak,
Mansa

—Pravartak Amar Muni
(Pravartak)

अनुक्रमणिका

CONTENTS

ॐ नमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

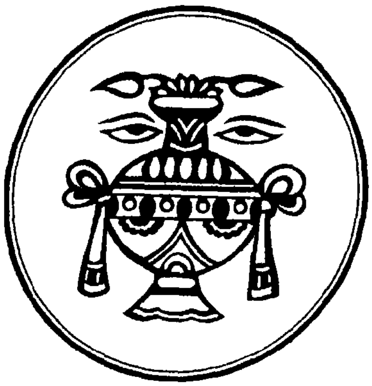
Om Namo Samanassa Bhagavao Mahavirassa

श्री भगवती सूत्र (२)

(श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र)

SHRI BHAGAVATI SUTRA (2)

(SHRI VYAKHYAPRAJNAPTI SUTRA)



पंचम शतक : प्रथम उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : FIRST LESSON

रवि RAVI (THE SUN)

❑ व्याख्याप्रज्ञप्ति-भगवती सूत्र का यह पचम शतक है। इस शतक मे सूर्य-चन्द्रमा की गति का परिमाण, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल-चक्र, छद्मस्थ एव केवली की ज्ञान-शक्ति, क्रियावाद, परमाणु विज्ञान, आयुष्य वृद्धि-हानि कुलकर आदि कई महत्त्वपूर्ण विषयो पर प्रकाश डाला गया है। इस शतक के भी दस उद्देशक है।

❑ This is the Fifth *Shatak* (Fifth Chapter) of *Vyakhyaprajnapti* (*Bhagavati Sutra*) In this Chapter light has been thrown on many important topics including the measures of the movement of the sun and the moon, the progressive and regressive time cycle (*Utsarpini-Avasarpini kaal-chakra*), potency of spiritual knowledge (*jnana-shakti*) of *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) and *Kevali* (omniscient), *Kriyavaad* (doctrine of endeavour), theory of ultimate particles (*paramanu vijnana*), increase and decrease of life-span and *Kulakar* (clan-founders) This chapter too has ten lessons (*uddeshaks*)

पचम शतक की सग्रहणी गाथा **COLLATIVE VERSE**

१. चप रवि १ अणिल २ गंठिय ३ सद्दे ४ छउमायु ५-६ एयण ७ णियंठे ८।

रायगिहं ९ चंपा-चंदिमा १० य दस पंचमम्मि सते॥१॥

१. (गाथा का अर्थ)-पाँचवे शतक मे ये दस उद्देशक है-प्रथम उद्देशक मे चम्पानगरी मे सूर्य सम्बन्धी प्रश्नोत्तर है। द्वितीय उद्देशक मे वायु सम्बन्धी प्ररूपणा है। तृतीय उद्देशक मे जालग्रन्थी का उदाहरण देकर तथ्य का निरूपण किया है। चतुर्थ उद्देशक मे शब्द सम्बन्धी प्रश्नोत्तर है। पचम उद्देशक मे छद्मस्थ के सम्बन्ध मे एव छठे उद्देशक मे आयुष्य की वृद्धि-हानि सम्बन्धी निरूपण है। सातवे उद्देशक मे पुद्‌गलो के एजन = कम्पन का वर्णन है। आठवे उद्देशक मे निर्ग्रन्थी-पुत्र अनगार द्वारा पदार्थ-विषयक चर्चा है। नौवे उद्देशक मे राजगृह नगर सम्बन्धी पर्यालोचन और दसवे उद्देशक मे चम्पानगरी मे वर्णित चन्द्रमा-सम्बन्धी प्ररूपणा है।

1. The fifth chapter has following ten lessons (*uddeshaks*)—The first lesson has questions and answers about the sun in Champa city The second lesson has information about air (*vayu*) The third lesson describes knots in a net as analogy The fourth lesson has questions and

answers about sound (*shabd*) The fifth lesson has information about *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) The sixth lesson describes increase and decrease of life-span The seventh lesson contains description of vibration of matter particles The eighth lesson narrates the description of matter given by ascetic Nirgranthi-putra The ninth lesson has the description of Rajagriha city The tenth lesson provides the description of the moon in Champa city

२. तेण कालेण तेण समएणं चंपा नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तीसे णं चंपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामे चेइए होत्था। वण्णओ। सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया।

२. उस काल, उस समय मे चम्पा नाम की नगरी थी। उस चम्पानगरी के बाहर पूर्णभद्र नाम का चैत्य था। इनका वर्णन औपपातिक सूत्रानुसार समझे। (एक बार) वहाँ श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। यावत् परिषद् भगवान को वन्दन करने और उनका धर्मोपदेश सुनने के लिए गई, और धर्म श्रवण कर वापस लौट गई।

2. During that period of time there was a city called Champa Description (as in *Aupapatik Sutra*) Outside Champa city there was a *Chaitya* (temple complex) called Purnabhadra Description (of the *Chaitya*) (Once) Bhagavan Mahavir arrived there and so on up to People came out to pay homage and attend the discourse, after which they dispersed

विवेचन चम्पानगरी · तब और अब–औपपातिक सूत्र मे चम्पानगरी का विरतृत वर्णन मिलता है, तदनुसार प्राचीनकाल मे 'चम्पा' ऋद्धियुक्त, शत्रुओ से अपराजित एव समृद्ध नगरी थी। चम्पानगरी का इतिहास अति प्राचीन है, वही पर दधिवाहन राजा की पुत्री चन्दनबाला का जन्म हुआ था। पाण्डवकुलभूषण प्रसिद्ध दानवीर कर्ण ने इसी नगरी को अगदेश की राजधानी बनाया था। बारहवे तीर्थकर श्री वासुपूज्य स्वामी के पाँच कल्याणक इसी नगरी मे हुए थे। महावीर-चरित्र के अनुसार अपने पिता श्रेणिक राजा की मृत्यु के शोक के कारण सम्राट् कोणिक मगध की राजधानी राजगृह मे रह नही सकता था, इस कारण उसने वास्तुशास्त्रियो से परामर्श कर एक विशाल चम्पावृक्ष वाले स्थान को पसद करके अपनी राजधानी के हेतु नवीन चम्पानगरी बसाई। दशवैकालिक सूत्र के रचयिता आचार्य शय्यभव सूरि ने राजगृह से आये हुए अपने लघुवयस्क पुत्र मनक को इसी नगरी मे दीक्षा दी थी और यही दशवैकालिक सूत्र की रचना की थी। इस नगरी के बद हुए दरवाजो को महासती सुभद्रा ने अपने शील की महिमा से अपने कलक निवारणार्थ कच्चे सूत की चलनी बाँधकर उसके द्वारा कुएँ मे से पानी निकाला और तीन दरवाजो पर छीटा देकर उन्हे खोला था। चौथा दरवाजा ज्यो का त्यो बद रखा था। परन्तु बाद मे वि स १३६० मे लक्षणावती के हम्मीर और सुलतान समदनी ने शकरपुर का किला बनाने हेतु उपयोगी पाषाणो के लिए इस दरवाजे को तोडकर इसके कपाट ले लिये थे। वर्तमान मे चम्पानगरी चम्पारन कस्बे के रूप मे भागलपुर के निकटवर्ती एक जिला है। *(क) जिनप्रभसूरि रचित 'चम्पापुरीकल्प' (ख) हेमचन्द्राचार्य रचित महावीरचरित्र, सर्ग १२, श्लोक १८० से १८९ तक (ग) आचार्य शय्यभव सूरि रचित परिशिष्ट पर्व, सर्ग, ५, श्लोक ६८, ८०, ८५ (घ) भगवती सूत्र (टीकानुवाद टिप्पणयुक्त), खण्ड २, पृ १४४।*

Elaboration—Champa city : then and now—Detailed description of Champa city is available in *Aupapatik Sutra* According to that, the ancient Champa city was a grand and affluent city undefeated by enemies It has a very long history going back to the hoary past It was here that Chandan-bala, the daughter of King Dadhivahan was born Benevolent Karna, the magnanimous Pandava, made this city the capital of his state Angadesh The five auspicious events of the twelfth Tirthankar Shri Vaasupujya Swami took place in this very city According to the biography of Bhagavan Mahavir, after the death of his father king Shrenik it became impossible for grief stricken Emperor Kunik to live in Rajagriha, the capital of Magadh empire For this reason he constructed the new city of Champa around a huge Champa tree in consultation with expert architects It was here that Acharya Shayyambhav initiated his infant son Manak, brought forth from Rajagriha, and wrote Dashavaikalik Sutra for him With the power of her righteousness Mahasati Subhadra, in order to erase the blemish on her chastity, drew water from a well with a strainer tied to non-twined cotton thread and sprinkled on three closed gates of Champa city to open them The fourth gate was kept closed Later the *Hammir* and *Sultan* of Samdani demolished this gate to acquire stone slabs and door-flanges when he was constructing the fort of Shankarpur in 1360 V At present it is a small township and district called Champaran near modern Bhagalpur *[References—(a) Champapuri Kalp by Jinaprabh Suri, (b) Mahavir Charitra by Hemachandracharya (12/180-189), (c) Parishisht Parva by Acharya Shayyambhav Suri (5/68, 80, 85), (d) Bhagavati Sutra (translation of the Tika with foot notes)—Part 2, p 144]*

जम्बूद्वीप मे सूर्यों का उदय-अस्त **RISING AND SETTING OF SUNS IN JAMBUDVEEP**

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं जाव एवं वयासी–

३. उस समय मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अन्तेवासी (शिष्य) गौतमगोत्रीय इन्द्रभूति अनगार थे। उन्होने इस प्रकार प्रश्न पूछा–

3. During that period of time Indrabhuti Anagar, the senior disciple of Bhagavan Mahavir and so on up to paid his homage and obeisance and submitted—

४. [प्र.] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति ? पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति ? दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति ? पडीण-उदीणमुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छंति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उदीण–पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि–पाईणमागच्छंति।

४. [प्र] भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे सूर्य क्या उत्तर–पूर्व–(ईशानकोण) मे उदय होकर पूर्व–दक्षिण–(आग्नेयकोण) मे अस्त होते (होने आते) है? अथवा आग्नेयकोण मे उदय होकर दक्षिण–पश्चिम। (नैऋत्यकोण) मे अस्त होते है? अथवा नैऋत्यकोण मे उदय होकर पश्चिमोत्तर–(वायव्यकोण) मे अस्त होते है, या फिर पश्चिमोत्तर–(वायव्यकोण) मे उदय होकर उत्तर–पूर्व–(ईशानकोण) मे अस्त होते है?

[उ.] हा, गौतम ! जम्बूद्वीप मे सूर्य (उत्तर–पूर्व) (ईशानकोण) मे उदित होकर अग्निकोण (पूर्व–दक्षिण) मे अस्त होते है, यावत् पूर्वोक्त सम्पूर्ण कथन कहना चाहिए।

4. [Q.] *Bhante* ! In the continent called Jambudveep do suns rise in the north-east (*Ishan Kone*) and set in the south-east (*Agneya Kone*) ? Or do they rise in the south-east (*Agneya Kone*) and set in the south-west (*Nairitya Kone*) ? Or do they rise in the south-west (*Nairitya Kone*) and set in the north-west (*Vayavya Kone*) ? Or do they rise in the north-west (*Vayavya Kone*) and set in the north-east (*Ishan Kone*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! In the continent called Jambudveep the suns rise in the north-east (*Ishan Kone*) and set in the south-east (*Agneya Kone*), and so on up to the whole question should be repeated as answer in affirmative

५. [प्र.] जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवति तया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवति ? जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवति तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम–पच्चत्थिमेणं राई भवति ?

[उ] हता, गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे जाव राई भवति।

५. [प्र] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्द्ध मे दिन होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी दिन होता है? और जब जम्बूद्वीप के उत्तरार्द्ध मे दिन होता है, तब क्या मेरु पर्वत से पूर्व–पश्चिम मे रात्रि होती है?

[उ] हाँ, गौतम ! (यह इसी तरह होता है, अर्थात्–) जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्द्ध मे दिन होता है, तब पूर्व–पश्चिम भाग मे रात्रि होती है।

5. [Q.] *Bhante* ! When it is day in the southern half of Jambudveep, is it also day in the northern half of Jambudveep ? And when there is day in the northern half of Jambudveep, is there night on the east and west of the Meru mountain ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) When there is day in the northern half of Jambudveep, it is night on the east and west of the Meru mountain ?

६. [प्र.] जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे भवति तया णं पच्चत्थिमेणं वि दिवसे भवति ? जया णं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे जाव राई भवति।

६. [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व मे दिन होता है, तब क्या पश्चिम मे भी दिन होता है ? और जब पश्चिम मे दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर-दक्षिण दिशा मे रात्रि होती है ?

[उ.] गौतम ! हाँ, इसी प्रकार से होता है, अर्थात् जब जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत से पूर्व मे दिन होता है, तब उत्तर-दक्षिण भाग मे रात्रि होती है।

6. [Q.] *Bhante* ! When it is day on the east of the Meru mountain, is it also day on the west of Meru mountain ? And when there is day on the east of the Meru mountain, is there night on the south and north of the Meru mountain in Jambudveep ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) When there is day on the east of Meru mountain in Jambudveep, it is night on its north and south

विवेचन सूर्य के उदय-अस्त का व्यवहार यहाँ जो दिशा, विदिशा या समय की दृष्टि से सूर्य का उदय-अस्त बताया गया है, वह सब व्यवहार दर्शको की दृष्टि की अपेक्षा से बताया है, क्योकि समग्र भूमण्डल पर सूर्य के उदय-अस्त का समय या दिशा-विदिशा (प्रदेश) नियत नही है। वह क्षेत्र सापेक्ष है। वास्तव मे देखा जाए तो सूर्य तो सदैव भूमण्डल पर विद्यमान रहता है, किन्तु जब सूर्य के समक्ष किसी प्रकार की आड (ओट या व्यवधान) आ जाती है, तब (उस समय) उस देश (उस दिशा-विदिशा) के लोग उक्त सूर्य को देख नही पाते, तब उस देश के लोग इस प्रकार का व्यवहार करते है-'अब सूर्य अस्त हो गया है।' जब सूर्य के सामने किसी प्रकार की आड नही होती, तब उस देश (दिशा-विदिशा) के लोग सूर्य को देख पाते है और वे इस प्रकार का व्यवहार करते है-'अब (इस समय) सूर्य उदय हो गया है।' एक आचार्य ने कहा है-''सूर्य प्रति समय ज्यो-ज्यो आकाश मे आगे गति करता जाता है, त्यो-त्यो निश्चित ही इस तरफ रात्रि होती जाती है। इसलिए सूर्य की गति पर ही उदय-अस्त का व्यवहार निर्भर है।'' इस प्ररूपणा के अनुसार इस मान्यता का स्वत निराकरण हो जाता है कि 'सूर्य पश्चिम की ओर के समुद्र मे प्रविष्ट होकर पाताल मे चला जाता है, फिर पूर्व की ओर के समुद्र पर उदय होता है।'

एक ही समय मे दो दिशाओ मे दिवस कैसे ?—जम्बूद्वीप मे सूर्य दो होते है। जब एक सूर्य मेरु पर्वत की उत्तर दिशा मे होता है, तब दूसरा सूर्य मेरु पर्वत की दक्षिण दिशा मे होता है। उस समय मेरु पर्वत की उत्तर और दक्षिण दिशा मे दिन होता है। मेरु पर्वत की पूर्व और पश्चिम दिशा मे रात्रि होती है। जब मेरु की पूर्व और पश्चिम दिशा मे दिन होता है, तब उत्तर-दक्षिण दिशा मे रात्रि होती है। इसलिए एक ही समय मे दो दिशाओ मे दिवस होता है और दो दिशाओ मे रात्रि होती है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते सूर्य का सलग्न चित्र देखे।

Elaboration—Sunrise and sunset—The rising and setting of the sun in terms of directions or time is with reference to the general observer because the time and direction of sunset and sunrise is not fixed for every point on the earth In fact the sun is always present over the globe but when there is some kind of obstruction covering some area or direction, people of that area are unable to see the sun It is then that they say—"The sun has set now." When there is no such obstruction and people are able to see the sun they say—"The sun has risen now" Some *Acharya* has said—"As the sun moves forward in the sky every moment, night approaches to its rear That is why the rising and setting of the sun is dependent on the movement of the sun" This automatically explains the traditional belief that the sun enters the western sea and sinks into the underworld (*paataal*) to rise once again from the eastern sea

Day in two directions at the same time ?—Jambudveep has two suns When one sun is to the north of Meru mountain the other is to its south At that time it is day on the northern as well as southern directions and it is night on the eastern and western directions of the Meru When it is day on the eastern and western directions of the Meru it is night on the northern and southern directions of the Meru That is why there is day in two directions and night in two directions at the same time For further clarity see the illustration showing the suns moving around Meru mountain

जम्बूद्वीप मे दिवस और रात्रि का कालमान PERIODICITY OF DAY AND NIGHT IN JAMBUDVEEP

७. [प्र] जया णं भंते ! जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ! जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवति ?

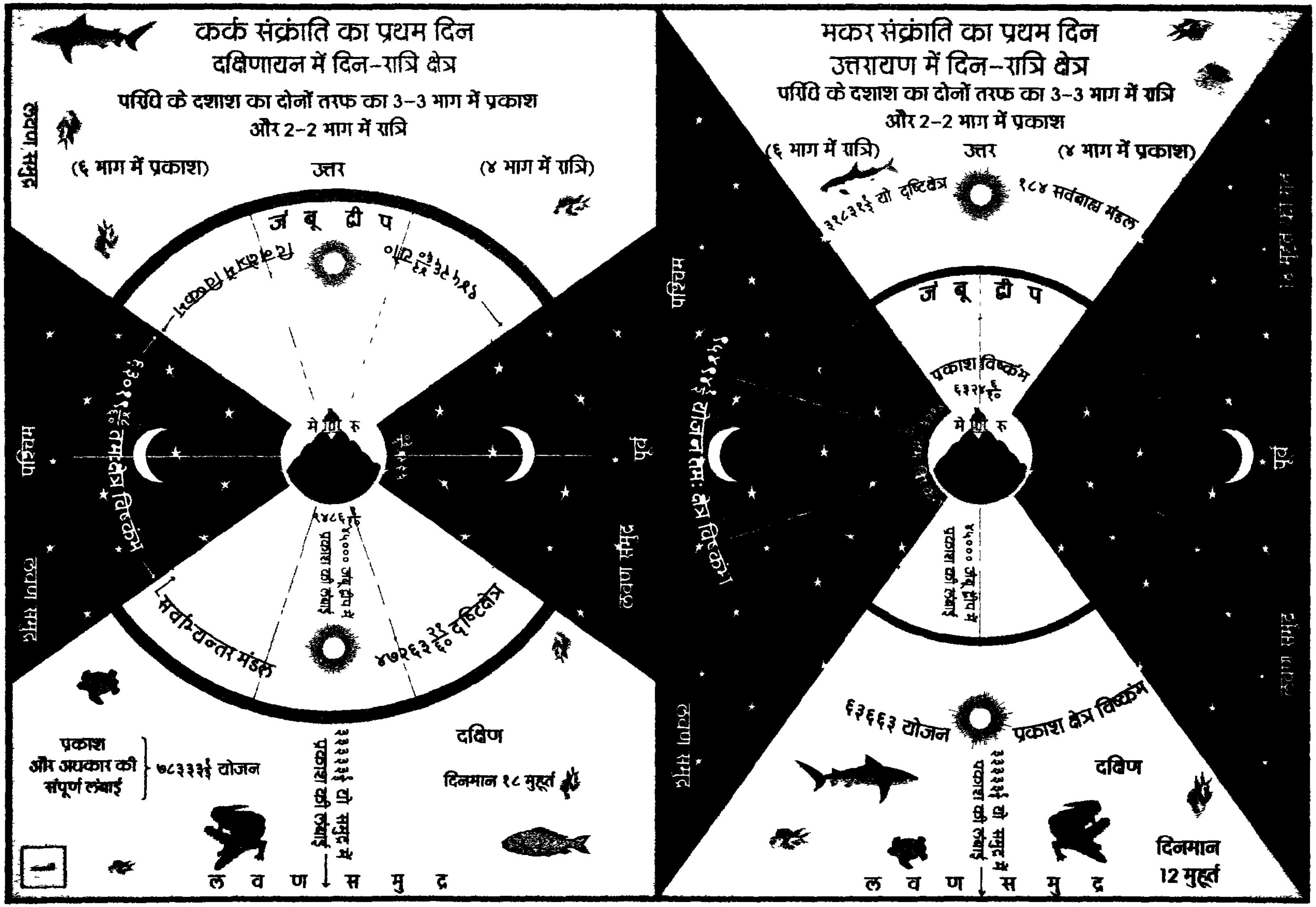
[उ] हंता, गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

७. [प्र] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप नामक द्वीप के दक्षिणार्द्ध मे उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी उत्कृष्ट (सबसे बडा) अठारह मुहूर्त्त का दिन होता है ? और जब उत्तरार्द्ध मे उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप मे पर्वत से पूर्व-पश्चिम मे जघन्य (छोटी से छोटी) बारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है ?

[उ] हॉ, गौतम ! (यह इसी तरह होती है। अर्थात्-) जब जम्बद्वीप मे १८ मुहूर्त्त का दिन यावत् बारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है।

7. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when the maximum length of the day is 18 Muhurts then

दिन रात की हानि वृद्धि



बृहत्संग्रहणी चित्र ३७/३८ के आधार पर

चित्र परिचय-१

Illustration No. 1

दिन-रात की हानि-वृद्धि

जम्बूद्वीप में दो सूर्य तथा दो चन्द्र निरन्तर गति करते हैं। जम्बूद्वीप के ४५-४५ हजार योजन क्षेत्र (लम्बाई) में एक-एक सूर्य प्रकाश करता है। जब सूर्य सर्वाभ्यन्तर मण्डल (सबसे भीतर का मण्डल) में होता है तब १८ मुहूर्त का दिन तथा १२ मुहूर्त की रात (कर्क संक्रान्ति का प्रथम दिन) अर्थात् संवत्सर का सबसे बड़ा दिन १४ घण्टा ९ मिनट तथा सबसे छोटी रात होती है। अर्थात् ३० मुहूर्त के दिन-रात का ६ भाग प्रकाश क्षेत्र और ४ भाग अंधकार क्षेत्र होता है। इस समय मेरु के पास सूर्य का प्रकाश क्षेत्र ९४८६ ९/१० रहता है। वह क्रमशः वृद्धि पाता हुआ समुद्र की तरफ का प्रकाश क्षेत्र ९४५२६ ४/६० तथा अंधकार क्षेत्र ६३०१९ ४८/६० एवं पूर्व-पश्चिम का किरण विस्तार ७६२६२ १५/६० हो जाता है। कर्क संक्रान्ति का यह प्रथम दिन आषाढ़ मास में आता है। फिर क्रमशः सूर्य सर्व बाह्यमण्डल की ओर प्रयाण करता है। तब उसका प्रकाश क्षेत्र क्रमशः घटता जाता है। अंधकार क्षेत्र बढ़ता जाता है।

जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है अर्थात् सर्व बाह्य मण्डल के १८३वें मण्डल में गति करता है तब सबसे बड़ी १८ मुहूर्त की रात तथा सबसे छोटा १२ मुहूर्त का दिन होता है। यह मकर संक्रान्ति का प्रथम दिन होता है। इस समय मेरु के पास का प्रकाश विस्तार ६३२४ ६/१० तथा अंधकार क्षेत्र ९४८६ ३/१० होता है। जब दोनों सूर्य सर्व बाह्य मण्डल में आते हैं तब समुद्र की तरफ का प्रकाश क्षेत्र ६३६६३ योजन तथा अंधकार क्षेत्र ९५४९४ योजन होता है।

प्रस्तुत चित्र में जम्बूद्वीप लवण समुद्र में सूर्य का भ्रमण क्षेत्र दर्शाया है। यह चित्र बृहत्संग्रहणी आचार्य श्री यशोदेवसूरि कृत हिन्दी विवेचन के आधार से साभार लिया है।

(शतक ५ उद्देशक १ सूत्र ७-१३)

LONGER AND SHORTER DAYS AND NIGHTS

Two suns and two moons continuously move around Jambudveep. Each of these suns covers an area of Jambudveep defined by 45 thousand Yojan long section of its circumference. When the sun is in its innermost orbit the day is 18 Muhurt long and the night is 12 Muhurt long. This is the day the sun enters the Cancer sign of the Zodiac (Kark Sankranti). It is the longest day (14 hours 9 minutes) of the year and the shortest night. This means that one sixth of the total 30 Muhurt span of the day has light and one fourth part has darkness. At this time the area covered by sunlight near Meru mountain is $9486\frac{9}{10}$ Yojans and the corresponding area of darkness is $6324\frac{2}{10}$ Yojans. It gradually increases and becomes $94526\frac{4}{60}$ Yojans near the cost of Lavan Samudra, where the corresponding area of darkness becomes $63019\frac{18}{60}$. This first day of Kark Sankranti falls in the month of Ashadh. Then the sun starts moving towards its outermost orbit and gradually the area covered by sunlight diminishes whereas the area of darkness expands.

Then the sun starts shifting back from the southern to the northern solstice it is moving in the outermost orbit, the 183rd. At that time the night is longest (18 Muhurt) and the day is shortest (12 Muhurt). This is the first day of the sun entering the Capricorn sign of the Zodiac (Makar Sankranti). At this time the area covered by sunlight near Meru mountain is $6324\frac{6}{10}$ Yojans and the corresponding area of darkness is $9486\frac{1}{10}$ Yojans. It gradually increases and becomes 63663 Yojans near the cost of Lavan Samudra where the corresponding area of darkness becomes $95494\frac{1}{2}$.

– *Shatak 5 lesson 1 Sutra 7 to 13*

is the maximum length of the day 18 Muhurts in the northern half too ? And when the maximum length of the day is 18 Muhurts in the northern half then is the night in the region east and west of the Meru mountain in Jambudveep shortest, of twelve Muhurt duration ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) In the southern half of the continent named Jambudveep. and so on up to twelve Muhurt duration

८. [प्र.] जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पुरत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारस जाव तया णं जंबुद्दीवे दीवे पच्चत्थिमेण वि उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति ? जया णं पच्चत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तर-दाहिणे दुवालसमुहुत्ता जाव राई भवति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव भवति।

८. [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व मे उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के पश्चिम मे भी उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त्त का दिन होता है ? और भगवन् ! जब पश्चिम मे उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त्त का दिवस होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर मे जघन्य बारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है ?

[उ.] हॉ, गौतम ! यह इसी तरह-यावत् होता है।

8. [Q.] *Bhante* ! When the maximum length of the day is 18 Muhurts in the region east of the Meru mountain in Jambudveep then is the maximum length of the day 18 Muhurts in the region west of the Meru mountain too ? And when the maximum length of the day is 18 Muhurts in the east then is the night in the northern region of Jambudveep shortest, of twelve Muhurt duration ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) and so on up to twelve Muhurt duration

९. [प्र.] जया ण भंते ! जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तया णं उत्तरे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति ? जया णं उत्तरे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तया णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं सातिरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे जाव राई भवति।

९. [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्द्ध मे अठारह मुहूर्त्तानन्तर (मुहूर्त्त से कुछ कम) का दिवस होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी अठारह मुहूर्त्तानन्तर का दिवस होता है ? और जब उत्तरार्द्ध मे अठारह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप मे मन्दर पर्वत से पूर्व-पश्चिम दिशा मे सातिरेक (कुछ अधिक) बारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! यह इसी तरह होती है, अर्थात्-जब जम्बूद्वीप के यावत् रात्रि होती है।

9. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when the day is slightly less than 18 Muhurts (*Muhurtantar*) long then in the northern half too is the day slightly less than 18 Muhurts long ? And when the day is slightly less than 18 Muhurts long in the northern half then is the night in the region east and west of the Meru mountain in Jambudveep slightly more than (*satirek*) twelve Muhurts long ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) In the southern half of the continent named Jambudveep and so on up to slightly more than twelve Muhurts long

१०. [प्र] जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तया ण पच्चत्थिमेण अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवति ? जया णं पच्चत्थिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राइ भवति ?

[उ] हंता, गोयमा ! जाव भवति।

१०. [प्र] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के मन्दराचल से पूर्व मे अठारह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब क्या पश्चिम मे भी अठारह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है ? और जब पश्चिम मे अठारह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण मे सातिरेक बारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! (यह इसी तरह) यावत् होती है।

10. [Q.] *Bhante* ! When the day is slightly less than 18 Muhurts long in the region east of the Meru mountain in Jambudveep then is the day slightly less than 18 Muhurts long in the region west of the Meru mountain too ? And when the day is slightly less than 18 Muhurts long in the east then is the night in the northern region of Jambudveep shortest, slightly more than twelve Muhurts long ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) and so on up to twelve Muhurts long

११. एव एएणं कमेण ओसारेयव्वं—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई। सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा तेरसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा चोद्दसमुहुत्ता राई। पन्नरसमुहुत्ते दिवसे, पन्नरसमुहुत्ता राई। पन्नरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा पन्नरसमुहुत्ता राई। चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई। चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा सोलसमुहुत्ता राई। तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई। तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, सातिरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई।

११. इसी प्रकार इस क्रम से दिवस का परिमाण बढाना-घटाना और रात्रि का परिमाण घटाना-बढाना चाहिए। यथा-जब सत्रह मुहूर्त्त का दिवस होता है, तब तेरह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब सत्रह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब सातिरेक तेरह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब सोलह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब चौदह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब सोलह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब सातिरेक चौदह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब पन्द्रह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब पन्द्रह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब पन्द्रह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब सातिरेक पन्द्रह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब चौदह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब सोलह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब चौदह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब सातिरेक सोलह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब तेरह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब सत्रह मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब तेरह मुहूर्त्तानन्तर का दिन होता है, तब सातिरेक सत्रह मुहूर्त्त की रात्रि होती है।

11. In the same way the length of the day and the night should be reduced and increased respectively in the following order—When the day is seventeen Muhurts long, the night is thirteen Muhurts long When the day is slightly less than seventeen Muhurts long, the night is slightly more than thirteen Muhurts long When the day is sixteen Muhurts long, the night is fourteen Muhurts long When the day is slightly less than sixteen Muhurts long, the night is slightly more than fourteen Muhurts long When the day is fifteen Muhurts long, the night is fifteen Muhurts long When the day is slightly less than fifteen Muhurts long, the night is slightly more than fifteen Muhurts long When the day is fourteen Muhurts long, the night is sixteen Muhurts long When the day is slightly less than fourteen Muhurts long, the night is slightly more than sixteen Muhurts long When the day is thirteen Muhurts long, the night is seventeen Muhurts long When the day is slightly less than thirteen Muhurts long, the night is slightly more than seventeen Muhurts long

१२. [प्र.] जया णं जबुद्दीवे दाहिणड्ढे जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरड्ढे वि ? जया णं उत्तरड्ढे तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे-पच्चत्थिमे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्व जाव राई भवति।

१२. [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिणार्द्ध मे जघन्य बारह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी (इसी तरह) होता है ? और जब उत्तरार्द्ध मे भी इसी तरह होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व और पश्चिम मे उत्कृष्ट (सबसे बडी) अठारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! इसी (पूर्वोक्त) प्रकार से सब कहना चाहिए, यावत् रात्रि होती है।

12. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when the day is shortest or twelve Muhurts long then in the northern half too is the day twelve Muhurts long ? And when it is so in the northern half then is the night in the region east and west of the Meru mountain in Jambudveep is longest or eighteen Muhurts long ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) In the southern half of the continent named Jambudveep and so on up to . eighteen Muhurts long

१३. [प्र.] जया णं भते ! जबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं पच्चत्थिमेण वि ? जया णं पच्चत्थिमेण वि तया ण जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव राई भवति।

१३. [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के मन्दर पर्वत से पूर्व मे जघन्य (सबसे छोटा) बारह मुहूर्त्त का दिन होता है, तब क्या पश्चिम मे भी इसी प्रकार होता है ? और जब पश्चिम मे इसी तरह होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के मन्दर पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे उत्कृष्ट (सबसे बडी) अठारह मुहूर्त्त की रात्रि होती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! यह इसी तरह यावत् रात्रि होती है।

13. [Q.] Bhante ! When the day is shortest or twelve Muhurts long in the region east of the Meru mountain in Jambudveep then is the day shortest or twelve Muhurts long in the region west of the Meru mountain too ? And when it is so in the east then is the night in the northern region of Jambudveep longest or eighteen Muhurts long ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) and so on up to eighteen Muhurts long

विवेचन दिन और रात्रि की कालगणना का सिद्धान्त–जैन सिद्धान्त के अनुसार दिन और रात्रि मिलाकर दोनो कुल ३० मुहूर्त्त (= २४ घटा) के होते है। दक्षिण और उत्तर मे दिन का उत्कृष्ट मान १८ मुहूर्त्त = (१४ घण्टा, २४ मिनट) का होगा तो पूर्व और पश्चिम मे रात्रि १२ मुहूर्त्त = (९ घण्टा, ३६ मिनट) की होगी। यदि रात्रि पूर्व व पश्चिम मे उत्कृष्त १८ मुहूर्त्त की होगी तो दक्षिणार्द्ध एव उत्तरार्द्ध मे जघन्य १२ मुहूर्त्त का दिन होगा, इसी तरह पूर्व-पश्चिम मे जघन्य १२ मुहूर्त्त का दिन होगा तो उत्तर एव दक्षिण मे रात्रि उत्कृष्ट १८ मुहूर्त्त की होगी। यदि दक्षिणार्द्ध, उत्तरार्द्ध अथवा पूर्व और पश्चिम मे १८ मुहूर्त्तानन्तर का दिन होगा तो पूर्व और पश्चिम मे अथवा उत्तर और दक्षिण मे रात्रि सातिरेक १२ मुहूर्त्त की होगी।

तात्पर्य यह है कि ३० मुहूर्त्त अहोरात्र मे से दिवस का जितना भाग बढता या घटता है, उतना ही भाग, रात्रि का घटता या बढता जाता है। सूर्य के कुल १८४ मण्डल है। उनमे से जम्बूद्वीप मे ६५ और लवणसमुद्र मे

शेष ११९ मण्डल है। जब सूर्य सर्वाभ्यन्तर (सबसे भीतर वाले) मण्डल मे होता है, तब १८ मुहूर्त्त का दिन होता है और १२ मुहूर्त्त की रात्रि होती है। जब सूर्य बाहरी मण्डल से आभ्यन्तर मण्डल की ओर आता है, तब क्रमश प्रत्येक मण्डल मे दिवस बढता जाता है और रात्रि घटती जाती है, और जब सूर्य आभ्यन्तर मण्डल से बाहरी मण्डल की ओर प्रयाण करता है, तब प्रत्येक मण्डल मे डेढ मिनट से कुछ अधिक रात्रि बढती जाती है तथा दिन उतना ही घटता जाता है। जब सूर्य सर्वाभ्यन्तर मण्डल से निकलकर उसके पास वाले दूसरे मण्डल मे जाता है, तब मुहूर्त्त के $\frac{२}{६१}$ भाग कम अठारह मुहूर्त्त का दिन होता है, जिसे शास्त्र मे 'अष्टादश-मुहूर्त्तानन्तर' कहते है, क्योकि यह समय १८ मुहूर्त्त का दिन होने के तुरन्त बाद मे आता है।

Elaboration—The theory of measuring day and night—According to the Jain theory the total length of day and night is 30 Muhurts (24 hours) When the maximum length of the day in south and north is 18 Muhurts (14 hours and 24 minutes) the night in east and west is 12 Muhurts (9 hours and 36 minutes) long If the night is longest or 18 Muhurts in east and west the day in north and south is shortest or 12 Muhurts In the same way if the day is shortest or 12 Muhurts in east and west the night in north and south is longest or 18 Muhurts If the day is slightly less than 18 Muhurts long in north-south or east-west than the night is slightly more than 12 Muhurts long in east-west or north-south

In other words out of the total 30 Muhurts of day-night, the increase in the length of the day corresponds to the decrease in the length of the night and vice versa The sun has a total of 184 *mandals* or orbits Of these 65 are in Jambudveep and remaining 119 in the Lavan Samudra When the sun is in the innermost *mandal* the day is 18 Muhurts long and the night is 12 Muhurts long When the sun moves inward from the outermost *mandal* the length of the day increases and that of the night decreases with every *mandal* When the sun moves outward from the innermost *mandal* the night increases by slightly more than one and a half minute per *mandal*, and the day decreases by the same span of time When the sun shifts from the innermost *mandal* to the next one length of the day becomes $\frac{2}{61}$ part less than 18 Muhurts This fraction is called Ashtadash Muhurtantar (slightly less than 18 Muhurts) because this immediately follows the maximum length of the day, 18 Muhurts

वर्षा ऋतु का प्रथम समय **FIRST SAMAYA OF MONSOON SEASON**

१४. [प्र.] जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढे वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ? जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, तह चेव जाव पडिवज्जति।

१४. [प्र] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्द्ध मे वर्षा (ऋतु) (चौमासे के मौसम) का प्रथम समय होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी वर्षा (ऋतु) का प्रथम समय होता है ? और जब उत्तरार्द्ध मे वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है, तब जम्बूद्वीप मे मन्दर पर्वत से पूर्व-पश्चिम मे वर्षा ऋतु का प्रथम समय अनन्तर-पुरस्कृत समय मे होता है ? (अर्थात् जिस समय मे दक्षिणार्द्ध मे वर्षा ऋतु का प्रारम्भ होता है, उसी समय के तुरन्त पश्चात् दूसरे समय मे मन्दर पर्वत से पूर्व-पश्चिम मे वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है ?)

[उ] हाँ, गौतम ! (यह इसी तरह होता है। अर्थात्--) जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्द्ध मे वर्षा (ऋतु) का प्रथम समय होता है, तब उत्तरार्द्ध मे भी (पूर्व-पश्चिम का कथन) उसी तरह यावत् होता है।

14. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when it is the first Samaya of the monsoon season then in the northern half too is it the first moment of the monsoon season ? And when it is the first Samaya of the monsoon season in the northern half then in the region east and west of the Meru mountain in Jambudveep does the first Samaya of the monsoon season commence at *Anantar-puraskrit* Samaya (the Samaya following the first Samaya of the monsoon season in the northern half) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) In the southern half of the continent named Jambudveep and so on up to commence at *Anantar-puraskrit* Samaya

१५. [प्र.] जया णं भंते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं पच्चत्थिमेण वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ? जया णं पच्चत्थिमेणं वासाण पढमे समए पडिवज्जइ तया ण जाव मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण अणतरपच्छाकडसमयसि वासाण पढमे समए पडिवन्ने भवति ?

[उ] हंता, गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवति।

१५ [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत से पूर्व मे वर्षा (ऋतु) का प्रथम समय होता है, तब पश्चिम मे भी क्या वर्षा (ऋतु) का प्रथम समय होता है ? और जब पश्चिम मे वर्षा (ऋतु) का प्रथम समय होता है, तब यावत् मेरु पर्वत से उत्तर दक्षिण मे वर्षा (ऋतु) का प्रथम समय अनन्तर-पश्चात्कृत समय मे होता है ? (अर्थात् मन्दर पर्वत से पश्चिम मे वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने के प्रथम समय पहले एक समय मे वहाँ (मन्दर पर्वत के) उत्तर-दक्षिण मे वर्षा प्रारम्भ हो जाती है ?)

[उ.] हाँ, गौतम! (इसी तरह होता है। अर्थात्-) जब जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत से पूर्व मे वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है, तब पश्चिम मे भी इसी प्रकार यावत् उत्तर-दक्षिण मे वर्षा ऋतु का प्रथम समय अनन्तर-पश्चात्कृत समय मे होता है, इसी तरह सारा वक्तव्य कहना चाहिए।

15. [Q.] *Bhante!* When it is the first Samaya of the monsoon season in the region east of the Meru mountain in Jambudveep then is it the first Samaya of the monsoon season in the region west of the Meru mountain too? And when it is the first Samaya of the monsoon season in the west then does the first Samaya of the monsoon season in the north-south region of Jambudveep commence at *Anantar-pashchaatkrit* Samaya (the Samaya preceding the first Samaya of the monsoon season in the western half)?

[Ans.] Yes, Gautam! (It is like that, which means—) In the southern half of the continent named Jambudveep and so on up to commence at *Anantar-pashchaatkrit* Samaya

१६. एव जहा समएण अभिलावो भणिओ वासाणं तहा आवलियाए १, वि भाणियव्वो २, आणापाणूण वि ३, थोवेण वि ४, लवेण वि ५, मुहुत्तेण वि ६, अहोरत्तेण वि ७, पक्खेण वि ८, मासेण वि ९, उउणा वि १०। एतेसि सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलाओ तहा भाणियव्वो।

१६. जिस प्रकार वर्षा ऋतु के प्रथम समय के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार वर्षा ऋतु के प्रारम्भ की प्रथम आवलिका के विषय मे भी कहना चाहिए। इसी प्रकार आन-पान, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, इन सबके विषय मे भी समय के अभिलाप की तरह कहना चाहिए।

16. What has been stated about the first Samaya of the monsoon season should also be repeated for the first Avalika of the monsoon season. In the same way it should also be repeated for (other units of time including) Aan-paan, Stok, Lava, Muhurt, Ahoratra (day-night), Paksha (fortnight), Maas (month), Ritu (season)

हेमन्त आदि ऋतुएँ और अयनादि **SEASONS INCLUDING WINTER AND SOLSTICES**

१७. [प्र.] जया ण भंते! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे हेमताणं पढमे समए पडिवज्जति?

[उ.] जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताण वि २०, गिम्हाण वि ३०, भाणियव्वो जाव उऊ ए। एवं एए तिन्नि वि। एएसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा।

१७. [प्र.] भगवन्! जब जम्बूद्वीप के दक्षिणार्द्ध मे हेमन्त ऋतु का प्रथम समय होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी हेमन्त ऋतु का प्रथम समय होता है? और जब उत्तरार्द्ध मे हेमन्त ऋतु का प्रथम समय होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व-पश्चिम मे हेमन्त ऋतु का प्रथम समय अनन्तर पुरस्कृत समय में होता है? इत्यादि प्रश्न है।

[उ] हे गौतम ! इस विषय का सारा वर्णन वर्षा ऋतु के (अभिलाप) कथन के समान जान लेना चाहिए। इसी तरह ग्रीष्म ऋतु का भी वर्णन कह देना चाहिए। हेमन्त ऋतु और ग्रीष्म ऋतु के प्रथम समय की तरह उनकी प्रथम आवलिका, यावत् ऋतुपर्यन्त सारा वर्णन कहना चाहिए। इस प्रकार वर्षा ऋतु, हेमन्त ऋतु और ग्रीष्म ऋतु, इन तीनो का एक सरीखा वर्णन है। इसलिए इन तीनो के तीस आलापक होते है।

17. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when it is the first Samaya of the winter season then in the northern half too is it the first moment of the winter season ? And when it is the first Samava of the winter season in the northern half then in the region east and west of the Meru mountain in Jambudveep does the first Samaya of the winter season commence at *Anantar-puraskrit* Samaya ? (and other such questions)

[Ans.] Gautam ! All the aforesaid details about monsoon season should be repeated here In the same way it should be repeated for the summer season Like the first Samayas of winter and summer seasons the details should be repeated for other units of time from Avalika to season Thus the details about all the three seasons—monsoon, winter and summer—are same and are stated in thirty statements (alaapak)

१८. [प्र.] जया णं भंते ! जंबुद्दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ ?

[उ] जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव अणतरपच्छाकडसमयसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवति।

१८. [प्र] भगवन् ! जम्बूद्वीप के मन्दर पर्वत से दक्षिणार्द्ध मे जब प्रथम 'अयन' होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी प्रथम 'अयन' होता है ?

[उ] गौतम ! जिस प्रकार समय के विषय मे आलापक कहा, उसी प्रकार 'अयन' के विषय मे भी कहना चाहिए, यावत् उसका प्रथम समय अनन्तर पश्चात्कृत समय मे होता है, इत्यादि सारा वर्णन कहना चाहिए।

18. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when it is the period of the first solstice (*Ayan*) then in the northern half too is it the period of the first solstice (*Ayan* or half year) ?

[Ans.] Gautam ! The statement about Samaya should be repeated for solstice too and so on up to commence at *Anantar-puraskrit* Samaya

१९. जहा अयणेणं अभिलावो तहा संवच्छरेण वि भाणियव्वो, जुएण वि, वाससएण वि, वाससहस्सेण वि, वाससयसहस्सेण वि, पुव्वंगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियंगेण वि, तुडिएण वि, एवं पुव्वंगे,

पुव्वे, तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे, हूहूयंगे, हूहूए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, णलिणंगे, णलिणे, अत्थणिउरंगे, अत्थणिउरे, अउयंगे, अउए, णउयंगे, णउए, पउयंगे, पउए, चूलियंगे, चूलिए, सीसपहेलियंगे, सीसपहेलिया, पलिओवमेण, सागरोवमेण वि भाणियव्वो।

१९. जिस प्रकार 'अयन' के सम्बन्ध मे कहा, उसी प्रकार 'सवत्सर' के विषय मे भी कहना चाहिए। तथैव युग, वर्षशत, वर्षसहस्र, वर्षशतसहस्र, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटिताग, त्रुटित, अटटाग, अटट, अववाग, अवव, हूहूकाग, हूहूक, उत्पलाग, उत्पल, पद्माग, पद्म, नलिनाग, नलिन, अर्थनूपुराग, अर्थनूपुर, अयुताग, अयुत, नयुताग, नयुत, प्रयुताग, प्रयुत, चूलिकाग, चूलिका, शीर्षप्रहेलिकाग, शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम और सागरोपम, (इन सब) के सम्बन्ध मे भी (पूर्वोक्त प्रकार से) कहना चाहिए।

19. As has been said about solstice (*Ayan*) so should be repeated for Samvatsar So also for Yug, Varshashat, Varshasahasra, Varshashatsahasra, Purvanga, Purva, Trutit, Atatanga, Atata, Avavanga, Avava, Huhukanga, Huhuka, Utpalanga, Utpala, Padmanga, Padma, Nalinanga, Nalina, Arthanupuranga, Arthanupura, Ayutanga, Ayut, Nayutanga, Nayuta, Prayutanga, Prayuta, Chulikanga, Chulika, Sheershaprahelikanga, Sheershaprahelika, Palyopam and Sagaropam

२०. [प्र] जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ ? जया णं उत्तरड्ढे वि पडिज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम–पच्चत्थिमेणं णेवत्थि ओसप्पिणी, णेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

[उ.] हंता, गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो !

२०. [प्र.] भगवन् ! जब जम्बूद्वीप नामक द्वीप के दक्षिणार्द्ध मे प्रथम अवसर्पिणी (अवसर्पिणी का प्रथम आरा) होती है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी प्रथम अवसर्पिणी होती है ? और जब उत्तरार्द्ध मे प्रथम अवसर्पिणी होती है, तब क्या जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत के पूर्व–पश्चिम मे अवसर्पिणी नही होती ? उत्सर्पिणी नही होती ? किन्तु हे आयुष्मान् श्रमणपुगव ! क्या वहाँ अवस्थित (स्थिर) काल कहा गया है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! इसी तरह होता है। यावत् (श्रमणपुगव ! तक) पूर्ववत् सारा वर्णन कह देना चाहिए।

20. [Q.] *Bhante* ! In the southern half of the continent named Jambudveep, when it is the first *Avasarpini* (the first epoch of the regressive cycle of time) then in the northern half too is it the first *Avasarpini* ? And when it is the first *Avasarpini* in the northern half then in the region east and west of the Meru mountain in Jambudveep is there neither *Avasarpini* nor *Utsarpini* but *Avasthit Kaal* (changeless time in context of conditions), O Long lived *Shraman* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that—). and so on up to . O Long lived *Shraman*

२१. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो।

२१. जिस प्रकार अवसर्पिणी के विषय मे कथन किया (आलापक कहा) है, उसी प्रकार उत्सर्पिणी के विषय मे भी कहना चाहिए।

21. Gautam ! As has been said about *Avasarpini* so should also be repeated for *Utsarpini* (progressive cycle of time)

विवेचन विविध कालमानो की व्याख्या–उऊ = ऋतु। ऋतु भी एक प्रकार का कालमान है। वर्षभर मे यो तो ६ ऋतुएँ मानी जाती है–बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर। परन्तु यहाँ तीन ऋतुओ का नामोल्लेख किया गया है, इसलिए चार-चार महीने की एक-एक ऋतु मानी जानी चाहिए। **अणंतर–पुरक्खडसमयंसि** = दक्षिणार्द्ध मे प्रारम्भ होने वाली वर्षा ऋतु प्रारम्भ की अपेक्षा अनन्तर (तुरन्त पूर्व) भविष्यत्कालीन समय को **अनन्तरपुरस्कृत** समय कहते है। **अणतरपच्छाकडसमयसि** = पूर्व और पश्चिम महाविदेह मे प्रारम्भ होने वाली वर्षा ऋतु प्रारम्भ की अपेक्षा अनन्तर (तुरन्त बाद के) अतीतकालीन समय को **अनन्तर पश्चात्कृत** समय कहते है। समय से लेकर ऋतु तक काल के १० भेद होते है–(१) **समय** (काल का सबसे छोटा भाग), (२) **आवलिया** (असख्यात समय), (३) **आणापाणू** (**आनपान** = उच्छ्वास-नि श्वास), (४) **थोव** (स्तोक–सात आनप्राणो का), (५) **लव** (सात स्तोको का), (६) **मुहुत्तं** (मुहूर्त्त = ७७ लव, अथवा ३,७७३ श्वासोच्छ्वास, या ४८ मिनट का), (७) **अहोरत्त** (अहोरात्र–३० मुहूर्त्त का), (८) **पक्ख** (पक्ष = १५ दिन-रात का), (९) **मास** (मास–दो पक्ष का एक महीना) उऊ (ऋतु–दो मास की एक ऋतु)। **अयणं** (अयन = तीन ऋतुओ का), **सवच्छर** (दो अयन का), **जुए** (युग = पाँच सवत्सर का), **वाससतं** (सौ वर्ष), **वाससहस्सं** (हजार वर्ष), **वाससतसहस्स** (एक लाख वर्ष), **पुव्वंग** (८४ लाख वर्षो का), **पुव्व** (८४ लाख को ८४ लाख से गुणा करने से जितने वर्ष हो, उतने वर्षों का एक पूर्व), **तुडियग** (एक पूर्व को ८४ लाख से गुणा करने से एक त्रुटिताग), **तुडिए** (एक त्रुटिताग को ८४ लाख से गुणा करने पर एक त्रुटित), इसी प्रकार पूर्व-पूर्व की राशि को ८४ लाख से गुणा करने पर उत्तर-उत्तर की समय राशि क्रमश बनती है। वह इस प्रकार है–अटटाग, अटट, अववाग, अवव, हूहूकाग, हूहूक, उत्पलाग, उत्पल, पद्माग, पद्म, नलिनाग, नलिन, अर्थनुपूराग, अर्थनुपूर, अयुताग, अयुत, नयुताग, नयुत, प्रयुताग, प्रयुत, चूलिकाग, चूलिका, शीर्षप्रहेलिकाग, शीर्षप्रहेलिका (१९४ अको की सख्या), पल्योपम और सागरोपम (ये दो गणना के विषय नही है, उपमा के विषय है, उन्हे उपमाकाल कहते है।)

अवसर्पिणी–यह काल दस कोडाकोडी सागरोपम का होता है। इसके ६ विभाग (आरा) होते है। एक प्रकार से यह अर्द्ध-काल-चक्र है। **उत्सर्पिणी**–यह काल भी दस कोडाकोडी सागरोपम का होता है। इसके भी ६ विभाग (आरा) होते है। दोनो मिलकर एक काल-चक्र होता है। अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल-चक्र का प्रवर्तन केवल ५ भरत तथा ५ ऐरवत क्षेत्र मे ही होता है।

Elaboration—Various units of time—Uu (Ritu or season) is also a kind of unit of time Generally there are said to be six seasons in a *year—Vasant* (spring), *Grishma* (summer), *Varsha* (monsoon), *Sharad* (autumn), *Hemant* (cold) and *Shishir* (winter) But here only three seasons have been mentioned making them four months long each *Anantar-purakkhadasamayamsi* = *Anantar-puraskrit* Samaya or the

Samaya following the first Samaya of the monsoon season in the northern half) *Anantar-pachchhakadasamayamsi* = *Anantar-pashchaatkrit* Samaya or the Samaya preceding the first Samaya of the monsoon season in the western half Starting from Samaya there are ten units of time up to Ritu—Samaya (the smallest indivisible unit of time, something even beyond nanosecond), Avalika (innumerable Samayas), Aan-pran (one exhalation and inhalation), Stoka (seven Aan-pran), Lava (seven Stoka), Muhurt (77 Lava or 3773 Aan-pran or 48 minutes), Ahoratra (30 Muhurts, day and night), Paksha (15 Ahoratra), Maas (30 Ahoratra, month), Ritu (two months) The units of time after this are—three Ritu's make one Ayan (the time from one solstice to another, six months), two Ayans make one Samvatsar (year), five Samvatsars make one Yug, and twenty Yugs make one Varshashat (century) Ten Varshashat make one Varshasahasra (millennium), and one hundred Varshasahasra make one Varshashatsahasra 8 4 million Varsh make one Purvanga, 8 4 million Purvangas make one Purva, 8 4 million Purvas make one Trutitanga, 8 4 million Trutitanga make one Trutit, 8 4 million Trutit make one Adadanga, 8 4 million Adadanga make one Adada, 8 4 million Adada make one Avavanga, 8 4 million Avavanga make one Avava, 8 4 million Avava make one Huhukanga, 8 4 million Huhukanga make one Huhuka, the same process continues to include Utpalanga, Utpala, Padmanga, Padma, Nalinanga, Nalina, Arthanupuranga, Arthanupura, Ayutanga, Ayut, Nayutanga, Nayuta, Prayutanga, Prayuta, Chulikanga, Chulika, and still further 8 4 million Chulika make one Sheershaprahelikanga, and 8 4 million Sheershaprahelikanga make one Sheershaprahelika (a number having 194 digits) Palyopam and Sagaropam are metaphoric units of time and are not countable

Avasarpini—This is ten *Kodakodi* Sagaropam long It has six divisions or epochs (*Aara* or spokes) Although called regressive cycle of time it is in fact half-cycle *Utsarpini*—this too is ten *Kodakodi* Sagaropam long and has six divisions or epochs (*Aara* or spokes) Both combined make one cycle of time This progressive and regressive cycle of time is applicable only to five Bharat and five Airavat areas

सूर्य के उदय-अस्त तथा दिवस-रात्रि का विचार SUNSET AND SUNRISE DAY AND NIGHT

२२. [प्र. १] लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ ?

[उ.] जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो इमो जाणियव्वो–'जया णं भंते ! लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणे समुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवति ? एतेणं अभिलावेणं नेयव्वं–

२२. [प्र. १] भगवन् ! लवणसमुद्र मे सूर्य ईशानकोण मे उदय होकर अग्निकोण मे जाते है ? इत्यादि सारा प्रश्न पूछना चाहिए।

[उ.] गौतम ! जम्बूद्वीप मे सूर्यों के सम्बन्ध मे जो वक्तव्यता कही गई है, वह सम्पूर्ण वक्तव्यता यहाँ लवणसमुद्रगत सूर्यों के सम्बन्ध मे भी कहनी चाहिए। विशेष बात यह है कि इस वक्तव्यता मे पाठ का उच्चारण इस प्रकार करना चाहिए–"भगवन् ! जब लवणसमुद्र के दक्षिणार्द्ध मे दिन होता है,' इत्यादि सारा कथन उसी प्रकार कहना चाहिए, यावत् 'तब लवणसमुद्र के पूर्व-पश्चिम मे रात्रि होती है।' इसी अभिलाप द्वारा सब वर्णन जान लेना चाहिए।

22. [Q. 1] *Bhante* ! In the Lavan Samudra (Salt Sea) do suns rise in the north-east (*Ishan Kone*) and set in the south-east (*Agneya Kone*) ? (Repeat the complete question as asked in case of Jambudveep)

[Ans.] Gautam ! What has been stated about the suns of Jambudveep should be repeated here verbatim about suns of Lavan Samudra The difference is that the statement should be recited as—'*Bhante* ! In Lavan Samudra when there is day in the southern half and so on up to then there is night in the eastern and western parts of Lavan Samudra ' This way the whole description should be narrated

[प्र. २] जया णं भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ ? जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तया ण लवणसमुद्दे पुरत्थिम–पच्चत्थिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी, णेवत्थि उस्सप्पिणी समणाउसो !

[उ.] हंता, गोयमा ! जाव समणाउसो !

[प्र. २] भगवन् ! जब लवणसमुद्र के दक्षिणार्द्ध मे प्रथम अवसर्पिणी होती है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी प्रथम अवसर्पिणी होती है ? और जब उत्तरार्द्ध मे प्रथम अवसर्पिणी होती है, तब क्या लवणसमुद्र के पूर्व-पश्चिम मे अवसर्पिणी नही होती ? उत्सर्पिणी नही होती ? किन्तु हे दीर्घजीवी श्रमणपुगव ! क्या वहाँ अवस्थित (अपरिवर्तनीय) काल होता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! (यह इसी तरह होता है।) अर्थात् वहाँ अवस्थित काल कहा गया है।

[Q. 2] *Bhante* ! In the southern half of Lavan Samudra, when it is the first *Avasarpini* (the first regressive cycle of time) then in the northern half too is it the first *Avasarpini* ? And when it is the first *Avasarpini* in the northern half then in the region east and west of the Lavan Samudra is there neither *Avasarpini* nor *Utsarpini* but *Avasthit Kaal* (changeless time), O Long lived *Shraman* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is lıke that—). . and so on up to *Avasthıt Kaal* (changeless tıme), O Long lıved *Shraman*

२३. [प्र.] धायइसंडेणं भंते ! दीवे सूरिया उदीण–पाईणमुग्गच्छ...?

[उ.] जहेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसंडस्स वि भाणियव्वा, नवरं इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियवा–जया णं भंते !

[प्र.] धायईसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवति तया णं उत्तरड्ढे वि ? जया णं उत्तरड्ढे वि तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम–पच्चत्थिमेणं राई भवति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! एवं जाव राई भवति।

२३. [प्र. १] भगवन् ! धातकीखण्ड द्वीप मे सूर्य, ईशानकोण मे उदय होकर क्या अग्निकोण में अस्त होते है ? इत्यादि प्रश्न।

[उ.] हे गौतम ! जिस प्रकार की वक्तव्यता जम्बूद्वीप के सम्बन्ध मे कही गई है, उसी प्रकार की सारी वक्तव्यता धातकीखण्ड के विषय मे भी कहनी चाहिए। परन्तु विशेष यह है कि इस पाठ का उच्चारण करते समय सभी आलापक इस प्रकार कहने चाहिए।

[प्र. २] भगवन् ! जब धातकीखण्ड के दक्षिणार्द्ध मे दिन होता है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी दिन होता है ? और जब उत्तरार्द्ध मे दिन होता है, तब क्या धातकीखण्ड द्वीप के मन्दर पर्वतो से पूर्व-पश्चिम मे रात्रि होती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! यह इसी तरह (होता है।) यावत् रात्रि होती है।

23. [Q. 1] *Bhante* ! In the Dhatakı Khand contınent do suns rıse ın the north-east (*Ishan Kone*) and set ın the south-east (*Agneya Kone*) ? (Repeat the complete questıon as asked ın case of Jambudveep)

[Ans.] Gautam ! What has been stated about the suns of Jambudveep should be repeated here verbatım about suns of Dhatakı Khand contınent The dıfference ıs that the name should be changed Thıs way the whole descrıptıon should be narrated

[Q. 2] *Bhante* ! When ıt ıs day ın the southern half of Dhatakı Khand, ıs ıt also day ın ıts northern half ? And when there ıs day ın the northern half of Dhatakı Khand, ıs there night on the east and west of the Mandar mountaın ın Dhatakı Khand ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It ıs lıke that) and so on up to . there ıs nıght on the east and west of the Mandar mountaın ?

२४. [प्र.] जया णं भंते ! धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमेणं दिवसे भवति तया णं पच्चत्थिमेणं वि ? जया णं पच्चत्थिमेण वि तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं उत्तरदाहिणेणं राई भवति ?

[उ] हता, गोयमा ! जाव भवति। एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव०।

२४ [प्र] भगवन ! जब धातकीखण्ड द्वीप के मन्दर पर्वतो से पूर्व मे दिन होता है, तब क्या पश्चिम मे भी दिन होता है ? और जब पश्चिम मे दिन होता है, तब क्या धातकीखण्ड द्वीप के मन्दर पर्वतो से उत्तर-दक्षिण मे रात्रि होती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! (यह इसी तरह होता है), यावत् (रात्रि) होती है और इसी अभिलाप से जानना चाहिए, यावत्-

24. [Q.] *Bhante* ! When it is day on the east of the Mandar mountain, is it also day on the west of Mandar mountain ? And when there is day on the east of the Mandar mountain, is there night on the south and north of the Mandar mountain in Dhataki Khand ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that, which means—) there is night on its north and south The rest should be repeated like this

२५. [प्र] जया ण भंते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी तया णं उत्तरड्ढे, जया णं उत्तरड्ढे तया ण धायइसंडे दीवे मंदराण पव्वयाण पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं णेवत्थि ओसप्पिणी जाव समणाउसो !

[उ] हता, गोयमा ! जाव समणाउसो !

२५. [प्र] भगवन् ! जब दक्षिणार्द्ध मे प्रथम अवसर्पिणी होती है, तब क्या उत्तरार्द्ध मे भी प्रथम अवसर्पिणी होती है ? और जब उत्तरार्द्ध मे प्रथम अवसर्पिणी होती है, तब क्या धातकीखण्ड द्वीप के मन्दर पर्वतो से पूर्व-पश्चिम मे भी अवसर्पिणी नही होती ? यावत् उत्सर्पिणी नही होती ? परन्तु आयुष्मान् श्रमणवर्य ! क्या वहाँ अवस्थितकाल होता है ?

[उ] हाँ, गौतम ! (यह इसी तरह होता है), यावत् हे आयुष्मान् श्रमणवर्य ! वहाँ अवस्थित काल होता है।

25. [Q.] *Bhante* ! In the southern half, when it is the first *Avasarpini* (the first regressive cycle of time) then in the northern half too is it the first *Avasarpini* ? And when it is the first *Avasarpini* in the northern half then in the region east and west of the Mandar mountain in Dhataki Khand is there neither *Avasarpini* nor *Utsarpini* but *Avasthit Kaal* (changeless time), O Long lived *Shraman* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! (It is like that—) and so on up to *Avasthit Kaal* (changeless time), O Long lived *Shraman*

२६. जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवरं कालोदस्स नामं भाणियव्वं।

२६. जैसे लवणसमुद्र के विषय मे वक्तव्यता कही, वैसे कालोद (कालोदधि) के सम्बन्ध मे भी कह देनी चाहिए। विशेष इतना ही है कि वहाँ लवणसमुद्र के स्थान पर कालोदधि का नाम कहना चाहिए।

26. As has been stated about Lavan Samudra so should be repeated for Kaalod (Kaalodadhı Sea) The only difference being that instead of Lavan Samudra Kaalodadhı should be said.

२७. [प्र.] अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं भंते ! सूरिया उदीण–पाईणमुग्गच्छ जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भिंतरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा ?

[उ.] नवरं, अभिलावो जाणेयव्वो जाव तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पुरत्थिम–पच्चत्थिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिते णं तत्थ काले पन्नत्ते समणाउसो !

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ पंचमसयए पढमो उद्देसओ समत्तो ॥

२७. [प्र.] भगवन् ! आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध मे सूर्य ईशानकोण मे उदय होकर अग्निकोण मे अस्त होते है ? इत्यादि प्रश्न ?

[उ] जिस प्रकार धातकीखण्ड की वक्तव्यता कही गई, उसी प्रकार आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध की वक्तव्यता कहनी चाहिए। विशेष यह है कि धातकीखण्ड के स्थान मे आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध का नाम कहना चाहिए, यावत् आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध मे मन्दर पर्वतो के पूर्व–पश्चिम मे न तो अवसर्पिणी है और न ही उत्सर्पिणी है, किन्तु हे आयुष्मन् ! श्रमण ! वहाँ सदैव अवस्थित (अपरिवर्तनीय) काल कहा गया है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है ! भगवन् ! यह इसी प्रकार है' यो कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरण करने लगे।

॥ पंचम शतक · प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

27. [Q.] *Bhante* ! In the inner Pushkarardh continent do suns rise in the north-east (*Ishan Kone*) and set in the south-east (*Agneya Kone*) ? And the following questions as aforesaid

[Ans.] As has been stated about Dhatakı Khand so should be repeated for inner Pushkarardh continent The only difference being that instead of Dhatakı Khand inner Pushkarardh should be said and so on up to in the region east and west of the Mandar mountain in inner Pushkarardh continent there is neither *Avasarpini* nor *Utsarpini* but *Avasthit Kaal* (changeless time), O Long lived *Shraman*

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so" With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

● END OF THE FIRST LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : द्वितीय उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : SECOND LESSON

अनिल ANIL (WIND)

स्निग्ध पथ्यादि वायु MOIST AND NOURISHING WIND

इस उद्देशक मे चार प्रकार की वायु का तथा लवणसमुद्र आदि की लम्बाई-ऊँचाई का वर्णन है।

This chapter describes four kinds of wind and the dimensions of Lavan Samudra

१. रायगिहे नगरे जाव एव वयासी–

२. [प्र.] अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया, पच्छा वाया, मदा वाया, महावाया वायंति ?

[उ] हंता, अत्थि।

१. राजगृह नगर मे यावत् (श्री गौतम स्वामी ने) भगवान से इस प्रकार पूछा–

२. [प्र.] भगवन् ! क्या **ईषत्पुरोवात** (ओस आदि से कुछ स्निग्ध या चिकनी व कुछ गीली हवा), **पथ्यवात** (वनस्पति आदि के लिए हितकर वायु), **मन्दवात** (धीमे-धीमे चलने वाली हवा) तथा **महावात** (तीव्र गति से चलने वाली, प्रचण्ड तूफानी वायु, झझावात, या ऑधी आदि) बहती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! पूर्वोक्त वायु (हवाएँ) बहती है।

1. In Rajagriha city and so on up to (Shri Gautam Swami) submitted—

2. [Q.] *Bhante* ! Do these winds blow ?—*Ishatpurovaat* (moist breeze), *Pathyavaat* (wind healthy for vegetation), *Mandavaat* (zephyr or soft and gentle breeze) and *Mahavaat* (stormy wind, gale or tempest) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! The said winds blow

३. [प्र.] अत्थि णं भंते ! पुरत्थिमेणं ईसि पुरेवाया, पच्छा वाया, मंदा वाया, महावाया वायंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

३. [प्र.] भगवन् ! क्या पूर्व दिशा से ईषत्पुरोवात, पथ्यवात, मन्दवात और महावात बहती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! (उपर्युक्त समस्त वायु पूर्व दिशा मे) बहती है।

3. [Q.] Do the *Ishatpurovaat* (moist breeze), *Pathyavaat* (wind healthy for vegetation) and *Mandavaat* (zephyr or soft and gentle breeze), *Mahavaat* (stormy wind, gale or tempest) blow in the east ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do (blow in the east)

४. एवं पच्चत्थिमेणं, दाहिणेणं, उत्तरेणं, उत्तर–पुरत्थिमेणं, पुरत्थिम–दाहिणेणं, दाहिण–पच्चत्थिमेणं, पच्छिम–उत्तरेणं।

४. इसी तरह पश्चिम मे, दक्षिण मे, उत्तर मे, ईशानकोण मे, आग्नेयकोण मे, नैऋत्यकोण मे और वायव्यकोण मे (पूर्वोक्त सब वायु बहती है।)

4. In the same way they (all the aforesaid winds) also blow in the west, south, north, north-east (*Ishan Kone*), south-east (*Agneya Kone*), south-west (*Nairitya Kone*) and south-east (*Vayavya Kone*)

५. [प्र.] जया णं भंते ! पुरित्थमेणं ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तया णं पच्चत्थिमेण वि ईसिं पुरेवाया० ? जया णं पच्चत्थिमेणं ईसिंपुरेवाया० तया णं पुरत्थिमेण वि ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जया ण पुरत्थिमेणं तदा णं पच्चत्थिमेण वि ईसिं, जया णं पच्चत्थिमेणं तदा णं पुरत्थिमेण वि ईसिं। एवं दिसासु, विदिसासु।

५. [प्र.] भगवन् ! जब पूर्व मे ईषत्पुरोवात, पथ्यवात, मन्दवात और महावात बहती है, तब क्या पश्चिम मे भी ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ बहती है ? और जब पश्चिम मे ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है, तब क्या पूर्व मे भी (वे हवाएँ) बहती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! जब पूर्व मे ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ बहती है, तब वे सब पश्चिम मे भी बहती है और जब पश्चिम मे ईषत्पुरोवात आदि बहती है, तब वे सब हवाएँ पूर्व मे भी बहती है। इसी प्रकार सब दिशाओ, विदिशाओ मे भी उपर्युक्त कथन करना चाहिए।

5. [Q.] *Bhante* ! When the *Ishatpurovaat* (moist breeze), *Pathyavaat* (wind healthy for vegetation), *Mandavaat* (zephyr or soft and gentle breeze) and *Mahavaat* (stormy wind, gale or tempest) blow in the east, do they also blow in the west ? And when they blow in the west do they also blow in the east ?

[Ans.] Yes, Gautam ! When the aforesaid winds blow in the east, they also blow in the west, and when they blow in the west they also blow in the east In the same way this statement should be repeated for all cardinal and intermediate directions

६. [प्र.] अत्थि णं भंते ! दीविच्चया ईसिं ?

[उ.] हंता, अत्थि।

७. [प्र.] अत्थि णं भंते ! सामुद्दया ईसिं पुरेवाया ?

[उ.] हंता, अत्थि।

६. [प्र.] भगवन् ! क्या द्वीप मे भी ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ होती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! होती है।

७. [प्र] भगवन् ! क्या समुद्र मे भी ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ होती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! (समुद्र मे भी ये सब हवाएँ) होती है।

6. [Q.] *Bhante* ! Do these winds also exist on continents ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

7. [Q.] *Bhante* ! Do these winds also exist on seas ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

८. [प्र १] जया णं भंते ! दीविच्चया ईसि पुरेवाया तया णं सामुद्दया वि ईसिं पुरेवाया, जया णं सामुद्दया ईसि पुरेवाया तया णं दीविच्चया वि ईसि पुरेवाया ?

[उ] णो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति जया ण दीविच्चया ईसिं पुरेवाया णो णं तया सामुद्दया ईसि पुरेवाया, जया ण सामुद्दया ईसि पुरेवाया णो णं तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया ?

[उ] गोयमा ! तेसि णं वायाणं अन्नमन्नस्स विवच्चासेणं लवणे समुद्दे वेलं नायिक्कमति। से तेणट्ठेणं जाव वाता वायंति।

८. [प्र १] भगवन् ! जब द्वीप मे ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है, तब क्या समुद्र की भी ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है ? और जब समुद्र की ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है, तब क्या द्वीप की भी ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है ?

[उ] हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ (शक्य) नही है।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि जब द्वीप की ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ बहती है, तब समुद्र की ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ नही बहती और जब समुद्र की ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ बहती है, तब द्वीप की ईषत्पुरोवात आदि हवाएँ नही बहती ?

[उ] गौतम ! ये सब वायु (हवाएँ) परस्पर **व्यत्यासरूप** से (एक-दूसरे के विपरीत, पृथक्-पृथक् तथा एक-दूसरे के साथ नही) बहती है। (जब द्वीप की ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है, तब समुद्र की वायु नही बहती और जब समुद्र की ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है, तब द्वीप की ये सब वायु नही बहती। इस प्रकार ये सब हवाएँ एक-दूसरे के विपरीत बहती है।) साथ ही, वे वायु लवणसमुद्र की वेला (ऊपर उठती लहरो या ज्वार-भाटा) का उल्लघन नही करती। इस कारण यावत् वे वायु पूर्वोक्त रूप से बहती है।

8. [Q. 1] *Bhante* ! When the aforesaid winds blow on the continents, do they also blow on the seas, and when they blow on the seas do they also blow on the continents ?

[Ans.] No, Gautam ! That is not correct

[Q. 2] *Bhante* ! Why do you say that when the aforesaid winds blow on the continents, they do not blow on the seas, and when they blow on the seas they do not blow on the continents ?

[Ans.] Gautam ! These winds are different (different and opposite for continents and seas, which means that when these winds blow on the continent they either do not blow on the seas or blow in the opposite direction) Also these winds (on the Salt Sea) do not violate the limits of Lavan Samudra (Salt Sea) That is why they blow as aforesaid

वायु का स्वरूप NATURE OF WINDS

९. [प्र. १] अत्थि णं भंते ! ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

[प्र. २] कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया जाव वायति ?

[उ.] गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारियं रियंति तया णं ईसिं पुरेवाया जाव वायंति।

९. [प्र. १] भगवन् ! क्या ईषत्पुरोवात, पथ्यवात, मन्दवात और महावात बहती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! (ये सब) बहती है।

[प्र. २] भगवन् ! ईषत्पुरोवात आदि वायु कब बहती है ?

[उ.] गौतम ! जब वायुकाय अपने स्वभावपूर्वक गति करता है, तब ईषत्पुरोवात आदि वायु यावत् बहती है।

9. [Q. 1] *Bhante* ! Do the *Ishatpurovaat* (moist breeze), *Pathyavaat* (wind healthy for vegetation), *Mandavaat* (zephyr or soft and gentle breeze) and *Mahavaat* (stormy wind, gale or tempest) blow ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They all do

[Q. 2] *Bhante* ! When these winds including *Ishatpurovaat* blow ?

[Ans.] Gautam ! Winds including *Ishatpurovaat* blow when air-bodied beings (*vayu-kaya*) indulge in their natural movement.

१०. [प्र. १] अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया ?

[उ.] हंता, अत्थि।

[प्र. २] कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया ?

[उ.] गोयमा ! जया णं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ तया णं ईसिं पुरेवाया।

१०. [प्र. १] भगवन् ! क्या ईषत्पुरोवात आदि वायु है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! है।

[प्र २] भगवन् ! ईषत्पुरोवात आदि वायु (और भी) कब चलती है ?

[उ.] हे गौतम ! जब वायुकाय उत्तरक्रियापूर्वक (वैक्रियशरीर बनाकर) गति करती है, तब ईषत्पुरोवात आदि वायु बहती है।

10. [Q. 1] *Bhante* ! Do the *Ishatpurovaat* (moist breeze) and other winds exist ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They all do

[Q. 2] *Bhante* ! When these winds including *Ishatpurovaat* come into existence ?

[Ans.] Gautam ! Winds including *Ishatpurovaat* come into existence when air-bodied beings (*vayu-kaya*) indulge in movement by creating secondary transmuted body (*uttar-vaikriya sharira*)

११. [प्र १] अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया ?

[उ.] हंता, अत्थि।

११. [प्र. १] भगवन् ! क्या ईषत्पुरोवात आदि वायु (ही) है (न) ?

[उ.] हाँ, गौतम ! वे (सब वायु ही) है।

11. [Q. 1] *Bhante* ! Are the *Ishatpurovaat* (moist breeze) etc winds ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They are

[प्र. २] कया ण भंते ! ईसिं पुरेवाया पच्छावाया० ?

[उ] जया णं वाउकुमारा वाउकुमारीओ वा अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरेति तया णं ईसिं पुरेवाया,.... जाव वायंति।

[प्र २] भगवन् ! ईषत्पुरोवात, पथ्यवात आदि (और) कब (किस समय मे) चलती है ?

[उ.] गौतम ! जब वायुकुमार देव और वायुकुमार देवियाँ, अपने लिए, दूसरो के लिए या दोनो के लिए वायुकाय की उदीरणा करते है, तब ईषत्पुरोवात आदि वायु यावत् चलती (बहती) है।

[Q. 2] *Bhante* ! When these winds including *Ishatpurovaat* come into existence and blow ?

[Ans.] Gautam ! winds including *Ishatpurovaat* come into existence and blow when Vayu Kumar gods and goddesses fructify or precipitate (*udirana*) air-bodied beings (*vayu-kaya*) for themselves or others or both.

१२. [प्र.] वाउकाए णं भंते ! वाउकायं चेव आणमति वा पाणमति वा ?

[उ.] जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा–अणेगसतसहस्स०। पुट्ठे उद्दाइ वा। ससरीरी निक्खमइ।

१२. [प्र.] भगवन् ! क्या वायुकाय वायुकाय को ही श्वासरूप मे ग्रहण करता है और नि श्वासरूप मे छोडता है ?

[उ.] गौतम ! इस सम्बन्ध मे स्कन्दक परिव्राजक के उद्देशक मे कहे अनुसार चार आलापक जानना चाहिए–यावत् (१) अनेक लाख बार मरकर, (२) स्पृष्ट हो (स्पर्श पा) कर, (३) मरता है, और (४) शरीर–सहित निकलता है।

12. [Q.] *Bhante* ! Do the air-bodied beings inhale and exhale air-bodied beings in there respiration ?

[Ans.] Gautam ! In this regard refer to the four statements in the Chapter on Skandak and so on up to (1) dies many hundred thousand times, (2) by being touched, (3) dies and (4) moves out with body.

विवेचन . उक्त १२ सूत्रो का निष्कर्ष इस प्रकार है–(१) ईषत्पुरोवात आदि चारो प्रकार की वायु चलती है। (२) ये सब सुमेरु से पूर्वादि चारो दिशाओ और ईशानादि चारो विदिशाओ मे चलती है। (३) ये पूर्व मे बहती है, तब पश्चिम मे भी बहती है और पश्चिम मे बहती है, तब पूर्व मे भी। (४) द्वीप और समुद्र मे भी ये सब वायु होती है। (५) किन्तु जब ये द्वीप मे बहती है, तब समुद्र मे नही बहती और समुद्र मे बहती है, तब द्वीप मे नही बहती, क्योकि ये सब एक–दूसरे से विपरीत पृथक्–पृथक् बहती है, लवणसमुद्रीय वेला का अतिक्रमण नही करती। (६) ईषत्पुरोवात आदि वायु है और वे तीन समय मे तीन कारणो से चलती है–(I) जब वायुकाय स्व–स्वभावपूर्वक गति करता है, (II) जब वह उत्तरवैक्रिय से वैक्रिय शरीर बनाकर गति करता है, तथा (III) जब वायुकुमार देव–देवीगण स्व, पर एव उभय के निमित्त वायुकाय की उदीरणा करते है। (७) वायुकाय अचित्त हुए वायुकाय को ही श्वासोच्छ्वास के रूप मे ग्रहण करता–छोडता है।

द्वीपीय और समुद्रीय हवाएँ एक साथ नही बहती–इसका तात्पर्य यह है कि जिस समय अमुक प्रकार की ईषत्पुरोवात आदि वायु चलती है, तब उसी प्रकार की दूसरी ईषत्पुरोवात आदि वायु नही चलती। इसका कारण है–वायु के द्रव्यो का स्वभाव एव सामर्थ्य ऐसा है कि वह समुद्र की वेला का अतिक्रमण नही करती। इसका आशय यह भी सम्भव है–ग्रीष्म ऋतु मे समुद्र की ओर से आई हुई शीत (जल से स्निग्ध एव ठण्डी) वायु जब चलती है, तब द्वीप की जमीन से उठी हुई उष्ण वायु नही चलती। शीत ऋतु मे जब गर्म हवाएँ चलती है, तब वे द्वीप की जमीन से आई हुई होती है। यानी जब द्वीपीय उष्ण वायु चलती है, तब समुद्रीय शीत वायु नही चलती। समुद्र की शीतल और द्वीप की उष्ण दोनो हवाएँ परस्पर विरुद्ध तथा परस्पर उपघातक होने से ये दोनो एक साथ नही चलती अपितु उन दोनो मे से एक ही वायु चलती है। *(स्कन्दक के प्रश्नोत्तर, शतक २, उ १, देखे)*

Elaboration—The gist of these 12 aphorism is as follows—(1) Four types of winds including *Ishatpurovaat* blow (2) They blow in all the four cardinal directions and intermediate directions of the Meru Mountain

(3) When they blow in the east they also blow in the west and vice versa (4) All these winds exist on continents as well as seas (5) However, when they blow on the continents they do not blow on the seas and vice versa. This is because they are different and opposite They also do not violate the boundaries of Lavan Samudra (6) *Ishatpurovaat* etc are winds and they blow for three different reasons at three different times—(a) when air-bodied beings move naturally, (b) when air-bodied beings indulge in movement by creating secondary transmuted body (*uttar-vaikriya sharira*), and (c) when Vayu Kumar gods and goddesses precipitate air-bodied beings for themselves or others or both (7) Air-bodied beings inhale and exhale dead air-bodied beings only

The continental and oceanic winds do not blow at the same time This statement means that when one type of wind blows other type of wind does not The reason for this is that the properties and capacity of the constituent matter of these winds is such that they do not violate the boundaries of the sea Another interpretation of this could be that in the summer when the moist and cold wind from the sea blows, the hot winds coming from the land do not blow In the winter when the hot winds blow they come from the land In other words when continental hot winds blow, the oceanic cold winds do not As the hot continental winds and cold oceanic winds are mutually opposed and destructive they do not blow at the same time, only one of them blows *(Skandak, Shatak-2, lesson 1)*

ओदन आदि के शरीर **BODIES OF RICE ETC**

१३. [प्र] अह भंते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा, एए ण किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए, य जे घणे दव्वे एए ण पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च वणस्सतिजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीता सत्थपरिणामिया अगणिज्झामिया अगणिज्झूसिया अगणिसेविया, अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा इ वत्तव्वं सिया। सुराए य जे दवे दव्वे एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च आउजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीआ जाव अगणिसरीरा ति वत्तव्वं सिया।

१३. [प्र] भगवन् ! ओदन (चावल), कुल्माष (उडद) और सुरा (मदिरा), इन तीनो द्रव्यो का शरीर किन जीवो का कहना चाहिए ?

[उ] गौतम ! ओदन, कुल्माष और सुरा मे जो घन (ठोस या कठिन) द्रव्य है, वे **पूर्वभाव-प्रज्ञापना** (पूर्वावस्था) की अपेक्षा से वनस्पतिजीव के शरीर है। उसके पश्चात् जब वे (ओदनादि द्रव्य) **शस्त्रातीत** (ऊखल, मूसल आदि शस्त्रो से कूटे जाकर पूर्व पर्याय से मुक्त) हो जाते है, **शस्त्र-परिणत** (शस्त्र लगने से नये रूप मे परिवर्तित) हो जाते है, **अग्निध्यामित** (आग मे जलाये गए एव काले वर्ण के बने हुए),

अग्निझूषित (अग्नि से तप्त हो जाने से पूर्व स्वभाव से रहित) अग्निसेवित और अग्निपरिणामित (अग्नि मे जल जाने से नये आकार मे परिवर्तित) हो जाते है, तब वे द्रव्य अग्नि के शरीर कहलाते है तथा सुरा (मदिरा) मे जो तरल पदार्थ है, वह पूर्वभाव-प्रज्ञापना (भूतपूर्व शरीर) की अपेक्षा से अप्कायिक जीवो का शरीर है और जब वह तरल पदार्थ (पूर्वोक्त प्रकार से) शस्त्रातीत यावत् अग्निपरिणामित हो जाता है, तब वह भाग, अग्निकाय-शरीर कहा जा सकता है।

13. [Q.] *Bhante* ! To what category of living beings do the bodies of rice (odan), *Kulmash* (*Udad*, a pulse) and wine (*Sura*) belong ?

[Ans.] Gautam ! The solid part of rice (*odan*), *Kulmash* (*Udad*; a pulse) and wine (*Sura*) are the bodies of plant-bodied beings in terms of their earlier or original state After that when they are processed with implements (*shastrateet*), such as mortar and grinder, when they are mechanically transformed (*shastra-parinat*), when they are roasted in fire (*agnidhyamit*), when they loose their properties due to fire (*agnijhushit*), when they are cooked in fire (*agnisevit*) and when they are transformed by fire (*agniparinamit*) they are called bodies of fire-bodied beings The liquid part of wine are the bodies of water-bodied beings in terms of their earlier or original state and when that liquid part is transformed by implements and fire, it is called bodies of fire-bodied beings

लोह आदि के शरीर **BODIES OF IRON ETC**

१४. [प्र.] **अह णं भंते ! अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया, एए णं किंसरीरा इ वत्तव्वं सिया ?**

[उ.] **गोयमा ! अए तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया, एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढविजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीता जाव अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया।**

१४. [प्र.] भगवन् ! लोहा, ताँबा, त्रपुष् (कलई या रागा), शीशा, उपल (जला हुआ पत्थर-कोयला) और कसट्टिका (लोहे का काट-मैल), ये सब द्रव्य किन (जीवो के) शरीर कहलाते है ?

[उ] गौतम ! लोहा, ताँबा, कलई, शीशा, कोयला और लोहे का काट, ये सब द्रव्य-पूर्व अवस्था की अपेक्षा से पृथ्वीकायिक जीवो के शरीर कहे जा सकते है और उसके बाद शस्त्रातीत यावत् शस्त्र-परिणामित होने पर ये अग्निकायिक जीवो के शरीर कहे जा सकते है।

14. [Q.] *Bhante* ! To what category of beings do the bodies of iron, copper, tin, lead, coal and rust belong ?

[Ans.] Gautam ! Iron, copper, tin, lead, coal and rust are the bodies of earth-bodied beings in terms of their earlier or original state After that

when they are processed with implements and undergo transformation they may be called bodies of fire-bodied beings

अस्थि आदि के शरीर BODIES OF BONES ETC

१५. [प्र.] अह भंते ! अट्ठी अट्ठिज्झामे, चम्मे चम्मज्झामे, रोमे रोमज्झामे, सिंगे सिंगज्झामे, खुरे खुरज्झामे, नखे नखज्झामे, एते णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिंगे, खुरे नहे, एए णं तसपाणजीवसरीरा। अट्ठिज्झामे चम्मज्झामे रोमज्झामे सिगज्झामे खुरज्झामे णहज्झामे, एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च तसपाणजीवसरीरा, ततो पच्छा सत्थातीता जाव अगणिति वत्तव्वं सिया।

१५. [प्र.] भगवन् ! ये हड्डी, अस्थिध्याम (अग्नि से दूसरे स्वरूप को प्राप्त हड्डी और उसका जला हुआ भाग), चमडा, चमडे का जला हुआ भाग, रोम, अग्नि ज्वलित रोम, सीग, अग्नि प्रज्वलित विकृत सीग, खुर, अग्नि प्रज्वलित खुर, नख और अग्नि प्रज्वलित नख, ये सब किन (जीवो) के शरीर कहे जा सकते है ?

[उ.] गौतम ! अस्थि (हड्डी), चमडा, रोम, सीग, खुर और नख, ये सब त्रस जीवो के शरीर कहे जा सकते है और जली हुई हड्डी, प्रज्वलित विकृत चमडा, जले हुए रोम, प्रज्वलित-रूपान्तर प्राप्त सीग, प्रज्वलित खुर और प्रज्वलित नख, ये सब पूर्वभावप्रज्ञापना (भूतपूर्व शरीर) की अपेक्षा से तो त्रस जीवो के शरीर, किन्तु उसके पश्चात् शस्त्रातीत यावत् अग्निपरिणामित होने पर ये अग्निकायिक जीवो के शरीर कहे जा सकते है।

15. [Q.] *Bhante* ! To what category of living beings do the bodies of bone, burnt bone, skin, burnt skin, pelt, burnt pelt, horn, burnt horn, hoof, burnt hoof, nail and burnt nail belong ?

[Ans.] Gautam ! Bone, skin, pelt, horn, hoof, nail these all are bodies of mobile beings (*tras jiva*) Burnt bone, burnt skin, burnt pelt, burnt horn, burnt hoof, burnt nail are the bodies of mobile beings in terms of their earlier or original state After that when they are processed with implements and so on up to fire and undergo transformation they may be called bodies of fire-bodied beings

१६. [प्र.] अह भंते ! इंगाले, छारिए, भुसे, गोमए एए णं किंसरीरा ति वत्तव्व सिया ?

[उ.] गोयमा ! इंगाले, छारिए, भुसे, गोमए, एए णं पुव्वभावपण्णवणाए एगिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामिया वि जाव पंचिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामिया वि, तओ पच्छा सत्थातीता जाव अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया।

१६. [प्र.] भगवन् ! अंगार (कोयला, जला हुआ ईंधन या अंगारा), राख, भूसा और गोबर, इन सबको किन जीवो के शरीर कहे जाएँ ?

[उ.] गौतम ! अगार, राख, भूसा और गोबर (छाणा), ये सब पूर्वभाव प्रज्ञापना की अपेक्षा से (वनस्पतिकाय रूप) एकेन्द्रिय जीवो द्वारा अपने शरीर रूप से, प्रयोगो से–अपने व्यापार से अपने साथ परिणामित एकेन्द्रिय शरीर है, यावत् (यथासम्भव द्वीन्द्रिय से) पचेन्द्रिय जीवो तक के शरीर भी कहे जा सकते है। पचेन्द्रिय जीवो (पशुओ) के शरीर मे द्वीन्द्रियादि जीव चले जाने से उनके शरीर प्रयोग से परिणामित होने से उन्हे द्वीन्द्रिय जीव से लेकर पचेन्द्रिय जीव तक का शरीर कहा जा सकता है और तत्पश्चात् शस्त्रातीत यावत् अग्निकाय–परिणामित हो जाने पर वे अग्निकायिक जीवो के शरीर कहे जाते है।

16. [Q.] *Bhante* ! To what category of beings do the bodies of cinder (or other burning matter), ash, hay and cow-dung belong ?

[Ans.] Gautam ! In terms of their original state, cinder (or other burning matter), ash, hay and cow-dung all these are bodies and parts thereof of one-sensed beings and so on up to five-sensed beings transformed through their natural activities (also one to five-sensed beings entering the bodies of one to five sensed beings and getting transformed through the natural activities of those beings) After that when they are processed with implements and so on up to... fire and undergo transformation they may be called bodies of fire-bodied beings

विवेचन सूत्र १३ से १६ तक के सूत्र परिणामवाद के सिद्धान्त के प्ररूपक है। वस्तु (द्रव्य अथवा जीव) जिस भाव मे परिणत होती है, वह पूर्व भाव (पूर्व अवस्था) को छोडकर तत्काल उत्तर अवस्था को प्राप्त हो जाती है।

Elaboration—Aphorisms 13-16 convey the theory of evolutionalism (parinam-vaad) When undergoing transformation a thing (matter or life) leaves its existing state and at once evolves into the secondary state

लवणसमुद्र की स्थिति DIMENSIONS OF LAVAN-SAMUDRA

१७. [प्र.] लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतियं चक्कवाल विक्खंभेणं पन्नत्ते ?

[उ.] एवं णेयव्वं जाव लोगट्ठिती लोगाणुभावे।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव विहरति।

॥ पंचम सए : बिइओ उद्देसओ समत्तो ॥

१७. [प्र.] भगवन् ! लवणसमुद्र का चक्रवाल–विष्कम्भ (सब तरफ की चौडाई) कितना कहा है ?

[उ.] गौतम ! (लवणसमुद्र के सम्बन्ध मे सारा वर्णन) पहले कहे अनुसार जान लेना चाहिए, यावत् लोकस्थिति लोकानुभाव तक (जीवाभिगमोक्त सूत्रपाठ) कहना चाहिए।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर भगवान गौतम स्वामी यावत् विचरण करने लगे।

17. [Q.] *Bhante* ! What is the circumference (*chakravaal-vishkambh*) of Lavan Samudra (Salt Sea) ?

[Ans.] Gautam ! Repeat the description as mentioned earlier (in *Jivabhigam Sutra*) up to location and nature of *Lok*

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन **जीवाभिगम मे लवणसमुद्र–सम्बन्धी वर्णन सक्षेप मे**–लवणसमुद्र का **सस्थान** गोतीर्थ, नौका, सीप–सम्पुट, अश्वस्कन्ध और वलभी (छप्पर) के जैसा, गोल चूडी के आकार का है। उसका चक्रवालविष्कम्भ २ लाख योजन का है तथा १५,८१,१३९ से कुछ अधिक उसका परिक्षेप (घेरा) है। उसका उद्वेध (गहराई) १ हजार योजन है। इसकी ऊँचाई १६ हजार योजन, सर्वाग्र १७ हजार योजन का है। इतने विस्तृत और विशाल लवणसमुद्र से अब तक जम्बूद्वीप क्यो नही डूबा, इसका कारण है--भरत और ऐरवत क्षेत्रो मे स्वभाव से भद्र, विनीत, उपशान्त, मन्दकषाय, सरल, कोमल, जितेन्द्रिय, भद्र और नम्र अरिहन्त, चक्रवर्ती, बलदेव, चारण, विद्याधर, श्रमण, श्रमणी, श्रावक, श्राविका एव धर्मात्मा मनुष्य है, उनके प्रभाव से लवणसमुद्र जम्बूद्वीप को डुबाता नही है, यावत् जलमय नही करता यावत् इस प्रकार का लोक का स्वभाव भी है, यहाँ तक कहना चाहिए। *(जीवाभिगमसूत्र, प्रतिपत्ति ३, उद्देशक २, सूत्र १७३, लवणसमुद्राधिकार, पृ ३२४–३२५)*

॥ पचम शतक द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Brief description of Lavan Samudra from *Jivabhigam Sutra*—The structure of Lavan Samudra is round like *gotirtha* (cow-shed), boat, oyster, horse's neck, thatched roof (round) or bangle Its circumference (*chakravaal-vishkambh*) is 2,00,000 Yojans The area covered is 15,81,139 Yojans Its depth is 1,000 Yojans Its average height is 16,000 Yojans Its highest point is 17,000 Yojans It is due to the influence of gentle, humble, serene, mild-passioned, simple, delicate, sense-conquered and polite souls like *Arihant*, *Chakravarti*, *Baladev*, *Chaaran*, *Vidyadhar*, *Shraman*, *Shramani*, *Shravak*, *Shravika* and other religious people living in Bharat and Airavat areas that such large and wide Lavan Samudra does not inundate Jambu continent and so on up to engulf it, also this is the nature of *Lok* *(Jivabhigam Sutra 3/2/173, Lavansamudradhikar, pp 324-325)*

● END OF THE SECOND LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : तृतीय उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : THIRD LESSON

ग्रन्थिका GRANTHIKA (THE KNOT)

आयुबन्ध विषयक अन्यतीर्थिको की मान्यताएँ **BELIEF OF OTHER SCHOOLS ABOUT LIFE-SPAN BONDAGE**

१. [प्र.] अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवेंति, परूवेंति,

से जहानामए जालगंठिया सिया आणुपुव्विगढिया, अणंतरगढिया, परंपरगढिया, अन्नमन्नढिया, अन्नमन्नगुरुयत्ताए, अन्नमन्नभारियत्ताए, अन्नमन्नगुरुयसंभारियत्ताए अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजातिसहस्सेसु बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति।

एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ, तं जहा–इहभवियाउयं च परभवियाउयं च; जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, जाव से कहमेयं भंते ! एवं ?

[उ.] गोयमा ! ज ण ते अन्नउत्थिया तं चेव जाव परभवियाउयं च, जे ते एवमाहंसु तं मिच्छा।

अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि से जहानामए जालगंठिया सिया जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजाइसहस्सेहिं, बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठति।

एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसवेदेइ। तं जहा–इहभवियाउयं वा परभवियाउयं वा, जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ नो तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, जं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ नो तं समय इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ।

पडिसंवेदेति। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा–इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा।

इहभवियाउयस्स पडिसंवेदणाए, नो परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, परभवियाउयस्स पडिसंवेदणाए नो इहभवियाउयं।

१. [प्र.] भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते है, भाषण करते है, बतलाते है, प्ररूपणा करते है–

कि जैसा कोई (एक) जालग्रन्थि (गाँठें लगी हुई, जाल) हो, जिसमे क्रम से गाँठे दी हुई हो, एक के बाद दूसरी अन्तररहित (अनन्तर) गाँठे लगाई हुई हो, परम्परा से गूँथी हुई हों, परस्पर गूँथी हुई हो, ऐसी वह जालग्रन्थि परस्पर विस्तार रूप से, परस्पर भाररूप से तथा परस्पर विस्तार और भाररूप से, परस्पर सघटित रूप से यावत् रहती है, (अर्थात्–जाल तो एक है, लेकिन उसमे जैसे अनेक गाँठे सलग्न रहती है) वैसे ही बहुत–से जीवो के साथ क्रमश हजारो–लाखो जन्मो से सम्बन्धित बहुत–से आयुष्य परस्पर क्रमश. गूँथे हुए है, यावत् परस्पर सलग्न रहते है।

ऐसी स्थिति मे उनमे से एक जीव भी एक समय मे दो आयुष्यो को वेदता (भोगता–अनुभव करता) है। यथा–एक ही जीव, इस भव का आयुष्य वेदता है और वही जीव, परभव का भी आयुष्य वेदता है। जिस समय इस भव के आयुष्य का वेदन करता है, उसी समय वह जीव परभव के आयुष्य का भी वेदन करता है, यावत् हे भगवन् ! यह (बात) किस प्रकार है ?

[उ] गौतम ! उन अन्यतीर्थिको ने जो यह कहा है कि यावत् एक ही जीव, एक ही समय मे इस भव का और पर–भव का–दोनो का आयुष्य (एक साथ) वेदता है, उनका यह सब कथन मिथ्या है।

–"हे गौतम ! मै इस प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि–जैसे कोई एक जालग्रन्थि हो और वह यावत् परस्पर सघटित (सामूहिक रूप से सलग्न) रहती है, इसी प्रकार क्रमपूर्वक बहुत–से सहस्रो जन्मो से सम्बन्धित, बहुत–से हजारो आयुष्य, एक–एक जीव के साथ शृखला (साँकल) की कडी के समान परस्पर क्रमश ग्रथित (गूँथे हुए) यावत् रहते है।

(ऐसा होने से) एक जीव एक समय मे एक ही आयुष्य का प्रतिसवेदन (अनुभव) करता है, जैसे कि–या तो वह इस भव का ही आयुष्य वेदता है, अथवा पर–भव का ही आयुष्य वेदता है। परन्तु जिस समय इस भव के आयुष्य का प्रतिसवेदन करता है, उस समय पर–भव के आयुष्य का प्रतिसवेदन नही करता, और जिस समय परभव के आयुष्य का प्रतिसवेदन करता है, उस समय इस भव के आयुष्य का प्रतिसवेदन नही करता।

इस भव के आयुष्य का वेदन करने से पर–भव का आयुष्य नही वेदा जाता और पर–भव के आयुष्य का वेदन करने से इस भव का आयुष्य नही वेदा जाता।

इस प्रकार एक जीव एक समय मे एक ही आयुष्य का वेदन करता है, वह इस प्रकार, या तो इस भव के आयुष्य का, अथवा परभव के आयुष्य का।

1. [Q.] *Bhante* ! People of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*), assert (*bhashanti*), elaborate (*prajnapayanti*) and propagate (*prarupayanti*) that—

Suppose there is a net in which knots have been tied one after another without a gap in a continuous series and tied to each other And the said knotted net exists in its entire expanse, in its entire weight, in its entire expanse and weight, and its integrated form (In other words the net is one but it is composed of numerous integrated knots) In the same way hundreds of thousands of life-spans related to hundreds of thousands of births are progressively intertwined with each other and so on up to exist in integrated form

In these conditions any one of these living beings lives and experiences two life-spans at the same time Which means that the same being experiences the life-span (*ayushya*) of this birth (*bhava*) as well as

that of the next birth When he experiences the life-span (*ayushya*) of this birth, at the same time he also experiences the life-span (*ayushya*) of the next birth and so on up to *Bhante* ! How is it so ?

[Ans.] Gautam ! According to you the *anyatirthiks* (heretics) say and so on up to the same being experiences the life-span (*ayushya*) of this birth (*bhava*) as well as that of the next birth What they say is all false or wrong

Gautam ! I say (*akhyanti*) and so on up to and propagate (*prarupayanti*) that—Suppose there is a net in which knots have been tied and so on up to its integrated form In the same way hundreds of thousands of life-spans related to hundreds of thousands of births are progressively intertwined with each other and so on up to exist in integrated form

In these conditions any one of these living beings lives and experiences only one life-span (*ayushya*) at any one given time Which means that the same being either experiences the life-span (*ayushya*) of this birth (*bhava*) or that of the next birth When he experiences the life-span (*ayushya*) of this birth at that time he does not experience the life-span (*ayushya*) of the next birth, and when he experiences the life-span (*ayushya*) of the next birth at that time he does not experience the life-span (*ayushya*) of this birth

By experiencing the life-span (*ayushya*) of this birth one cannot experience the life-span (*ayushya*) of the next birth, and by experiencing the life-span (*ayushya*) of the next birth one cannot experience the life-span (*ayushya*) of this birth

This way one being experiences the life span of one birth at any one given time Which means he can either experience the life-span (*ayushya*) of this birth or that of the next birth

विवेचन : अन्यतीर्थिको की इस मान्यता का उल्लेख पतजलि के योग दर्शन २/१३ मे मिलता है। टीकाकार का स्पष्टीकरण है कि यदि सब जीवो के सब आयुष्य का सवेदन एक साथ हो तो एक जन्म मे अनेक जन्मो के सवेदन का प्रसग आ जायेगा। जो असगत है। *(भगवती वृत्ति)*

Elaboration—This belief of other schools finds mention in Patanjali's *Yoga Sutra* (2/13) The commentator (*Tika*) explains that if all beings could experience life-spans of all their births at once, it would mean experiencing life-spans of many births in one birth, which is illogical and impractical *(Bhagavati Vritti)*

आयुष्य सहित गति विचार **LIFE-SPAN AND REBIRTH**

२. [प्र.] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं साउए संकमति, निराउए संकमति ?

[उ.] गोयमा ! साउए संकमति, नो निराउए संकमति।

२. [प्र.] भगवन् ! जो जीव नैरयिको मे उत्पन्न होने वाला है, क्या वह जीव यही से आयुष्ययुक्त होकर नरक मे जाता है, अथवा आयुष्यरहित होकर जाता है ?

[उ.] गौतम ! (जो जीव नैरयिको मे उत्पन्न होने वाला है) वह यही से आयुष्ययुक्त होकर नरक मे जाता है, परन्तु आयुष्यरहित होकर नरक मे नही जाता।

2. [Q.] *Bhante* ! The soul destined to be born among infernal beings goes to hell with a life-span (*ayushya*) acquired here or does it go without acquiring such life-span (*ayushya*) ?

[Ans.] Gautam ! The soul destined to be born among infernal beings goes to hell with a life-span (*ayushya*) acquired here and not without acquiring such life-span (*ayushya*)

३. [प्र.] से णं भंते ! आउए कहिं कडे ? कहिं समाइण्णे ?

[उ.] गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे।

४. एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ।

३. [प्र.] हे भगवन् ! उस जीव ने वह आयुष्य कहाँ बाँधा ? और उस आयुष्य-सम्बन्धी आचरण कहाँ किया ?

[उ.] गौतम ! उस (नारक) जीव ने वह आयुष्य पूर्वभव मे बाँधा था और उस आयुष्य-सम्बन्धी आचरण भी पूर्वभव मे किया था।

४. जिस प्रकार यह बात नैरयिक के विषय मे कही गई है, इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक सभी दण्डको के विषय मे कहनी चाहिए।

3. [Q.] *Bhante* ! Where did that soul acquire the bondage of that life-span (*ayushya*) ? And where did it indulge in the conduct responsible for this bondage ?

[Ans.] Gautam ! That soul acquired the bondage of that life-span (*ayushya*) during its previous birth And it indulged in the conduct responsible for this bondage also during its previous birth.

4. As has been said about infernal beings so should be repeated here for all the twenty four *Dandaks* (places of suffering) up to Vaimaniks.

५. [प्र.] से नूणं भंते ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तं जहा—नेरइयाउयं वा जाव देवाउयं वा ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तं जहा—नेरइयाउयं वा, तिरि—मणु—देवाउयं वा। नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयाउयं वा। तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, भेओ सव्वो भाणियव्वो।

मणुस्साउयं दुविहं। देवाउयं चउविहं।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ पंचम सए : तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

५. [प्र] भगवन् ! जो जीव जिस योनि मे उत्पन्न होता है, क्या वह जीव, उस योनि सम्बन्धी आयुष्य बाँधता है ? जैसे कि जो जीव नरकयोनि मे उत्पन्न होने योग्य होता है, क्या वह नरकयोनि का आयुष्य बाँधता है, यावत् देवयोनि मे उत्पन्न होने योग्य जीव क्या देवयोनि का आयुष्य बाँधता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! जो जीव जिस योनि मे उत्पन्न होने योग्य होता है, वह जीव उस योनि—सम्बन्धी आयुष्य को बाँधता है। जैसे कि नरकयोनि मे उत्पन्न होने योग्य जीव नरकयोनि का आयुष्य बाँधता है, तिर्यञ्चयोनि मे उत्पन्न होने योग्य जीव तिर्यञ्चयोनि का आयुष्य बाधता है, मनुष्ययोनि मे उत्पन्न होने योग्य जीव मनुष्ययोनि का आयुष्य बाँधता है यावत् देवयोनि मे उत्पन्न होने योग्य जीव देवयोनि का आयुष्य बाँधता है।

जो जीव नरक का आयुष्य बाँधता है, वह सात प्रकार की नरकभूमि मे से किसी एक प्रकार की नरकभूमि सम्बन्धी आयुष्य बाँधता है। यथा—रत्नप्रभा (प्रथम नरक) पृथ्वी का आयुष्य अथवा यावत् अध सप्तमपृथ्वी (सप्तम नरक) का आयुष्य बाँधता है। जो जीव तिर्यञ्चयोनि का आयुष्य बाँधता है, वह पाँच प्रकार के तिर्यञ्चो मे से किसी एक प्रकार का तिर्यञ्च—सम्बन्धी आयुष्य बाँधता है। यथा—एकेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनि का आयुष्य इत्यादि। तिर्यञ्च के सभी भेद—विशेष विस्तृत रूप से यहाँ कहने चाहिए।

जो जीव मनुष्य—सम्बन्धी आयुष्य बाँधता है, वह दो प्रकार के मनुष्यो मे से किसी एक प्रकार के मनुष्य—सम्बन्धी आयुष्य को बाँधता है, (यथा—सम्मूर्च्छिम मनुष्य का, अथवा गर्भज मनुष्य का।) जो जीव देव—सम्बन्धी आयुष्य बाँधता है, तो वह चार प्रकार के देवो मे से किसी एक प्रकार के देव का आयुष्य बाँधता है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है,' यो कहकर यावत् विचरते है।

5. [Q.] *Bhante* ! Does a soul born in a particular genus (*yoni*) acquire the bondage of life-span (*ayushya*) for that particular genus. For example, does the soul destined to the infernal world acquire the bondage of life-span (*ayushya*) of the infernal genus .. and so on up to .

the soul destined to the divine world acquire the bondage of life-span (*ayushya*) of the divine genus

[Ans.] Yes, Gautam ! A soul born in a particular genus (*yoni*) acquires the bondage of life-span (*ayushya*) for that particular genus For example, the soul destined to the infernal world acquires the bondage of life-span (*ayushya*) of the infernal genus, the soul destined to the animal world (*tiryanch yoni*) acquires the bondage of life-span (*ayushya*) of the animal genus, the soul destined to the human world acquires the bondage of life-span (*ayushya*) of the human genus and so on up to the soul destined to the divine world acquires the bondage of life-span (*ayushya*) of the divine genus

The soul acquiring the bondage of infernal life-span (*ayushya*) does that for life-span (*ayushya*) related to any one of the seven infernal worlds—the life-span (*ayushya*) of Ratnaprabha Prithvi (the first hell) and so on up to Adhah Saptam Prithvi (the seventh hell) The soul acquiring the bondage of animal life-span (*ayushya*) does that for life-span (*ayushya*) related to any one of the five animal genuses—the life-span (*ayushya*) of one sensed animal genus (*ekendriya tiryanch yoni*) etc Here all classes of animals should be stated in details

The soul acquiring the bondage of human life-span (*ayushya*) does that for life-span (*ayushya*) related to any one of the two human genuses (*sammurchhim* or of asexual origin and *garbhaj* or of placental origin) The soul acquiring the bondage of divine life-span (*ayushya*) does that for life-span (*ayushya*) related to any one of the four divine genuses

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन **निष्कर्ष**–इन तीन सूत्रो का निष्कर्ष यह है कि जीव पर–भव की आयुष्य इस भव मे ही बाँधते है और उस आयुष्य–सम्बन्धी आचरण भी इसी भव का करते है। केवल चरमशरीरी जीव ही पर–भव का आयुष्य नही बाँधते।

आयुष्य बध सम्बन्धी चार प्रकार के विकल्प आगम मे बताये है–

(१) वर्तमान आयुष्य का तीसरा भाग शेष रहने पर अगले भव का आयुष्य बाँधता है। अथवा (२) नौवाँ भाग, (३) सत्ताईसवाँ भाग, तथा (४) वर्तमान आयुष्य के छह मास शेष रहने पर। अन्तराल गति मे यदि जीव ऋजुगति से जाता है, तो उत्पत्ति स्थान तक पूर्वभव का आयुष्य साथ रहता है, वक्रगति मे जाता है, तो प्रथम समय मे पूर्वभव का तथा दूसरे समय मे अगले जन्म का आयुष्य प्रारम्भ हो जाता है। *(भगवई भाष्य, भाग २, पृष्ठ १४६)*

॥ पचम शतक तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Gist—The gist of these aphorisms is that a soul acquires the bondage of the next life during this life itself The conduct responsible for this bondage is also performed during this life Only the souls with terminal bodies (*Charam Shariri* or those destined to liberation) do not acquire bondage of life-span (*ayushya*) of next birth

Agams inform about the four alternatives of acquiring life-span (*ayushya*) bondage—

(1) The life-span (*ayushya*) bondage for the next birth is acquired when one third part of the present life span remains, or (2) one ninth part remains, or (3) one 27th part remains, or (4) only six months of the present life-span (*ayushya*) remains In the intervening period of passage from one birth to the next, if the movement of the soul is straight (*riju gati*) the life-span of the current birth continues till the place of new birth If its movement is oblique the present life-span extends up to the first Samaya of this oblique movement and the life-span (*ayushya*) of the next birth begins during the second Samaya of the oblique movement *(Bhagavati Bhashya, Part-2, p 146)*

● END OF THE THIRD LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : चतुर्थ उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : FOURTH LESSON

शब्द SHABD (SOUND)

शब्द–श्रवण की सीमा **RANGE OF HEARING SOUND**

१. [प्र.] छउमत्थे ण भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा–संखसद्दाणि वा, सिंगसद्दाणि वा, संखियसद्दाणि वा, खरमुहिसद्दाणि वा, पोयासद्दाणि वा, परिपिरियासद्दाणि वा, पणवसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, भभासद्दाणि वा, होरभसद्दाणि वा, भेरिसद्दाणि वा, झल्लरिसद्दाणि वा, दुंदुभिसद्दाणि वा, तताणि वा, वितताणि वा, घणाणि वा, झुसिराणि वा ?

[उ.] हता, गोयमा ! छउमत्थे णं मणूसे आउडिज्जमाणाइ सद्दाइं सुणेति, तं जहा–संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा।

१. [प्र.] भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या बजाये जाते हुए वाद्यो के शब्दो को सुनता है ? यथा–शख के शब्द, रणसीगे के शब्द, शखिका (छोटे शख) के शब्द, खरमुही (काहली नामक बाजे फौजी ढोल) के शब्द, पोता (बडी काहली) के शब्द, परिपीरिता (सूअर के चमडे से मढे हुए मुख वाले एक प्रकार के बाजे सितार जैसा बाजा जिसके दोनो सिरो पर तुम्बे लगे रहते है) के शब्द, पणव (ढोलकी) के शब्द, पटह (ढोल) के शब्द, भभा (छोटी भेरी) के शब्द, होरेभा (महाढका), भेरी (नगाडा, डका), झल्लरी (झालर) के शब्द, दुन्दुभि के शब्द, तत (तात बाजे वालो वीणा आदि वाद्यो) के शब्द, वितत शब्द (ढोल आदि विस्तृत बाजो के शब्द), घन शब्द (ठोस बाजो–कास्य, ताल आदि वाद्यो के शब्द), शुषिर शब्द (बीच मे पोले बाजो–बिगुल, बॉसुरी, बशी आदि के शब्द), इत्यादि बाजो के शब्दो को ?

[उ.] हॉं, गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य बजाये जाते हुए शख यावत्–शुषिर आदि (पूर्वोक्त) वाद्यो के शब्दो को सुनता है।

1. [Q.] *Bhante* ! Does a person with finite cognition (*chhadmasth*) hear the sound of musical instruments being played ? Instruments such as—sound of *Shankh* (conch-shell), sound of *Ranasingha* (war-horn), sound of *Shankhika* (small conch-shell), sound of *Kharamuhi* (small drum), sound of *Pota* (large drum), sound of *Paripirita* (a Sitar-like instrument with gourds at both ends), sound of *Panav* (small drum), sound of *Patah* (a large drum), sound of *Bhambha* (a type of drum), sound of *Horebha* (a type of drum), sound of *Bheri* (a large drum), sound of *Jhallari* (cymbal), sound of *Dundubhi* (a type of drum), sound of *tat* (stringed instruments), sound of *vitat* (percussion instruments), sound of *ghan* (gong like solid instruments), sound of *shushir* (wind instruments) and other musical instruments ?

[Ans.] Yes, Gautam ! A person with finite cognition (*chhadmasth*) hears the sound of the aforesaid musical instruments, such as—sound of *Shankh* (conch-shell). and so on up to sound of *shushir* (wind instruments) being played

२. [प्र.] ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेति ? अपुट्ठाइं सुणेति ?

[उ.] गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेति, नो अपुट्ठाइं सुणेति, जाव णियमा छद्दिसिं सुणेति।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या वह (छद्मस्थ) उन (पूर्वोक्त वाद्यो के) शब्दो को स्पृष्ट होने (कानो से स्पर्श किये जाने-टकराने) पर सुनता है, या अस्पृष्ट होने (कानो से स्पर्श न करने–न टकराने) पर भी सुन लेता है ?

[उ.] गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य (उन वाद्यो) के स्पृष्ट (कानो से स्पर्श किये गए–टकराए हुए) शब्दो को सुनता है, अस्पृष्ट शब्दो को नही सुनता, यावत् नियम से पूर्वादि छह दिशाओ से आए हुए स्पृष्ट शब्दो को सुनता है।

2. [Q.] *Bhante* ! Does he (a *chhadmasth*) hear only those sounds (of the said instruments) that strike his ears (*sprisht*) ? Or does he hear even those that do not strike (*asprisht*) ?

[Ans.] Gautam ! He (a *chhadmasth*) hears only those sounds (of the said instruments) that strike his ears (*sprisht*) and not those that do not strike and so on up to as a rule he hears sound coming from all the six directions

३. [प्र.] छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

[उ.] गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ।

३. [प्र.] भगवन् ! क्या छद्मस्थ मनुष्य आरगत (इन्द्रिय विषय की सीमा मे आये हुए) शब्दो को सुनता है, अथवा पारगत (इन्द्रिय विषय से दूर रहे हुए) शब्दों को सुनता है ?

[उ.] गौतम ! (छद्मस्थ मनुष्य) आरगत शब्दो को सुनता है, किन्तु पारगत शब्दो को नही सुन पाता।

3. [Q.] *Bhante* ! Does he (a *chhadmasth*) hear only those sounds that are within the range of his sense organs (*aargat*) ? Or does he hear even those that are beyond the range of his sense organs (*paargat*) ?

[Ans.] Gautam ! He (a *chhadmasth*) hears only those sounds that are within the range of his sense organs (*aargat*) and not those that are beyond the range of his sense organs (*paargat*)

४. [प्र. १] जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ, तहा णं भंते ! केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

[उ.] गोयमा ! केवली णं आरगयं वा पारगयं वा सव्वदूरमूलमणंतियं सद्दं जाणइ पासइ।

[प्र. २] से केणट्ठेणं तं चेव केवली णं आरगयं वा जाव पासइ ?

[उ.] गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ; एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ, सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली, सव्वतो जाणइ पासइ, सव्वकालं जाणइ पासइ, सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली, अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स, निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ।

४. [प्र. १] भगवन् ! जैसे छद्मस्थ मनुष्य आरगत शब्दों को सुनता है, किन्तु पारगत शब्दों को नहीं सुनता, वैसे ही, क्या केवली (केवलज्ञानी) भी आरगत शब्दों को ही सुन पाता है, पारगत शब्दों को नहीं सुन पाता ?

[उ.] गौतम ! केवली मनुष्य तो आरगत, पारगत अथवा समस्त दूरवर्ती (दूर तथा अत्यन्त दूर के) और निकटवर्ती (निकट तथा अत्यन्त निकट के) अनन्त (अन्तरहित) शब्दों को जानता और देखता है।

[प्र. २] भगवन् ! इसका क्या कारण है कि केवली मनुष्य आरगत, पारगत अथवा यावत् सभी प्रकार के (दूरवर्ती, निकटवर्ती) अनन्त शब्दों को जानता-देखता है ?

[उ.] गौतम ! केवली (सर्वज्ञ) पूर्व दिशा की मित वस्तु को भी जानता-देखता है, और अमित वस्तु को भी जानता-देखता है, इसी प्रकार दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्व दिशा और अधो दिशा की मित वस्तु को भी जानता देखता है तथा अमित वस्तु को भी जानता-देखता है। केवलज्ञानी सब जानता है और सब देखता है। केवली सर्वत (सब ओर से) जानता देखता है, केवली सर्वकाल में, सर्वभावों (पदार्थों) को जानता देखता है। केवलज्ञानी (सर्वज्ञ) के अनन्त ज्ञान और अनन्त दर्शन होता है। केवलज्ञानी का ज्ञान और दर्शन निरावरण (सभी प्रकार के आवरणों से रहित) होता है।

हे गौतम ! इसी कारण से ऐसा कहा गया है कि केवली मनुष्य आरगत और पारगत शब्दों को, यावत् सभी प्रकार के दूरवर्ती और निकटवर्ती शब्दों को जानता-देखता है।

4. [Q. 1] *Bhante* ! As a *chhadmasth* hears only those sounds that are within the range of his sense organs (*aargat*) but not those that are beyond the range of his sense organs (*paargat*), in the same way does an omniscient (*Kevali*) hear only those sounds that are within the range of his sense organs (*aargat*) ? Or does he hear even those that are beyond the range of his sense organs (*paargat*) ?

[Ans.] Gautam ! An omniscient (*Kevali*) knows and sees the sounds that are within the range of his sense organs (*aargat*), beyond the range of his sense organs (*paargat*), and all sounds far and near and so on up to . infinite (endless) kinds of sounds.

[Q. 2] *Bhante* ! What is the reason that an omniscient (*Kevali* or *Keval-jnani*) knows and sees the sounds within and beyond the range of his sense organs (*paargat*), and so on up to infinite (endless) kinds of sounds ?

[Ans.] Gautam ! The omniscient (*Kevali*) knows and sees all finite (*mit*) things as well as infinite (*amit*) things in the east. In the same way he sees all finite things as well as infinite things in the south, west, north, zenith and nadir The omniscient (*Kevali*) knows all and sees all The omniscient (*Kevali*) knows and sees from all angles (*sarvatah*), in all periods (*sarvakaal*), and in all modes (*sarvabhaava*) The omniscient (*Kevali*) is endowed with infinite knowledge (*jnana*) and infinite perception (*darshan*) The knowledge and perception of the omniscient (*Kevali*) is free of any and all veils

O Gautam ! That is why it is said that an omniscient (*Kevali* or *Keval-jnani*) knows and sees the sounds within and beyond the range of his sense organs (*paargat*), and so on up to infinite (endless) kinds of sounds ?

विवेचन मूल सूत्र मे छद्मस्थ के लिए 'सुणेइ' क्रियापद का प्रयोग किया गया है जबकि केवली के लिए 'जाणइ पासइ' पद का प्रयोग किया है। इस भेद का कारण यह है कि छद्मस्थ जीव कान से शब्द सुनता है किन्तु केवली शब्द को कान से नही सुनते, केवलज्ञान–दर्शन से ही जानते-देखते है।

Elaboration—In the original text the verb *sunei* (hear) has been used for a *chhadmasth* but for the omniscient (*Kevali*) the verb *janai-pasai* (knows and sees) has been used The reason for this difference is that a *chhadmasth* hears sound through the sense organ of hearing, whereas the omniscient (*Kevali*) does not do so, he only acquires (knows and sees) sounds through his all enveloping knowledge and perception

छद्मस्थ व केवली का हॅसना व निद्रा लेना **SLEEP AND LAUGHTER OF CHHADMASTH AND KEVALI**

५. [प्र.] छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?

[उ.] हंता, हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा।

५. [प्र.] भगवन् ! क्या छद्मस्थ मनुष्य हँसता तथा उत्सुक होता है ?

[उ.] गौतम ! हाँ, छद्मस्थ मनुष्य हँसता तथा उत्सुक होता है।

5. [Q.] *Bhante* ! Does a person with finite cognition (*chhadmasth*) laugh and get inquisitive ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He laughs and gets inquisitive

६. [प्र. १] जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा उस्सुयाएज्ज तहा णं केवली वि हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ?

[उ.] गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेण भंते ! जाव नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ?

[उ.] गोयमा ! जं णं जीवा चरित्तमोहणिज्जकम्मस्स उदएणं हसंति वा उस्सुयायंति वा, से णं केवलिस्स नत्थि, से तेणट्ठेण जाव नो ण तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा।

६. [प्र १] भगवन् ! जैसे छद्मस्थ मनुष्य हँसता है तथा उत्सुक होता है, वैसे क्या केवली भी हँसता और उत्सुक होता है ?

[उ.] गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य की तरह केवली न तो हँसता है और न उत्सुक होता है।

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है कि केवली मनुष्य (छद्मस्थ की तरह) न तो हँसता है और न उत्सुक होता है ?

[उ.] गौतम ! जीव, चारित्रमोहनीय कर्म के उदय से हँसते है या उत्सुक होते है, किन्तु वह केवली भगवान के नही है, (उनके चारित्रमोहनीय कर्म का क्षय हो चुका है।) इस कारण से यह कहा जाता है कि जैसे छद्मस्थ मनुष्य हँसता है अथवा उत्सुक होता है, वैसे केवली मनुष्य न तो हँसता है और न ही उत्सुक होता है।

6. [Q. 1] *Bhante* ! As a person with finite cognition (*chhadmasth*) laughs and gets inquisitive, likewise does the omniscient (*Kevali*) too laugh and get inquisitive ?

[Ans.] No, Gautam ! He does not

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so that the omniscient (*Kevali*) neither laughs nor gets inquisitive (like a *chhadmasth*) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings laugh and get inquisitive due to fruition of *Chaaritra Mohaniya karmas* (conduct deluding *karmas*) but the omniscient (*Kevali*) is devoid of these (his conduct deluding *karmas* have already been shed) That is why it is said and so on up to the omniscient (*Kevali*) neither laughs nor gets inquisitive (like a *chhadmasth*)

७. [प्र.] जीवे णं भंते ! हसमाणे वा उस्सुयमाणे वा कति कम्मपगडीओ बंधति ?

[उ.] गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा।

८. एवं जाव वेमाणिए।

९. पोहत्तिएहिं जीवेगिदियवज्जो तियभंगो।

७. [प्र.] भगवन् ! हँसता हुआ या उत्सुक होता हुआ जीव कितनी कर्मप्रकृतियों को बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! सात प्रकार के अथवा आठ प्रकार के कर्मो को बाँधता है।

८. इसी प्रकार (नैरयिक से लेकर) वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको के लिए (ऐसा आलापक) कहना चाहिए।

९. जब उपर्युक्त प्रश्न बहुत जीवो की अपेक्षा पूछा जाए, तो उसके उत्तर मे समुच्चय जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर कर्मबन्ध से सम्बन्धित तीन भग (विकल्प) कहने चाहिए।

7. [Q.] *Bhante* ! While laughing and getting inquisitive how many types of *karma* species does a living being bind ?

[Ans.] Gautam ! He binds seven or eight types of *karma* species

8. The same (statement with respect to singular) should be repeated for all the twenty four *Dandaks* (places of suffering from infernal beings) up to Vaimaniks

9. When the said question is asked in context of many living beings (with respect to plural) three alternatives about bondage of *karmas* should be stated with the exception of 'all beings' and 'one-sensed beings'

विवेचन तीन भग–पृथक्त्व सूत्रो (पोहत्तिएहि) अर्थात् बहुवचन–सूत्रो (बहुत से जीवो) की अपेक्षा से पाँच एकेन्द्रियो मे हास्यादि न होने से ५ स्थावरो के ५ दण्डको को छोडकर शेष १९ दण्डको मे कर्मबन्ध–सम्बन्धी तीन भग होते है–(१) सभी जीव सात प्रकार के कर्म बाँधते है, (२) बहुत से जीव ७ प्रकार के कर्म बाँधते है और एक जीव ८ प्रकार के कर्म बाँधता है, (३) बहुत से जीव ७ प्रकार के कर्मो को और बहुत से जीव ८ प्रकार के कर्मो को बाँधते है। आयुकर्म के बन्ध के समय आठ कर्म और जब आयुकर्म न बँध रहा हो, तब सात कर्मो का बन्ध समझना चाहिए। *(वृत्ति पत्राक २१७)*

Elaboration—The three alternatives—As the five types of one-sensed beings are devoid of the faculties of laughter and inquisitiveness these five *Dandaks* fall under exceptions Same is true for a general statement about all beings The remaining nineteen *Dandaks* have three alternatives about *karmic* bondage—(1) All beings bind seven types of *karmas* (2) Many beings bind seven types of *karmas* and one being binds eight types of *karmas* (3) Many beings bind seven types of *karmas* and many beings bind eight types of *karmas* Eight types of *karmas* are bound when *karma* responsible for life-span (*ayushya*) is bound and seven types of *karmas* are bound when *karma* responsible for life-span (*ayushya*) is not bound *(Vritti, leaf 217)*

१०. [प्र.] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?

[उ.] हंता, निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा।

१०. [प्र] भगवन् ! क्या छद्मस्थ मनुष्य निद्रा लेता है अथवा प्रचला नामक निद्रा लेता है ?

[उ] हाँ, गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य निद्रा लेता है और प्रचला निद्रा (खडा-खडा नीद) भी लेता है।

10. [Q.] *Bhante* ! Does a person with finite cognition (*chhadmasth*) sleep (*nidra*) ? And does he sleep standing (*prachala nidra*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! A person with finite cognition (*chhadmasth*) sleeps (*nidra*) and he sleeps standing (*prachala nidra*) also

११. जहा हसेज्ज वा तहा, नवर दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा, पयलायंति वा। से ण केवलिस्स नत्थि। अन्न त चेव।

११. जिस प्रकार हँसने (और उत्सुक होने) के सम्बन्ध मे प्रश्नोत्तर बतलाए गए है, उसी प्रकार निद्रा और प्रचला-निद्रा के सम्बन्ध मे (छद्मस्थ और केवली मनुष्य के विषय मे) प्रश्नोत्तर जान लेने चाहिए। विशेष यह है कि छद्मस्थ मनुष्य दर्शनावरणीय कर्म के उदय से निद्रा अथवा प्रचला निद्रा लेता है, जबकि केवली भगवान के वह दर्शनावरणीय कर्म नही है, इसलिए केवली न तो निद्रा लेता है, न ही प्रचला-निद्रा लेता है। शेष सब पूर्ववत् समझना चाहिए।

11. The statements about laughing (and being inquisitive) should be repeated here about *nidra* and *prachala nidra* The difference is that a *chhadmasth* sleeps due to fruition of perception deluding *karmas* (*Darshanavaraniya karma*), whereas the omniscient (*Kevali*) is free of perception deluding *karmas*, therefore he neither sleeps nor sleeps standing All other details are as aforesaid

१२. [प्र.] जीवे ण भते ! निद्दायमाणे वा पयलायमाणे वा कति कम्मपगडीओ बंधति ?

[उ] गोयमा ! सत्तविहबधए वा अट्ठविहबंधए वा।

१२. [प्र] भगवन् ! निद्रा लेता हुआ अथवा प्रचला निद्रा लेता हुआ जीव कितनी कर्मप्रकृतियो को बध करता है ?

[उ] गौतम ! निद्रा अथवा प्रचला निद्रा लेता हुआ जीव सात कर्मो की प्रकृतियो का, अथवा आठ कर्मो की प्रकृतियो का बन्ध करता है।

12. [Q.] *Bhante* ! While taking *nidra* and *prachala nidra* how many types of *karma* species does a living being bind ?

[Ans.] Gautam ! He binds seven or eight types of *karma* species

१३. एवं जाव वेमाणिए।

१४. पोहत्तिएसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो।

१३. इसी तरह (एकवचन की अपेक्षा से) (नैरयिक से लेकर) वैमानिक-पर्यन्त (चौबीस ही दण्डको के लिए) कहना चाहिए।

१४. जब उपर्युक्त प्रश्न बहुवचन (बहुत-से जीवो) की अपेक्षा से पूछा जाए, तब (समुच्चय) जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर [शेष १९ दण्डको मे] कर्मबन्ध-सम्बन्धी पूर्वोक्त तीन भग कहने चाहिए।

13. The same (statement with respect to singular) should be repeated for all the twenty four *Dandaks* (places of suffering from infernal beings) up to Vaimaniks

14. When the said question is asked in context of many living beings (with respect to plural) three alternatives about bondage of *karmas* should be stated with the exception of 'all beings' and 'one-sensed beings' (for the remaining nineteen *Dandaks*)

हरिनैगमेषी की गर्भ-सहरण क्षमता EMBRYO TRANSPLANTATION CAPACITY OF HARINAIGAMESHI

१५. [प्र] हरी णं भंते ! नेगमेसी सक्कदूते इत्थीगब्भं साहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरति गब्भाओ जोणिं साहरइ ? जोणीओ गब्भं साहरति ? जोणीओ जोणिं साहरइ ?

[उ] गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरति, नो गब्भाओ जोणिं साहरति, नो जोणीओ जोणिं साहरति, परामुसिय परामुसिय अव्वाबाहेणं अव्वाबाह जोणीओ गब्भं साहरइ।

१५. [प्र] भगवन् ! इन्द्र (शक्र) का दूत हरिनैगमेषी देव जब स्त्री के गर्भ का सहरण करता है, तब क्या वह (१) एक गर्भाशय से गर्भ को उठाकर दूसरे गर्भाशय मे रखता है ? (२) या गर्भ को लेकर योनि द्वारा दूसरी (स्त्री) के उदर मे रखता है ? अथवा (३) योनि से (गर्भ को बाहर निकालकर दूसरी स्त्री के) गर्भाशय मे रखता है ? या फिर (४) योनि द्वारा गर्भ को बाहर निकालकर (वापस उसी तरह) योनि द्वारा ही (दूसरी स्त्री के उदर मे) रखता है ?

[उ] हे गौतम ! वह हरिनैगमेषी देव, एक गर्भाशय से गर्भ को उठाकर दूसरे गर्भाशय मे नही रखता, गर्भाशय से गर्भ को लेकर उसे योनि द्वारा दूसरी स्त्री के उदर मे नही रखता, यथा योनि द्वारा गर्भ को (पेट मे से) बाहर निकालकर (वापस उसी तरह) योनि द्वारा दूसरी स्त्री के पेट मे नही रखता, परन्तु अपने हाथ से गर्भ को स्पर्श करके, उस गर्भ को कुछ पीडा (बाधा) न हो, इस तरीके से उसे योनि द्वारा बाहर निकालकर दूसरी स्त्री के गर्भाशय मे रख देता है।

15. [Q.] *Bhante* ! When Harinaigameshi god, the emissary of Indra (Shakra), transfers an embryo from a woman's womb, does he (1) take it out (directly) from one womb and place it in another womb ? (2) Or does he take it out (directly) from one womb and place it in another womb through the uterus ? (3) Or does he take it out from one womb through the uterus and place it (directly) in another womb ? (4) Or does he take it

out from one womb through the uterus and place it in another womb also through the uterus ?

[Ans.] Gautam ! Harinaigameshi god does not lift an embryo from one womb and place it in another womb, nor does he take it out from one womb and place it in another womb through the uterus, nor does he take it out from one womb through the uterus and place it in another womb also through the uterus. Instead, he takes it out from one womb through the uterus, by touching the embryo with his hands, and places it (directly) in the womb of another woman without causing any pain to the embryo in the process.

गर्भ–संहरण का तरीका **PROCEDURE OF EMBRYO TRANSFER**

१६. [प्र.] पभू णं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्स दूते इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा नीहरित्तए वा ?

[उ.] हंता, पभू, नो चेव ण तस्स गब्भस्स किंचि वि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेज्जा, एसुहुमं च ण साहरिज्ज वा, नीहरिज्ज वा।

१६. *[प्र.] भगवन् ! क्या शक्र का दूत हरिनैगमेषी देव, स्त्री के गर्भ को नखाग्र (नख के सिरे) द्वारा, अथवा रोमकूप (छिद्र) द्वारा गर्भाशय मे रखने या गर्भाशय से निकालने से समर्थ है ?*

[उ.] हाँ, गौतम ! हरिनैगमेषी देव उपर्युक्त रीति से कार्य करने मे समर्थ है। (किन्तु ऐसा करते हुए) वह देव उस गर्भ को थोडी या बहुत, किञ्चित् मात्र भी पीडा नही पहुँचाता। हॉ, वह उस गर्भ का छविच्छेद (शरीर का छेदन–भेदन) करता है, और फिर उसे बहुत सूक्ष्म करके अदर रखता है, अथवा इसी तरह अदर से बाहर निकालता है।

16. [Q.] *Bhante* ! Is Harinaigameshi god, the emissary of Indra (Shakra), capable of taking out or putting in an embryo from the womb of a woman with the tip of his nail or through the pores ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He is capable of doing so. But while doing so he does not cause any pain, less or more or even slightest. Although he cuts and separates the embryo at the time of taking out and putting in, but he does that with great precision.

विवेचन : हरिनैगमेषी देव का संक्षिप्त परिचय–'हरि', इन्द्र को कहते है–हरि = इन्द्र के, नैगम = आदेश को जो मानता है, वह **हरिनैगमेषी**, नामक देव। शक्रेन्द्र की पदाति (पैदल) सेना का वह नायक तथा शक्रदूत है। शक्रेन्द्र की आज्ञा से उसी ने भगवान महावीर की माता त्रिशलादेवी के गर्भ मे देवानन्दा ब्राह्मणी के गर्भ से भगवान महावीर के गर्भ को संहरण करके स्थापित किया था। भगवतीसूत्र के अतिरिक्त हरिनैगमेषी द्वारा गर्भापहरण का वृत्तान्त अन्तकृद्दशाग (अ. ७) मे, आचाराग भावना अध्ययन चूलिका मे, तथा कल्पसूत्र मे भी उल्लिखित है।

गर्भसंहरण के चारो प्रकारो मे से तीसरा प्रकार ही स्वीकार्य—मूल पाठ मे गर्भापहरण के ४ तरीके विकल्प रूप मे उठाए गये है, किन्तु हरिनैगमेषी द्वारा योनि द्वारा गर्भ को निकालकर दूसरी स्त्री के गर्भाशय में रखना-लोकप्रसिद्ध तीसरा तरीका ही अपनाया जाता है, क्योकि यह लौकिक प्रथा है कि कोई भी गर्भ स्वाभाविक रूप से योनि द्वारा ही बाहर आता है।

Elaboration—Brief introduction of Harinaigameshi god—Harı ıs a name of Indra and *naıgam* means command He who follows the command of Indra ıs called Harınaıgameshı He ıs the commander of the army of foot-soldıers of Indra and also hıs emıssary It was he who transferred the embryo form of Bhagavan Mahavır from the womb of Devananda Brahmıanı to that of mother Trıshala Devı at the command of Shakrendra Besıdes *Bhagavatı Sutra* the descrıptıon of embryo transfer by Harınaıgameshı ıs also avaılable ın *Antakrıddashanga* (Chapter 7), *Acharanga* (*Chulıka* of *Bhaavana Adhyayan*) and *Kalpa Sutra*.

The methods of embryo transfer—In the orıgınal text four alternatıve methods of embryo transfer have been stated But Harınaıgameshı employs the thırd method whıch ıs most suıtable and tradıtıonally accepted because the natural path of a fetus comıng out of the womb ıs through the uterus

अतिमुक्तक मुनि **ASCETIC ATIMUKTAK**

१७. [१] तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते णामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए।

१७. [१] उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर के अन्तेवासी अतिमुक्तक नामक कुमारश्रमण (बालवय मे दीक्षित) थे। वे प्रकृति से भद्र यावत् विनीत थे।

17. [1] *Bhante* ! Durıng that perıod of tıme Shraman Bhagavan Mahavır had a young (*kumar-shraman* or ınıtıated ın adolescence) dıscıple named Atımuktak who was by nature gentle and so on up to... polıte

[२] तए णं से अइमुत्ते कुमारसमणे अन्नया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए बहिया संपट्ठिए विहाराए।

[२] (दीक्षित होने के) पश्चात् वह अतिमुक्तक कुमारश्रमण किसी दिन महावृष्टिकाय (मूसलाधार वर्षा) पड रही थी, तब काँख = (बगल) मे अपना रजोहरण तथा (हाथ मे, झोली मे) पात्र लेकर बाहर विहार (स्थण्डिल भूमिका मे बडी शका निवारण) के लिए गये।

[2] One day (after gettıng ınıtıated) that Kumar-shraman Atımuktak went out to relıeve hımself (at the allotted place) when ıt was raining

heavily He carried his ascetic-broom (*rajoharan*) tucked in his arm-pit, and bowl (in a bag in his hand)

[३] तए णं से अइमुत्ते कुमारसमणे वाहयं वहमाणं पासति, पासित्ता मट्टियापालिं बंधति, बंधित्ता 'णाविया मे णाविया मे, णाविओ विव णावमयं पडिग्गहं, उदगंसि कट्टु पव्वाहमाणे पव्वाहमाणे अभिरमति।

[३] तत्पश्चात् (बाहर जाते हुए) उस अतिमुक्तक कुमारश्रमण ने (मार्ग मे) बहता हुआ पानी का एक छोटा-सा नाला देखा। उसे देखकर उसने उस नाले के दोनो ओर मिट्टी की पाल बाँधी। इसके पश्चात् नाविक जिस प्रकार अपनी नौका पानी मे छोडता है, उसी प्रकार उसने भी अपने पात्र को नौकारूप मानकर, पानी मे छोडा। फिर 'यह मेरी नाव है, यह मेरी नाव है,' यो पात्र रूपी नौका को पानी मे प्रवाहित करते (तिराते हुए) क्रीडा करने (खेलने) लगे।

[3] On the way Kumar-shraman Atimuktak saw a small stream of flowing water On seeing this he raised earthen dams on two sides across the stream After that he floated his pot on water, like a sailor does his boat, considering his pot to be a boat He then started playing around with that pot-boat floating on water surface and uttering—"This is my boat ! This is my boat !"

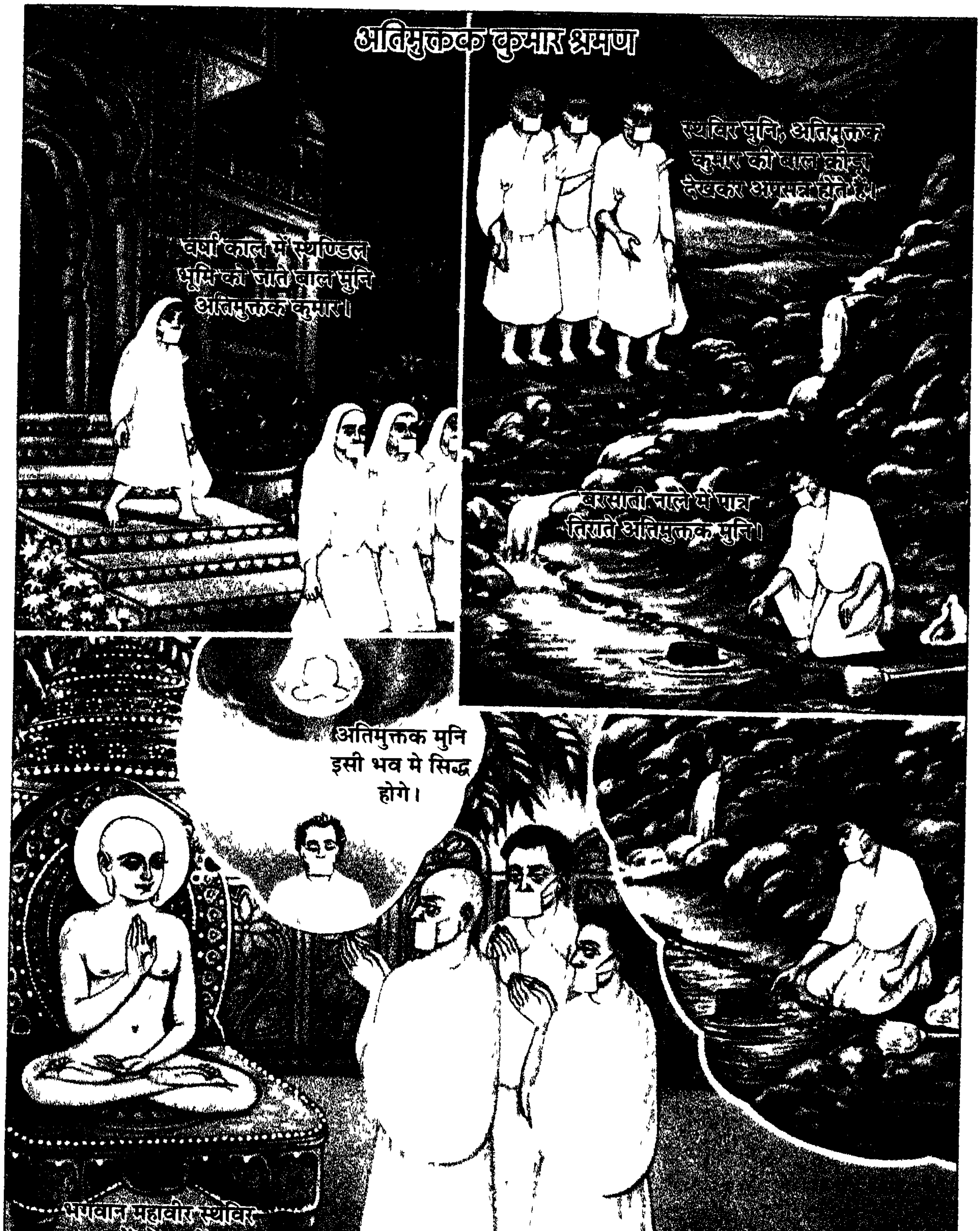
[४] तं च थेरा अद्दक्खु। जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी अइमुत्ते णामं कुमारसमणे, से ण भंते ! अइमुत्ते कुमारसमणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति ?

'अज्जो !' ति समणे भगव महावीरे ते थेरे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! ममं अतेवासी अतिमुत्ते णाम कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं अइमुत्ते कुमारसमणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिइ जाव अंत करेहिइ। त मा ण अज्जो ! तुब्भे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलेह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह। तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हइ अगिलाए भत्तेण पाणेणं विणयेणं वेयावडियं करेह। अइमुत्ते णं कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिमसरीरिए चेव।

[५] तए णं थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, अतिमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करेंति।

[४] इस प्रकार नौका चलाते हुए उस अतिमुक्तक कुमारश्रमण को स्थविरो ने देखा। स्थविर (अतिमुक्तक कुमारश्रमण को कुछ भी कहे बिना) जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे, वहाँ आए और निकट आकर उन्होने उनसे पूछा—

भगवन् ! आप देवानुप्रिय का अन्तेवासी (शिष्य) जो अतिमुक्तक कुमारश्रमण है, वह कितने भव (जन्म) ग्रहण करके सिद्ध होगा, यावत् सर्वदु खो का अन्त करेगा ?


अतिमुक्तक कुमार श्रमण
वर्षा काल में स्थण्डिल भूमि को जाते बाल मुनि अतिमुक्तक कुमार।
स्थविर मुनि, अतिमुक्तक कुमार की बाल क्रीड़ा देखकर अप्रसन्न होते हैं।
बरसाती नाले में पात्र तिराते अतिमुक्तक मुनि।
अतिमुक्तक मुनि इसी भव मे सिद्ध होगे।
भगवान महावीर स्थविर श्रमणों के प्रश्नों का समाधान करते हुए।

चित्र परिचय-२

Illustration No. 2

अतिमुक्तक मुनि

पोलासपुर नगर के महाराजा विजय और उनकी महारानी श्रीदेवी के पुत्र अतिमुक्तक कुमार भगवान महावीर के पास दीक्षित हुए थे।

दीक्षित होने के पश्चात् एक दिन बाल मुनि अतिमुक्तक महावर्षा होने पर स्थविर श्रमणो के साथ पात्र एव रजोहरण लेकर स्थण्डिल भूमि को गये। वहाँ मार्ग मे बरसाती पानी का एक छोटा नाला बहता देखकर उन्होने नाले के दोनो ओर मिट्टी की पाल बाँधी। उसके पश्चात अपना पात्र नौका की भाँति पानी मे तिराने लगे और बाल सुलभ मन से हर्षित होकर कहने लगे। "देखो मेरी नाव तैर रही है। देखो मेरी नाव "

बाल मुनि की क्रीडा देखकर स्थविर श्रमण अप्रसन्न होकर बिना कुछ कहे भगवान महावीर के पास आये।

भगवान महावीर स्वामी ने उन्हे बताया कि अतिमुक्तक महाश्रमण चरमशरीरी है। वह इसी भव मे सिद्ध होगा। इसलिए उसे डॉटो, झिडको मत। उसे अग्लानभाव से स्वीकार करो और उसकी वैयावच्च करो।

श्रमण महावीर का इस प्रकार कथन सुनकर स्थविर श्रमणो ने भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया और अतिमुक्तक मुनि का अग्लानभाव (प्रसन्नतापूर्वक) से स्वीकार किया और उसकी वैयावच्च करने लगे।

(शतक ५ उ ४ सूत्र ३ ५)

ASCETIC ATIMUKTAK

Prince Atimuktak, the son of King Vijaya and queen Shridevi of Polaspur city, was initiated by Bhagavan Mahavir

After initiation, one day child-ascetic Atimuktak went out to relieve himself along with senior ascetics It was raining heavily The child ascetic was carrying his ascetic broom and bowl On the way he saw a small stream of rain water He stopped and raised earthen dams on two sides He then flouted his bowl on water surface and playfully enjoyed the act uttering—"See my boat ! Hey, it floats !"

At this the senior ascetics were annoyed But without saying anything they returned to Bhagavan Mahavir

Bhagavan Mahavir told them that great ascetic Atimuktak was in his last rebirth and was going to a Siddha at the end of this birth only Therefore he should not be reprimanded or insulted He should be supported gladly and provided all hospitality

Hearing this from Bhagavan Mahavir the senior ascetics paid homage to him and gladly supported Atimuktak muni and provided him all care

—Shatak 5 lesson 4, Sutra 3 5

'हे आर्यो !' इस प्रकार श्रमण भगवान महावीर स्वामी उन स्थविरो को सम्बोधित करके कहने लगे–'आर्यो ! मेरा अन्तेवासी (शिष्य) जो प्रकृति से भद्र यावत् विनीत है, वह अतिमुक्तक कुमारश्रमण इसी भव से सिद्ध होगा, यावत् सब दु खो का अन्त करेगा। अत हे आर्यो ! तुम अतिमुक्तक कुमारश्रमण की हीलना मत करो, न ही उसे झिडको (डाँटो या खिसना करो), न ही गर्हा (बदनामी) और न ही अवमानना (अपमान) करो। किन्तु हे देवानुप्रियो ! तुम अग्लानभाव से (प्रसन्नतापूर्वक) अतिमुक्तक कुमारश्रमण को स्वीकार करो, अग्लानभाव से उसको अवलम्बन (सहारा) दो और अग्लानभाव से आहार–पानी से विनय सहित उसकी वैयावच्च (सेवा–शुश्रूषा) करो, क्योकि अतिमुक्तक कुमारश्रमण (इसी भव मे सब कर्मो का) अन्त करने वाला है, और चरमशरीरी है।'

[५] श्रमण भगवान महावीर स्वामी द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन स्थविर भगवन्तो ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दना–नमस्कार किया। फिर उन स्थविर मुनियो ने अतिमुक्तक कुमारश्रमण को अग्लानभाव से स्वीकार किया और यावत् वे उसकी वैयावच्च करने लगे। *(विस्तृत वर्णन अन्तकृद्‌शा सूत्र ६/१५ मे देखे)*

[4] Some senior ascetics (*sthavirs*) saw Kumar-shraman Atimuktak playing with his pot-boat The senior ascetics (without telling anything to Kumar-shraman Atimuktak) came where Shraman Bhagavan Mahavir was seated and submitted—

Bhante ! After how many rebirths, O beloved of gods, your disciple Kumar-shraman Atimuktak will become *Siddha* and so on up to end all miseries

"O Noble ones !" Addressing the senior ascetics thus, Shraman Bhagavan Mahavir said—"Noble ones ! My disciple Kumar-shraman Atimuktak, who is by nature gentle and so on up to polite, will become *Siddha* and so on up to end all miseries during this very birth Therefore, O noble ones ! Do not treat him with contempt, do not reprimand, slander or insult him Instead, you should accept Kumar-shraman Atimuktak gladly, support him gladly and gladly offer him hospitality by providing him food and water politely. Do this because Kumar-shraman Atimuktak is an *antakar* (terminator of the cycles of rebirth) and *charam-shariri* (in his terminal body or last birth)

[5] After being so advised by Shraman Bhagavan Mahavir those senior ascetics paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir Then those senior ascetics accepted Kumar-shraman Atimuktak gladly. and so on up to offered him hospitality politely *(for detailed description refer to Illustrated Antakriddashanga Sutra)*

दो देवो के मनोगत प्रश्न SILENT QUESTIONS BY TWO GODS

१८. [१] तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ विमाणाओ दो देवा महिड्ढीया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूआ।

१८. [१] उस काल और उस समय मे महाशुक्रकल्प से महासामान नामक महाविमान से दो महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव श्रमण भगवान महावीर के पास उपस्थित हुए।

18. [1] During that period of time two gods, with great opulence and so on up to fortune, from Mahasaaman celestial vehicle in Mahashukra Kalp came to Shraman Bhagavan Mahavir

[२] तए णं देवा समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति–

[प्र.] कइ णं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंत करेहिंति ?

[उ.] तए णं समणे भगव महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे, तेसिं देवाणं मणसा चेव इमं एतारूव वागरणं वागरेति–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंत करेहिंति।

[२] तत्पश्चात् उन देवो ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके उन्होने मन से ही (मन ही मन) (श्रमण भगवान महावीर से) ऐसा प्रश्न पूछा–

[प्र.] 'भगवन् ! आपके कितने सौ शिष्य सिद्ध होगे यावत् सर्व दु खो का अन्त करेगे ?'

तत्पश्चात् उन देवो द्वारा मन से पूछे जाने पर श्रमण भगवान महावीर ने उन देवो को भी मन से इस प्रकार का उत्तर दिया–

[उ.] 'हे देवानुप्रियो ! मेरे सात सौ शिष्य सिद्ध होगे, यावत् सब दु खो का अन्त करेगे।'

[2] After that those gods paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir and asked in their mind (silently) this question (to Shraman Bhagavan Mahavir)—

[Q.] *Bhante* ! How many hundred of your disciples will become *Siddhas* and so on up to end all miseries ?

After that Shraman Bhagavan Mahavir replied in his mind (silently) the question asked by the gods in their mind (silently)

[Ans.] O beloved of gods ! Seven hundred of my disciples will become *Siddhas* and so on up to end all miseries

[३] तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा जाव हयहियया समणं भगव महावीरं वंदंति णमंसंति, णमंसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा जाव पज्जुवासंति।

[३] इस प्रकार उन देवो द्वारा मन से पूछे गये प्रश्न का उत्तर श्रमण भगवान महावीर ने भी मन से ही इस प्रकार दिया, जिससे वे देव हर्षित, सन्तुष्ट हृदय वाले एव प्रफुल्लित हुए। फिर उन्होने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके मन से उनकी शुश्रूषा और नमस्कार करते हुए अभिमुख होकर पर्युपासना करने लगे।

[3] Thus Shraman Bhagavan Mahavır replied ın his mind (sılently) the questıon asked by the gods ın their mind (silently) The gods were pleased, contented and delighted at thıs Then they paid homage and obeısance to Shraman Bhagavan Mahavır and commenced their mental worship (silently) facıng him

विवेचन यहाँ प्रश्न होता है, मन तो ज्ञानावरण-दर्शनावरण क्षयोपशम से होने वाला ज्ञान है। केवली का ज्ञान क्षायिक होता है। फिर केवली को मन कैसे कहा गया है ? समाधान है-मन दो प्रकार का है-द्रव्य मन और भाव मन। द्रव्य मन पौद्गलिक है और भाव मन ज्ञानात्मक है। केवली मे भाव मन नही होता, किन्तु द्रव्य मन का उपयोग करते है। *(भगवई भाष्य, भाग २, पृ १६१)*

Elaboration—Here a question arises that the mental knowledge is acquired due to destruction-cum-pacification (*kshayopasham*) of knowledge and perception deluding *karmas* (*Jnanavaraniya* and *Darshanavaraniya karmas*) but the knowledge of *Kevali* is acquired due to destruction of these *karmas* (*kshayik*) Then why the term '*man*' (mind) is used with respect to Kevali The reason is that '*man*' (mind) has two forms *dravya-man* and *bhaava-man* *Dravya-man* (brain) is physical or physiological or constituted of matter, and *bhaava-man* (mind) is mental or psychological or constituted of knowledge. *Kevali* does not have *bhaava-man* (because his perception is direct or spiritual), however, he still has the *dravya-man* and he uses that *(Bhagavai Bhashya, part-2, p 161)*

१९. [१] तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूति णामं अणगारे जाव अदूरसामंते उड्ढंजाणू जाव विहरति।

१९. [१] उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति नामक अनगार, जो न अति दूर और न ही अति निकट समीप मे उकडू आसन से बैठे हुए पर्युपासना कर रहे थे।

19. [1] During that period of time the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavır was ascetic Indrabhuti, who was engaged in worship squatting neither very near nor very far.

[२] तए णं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-'एवं खलु दो देवा महिड्ढीया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं

पाउब्भूया, तं नो खलु अहं ते देवे जाणामि कयरातो कप्पातो वा सग्गातो वा विमाणातो वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्वमागता ?' तं गच्छामि णं भगव महावीरं वदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि, इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता उट्ठाए उट्ठेति, जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासति।

[२] तत्पश्चात् **ध्यानान्तरिका** = (एक ध्यान की समाप्ति होने पर दूसरा ध्यान प्रारम्भ करने से पूर्व बीच के समय) मे प्रवृत्त होते हुए भगवान गौतम के मन मे इस रूप का अध्यवसाय उत्पन्न हुआ–'निश्चय ही महर्द्धिक यावत् महानुभाग (महाभाग्यशाली) दो देव, श्रमण भगवान महावीर स्वामी के निकट प्रकट हुए, किन्तु मै तो उन देवो को नही जानता कि वे कौन से कल्प से या स्वर्ग से, कौन से विमान से और किस प्रयोजन से शीघ्र यहाँ आए है ? अत मै भगवान महावीर के पास जाऊँ और वन्दन-नमस्कार करूँ, पर्युपासना करूँ और ऐसा करके मै इन और इस प्रकार के उन-(मेरे मन मे पहले उत्पन्न) प्रश्नो को पूछूँ। यो गौतम स्वामी ने विचार किया और अपने स्थान से उठे। फिर जहाँ श्रमण भगवान महावीर स्वामी विराजमान थे, वहाँ आए, उनकी पर्युपासना करने लगे।

[2] After concluding one course of meditation and before commencing the next (*dhyanantarika*), this thought came to his mind—'Indeed two gods, with great opulence and so on up to fortune have appeared before Shraman Bhagavan Mahavir However, I do not know these gods, nor do I know from which *Kalp* or celestial vehicle they rushed here and for what purpose ? Therefore I should approach Bhagavan Mahavir, offer him homage and obeisance, duly worship him and put forth my said queries ' With these thoughts Gautam Swami got up from his seat, came where Shraman Bhagavan Mahavir was seated and so on up to commenced worship

[प्र ३] 'गोयमा !' इ समणे भगव महावीरे भगवं गोयम एवं वयासी–से नूण तव गोयमा ! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं गोयमा ! अट्ठे समट्ठे ?

[उ.] हंता, अत्थि।

त गच्छाहि ण गोयमा ! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइ वागरणाइं वागरेहिंति।

[प्र ३] इसके पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने गौतम आदि अनगारो को सम्बोधित करके भगवान गौतम से इस प्रकार कहा–'गौतम ! ध्यानान्तरिका मे वर्तते हुए तुम्हारे मन मे इस प्रकार का अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि मै देवो सम्बन्धी तथ्य जानने के लिए श्रमण भगवान महावीर की सेवा मे जाकर उन्हे वन्दन-नमस्कार करूँ, उनकी पर्युपासना करूँ, उसके पश्चात् पूर्वोक्त प्रश्न पूछूँ, यावत् इसी कारण से जहाँ मै हूँ वहाँ तुम मेरे पास शीघ्र आए हो। हे गौतम ! यही बात है न ?''

[उ] 'हाँ, भगवन् ! यह बात ऐसी ही है।'

'गौतम ! तुम (अपनी शका के निवारणार्थ उन्ही देवो के पास) जाओ। वे देव ही इस प्रकार की जो भी बाते हुई थी, तुम्हे बतायेगे।'

[Q. 3] Addressing Gautam and others, Shraman Bhagavan Mahavir said as follows—"Gautam ! In between your courses of meditation (*dhyanantarika*) you had this thought in your mind—'To know about gods I should approach Bhagavan Mahavir, offer him homage and obeisance, duly worship him and put forth my said queries' That is why you have rushed to where I am seated Gautam ! Isn't that so ?"

[Ans.] Yes, *Bhante* ! Indeed, that is so

"Gautam ! Go to those gods (to seek answers to your queries) and they will tell you all that transpired in this regard "

[४] तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समण भगवं महावीरं वंदति णमसति, वदित्ता णमंसित्ता जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए ण ते देवा भगवं गोयम एज्जमाणं पासंति, पासित्ता हट्ठा जाव हयहियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति, अब्भुट्ठित्ता खिप्पामेव पच्चुवागच्छंति, २ त्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छंति, २ त्ता जाव णमंसित्ता एव वयासी–एवं खलु भंते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव पादुब्भूआ। तए ण अम्हे समणं भगव महावीर वंदामो णमंसामो, २ त्ता मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो–कइ णं भते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइ सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ? तए ण समणे भगव महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्ह मणसा चेव इमं एयारूव वागरणं वागरेति–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अतेवासीसयाइं जाव अंत करेहिंति। तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वदामो नमंसामो, २ त्ता जाव पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगवं गोयमं वंदति नमंसति, २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया।

[४] श्रमण भगवान महावीर द्वारा इस प्रकार की आज्ञा मिलने पर भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया और फिर जिस तरफ वे देव थे, उसी ओर जाने का सकल्प किया।

उधर उन देवो ने भगवान गौतम स्वामी को अपनी ओर आते देखा तो वे अत्यन्त हर्षित हुए यावत् उनका हृदय प्रफुल्लित हो गया। वे शीघ्र ही खडे हुए, फुर्ती से उनके सामने गए और जहाँ गौतम स्वामी थे, वहाँ उनके पास पहुँचे। फिर उन्हे वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार बोले–'भगवन् !' महाशुक्रकल्प (सप्तम देवलोक) से, महासामान (महास्वर्ग) नामक महाविमान से हम दोनो महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव यहाँ आये है। यहाँ आकर हमने श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वन्दन-नमस्कार किया और मन से ही इस प्रकार की ये बाते पूछी कि-'भगवन् ! आप देवानुप्रिय के कितने सौ शिष्य सिद्ध होगे यावत्

सर्वदु खो का अन्त करेगे ?' तब हमारे द्वारा पूछे जाने पर उन्होने हमे मन से ही इस प्रकार का यह उत्तर दिया–'हे देवानुप्रियो ! मेरे सात सौ शिष्य सिद्ध होगे, यावत् सर्वदु खो का अन्त करेगे।' इस प्रकार मन से पूछे गए प्रश्न का उत्तर श्रमण भगवान महावीर द्वारा मन से ही प्राप्त करके हम अत्यन्त हृष्ट और सन्तुष्ट हुए यावत् हमारा हृदय उनके प्रति कृतज्ञ हो गया। अतएव हम श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार करके यावत् उनकी पर्युपासना कर रहे है।' यो कहकर उन देवो ने भगवान गौतम स्वामी को वन्दन–नमस्कार किया और वे दोनो देव जिस दिशा से प्रादुर्भूत हुए थे, उसी दिशा मे वापस लौट गए।

[4] On getting this permission from Shraman Bhagavan Mahavir, Bhagavan Gautam paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir and decided to approach the gods

When the gods saw Bhagavan Gautam Swami approaching, they were pleased and so on up to delighted They at once got up and hurried towards Gautam Swami After paying him homage and obeisance they said—"*Bhante* ! We, two gods, with great opulence and so on up to fortune, from Mahasaaman celestial vehicle in Mahashukra Kalp came here After that we paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir and asked in our mind—'*Bhante* ! How many hundred of your disciples will become *Siddhas* and so on up to end all miseries ?' On being asked thus he replied in his mind—'O beloved of gods ! Seven hundred of my disciples will become *Siddhas* and so on up to end all miseries ' Thus on getting answer from Shraman Bhagavan Mahavir in his mind to the question asked by us in our mind we were extremely pleased and contented, and our hearts were filled with gratitude for him Therefore we paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir and are doing his worship " With these words those gods paid homage and obeisance to Bhagavan Gautam Swami and returned in the direction they had appeared from

देवो को 'नो–सयत' कहना CALLING GODS NON-RESTRAINED

२०. [प्र.] 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं जाव एव वयासी–देवा णं भंते ! 'संजया' त्ति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। अब्भक्खाणमेयं देवाणं।

२१. [प्र.] देवाणं भंते ! 'असंजता' त्ति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। णिट्ठुरवयणमेयं देवाणं।

२२. [प्र.] देवाणं भंते ! 'संजयासंजया' ति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। असब्भूयमेयं देवाणं।

२३. [प्र.] से किं खाति णं भंते ! देवा ति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] गोयमा ! देवा णं 'नोसंजया' ति वत्तव्वं सिया।

२०. [प्र.] 'भगवन् !' इस प्रकार सम्बोधित करके भगवान गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया यावत् इस प्रकार पूछा-भगवन् ! क्या देवो को 'सयत' कहा जा सकता है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ (सम्यक्) नही है, (देवो को 'सयत' कहना) देवो के लिए अभ्याख्यान (मिथ्या आरोपित कथन) है।

२१. [प्र.] भगवन् ! क्या देवो को 'असयत' कहना चाहिए ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ (भी) समर्थ नही है। देवो के लिए (असयत) कहना निष्ठुर वचन है।

२२. [प्र] भगवन् ! क्या देवो को 'सयतासयत' कहना चाहिए ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ (भी) समर्थ नही है, देवो को 'सयतासयत' कहना देवों के लिए असत्य वचन है।

२३. [प्र] भगवन् ! तो फिर देवो को किस नाम से पुकारना चाहिए ?

[उ.] गौतम ! देवो को 'नोसयत' कहा जा सकता है।

20. [Q.] "*Bhante* !" Addressing thus Bhagavan Gautam Swami paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir and so on up to and submitted—"*Bhante* ! Can gods be called 'restrained' (*samyat*) ?"

[Ans.] Gautam ! That is not true To say so is incorrect

21. [Q.] "*Bhante* ! Can gods be called 'unrestrained' (*asamyat*) ?"

[Ans.] Gautam ! That is not true To say so is rude

22. [Q.] "*Bhante* ! Can gods be called 'restrained-unrestrained' (*samyatasamyat*) ?"

[Ans.] Gautam ! That too is not true To say so is a false statement for gods

23. [Q.] "*Bhante* ! Then what should gods be called (in this regard) ?

[Ans.] Gautam ! Gods can be called non-restrained (*nosamyat*)

विवेचन : देवो के लिए 'नोसंयत' शब्द कहने का कारण-जिस प्रकार 'मृत' और 'दिवगत' का अर्थ एक होते हुए भी 'मर गया' शब्द निष्ठुर (कठोर) वचन होने से 'स्वर्गवासी हो गया' ऐसे अनिष्ठुर (मृदु) शब्दो का प्रयोग

किया जाता है वैसे ही यहाँ 'असयत' शब्द के बदले 'नोसयत' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह यथार्थ मृदु वचन है। *(वृत्ति पत्राक २११)*

Elaboration—Reason for using the term *nosamyat* for gods—although dead or deceased are factually correct terms for a person who has died, in common polite usage the term 'left or departed for heavenly abode' is used In the same way *nosamyat* is the correct and polite term for *asamyat (Vritti leaf 211)*

देवो की भाषा अर्ध-मागधी LANGUAGE OF GODS ARDHAMAAGADHI

२४. [प्र.] देवा णं भते ! कयराए भासाए भासंति ? कतरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?

[उ.] गोयमा ! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, सा वि य ण अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति।

२४. [प्र] भगवन् ! देव कौन-सी भाषा बोलते है ? अथवा (देवो द्वारा) बोली जाती हुई कौन-सी भाषा विशिष्ट रूप होती है ?

[उ] गौतम ! देव अर्ध-मागधी भाषा बोलते है, और बोली जाती हुई वह अर्ध-मागधी भाषा ही विशिष्ट रूप होती है।

24. [Q.] *Bhante* ! In what language do gods speak ? Or what is the special language spoken by them (gods) ?

[Ans.] Gautam ! Gods speak in Ardhamaagadhi language ? Being spoken by them (gods) Ardhamaagadhi has acquired the status of special language

विवेचन . अर्ध-मागधी का स्वरूप—वृत्तिकार के अनुसार जो भाषा मगध देश मे बोली जाती है, उसे मागधी कहते है। जिस भाषा मे मागधी और प्राकृत आदि भाषाओ का मिश्रण हो गया हो, उसे अर्ध-मागधी भाषा कहते है। जिस भाषा मे आधी मागधी भाषा हो और आधी दूसरी भाषाएँ मिश्रित हुई हो, वही अर्ध-मागधी भाषा है। अथवा प्राचीन आचार्यो की यह भी मान्यता है कि प्राकृत, सस्कृत, मागधी, पैशाची शोरसौनी और देशी अपभ्रश जिसमे इन छहो भाषाओ का मिश्रण हो वह अर्द्ध-मागधी है। वह तीर्थकरो की भाषा है, देवो की भी भाषा है तथा जन भाषा भी है। अत सस्कृत से भी उसका महत्त्व अधिक है। *(वृत्ति पत्राक २२१)*

Elaboration—Ardha-maagadhi language—According to the commentator (*Vritti*) the language spoken in Magadh is called Maagadhi The language that has mixture of Maagadhi, Prakrit and other languages is called Ardha-maagadhi The language that has half (*ardha*) of Maagadhi and half of other languages is Ardhamaagadhi The belief of ancient scholars is that the language that has mixture of Prakrit,

Sanskrit, Maagadhi, Paishachi, Shaurseni and Deshi languages is called Ardhamaagadhi As it is the language used by *Tirthankars*, gods, and masses it is more important than Sanskrit even. *(Vritti, leaf 221)*

छद्मस्थ और केवली का ज्ञान KNOWLEDGE OF CHHADMASTH AND KEVALI

२५. [प्र.] केवली णं भंते ! अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाणति पासति।

२५. [प्र.] भगवन् ! क्या केवली अन्तकर (कर्मों का अन्त करने वाले) को अथवा चरमशरीरी को जानता-देखता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! वह उसे जानता-देखता है।

25. [Q.] *Bhante* ! Does the omniscient (*Kevali*) know and see an *antakar* (rebirth-terminator) or *charam shariri* (terminal-bodied) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He knows and sees

२६. [प्र. १] जहा णं भंते ! केवली अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति तहा णं छउमत्थे वि अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सोच्चा जाणति पासति पमाणतो वा।

२६. [प्र. १] भगवन् ! जिस प्रकार केवली अन्तकर को, अथवा अन्तिमशरीरी को जानता-देखता है, क्या उसी प्रकार छद्मस्थ-मनुष्य भी अन्तकर को अथवा अन्तिमशरीरी को जानता-देखता है ?

[उ. १] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं, (अर्थात्-केवली की तरह छद्मस्थ अपने ही ज्ञान से नहीं जान सकता), किन्तु छद्मस्थ मनुष्य किसी से सुनकर अथवा प्रमाण द्वारा जानता-देखता है।

26. [Q. 1] *Bhante* ! As the omniscient (*Kevali*) knows and sees an *antakar* (rebirth-terminator) or *charam shariri* (terminal-bodied), in the same way does a *chhadmasth* (a person with finite cognition) also know and see an *antakar* (rebirth-terminator) or *charam shariri* (terminal-bodied) ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct (a *chhadmasth* cannot know and see directly of his own accord like a *Kevali*) He knows by hearing (from someone) or through validation (*pramaan*)

[प्र. २] से किं तं सोच्चा ?

[उ.] सोच्चा णं केवलिस्स वा, केवलिसावयस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा। से तं सोच्चा।

[प्र. २] भगवन् ! सुनकर (किसी से सुनकर) का अर्थ क्या है ?

[उ. २] हे गौतम ! केवली से, केवली के श्रावक, केवली के पास सुनने वाला, केवली की श्राविका, केवली के उपासक (सुनने के लक्ष्य के बिना केवली की उपासना), केवली की उपासिका, **केवली-पाक्षिक** = (स्वयबुद्ध), केवली पाक्षिक के श्रावक, केवली-पाक्षिक की श्राविका, केवली पाक्षिक के उपासक अथवा केवली पाक्षिक की उपासिका से, इनमे से किसी भी एक से 'सुनकर' छद्मस्थ मनुष्य यावत् जानता और देखता है। यह है **'सोच्चा'**-'सुनकर' का अर्थ।

[Q. 2] *Bhante* ! What is the meaning of 'by hearing (from someone)' ?

[Ans.] A *chhadmasth* knows and sees by hearing from any one of these—omniscient (*Kevali*), male disciple of omniscient (*shravak*), female disciple of omniscient (*shravika*), male lay worshipper of omniscient (*upaasak*), female lay worshipper of omniscient (*upaasika*), self-enlightened omniscient (*Kevali-pakshik*), male disciple of self-enlightened omniscient (*shravak*), female disciple of self-enlightened omniscient (*shravika*), male lay worshipper of self-enlightened omniscient (*upaasak*), female lay worshipper of self-enlightened omniscient (*upaasika*) This is the meaning of 'by hearing (from someone)'

[प्र ३] से किं तं पमाणे ?

[उ.] **पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे। जहा अणुयोगद्दारे तहा णेयव्वं पमाणं जाव तेण परं नो अत्तागमे, नो अणंतरागमे, परंपरागमे।**

[प्र ३] भगवन् ! वह 'प्रमाण' क्या है ? कितने है ?

[उ. ३] गौतम ! प्रमाण चार प्रकार का है, यथा-(१) प्रत्यक्ष, (२) अनुमान, (३) औपम्य (उपमान), और (४) आगम। (ज्ञान-गुण-) प्रमाण के विषय मे जिस प्रकार अनुयोगद्वारसूत्र मे कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी जान लेना चाहिए, यावत् न आत्मागम, न अनन्तरागम, किन्तु परम्परागम तक कहना चाहिए। *(सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र (२), सूत्र ४३६-४७०)*

[Q. 3] *Bhante* ! What is the meaning of validation (*pramaan*) ? (How many are they ?)

[Ans.] Gautam ! Validation (*pramaan*) are of four kinds—(1) *Pratyaksh* (direct experience or perceptual cognition), (2) *Anumaan* (inferential knowledge), (3) *Upamaan* (analogical knowledge), and (4) *Agam* (scriptural knowledge) What has been mentioned in *Anuyogadvar Sutra* about (*Jnana Guna* -) *Pramaan* should be repeated here .. and so on up to.. neither *Atmagam* (self-acquired scriptural knowledge) nor *Anantaragam* (scriptural knowledge acquired in immediate succession)

but only *Paramparagam* (scriptural knowledge acquired through lineage). *(Illustrated Anuyogadvar Sutra-2, aphorism - 436-470)*

२७. [प्र.] केवली णं भंते ! चरमकम्मं वा चरमनिज्जरं वा जाणति, पासति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जाणति, पासति।

२७. [प्र.] भगवन् ! क्या केवली मनुष्य चरम कर्म को अथवा चरम निर्जरा को जानता-देखता है ?

२७. [उ.] हाँ, गौतम ! केवली चरम कर्म को या चरम निर्जरा को जानता-देखता है।

27. [Q.] *Bhante !* Does the omniscient (*Kevali*) know and see the last *karma* (*charam karma*) or last shedding (*charam nirjara*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! he knows and sees

२८. [प्र.] जहा णं भंते ! केवली चरमकम्मं वा०, जहा णं अंतकरेणं वा आलावगो तहा चरमकम्मेणं वि अपरिसेसिओ णेयव्वो।

२८. [प्र.] भगवन् ! जिस प्रकार केवली चरम कर्म को या चरम निर्जरा को जाता-देखता है, क्या उसी तरह छद्मस्थ भी (उनको) यावत् जानता-देखता है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार 'अन्तकर' के विषय मे आलापक कहा था, उसी प्रकार 'चरम कर्म' का पूरा आलापक समझना चाहिए।

28. [Q.] *Bhante !* As the omniscient (*Kevali*) knows and sees the last *karma* (*charam karma*) or last shedding (*charam nirjara*), in the same way does a *chhadmasth* (a person with finite cognition) also know and see them ?

[Ans.] Like the statement about *antakar*, the complete statement should be repeated for last shedding

विवेचन : प्रमाण-चार प्रमाण तथा तीन प्रकार के आगम का विशेष अर्थ अनुयोगद्वार, भाग १ से जानना चाहिए। सूत्रो का गुम्फन करने वाले गणधरो के लिए सूत्र आत्मागम है, अर्थ का ज्ञान तीर्थंकरो से प्राप्त होता है। अत गणधर के लिए अर्थ अनन्तरागम है, गणधरो के शिष्यो के लिए सूत्र व अर्थ दोनो ही परम्परागम है। **चरम कर्म एवं चरम निर्जरा**-चौदहवे गुणस्थानवर्ती शैलेशी (अयोगी) अवस्था के अन्तिम समय में जिस कर्म का अनुभव हो, उसे चरम कर्म तथा उसके अनन्तर समय मे (शीघ्र ही) जो कर्म जीवप्रदेशो से झड जाते हैं, उसे चरम निर्जरा कहते है।

Elaboration—Pramaan—For the relevant meaning of four types of *pramaan* and three types of *Agam* refer to *Anuyogadvar Sutra* For *Ganadhars*, compilers of scriptures (*Sutra*), the canons are *Atmagam* (self-acquired scriptural knowledge). As the meaning is given by *Tirthankar* it is *Anantaragam* (scriptural knowledge acquired in immediate succession) for *Ganadhars* For the disciples of *Ganadhars*

text and meaning both are *Paramparagam* (scriptural knowledge acquired through lineage) *Charam karma* and *charam nirjara*—The *karma* experienced at the last *Samaya* of the *Shaileshi* (mountain-like) state in the 14th *Gunasthaan* is called *charam karma* (last *karma*) in the next *Samaya* these *karmas* are shed from soul space-points, this process of shedding is called *charam nirjara* (last shedding

केवली के प्रकृष्ट मन, वचन को जानने–देखने मे समर्थ वैमानिक देव

EXALTED MIND AND EXPRESSION OF KEVALI

२९. [प्र] केवली ण भंते ! पणीत मण वा, वइ वा धारेज्जा ?

[उ.] हता, धारेज्जा।

३०. [प्र १] जे णं भते ! केवली पणीयं मणं वा वइं वा धारेज्जा त णं वेमाणिया देवा जाणंति, पासंति ?

[उ] गोयमा ! अत्थेगइया जाणति पासंति, अत्थेगइया न जाणंति न पासति।

[प्र. २] से केणट्ठेण जाव न जाणति न पासति ?

[उ] गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा–माइमिच्छादिट्ठिउववन्नगा य, अमाईसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ ण जे ते माईमिच्छादिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणति ण पासंति, तत्थ ण जे ते अमाईसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणति, पासति। [से केणट्ठेण एवं वुच्चइ–अमाईसम्मदिट्ठी जाव–पासंति ? गोयमा ! अमाईसम्मदिट्ठी दुविहा पण्णत्ता–अणतरोववण्णगा य, परपरोववण्णगा य, तत्थ ण अणतरोववण्णगा ण जाणति, परपरोववण्णगा जाणति। से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ–परंपरोववण्णगा जाव–जाणंति ? गोयमा ! परपरोववण्णगा दुविहा पण्णत्ता–पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य, पज्जत्तगा जाणंति, अपज्जत्तगा ण जाणति।] एव अणतर–परपर–पज्जत्ताऽपज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासति। से तेणट्ठेण०, तं चेव।

२९ [प्र] भगवन् ! क्या केवली भगवान प्रकृष्ट (प्रशस्त) मन और प्रकृष्ट वचन को धारण करते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! धारण करते है।

३०. [प्र १] भगवन् ! केवली जिस प्रकार के प्रकृष्ट मन और प्रकृष्ट वचन को धारण करते है, क्या उसे वैमानिक देव जानते–देखते है ?

[उ.] गौतम ! कितने ही (वैमानिक देव उसे) जानते–देखते है, और कितने ही नही जानते-देखते।

[प्र. २] भगवन् ! कितने ही देव जानते–देखते है, और कितने ही नही जानते-देखते, ऐसा किस कारण से कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! वैमानिक देव दो प्रकार के है–यथा–मायी–मिथ्यादृष्टि रूप से उत्पन्न और अमायी सम्यग्दृष्टि रूप से उत्पन्न। [इन दोनो मे से जो मायी–मिथ्यादृष्टि रूप से उत्पन्न हुए है, वे (वैमानिक देव

केवली के प्रकृष्ट-मन-वचन को) नही जानते-देखते तथा जो अमायी-सम्यग्दृष्टि रूप से उत्पन्न हुए है, वे जानते-देखते है।

अमायी-सम्यग्दृष्टि वैमानिक देव जानते और देखते है, ऐसा कहने का क्या कारण है?

हे गौतम ! अमायी-सम्यग्दृष्टि देव दो प्रकार के कहे गये है-यथा-अनन्तरोपपन्नक और परम्परोपपन्नक। इनमे जो अनन्तरोपपन्नक है, वे नही जानते और नही देखते है और जो परम्परोपपन्नक है, वे जानते और देखते है।

हे भगवन् ! 'परम्परोपपन्नक देव जानते और देखते है'-ऐसा कहने का क्या कारण है?

हे गौतम ! परम्परोपपन्नक देव दो प्रकार के कहे गये है-पर्याप्त और अपर्याप्त। जो पर्याप्त है, वे जानते और देखते है और जो अपर्याप्त है, वे नही जानते और नही देखते है।'

इसी तरह अनन्तरोपपन्नक-परम्परोपपन्नक, पर्याप्त-अपर्याप्त, एव उपयोगयुक्त (उपयुक्त)-उपयोगरहित (अनुपयुक्त) इस प्रकार के वैमानिक देवो मे से जो उपयोगयुक्त वैमानिक देव है, वे ही (केवली के प्रकृष्ट मन एव वचन को) जानते-देखते है। इसी कारण से ऐसा कहा गया है कि कितने ही वैमानिक देव जानते-देखते है, और कितने ही नही जानते देखते।

29. [Q.] *Bhante* ! Does the omniscient (*Kevali*) hold an exalted mind and expression (*vachan*)?

[Ans.] Yes, Gautam ! He does

30. [Q. 1] *Bhante* ! Do the Vaimanik gods know and see that the omniscient (*Kevali*) holds an exalted mind and expression (*vachan*)?

[Ans.] Gautam ! Some of them know and see and some do not know and see

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so that some of them know and see and some do not know and see?

[Ans.] Gautam ! Vaimanik gods are of two types—Born as deceitful and unrighteous (*maayi-mithyadrishti*) and deceit-free and righteous (*amaayi-samyagdrishti*) Of these those born as deceitful and unrighteous (*maayi-mithyadrishti*) do not know and see (the exalted mind and expression of *Kevali*) and deceit-free and righteous (*amaayi-samyagdrishti*) do know and see

Why is it said that deceit-free and righteous (*amaayi-samyagdrishti*) gods do know and see?

Gautam ! Deceit-free and righteous (*amaayi-samyagdrishti*) gods are of two kinds—those born continuously without a time gap (*anantaropapannak*) and those born with a gap of time

(*paramparopapannak*) Of these those born continuously without a time gap (*anantaropapannak*) do not know and see and those born with a gap of time (*paramparopapannak*) do know and see

Bhante ! Why is it said that gods born with a gap of time (*paramparopapannak*) do know and see ?

Gautam ! gods born with a gap of time (*paramparopapannak*) are of two kinds—fully developed (*paryapt*) and underdeveloped (*aparyapt*) Of these those who are fully developed (*paryapt*) know and see and the underdeveloped (*aparyapt*) do not know and see

Like this, out of the *anantaropapannak-paramparopapannak*, *paryapt-aparyapt* and *upayogayukta* (with a tendency to use knowledge)-*upayogarahit* (without a tendency to use knowledge) Vaimanik gods only those who have a tendency to use knowledge (*upayogayukta*) know and see (the exalted mind and expression of *Kevali*) That is why it is said that some of the Vaimanik gods know and see and some do not know and see

विवेचन जो वैमानिक देव मायी-मिथ्यादृष्टि है, उनके सम्यग्ज्ञान नही होता, अमायी-सम्यग्दृष्टि वैमानिको मे से जो अनन्तरोपपन्नक-(जिसे जन्म लिए एक ही समय हुआ है) होते है, उन्हे भी ज्ञान नही होता, तथा परम्परोपपन्नक-(जिसे जन्म लिए एक समय से अधिक हो गया है) वैमानिको मे भी जो अपर्याप्त होते है, उन्हे भी ज्ञान नही होता, इसी प्रकार जो पर्याप्त वैमानिक देव है, उनमे जो सम्यग्दृष्टि, उपयोगयुक्त होता है, वही केवली के प्रकृष्ट मन-वचन को जान-देख सकता है, उपयोगरहित नही।

Elaboration—The deceitful and unrighteous (*maayi-mithyadrishti*) Vaimanik gods are devoid of right knowledge (*samyak-jnana*) Of the deceit-free and righteous (*amaayi-samyagdrishti*) Vaimaniks those who are born continuously without a time gap (*anantaropapannak*) are also devoid of right knowledge Also among those born with a gap of time (*paramparopapannak*) those who are not fully developed (*aparyapt*) do not have right knowledge In the same way among the fully developed (*paryapt*) Vaimanik gods only those who are righteous and endowed with the tendency to use knowledge can know and see the exalted mind and expression of *Kevali*, not those who are not endowed with the tendency to use knowledge

अनुत्तरौपपातिक देवो की मन शक्ति MENTAL POWER OF ANUTTAROPAPATIK GODS

३१. [प्र १] पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?

[उ.] **हंता, पभू।**

३१. [प्र. १] भगवन् ! क्या अनुत्तरौपपातिक (अनुत्तरविमानो मे उत्पन्न हुए) देव अपने स्थान पर रहे हुए ही, (मनुष्यलोक मे) रहे हुए केवली के साथ **आलाप**-(एक बार बातचीत) और **संलाप**-(बार-बार बातचीत) करने मे समर्थ है ?

[उ.] गौतम ! हाँ, (वे ऐसा करने मे) समर्थ है।

31. [Q. 1] *Bhante* ! Are the Anuttaraupapatık gods (those born ın Anuttar *vımaans*) capable of communıcatıng (*aalaap*) and dıscussıng (*samlaap*) from there wıth the *Kevalı* (omnıscıent) who ıs here (on the earth) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They are

[प्र. २] **से केणट्ठेणं जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ?**

[उ.] **गोयमा ! जं णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारण वा वागरण वा पुच्छंति, तं णं इहगए केवली अट्ठं वा जाव वागरणं वा वागरेति। से तेणट्ठेणं०।**

[प्र २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि अनुत्तरौपपातिक देव आलाप और सलाप करने मे समर्थ है ?

[उ] हे गौतम ! अनुत्तरौपपातिक देव अपने स्थान पर रहे हुए ही, जो अर्थ, हेतु, प्रश्न, कारण अथवा व्याकरण (व्याख्या) पूछते है, उसका उत्तर यहाँ रहे हुए केवली भगवान देते है। इस कारण से यह कहा गया है कि अनुत्तरौपपातिक देव यावत् आलाप-सलाप करने मे समर्थ है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why ıs ıt saıd that Anuttaraupapatık gods and so on ıp to are capable of communıcatıng and dıscussıng (wıth the *Kevalı*)

[Ans.] Gautam ! When the Anuttaraupapatık gods from theır celestıal vehıcles ask some meanıng, cause, questıon, reason or grammar (elaboratıon) then *Kevalı Bhagavan* provıdes them the answer from here. That ıs why ıt ıs saıd that Anuttaraupapatık gods and so on up to .. are capable of communıcatıng and discussıng (wıth the *Kevalı*)

३२. [प्र. १] **जं णं भंते ! इहगए चेव केवली अट्ठं वा जाव वागरेइ तं णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति, पासंति ?**

[उ.] **हंता, जाणंति पासंति।**

३२. [प्र १] भगवन् ! केवली भगवान यहाँ रहे हुए जिस अर्थ, यावत् व्याकरण का उत्तर देते है, क्या उस उत्तर को वहाँ रहे हुए अनुत्तरौपपातिक देव जानते-देखते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! वे जानते-देखते है।

32. [Q. 1] *Bhante* ! Are the Anuttaraupapatık gods capable of knowing and seeing the answers provided by *Kevalı Bhagavan* to the meaning and so on up to grammar asked by them ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They are

[प्र. २] से केणट्ठेणं जाव पासंति ?

[उ.] गोयमा ! तेसि णं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमन्नागताओ भवंति। से तेणट्ठेणं जं णं इहगते केवली जाव पासंति त्ति।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से (कहा जाता है कि वहाँ रहे हुए अनुत्तरौपपातिक देव, यहाँ रहे हुए केवली के द्वारा प्रदत्त उत्तर को) जानते-देखते है ?

[उ] गौतम ! उन देवो को अनन्त मनोद्रव्य-वर्गणा उपलब्ध है, प्राप्त है, अभिसमन्वागत (अभिमुख समानीत) है। इस कारण से यहाँ विराजित केवली भगवान द्वारा कथित अर्थ, हेतु आदि को वे वहाँ रहे हुए ही जान-देख लेते है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that (Anuttaraupapatık gods capable of knowing and) seeing (the answers provided by *Kevalı Bhagavan* to the meaning and so on up to grammar asked by them)

[Ans.] Gautam ! Those gods possess and have at their command an infinite *manodravya-vargana* (units of mental or neuronic capacity) That is why they know and see the meaning and so on up to grammar asked by them provided by *Kevalı Bhagavan* from here)

३३. [प्र.] अणुत्तरोववाइया ण भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा उवसंतमोहा खीणमोहा ?

[उ.] गोयमा ! णो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, नो खीणमोहा।

३३. [प्र] भगवन् ! क्या अनुत्तरौपपातिक देव उदीर्णमोह है, उपशान्तमोह है, अथवा क्षीणमोह है ?

[उ.] गौतम ! वे उदीर्णमोह नही है, उपशान्तमोह है, क्षीणमोह नही है।

33. [Q.] *Bhante* ! Are the Anuttaraupapatık gods with fruited attachment (*udırna moha*), pacified attachment (*upashant moha*) or destroyed attachment (*ksheen moha*) ?

[Ans.] Gautam ! They are not with fruited attachment (*udırna moha*) but with pacified attachment (*upashant moha*) and also not with destroyed attachment (*ksheen moha*)

विवेचन . अनुत्तरौपपातिक देवो का मनोद्रव्य-सामर्थ्य-अनुत्तरौपपातिक देवो के अवधिज्ञान का विषय **सम्भिन्न**-लोकनाडी-(लोकनाडी से कुछ कम) है। जो अवधिज्ञान लोकनाडी का ग्राहक (ज्ञाता) होता है, वह असीम मनोवर्गणा का ग्राहक होता ही है, क्योकि जिस अवधिज्ञान का विषय लोक का सख्येय भाग होता है,

वह भी मनोद्रव्य का ग्राहक होता है, तो फिर जिस अवधिज्ञान का विषय सम्भिन्न लोकनाडी है, वह मनोद्रव्य का ग्राहक हो, इसमे सन्देह ही क्या? इसलिए अनुत्तरविमानवासी देवो का मनोद्रव्यसामर्थ्य असीम है।

पीछे बताया जा चुका है कि केवली के ज्ञानात्मक भाव मन नही होता, किन्तु उपयोग रूप मानसिक प्रवृत्ति होती है। केवली जब कुछ कहना चाहते है, तब उनके आत्म-प्रदेशों का स्पन्दन होता है। उससे मनोद्रव्य वर्गणा (मानसिक पुद्गल स्कन्धो) का ग्रहण होता है। उन पुद्गलो को अनुत्तर विमान के देव ग्रहण कर जान लेते है।

अनुत्तरौपपातिक देव उपशान्त मोह है—अनुत्तरौपपातिक देवो के वेदमोहनीय का उदय उत्कट नही होता, इसलिए वे उदीर्णमोह नही है, वे क्षीणमोह भी नही, क्योंकि उनमे क्षपक श्रेणी का अभाव है, किन्तु उनमे मैथुन का कथमपि सद्भाव न होने से तथा वेदमोहनीय अनुत्कट होने से वे 'उपशान्तमोह' कहे गये है। *(वृत्ति, पत्राक २२३)*

Elaboration—Infinite mental capacity of Anuttaraupapatik gods— The range of the *avadhi-jnana* of Anuttaraupapatik gods covers *sambhinna-lokanaadi* (slightly less than the central spine of the lok) The *avadhi-jnana* capable of knowing the central spine of the Lok involves infinite units of mental capacity This is because even the *avadhi-jnana* capable of knowing countable fraction of Lok involves infinite mental capacity Thus there can be no doubt that the *avadhi-jnana* capable of knowing the central spine of the Lok involves infinite units of mental capacity That is why the mental capacity of gods dwelling in Anuttar *vimaans* is unlimited

It has already been stated that *Kevali* does not have *bhaava-man* (psychological mind) He only has a tendency for mental activity When a *Kevali* desires to utter something his soul-spacepoints vibrate This creates vibrations in the mental or neuronic matter particles The gods of Anuttar *vimaans* have the capacity to receive and understand these vibrations

Upashant Moha—Anuttaraupapatik gods do not have enough intensity of fruition of experienceable attachment (*vedamohaniya*), therefore they are not with fruited attachment They are also not with destroyed attachment because they are not on the path of destruction of karmas (*kshapak shreni*) As they are devoid of the sexual desires and intense attachment they are said to be with pacified attachment *(Vritti, leaf 223)*

केवली इन्द्रियो से नहीं जानते–देखते KEVALI DOES NOT KNOW-SEE WITH SENSE ORGANS

३४. [प्र. १] केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ, पासइ ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

३४. [प्र १] भगवन् ! क्या केवली भगवान आदानो (इन्द्रियो) से जानते और देखते है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

34. [Q. 1] *Bhante* ! Does *Kevali Bhagavan* know and see with the help of sense organs (*aadaan* or *indriya*) ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[प्र. २] से केणट्ठेणं जाव केवली णं आयाणेहिं न जाणति, न पासति ?

[उ.] गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेणं०।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से केवली भगवान इन्द्रियो से नही जानते-देखते ?

[उ.] गौतम ! केवली भगवान पूर्व दिशा मे मित (सीमित) भी जानते-देखते है, अमित (असीम) भी जानते-देखते है, यावत् केवली भगवान का (ज्ञान और) दर्शन निरावरण है। इस कारण से कहा गया है कि वे इन्द्रियो से नही जानते-देखते। (अपितु प्रत्यक्ष ज्ञान से जानते-देखते है)

[Q. 2] *Bhante* ! What are the reasons that *Kevali Bhagavan* does not know and see with the help of sense organs ?

[Ans.] Gautam ! *Kevali Bhagavan* knows and sees limited (*mit*) as well as unlimited (*amit*) in the east and so on up to the knowledge and perception of *Kevali Bhagavan* is totally free of any veils That is why it is said that *Kevali Bhagavan* does not know and see with the help of sense organs (In fact, he knows and sees directly)

केवली भगवान का अस्थिर काययोग VIBRANT BODY OF OMNISCIENT

३५. [प्र. १] केवली णं भंते ! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पाय वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं चिट्ठति, पभू ण भंते ! केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव ओगाहित्ताण चिट्ठित्तए ?

[उ] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

३५. [प्र. १] भगवन् ! केवली भगवान इस समय (वर्तमान) मे जिन आकाश-प्रदेशो पर अपने हाथ, पैर, बाहू और उरू (जघा) को अवगाहित (स्पर्श) करके रहते है, क्या श्रेयकाल-(भविष्यकाल) मे भी वे उन्ही आकाशप्रदेशो पर अपने हाथ आदि को अवगाहित करके रह सकते है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

35. [Q. 1] *Bhante* ! Does *Kevali Bhagavan*, who occupies certain space-points with his hands, legs, arms and thighs at the present moment,

continue to occupy the same space-points with his hands etc. in the future (*shreya kaal*) as well ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! जाव केवली णं अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठति नो णं पभू केवली सेयकालसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए ?

[उ.] गोयमा ! केवलिस्स णं वीरियसजोगद्दव्वयाए चलाइं उवगरणाइं भवंति चलोवकरणट्ठयाए य णं केवली अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठति णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव जाव चिट्ठित्तिए। से तेणट्ठेणं जाव वुच्चइ–केवली णं अस्सिं समयंसि जाव चिट्ठित्तए ?

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है कि केवली भगवान इस समय मे जिन आकाशप्रदेशो पर अपने हाथ आदि को यावत् अवगाढ करके रहते है, भविष्यकाल मे वे उन्ही आकाशप्रदेशो पर अपने हाथ आदि को यावत् अवगाढ करके रहने मे समर्थ नही है ?

[उ] गौतम ! केवली भगवान का जीवद्रव्य वीर्यप्रधान योग वाला होता है, (योगो की चचलता के कारण) उनके हाथ आदि उपकरण (अगोपाग) चलायमान (अस्थिर) होते है। हाथ आदि अगो के चलित होते रहने से वर्तमान (इस) समय मे जिन आकाशप्रदेशो मे केवली भगवान अपने हाथ आदि को अवगाहित करके रहे हुए है, उनही आकाशप्रदेशो पर भविष्यकाल मे वे हाथ आदि को अवगाहित करके नही रह सकते। इसी कारण से यह कहा गया है कि केवली भगवान इस समय मे जिन आकाशप्रदेशो पर अपने हाथ, पैर यावत् उरू को अवगाहित करके रहते है, उस समय के पश्चात् आगामी समय मे वे उन्ही आकाशप्रदेशो पर अपने हाथ आदि को अवगाहित करके नही रह सकते।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that *Kevali Bhagavan*, who occupies certain space-points with his hands and so on up to thighs at the present moment, cannot continue to occupy the same space-points in the future (*shreya kaal*) as well ?

[Ans.] The soul entity (*jiva dravya*) of *Kevali Bhagavan* is with potency-predominated (*virya-pradhaan*) association (*yoga*) His hands and other body-parts are vibrant (due to the dynamism of this association) Due to this vibration of hands and other parts of the body it is not possible that his hands and other parts continue to occupy the same space-points, that they occupy at present, in the future as well That is why it is said that *Kevali Bhagavan*, who occupies certain space-points with his hands and so on up to thighs at the present moment, cannot continue to occupy the same space-points in the future (*shreya kaal*) as well

३६. [प्र. १] पभू ण भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दंडसहस्सं अभिनिव्वत्तिता उवदंसेत्तए ?

[उ] हंता, पभू।

३६. [प्र. १] भगवन् ! क्या चतुर्दशपूर्वधारी (श्रुतकेवली) एक घडे मे से हजार घडे, एक वस्त्र मे से हजार वस्त्र, एक कट (चटाई) मे से हजार कट, एक रथ मे से हजार रथ, एक छत्र मे से हजार छत्र और एक दण्ड मे से हजार दण्ड करके दिखलाने मे समर्थ है ?

[उ] हॉ, गौतम ! वे ऐसा करने मे समर्थ है।

36. [Q. 1] *Bhante* ! Is a *Chaturdash Purvadhar* (scholar of fourteen *Purvas*) capable of displaying one thousand pitchers from just one pitcher, one thousand apparels from just one apparel, one thousand mats from just one mat, one thousand chariots from just one chariot, one thousand umbrellas from just one umbrella and one thousand staffs from just one staff ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He is capable of doing that

[प्र २] से केणट्ठेण पभू चोद्दसपुव्वी जाव उवदसेत्तए ?

[उ.] गोयमा ! चउद्दसपुव्विस्स णं अणंताइ दव्वाइ उक्करियाभेदेण भिज्जमाणाइ लद्धाइ पत्ताइ अभिसमन्नागयाइं भवति। से तेणट्ठेणं जाव उवदसित्तए।

सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति०।

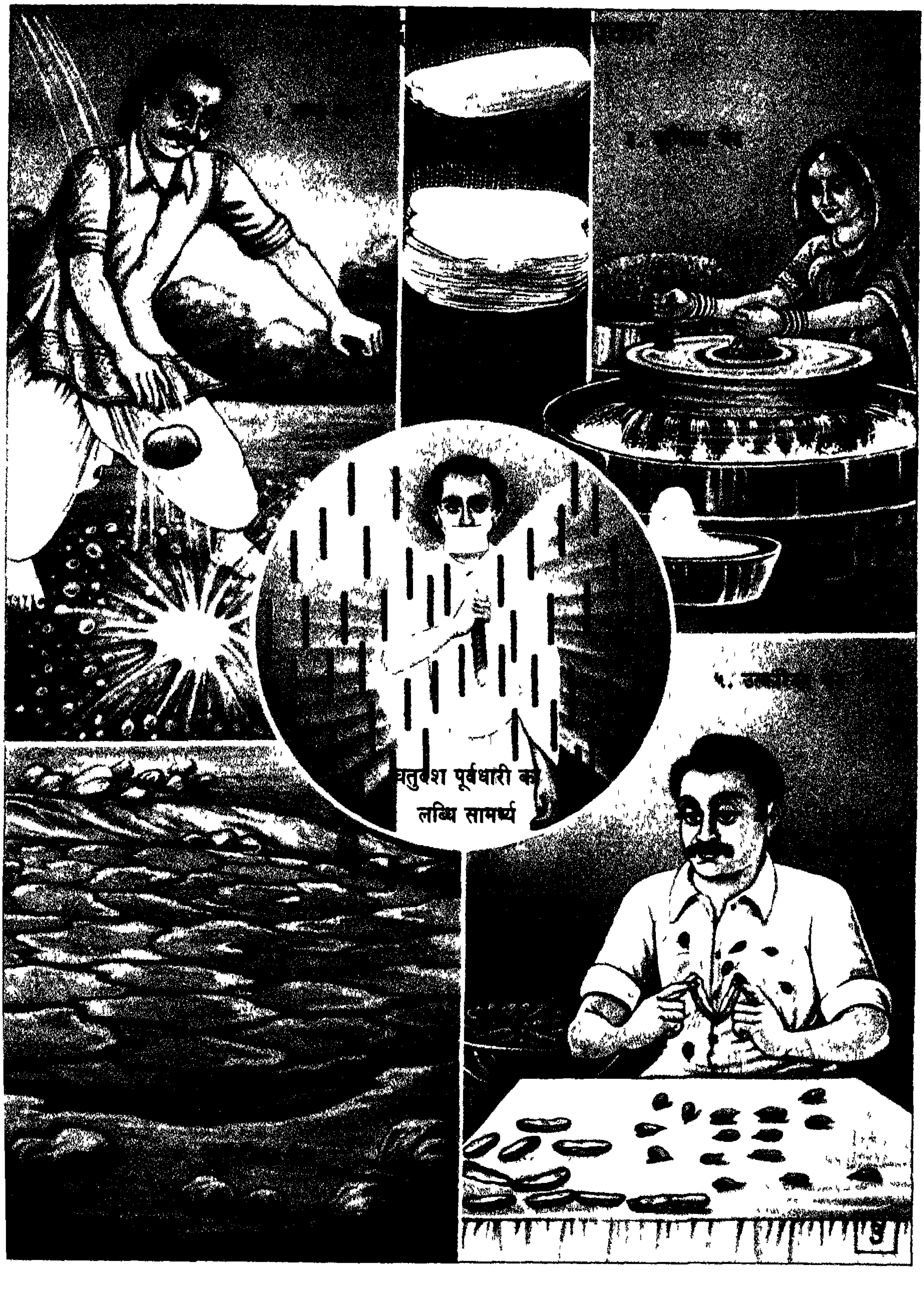
॥ पचमे सए · चउत्थो उद्देसओ समत्तो ॥

[प्र. २] भगवन् ! चतुर्दशपूर्वधारी (एक घट मे से एक हजार घट यावत् करके दिखलाने मे) कैसे समर्थ है ?

[उ] गौतम ! चतुर्दशपूर्वधारी श्रुतकेवली ने उत्करिकाभेद द्वारा भेदे जाते हुए अनन्त द्रव्यो को लब्ध किया है, प्राप्त किया है तथा अभिसमन्वागत किया है। इस कारण से वह उपर्युक्त प्रकार से एक घट से हजार घट आदि करके दिखलाने मे समर्थ है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरण करने लगे।

[Q. 2] *Bhante* ! How a *Chaturdash Purvadhar* is so capable (of displaying one thousand pitchers from just one pitcher and so on up to one thousand staffs from just one staff) ?


चतुर्दश पूर्वधारी की
लब्धि सामर्थ्य

चित्र परिचय-३ | **Illustration No. 3**

पुद्गल भेद के पाँच प्रकार

चतुर्दश पूर्वधारी का लब्धि सामर्थ्य—चतुर्दश पूर्वधारी श्रुत केवली मे लब्धिजन्य सामर्थ्य को उदाहरण देकर बताया है कि वह उत्कटिका भेद से पुद्गल द्रव्यो को भेदता हुआ एक ही दण्ड (या घट छत्र रथ आदि) के हजार रूप दिखलाने में समर्थ होता है।

पुद्गलो के भेद पॉच प्रकार के होते हैं -

(१) **खण्ड भेद**—जैसे मिट्टी के ढेले को फैकने से उसके टुकडे टुकडे हो जाना।

(२) **प्रतर भेद**—जैसे अभ्रक या भोजपत्र आदि की परत पर परत रहती है। उसी प्रकार पुद्गलो का समवाय प्रतर भेद है।

(३) **चूर्णिका भेद**—जिस प्रकार गेहूँ चना आदि के दाने चक्की मे पिसे जाने पर उसका बारीक चूर्ण हो जाता है। यह चूर्णिका भेद है।

(४) **अनुतटिका भेद**—तालाब आदि मे या सूखी धरती पर दरार पड जाने से जो भेद दिखाई देता है वह।

(५) **उत्करिकाभेद**—एरण्ड की फली या मूंग फली आदि सूखने पर, अपने आप फटकर उनका बीज स्वाभाविक रूप से ऊपर उछलता है। इस प्रकार के भेद को उत्करिका भेद कहा जाता है। श्रुतकेवली का लब्धिजन्य सामर्थ्य उत्करिका भेद से भिन्न पदार्थ की तरह होना है।

(शतक ५ सू)

FIVE KINDS OF BREAKING OF MATTER

A Chaturdash Purvadhar acquires the special power of disintegrating infinite substances by the process of utkarika-bhed and thereby he is capable of displaying one thousand images of a single stick (or pitcher umbrella, chariot etc)

Breaking of matter is done five ways—

(1) **Khand-bhed**—Breaking into pieces when a lump of sand is thrown

(2) **Pratar-bhed**—Breaking into layers, as it happens with mica or pelm leaves

(3) **Churnika-bhed**—Crushing or grinding into powder form as it happens when grains like wheat and sesame are ground

(4) **Anutatika-bhed**—Splitting into cracks as it happens when moist earth dries up

(5) **Utkarika-bhed**—Natural disintegration from one to many as it happens when an Erand or other seed splits The special power of a Shrut Kevali is like disintegrating infinite substances by the process of utkarika-bhed

- Shatak 5, lesson 1 Sutra 36(2)

[Ans.] Gautam ! A *Chaturdash Purvadhar* has acquired (*labdh*), possesses (*prapt*) and has at his command (*abhisamnvagat*) infinite substances (*dravya*) being disintegrated by the process of *utkarika-bhed* That is why he is so capable (of displaying one thousand pitchers from just one pitcher and so on up to one thousand staffs from just one staff)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन : उत्करिकाभेद का स्वरूप—पुद्गलो को पाँच प्रकार से खण्डित (भिन्न–टुकडे–टुकडे) किया जाता है। इन्हे 'पुद्गलो के भेद' कहते है, वे पाँच प्रकार है–(१) खण्डभेद, (२) प्रतरभेद, (३) चूर्णिकाभेद, (४) अनुतटिकाभेद, और (५) उत्करिकाभेद। जैसे ढेले को फैकने पर उसके टुकडे–टुकडे हो जाते है, इसी तरह पुद्गलो के भेद को **'खण्डभेद'** कहते है। एक तह के ऊपर दूसरी तह का होना **'प्रतरभेद'** कहलाता है। जैसे–अभ्रक (भोडल) भोजपत्र आदि मे प्रतरभेद पाया जाता है। तिल, गेहूँ, आदि के पिस जाने पर भेद होना **'चूर्णिकाभेद'** कहलाता है। तालाब आदि मे फटी हुई दरार के समान पुद्गलो के भेद को **'अनुतटिकाभेद'** तथा एरण्ड या मूँगफली का बीज जैसे उछलता है, वैसे एक परमाणु स्कन्ध से दूसरे परमाणु स्कन्ध का चटककर उछलना **'उत्कारिकाभेद'** है। (प्रज्ञापना वृत्ति, पद ११)

लब्ध, प्राप्त और अभिसमन्वागत की व्याख्या—**लब्ध** = लब्धि–विशेष द्वारा ग्रहण करने योग्य बनाये हुए। **प्राप्त** = लब्धि–विशेष द्वारा ग्रहण किये हुए। **अभिसमन्वागत** = घटादि रूप से परिणमाने के लिए प्रारम्भ किये हुए।

॥ पचम शतक चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Utkarika-bhed—Breaking or disintegrating of matter is done five ways This process is called *pudgala-bhed*—(1) *Khand-bhed*, (2) *Pratar-bhed*, (3) *Churnika-bhed*, (4) *Anutatika-bhed*, and (5) *Utkarika-bhed* Breaking into pieces as it happens when a lump of matter is thrown is called *Khand-bhed* Breaking into layers as it happens with mica or palm leaves is called *Pratar-bhed* Crushing or grinding into powder form as it happens when grains like wheat and sesame are ground is called *Churnika-bhed* Splitting into cracks as it happens when moist earth (river-bed or pond-bed) dries up is called *Anutatika-bhed* Natural disintegration from one to many as it happens when an Erand or other seeds split is called *Utkarika-bhed* (*Prajnapana Vritti, 11*)

Labdh—acquired some special powers *Prapt*—possessed some special power *Abhisamanvagat*—have at one's command some special power

● END OF THE FOURTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : पंचम उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : FIFTH LESSON

छद्मस्थ CHHADMASTH (THE UNRIGHTEOUS)

क्या छद्मस्थ सिद्ध हो सकता है ? **CAN CHHADMASTH BE SIDDHA ?**

१. [प्र] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं.... सिज्झिंसु.... ?

[उ.] जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वं जाव 'अलमत्थु' त्ति वत्तव्वं सिया।

१. [प्र] भगवन् ! क्या छद्मस्थ मनुष्य शाश्वत, अनन्त, अतीतकाल (भूतकाल) में केवल संयम द्वारा सिद्ध हुआ है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार प्रथम शतक के चतुर्थ उद्देशक में कहा है, वैसा ही आलापक यहाँ भी कहना चाहिए, (और वह) यावत् 'अलमस्तु' कहा जा सकता है, यहाँ तक कहना चाहिए।

1. [Q.] *Bhante* ! Has a person with finite cognition (*chhadmasth*) become *Siddha* in the eternal limitless past only through ascetic-discipline (*samyam*) ?

[Ans.] Gautam ! As has been stated in the fourth lesson of the first chapter should be repeated here and so on up to perfect (*almastu*)

विवेचन—प्रथम शतक के चतुर्थ उद्देशक, सूत्र १५९-१६३ में कहा गया कि केवलज्ञानी हुए बिना कोई भी व्यक्ति सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, सर्वदुःखान्तकर, परिनिर्वाण प्राप्त, उत्पन्न ज्ञान-दर्शनधर, जिन, अर्हत् केवली और 'अलमस्तु' नहीं हो सकता।

Elaboration—In aphorisms 159-163 of the fourth lesson of the first chapter it has been mentioned that without becoming omniscient no person can become perfected (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), end all miseries, and attain nirvana or get endowed with right knowledge and perception to become Arhant, Jina, or Kevali (omniscient) and perfect (*almastu*)

एवम्भूत-अनेवम्भूतवेदना **EVAMBHOOT-ANEVAMBHOOT PAIN**

२. [प्र. १] अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, से कहमेयं भंते ! एवं.... ?

[उ] गोयमा ! जं णं अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वेदेंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति।

२. [प्र १] भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते है यावत् प्ररूपणा करते है कि समस्त प्राण, समस्त भूत, समस्त जीव और समस्त सत्त्व, एवभूत-(जिस प्रकार कर्म बाँधा है, उसी प्रकार) वेदना वेदते (भोगते = अनुभव करते) है, भगवन् ! यह ऐसा कैसे है ?

[उ.] गौतम ! वे अन्यतीर्थिक जो इस प्रकार कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है कि सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्व एवभूत वेदना वेदते है, उन्होने यह मिथ्या कथन किया है। हे गौतम ! मै यो कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि कितने ही प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, एवभूत वेदना वेदते है और कितने ही प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, **अनेवभूत**-(जिस प्रकार से कर्म बाँधा है, उससे भिन्न प्रकार से) वेदना वेदते है।

2. [Q. 1] *Bhante* ! People of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that all *praan* (two to four sensed beings, beings), *bhoot* (plant bodied beings, organisms), *jiva* (five sensed beings, souls), and sattva (immobile beings, entities) suffer *evambhoot* (according to acquired *karmas*) pain *Bhante* ! How is it so ?

[Ans.] Gautam ! What the people of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that all *praan* (two to four sensed beings), *bhoot* (plant bodied beings), *jiva* (five sensed beings), and *sattva* (immobile beings) suffer pain according to acquired *karmas* (*evambhoot*), is all incorrect O Gautam ! What I say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) is that some *praan*, *bhoot*, *jiva*, and *sattva* suffer *evambhoot* (according to acquired karmas) pain and some *praan*, *bhoot*, *jiva*, and *sattva* suffer *anevambhoot* (not according to acquired *karmas*)

[प्र. २] से केणट्ठेणं अत्थेगइया० तं चेव उच्चारेयव्वं ?

[उ.] गोयमा ! जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेंति ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति। जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेंति ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेति। से तेणट्ठेणं० तहेव।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है, कि कितने ही प्राण, भूत आदि एवभूत और कितने ही अनेवभूत वेदना वेदते है ?

[उ.] गौतम ! जो प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, जिस प्रकार स्वय ने कर्म किये है, उसी प्रकार वेदना वेदते (उसी प्रकार उदय मे आने पर भोगते–अनुभव करते) है, वे प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, एवभूत वेदना वेदते है किन्तु जो प्राण, भूत, जीव और सत्त्व जिस प्रकार कर्म किये है, उसी प्रकार वेदना नही वेदते (भिन्न प्रकार से वेदन करते है। वे प्राण, भूत, जीव और सत्त्व) अनेवभूत वेदना वेदते

है। इसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि कतिपय प्राण भूतादि एवभूत वेदना वेदते है और कतिपय प्राण भूतादि अनेवभूत वेदना वेदते है।

[Q. 2] *Bhante* ! For what reason is it said that some *praan*, *bhoot* (etc.) suffer *evambhoot* (according to acquired *karmas*) pain and some *praan*, *bhoot* (etc.) suffer *anevambhoot* (not according to acquired *karmas*)?

[Ans.] Gautam ! Those *praan*, *bhoot*, *jiva*, and *sattva* who suffer pain according to acquired *karmas* (sufferance caused due to natural fruition of acquired *karmas*) are said to be suffering *evambhoot* pain but those *praan*, *bhoot*, *jiva*, and *sattva* who do not suffer pain according to acquired *karmas* are said to be suffering *anevambhoot* pain. That is why it is said that some *praan*, *bhoot* (etc.) suffer *evambhoot* (according to acquired *karmas*) pain and some *praan*, *bhoot* (etc.) suffer *anevambhoot* (not according to acquired *karmas*).

३. [प्र. १] नेरइया णं भंते ! किं एवंभूत वेदण वेदेति ? अणेवभूयं वेदणं वेदेति ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया णं एवभूय पि वेदणं वेदेंति, अणेवभूय पि वेदण वेदेंति।

३. [प्र. १] भगवन् ! नैरयिक क्या एवभूत वेदना वेदते है, अथवा अनेवभूत वेदना वेदते है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक एवभूत वेदना भी वेदते है और अनेवभूत वेदना भी वेदते है।

3. [Q. 1] *Bhante* ! Do infernal beings (*nairayik*) suffer *evambhoot* (according to acquired *karmas*) pain or *anevambhoot* (not according to acquired *karmas*) pain?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings (*nairayik*) suffer *evambhoot* (according to acquired *karmas*) pain as well as *anevambhoot* (not according to acquired *karmas*) pain.

[प्र. २] से केणट्ठेण० ? तं चेव।

[उ.] गोयमा ! जे णं नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति ते ण नेरइया एवंभूयं वेदणं वेदेंति। जे णं नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेदणं वेदेति ते ण नेरइया अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं०।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ? (पूर्ववत् सारा पाठ यहाँ कहना चाहिए।)

[उ.] गौतम ! जो नैरयिक अपने किये हुए कर्मो के अनुसार वेदना वेदते है वे एवभूत वेदना वेदते है और जो नैरयिक अपने किये हुए कर्मो के अनुसार वेदना नही वेदते, (अपितु भिन्न प्रकार से वेदते है) वे अनेवभूत वेदना वेदते है।

[Q. 2] *Bhante* ! For what reason is it said that and so on up to pain?

[Ans.] Gautam ! Those infernal beings (*nairayik*) who suffer pain according to acquired *karmas* are said to be suffering *evambhoot* pain

but those infernal beings (*nairayik*) who do not suffer pain according to acquired *karmas* (but in some different way) are said to be suffering *anevambhoot* pain

४. एवं जाव वेमाणिया। संसारमंडलं नेयव्वं।

४. इसी प्रकार यावत् वैमानिक-(दण्डक) पर्यन्त ससारमण्डल (ससारी जीवो के समूह) के विषय मे जानना चाहिए।

4. The same is true for all beings of the world (*samsar mandal*) up to Vaimaniks

विवेचन · एवभूतवेदन और अनेवभूतवेदन का रहस्य–जिन प्राणियो ने जिस प्रकार से कर्म बॉधे है, उन कर्मो के उदय आने पर वे उसी प्रकार से असाता आदि वेदना भोग लेते है, उनका वह वेदन **एवभूतवेदना वेदन है**, किन्तु जो **प्राणी** जिस प्रकार से कर्म बाँधते है, उसी प्रकार से उनके फलस्वरूप वेदना नही वेदते, उनका वह वेदन–**अनेवभूतवेदना वेदन है**। जैसे–कई व्यक्ति दीर्घकाल मे भोगने योग्य आयुष्य आदि कर्मो की उदीरणा करके अल्पकाल मे ही भोग लेते है, उनका वह वेदन अनेवभूतवेदना वेदन कहलायेगा। अन्यथा, अपमृत्यु (अकालमृत्यु) का अथवा युद्ध आदि मे लाखो मनुष्यो का एक साथ एक ही समय मे मरण कैसे सगत होगा !

आगमोक्त सिद्धान्त के अनुसार जिन जीवो के जिन कर्मो का स्थितिघात, रसघात, प्रकृतिसक्रमण आदि हो जाते है, वे अनेवभूतवेदना वेदते है, किन्तु जिन जीवो के स्थितिघात, रसघात आदि नही होते, वे एवभूतवेदना वेदते है। *(वृत्ति पत्राक २२५)*

Elaboration—Explanation about evambhoot and anevambhoot— Those living beings who suffer pain according to acquired *karmas* (pleasure or pain giving) are said to be suffering *evambhoot* pain Those beings who do not suffer pain according to acquired *karmas* but in some different way are said to be suffering *anevambhoot* pain For example, if some person fructifies the long life-span determining and other *karmas* prematurely and experiences them in a reduced period, such sufferance is called *anevambhoot* sufferance As otherwise there could be no explanation for untimely deaths or deaths of hundreds of individuals at the same time in a war

According to the doctrine mentioned in the *Agams* the living beings who undergo change or reduction in duration and intensity of *karmas* as well as transformation of the species of *karmas* experience *anevambhoot* sufferance Those beings who do not undergo such change or transformation experience *evambhoot* sufferance *(Vritti, leaf 225)*

अवसर्पिणी मे हुए कुलकर आदि **KULAKARS OF THE AVASARPINI**

५. [प्र.] जंबुद्दीवे णं भंते ! इह भारहे वासे इमीसे उस्सप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ?

[उ.] गोयमा ! सत्त।

[एवं चेव तित्थयरमायरो, पियरो, पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टिमायरो, इत्थिरयणं, बलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो, पियरो, एएसि पडिसत्तू जहा समवाए णामपरिवाडीए तहा णेयव्वा।]

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ।

॥ पंचम सए : पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥

५. [प्र.] भगवन् ! जम्बूद्वीप मे, इस भारतवर्ष मे, इस अवसर्पिणी काल मे कितने कुलकर हुए है ?

[उ.] गौतम ! (इस अवसर्पिणी काल मे) सात कुलकर हुए है।

[इसी तरह तीर्थकरो की माता पिता, प्रथम शिष्याएँ, चक्रवर्त्तियो की माताएँ, स्त्रीरत्न, बलदेव, वासुदेव, वासुदेवो के माता-पिता, प्रतिवासुदेव आदि का कथन जिस प्रकार 'समवायागसूत्र' के नाम की परिपाटी मे किया गया है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए।]

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर यावत् विचरने लगे। [उक्त सभी नामो की सूची भगवती सूत्र, प्रथम भाग, पृष्ठ ४६१-४६३, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर मे देखनी चाहिए।]

॥ पचम शतक पचम उद्देशक समाप्त ॥

5. [Q.] *Bhante* ! What has been the number of Kulakars (clan-makers) in this Bharatvarsh in Jambudveep during this *Avasarpini* (regressive cycle of time) ?

[Ans.] There have been seven Kulakars (during this *Avasarpini*)

[In the same way the information about mothers, fathers and first female disciples of *Tirthankars*, mothers and consorts of *Chakravartis*, *Baladevs*, *Vasudevs*, parents of *Vasudevs*, *Prativasudevs* should be quoted as mentioned in the list of names from *Samavayanga*] (The list of all these names can also be seen in *Bhagavati Sutra*, part-1, pp 461-463, published by Agam Prakashan Samiti, Beawar)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

● END OF THE FIFTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : छठा उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : SIXTH LESSON

आयुष्य AYUSHYA (LIFE-SPAN)

अल्पायु और दीर्घायु के कारण CAUSES OF SHORT AND LONG LIFE-SPAN

१. [प्र.] कण्णं भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

[उ.] गोयमा ! तिहिं ठाणेहिं, तं जहा–पाणे अइवाएत्ता मुसं वइत्ता, तहारूव समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति।

२. [प्र.] कण्ण भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

[उ.] गोयमा ! तिहिं ठाणेहिं–नो पाणे अइवाइत्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समण वा माहणं वा फासु–एसणिज्जेण असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति।

१. [प्र] भगवन् ! जीव अल्पायु रूप फल देने वाले कर्म किस कारण से बाँधते है ?

[उ] गौतम ! तीन कारणो से जीव अल्पायु रूप फल देने वाले कर्म बाँधते है-(१) प्राणियो की हिंसा करके, (२) असत्य भाषण करके, और (३) तथारूप श्रमण या माहन को अप्रासुक, अनेषणीय अशन, पान, खादिम और स्वादिम–(रूप चतुर्विध आहार) देकर। इस प्रकार (तीन कारणो से) जीव अल्पायुष्क फल वाला कर्म बाँधते है।

२. [प्र] भगवन् ! जीव दीर्घायु के कारणभूत कर्म कैसे बाँधते है ?

[उ] गौतम ! तीन कारणो से जीव दीर्घायु के कारणभूत कर्म बाँधते है–(१) प्राणातिपात न करने से, (२) असत्य न बोलने से, और (३) तथारूप श्रमण और माहन को प्रासुक और एषणीय अशन, पान, खादिम और स्वादिम–(रूप चतुर्विध आहार) देने से। इस प्रकार (तीन कारणो) से जीव दीर्घायुष्क के (कारणभूत) कर्म का बन्ध करते है।

1. [Q.] *Bhante* ! How do living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining a short life-span ?

[Ans.] Gautam ! They do so for three reasons—(1) by harming or killing living beings, (2) by false speech and (3) by giving prohibited and unsuitable food of four kinds, namely staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), to ascetics conforming to the description in *Agams* (*tatharupa Shramans* and *Mahans*) That is

how (for three reasons) living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining a short life-span

2. [Q.] *Bhante* ! How do living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining a long life-span ?

[Ans.] Gautam ! They do so for three reasons—(1) by not harming or killing living beings, (2) by avoiding false speech and (3) by giving permitted and suitable food of four kinds, namely staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), to ascetics conforming to the description in *Agams* (*tatharupa Shramans* and *Mahans*) That is how (for three reasons) living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining a long life-span

३. [प्र.] कह णं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेति ?

[उ] गोयमा ! पाणे अइवाइत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समणं वा माहण वा हीलित्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमन्नित्ता, अन्नतरेणं अमणुण्णेणं अपीतिकारएणं असण–पाण–खाइम–साइमेण पडिलाभेत्ता, एवं खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेति।

४. [प्र] कहं ण भंते ! जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेति ?

[उ.] गोयमा ! नो पाणे अइवातित्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समणं वा माहण वा वदित्ता नमसित्ता जाव पज्जुवासित्ता अन्नयरेण मणुण्णेण पीइकारएणं असण–पाण–खाइम–साइमेण पडिलाभेत्ता, एव खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेति।

३ [प्र] भगवन् ! जीव अशुभ दीर्घायु के कारणभूत कर्म किन कारणो से बॉधते है ?

[उ] गौतम ! प्राणियो की हिसा करके, असत्य बोलकर एव तथारूप श्रमण और माहन की हीलना, खिसना–(लोगो के समक्ष झिडकना, बदनाम करना), गर्हा (जनता के समक्ष निन्दा) एव अपमान करके अमनोज्ञ और अप्रीतिकर अशन, पान, खादिम और स्वादिम (रूप चतुर्विध आहार) दे करके। इस प्रकार (इन तीन कारणो से) जीव अशुभ दीर्घायु के कारणभूत कर्म बाँधते है।

४. [प्र] भगवन् ! जीव शुभ दीर्घायु का फल देने वाले कर्म किन कारणो से बॉधते है ?

[उ] गौतम ! प्राणिहिसा न करने से, असत्य न बोलने से और तथारूप श्रमण या माहन को वन्दना–नमस्कार यावत् पर्युपासना करके मनोज्ञ एव प्रीतिकारक अशन, पान, खादिम और स्वादिम देने (प्रतिलाभित करने) से। इस प्रकार जीव (इन तीन कारणो से) शुभ दीर्घायु फल देने वाले कर्म बाँधते है।

3. [Q.] *Bhante* ! How do living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining an ignoble long life-span ?

[Ans.] Gautam ! They do so for three reasons—(1) by harming or killing living beings, (2) by false speech and (3) by treating with contempt

(*heelana*), reprimanding (*khimsana*), slandering (*garha*) or insulting ascetics conforming to the description in *Agams* (*tatharupa Shramans* and *Mahans*) and giving them dislikeable and detestable food of four kinds, namely staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), to That is how (for three reasons) living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining an ignoble long life-span

4. [Q.] *Bhante* ! How do living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining a noble long life-span ?

[Ans.] Gautam ! They do so for three reasons—(1) by not harming or killing living beings, (2) by avoiding false speech and (3) by paying homage and obeisance, doing worship and giving likeable and pleasant food of four kinds, namely staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), to ascetics conforming to the description in *Agams* (*tatharupa Shramans* and *Mahans*) That is how (for three reasons) living beings (*jivas*) acquire the bondage of *karmas* determining a noble long life-span

विवेचन—वृत्तिकार ने स्पष्ट किया है कि यहाँ मुख्य प्रसग साधु को एषणीय–अनेषणीय आहार देने का है। अत प्राणातिपात और मृषावाद का अर्थ सामान्य हिंसा व असत्य वचन नही होकर साधु को दान देने के लिए आहार आदि के निमित्त हिसा करना और फिर असत्य बोलना कि "हमने आपके लिए कुछ नही किया।" इस प्रकार हिंसा और असत्य का सम्बन्ध भी अनेषणीय आहार से जुडा हुआ है। साधु को शुभभावपूर्वक, आदर–विनय के साथ शुद्ध आहार देना शुभ दीर्घायु का तथा इसके विपरीत आहार देना अशुभ अल्पायुष्य का कारण समझना चाहिए। *(वृत्ति पत्राक २२७) विस्तार हेतु भगवती सूत्र हिन्दी विवेचन, भाग २, पृष्ठ ८४१–८४२ देखे)*

Elaboration—The commentator (*Vritti*) clarifies that this discussion is mainly in context of offering prohibited or permitted food to ascetics Therefore 'harming of beings' and 'false speech' do not just carry their normal meaning They also imply harming of beings in order to procure or prepare food for ascetics and then giving a false statement that all that was not done for them Thus violence and falsity are connected with prohibited food Offering food to ascetics with noble feeling, respect and modesty is the cause of a noble long life-span and opposite of that is cause of an ignoble long life-span *(Vritti, leaf 227, for more details refer to Bhagavati Sutra Hindi Commentary part-2, pp 841, 842)*

विक्रेता और क्रेता को लगने वाली क्रियाएँ INVOLVEMENT IN ACTIVITIES BY SELLER AND BUYER

५. [प्र.] गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा, तस्स णं भंते ! तं भंड अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया ?

[उ.] गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, पारि०, माया०, अपच्च०, मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जति, सिय नो कज्जति। अह से भंडे अभिसमन्नागए भवइ तओ सेय पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुई भवंति।

५. [प्र.] भगवन् ! भाण्ड (किराने का सामान) बेचते हुए किसी गृहस्थ का वह किराने का माल कोई अपहरण कर (चुरा) ले, फिर उस किराने के समान की खोज करते हुए उस गृहस्थ को, क्या आरम्भिकी क्रिया लगती है, या पारिग्रहिकी क्रिया लगती है ? अथवा मायाप्रत्ययिकी अप्रत्याख्यानिकी या मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया लगती है ?

[उ.] गौतम ! (चोरी हुए किराने को खोजते हुए पुरुष को) आरम्भिकी क्रिया लगती है, तथा पारिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी एव अप्रप्याख्यानिकी क्रिया भी लगती है, किन्तु मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कदाचित् लगती है, और कदाचित् नही लगती। (किराने के सामान की खोज करते हुए) यदि चुराया हुआ सामान वापस मिल जाता है, तो वे सब (पूर्वोक्त) क्रियाएँ प्रतनु (अल्प- हल्की) हो जाती है।

5. [Q.] *Bhante* ! While selling *bhaand* (earthenware or groceries) a householder's such merchandise is stolen and then he starts searching them. In the process, is he liable of involvement in *arambhiki kriya* (sinful activity) or *parigrahiki kriya* (activity of possession) ? Or is he liable of involvement in *mayapratyayiki kriya* (activity of deceit) or *apratyakhyaniki kriya* (activity of non-renunciation) or *mithyadarshan-pratyayiki kriya* (activity of perverted faith) ?

[Ans.] Gautam ! He is (while doing so) liable of involvement in *arambhiki kriya* (sinful activity), *parigrahiki kriya* (activity of possession), *mayapratyayiki kriya* (activity of deceit) and *apratyakhyaniki kriya* (activity of non-renunciation) However, as regards *mithyadarshan-pratyayiki kriya* (activity of perverted faith), sometimes he is liable to involvement and sometimes not While searching, if he recovers the stolen goods he is liable to involvement in all the said activities to a very mild degree

६. [प्र.] गाहावइस्स ण भंते ! भडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, भंडे य से अणुवणीए सिया, गाहावइस्स णं भंते ! ताओ भडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादसणवत्त किरिया कज्जइ ? कइयस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ?

[उ.] गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाणिया। मिच्छादंसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ। कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुई भवंति।

६. [प्र.] भगवन् ! किराना बेचने वाले गृहस्थ से किसी व्यक्ति ने किराने का माल खरीद लिया, उस सौदे को पक्का करने के लिए खरीददार ने सत्यंकार–(बयाना या एडवास) भी दे दिया, किन्तु वह (किराने का माल) अभी तक अनुपनीत–(ले जाया गया नही) है, (बेचने वाले के यहाँ ही पडा है)

(ऐसी स्थिति में) भगवन् ! उस भाण्डविक्रेता को उस किराने के माल से आरम्भिकी यावत् मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रियाओ मे से कौन-सी क्रिया लगती है ?

[उ.] गौतम ! उस गृहपति को उस किराने के सामान से आरम्भिकी से लेकर अप्रत्याख्यानिकी तक चार क्रियाएँ लगती है। मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया कदाचित् लगती है और कदाचित् नही लगती। खरीददार को तो ये सब क्रियाएँ प्रतनु (हल्की) हो जाती है।

6. [Q.] *Bhante* ! A buyer has purchased some *bhaand* from a seller In consideration of the deal, the buyer has also paid some advance (*satyankaar*) but the delivery has not yet been made (the goods are still lying with the seller) (In this situation) *Bhante* ! Is the seller liable to get involved in *arambhiki kriya* (sinful activity) and so on up to *mithyadarshan-pratyayiki kriya* (activity of perverted faith) ?

[Ans.] Gautam ! That householder is liable of involvement in four activities from *arambhiki kriya* (sinful activity) to *apratyakhyaniki kriya* (activity of non-renunciation) However, as regards *mithyadarshan-pratyayiki kriya* (activity of perverted faith), sometimes he is liable to involvement and sometimes not And the buyer is liable to involvement in all the said activities only to a very mild degree

७. [प्र] गाहावइस्स णं भंते ! भंड विक्किणमाणस्स जाव भंडे से उवणीए सिया, कइयस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसण किरिया कज्जइ ? गाहावतिस्स वा ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जति जाव ?

[उ.] गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति, मिच्छादंसणकिरिया भयणाए। गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुई भवंति।

७. [प्र.] भगवन् ! किराना बेचने वाले गृहस्थ के यहाँ से यावत् खरीददार उस किराने के माल को अपने यहाँ ले आया, (ऐसी स्थिति मे) भगवन् ! उस खरीददार को उस (खरीदे हुए) किराने के माल से आरम्भिकी से लेकर मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी तक कितनी क्रियाएँ लगती है ? और उस विक्रेता गृहस्थ को इनमे से कितनी क्रियाएँ लगती है ?

[उ] गौतम ! खरीददार को उस किराने के सामान से आरम्भिकी से लेकर अप्रत्याख्यानिकी तक चारो क्रियाएँ लगती है, मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया की भजना है, (अर्थात्-खरीददार यदि मिथ्यादृष्टि हो तो मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया लगती है, अगर वह मिथ्यादृष्टि न हो तो नही लगती)। विक्रेता गृहस्थ को तो (मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया की भजना के साथ) ये सब क्रियाएँ प्रतनु (अल्प) होती है।

7. [Q.] *Bhante* ! A buyer has purchased some *bhaand* from a seller and so on up to and has brought home the goods (In this situation) *Bhante* ! For these goods is the buyer liable to get involved in *arambhiki*

kriya (sinful activity) . and so on up to *mithyadarshan-pratyayiki kriya* (activity of perverted faith) ? And is the buyer liable to get involved in *arambhiki kriya* (sinful activity) .. and so on up to. ?

[Ans.] Gautam ! For these goods that buyer is liable of involvement in four activities from *arambhiki kriya* (sinful activity) to *apratyakhyaniki kriya* (activity of non-renunciation) As regards *mithyadarshan-pratyayiki kriya* (activity of perverted faith) it is optional (*bhajana*) (this means he is liable if he is unrighteous and not if he is not) And the seller is liable of involvement in all the said activities (including optional involvement in *mithyadarshan-pratyayiki kriya*) only to a very mild degree

८. [प्र.] गाहावइस्स णं भंते ! भंडं जाव धणे य से अणुवणीए सिया ?

[उ.] एवं पि जहा 'भंडे उवणीए' तहा नेयव्वं। चउत्थो आलावगो–धणे य से उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो 'भंडे य से अणुवणीए सिया' तहा नेयव्वो। पढम–चउत्थाणं एक्को गमो। बितिय–तइयाणं एक्को गमो।

८. [प्र.] भगवन् ! भाण्ड–विक्रेता गृहस्थ से खरीददार ने माल खरीद लिया, किन्तु जब तक उस विक्रेता को उस माल का मूल्य रूप धन नही मिला, तब तक, हे भगवन् ! उस खरीददार को उस अनुपनीत धन से कितनी क्रियाएँ लगती है ? (साथ ही) उस विक्रेता को कितनी क्रियाएँ लगती है ?

[उ] गौतम ! यह आलापक भी उपनीत भाण्ड (खरीददार द्वारा ले जाये जाने वाले किराने) के आलापक के समान समझना चाहिए। चतुर्थ आलापक–यदि धन उपनीत हो तो प्रथम आलाप, (जोकि अनुपनीत भाण्ड के विषय मे कहा है) के समान समझना चाहिए। (साराश यह है कि) पहला और चौथा आलापक समान है।

8. [Q.] *Bhante* ! The buyer has purchased the goods from the seller (but not made the payment), now till the payment has not been received by the seller, *Bhante* ! in how many activities is the buyer liable of involvement due to that unpaid amount ? Also in how many activities is the seller liable of involvement ?

[Ans.] Gautam ! In such a situation the position is similar to the fourth statement where the delivery of the goods has been taken If the money has been given, the situation is similar to the first statement where the delivery of the goods has not yet been taken (Whicn means that) Statements one and four are similar and statements two and three are similar

विवेचन . यहाँ क्रेता–विक्रेता के सम्बन्ध मे छह विकल्पो से प्रश्न पूछे गये है। इन सूत्रो का साराश इस प्रकार समझना चाहिए–

(१) किराना बेचने वाले का किराना (माल) कोई चुरा ले जाये तो उस किराने को खोजने मे विक्रेता को आरम्भिकी आदि ४ क्रियाएँ लगती है। (२) यदि चुराया हुआ किराने का माल वापस मिल जाये तो विक्रेता को ये सब क्रियाएँ मन्द रूप मे लगती है। (३) खरीददार ने विक्रेता से किराना (माल) खरीद लिया, उस सौदे को पक्का करने के लिए साई भी दे दी, किन्तु माल दुकान से उठाया नही, तब तक खरीददार को उस किराने–सम्बन्धी क्रियाएँ हल्के रूप मे लगती है, जबकि विक्रेता को वे क्रियाएँ भारी रूप मे लगती है। (४) विक्रेता द्वारा किराना खरीददार को सौप दिये जाने पर वह उसे उठाकर ले जाता है, ऐसी स्थिति मे विक्रेता को वे सब सम्भावित क्रियाएँ हल्के रूप मे लगती है, जबकि खरीददार को भारी रूप मे। (५) विक्रेता से खरीददार ने किराना खरीद लिया, किन्तु उसका मूल्यरूप धन विक्रेता को नही दिया, ऐसी स्थिति मे विक्रेता को आरम्भिकी आदि चारो क्रियाएँ हल्के रूप मे लगती है, जबकि खरीददार को वे ही क्रियाएँ भारी रूप मे लगती है। और (६) किराने का मूल्यरूप धन खरीददार द्वारा चुका देने के बाद विक्रेता को धन–सम्बन्धी चारो सम्भावित क्रियाएँ भारी रूप मे लगती है, जबकि खरीददार को वे सब सम्भावित क्रियाएँ प्रतनु–अल्प रूप मे लगती है।

हल्के रूप मे और भारी रूप मे क्यो ? (१) इसका समाधान है–चुराये हुए माल की खोज करते समय विक्रेता (व्यापारी) विशेष प्रयत्नशील होता है, इसलिए उसे सम्भावित क्रियाएँ भारी रूप मे लगती है, किन्तु जब व्यापारी को चुराया हुआ माल मिल जाता है, तब उसका खोज करने का प्रयत्न बन्द हो जाता है, इसलिए वे सब सम्भावित क्रियाएँ हल्की हो जाती है। (२) विक्रेता के यहाँ खरीददार के द्वारा खरीदा हुआ माल पडा रहता है, वह उसका होने से तत्सम्बन्धित क्रियाएँ भारी रूप मे लगती है, किन्तु खरीददार उस माल को उठाकर अपने घर ले जाता है, तब खरीददार को वे सब क्रियाएँ भारी रूप मे और विक्रेता को हल्के रूप मे लगती है। (३) किराने का मूल्य रूप धन जब तक खरीददार द्वारा विक्रेता को नही दिया गया है, तब तक वह धन खरीददार का है, अत उससे सम्बन्धित क्रियाएँ खरीददार को भारी रूप मे और विक्रेता को हल्के रूप मे लगती है, किन्तु खरीददार खरीदे हुए किराने का मूल्य रूप धन विक्रेता को चुका देता है, उस स्थिति मे विक्रेता को उस धन–सम्बन्धी क्रियाएँ भारी रूप मे, तथा खरीददार को हल्के रूप मे लगती है।

निष्कर्ष यह है कि वस्तु और धन जिसके अधिकार मे होते है, उसको क्रिया 'सघन' लगती है, जिसके अधिकार मे नही होते, उसको क्रिया प्रतनु होती है।

Elaboration—Six alternative questions have been asked here about buyer and seller The gist of these aphorisms is as follows—

(1) If a merchandise of a seller is stolen and he starts searching then he is liable of involvement in four activities including *arambhiki kriya* (here *kriya* or activity means act and consequence in terms of *karmic* bondage) (2) If the stolen goods are recovered the seller is liable of involvement in all these activities to a very mild degree. (3) A buyer has purchased goods and paid some advance but has not taken the delivery, in such case the buyer is liable to mild involvement and the seller is liable to greater involvement in activities related to the goods. (4) After

the buyer has taken the delivery of the goods he is liable to greater involvement and seller to mild involvement (5) If the buyer has purchased the goods but not paid the money then buyer is liable to greater involvement in activities including *arambhiki* related to that amount and the seller to a mild involvement (6) When the buyer has paid the money he is liable to mild involvement and the seller to a greater involvement in all the four activities related to that amount

Why mild and greater ?—(1) While searching for the stolen goods the seller makes special efforts, therefore he is liable to a greater involvement in the said activities However, when he recovers the goods his efforts to search come to an end and consequently the involvement becomes mild (2) As long as the sold goods remain with the seller, he owns them This results in greater involvement but when the goods are taken away by the buyer, it is the buyer who is liable to greater involvement and seller to mild only (3) As long as the money is not paid by the buyer it belongs to the buyer and he is liable to greater involvement in all activities related to the money but the seller to a mild one But when the money is paid to the seller it is the seller who is liable to greater involvement and the buyer to a mild one

The inference is that those who possess things or money are liable to greater involvement and those who do not are liable to mild involvement

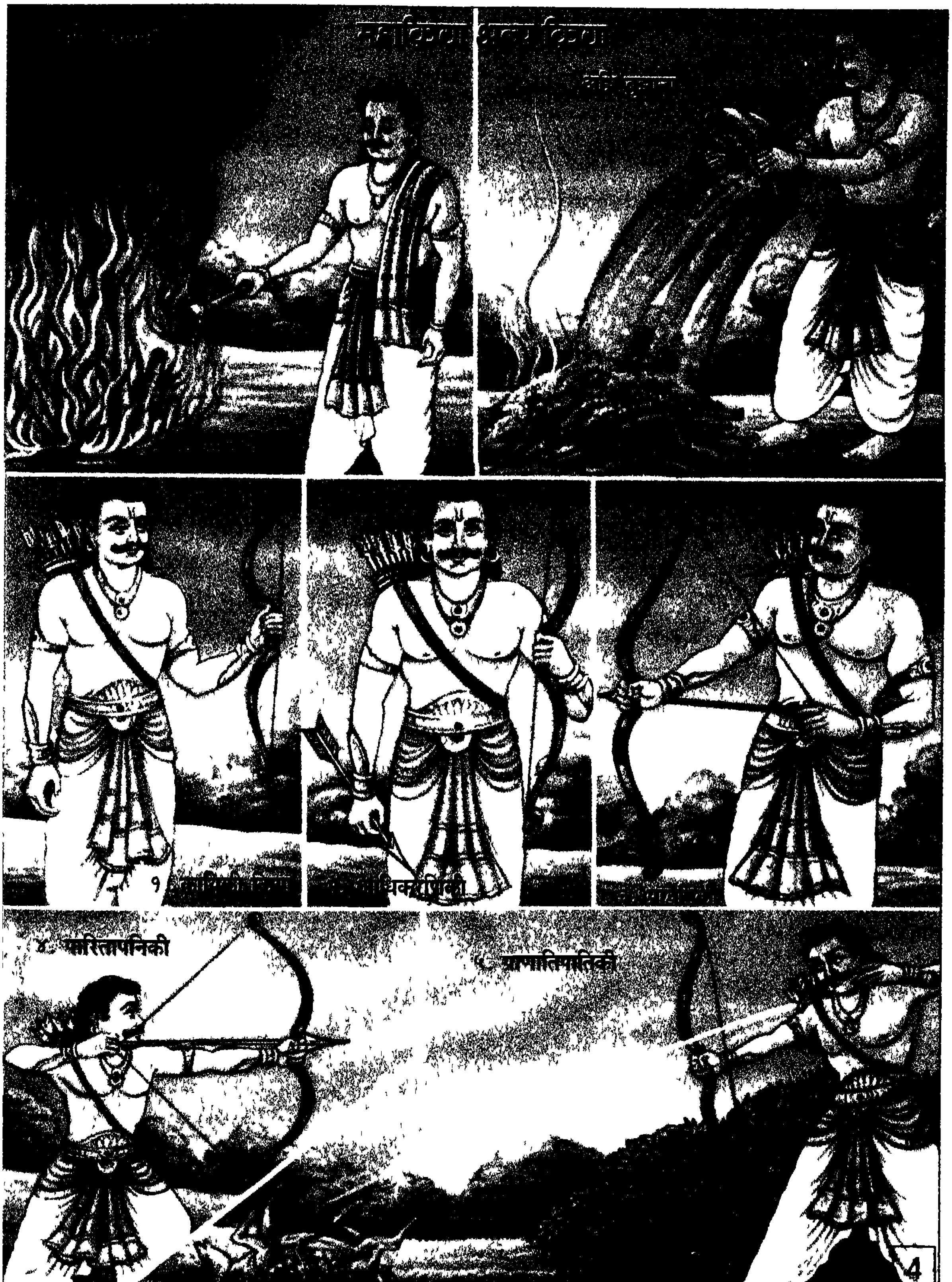
अग्निकाय महाकर्म या अल्पकर्म FIRE-BODIES INTENSE AND MILD KARMAS

९ [प्र] अगणिकाए ण भंते ! अहुणोज्जलिए समाणे महाकम्मतराए चेव, महाकिरिय–महासव–महावेयणतराए चेव भवति। अहे णं समए समए वोक्कसिज्जमाणे वोक्कसिज्जमाणे वोच्छिज्जमाणे चरिमकालसमयसि इंगालभूते मुम्मुरभूते छारियभूते, तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरिया अप्पासव–अप्पवेदणतराए चेव भवति ?

[उ.] हता, गोयमा ! अगणिकाए णं अहुणोज्जलिते समाणे त च चेव।

९. [प्र] भगवन् ! तत्काल प्रज्वलित अग्निकाय क्या महाकर्मयुक्त, तथा महाक्रिया, महास्रव और महावेदना से युक्त होता है ? और इसके पश्चात् समय-समय मे प्रतिक्षण क्रमश कम होता हुआ–बुझता हुआ तथा अन्तिम समय मे (जब) अगारभूत, मुर्मुरभूत, (भोभर-सा हुआ) और भस्मभूत (राख) हो जाता है (तब) क्या वह अग्निकाय अल्पकर्मयुक्त तथा अल्पक्रिया, अल्पास्रव, अल्पवेदना से युक्त होता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! तत्काल प्रज्वलित अग्निकाय महाकर्मयुक्त होता है (और भस्मभूत होने के पश्चात्) यावत् अल्पवेदनायुक्त होता है।



४. पारितापनिकी
प्राणातिपातिकी
4

चित्र परिचय-४

Illustration No. 4

महाक्रिया अल्पक्रिया तथा पाँच क्रियाएँ

महाक्रिया–अल्पक्रिया–अग्नि को प्रज्वलित करता हुआ व्यक्ति कर्मबन्ध की दृष्टि से महाक्रिया करने वाला है। प्रज्वलित अग्नि को बुझाना कर्मबन्ध की दृष्टि से अल्पक्रिया है। अग्नि जब राख हो जाती है तब वह कर्मादि रहित हो जाती है।

धनुष चलाने वाले की क्रिया–धनुष पर बाण चढ़ाकर बाण फैंक कर जीव वध करने तक की क्रिया में पाँचों क्रियाएँ इस क्रम से होती हैं।

(१) **कायिकी क्रिया**–बाण को हाथ से स्पर्श करना या हाथ में ग्रहण करना।

(२) **आधिकरणिकी**–बाण हाथ में लेकर धनुष पर चढ़ाना।

(३) **प्राद्वेषिकी**–किसी लक्ष्य को बंधने के लिए धनुष पर बाण चढ़ाकर डोरी कान तक खींचकर बाण को लक्ष्य पर छोड़ना।

(४) **पारितापनिकी**–(५) **प्राणातिपातिकी**–बाण छोड़कर किसी जीव आदि को परिताप पहुँचाना तथा उसको घात कर देना।

धनुष पर बाण चढ़ाकर फैंकने वाला इन क्रियाओं से पाप का भागी होता है।

शतक ५ उ. ६ सूत्र ९-१०

INTENSE AND MILD INVOLVEMENT AND FIVE ACTIVITIES

Intense and mild involvement—In context of bondage a person igniting fire is involved in act of intense bondage. To extinguish a fire is involvement in act of mild bondage. Finally when the fire turns into ash it does not entail any bondage of karmas.

Involvement in using a bow—Setting an arrow on the bow and launching it to kill an animal entails involvement in five activities in the following order—

(1) Kaayiki (physical) activity—to touch or pick an arrow.

(2) Aadhikaraniki (activity of collecting instruments of violence)—To place the so picked arrow on the bow.

(3) Praadveshiki (activity of harbouring aversion)—to draw the string of the bow, aim at an object and shoot the arrow.

(4) Paaritapaniki (activity of inflicting pain) and **(5) pranatipatiki (activity of killing a living being)**—to torment or kill a living being by launching the arrow.

A person shooting something with a bow and arrow gets involved in these sinful activities.

Shatak 5 lesson 6 Sutra 9-10

9. [Q.] *Bhante* ! Do fire-bodies (*agni-kaya*) just ablaze intense have *karmic* bondage (*maha-karma*), intense involvement in activities (*maha-kriya*), intense influx of *karmas* (*maha-asrava*) and intense pain (*maha-vedana*) ? And thereafter with passage of time, getting reduced every moment, when the fire gradually transforms into ember (*angaar*), cinder (*murmur*) and finally into ash, then do they have mild *karmic* bondage (*alp-karma*), mild involvement in activities (*alp-kriya*), mild influx of *karmas* (*alp-asrava*) and mild pain (*alp-vedana*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Fire-bodies (*agni-kaya*) just ablaze have intense *karmic* bondage (*maha-karma*) and so on up to (after getting reduced into ash they have) mild pain (*alp-vedana*)

विवेचन तत्काल प्रज्वलित होती हुई अग्नि बन्ध की अपेक्षा से ज्ञानावरणीय आदि महाकर्मबन्ध का कारण होने से 'महाकर्मतर' है। अग्नि का जलना एक प्रकार की क्रिया है। इसलिए यह महाक्रियातर है। वह नवीन कर्मों के ग्रहण करने मे कारणभूत है। इसलिए वह महाआस्रवतर है। अग्नि लगने के पश्चात् होने वाली तथा उस कर्म (अग्निकाय से बद्ध कर्म) से उत्पन्न होने वाली पीडा के कारण अथवा परस्पर शरीर के 'सघात' (दबने) से होने वाली पीडा के कारण वह महावेदनातर है। जब प्रज्वलित हुई अग्नि क्रमश बुझने लगती है, तब क्रमश अगार आदि अवस्था को प्राप्त होती हुई वह अल्पकर्मतर, अल्पक्रियातर अल्पास्रवतर एव अल्पवेदनातर हो जाती है। बुझते-बुझते जब वह भस्मावस्था को प्राप्त हो जाती है, तब वह कर्मादिरहित हो जाती है। *(वृत्ति पत्राक २२१)*

Elaboration—In context of bondage, a fire just ablaze has intense bondage (*maha-karma*) because it causes bondage of intense *karmas* like *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring *karma*) Burning of fire is a kind of activity, therefore here it is an intense activity (*maha-kriya*) As it causes acquisition of new *karmas*, it has intense influx of *karmas* (*maha-asrava*) As the *karmic* bondage a fire causes as also a collision of bodies caused by conflagration are sources of great pain it has great pain (*maha-vedana*) When it gradually transforms into ember (*angaar*) and cinder (*murmur*), then it has mild *karmic* bondage (*alp-karma*), mild involvement in activities (*alp-kriya*), mild influx of *karmas* (*alp-asrava*) and mild pain (*alp-vedana*) Finally when it turns into ash it becomes free all these including *karmas*

धनुष चलाने से लगने वाली क्रियाएँ ACTIVITIES IN SHOOTING ARROWS

१०. [प्र. १] पुरिसे णं भंते ! धणुं परामुसइ, परामुसित्ता, उसुं परमुसति, उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाइ, ठाणं ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेति, आययकण्णाययं उसुं करेत्ता उड्ढं वेहासं उसुं उव्विहति। तए णं से उसुं उड्ढं वेहासं उव्विहिए समाणे जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेइ

लेस्सेइ संघाएइ संघट्टेइ परितावेइ किलामेइ, ठाणाओ ठाण सकामेइ, जीविआओ ववरोवेइ, तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

[उ.] **गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे धणु पुरामुसइ परामुसित्ता जाव उव्विहइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए, पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे।**

१०. [प्र १] भगवन् ! कोई पुरुष धनुष को स्पर्श करता है, धनुष का स्पर्श करके बाण को स्पर्श करता है, बाण का स्पर्श करके (धनुष से बाण फैकने के) स्थान पर से आसनपूर्वक बैठता है, उस स्थिति मे बैठकर फैके जाने वाले बाण को कान तक आयत करे–खीचे, खीचकर ऊँचे आकाश मे बाण फैकता है। ऊँचे आकाश मे फैका हुआ वह बाण, वहाँ आकाश मे जिन प्राण, भूत, जीव और सत्त्व को सामने आते हुए मारे, उन्हे सिकोड दे, अथवा उन्हे ढक दे, उन्हे परस्पर **श्लिष्ट** कर (चिपका) दे, उन्हे परस्पर **संहत** (एकत्रित) करे, उनका **सघट्टा**–जोर से स्पर्श करे, उनको **परिताप**–सताप (पीडा) दे, उन्हे **क्लान्त** करे–थकाए, हैरान करे, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकाए, एव उन्हे जीवन से रहित कर दे, तो हे भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाएँ लगती है ?

[उ] गौतम ! वह पुरुष धनुष का स्पर्श करके धनुष को ग्रहण करता यावत् बाण को फैकता है, वह पुरुष कायिकी, आधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी और प्राणातिपातिकी, इन पॉच क्रियाएँ से स्पृष्ट होता है। अर्थात् उसे पाँचो क्रियाएँ लगती है।

10. [Q. 1] *Bhante* ! Suppose a person touches a bow, having picked it he touches an arrow, having picked it he sits in the correct posture (to shoot the arrow), having sat (and set the arrow on the bow-string) he draws the arrow to his ear, and having drawn the arrow he shoots it in the sky The arrow so launched in the sky hits some *praan* (two to four sensed beings), *bhoot* (plant bodied beings), *jiva* (five sensed beings), and *sattva* (immobile beings), and makes them flinch or enshrouds them or makes them stick or cluster together or smacks them and tortures them, exhausts them, torments them, chases them from one place to another and deprives them of their life In such case, *Bhante* ! In how many activities that person is liable to be involved ?

[Ans.] Gautam ! That person who touches a bow and so on up to . shoots the arrow in the sky is touched by (liable of involvement in) all the five activities, namely *kaayiki* (physical activity), *aadhikaraniki* (activity of collecting instruments of violence), *praadveshiki* (activity of harbouring aversion), *paaritapaniki* (activity of inflicting pain) and *pranatipatiki* (activity of killing a living being)

[२] जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो धणू निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे।

[२] जिन जीवो के शरीरो से वह धनुष बना (निष्पन्न हुआ) है, वे जीव भी पॉच क्रियाओ से स्पृष्ट होते है।

[2] The beings from whose bodies that bow has been made are also liable of involvement in all the five activities

११. एवं धणुपुट्ठे पंचहिं किरियाहिं। जीवा पंचहिं। ण्हारू पंचहिं। उसू पंचहिं। सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं।

११. इसी प्रकार धनुष की पीठ भी पाँच क्रियाओ से स्पृष्ट होती है। जीव (डोरी) पाँच क्रियाओ से, ण्हारू (स्नायु) पॉच क्रियाओ से एव बाण पॉच क्रियाओ से तथा शर, पत्र, फल और ण्हारू भी पाँच क्रियाओ से स्पृष्ट होते है।

11. In the same way the body of the bow is also liable of involvement in all the five activities Also liable of involvement are the bow-string (*jiva*) or catgut (*nharu*) in five, arrow in five and (its components) rod (*shar*), feathers (*patra*), blade or tip (*phal*) and catgut (*nharu*), each in five

१२. [प्र] अहे णं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसंभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइ तत्थ पाणाइ जाव जीवियओ ववरोवेइ, तावं च णं से पुरिसे कतिकिरिए ?

[उ.] गोयमा ! जावं च णं से उसू अप्पणो गुरुययाए जाव ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसि पि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहिं किरियाहिं। धणुपुट्ठे चउहिं। जीवा चउहिं। ण्हारू चउहिं। उसू पंचहिं। सरे, पत्तणे, फले ण्हारू पंचहिं। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा।

१२. [प्र] भगवन् ! जब वह बाण अपनी गुरुता से, अपने भारीपन से, अपनी गुरुसभारता से स्वाभाविक रूप -(विस्रसा प्रयोग) से नीचे गिर रहा हो, तब (ऊपर से नीचे गिरता हुआ) वह (बाण) (बीच मार्ग मे) प्राण, भूत, जीव और सत्त्व को जीवन से रहित कर देता है। तब उस बाण फैकने वाले पुरुष को कितनी क्रियाएँ लगती है ?

[उ] गौतम ! जब वह बाण अपनी गुरुता आदि से नीचे गिरता हुआ, यावत् जीवो को जीवनरहित कर देता है, तब वह (बाण फैकने वाला) पुरुष कायिकी आदि चार क्रियाओ से स्पृष्ट होता है। जिन जीवो के शरीर से धनुष बना है, वे जीव भी चार क्रियाओ से, धनुष की पीठ चार क्रियाओ से, जीवा (डोरी) चार क्रियाओ से, ण्हारू चार क्रियाओ से, बाण पॉच क्रियाओ से, तथा शर, पत्र, फल और ण्हारू पाँच क्रियाओ से स्पृष्ट होते है। 'नीचे' गिरते हुए बाण के अवग्रह (घेरे) मे जो जीव आते है, वे जीव भी कायिकी आदि पॉच क्रियाओ से स्पृष्ट होते है।

12. [Q.] *Bhante* ! When that arrow with its mass, with its weight and with its mass and weight is falling downwards in its natural course then it (arrow) hits some *praan* (two to four sensed beings), *bhoot* (plant

bodied beings), jiva (five sensed beings), and sattva (immobile beings)... and so on up to deprives them of their life In that case in how many activities the person who shot that arrow is liable to be involved ?

[Ans.] Gautam ! When that arrow with its mass, with its weight and with its mass and weight is falling downwards, and so on up to deprives them of their life, then the person (who shot it) is touched by four activities including *kaayiki* (physical activity) The beings from whose bodies that bow has been made are also liable of involvement in four activities The body of the bow is also liable of involvement in four activities Also liable of involvement are the bow-string (*jiva*) or catgut (*nharu*) in four, arrow in five and (its components) rod (*shar*), feathers (*patra*), blade or tip (*phal*) and catgut (*nharu*), each in five The beings afflicted by the falling arrow are also touched by five activities including *kaayiki*

विवेचन प्रस्तुत तीन सूत्रो (सूत्र १० से १२ तक) धनुष चलाने वाले व्यक्ति को तथा धनुष के विविध उपकरण (अवयव) जिन-जिन जीवो के शरीरो से बने है उनको बाण छूटते समय तथा बाण के नीचे गिरते समय होने वाली प्राणिहिसा मे लगने वाली क्रियाओ का निरूपण है।

एक व्यक्ति धनुष हाथ मे लेकर बाण फैकता है और उससे अनेक जीवो का उत्पीडन व घात करता है–इस सम्पूर्ण प्रक्रिया मे उसे प्राणातिपातिकी आदि पॉचो क्रियाएँ लगती है तथा उस धनुष मे प्रयुक्त बाण, डोरी आदि उपकरण जिन जीवो के शरीर से बने है उन जीवो को भी पॉचो क्रियाएँ लगती है, यह विषय प्रश्न योग्य है, क्योकि उन जीवो का शरीर तो जड है, जीव कही अन्यत्र अन्य शरीर धारण कर चुका है, फिर उस जड शरीर से उसे प्राणातिपातिकी आदि क्रियाएँ कैसे लगेगी ? यदि जड शरीर से ही क्रियाएँ लगती है, तो सिद्धो के त्यक्त शरीर से उन्हे भी क्रियाएँ लगनी चाहिए ?

इस प्रश्न का समाधान इस प्रकार दिया गया है कि उन जीवो ने मरते समय तक हिसा आदि से विरति (निवृत्ति) नही की थी, हिंसा का त्याग नही करने से अविरति के परिणाम से युक्त थे, इस कारण उन्हे पॉँचो क्रियाएँ लगती है। सिद्धो को क्रियाएँ इसलिए नही लगती चूँकि उन्होने कर्मबध के हेतुभूत अविरति परिणाम का सर्वथा त्याग कर दिया था।

प्रश्न उठता है, फिर तो साधु को रजोहरणादि उपकरणो से जीव दया आदि होने पर उनके भूतपूर्व जीवो को पुण्यबध भी होना चाहिए, परन्तु ऐसा नही होता, क्यो ? उत्तर है, पुण्यबन्ध तभी होता है, जब क्रिया मे विवेक और शुभ अध्यवसाय सलग्न हो। जड शरीर मे विवेक आदि नही होते। इसलिए उन्हे पुण्य का बध भी नही होता।

इसके अतिरिक्त अपने भारीपन आदि के कारण जब बाण नीचे गिरता है, तब जिन जीवो के शरीर से वह बाण बना है, उन्हे पॉँचो क्रियाएँ लगती है, क्योकि बाणादि रूप बने हुए जीवो के शरीर तो उस समय मुख्यतया जीवहिंसा मे प्रवृत्त होते है। जबकि धनुष की डोरी, धनु पृष्ट आदि साक्षात् वधक्रिया मे प्रवृत्त न होकर केवल निमित्तमात्र बनते है, इसलिए उन्हे चार क्रियाएँ लगती है। वृत्तिकार ने इस विषय को श्रद्धागम्य बताया है। *(वृत्ति पत्राक २३०)*

Elaboration—In the aforesaid three aphorism (10 to 12) liability of involvement of an archer and the beings from whose bodies the bow and arrow have been made, in activities of violence at the time of shooting the arrow and its fall has been discussed

When a person takes a bow and shoots an arrow harming and killing many living beings he is liable of involvement in all the five activities including *pranatipatiki kriya* (here *kriya* means act and consequence in terms of *karmic* bondage) The living beings from whose bodies the bow, arrow and other components have been made are also liable of involvement in all the five activities This point raises a question—the bodies of those beings are life-less, the soul has taken rebirth at some other place, then can those souls be liable of involvement in the activities of the abandoned lifeless bodies ? If such liability is possible why the liberated souls should not be liable of involvement in activities through their abandoned bodies ?

The explanation given for this question is that the living beings from whose bodies the bows (etc) are made were not detached from violence and other sinful activities Because of this absence of detachment from sinful activities they are liable to such involvement *Siddhas* (liberated souls) are not liable to such involvement because they are absolutely free of any attachment that causes bondage of *karmas*

Another question is that as ascetics use their equipment, like ascetic-broom, in their pious activities, like protection of creatures, the beings from whose bodies these equipment were made would acquire bondage of meritorious *karmas* But this does not happen, why ? The answer is that bondage of meritorious *karmas* takes place only when the action is accompanied by prudence and noble intent A life-less body does not have these feelings, therefore there is no such bondage

When the arrow falls due to its weight, the beings from whose bodies it is made are liable to involvement in all the five activities because the bodies of those beings, in the form of arrow, are mainly involved in killing of beings As the bow-string and other components are only instrumental and not directly involved in the act of killing they are liable to involvement in only four activities The commentator (*Vritti*) has assigned this subject to the domain of faith *(Vritti, leaf 230)*

१३. [प्र.] अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति–से जहानामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं। से कहमेत भते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया जाव मणुस्सेहिं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव एवामेव चत्तारि पच जोयणसताइं बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहिं।

१३. [प्र] भगवन् ! अन्यतीर्थिक इस प्रकार कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है कि जैसे कोई युवक अपने हाथ से युवती का हाथ पकडे हुए हो, अथवा जैसे आरो से एकदम सटी हुई चक्र की नाभि हो, इसी प्रकार यावत् चार सौ-पॉच सौ योजन तक यह मनुष्यलोक मनुष्यो से ठसाठस भरा हुआ है। भगवन् ! यह प्ररूपणा क्या ठीक है ?

[उ] हे गौतम ! अन्यतीर्थियो का यह कथन मिथ्या है। मै इस प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि चार सौ–पॉच सौ योजन तक नरकलोक, नैरयिक जीवो से ठसाठस भरा हुआ है।

13 [Q.] *Bhante* ! People of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that this land of humans is tightly packed with human beings and so on up to four-five hundred *Yojans* just like a young man tightly holds the hand of a young woman or like the spokes of a wheel are tightly held by its axle *Bhante* ! Is it so ?

[Ans.] Gautam ! This statement by heretics is wrong I say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that the infernal world (*narak*) is tightly packed with infernal beings (*nairayiks*) up to four-five hundred *Yojans*

१४. [प्र] नेरइया णं भते ! किं एगत्त पभू विउव्वित्तए ? पुहत्त पभू विकुव्वित्तए ?

[उ] जाव जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव दुरहियासं।

१४. [प्र] भगवन् ! क्या नैरयिक जीव, एकत्व (एकरूप) की विकुर्वणा करने मे समर्थ है, अथवा बहुत्व (बहुत से रूपो) की विकुर्वणा करने मे समर्थ है ?

[उ] गौतम ! इस विषय मे जीवाभिगमसूत्र मे जिस प्रकार आलापक कहा है, उसी प्रकार का आलापक यहाँ भी 'दुरहियास' शब्द तक कहना चाहिए।

14. [Q.] *Bhante* ! Are the infernal beings capable of transmutation into one form (*ekatva*) or many forms (*bahutva*) ?

[Ans.] In this regard the statement from *Jivabhigam Sutra* should be repeated here up to the word *durahiyasam* (unbearable)

विवेचन नैरयिको की विकुर्वणा के सम्बन्ध मे–जीवाभिगमसूत्र के आलापक का सार इस प्रकार है–रत्नप्रभा आदि नरको मे नैरयिक जीव एकरूप की भी विकुर्वणा करने मे समर्थ है, बहुत से रूपो की भी। एकरूप की विकुर्वणा करते है, तब वे एक बडे मुद्गर या मुसुढि, करवत, शूल आदि शस्त्र और लकडी यावत् भिडमाल के रूप की विकुर्वणा कर सकते है और जब बहुत से रूपो की विकुर्वणा करते है, तब मुद्गर से लेकर भिडमाल तक बहुत–से शस्त्रो की विकुर्वणा कर सकते है। वे सब सख्येय होते है, असख्येय नही। इसी प्रकार वे सम्बद्ध और सदृश रूपो की विकुर्वणा करते है, असम्बद्ध एव असदृश रूपो की नही। इस प्रकार की विकुर्वणा करके वे एक–दूसरे के शरीर को अभिघात (चोट) पहुँचाते हुए वेदना की उदीरणा करते है। वह वेदना उज्ज्वल (तप), विपुल (सम्पूर्ण शरीर मे व्याप्त) प्रगाढ, कर्कश (अनिष्टकर), कटुक, परुष (कठोर), निष्ठुर, चण्ड, तीव्र, दुर्ग, दु खरूप और दु सह होती है। *(जीवाभिगम सूत्र, प्रतिपत्ति ३ द्वितीय उद्देशक, नरकस्वरूपवर्णन, पृष्ठ ११७)*

Elaboration—About transmutation of infernal beings—The gist of the statement from *Jivabhigam Sutra* is as follows—In the hells like Ratnaprabha the infernal beings are capable of transmutation into one form as well as many When they transmute into one form they can acquire form of a large mace or any other weapon (*musudhi*, *karavat*, *shool*, staff, *bhindamal* etc) When they transmute into many forms they can acquire forms of many of these weapons The number of these are countable and not innumerable This way they transmute into related and similar forms and not otherwise After acquiring these forms they hit each other and inflict pain This pain is searing (*ujjval*), great (*vipul*, spread all over the body), deep (*pragadh*), harsh (*karkash*), bitter (*katuk*), hard (*parush*), cruel (*nishthur*), excruciating (*chand*), violent (*tivra*), gripping (*durg*), miserable (*duhkharupa*), and unbearable (duhsaha) [*Jivabhgam Sutra 3/2 (Description of Narak), p 117*]

आधाकर्मादि आहार का फल **FRUITS OF TAKING FAULTY FOOD**

१५. [१] 'आहाकम्मं णं अणवज्जे' त्ति मणं पहारेत्ता भवइ, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा।

[२] से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा।

[३] एतेणं गमेणं नेयव्व–कीयकड, ठवियगं, रइयगं, कंतारभत्तं, दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्तं, गिलाणभत्तं, सिज्जातरपिंडं, रायपिंडं।

१५. [१] 'आधाकर्म (साधु के लिए बनाया हुआ भोजन, वस्त्र, भवन आदि) **अनवद्य–निर्दोष है'**, इस प्रकार जो साधु मन मे समझता है, वह यदि उस आधाकर्म–स्थान की आलोचना (तदनुसार प्रायश्चित्त) एव प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाता है, तो उसके आराधना नही होती।

[२] वह (पूर्वोक्त प्रकार की धारणा वाला साधु) यदि उस (आधाकर्म–) स्थान की आलोचना एव प्रतिक्रमण करके काल करता है, तो उसके आराधना होती है।

[३] आधाकर्म के (पूर्वोक्त) दोनो आलापक के अनुसार ही **क्रीतकृत** (साधु के लिए खरीदकर लाया हुआ), **स्थापित** (साधु के लिए स्थापित करके रखा हुआ), **रचितक** (साधु के लिए मोदक के रूप मे बाँधा हुआ) (औद्देशिक दोष का भेदरूप), **कान्तारभक्त** (अटवी मे भिक्षुको के निर्वाह के लिए तैयार किया हुआ आहार), **दुर्भिक्षभक्त** (दुष्काल के समय भिक्षुओ के लिए तैयार किया हुआ आहार), **वर्दलिकाभक्त** (आकाश मे बादल छाये हो, घनघोर वर्षा हो रही हो, ऐसे समय मे भिक्षुओ के लिए तैयार किया हुआ आहार), **ग्लानभक्त** -(रुग्ण के लिए बनाया हुआ आहार), **शय्यातरपिण्ड** (जिसकी आज्ञा से मकान मे ठहरे है, उस व्यक्ति के यहाँ से आहार लेना), **राजपिण्ड** (राजा के लिए तैयार किया गया आहार) इन सब दोषो से युक्त आहारादि के विषय मे (आधाकर्म--सम्बन्धी आलापक के समान ही) प्रत्येक के दो दो आलापक कहने चाहिए।

15. [1] "*Adhakarma* (food specifically prepared for an ascetic) is faultless", if an ascetic believes this and if he dies without censuring (and duly atoning) and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have not accomplished spiritual worship (*aradhana*)

[2] If he (the ascetic with aforesaid belief) dies after duly censuring (the fault of *adhakarma*) and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have accomplished spiritual worship (*aradhana*)

[3] The two aforesaid statements regarding *adhakarma* should also be repeated for food with each of the following faults—*Kreetakrit* (purchased for *shramans*), *Sthapit* (food kept apart for the ascetic), *Rachitak* (made into balls or re-cooked specifically for an ascetic, a sub-type of *adhakarma*), *Kantarabhakt* (emergency food packed and taken along while crossing a difficult terrain), *Durbhiksh-bhakt* (food prepared for distributing to beggars and destitute during a drought), *Vardalikabhakt* (food prepared and kept for distributing during periods of heavy rain, floods and other such calamities), *Glaanabhakt* (food meant for the sick), *Shayyatar-pind* (food offered by the person who has provided place of stay) and *Raj-pind* (food from the royal kitchen)

१६. [१] **'आहाकम्म ण अणवज्जे' त्ति बहुजणमज्झे भासित्ता सयमेव परिभुंजित्ता भवति, से ण तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा।** [२] **एए वि तह चेव जाव रायपिंडं।**

१७. 'आहाकम्म ण अणवज्जे' त्ति सयं अन्नमन्नस्स अणुप्पदावेत्ता भवति, से ण तस्स० एयं तह चेव जाव रायपिंडं।

१८. 'आहाकम्मं ण अणवज्जे' त्ति बहुजणमज्झे पन्नवइत्ता भवति, से णं तस्स जाव अत्थि आराहणा जाव रायपिंडं।

१६. [१] आधाकर्म अनवद्य (निर्दोष) है, इस प्रकार जो साधु बहुत-से मनुष्यो के बीच मे कहकर, स्वय ही उस आधाकर्म-आहारादि का सेवन (उपभोग) करता है, यदि वह उस स्थान की आलोचना एव प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाता है तो उसके आराधना नही होती, यावत् यदि वह उस स्थान की आलोचना-प्रतिक्रमण करके काल करता है, तो उसके आराधना होती है। [२] आधाकर्म-सम्बन्धी इस प्रकार के दोनो आलापक के समान क्रीतकृत से लेकर राजपिण्डदोष तक पूर्वोक्त प्रकार से प्रत्येक के दो-दो आलापक समझ लेने चाहिए।

१७. 'आधाकर्म अनवद्य है', इस प्रकार कहकर, जो साधु स्वय परस्पर (भोजन करता है, तथा) दूसरे साधुओ को दिलाता है, किन्तु उस आधाकर्म दोषस्थान की आलोचना-प्रतिक्रमण किये बिना काल करता है तो उसके अनाराधना होती है, तथा आलोचनादि करके काल करता है तो उसके आराधना होती है। इसी प्रकार क्रीतकृत से लेकर राजपिण्ड तक पूर्ववत् यावत् अनाराधना एव आराधना का कथन जान लेना चाहिए।

१८. 'आधाकर्म अनवद्य है', इस प्रकार जो साधु बहुत-से लोगो के बीच मे प्ररूपणा (प्रज्ञापना) करता है, उसके भी यावत् आराधना नही होती, तथा वह यावत् जो आलोचना-प्रतिक्रमण करके काल करता है, उसके आराधना होती है। इसी प्रकार क्रीतकृत से लेकर यावत् राजपिण्ड तक पूर्वोक्त प्रकार से अनाराधना होती है, तथा यावत् आराधना होती है।

16. **[1]** "*Adhakarma* (food specifically prepared for an ascetic) is faultless", if an ascetic who so declares in a large gathering and consumes such food, and if he dies without censuring and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have not accomplished spiritual worship (*aradhana*) and so on up to If he dies after duly censuring and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have accomplished spiritual worship (*aradhana*) **[2]** The two aforesaid statements regarding *adhakarma* should also be repeated for food with each of the faults from *Kreetakrit* (purchased for *shramans*) to *Raj-pind* (food from the royal kitchen)

17. "*Adhakarma* (food specifically prepared for an ascetic) is faultless", if an ascetic who so declares, consumes such food, gets other ascetics offered such food, and if he dies without censuring and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have not accomplished spiritual worship (*aradhana*) . and so on up to If he dies after duly censuring and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have accomplished spiritual worship (*aradhana*) The same is true for food with each of the faults from *Kreetakrit* (purchased for *shramans*) to *Raj-pind* (food from the royal kitchen)

18. "*Adhakarma* (food specifically prepared for an ascetic) is faultless", if an ascetic who so declares in a large gathering and so on up to he is said to have not accomplished spiritual worship (*aradhana*) and so on up to if he dies after duly censuring and doing critical review (*pratikraman*), he is said to have accomplished spiritual worship (*aradhana*) The same is true for food with each of the faults from *Kreetakrit* (purchased for *shramans*) to *Raj-pind* (food from the royal kitchen)

विवेचन उक्त चार सूत्रो का निष्कर्ष यह है कि आधाकर्म से लेकर राजपिण्ड तक मे से किसी भी दोष का किसी भी रूप मे मन-वचन काया से सेवन करके अन्तिम समय मे उस दोष की आलोचना-प्रतिक्रमण कर लेता है, तो वह आराधक होता है। उन दोषो की आलोचना-प्रतिक्रमणादि न करके काल करने वाला साधु विराधक। आधाकर्मादि दोष निर्दोष होने की मन मे धारणा बना लेना, तथा निर्दोष होने की प्ररूपणा करना विपरीत श्रद्धानादिरूप **दर्शन-विराधना** है, इन्हे विपरीत रूप म जानना **ज्ञान-विराधना** है। तथा इन दोषो को निर्दोष कहकर स्वय आधाकर्मादि आहारादि सेवन करना, तथा दूसरो को वैसा दोषयुक्त आहार दिलाना, **चारित्र-विराधना** है। *(वृत्ति पत्राक २३१)*

Elaboration—The gist of the aforesaid four aphorisms is that if any fault related to food from *Adhakarma* to *Raj-pind* is committed in any way—by mind, speech and body—and the culprit duly censures and does critical review (*pratikraman*) before dying, he is supposed to have accomplished his spiritual practices One who does not censure and do critical review (*pratikraman*) before dying, he is supposed not to have accomplished his spiritual practices To have belief that the said faults including *adhakarma* are not faults and to declare so is contradicting established faith and thus a fault related to perception/faith (*darshan-viradhana*) To understand and know such contradiction is fault related to knowledge (*jnana-viradhana*) and to declare such food faultless, accept it and facilitate others accepting it is fault related to conduct (*chaaritra-viradhana*) *(Vritti, leaf 231)*

आचार्य-उपाध्याय की गति DESTINY OF ACHARYA AND UPADHYAYA

१९. [प्र.] आयरिय, उवज्झाए णं भंते ! सविसयंसि गण अगिलाए सगिण्हमाणे अगिलाए उवगिण्हमाणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव अंत करेति ?

[उ.] गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति, तच्चं पुण भवग्गहणं नातिक्कमति।

१९. [प्र.] भगवन् ! अपने विषय मे-(सूत्र और अर्थ की वाचना-प्रदान करने मे) गण (शिष्यवर्ग) को अग्लान (अखेद) भाव से सूत्रार्थ पढाते हुए तथा अग्लानभावपूर्वक (खेदरहित, प्रसन्न

मन से) उन्हे सयम पालन मे सहायता करते हुए आचार्य और उपाध्याय, कितने भव (जन्म) ग्रहण करके सिद्ध होते है, यावत् सर्व दु खो का अन्त करते है ?

[उ] गौतम ! कितने ही आचार्य-उपाध्याय उसी भव से सिद्ध होते है, कितने ही दो भव ग्रहण करके सिद्ध होते है, किन्तु तीसरे भव का अतिक्रमण नही करते।

19. [Q.] In how many births the *acharyas* and *upadhyayas*, who teach their disciples and help them follow ascetic-discipline without any reservations (or happily) in their respective fields, become *Siddhas* and so on up to end all misery ?

[Ans.] Gautam ! Some of the *acharya-upadhyayas* become *Siddhas* in that very birth and some do so after two births but in no case they go beyond the third birth

मिथ्यादोषारोपणकर्ता के दुष्कर्मबन्ध **BONDAGE OF ACCUSERS**

२०. [प्र.] जे णं भंते ! पर अलिएणं असतएण अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति तस्स णं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! जे ण परं अलिएणं असतंएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति तस्स णं तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जंति, जत्थेव णं अभिसमागच्छति तत्थेव ण पडिसंवेदेति, ततो से पच्छा वेदेति।

सेव भंते ! २ त्ति०।

॥ पंचमसए : छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥

२०. [प्र] भगवन् ! जो दूसरे पर सद्भूत का अपलाप (सत्य को छिपाना) और असद्भूत (असत्य) का आरोप करके असत्य मिथ्यादोषारोपण (अभ्याख्यान) करता है, उसे किस प्रकार के कर्म बँधते है।

[उ] गौतम ! जो दूसरे पर सद्भूत का अपलाप और असद्भूत का आरोपण करके मिथ्या दोष लगाता है, उसके उसी प्रकार के कर्म बँधते है। वह जिस योनि मे उत्पन्न होता है, वहाँ उन कर्मो को वेदता (भोगता) है और वेदन करने के पश्चात् उनकी निर्जरा करता है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरने लगे।

20. [Q.] *Bhante* ! What sort of *karmas* does the person who distorts truth, makes false accusations and puts false blames on others acquire ?

[Ans.] Gautam ! The person who distorts truth, makes false accusations and puts false blames on others acquires same sort of *karmas* (entailing similar accusations and blames) In whichever genus

he is born he experiences (the fruits of) those *karmas* and after suffering sheds them

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so" With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन ब्रह्मचारी को अब्रह्मचारी कहना, यह सद्भूत का अपलाप है, अचोर को चोर कहना असद्भूत दोष का आरोपण है। ऐसा करके किसी पर मिथ्या दोषारोपण करने से इसी प्रकार का फल देने वाले कर्मों का बन्ध होता है। कर्मशास्त्र अनुसार कर्म की शुद्धि के दो प्रकार है-(१) प्रायश्चित्त, और (२) उसके विपाक को भोगना। यहाँ दूसरा प्रकार बताया है। *(वृत्ति पत्राक २३२)*

॥ पचम शतक · छठा उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—To call a celibate a non-celibate is distorting truth To call an upright person a thief is false accusation To do that and put a false blame on someone causes bondage of *karmas* that give similar fruits According to the theory of *karma* there are two ways of purification - (1) by atonement and (2) by suffering the fruits Here the second option has been mentioned *(Vritti, leaf 232)*

● END OF THE SIXTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : सप्तम उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : SEVENTH LESSON

एजन EJAN (VIBRATION)

परमाणुपुद्गल का कम्पन VIBRATION OF PARAMANU PUDGAL

१. [प्र.] परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयइ वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरइ तं तं भावं परिणमति ?

[उ.] गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव परिणमति, सिय णो एयति जाव णो परिणमति।

१. [प्र.] भगवन् ! क्या परमाणुपुद्गल काँपता है, विशेष रूप से काँपता है? चलन, स्पन्दन, प्रकम्पन, क्षोभ और उदीरणा करता है, उस-उस भाव मे (विभिन्न परिणामो मे) परिणत होता है?

[उ.] गौतम ! परमाणुपुद्गल कदाचित् काँपता है, विशेष काँपता है, यावत् उस-उस भाव मे परिणत होता है। कदाचित् नही काँपता, यावत् उस-उस भाव मे परिणत नही होता।

1. [Q.] *Bhante* ! Does ultimate particle of matter (*paramanu pudgal*) vibrate (*ejan*), vibrate unusually (*vejan*), move (*chalan*), pulsate (*spandan*), quiver (*prakampan*), get agitated (*kshobh*) and precipitate (*udirana*)? And get transformed accordingly (into different forms)?

[Ans.] Gautam ! Sometimes ultimate particle of matter (*paramanu pudgal*) vibrates (*ejan*), vibrates unusually (*vejan*) and so on up to gets transformed accordingly. Sometimes it does not vibrate (*ejan*), vibrate unusually (*vejan*) and so on up to get transformed accordingly.

२. [प्र. १] दुपदेसिए णं भंते ! खंधे एयइ जाव परिणमइ ?

[उ.] गोयमा ! सिय एयइ जाव परिणमइ, सिय णो एयइ जाव णो परिणमइ; सिय देसे एयइ, देसे नो एयइ।

२. [प्र. १] भगवन् ! क्या द्विप्रदेशिक स्कन्ध काँपता है, यावत् उस-उस भाव मे परिणत होता है?

[उ.] हे गौतम ! कदाचित् कम्पित होता है, यावत् परिणत होता है, कदाचित् कम्पित नही होता, यावत् परिणत नही होता। कदाचित् एक देश (भाग) से कम्पित होता है, एक देश से कम्पित नही होता।

2. [Q. 1] *Bhante* ! Does an aggregate of two ultimate particles vibrate (*ejan*) and so on up to get transformed accordingly?

[Ans.] Gautam ! Sometimes it vibrates (*ejan*) and so on up to gets transformed accordingly. Sometimes it does not vibrate (*ejan*) and so on up to get transformed accordingly. Sometimes one of its sections (*desh*)

vibrates (*ejan*) and so on up to gets transformed accordingly and the other section does not vibrate (*ejan*) and so on up to get transformed accordingly

[प्र २] तिपदेसिए ण भंते ! खंधे एयइ ?

[उ] गोयमा ! सिय एयइ १, सिय नो एयइ २, सिय देसे एयइ, नो देसे एयइ ३, सिय देसे एयइ नो देसा एयंति ४, सिय देसा एयंति नो देसे एयइ ५।

[प्र २] भगवन् ! क्या त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कम्पित होता है, यावत् परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! (१) कदाचित् कम्पित होता है, (२) कदाचित् कम्पित नही होता, (३) कदाचित् एक देश से कम्पित होता है और एक देश से कम्पित नही होता, (४) कदाचित् एक देश से कम्पित होता है और बहुत देशो से कम्पित नही होता, (५) कदाचित् बहुत देशो से कम्पित होता है और एक देश से कम्पित नही होता।

[Q. 2] *Bhante* ! Does an aggregate of three ultimate particles vibrate (*ejan*) and so on up to get transformed accordingly ?

[Ans.] Gautam ! (1) Sometimes it vibrates (*ejan*) (2) Sometimes it does not vibrate (*ejan*) (3) Sometimes one of its sections (*desh*) vibrates (*ejan*) and the other section does not vibrate (*ejan*) (4) Sometimes one of its sections (*desh*) vibrates (*ejan*) and not many other sections (5) Sometimes many of its sections (*desh*) vibrate (*ejan*) and only one does not (here *desh* means *pradesh* or ultimate particle of matter)

[प्र. ३] चउप्पएसिए णं भंते ! खधे एयइ ?

[उ.] गोयमा ! सिय एयइ १, सिय नो एयइ २, सिय देसे एयइ णो देसे एयइ ३, सिय देसे एयइ णो देसा एयति ४, सिय देसा एयंइ नो देसे एयइ ५, सिय देसा एयंति नो देसा एयंति ६।

जहा चउप्पदेसिओ तहा पचपदेसिओ, तहा जाव अणतपदेसिओ।

[प्र ३] भगवन् ! क्या चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध कम्पित होता है ?

[उ] गौतम ! (१) कदाचित् कम्पित होता है, (२) कदाचित् कम्पित नही होता, (३) कदाचित् उसका एकदेश कम्पित होता है, कदाचित् एकदेश कम्पित नही होता, (४) कदाचित् एकदेश कम्पित होता है और बहुत देश कम्पित नही होते, (५) कदाचित् बहुत देश कम्पित होते है और एक देश कम्पित नही होता, (६) कदाचित् बहुत देश कम्पित होते है और बहुत देश कम्पित नही होते।

जिस प्रकार चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार पचप्रदेशी स्कन्ध से लेकर यावत् अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक (प्रत्येक स्कन्ध के लिए) कहना चाहिए।

[Q. 3] *Bhante* ! Does an aggregate of four ultimate particle vibrate (*ejan*) ?

[**Ans.**] Gautam ! (1) Sometimes it vibrates (*ejan*) (2) Sometimes it does not vibrate (*ejan*) (3) Sometimes one of its sections (*desh*) vibrates (*ejan*) and the other section does not vibrate (*ejan*) (4) Sometimes one of its sections (*desh*) vibrates (*ejan*) and not many other sections (5) Sometimes many of its sections (*desh*) vibrate (*ejan*) and only one does not (6) Sometimes many of its sections (*desh*) vibrate (*ejan*) and many do not

What has been said about aggregate of four ultimate particles is also applicable to all aggregates of five to infinite ultimate particles

विवेचन · पुद्गल की सबसे छोटी इकाई परमाणु है। दो परमाणुओ का योग द्विप्रदेशी स्कन्ध, यावत् तीन, चार आदि परमाणुओ के स्कन्ध से उतने ही प्रदेशी स्कन्ध बनते है। पुद्गलो मे कम्पनादि क्रियाएँ कदाचित् होती है, कदाचित् नही होती। इस कारण परमाणुपुद्गल मे कम्पन आदि विषयक दो भग, द्विप्रदेशिक स्कन्ध मे तीन भग, त्रिप्रदेशिक स्कन्ध मे, पाँच भग और चतुष्प्रदेशी स्कन्ध से लेकर अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक प्रत्येक स्कन्ध मे कम्पनादि के छह भग होते है।

Elaboration—The smallest single particle of matter is called *paramanu* or ultimate particle An aggregate of two ultimate particles is called *dvipradeshiya skandh* Aggregates of more ultimate particles are given the name of their respective numbers Matter sometimes undergoes activities like vibration and sometimes does not That is why there are two alternative situations with regard to action in a single *paramanu*, three in an aggregate of two, five in an aggregate of three and six in aggregates of four and more up to infinite

परमाणुपुद्गलो मे छेदन आदि **PIERCING ETC IN ULTIMATE PARTICLES**

३. [प्र १] परमाणुपोग्गले णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?

[उ] हंता, ओगाहेज्जा।

[प्र. २] से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमति।

४. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ।

३. [प्र १] भगवन् ! क्या परमाणुपुद्गल तलवार की धार या क्षुरधार (उस्तरे की धार) पर अवगाहन कर सकता है ?

[उ.] हॉ, अवगाहन कर सकता है।

[प्र. २] भगवन् ! उस धार पर अवगाहित होकर रहा हुआ परमाणुपुद्गल छिन्न या भिन्न हो जाता है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है। परमाणुपुद्गल मे शस्त्र नही चल सकता।

४. इसी तरह (द्विप्रदेशी स्कन्ध से लेकर) यावत् असख्यप्रदेशी स्कन्ध तक समझ लेना चाहिए। (निष्कर्ष यह है कि एक परमाणु से असख्यप्रदेशी स्कन्ध तक शस्त्र से छिन्न भिन्न नही होता, क्योकि कोई भी शस्त्र इसमे प्रविष्ट नही हो सकता।)

3. [Q. 1] *Bhante* ! Can *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) accommodate itself (*avagahana*) on the edge of a sword or a razor ?

[Ans.] Yes, it can accommodate

[Q. 2] *Bhante* ! Can the *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) accommodated on that edge get cut into two (*chhedan*) or more pieces (*bhedan*) (by that edge) ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct No weapon is effective on *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter)

4. The same holds good for (aggregates of two ultimate particles) and so on up to aggregate of innumerable ultimate particles (Conclusion is that no weapon can subdivide a single ultimate particle or aggregates of up to innumerable ultimate particles because there is no weapon that can penetrate these)

५. [प्र १] अणतपदेसिए ण भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधार वा ओगाहेज्जा ?

[उ.] हंता, ओगाहेज्जा।

५. [प्र १] भगवन् ! क्या अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तलवार की धार पर या क्षुरधार पर अवगाहन कर सकता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! वह कर सकता है।

5. [Q. 1] *Bhante* ! Can an aggregate of infinite *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter) accommodate itself (*avagahana*) on the edge of a sword or a razor ?

[Ans.] Yes, it can accommodate

[प्र. २] से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?

[उ.] गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा।

[प्र. २] भगवन् ! क्या तलवार की धार या क्षुरधार पर रहा हुआ अनन्तप्रदेशी स्कन्ध छिन्न या भिन्न हो सकता है ?

[उ.] गौतम ! कोई अनन्तप्रदेशी स्कन्ध छिन्न- भिन्न हो जाता है, और कोई छिन्न–भिन्न नही होता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Can the aggregate of infinite *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter) accommodated on that edge get cut into two or more pieces (by that edge) ?

[Ans.] Gautam ! Some aggregate of infinite *paramanu-pudgals* (ultimate particles of matter) gets cut into two or more pieces and some does not

६. एवं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं। तहिं णवरं 'झियाएज्जा' भाणियव्वं।

७. एवं पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं। तहिं 'उल्ले सिया'।

६. जिस प्रकार छेदन भेदन के विषय मे प्रश्नोत्तर किए है, उसी तरह से 'अग्निकाय के बीच मे प्रवेश करता है'–इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर एक परमाणुपुद्गल से लेकर अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक के कहने चाहिए। किन्तु अन्तर इतना ही है कि जहाँ उस पाठ मे सम्भावित छेदन–भेदन का कथन किया गया है, वहाँ इस पाठ मे **'जलता है'** इस प्रकार कहना चाहिए।

७. इसी प्रकार ''पुष्कर–सवर्त्तक नामक महामेघ के मध्य मे (बीचोबीच) प्रवेश करता है'' इस प्रकार के प्रश्नोत्तर (एक परमाणुपुद्गल से लेकर अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक के) कहने चाहिए। किन्तु वहाँ सम्भावित 'छिन्न–भिन्न होता है' के स्थान पर यहाँ **'गीला होता** या भीग जाता है', कहना चाहिए।

6. Like the questions and answers about *chhedan-bhedan* (cut and disintegrate) questions and answers with regard to a single ultimate particle of matter and so on up to aggregate of infinite ultimate particles 'entering a fire-body' should be stated The difference being that 'burn' should be mentioned in place of options of 'cut and disintegrate'

7. In the same way questions and answers with regard to a single ultimate particle of matter and so on up to aggregate of infinite ultimate particles 'entering the great cloud called Pushkar-samvartak' should be stated The difference being that 'gets wet' should be mentioned in place of options of 'cut and disintegrate'

८. एवं गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा। तहिं विणिघायमावज्जेज्जा, उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा, से णं तत्थ परियावज्जेज्जा।

८. इसी प्रकार ''गगा महानदी के प्रतिस्रोत (विपरीत प्रवाह) मे वह परमाणुपुद्गल आता है और **प्रतिस्खलित** होता है।' इस तरह के तथा 'उदकावर्त्त या उदकबिन्दु मे प्रवेश करता है, और वहाँ वह (परमाणु आदि) **विनष्ट** होता है' (इस तरह के प्रश्नोत्तर पर परमाणुपुद्गल से लेकर अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक के कहने चाहिए।)

8. In the same way (questions and answers with regard to a single ultimate particle of matter and so on up to aggregate of infinite

ultimate particles) it 'enters the great river Ganges against its flow and gets destroyed' In the same way it 'enters a whirlpool or a drop of water and gets destroyed'

विवेचन छेदन–दो टुकडे हो जाना। भेदन–विदारण हो या बीच मे से चीरा जाना या खण्ड-खण्ड होना। परमाणुपुद्गल से लेकर असख्यप्रदेशी स्कन्ध तक सूक्ष्म परिणाम वाला होने से उसका छेदन-भेदन नही हो पाता। किन्तु अनन्तप्रदेशी स्कन्ध बादर परिणाम वाला होने से कदाचित् छेदन भेदन को प्राप्त हो जाता है, कदाचित् नही। इसी प्रकार अग्निकाय मे प्रवेश करने तथा जल जाने आदि सभी प्रश्नो के उत्तर के सम्बन्ध मे छेदन-भेदन आदि की तरह ही समझ लेना चाहिए। अर्थात् उत्तरो का स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए।

उक्त वर्णन का साराश यह है कि एक प्रदेशी से असख्यप्रदेशी स्कन्ध तक छिन्न-भिन्न नही होता, अनन्तप्रदेशी स्कन्ध छिन्न-भिन्न होता भी है, और नही भी होता।

आधुनिक विज्ञान का पहले यह मत था कि परमाणु का विभाजन नही होता। किन्तु अब उसका विभाजन किया गया है। जैनदर्शन के अनुसार विज्ञानसम्मत अणु अनन्तप्रदेशी स्कन्ध है।

Elaboration—*Chhedan* means to break into two pieces *Bhedan* means to tear apart or to break into many pieces As *paramanu-pudgal* or ultimate particle of matter and its aggregates of up to innumerable numbers are extremely minute they cannot be divided into pieces But the aggregates of infinite *pradeshas* (ultimate particles) are gross and thus sometimes divisible and sometimes not The answers to questions regarding entering fire and water should be understood likewise

The gist of the aforesaid description is that aggregates of one to innumerable ultimate particles are indivisible, whereas aggregates of infinite ultimate particles are divisible as well as indivisible

Modern science initially maintained that atom was indivisible but now it has been divided According to Jain philosophy the atom of modern science is an aggregate of infinite *paramanus*

परमाणुपुद्गलादि के विभाग **SECTIONS OF PARTICLES OF MATTER**

९. [प्र] परमाणुपोग्गले ण भंते ! किं सअड्ढे समज्झे सपदेसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपदेसे ?

[उ] गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपदेसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपदेसे।

९. [प्र.] भगवन् ! क्या परमाणुपुद्गल स अर्ध-(बराबर आधा भाग) स-मध्य-(मध्य सहित) और स-प्रदेश-(प्रदेशयुक्त) है, अथवा अनर्द्ध-(अर्ध-भागरहित), अमध्य-(मध्य भागरहित) और अप्रदेश-(प्रदेशरहित) है ?

[उ] गौतम ! (परमाणुपुद्गल) अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश है, किन्तु स-अर्ध, समध्य और सप्रदेश नही है।

9. [Q.] *Bhante* ! Is *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) or without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ?

[Ans.] Gautam ! It is without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) but never with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*)

१०. [प्र. १] दुप्पदेसिए णं भंते ! खंधे किं सअद्धे समज्झे सपदेसे ? उदाहु अणद्धे अमज्झे अपदेसे ?

[उ.] गोयमा ! सअद्धे अमज्झे, सपदेसे, णो अणद्धे णो समज्झे णो अपदेसे।

[प्र. २] तिप्पदेसिए णं भंते ! खंधे. पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! अणद्धे, समज्झे सपदेसे, णो सअद्धे, णो अमज्झे, णो अपदेसे।

जहा दुप्पदेसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा। जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ तहा भाणियव्वा।

१०. [प्र. १] भगवन् ! क्या द्विप्रदेशिक स्कन्ध स-अर्ध, स-मध्य और स-प्रदेश है, अथवा अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश है ?

[उ.] गौतम ! द्विप्रदेशी स्कन्ध स-अर्ध, अमध्य और स-प्रदेश है, किन्तु अनर्ध, स-मध्य और अप्रदेश नही है ?

[प्र. २] भगवन् ! क्या त्रिप्रदेशी स्कन्ध स-अर्ध, अमध्य और स-प्रदेश है, अथवा अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश है ?

[उ.] गौतम ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध अनर्ध है, स-मध्य है और सप्रदेश है, किन्तु स-अर्ध नही है, अमध्य नही है, और अप्रदेश नही है।

जिस प्रकार द्विप्रदेशी स्कन्ध के विषय मे स-अर्ध आदि विभाग बतलाए गए है, उसी प्रकार सम सख्या वाले स्कन्धो के विषय मे कहना चाहिए तथा विषम सख्या वाले स्कन्धो के विषयो मे त्रिप्रदेशी स्कन्ध की भाँति कहना चाहिए।

10. [Q. 1] *Bhante* ! Is an aggregate of two *pradeshas* (ultimate particle of matter) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) or without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ?

[Ans.] Gautam ! It is with halves (*sa-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) but never without halves (*an-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and without sections (*a-pradesh*)

[Q. 2] *Bhante* ! Is an aggregate of three *pradeshas* (ultimate particle of matter) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) or without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ?

[Ans.] Gautam ! It is without halves (*an-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) but never with halves (*sa-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*)

What has been stated about aggregates of two should be repeated for aggregates of even numbers And what has been stated about aggregates of three should be repeated for aggregates of odd numbers

[प्र ३] संखेज्जपदेसिए णं भंते ! खधे किं सअड्ढे पुच्छा ?

[उ] गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपदेसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपदेसे।

जहा संखेज्जपदेसिओ तहा असंखेज्जपदेसिओ वि अणंतपदेसिओ वि।

[प्र ३] भगवन् ! क्या सख्यातप्रदेशी स्कन्ध सार्ध, समध्य और सप्रदेश है, अथवा अनर्ध, अमध्य और अप्रदेश है ?

[उ] गौतम ! वह कदाचित् स–अर्ध होता है, अमध्य होता है, और स–प्रदेश है, और कदाचित अनर्ध होता है, स–मध्य होता है और सप्रदेश होता है।

जिस प्रकार सख्यातप्रदेशी स्कन्ध के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार असख्यातप्रदेशी स्कन्ध और अनन्तप्रदेशी स्कन्ध के विषय मे भी जानना चाहिए।

[Q. 3] *Bhante* ! Is an aggregate of countable *pradeshas* (ultimate particle of matter) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) or without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ?

[Ans.] Gautam ! It is sometimes with halves (*sa-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), and sometimes without halves (*an-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*)

What has been stated about aggregates of countable should be repeated for aggregates of innumerable as well as aggregates of infinite

विवेचन . निष्कर्ष–परमाणुपुद्गल विशुद्ध रूप मे अनर्ध (अविभाजित) अमध्य और अप्रदेश होते है। परन्तु जो द्विप्रदेशी जैसे सम सख्या (दो, चार, छह, आठ आदि सख्या) वाले स्कन्ध होते है, वे स–अर्ध, अमध्य और स–प्रदेश होते है, जबकि जो त्रिप्रदेशी जैसे विषम (तीन, पॉच, सात, नौ आदि एकी) सख्या वाले स्कन्ध होते है। वे अनर्ध, स–मध्य और स–प्रदेश होते है, इसी प्रकार सख्यातप्रदेशी, असख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी

स्कन्धो मे जो समसंख्यकप्रदेशी होते है, वे स-अर्ध, अमध्य और स-प्रदेशी होते है, और जो विषम सख्यक-प्रदेशी होते है। वे अनर्द्ध, स-मध्य और स-प्रदेश होते है। भाव यह है कि जिस स्कन्ध के प्रदेश समान होते है, उसका अर्ध होता है या जिसके प्रदेश विषम होते है उसमे मध्य होता है। सख्येय, असख्येय और अनन्तप्रदेशी स्कन्ध दोनों प्रकार के होते है।

Elaboration—Ultimate particle of matter is without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) The aggregates of two and even numbers (four, six, eight and so on) are with halves (*sa-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) The aggregates of three and odd numbers (three, five, seven and so on) are without halves (*an-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) The aggregates of countable, innumerable and infinite numbers also follow the same rule—those of even numbers are with halves (*sa-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) and those of odd numbers are without halves (*an-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) In other words the aggregates with even numbers have halves and those with odd numbers have a middle Aggregates of countable, innumerable and infinite have both these classes

परमाणुपुद्‌गलो की परस्पर स्पर्शना TOUCHING OF ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

११. [प्र १] परमाणुपोग्गले णं भंते ! परमाणुपोग्गलं पुसमाणे किं देसेणं देसं फुसति १ देसेणं देसे फुसति २ देसेणं सव्वं फुसति ३ देसेहिं देसं फुसति ४ देसेहिं देसे फुसति ५ देसेहिं सव्वं फुसति ६ सव्वेणं देसं फुसति ७ सव्वेणं देसे फुसति ८ सव्वेणं सव्वं फुसति ९ ?

[उ.] गोयमा ! नो देसेणं देस फुसति, नो देसेणं देसे फुसति, नो देसेणं सव्वं फुसति, णो देसेहिं देसं फुसति, नो देसेहिं देसे फुसति, नो देसेहिं सव्वं फुसति, णो सव्वेणं देसं फुसति, णो सव्वेणं देसे फुसति, सव्वेणं सव्वं फुसति।

११. [प्र १] भगवन् ! परमाणुपुद्‌गल, परमाणुपुद्‌गल को स्पर्श करता हुआ-(१) क्या एकदेश से एकदेश को स्पर्श करता है ?, (२) एकदेश से बहुत देशो को स्पर्श करता है ?, (३) अथवा एकदेश से सबको स्पर्श करता है ?, (४) अथवा बहुत देशो से एकदेश को स्पर्श करता है ?, (५) या बहुत देशो से बहुत देशो को स्पर्श करता है ?, (६) अथवा बहुत देशो से सभी को स्पर्श करता है ?, (७) अथवा सर्व से एकदेश को स्पर्श करता है ?, (८) या सर्व से बहुत देशो को स्पर्श करता है ?, अथवा (९) सर्व से सर्व को स्पर्श करता है ?

[उ.] गौतम ! (परमाणुपुद्‌गल परमाणुपुद्‌गल को) (१) एकदेश से एकदेश को स्पर्श नही करता, (२) एकदेश से बहुत देशो को स्पर्श नही करता, (३) एकदेश से सर्व को स्पर्श नही करता, (४) बहुत

देशो से एकदेश को स्पर्श नही करता, (५) बहुत देशो से बहुत देशो को स्पर्श नही करता, (६) बहुत देशो से सभी को स्पर्श नही करता, (७) न सर्व से एकदेश को स्पर्श करता है, (८) न सर्व से बहुत देशो को स्पर्श करता है, अपितु (९) सर्व से सर्व को स्पर्श करता है।

11. [Q. 1] *Bhante* ! When a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) touches another *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) does it touch—(1) one section (*desh*) by one section ? (2) many sections by one section ? (3) all sections (or whole) by one section ? (4) one section by many sections ? (5) many sections by many sections ? (6) all sections by many sections ? (7) one section by all sections ? (8) many sections by all sections ? or (9) all sections by all sections ?

[Ans.] Gautam ! (When a *paramanu-pudgal* touches another *paramanu-pudgal* it touches—(1) neither one section (*desh*) by one section, (2) nor many sections by one section, (3) nor all sections (or whole) by one section, (4) nor one section by many sections, (5) nor many sections by many sections, (6) nor all sections by many sections, (7) nor one section by all sections, and (8) nor many sections by all sections But it touches (9) all sections by all sections

[२] एव परमाणुपोग्गले दुपदेसियं फुसमाणं सत्तम–णवमेहिं फुसति।

[३] परमाणुपोग्गले तिपदेसियं फुसमाणे निप्पच्छिमएहिं तिहिं पुसति।

[४] जहा परमाणुपोग्गलो तिपदेसियं फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणतपदेसिओ।

[२] इसी प्रकार द्विप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करता हुआ परमाणुपुद्गल सातवे (सर्व से एकदेश का) अथवा नौवे (सर्व से सर्व का), इन दो विकल्पो से स्पर्श करता है।

[३] त्रिप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करता हुआ परमाणुपुद्गल (उपर्युक्त नौ विकल्पो मे से) अन्तिम तीन विकल्पो (अर्थात् (७) सर्व से एकदेश को, (८) सर्व से बहुत देशो को, और (९) सर्व से सर्व को स्पर्श करता है।)

[४] जिस प्रकार एक परमाणुपुद्गल द्वारा त्रिप्रदेशी स्कन्ध के स्पर्श करने का आलापक कहा है, उसी प्रकार एक परमाणुपुद्गल से चतुष्प्रदेशीस्कन्ध, पचप्रदेशीस्कन्ध यावत् सख्यातप्रदेशी स्कन्ध, असख्यातप्रदेशीस्कन्ध एव अनन्तप्रदेशीस्कन्ध तक को स्पर्श करने का आलापक कहना चाहिए। (अर्थात्–एक परमाणुपुद्गल अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक को तीन विकल्पो से स्पर्श करता है।)

[2] In the same way a *paramanu-pudgal* touches an aggregate of two *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) according to either the seventh (one section by all sections) or the ninth alternative (all sections by all sections) (from among the aforesaid nine alternatives)

[3] A *paramanu-pudgal* touches an aggregate of three *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) according to either of the last three alternatives (from among the aforesaid nine alternatives) [Which means—(7) one section by all sections, (8) many sections by all sections and (9) all sections by all sections.]

[4] As has been stated about a *paramanu-pudgal* touching an aggregate of three *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) should be repeated for touching of aggregates of four, five and so on up to countable, innumerable and infinite numbers of ultimate particles (In other words a *paramanu-pudgal* touches an aggregate of up to infinite *pradeshas* according to either of the aforesaid three alternatives.)

१२. [प्र. १] दुपदेसिए ण भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे० पुच्छा ?

[उ.] ततिय—नवमेहिं फुसति।

[२] दुपएसिओ दुपदेसियं फुसमाणो पढम—तइय—सत्तम—णवमेहिं फुसति।

[३] दुपएसिओ तिपदेसियं फुसमाणो आइल्लएहि य पच्छिल्लएहि य तिहिं फुसति, मज्झिमएहिं तिहिं वि पडिसेहेयव्वं।

[४] दुपदेसिओ जहा तिपदेसियं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपदेसियं।

१२. [प्र. १] भगवन् ! द्विप्रदेशी स्कन्ध परमाणुपुद्‌गल को स्पर्श करता हुआ किस प्रकार स्पर्श करता है ?

[उ.] (हे गौतम ! द्विप्रदेशी स्कन्ध परमाणुपुद्‌गल को) तीसरे और नौवे विकल्प से (अर्थात्—एकदेश से सर्व को, तथा सर्व से सर्व को) स्पर्श करता है।

[२] द्विप्रदेशी स्कन्ध, द्विप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करता हुआ, पहले, तीसरे, सातवे और नौवे विकल्प से स्पर्श करता है।

[३] द्विप्रदेशी स्कन्ध, त्रिप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करता हुआ आदिम तीन (प्रथम, द्वितीय और तृतीय) तथा अन्तिम तीन (सप्तम, अष्टम और नवम) विकल्पो से स्पर्श करता है। इसमे बीच के तीन (चतुर्थ, पचम और षष्ठ) विकल्पो को छोड देना चाहिए।

[४] जिस प्रकार द्विप्रदेशी स्कन्ध द्वारा त्रिप्रदेशी स्कन्ध के स्पर्श आलापक कहा गया है, उसी प्रकार द्विप्रदेशी स्कन्ध द्वारा चतुष्प्रदेशी स्कन्ध, पचप्रदेशी स्कन्ध यावत् अनन्तप्रदेशी स्कन्ध के स्पर्श का आलापक कहना चाहिए।

12. [Q. 1] *Bhante* ! When an aggregate of two *pradeshas* (ultimate particle of matter) touches a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter), how does it touch ?

[Ans.] Gautam ! (When an aggregate of two *pradeshas* touches another *paramanu-pudgal*) it touches according to either the third (all sections by one section) or the ninth (all sections by all sections) alternative

[2] An aggregate of two *pradeshas* touches an aggregate of two *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) according to either of the first, third, seventh or the ninth alternative

[3] An aggregate of two *pradeshas* touches an aggregate of three *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) according to either of the first three or the last three alternatives The middle three alternatives (fourth, fifth and sixth) should be left alone

[4] As has been stated about an aggregate of two *pradeshas* touching an aggregate of three *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) should be repeated for touching of aggregates of four, five and so on up to countable, innumerable and infinite numbers of ultimate particles

१३. [प्र १] तिपदेसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे० पुच्छा।

[उ] ततिय–छट्ठ–नवमेहिं फुसति।

[२] तिपदेसिओ दुपदेसिय फुसमाणो पढमएणं, ततियएण, चउत्थ–छट्ठ–सत्तम–णवमेहिं फुसति।

[३] तिपदेसिओ तिपदेसियं फुसमाणो सव्वेसु वि ठाणेसु फुसति।

[४] जहा तिपदेसिओ तिपदेसियं फुसाविओ एव तिपदेसिओ जाव अणंतपएसिएण सजोएयव्वो।

[५] जहा तिपदेसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो।

१३. [प्र १] भगवन् ! अब त्रिप्रदेशी स्कन्ध द्वारा परमाणुपुद्गल को स्पर्श करने के सम्बन्ध मे पृच्छा है।

[उ] गौतम् ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध परमाणुपुद्गल को तीसरे, छठे और नौवे विकल्प से, (अर्थात्–एकदेश से सर्व को, बहुत देशो से सर्व को और सर्व से सर्व को) स्पर्श करता है।

[२] त्रिप्रदेशी स्कन्ध, द्विप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करता हुआ पहले, तीसरे, चौथे, छठे, सातवे और नौवे विकल्प से स्पर्श करता है।

[३] त्रिप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करता त्रिप्रदेशी स्कन्ध पूर्वोक्त सभी स्थानो (नौ ही विकल्पो) से स्पर्श करता है।

[४] जिस प्रकार त्रिप्रदेशी स्कन्ध द्वारा त्रिप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करने के सम्बन्ध मे आलापक कहा गया है, उसी प्रकार त्रिप्रदेशी स्कन्ध द्वारा चतुष्प्रदेशी स्कन्ध, यावत् अनन्तप्रदेशी स्कन्ध को स्पर्श करने के सम्बन्ध मे आलापक कहना चाहिए।

[५] जिस प्रकार त्रिप्रदेशी स्कन्ध के द्वारा स्पर्श के सम्बन्ध मे (तेरहवे सूत्र के चार भागो मे) कहा गया है, वैसे ही (चतुष्प्रदेशी स्कन्ध से) यावत् (अनन्तप्रदेशी स्कन्ध द्वारा परमाणुपुद्गल से लेकर) अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक को स्पर्श करने के सम्बन्ध मे कहना चाहिए।

13. [Q. 1] *Bhante* ! Now the question is about an aggregate of three *pradeshas* (ultimate particle of matter) touching a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter)?

[Ans.] Gautam ! (When an aggregate of three *pradeshas* touches another *paramanu-pudgal*) it touches according to either the third (all sections by one section), the sixth (all sections by many sections) or the ninth (all sections by all sections) alternative

[2] An aggregate of three *pradeshas* touches an aggregate of two *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) according to either of the first, third, fourth, sixth, seventh or the ninth alternative

[3] An aggregate of three *pradeshas* touches an aggregate of three *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) according to all the aforesaid nine alternatives

[4] As has been stated about an aggregate of three *pradeshas* touching an aggregate of three *pradeshas* (*paramanu-pudgal*) should be repeated for touching of aggregates of four, five and so on up to countable, innumerable and infinite numbers of ultimate particles

[5] As has been stated (in first four sections of aphorism 13) about an aggregate of three *pradeshas* touching a *paramanu pudgal* and so on up to aggregates of four, five and so on up to countable, innumerable and infinite numbers of ultimate particles, should be repeated for touching of aggregates of four up to infinite numbers of ultimate particles

विवेचन परमाणु जब दूसरे परमाणु का स्पर्श करता है तब वह आधे अश से स्पर्श करता है या सर्वात्मना स्पर्श करता है? प्रस्तुत सूत्र ११ मे इन्ही नौ विकल्पो को प्रश्न रूप मे प्रस्तुत कर समाधान किया है, उनका सार इस प्रकार है–(१) एकदेश से एकदेश का स्पर्श, (२) एकदेश से बहुत देशो का स्पर्श, (३) एकदेश से सर्व का स्पर्श, (४) बहुत देशो से एक देश का स्पर्श, (५) बहुत देशो से बहुत देशों का स्पर्श, (६) बहुत देशो से सर्व का स्पर्श, (७) सर्व से एकदेश का स्पर्श, (८) सर्व से बहुत देशो का स्पर्श, और (९) सर्व से सर्व का स्पर्श। देश का अर्थ भाग है, और 'सर्व' का अर्थ है–सम्पूर्ण भाग।

सर्व से सर्व का स्पर्श–सर्व से सर्व को स्पर्श करने का अर्थ यह नही है कि दो परमाणु परस्पर मिलकर एक हो जाते है, परन्तु इसका अर्थ यह है कि दो परमाणु समस्त स्वात्मा द्वारा परस्पर एक-दूसरे को स्पर्श करते है, क्योंकि दो परमाणुओ के आधा आदि विभाग नही होते।

द्विप्रदेशी और त्रिप्रदेशी स्कन्ध मे अन्तर–द्विप्रदेशी स्कन्ध स्वय अवयवी है, वह किसी का अवयव नही है, इसलिए इसमे सर्व से दो (बहुत) देशो का स्पर्श घटित नही होता, जबकि त्रिप्रदेशी स्कन्ध मे तीन प्रदेशो की अपेक्षा दो प्रदेशो का स्पर्श करते समय एक प्रदेश बाकी रहता है। *(इसे विस्तार से समझने के लिए देखे भगवतीसूत्र हिन्दी विवेचन, भाग २, पृ ८७५ ८७६ तथा भगवइ भाष्य भाग २, पृष्ठ १९४)*

Elaboration—When a *paramanu* (ultimate particle) touches another *paramanu*, does it do partially or fully ? The aforesaid aphorism 11 provides answer to this question in nine alternatives—(1) one section (*desh*) by one section, (2) many sections by one section, (3) all sections (or whole) by one section, (4) one section by many sections, (5) many sections by many sections, (6) all sections by many sections, (7) one section by all sections, (8) many sections by all sections, and (9) all sections by all sections *Desh* means part and *sarva* means whole

Touch of whole by whole—This does not mean that two ultimate particles coalesce into each other It means they touch each other fully and completely This is because these ultimate particles have no divisions or sections

Aggregates of two and three—An independent aggregate of two ultimate particles has sections but it is not a section, therefore the alternative of all by all is not applicable Whereas in case of an aggregate of three when two sections are in touch one section remains free *(For more details refer to Bhagavati Sutra Hindi elaboration, part-2, pp 875-876 and Bhagavai Bhashya, part-2, p 194)*

परमाणुपुद्गलो की काल स्थिति LIFE-SPAN OF ULTIMATE PARTICLES OF MATTER

१४. [प्र. १] परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होति ?

[उ] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असखेज्जं कालं।

[२] एवं जाव अणतपदेसिओ।

१४. [प्र १] भगवन् ! परमाणुपुद्गल काल की अपेक्षा कब तक रहता है ?

[उ.] गौतम ! परमाणुपुद्गल (परमाणुपुद्गल के रूप मे) जघन्य एक समय तक रहता है, और उत्कृष्ट असख्यात काल तक रहता है।

[२] इसी प्रकार (द्विप्रदेशी स्कन्ध से लेकर) अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक कहना चाहिए।

14. [Q. 1] *Bhante* ! In terms of time how long does a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) exist ?

[Ans.] Gautam ! A *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) exists (in the same form) for a minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable period

[2] The same should be repeated for aggregates of two to infinite *pradeshas*

१५. [प्र. १] एगपदेसोगाढे णं भंते ! पोग्गले सेए तम्मि वा ठाणे अन्नम्मि वा ठाणे कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं। एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढे।

[प्र. २] एगपदेसोगाढे णं भंते ! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समय, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढे।

१५. [प्र १] भगवन् ! एक आकाश-प्रदेशावगाढ (एक आकाशप्रदेश पर स्थित) पुद्गल उस स्थान मे या अन्य स्थान मे काल की अपेक्षा से कब तक सकम्प (स-एज) रहता है ?

[उ] गौतम ! जघन्य एक समय तक और उत्कृष्ट आवलिका के असख्येय भाग तक सकम्प रहता है। इसी तरह (द्विप्रदेशावगाढ से लेकर) यावत् असख्येय प्रदेशावगाढ तक कहना चाहिए।

[प्र. २] भगवन् ! एक आकाशप्रदेश मे अवगाढ पुद्गल काल की अपेक्षा से कब तक निष्कम्प (निरेज) रहता है ?

[उ] गौतम ! जघन्य एक समय तक और उत्कृष्ट असख्येय काल तक निष्कम्प रहता है। इसी प्रकार (द्विप्रदेशावगाढ से लेकर) असख्येय प्रदेशावगाढ तक (के विषय मे कहना चाहिए।)

15. [Q. 1] *Bhante* ! How long does a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) occupying one space-point remain in the state of vibration (*sa-eja*) at that point or another ?

[Ans.] Gautam ! (It remains in the state of vibration) For a minimum of one *Samaya* (the ultimate fractional unit of time that cannot be divided any further) and a maximum of innumerable fraction of an *Avalika* (innumerable *Samayas*) (The same is true for) and so on up to aggregates of infinite *pradeshas*

[Q. 2] *Bhante* ! How long does a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) occupying one space-point remain in the state of stillness (*nirej* or non-vibration) at that point or another ?

[Ans.] Gautam ! (It remains in the state of stillness) For a minimum of one *Samaya* (the ultimate fractional unit of time) and a maximum of

immeasurable period (The same is true for) and so on up to aggregates of infinite *pradeshas*

१६. [प्र.] एगगुणकालए णं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। एवं जाव अणंतगुणकालए।

१६. [प्र.] भगवन् ! एक गुण काला पुद्गल काल की अपेक्षा से कब तक (एक गुण काला) रहता है ?

[उ.] गौतम ! जघन्यत एक समय तक और उत्कृष्टत असख्येय काल तक रहता है। इसी प्रकार (द्विगुण काले पुद्गल से लेकर) यावत् अनन्तगुण काले पुद्गल का कथन करना चाहिए।

16. [Q.] *Bhante* ! In terms of time how long does a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) with one unit of black colour exist (as black) ?

[Ans.] Gautam ! It exists (in the same form) for a minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable period The same should be repeated for (with two units of black colour) and so on up to with innumerable units of black colour

१७. एवं वण्ण-गंध-रस-फासं० जाव अणंतगुणलुक्खे।

१७. इसी प्रकार (एक गुण) वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले पुद्गल के विषय मे यावत् अनन्तगुण रूक्ष पुद्गल तक पूर्वोक्त प्रकार से काल की अपेक्षा से कथन करना चाहिए।

17. The same should be repeated for *paramanu-pudgals* with single units of (different) colour, smell, taste and touch and so on up to *paramanu-pudgals* with infinite units of coarse (*ruksha*) touch

१८. एवं सुहुमपरिणए पोग्गले।

१८. इसी प्रकार सूक्ष्म-परिणत (सूक्ष्म-परिणामी) पुद्गल के सम्बन्ध मे कहना चाहिए।

18. The same should be repeated for minute (*sukshma*) matter

१९. एवं बादरपरिणए पोग्गले।

१९. इसी प्रकार बादर-परिणत स्थूल-परिणाम वाले पुद्गल के सम्बन्ध मे कहना चाहिए।

19. The same should be repeated for gross (*baadar*) matter

२०. [प्र.] सद्दपरिणए णं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं।

२१. असद्दपरिणए जहा एगगुणकालए।

२०. [प्र.] भगवन् ! शब्दरूप मे परिणत पुद्गल काल की अपेक्षा से कब तक (शब्द-परिणत) रहता है ?

[उ] गौतम ! जघन्यत एक समय तक और उत्कृष्टत आवलिका के असख्येय भाग तक रहता है।

२१. जिस प्रकार एक गुण काले पुद्गल के विषय मे कहा है, उसी तरह अशब्द–परिणत पुद्गल की कालावधि के विषय मे कहना चाहिए।

20. [Q.] *Bhante* ! In terms of time how long does a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) turned into sound (*shabd*) exist (as sound) ?

[Ans.] Gautam ! It exists (in the same form) for a minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable fraction of *Avalika*

21. What has been stated about one unit of black colour should be repeated for matter not turned into sound

विवेचन पुद्गल का एक रूप मे अवस्थान सम्बन्धी नियम–उक्त सूत्रो का सार यह है कि–(१) **परमाणु**–परमाणु रूप मे अधिकतम असख्यात काल तक रह सकता है, उसके पश्चात् वह स्कन्ध रूप मे बदल जाता है। यही नियम स्कन्ध पर भी लागू होता है। (२) **गुणांश मे परिवर्तन**–वर्ण, गध, रस और स्पर्श मे पुद्गल के गुण है। काला वर्ण एक गुण (क्वालिटी - Quality) है, उसमे अनन्त गुणाश (Units-यूनिट्स) सम्भव हो सकते है। (३) **सकम्प–अकम्प–पुद्गल** सप्रकम्प अधिक समय तक नही रह सकता। वह जघन्य एक समय, उत्कृष्ट आवलिका का असख्यातवॉं भाग तक, जबकि अप्रकम्प जघन्य एक समय, उत्कृष्ट असख्यात काल तक रह सकता है। *(वृत्ति पत्राक २३५)*

Elaboration—Life of matter in one state—The gist of the aforesaid aphorisms is—(1) *Paramanu* (ultimate particle) remains in its free state as a *paramanu* for a maximum of immeasurable period after which it essentially turns into an aggregate (*skandh*) The same rule applies to *skandh* as well (2) Change in units of properties—colour, smell, taste and touch are attributes of matter Black colour is an attribute or a property and it can have one to infinite units (*gunamsh*) in terms of intensity (3) Vibrant and still—matter cannot remain in the state of vibration for a long period—only for a minimum of one *Samaya* and maximum of innumerable fraction of an *Avalika* Whereas in the state of non-vibration the range is minimum of one *Samaya* and maximum of immeasurable time *(Vritti, leaf 235)*

विविध पुद्गलो का अन्तरकाल **INTERVENING PERIOD OF RE-TRANSFORMATION**

२२. [प्र.] परमाणुपोग्गलस्स णं भंते अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं।

२२. [प्र] भगवन् ! परमाणु–पुद्गल का काल की अपेक्षा से कितना लम्बा अतर होता है? (अर्थात्–जो पुद्गल अभी परमाणु रूप है उसे अपना परमाणुपन छोडकर, स्कन्धादि रूप मे परिणत होने पर, तथा पुन उसे परमाणुपन प्राप्त करने मे कितने लम्बे काल का अन्तर (अन्तरकाल) होता है ?)

[उ.] गौतम ! जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असख्यात काल का अन्तर होता है।

22. [Q.] *Bhante* ! In terms of time what is the intervening period (of re-transformation) for a *paramanu-pudgal* (ultimate particle of matter) ? (In other words the time taken by a *paramanu* to turn into an aggregate and regain its state of *paramanu*.)

[Ans.] Gautam ! (The intervening period is—) A minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable period.

२३. [प्र.] दुप्पदेसियस्स णं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। एवं जाव अणंतपदेसिओ।

२३. [प्र.] भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध का काल की अपेक्षा से कितना लम्बा अन्तर होता है ?

[उ.] गौतम ! जघन्य एक समय और उत्कृष्टत अनन्तकाल का अन्तर होता है।

इसी तरह (त्रिप्रदेशिक स्कन्ध से लेकर) यावत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध तक कहना चाहिए।

23. [Q.] *Bhante* ! In terms of time what is the intervening period (of re-transformation) for an aggregate of two *pradeshas* (ultimate particles) ?

[Ans.] Gautam ! (The intervening period is—) A minimum of one *Samaya* and a maximum of infinite time.

Aggregate of three up to infinite space points.

२४. [प्र. १] एगपदेसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स सेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं।

२४. [प्र. १] भगवन् ! एकप्रदेशावगाढ सकम्प पुद्गल का अन्तर कितने काल का होता है ? (अर्थात्-एक आकाश-प्रदेश में स्थित सकम्प पुद्गल अपना कम्पन बंद करे, तो उसे पुनः कम्पन करने में-सकम्प होने में कितना समय लगता है ?)

[उ.] हे गौतम ! जघन्यतः एक समय का और उत्कृष्टतः असंख्येय काल का अन्तर होता है। (अर्थात्-वह पुद्गल जब कम्पन करता रुक जाये-अकम्प अवस्था को प्राप्त हो और फिर कम्पन प्रारम्भ करे-सकम्प बने तो उसका अन्तर कम से कम एक समय और अधिक से अधिक असंख्यात काल का है।)

24. [Q. 1] *Bhante* ! In terms of time what is the intervening period (of re-transformation) for a vibrating (*sakamp*) *paramanu-pudgal* occupying one space-point ? (In other words the time taken by a vibrating *paramanu* occupying one space-point to become still and restart vibrating.)

[Ans.] Gautam ! (The intervening period is—) A minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable period. (Which means that the time taken by a vibrating *paramanu* occupying one space-point to become still and restart vibrating is a minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable period.)

[२] एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढे।

[२] इसी तरह (द्विप्रदेशावगाढ सकम्प पुद्गल से लेकर) यावत् असख्यप्रदेशावगाढ तक का अन्तर कहना चाहिए।

[2] The same (about intervening period) should be repeated for (ultimate particle occupying two space-points) and so on up to occupying innumerable space-points

२५. [प्र. १] एगपदेसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स निरेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं।

[२] एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे।

२५. [प्र १] भगवन् ! एकप्रदेशावगाढ निष्कम्प पुद्गल का अन्तरकाल की अपेक्षा कितना होता है ?

[उ] गौतम ! जघन्य एक समय का और उत्कृष्ट आवलिका के असख्येय भाग का अन्तर होता है।

[२] इसी तरह (द्विप्रदेशावगाढ निष्कम्प पुद्गल से लेकर) यावत् असख्येयप्रदेशावगाढ तक कहना चाहिए।

25. [Q. 1] *Bhante* ! In terms of time what is the intervening period (of re-transformation) for a still or non-vibrating (*nishkamp*) *paramanu-pudgal* occupying one space-point ?

[Ans.] Gautam ! (The intervening period is—) A minimum of one *Samaya* and a maximum of innumerable fraction of an *Avalika*

[2] The same (about intervening period) should be repeated for (occupying two space-points) and so on up to occupying innumerable space-points

२६. वण्ण–गंध–रस–फास–सुहुमपरिणय–बादरपरिणयाणं एएसिं जंच्चेव संचट्ठिणा तं चेव अंतरं पि भाणियव्वं।

२६. वर्ण-गन्ध–रस-स्पर्शगत, सूक्ष्मपरिणत एव बादरपरिणत पुद्गलो का जो सस्थितिकाल (सचिट्ठणाकाल) कहा है, वही उनका अन्तरकाल समझना चाहिए।

26. The intervening period (*antar kaal*) with regard to colour, smell, taste and touch as well as minute (*sukshma*) and gross (*baadar*) form of matter should be stated to be same as respective period of existence (*samsthiti kaal*)

२७. [प्र.] सद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं।

२७. [प्र.] भगवन् ! शब्दपरिणत पुद्गल का अन्तरकाल की अपेक्षा कितना होता है?

[उ.] गौतम ! जघन्य एक समय का, उत्कृष्ट असख्येय काल का अन्तर होता है।

27. [Q.] *Bhante* ! What is the intervening period (of re-transformation) for a *paramanu-pudgal* turned into sound?

[Ans.] Gautam ! (The intervening period is—) A minimum of one *Samaya* and a maximum of immeasurable time

२८. [प्र.] असद्दपरिणयस्स ण भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

[उ.] गोयमा ! जहण्णेणं एग समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभागं।

२८. [प्र.] भगवन् ! अशब्दपरिणत पुद्गल का अन्तरकाल की अपेक्षा कितना होता है?

[उ.] गौतम ! जघन्य एक समय का और उत्कृष्ट आवलिका के असख्येय भाग का होता है।

28. [Q.] *Bhante* ! What is the intervening period (of re-transformation) for a *paramanu-pudgal* not turned into sound?

[Ans.] Gautam ! (The intervening period is—) A minimum of one *Samaya* and a maximum of innumerable fraction of an *Avalika*

स्थानायु का अल्प-बहुत्व MAXIMUM AND MINIMUM PERIOD OF EXISTENCE

२९. [प्र.] एयस्स णं भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स खेत्तट्ठाणाउयस्स ओगाहणट्ठाणाउयस्स भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असखेज्जगुणे।

खेत्तोगाहण-दव्वे भावट्ठाणाउयं च अप्पबहु।
खेत्ते सव्वत्थोवे सेसा ठाणा असंखगुणा॥१॥

२९. [प्र.] भगवन् ! द्रव्यस्थानायु, क्षेत्रस्थानायु, अवगाहनास्थानायु और भावस्थानायु, इन सबमे कौन, किससे कम, अधिक, तुल्य और विशेषाधिक है?

[उ.] गौतम ! सबसे कम क्षेत्रस्थानायु है, उससे अवगाहनास्थानायु असख्येयगुणा है, उससे द्रव्यस्थानायु असख्येयगुणा है और उससे भावस्थानायु असख्येयगुणा है।

गाथा का भावार्थ-क्षेत्रस्थानायु, अवगाहनास्थानायु, द्रव्यस्थानायु और भावस्थानायु, इनका अल्प-बहुत्व कहना चाहिए। इनमे क्षेत्रस्थानायु सबसे अल्प है, शेष तीन स्थानायु क्रमश असख्येयगुणा है।

29. [Q.] *Bhante* ! Which one of these periods is comparatively less, more, equal and much more—*dravya-sthaan-ayu* (period of existence as

matter), *kshetra-sthaan-ayu* (period of existence at a place), *avagahana-sthaan-ayu* (period of existence in a shape) and *bhaava-sthaan-ayu* (period of existence of properties) ?

[Ans.] Gautam ! Of these minimum is *kshetra-sthaan-ayu* (period of existence at a place), innumerable times more than that is *avagahana-sthaan-ayu* (period of existence in a shape), innumerable times more than that is *dravya-sthaan-ayu* (period of existence as matter), and innumerable times more than that is *bhaava-sthaan-ayu* (period of existence of properties)

Verse : To be stated is the comparative maximum and minimum of *kshetra-sthaan-ayu*, *avagahana-sthaan-ayu*, *dravya-sthaan-ayu* and *bhaava-sthaan-ayu* Of these minimum is *kshetra-sthaan-ayu* and following three are innumerable times more than the preceding in the said order

विवेचन द्रव्यस्थानायु आदि का स्वरूप—पुद्गल द्रव्य का परमाणु, द्विप्रदेशिकादि स्कन्ध आदि रूप मे अवस्थान रहने की आयु अर्थात् स्थिति **द्रव्यस्थानायु है**। एकप्रदेशादि क्षेत्र मे पुद्गलो का अवस्थान **क्षेत्रस्थानायु है**। इसी प्रकार पुद्गलो के आधार स्थलरूप एक प्रकार का आकार अवगाहना है, इस अवगाहित किये हुए परिमित क्षेत्र मे पुद्गलो का रहना **अवगाहना स्थानायु** है। द्रव्य के विभिन्न रूपो मे परिवर्तित होने पर भी द्रव्य के आश्रित श्यामत्व आदि गुणो का जो अवस्थान रहता है, उसे **भावस्थानायु** कहते है।

क्षेत्र व अवगाहना मे अन्तर · पुद्गल जहाँ रहता है, वह 'क्षेत्र' तथा ठहरे हुए पुद्गल का एक प्रकार आकार 'अवगाहना' है।

द्रव्यस्थानायु आदि के अल्प–बहुत्व का रहस्य—द्रव्यस्थानायु आदि चारो मे क्षेत्र (आकाश) अमूर्तिक होने से तथा उसके साथ पुद्गलो के बध का कारण 'स्निग्धत्व' न होने से पुद्गलो को क्षेत्रावस्थानकाल (अर्थात्–क्षेत्रस्थानायु) सबसे थोडा बताया है। एक क्षेत्र मे रहा हुआ पुद्गल दूसरे क्षेत्र मे चला जाता है, तब भी उसकी 'अवगाहना' वही रहती है, इसलिए क्षेत्रस्थानायु की अपेक्षा अवगाहनास्थानायु असख्यगुणा है। सकोच–विकासरूप अवगाहना बदल जाने पर भी द्रव्य दीर्घकाल तक रहता है, इसलिए अवगाहनास्थानायु की अपेक्षा द्रव्यस्थानायु असख्यगुणा है। सघात और भेद के कारण स्कन्ध की द्रव्य राशि मे अन्तर आ जाने पर भी भाव, वर्ण आदि गुणो की स्थिति चिरकाल तक बनी रहती है, सब गुणो का नाश नही होता, इसलिए द्रव्यस्थानायु की अपेक्षा 'भावस्थानायु' असख्यगुणा है। *(वृत्ति पत्राक २३५, हिन्दी विवेचन, भाग २, पृ ८८४)*

Elaboration—Definitions of dravya-sthaan-ayu etc.—The period of existence in any form of matter including *paramanu* (ultimate particle) and aggregates of two or more is called *dravya-sthaan-ayu* (period of existence as matter) The period of occupation of a specific area in space, such as a space-point is called *kshetra-sthaan-ayu* (period of existence at a place) In the same way, while occupying an area in space the matter

particles acquire a shape, the period of existence in that specific shape is called *avagahana-sthaan-ayu* (period of existence in a shape) Matter transforms into a variety of forms and shapes and still retains some properties, the period for which some specific property remains in existence is called *bhaava-sthaan-ayu* (period of existence of properties)

Difference between kshetra and avagahana—The area or place where matter exists is called *kshetra* and the shape in which it occupies space there is called *avagahana*

The reasons for comparative periods of existence—Of the said four *kshetra-sthaan-ayu* (period of existence at a place) is minimum because space is formless and adhesion is not the reason for its association with matter When matter shifts from one place to another it still retains its shape therefore *avagahana-sthaan-ayu* (period of existence in a shape) is innumerable times more than *kshetra-sthaan-ayu* Even when matter changes its shape it still exists as matter for a long period therefore *dravya-sthaan-ayu* (period of existence as matter) is innumerable times more than *avagahana-sthaan-ayu* On disintegrating although the shape and mass of matter changes many of its properties, such as colour, do not change, therefore *bhaava-sthaan-ayu* (period of existence of properties) is innumerable times more than *dravya-sthaan-ayu* *(Vritti, leaf 235, Hindi Commentary, part-2, p 884)*

नैरयिक आरंभी और परिग्रही SINFUL ACTIVITY AND POSSESSIVENESS OF INFERNAL BEINGS

३०. [प्र १] नेरइया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारभा णो अपरिग्गहा।

३०. [प्र. १] भगवन् ! क्या नैरयिक आरम्भ और परिग्रह से सहित होते है, अथवा अनारम्भी एव अपरिग्रही होते है ?

[उ] गौतम ! नैरयिक सारम्भ एव सपरिग्रह होते है, किन्तु अनारम्भी एव अपरिग्रही नही होते।

30. [Q. 1] *Bhante* ! Are the infernal beings equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) or are they without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings are equipped with faculties of action (*aarambh*; sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession). It is not that they are without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) ?

[प्र. २] से केणट्ठेणं जाव अपरिग्गहा ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया णं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, सचित्त–अचित्त–मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति; से तेणट्ठेणं तं चेव।

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से वे आरम्भयुक्त एव परिग्रह–सहित होते है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक पृथ्वीकाय का समारम्भ करते है, यावत् त्रसकाय का समारम्भ करते है, (इसलिए वे आरम्भयुक्त है) तथा उन्होने शरीर (ममत्वरूप से ग्रहण किये) है, कर्म (ज्ञानावरणीयादि कर्मवर्गणा के पुदगलरूप द्रव्यकर्म तथा राग- द्वेषादिरूप भावकर्म) परिगृहीत किये हुए है, और सचित्त, अचित्त एव मिश्र द्रव्य परिगृहीत किये (ममत्वपूर्वक ग्रहण किये) हुए है, इस कारण से गौतम ! नैरयिक परिग्रह -सहित है, किन्तु अनारम्भी और अपरिग्रही नही है।

[Q. 2] Why do you say that and so on up to it is not that they are without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings harm or destroy (*samarambh*) earth-bodied beings (*prithvikaya*) and so on up to mobile beings (*tras-kaya*) (therefore they are equipped with the faculty of action) Also, they have acquired bodies (with fondness), *karmas* (physical, like *karmic* particles such as knowledge obscuring and mental, like attachment and aversion) and living, non-living and mixed things (with fondness) Therefore, Gautam ! It is said that infernal beings are equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) It is not that they are without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*)

असुरकुमार आरंभी–परिग्रही **SINFUL ACTIVITY AND POSSESSIVENESS OF ASUR KUMARS**

३१. [प्र. १] असुरकुमारा णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?

[उ.] गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा।

३१. [प्र १] भगवन् ! असुरकुमार क्या आरम्भ एव परिग्रह–सहित होते है, अथवा अनारम्भी एव अपरिग्रही होते है ?

[उ] गौतम ! असुरकुमार भी सारम्भ एव सपरिग्रह होते है, किन्तु अनारम्भी एव अपरिग्रही नही होते।

31. [Q. 1] *Bhante* ! Are the Asur Kumars equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) or are they without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) ?

[Ans.] Gautam ! Asur Kumars are equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) It is not that they are without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*)?

[प्र. २] से केणट्ठेणं ?

[उ] गोयमा ! असुरकुमारा णं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहियाओ भवंति, असण–सयण–भंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, सचित्त–अचित्त–मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति; से तेणट्ठेणं तहेव। एवं जाव थणियकुमारा।

[प्र २] भगवन् ! असुरकुमार किस कारण से सारम्भ एव सपरिग्रह होते है ?

[उ] गौतम ! असुरकुमार पृथ्वीकाय से लेकर त्रसकाय तक का समारम्भ करते है, तथा उन्होने शरीर परिगृहीत किये हुए है, कर्म परिगृहीत किये हुए है, भवन परिगृहीत किये हुए है, वे देव -देवियो, पुरुष स्त्रियो, तिर्यञ्च–नर -मादाओ को परिगृहीत किये हुए है, तथा वे आसन, शयन, भाण्डमात्रक (बर्तन कासी आदि धातुओ के पात्र), एव विविध उपकरण परिगृहीत किये हुए है, एव सचित्त, अचित्त तथा मिश्र द्रव्य परिगृहीत किये हुए है। इस कारण से वे आरम्भयुक्त एव परिग्रह–सहित है, किन्तु अनारम्भी और अपरिग्रही नही है। इसी प्रकार (नागकुमार से लेकर) यावत् स्तनितकुमार तक कहना चाहिए।

[Q. 2] Why do you say that ?

[Ans.] Gautam ! Asur Kumars harm or destroy (*samarambh*) earth-bodied beings (*prithvikaya*) and so on up to mobile beings (*tras-kaya*) Also, they have acquired bodies, *karmas*, mansions, gods-goddesses, men-women, male and female animals, seats, beds, utensils and a variety of other equipment as well as living, non-living and mixed things (with fondness). Therefore, Gautam ! It is said that Asur Kumars are equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) It is not that they are without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) The same should be repeated for other divine beings (from Naag Kumars) up to Stanit Kumars

३२. एगिंदिया जहा नेरइया।

३२. नैरयिको के (सूत्र ३०) कथन की तरह ही एकेन्द्रियो के विषय मे कहना चाहिए।

32. What has been stated about infernal beings (aphorism 30) should be repeated for one-sensed beings

बेइन्द्रिय आदि आरंभी–परिग्रही **TWO-SENSED AND OTHER BEINGS**

३३. [प्र] बेइंदिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा० ?

[उ.] तं चेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवंति, बाहरिया भंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, सचित्त अचित्त भवंति एवं जाव चउरिंदिया।

३३. [प्र.] भगवन् ! द्वीन्द्रिय जीव क्या सारम्भ-सपरिग्रह होते है, अथवा अनारम्भी एव अपरिग्रही होते है ?

३३. [उ.] गौतम ! द्वीन्द्रिय जीव भी आरम्भ-परिग्रह से युक्त है, वे अनारम्भी-अपरिग्रही नही है, इसका कारण भी वही पूर्वोक्त है। (वे षट्काय का आरम्भ करते है) तथा यावत् उन्होने शरीर परिगृहीत किये हुए है, उनके बाह्य भाण्ड, मात्रक तथा विविध उपकरण परिगृहीत किये हुए होते है, एव सचित्त, अचित्त तथा मिश्र द्रव्य भी परिगृहीत किये हुए होते है। इसलिए वे अनारम्भी, अपरिग्रही नही होते। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवो के विषय मे जानना चाहिए।

33. [Q.] *Bhante* ! Are two-sensed beings (*dvindriya jivas*) equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) or are they without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) ?

[Ans.] Gautam ! Two-sensed beings (*dvindriya jivas*) too are equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) It is not that they are without these faculties (*anaarambh* and *aparigraha*) The reason for this is also same as aforesaid (They harm or destroy six classes of living beings) and so on up to they have acquired bodies, seats, beds, utensils and a variety of other equipment as well as living, non-living and mixed things (with fondness) Therefore, they are said to be equipped with the said faculties and not without them The same should be repeated for three-sensed and four-sensed beings

३४. [प्र.] **पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते० !**

[उ.] तं चेव जाव कम्मा परिग्गहिया भवंति, टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवंति, उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-वप्पिणा परिग्गहिया भवंति, अगड-तडाग-दह-नइओ वावि-पुक्खरिणी-दीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ परिग्गहियाओ भवंति, आराम-उज्जाणा काणणा वणाइं वणसंडाइं वणराईओ परिग्गहियाओ भवंति, देवउल-सभा-पवा-थूभ खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवंति, पागारऽट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवंति, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणा परिग्गहिया भवंति, सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-महापहा परिग्गहिया भवंति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवंति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छुया परिग्गहिया भवंति, भवणा-परिग्गहिया भवंति, देव देवीओ मणुस्सा चित्ताचित्त मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया

तिरिक्खजोणिणीओ आसण–सयण–खंभ–भंड–सचित्ताचित्त–मीसियाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति; से तेणट्ठेणं०।

३४. [प्र] भगवन् ! पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव क्या आरम्भ-परिग्रहयुक्त है ?

[उ] गौतम ! पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव, आरम्भ-परिग्रहयुक्त है, क्योकि उन्होने शरीर यावत् कर्म परिगृहीत किये है तथा उनके **टक** (पर्वत से विच्छिन्न टुकडा या पहाड की ढलान), **कूट** (पर्वत की चोटी), **शैल** (शिखररहित पर्वत), **शिखरी** (चोटी वाले पर्वत), **प्राग्भार** (कुछ झुके पर्वत के प्रदेश) परिगृहीत होते है। इसी प्रकार जल, स्थल, बिल, गुफा, **लयन** (पहाड खोदकर बनाए हुए पर्वतगृह) भी परिगृहीत होते है। उनके द्वारा उज्झर (पर्वततट से नीचे गिरने वाला जलप्रपात), **निर्झर** (पर्वत से बहने वाला जलस्रोत-झरना), **चिल्लल** (कीचड मिला हुआ पानी या जलाशय), **पल्लल** (प्रह्लाददायक जलाशय) तथा **वप्रीण** (क्यारियो वाला जलस्थान अथवा तटप्रदेश) परिगृहीत होते है। उनके द्वारा कूप, **तड़ाग** (तालाब), **द्रह** (झील या जलाशय), नदी, **वापी** (चौकोन बावडी), **पुष्करिणी** (गोल बावडी या कमलो से युक्त बावडी), **दीर्घिका** (हौज या लम्बी बावडी), सरोवर, **सरपंक्ति** (सरोवर श्रेणी), **सरसरपंक्ति** (एक सरोवर से दूसरे सरोवर मे पानी जाने का नाला), एव **बिलपंक्ति** (बिलो की श्रेणी) परिगृहीत होते है तथा **आराम** (लतामण्डल आदि से सुशोभित आमोद-प्रमोद का स्थान), **उद्यान** (सार्वजनिक बगीचा), **कानन** (सामान्य वृक्षो से युक्त ग्राम के निकटवर्ती वन), **वन** (गाँव से दूर स्थित जगल), **वनखण्ड** (एक ही जाति के वृक्षो से युक्त वन), **वनराजि** (वृक्षो की पक्ति), ये सब परिगृहीत किये हुए होते है। फिर देवकुल (देवमदिर), सभा, आश्रम, **प्रपा** (प्याऊ), **स्तूभ** (खम्भा या स्तूप), खाई, **परिखा** (ऊपर और नीचे समान खोदी हुई खाई), ये भी परिगृहीत किये होते है, तथा **प्राकार** (किला), **अट्टालक** (अटारी या किले पर बनाया हुआ मकान अथवा झरोखा), **चरिका** (घर और किले के बीच मे हाथी आदि के जाने का मार्ग), द्वार, **गोपुर** (नगरद्वार), ये सब परिगृहीत किये होते है। इनके द्वारा **प्रासाद** (देवभवन या राजमहल), घर, **सरण** (झोपडा), लयन, **आपण** (दुकान) परिगृहीत किये जाते है। **शृङ्गाटक** (सिघाडे के आकार का /\ त्रिकोण मार्ग), **त्रिक** (तीन मार्ग मिलते है, ऐसा स्थान), **चतुष्क** (चौक-जहाँ चार मार्ग [] मिलते है), **चत्वर** (जहाँ सब मार्ग मिलते हो ऐसा स्थान या आँगन), **चतुर्मुख** (चार द्वारो वाला मकान या देवालय), **महापथ** (राजमार्ग या चौडी सडक) परिगृहीत होते है। **शकट** (गाडी), रथ, **यान** (सवारी या वाहन), **युग्य** (युगल हाथ प्रमाण एक प्रकार की पालखी), **गिल्ली** (अम्बाडी), **थिल्ली** (घोडे का पलान काठी), **शिविका** (पालखी या डोली), **स्यन्दमानिका** (म्याना या सुखपालकी) आदि परिगृहीत किये होते है। **लोही** (लोहे की दाल-भात पकाने की देगची या तवा), लोहे की कडाही, कुडछी आदि आदि चीजे परिग्रहरूप मे गृहीत होती है। इनके द्वारा **भवन** (भवनपति देवो के निवास-स्थान) भी परिगृहीत होते है। (इनके अतिरिक्त) देव देवियाँ मनुष्य-नर नारियाँ एव तिर्यंच नर मादाएँ, आसन, शयन, **खण्ड** (टुकडा), **भाण्ड** (बर्तन या किराने का सामान) एवं सचित्त, अचित्त और मिश्र द्रव्य परिगृहीत होते है। इस कारण से ये पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक जीव आरम्भ और परिग्रह से युक्त होते है, किन्तु अनारम्भी अपरिग्रही नही होते।

34. [Q.] *Bhante* ! Are five-sensed animals (*panchendriya tiryagyonik jivas*) equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession)?

[Ans.] Gautam ! Five-sensed animals (*panchendriya tiryagyonik jivas*) are equipped with faculties of action (*aarambh*, sinful activity) and acquisition (*parigraha*, possession) This is because they have acquired bodies and *karmas* Also they acquire *tank* (a mountain with one face broken or straight), *koot* (peak or pinnacle), *shail* (flat-top mountain), *shikhari* (mountain with a peak), *pragbhar* (leaning mountain, mountain with an overhang) In the same way they also acquire water, land, hole or burrow, cave, and *layan* (a dugout or cave on a hill) They acquire *ujjhar* (waterfall), *nirjhar* (mountain stream), *chillal* (a turbid pond), *pallal* (a delightful lake), *vapreen* (estuary or a water body with gullies) They acquire *koop* (well), *tadag* (pond), *draha* (lake), river, *vapi* (*bavadi* or rectangular reservoir), *pushkarini* (lake or pond with lotuses), *dirghika* (large lake), *sarovar* (natural lake), *sar-pankti* (row of lakes), *sar-sar-pankti* (row of lakes connected with canals), and *bil-pankti* (row of narrow wells or water-pits) They also acquire *aram* (pleasure garden), *udyan* (public parks with a variety of flowering plants and fruit trees), *kanan* (jungle near a town or village), *van* (forest away from town or village), *van-khand* (forest with similar flora), and *van-raji* (forest with rows upon rows of trees) They acquire *devakul* (temples), *sabha* (assembly hall), *ashram* (hermitage), *prapa* (water-hut), *stupa* (a memorial pillar or mound), *khatika* (trench or gully), *parikha* (a moat or trench with narrow bottom and wide top) They also acquire *prakar* (parapet wall), *attalak* (bastion on a rampart), *charika* (an eight cubit wide pathway between moat and rampart), *dvar* (door), and *gopur* (main gate of entrance into a town) They acquire *prasad* (palace), *ghar* (house), *saran* (thatched hut), *layan* (a dugout or cave on a hill), *apan* (shop or marketplace) They acquire *shringatak* (a triangular marketplace), *trik* (meeting point of three roads), *chatushk* (meeting point of four roads), *chatvar* (a square, court, circus, or plaza), *chaturmukh* (a temple with gates on all four sides), and *mahapath* (highway) They also acquire *shakat* (bullock-cart), *rath* (chariot), *yan* (vehicle), *yugya* (palanquin), *gilli* (howda or a seat on elephant's back), *thilli* (a coach driven by two horses), *shivika* (covered palanquin), and *syandamanika* (a palanquin as long as a man) They acquire *lohi* (a steel pan or concave platen),

lohakatah (steel cauldron), *kadachi* (serving spoons) and other such equipment They also acquire mansions as well as gods-goddesses, men-women, male and female animals, *asan* (seat), *shayan* (bed), *khambh* (pillar), *bhand* (earthen pots and grocery), as well as living, non-living and mixed things Therefore, they are said to be equipped with the said faculties and not without them

३५. जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा।

३५. जिस प्रकार तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय जीवो के (सारम्भ सपरिग्रह होने के) विषय मे कहा, उसी प्रकार मनुष्यो के विषय मे भी कहना चाहिए।

35. What has been stated (with regard to action and possession) about five-sensed animals (*panchendriya tiryagyonik jivas*) should be repeated for human beings

३६. वाणमंतर–जोइस–वेमाणिया तहा नेयव्वा।

३६. जिस प्रकार भवनवासी देवो के विषय मे (सूत्र ३१) मे कहा, वैसे ही वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवो के (आरम्भ परिग्रहयुक्त होने के) विषय मे कहना चाहिए।

36. What has been stated (with regard to action and possession) about abode dwelling gods (aphorism 31) should be repeated for interstitial (Vanavyantar), stellar (Jyotishk) and celestial-vehicular (Vaimanik) gods

विवेचन चौबीस दण्डको के जीवो के आरम्भ–प्रस्तुत सात सूत्रो (सू ३० से ३६ तक) मे परिग्रहयुक्त होने की सहेतुक प्ररूपणा की गई है।

आरम्भ और परिग्रह का हेतु–स्थानागसूत्र मे तीन प्रकार का परिग्रह बताया है–शरीर, कर्म तथा उपधि (सचित्त-अचित्त पौद्‌गलिक द्रव्य)। सामान्य रूप मे ससारी जीव परिग्रहयुक्त होते है। (यद्यपि एकेन्द्रिय आदि जीव आरम्भ करते व परिग्रहयुक्त होते दिखाई नही देते, तथापि जब तक जीव द्वारा मन–वचन–काय से स्वेच्छा से आरम्भ एव परिग्रह का प्रत्याख्यान नही किया जाता, तब तक आरम्भ और परिग्रह का दोष लगता ही है, इस दृष्टि से उन्हे आरम्भ–परिग्रहयुक्त कहा गया है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय प्राणियो के भी सिद्धान्तानुसार शरीर, कर्म एव कुछ सम्बन्धित उपकरणो का परिग्रह होता है और उनके द्वारा अपने खाद्य, शरीर रक्षा आदि कारणो से आरम्भ भी होता है। तिर्यंचपचेन्द्रिय जीवो, मनुष्यो, नारको तथा समस्त प्रकार के देवो के द्वारा आरम्भ और परिग्रह मे लिप्तता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि मनुष्यो मे वीतराग पुरुष, केवली तथा निर्ग्रन्थ साधु-साध्वी आरम्भ परिग्रह से मुक्त होते है, किन्तु यहाँ समग्र मनुष्य जाति की अपेक्षा से मनुष्य को सारम्भ-सपरिग्रह बताया गया है। *(वृत्ति पत्राक २३२)*

Elaboration—Sinful activities of twenty four places of suffering (Dandak)—Aforesaid seven aphorisms (30-36) inform that living beings in all *Dandaks* indulge in sinful activities and possession

The cause—*Sthananga Sutra* mentions three kinds of *parigraha* (possession)—*Sharira* (body), *Karma*, and *Upadhi* (living and non-living things) Worldly beings are generally with possessions Although one-sensed beings do not appear to be active or acquisitive, they are said to be so because in principle, as long as one does not renounce action and possessions formally and voluntarily by mind, speech, and action, he is liable to the faults of action and acquisition Two, three and four-sensed beings are also said to possess body, *karmas* and some necessary equipment, they also indulge in action for food and security Five sensed animals, human beings, infernal beings and all kinds of divine beings visibly indulge in action and acquisition There are certain individuals like detached persons, *Kevalis* and ascetics who are free of action and acquisition but they are exceptions In general human beings are said to indulge in action and acquisition *(Vritti leaf 232)*

हेतु–अहेतु HETU-AHETU

३७. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउं जाणति, हेउ पासति, हेउं बुज्झति, हेउं अभिसमागच्छइ, हेउं छउमत्थमरणं मरइ।

३७. हेतु के पाँच प्रकार है, यथा-(१) हेतु को जानता है, (२) हेतु को देखता (सामान्य रूप से जानता) है, (३) हेतु का बोध प्राप्त करता–तात्त्विक श्रद्धान करता है, (४) हेतु का अभिसमागम–अभिमुख होकर सम्यक् रूप से प्राप्त करता है, और (५) हेतुयुक्त छद्मस्थमरण मरता है।

37. *Hetu* (cause/who knows cause) is of five kinds—(1) does (properly) know *hetu*, (2) does (properly) see *hetu*, (3) does have (proper) understanding of and faith on *hetu*, (4) does (properly) accept and imbibe *hetu* and (5) embraces death of a *chhadmasth* with *hetu*

३८. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउणा जाणति जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरति।

३८. पाँच हेतु (प्रकारान्तर से) कहे है। यथा–(१) हेतु (अनुमान) द्वारा (अनुमेय को) जानता है, (२) हेतु (अनुमान) से देखता (सामान्य ज्ञान करता) है, (३) हेतु द्वारा (वस्तु–तत्त्व को सम्यक् जानकर) श्रद्धा करता है, (४) हेतु द्वारा सम्यक्तया प्राप्त करता है, और (५) हेतु से (अध्यवसायादि) छद्मस्थमरण मरता है।

38. Alternatively *hetu* (cause/who knows cause) is of five kinds—(1) does (properly) know through *hetu*, (2) does (properly) see through *hetu*, (3) does have (proper) understanding of and faith through *hetu*, (4) does (properly) accept and imbibe through *hetu* and (5) embraces death of a *chhadmasth* through *hetu* (endeavour)

३९. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउं न जाणइ जाव हेउं अण्णाणमरणं मरति।

४०. पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा–हेउणा ण जाणति जाव हेउणा अण्णाणमरणं मरति।

३९ पाँच हेतु (मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा से) कहे है। यथा-(१) हेतु को नही जानता, (२) हेतु को नही देखता, (३) हेतु की बोधप्राप्ति (श्रद्धा) नही करता, (४) हेतु को प्राप्त नही करता, और (५) हेतुयुक्त अज्ञानमरण मरता है।

४०. पाँच हेतु कहे है। यथा-(१) हेतु से नही जानता, यावत् (५) हेतु से अज्ञानमरण मरता है।

39 *Hetu* (cause/who knows cause) is of five kinds (in context of unrighteous standpoint)—(1) does not (properly) know *hetu*, (2) does not (properly) see *hetu*, (3) does not have (proper) faith on *hetu*, (4) does not (properly) accept *hetu* and (5) embraces death of an ignorant with *hetu*

40. *Hetu* (cause/who knows cause) is of five kinds—(1) does not (properly) know through *hetu* and so on up to (5) embraces death of an ignorant through *hetu*

४१. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा–अहेउं जाणइ जाव अहेउं केवलिमरणं मरइ।

४२. पंच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा–अहेउणा जाणइ जाव अहेउणा केवलिमरण मरइ।

४३. पच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा–अहेउ न जाणइ जाव अहेउ छउमत्थमरणं मरइ।

४४. पच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा–अहेउणा न जाणइ जाव अहेउणा छउमत्थमरण मरइ।

सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति०।

॥ पंचमसए : सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥

४१. पाँच अहेतु कहे है (१) अहेतु को जानता है, यावत् (५) अहेतुयुक्त केवलिमरण मरता है।

४२. पाँच अहेतु कहे है-(१) अहेतु द्वारा जानता है, यावत् (५) अहेतु द्वारा केवलिमरण मरता है।

४३. पाँच अहेतु कहे है-(१) अहेतु को नही जानता, यावत् (५) अहेतुयुक्त छद्मस्थमरण मरता है।

४४. पाँच अहेतु कहे है (१) अहेतु से नही जानता, यावत् (५) अहेतु से छद्मस्थमरण मरता है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, यो कहकर यावत् श्री गौतम स्वामी विचरण करते है।

41. *Ahetu* (non-cause) is of five kinds—(1) does know *ahetu*, (2) does see *ahetu* and so on up to (5) embraces death of a *Kevali* with *ahetu*

42. *Ahetu* is of five kinds—(1) does know through *ahetu* and so on up to (5) embraces death of a *Kevali* through *ahetu*

43. *Ahetu* (non-cause) is of five kinds—(1) does not know *ahetu* and so on up to (5) embraces death of a *chhadmasth* with *ahetu*

44. *Ahetu* is of five kinds—(1) does not know through *ahetu* and so on up to (5) embraces death of a *chhadmasth* through *ahetu*

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन हेतु–अहेतु सूत्रो का रहस्य–प्रस्तुत आठ सूत्रो मे से प्रारम्भ के चार सूत्र छद्‌मस्थ की अपेक्षा से और बाद के चार सूत्र केवली की अपेक्षा से कहे है। 'हेतु' का अर्थ है साध्य की सिद्धि का निश्चित साधन। छद्मस्थ परोक्ष ज्ञानी है, अत वह हेतु द्वारा जानता है। केवली प्रत्यक्ष ज्ञानी है, उन्हे हेतु की जरूरत नही है। पहले के चार सूत्रो मे से पहला–दूसरा (३७–३८) सूत्र सम्यग्दृष्टि छद्‌मस्थ की अपेक्षा से और तीसरा–चौथा (३९–४०) सूत्र मिथ्यादृष्टि छद्‌मस्थ की अपेक्षा से है। इन दो–दो सूत्रो मे अन्तर यह है कि प्रथम दो प्रकार के व्यक्ति छद्‌मस्थ होने से साध्य का निश्चय करने के लिए हेतु को अथवा 'हेतु' से सम्यक् जानते है और सम्यग्दृष्टि छद्‌मस्थ का मरण हेतुपूर्वक या हेतु से समझकर होता है, अज्ञानमरण नही होता, जबकि आगे के दो सूत्रो से मिथ्यादृष्टि छद्‌मस्थ हेतु को सम्यक्तया नही जानता–देखता, न ही सम्यक् श्रद्धा करता है, न वह हेतु का सम्यक् प्रयोग करके वस्तुतत्त्व को प्राप्त करता है और मिथ्यादृष्टि छद्‌मस्थ होने के नाते सम्यग्ज्ञान न होने से अज्ञानमरणपूर्वक मरता है।

आगे के चार सूत्रो मे से दो सूत्रो मे केवलज्ञानी की अपेक्षा से कहा गया है कि केवलज्ञानी प्रत्यक्षज्ञानी होने से उन्हे हेतु की अथवा हेतु द्वारा जानने (अनुमान करने) की आवश्यकता नही रहती। केवलज्ञानी स्वय 'अहेतु' (प्रत्यक्षद्रष्टा) कहलाते है। अत अहेतु से ही वे जानते–देखते है, अहेतु प्रयोग से ही वे क्षायिक सम्यग्दृष्टि होते हैं, इसलिए पूर्ण श्रद्धा करते है, वस्तुतत्त्व का निश्चय भी अहेतु से करते है और वे अहेतु से यानी बिना किसी उपक्रम–हेतु से नहीं मरते है चूँकि, वे निरुपक्रमी होने से किसी भी निमित्त से मृत्यु नही पाते, इसलिए अहेतु केवलीमरण है उनका।

सातवाँ और आठवाँ सूत्र अवधिज्ञानी, मन पर्यायज्ञानी छद्‌मस्थ की अपेक्षा से है–वे अहेतु व्यवहार करने वाले जीव सर्वथा अहेतु से नही जानते, अपितु कथचित् जानते है, कथचित् नही जानते–देखते। अध्यवसानादि (राग–द्वेष) उपक्रम कारण न होने से अहेतुमरण, किन्तु छद्‌मस्थमरण (केवलिमरण नही) होता है। अज्ञानमरण सहेतुक है, छद्मस्थमरण सहेतुक–अहेतुक दोनो प्रकार का हो सकता, केवलीमरण अहेतुक ही होता है। *(वृत्ति पत्राक २३५)*

॥ पचम शतक . सप्तम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Of the eight aforesaid aphorisms first four are in context of a *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) and last four are in context of a *Kevali* (omniscient) *Hetu* means causative phrase or statement that proves a point *Chhadmasth* is a *paroksh jnani* (who perceives indirectly), therefore he sees and knows things through *hetu* (cause) *Kevali* is a *pratyaksh jnani* (who perceives directly), he is not dependent on *hetu* (cause) First two of the

first four aphorisms (37, 38) are about *samyagdrishti* (righteous) *chhadmasth* and the last two (39, 40) are about *mithyadrishti* (unrighteous) *chhadmasth* The difference between these two sets is that the first set of two is about people who are righteous *chhadmasth* and arrive at the conclusion by knowing the cause or know the truth through cause A righteous (*samyagdrishti*) *chhadmasth* embraces death after knowing the cause or through cause, it is never out of ignorance. The following set of two is about unrighteous (*mithyadrishti*) *chhadmasth* who does not rightly know, see, or have faith in the cause, thus he does not acquire the reality by right application Being an unrighteous *chhadmasth* he is devoid of right knowledge and therefore he embraces an ignorant's death

The first two of the following four aphorisms are about *Keval Jnani* (omniscient) An omniscient has direct perception, he has no need of cause or acquiring knowledge through cause That is why he is called *ahetuk* or free of cause (one having direct perception) He rightly knows, sees, or has faith in *ahetu* (cause-free perception), through application of *ahetu* (cause-free perception) he acquires the right perception leading to destruction of *karmas* (*kshayik samyaktva*) and thus he has complete faith in *ahetu* (cause-free perception) and acquires the reality through *ahetu* Being free of cause, he does not die due to some cause but embraces *ahetuk* death (without cause or timely death)

The last two aphorisms are about *Avadhi Jnani* and *Manah-paryav Jnani* Although they fall in the cause-free category their knowledge is not completely cause-free, it is partly caure-free and partly not As they are free of indulgence (attachment and aversion) they embrace cause-free death but it is *chhadmasth maran* (non-omniscient death) Ignorant death is with cause, *chhadmasth* death is both with and without cause and omniscient death is without cause *(Vritti, leaf 235)*

● END OF THE SEVENTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : अष्टम उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : EIGHTH LESSON

निर्ग्रन्थ NIRGRANTH (ASCETIC)

निर्ग्रन्थीपुत्र और नारदपुत्र की चर्चा **DISCUSSIONS OF NIRGRINTHIPUTRA AND NARAD-PUTRA**

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नारयपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विहरइ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नियंठिपुत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विहरइ।

१. उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर पधारे। परिषद् दर्शन के लिये गई, यावत् धर्मोपदेश श्रवण कर वापस लौट गई। उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर के अन्तेवासी (शिष्य) नारदपुत्र नाम के अनगार थे। वे प्रकृतिभद्र थे, यावत् आत्मा को भावित करते विचरते थे।

२. उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर के अन्तेवासी निर्ग्रन्थीपुत्र नामक अनगार थे। वे प्रकृति से भद्र थे, यावत् विचरण करते थे।

1. During that period of time Bhagavan Mahavir arrived People came out *Bhagavan* gave his sermon People dispersed During that period of time there was an ascetic disciple of Bhagavan Mahavir whose name was Narad-putra By nature he was noble (*bhadra*). and so on up to he moved about enkindling (*bhaavit*) his soul

2. During that period of time there was an ascetic disciple of Bhagavan Mahavir whose name was Nirgranthiputra By nature he was noble (*bhadra*) and so on up to he moved about enkindling (*bhaavit*) his soul

३. [प्र.] तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी–सव्वपोग्गला ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपदेसा ? उदाहु अणड्ढा समज्झा अपएसा ?

[उ.] 'अज्जो' त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी–सव्वपोग्गला ते अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा।

३. [प्र.] एक बार निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार, जहाँ नारदपुत्र नामक अनगार थे, वहाँ आए और उनके पास आकर उन्होंने नारदपुत्र अनगार से इस प्रकार पूछा-"हे आर्य ! तुम्हारे मतानुसार सब पुद्गल क्या सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, अथवा अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश है ?"

[उ] 'हे आर्य !' इस प्रकार सम्बोधित कर नारदपुत्र अनगार ने निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार से कहा– "आर्य ! मेरे मतानुसार सभी पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, किन्तु अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश नही है।"

3. [Q.] Once ascetic Nirgranthiputra came where ascetic Narad-putra was seated Coming there he asked ascetic Narad-putra—"O noble one ! In your view are all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) or without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ?

[Ans.] "O noble one !" Addressing thus ascetic Narad-putra replied to ascetic Nirgranthiputra—"O noble one ! In my view all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), and not without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*)

४. [प्र] तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी–जइ णं ते अज्जो ! सव्व पोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा; किं दव्वादेसेणं अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा ? खेत्तादेसेणं अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा ? तह चेव। कालादेसेणं० तं चेव ? भावादेसेणं० तं चेव ?

[उ] तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी–दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपदेसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा, खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा०; तह चेव कालादेसेण वि; तं चेव भावादेसेण वि।

४. [प्र] तत्पश्चात् उन निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार ने नारदपुत्र अनगार से यो कहा– "हे आर्य ! यदि तुम्हारे मतानुसार सभी पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश नही है, तो क्या, हे आर्य ! द्रव्यादेश (द्रव्य की अपेक्षा) से वे सर्वपुदगल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, किन्तु अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश नही है ? अथवा हे आर्य ! क्या क्षेत्रादेश से भी पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश आदि पूर्ववत् है ? या कालादेश से सभी पुद्गल उसी प्रकार है या भावादेश से समस्त पुद्गल उसी प्रकार है ?"

[उ.] तदनन्तर वह नारदपुत्र अनगार, निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार से यो कहने लगे– "हे आर्य ! मेरे मतानुसार (विचार मे), द्रव्यादेश से भी सभी पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, किन्तु अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश नही है। क्षेत्रादेश से भी सभी पुद्गल सार्द्ध, समध्य आदि उसी तरह है, कालादेश से भी वे सब उसी तरह है, तथा भावादेश से भी उसी प्रकार है।"

4. [Q.] Then ascetic Nirgranthiputra asked ascetic Narad-putra—"O Noble one ! If in your view all *pudgalas* (particles of matter and their

aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), and not without halves (*an-ardh*), without a middle (a-madhya) and without sections (*a-pradesh*), then O noble one ! in context of substance (*dravyadesh*) are all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*), and with sections (*sa-pradesh*) and not without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ? Also, O noble one ! In context of area (*kshetradesh*) also are all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*), and with sections (*sa-pradesh*) etc ? Also, does the same hold good for all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) in context of time (*kaaladesh*) as well as in context of state (*bhaavadesh*) ?

[Ans.] Ascetic Narad-putra replied to ascetic Nirgranthiputra—"O noble one ! In my view, in context of substance (*dravyadesh*) all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), and not without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) In context of area (*kshetradesh*) also all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) etc The same also holds good for all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) in context of time (*kaaladesh*) as well as in context of state (*bhaavadesh*)

५. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी–जइ णं अज्जो ! दव्वादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा; एवं ते परमाणुपोग्गले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, णो अणड्ढे अमज्झे अपएसे; जइ णं अज्जो ! खेत्तादेसेणवि सव्वपोग्गला स अड्ढा समज्झा सपएसा एवं ते एगपएसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे; जइ णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा; एवं ते एगसमयठिइ वि पोग्गले स अड्ढे, समज्झे, सपएसे तं चेव जइ णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा एवं ते एगगुणकालए वि पोग्गले सअड्ढे ३ तं चेव; अह ते एवं न भवइ, तो जं वदसि दव्वादेसेण वि सव्वपोग्गला सअउड्ढा, समज्झा सपदेसा नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा, एवं खेत्तादेसेण वि, कालादेसेणवि, भावादेसेण वि तं णं मिच्छा।

५. इस पर निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार ने नारद पुत्र अनगार से इस प्रकार प्रतिप्रश्न किया–"हे आर्य ! तुम्हारे मतानुसार द्रव्यादेश से सभी पुद्गल यदि सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, तो क्या तुम्हारे मतानुसार परमाणुपुद्गल भी इसी प्रकार सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, किन्तु अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश नही है ? और हे आर्य ! क्षेत्रादेश से भी यदि सभी पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है तो तुम्हारे मतानुसार एकप्रदेशावगाढ पुद्गल भी सार्द्ध, समध्य एव सप्रदेश होने चाहिए ! और फिर हे

आर्य ! यदि कालादेश से भी समस्त पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, तो तुम्हारे मतानुसार एक समय की स्थिति वाला पुद्गल भी सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश होना चाहिए। इसी प्रकार भावादेश से भी हे आर्य ! सभी पुद्गल यदि सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, तो तदनुसार एकगुण काला पुद्गल भी तुम्हे सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश मानना चाहिए। यदि आपके मतानुसार ऐसा नही है, तो फिर आपने जो यह कहा था कि द्रव्यादेश से भी सभी पुद्गल सार्द्ध, समध्य और सप्रदेश है, क्षेत्रादेश से भी उसी तरह है, कालादेश से और भावादेश से भी उसी तरह है, किन्तु वे अनर्द्ध, अमध्य और अप्रदेश नही है, इस प्रकार का आपका यह कथन मिथ्या हो जाता है।''

5. At this ascetic Nirgranthiputra further asked ascetic Narad-putra—"O noble one ! If in your view, in context of substance (*dravyadesh*), all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), then in your view is ultimate particle of matter (*paramanu pudgala*) too with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), and not without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) ? And, O noble one ! If in your view, in context of area (*kshetradesh*), all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), then in your view matter occupying one space point should also be with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) And then, O noble one ! If in context of time (*kaaladesh*), all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), then in your view matter with an existence of one Samaya should also be with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) In the same way, O noble one ! If in context of state (*bhaavadesh*), all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), then in your view matter with one unit of blackness should also be with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*) However, if in your opinion it is not so then your assertion that in context of substance (*dravyadesh*) all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) are with halves (*sa-ardh*), with a middle (*sa-madhya*) and with sections (*sa-pradesh*), the same also holds good for all *pudgalas* (particles of matter and their aggregates) in context of area (*kshetradesh*), in context of time (*kaaladesh*) as well as in context of state (*bhaavadesh*), but not without halves (*an-ardh*), without a middle (*a-madhya*) and without sections (*a-pradesh*) becomes wrong

६. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासि--नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणाओ--पासामो, जइ णं देवाणुप्पिया ! नो गिलायंति परिकहित्तए तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाणित्तए।

६. [**जिज्ञासा**] तब नारदपुत्र अनगार ने निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार से इस प्रकार कहा-"हे देवानुप्रिय ! निश्चय ही हम इस अर्थ (तथ्य) को नहीं जानते-देखते (अर्थात्-इस विषय का ज्ञान और दर्शन हमे नहीं है)। हे देवानुप्रिय ! यदि आपको इस अर्थ के परिकथन-(स्पष्टीकरणपूर्वक कहने) मे किसी प्रकार की ग्लानि, (ऊब या अप्रसन्नता) न हो तो मै आप देवानुप्रिय से इस अर्थ को सुनकर, अवधारणापूर्वक जानना चाहता हूँ।"

6. [Question] At this ascetic Narad-putra said to ascetic Nirgranthiputra—"O Beloved of gods ! I certainly do not know or understand this matter Beloved of gods ! If it is not inconvenient to you, I would like to know and understand this matter from you."

७. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी--दव्वादेसेण वि मे अज्जो सव्वपोग्गला सपदेसा वि अपदेसा वि अणंता। खेत्तादेसेण वि एवं चेव। कालादेसेण वि एवं चेव। भावादेसेण वि एवं चेव।

जे दव्वओ अपदेसे से खेत्तओ नियमा अपदेसे, कालओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे, भावओ सिय सपदेसे, सिय अपदेसे।

जे खेत्तओ अपदेसे से दव्वओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे, कालओभयणाए, भावओ भयणाए। जहा खेत्तओ एवं कालओ, भावओ।

जे दव्वओ सपदेसे से खेत्तओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे, एवं कालओ भावओ वि।

जे खेत्तओ सपदेसे से दव्वओ नियमा सपदेसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए। जहा दव्वओ तहा कालओ भावओ वि।

७. [**समाधान**] इस पर निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार ने नारदपुत्र अनगार से इस प्रकार समाधान किया-"हे आर्य ! मेरी धारणानुसार द्रव्यादेश से भी पुद्‌गल सप्रदेश भी है, अप्रदेश भी है और वे पुद्‌गल अनन्त है। क्षेत्रादेश से भी इसी तरह है और कालादेश से तथा भावादेश से भी वे इसी तरह है।

जो पुद्‌गल द्रव्यादेश से अप्रदेश है, वे क्षेत्रादेश से भी नियमत (निश्चित रूप से) अप्रदेश है। कालादेश से उनमे से कोई सप्रदेश होते है, कोई अप्रदेश होते है और भावादेश से भी कोई सप्रदेश तथा कोई अप्रदेश होते हैं।

जो पुद्‌गल क्षेत्रादेश से अप्रदेश होते है, उनमे कोई द्रव्यादेश से सप्रदेश और कोई अप्रदेश होते है, कालादेश और भावादेश से इसी प्रकार की भजना (कोई सप्रदेश और कोई अप्रदेश) जानना चाहिए। जिस प्रकार क्षेत्र (क्षेत्रादेश) से कहा, उसी प्रकार काल से और भाव से भी कहना चाहिए।

जो पुद्गल द्रव्य से सप्रदेश होते है, वे क्षेत्र से कोई सप्रदेश और कोई अप्रदेश होते है, इसी प्रकार काल से और भाव से भी वे सप्रदेश और अप्रदेश समझ लेने चाहिए।

जो पुद्गल क्षेत्र से सप्रदेश होते है, वे द्रव्य से नियमत (निश्चित ही) सप्रदेश होते है, किन्तु काल से तथा भाव से भजना से (विकल्प से-कदाचित् सप्रदेश, कदाचित् अप्रदेश) जानना चाहिए। जैसे (सप्रदेशी पुद्गल के सम्बन्ध मे) द्रव्य से (द्रव्य की अपेक्षा से) कहा, वैसे ही काल से (कालादेश से) और भाव (भावादेश) से भी कथन करना चाहिए।

7. [Answer] Then ascetic Nirgranthiputra explained to ascetic Naradputra as follows—"Noble one! In my view, in context of substance (*dravyadesh*), *pudgalas* are with sections (*sa-pradesh*) as well as without sections (*a-pradesh*) and *pudgalas* are infinite The same is true in context of area, in context of time and also in context of state

Pudgalas that are without sections in context of substance are as a rule also without sections in context of area In context of time they are with sections sometimes and without sections sometimes In context of state also they are with sections sometimes and without sections sometimes

Pudgalas that are without sections in context of area are sometimes with sections and sometimes without sections in context of substance Same pattern follows in context of time as well as in context of state As has been said about *pudgalas* in context of area should be repeated for *pudgalas* in context of time and state

Pudgalas that are with sections in context of substance are sometimes with sections and sometimes without sections in context of area Same pattern follows in context of time as well as in context of state

Pudgalas that are with sections in context of area are as a rule also without sections in context of substance However, in context of time as well as state they are with sections sometimes and without sections sometimes As has been said about *pudgalas* in context of substance should be repeated for *pudgalas* in context of time and state

८. [प्र.] एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं खेत्तादेसेणं कालादेसेणं भावादेसेणं सपदेसाण य अपदेसाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपदेसा, कालादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं अपदेसा असंखेज्जगुणा; खेत्तादेसेणं चेव सपदेसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया, भावादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया।

८. [प्र.] हे भगवन्! (निर्ग्रन्थीपुत्र!) द्रव्यादेश से, क्षेत्रादेश से, कालादेश से और भावादेश से, सप्रदेश और अप्रदेश पुद्गलो मे कौन किन से कम, अधिक, तुल्य और विशेषाधिक है?

[उ.] हे नारदपुत्र! भावादेश से अप्रदेश पुद्गल सबसे थोडे है। उनकी अपेक्षा कालादेश से अप्रदेश पुद्गल असख्येगुणा है, उनकी अपेक्षा द्रव्यादेश से अप्रदेश पुद्गल असख्येयगुणा है और उनकी अपेक्षा भी क्षेत्रादेश से अप्रदेश पुद्गल असख्येयगुणा है। उनसे क्षेत्रादेश से सप्रदेश पुद्गल असख्यातगुणा है, उनसे द्रव्यादेशेन सप्रदेश पुद्गल विशेषाधिक है, उनसे कालादेशेन सप्रदेश पुद्गल विशेषाधिक है और उनसे भी भावादेशेन सप्रदेश पुद्गल विशेषाधिक है।

8. **[Q.]** *Bhante*! (ascetic Nirgranthiputra) In context of substance (*dravyadesh*), in context of area (*kshetradesh*), in context of time (*kaaladesh*) and in context of state (*bhaavadesh*), out of *pudgalas* with sections (*sa-pradesh*) and those without sections (*a-pradesh*), which are comparatively less, more, equal and much more?

[Ans.] O Narad-putra! *Pudgalas* without sections (*a-pradesh*) in context of state (*bhaavadesh*) are minimum As compared to them *pudgalas* without sections (*a-pradesh*) in context of time (*kaaladesh*) are innumerable times more, as compared to them pudgalas without sections (*a-pradesh*) in context of substance (*dravyadesh*) are innumerable times more, and as compared to them *pudgalas* without sections (*a-pradesh*) in context of area (*kshetradesh*) are innumerable times more As compared to them *pudgalas* with sections (*sa-pradesh*) in context of area (*kshetradesh*) are innumerable times more, as compared to them *pudgalas* with sections (*sa-pradesh*) in context of substance (*dravyadesh*) are much more, as compared to them *pudgalas* with sections (*sa-pradesh*) in context of time (*kaaladesh*) are much more and as compared to them *pudgalas* with sections (*sa-pradesh*) in context of state (*bhaavadesh*) are much more

९. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ। नियंठिपुत्तं अणगारं वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेति, खामेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

९. इसके पश्चात् (यह सुनकर) नारदपुत्र अनगार ने निर्ग्रन्थीपुत्र अनगार को वन्दन-नमस्कार किया। उन्हे वन्दन-नमस्कार करके उनसे इस (अपनी कही हुई मिथ्या) बात के लिए सम्यक् विनयपूर्वक बार-बार क्षमायाचना की। इस प्रकार क्षमायाचना करके वे (नारदपुत्र-अनगार) सयम और तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरण करने लगे।

9. At that ascetic Narad-putra paid homage and obeisance to ascetic Nirgranthiputra and sought his forgiveness again and again with great

sincerity and humility for this (his false statement) After seeking forgiveness he (ascetic Narad-putra) resumed his activities enkindling (*bhaavit*) his soul with ascetic-discipline and austerities

विवेचन द्रव्यादेश आदि की परिभाषा–द्रव्य की अपेक्षा परमाणुत्व आदि का कथन करना **द्रव्यादेश**, क्षेत्र की अपेक्षा कथन करना **क्षेत्रादेश**, काल की अपेक्षा एक समय की स्थिति आदि का कथन **कालादेश** और एकगुण काला इत्यादि कथन करना **भावादेश** है।

द्रव्यादि पुद्गलो की सप्रदेशता–अप्रदेशता का नियम–जो पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा से अप्रदेश–(परमाणुरूप) है, क्षेत्र से एकप्रदेशावगाढ होने से नियमत अप्रदेश है। क्योंकि परमाणु आकाश के एक प्रदेश का ही अवगाहन करता है। काल से वह पुद्गल यदि एक समय की स्थिति वाला है तो अप्रदेश है और यदि अनेक समय की स्थिति वाला है तो सप्रदेश है। भाव की अपेक्षा से वह एकगुण काला आदि है तो अप्रदेश है और अनेकगुण काला आदि है तो सप्रदेश है।

जो पुद्गल **क्षेत्र की अपेक्षा अप्रदेश** (एकक्षेत्रावगाढ) होता है, वह द्रव्य से कदाचित् सप्रदेश और कदाचित् अप्रदेश होता है, क्योकि क्षेत्र (आकाश) के एक प्रदेश मे रहने वाले द्वयणुक आदि सप्रदेश है, किन्तु क्षेत्र की अपेक्षा से वे अप्रदेश है।

जो पुद्गल क्षेत्र से अप्रदेश है, वह काल से कदाचित् अप्रदेश और कदाचित् सप्रदेश इस प्रकार होता है। जैसे–कोई पुद्गल क्षेत्र से एक प्रदेश मे रहने वाला है, वह यदि एक समय की स्थिति वाला है तो कालापेक्षया अप्रदेश है, किन्तु यदि वह अनेक समय की स्थिति वाला है तो कालापेक्षया भी सप्रदेश है।

जो पुद्गल क्षेत्र की अपेक्षा अप्रदेश है, यदि वह एकगुण काला आदि है तो भाव की अपेक्षा भी अप्रदेश है, किन्तु यदि वह अनेकगुण काला आदि है तो क्षेत्र की अपेक्षा सप्रदेश होते हुए भी भाव की अपेक्षा से अप्रदेश है। क्षेत्र से अप्रदेश पुद्गल के कथन की तरह काल और भाव से भी कथन करना चाहिए। यथा–जो पुद्गल काल से अप्रदेश होता है, वह द्रव्य से, क्षेत्र से और भाव से कदाचित् सप्रदेश और कदाचित् अप्रदेश होता है तथा जो पुद्गल भाव से अप्रदेश होता है, वह द्रव्य से, क्षेत्र से और काल से कदाचित् सप्रदेश होता है और कदाचित् अप्रदेश।

द्रव्यादि की अपेक्षा पुद्गलो की सप्रदेशता के विषय मे नियम–जो पुद्गल द्वयणुकादि रूप होने से **द्रव्य से सप्रदेश** होता है, वह क्षेत्र से कदाचित् सप्रदेश और कदाचित् अप्रदेश होता है, क्योकि वह यदि दो प्रदेशो मे रहता है तो सप्रदेश है, और एक ही प्रदेश मे रहता है तो अप्रदेश है। इसी तरह काल से और भाव से भी कहना चाहिए।

आकाश के दो या अधिक प्रदेशो मे रहने वाला पुद्गल **क्षेत्र से सप्रदेश** है, वह द्रव्य से भी सप्रदेश ही होता है, क्योकि जो पुद्गल द्रव्य से अप्रदेश होता है, वह दो आदि प्रदेशो मे नही रह सकता। जो पुद्गल क्षेत्र से सप्रदेश होता है, वह काल से और भाव से कदाचित् सप्रदेश होता है, कदाचित् अप्रदेश होता है।

जो पुद्गल **काल से सप्रदेश** होता है, वह द्रव्य से, क्षेत्र से और भाव से कदाचित् सप्रदेश होता है, कदाचित् अप्रदेश होता है।

जो पुद्गल भाव से सप्रदेश होता है, वह द्रव्य से, क्षेत्र से और काल से कदाचित् सप्रदेश और कदाचित् अप्रदेश होता है। *[(क) वृत्ति, पत्राक २४१ से २४३ तक, (ख) भगवती सूत्र (हिन्दी विवेचन), भा २, पृ १००–१०१]*

Elaboration—Meanings of dravyadesh etc.—*to* describe particles of matter (etc.) in context of substance is *dravyadesh* (substantial or

physical) to do that in context of area is *kshetradesh* (spatial) in context of time (like existence of one or more *Samaya*) is *kaaladesh* (temporal) and in context of state (like one unit attribute of black colour) is *bhaavadesh* (qualitative)

Sa-pradesh and a-pradesh—*Pudgala* (particle of matter) that is without sections (*a-pradesh*) in context of substance is as a rule also without sections in context of area as it occupies just a single space-point This is because a single ultimate particle occupies only one space-point In context of time if it has an existence of one *Samaya* it is without sections (*a-pradesh*) and if it has existence of more than one *Samaya* it is with sections In context of state if it has one unit of an attribute (blackness etc) it is without sections (*a-pradesh*) and if it has more than one unit of an attribute (blackness etc) it is with sections

Pudgala that is without sections in context of area is sometimes with sections and sometimes without sections in context of substance This is because an aggregate of two ultimate particles occupying one space-point is with sections in context of substance and without sections in context of area

Pudgala that is without sections in context of area is sometimes with sections and sometimes without sections in context of time This is because an ultimate particle occupying one space-point and existence of more than one *Samaya* is with sections in context of time and without sections if it has existence of just one *Samaya*

Pudgala that is without sections in context of area is without sections in context of state if it has just one unit of an attribute (blackness etc) However, if it has more than one unit of such attributes it is with sections in context of state although without sections in context of area What has been said about *Pudgala* without sections in context of area also holds good in context of time and state For example—*pudgala* that is without sections in context of time is sometimes with sections and sometimes without sections in context of substance, area and state and *pudgala* that is without sections in context of state is sometimes with sections and sometimes without sections in context of substance, area and time

Pudgala, having two or more ultimate particles, that is with sections in context of substance is sometimes with sections and sometimes without sections in context of area This is because if it occupies two space-points it is with sections and if it occupies just one space-point it is without sections Same is true in context of time and state

Pudgala occupying two or more space-points is with sections in context of area It is also with sections in context of substance because a *pudgala* without sections cannot occupy two or more space-points *Pudgala* that is with sections in context of area is sometimes with sections and sometimes without sections in context of time and state

Pudgalas that are with sections in context of time are with sections sometimes and without sections sometimes in context of substance, area and state

Pudgalas that are with sections in context of state are with sections sometimes and without sections sometimes in context of substance, area and time *(Vritti, leaves 241-243 and Bhagavati Sutra Hindi Commentary, part-2, pp 900-901)*

जीवो की वृद्धि–हानि INCREASE AND DECREASE IN NUMBER OF JIVAS

१०. [प्र.] 'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वयासी–जीवा णं भंते ! किं वड्ढंति, हायंति, अवट्ठिया ?

[उ.] गोयमा ! जीवा णो वड्ढंति, णो हायंति, अवट्ठिता।

१०. [प्र.] 'भगवन् !' यो कहकर भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर से इस प्रकार पूछा- "भगवन् ! क्या जीव बढते है या घटते है या अवस्थित रहते है ?"

[उ.] गौतम ! जीव न बढते है, न घटते है, किन्तु अवस्थित रहते है।

10. [Q.] "*Bhante* !" Addressing thus Bhagavan Gautam asked Shraman Bhagavan Mahavir as follows—"*Bhante* ! Do the living beings (*jivas*) increase (in number) or decrease or remain constant ?

[Ans.] Gautam ! The living beings (*jivas*) neither increase (in number) nor decrease but remain constant ?

११. [प्र.] नेरइया णं भंते ! किं वड्ढंति, हायंति, अवट्ठिता ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया वड्ढंति वि, हायंति वि, अवट्ठिया वि।

१२. जहा नेरइया एवं जाव वेमाणिया।

११. [प्र.] भगवन् ! क्या नैरयिक बढते है, घटते है, अथवा अवस्थित रहते है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक बढते भी है, घटते भी है और अवस्थित भी रहते है।

१२. जिस प्रकार नैरयिको के विषय मे कहा, इसी प्रकार वैमानिक-पर्यन्त (चौबीस ही दण्डको के जीवो के विषय मे) कहना चाहिए।

11. **[Q.]** *Bhante* ! Do the infernal beings (*jivas*) increase (in number) or decrease or remain constant ?

[Ans.] Gautam ! The infernal beings (*jivas*) increase (in number), decrease and remain constant also

12. As has been said about infernal beings so should be repeated up to *Vaimaniks* (for all the 24 *Dandaks* or places of suffering)

१३. [प्र.] सिद्धा णं भंते ! पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सिद्धा वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिया वि।

१३. [प्र.] भगवन् ! सिद्धो के विषय मे पृच्छा है।

[उ.] गौतम ! सिद्ध बढते है, घटते नही, वे अवस्थित भी रहते है।

13. **[Q.]** *Bhante* ! What about *Siddhas* (liberated souls) ?

[Ans.] Gautam ! Liberated souls (*Siddhas*) increase (in number), do not decrease and also remain constant

१४. [प्र.] जीवा णं भंते ! केवतियं काल अवट्ठिता ?

[उ.] गोयमा ! सव्वद्धं।

१४. [प्र.] भगवन् ! जीव कितने काल तक अवस्थित रहते है ?

[उ.] गौतम ! सर्वाद्धा (सब काल मे जीव अवस्थित ही रहते है)।

14. **[Q.]** *Bhante* ! How long do living beings remain constant (in number) ?

[Ans.] Gautam ! For all time (*Sarvaddha*)

चौबीस दण्डको की वृद्धि-हानि और कालमान की प्ररूपणा
DURATION OF INCREASE-DECREASE IN TWENTY FOUR DANDAKS

१५. [प्र. १] नेरइया णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढंति ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं।

[२] एवं हायंति।

१५. [प्र. १] भगवन् ! नैरयिक कितने काल तक बढते है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव जघन्यत एक समय तक और उत्कृष्टत. आवलिका के असख्यात भाग तक बढते है।

[२] जिस प्रकार बढने का काल कहा है, उसी प्रकार घटने का काल भी (उतना ही कहना चाहिए)।

15. **[Q. 1]** *Bhante* ! How long do infernal beings increase ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings increase for a minimum of one *Samaya* and maximum of uncountable fraction of *Avalika* (innumerable *Samayas*)

[2] The same is true for the duration of decrease

[प्र. ३] नेरइया णं भंते ! केवइयं कालं अवट्ठिया ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता।

[प्र. ३] भगवन् ! नैरयिक कितने काल तक अवस्थित रहते है ?

[उ.] गौतम ! (नैरयिक जीव) जघन्यत एक समय तक और उत्कृष्टत चौबीस मुहूर्त्त तक (अवस्थित रहते है।)

[Q. 3] *Bhante* ! How long do infernal beings remain constant ?

[Ans.] Gautam ! They (infernal beings) remain constant for a minimum of one *Samaya* and maximum of twenty four *Muhurt* (48 minutes)

[४] एवं सत्तसु वि पुढवीसु 'वड्ढति, हायंति' भाणियव्वं। नवरं अवट्ठिएसु इम णाणत्तं, तं जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अडतालीसं मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइंदियाइं, वालुयप्पभाए मासं, पंकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठमासा, तमतमाए बारस मासा।

[४] इसी प्रकार सातो नरक-पृथ्वियो के जीव बढते है, किन्तु अवस्थित रहने के काल मे इस प्रकार भिन्नता है। यथा-रत्नप्रभापृथ्वी मे ४८ मुहूर्त्त का, शर्कराप्रभा मे चौदह अहोरात्रि का, बालुकाप्रभा मे एक मास का, पकप्रभा मे दो मास का, धूमप्रभा मे चार मास का, तम प्रभा मे आठ मास का और तमस्तम प्रभा मे बारह मास का अवस्थान- काल है।

[4] In the same way they increase and decrease in all the seven hells but the duration of remaining constant varies as follows—In Ratnaprabha Prithvi it is 48 *Muhurts*, in Sharkaraprabha Prithvi it is 14 *Ahoratri* (days and nights), in Balukaprabha Prithvi it is one month, in Pankaprabha Prithvi it is two months, in Dhoom-prabha Prithvi it is four months, in Tamah-prabha Prithvi it is eight months and in Tamstamah-prabha Prithvi it is twelve months

१६. [१] असुरकुमारा वि वड्ढंति, हायंति, जहा नेरइया। अवट्ठिया जहन्नेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठचालीसं मुहुत्ता।

१६. [१] जिस प्रकार नैरयिक जीवो की वृद्धि-हानि के विषय मे कहा है, उसी प्रकार असुरकुमार देवो की वृद्धि-हानि के सम्बन्ध मे समझना चाहिए। असुरकुमार देव जघन्य एक समय तक और उत्कृष्ट ४८ मुहूर्त्त तक अवस्थित रहते है।

16. [1] As has been stated about the increase and decrease of infernal beings should be repeated for Asur Kumar gods. Asur Kumar gods

remain constant for a minimum of one *Samaya* and maximum of 48 *Muhurts* (48 minutes)

[२] एवं दसविहा वि।

[२] इसी प्रकार दस ही प्रकार के भवनपतिदेवो की वृद्धि-हानि और अवस्थिति का कथन करना चाहिए।

[2] The same should be repeated for increase, decrease and remaining constant with regard to all ten kinds of abode dwelling gods (*Bhavan-pati Devs*)

१७. एगिंदिया वड्ढंति वि, हायंति वि, अवट्ठिया वि। एएहिं तिहि वि जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं।

१७. एकेन्द्रिय जीव बढते भी है, घटते भी है और अवस्थित भी रहते है। इन तीनो (वृद्धि-हानि-अवस्थिति) का काल जघन्यत एक समय और उत्कृष्टत आवलिका का असख्यातवाँ भाग (समझना चाहिए)।

17. One sensed beings (*ekendriya jivas*) also increase, decrease and remain constant The duration of these three (increase etc) is minimum one *Samaya* and maximum uncountable fraction of one *Avalika*

१८. [१] बेइंदिया वड्ढंति हायंति तहेव अवट्ठिया, जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो अंतोमुहुत्ता।

[२] एवं जाव चउरिंदिया।

१८. [१] द्वीन्द्रिय जीव भी इसी प्रकार बढते-घटते है। इनके अवस्थान-काल मे भिन्नता इस प्रकार है -ये जघन्यत एक समय तक और उत्कृष्टत दो अन्तर्मुहूर्त्त तक अवस्थित रहते है।

[२] द्वीन्द्रिय की तरह त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवो तक (का वृद्धि-हानि-अवस्थितिकाल) कहना चाहिए।

18. [1] Two sensed beings (*dvindriya jivas*) also increase and decrease in the same way The difference in their duration of remaining constant is—they remain constant for a minimum of one *Samaya* and maximum of two *Antar-muhurt* (less than a *Muhurt*)

[2] The same (increase etc.) should be repeated for three and four sensed beings (*trindriya* and *chaturindriya jivas*)

१९. अवसेसा सव्वे वड्ढंति, हायंति तहेव। अवट्ठियाणं णाणत्तं इमं, तं जहा-(१) सम्मुच्छिम-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो अंतोमुहुत्ता। (२) गब्भवक्कंतियाणं चउव्वीसं मुहुत्ता। (३) सम्मुच्छिममणुस्साणं अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता। (४) गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चउव्वीसं मुहुत्ता। (५) वाणमंतर-जोइस-सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता। (६) सणंकुमारे अट्ठारस राइंदियाइं

चत्तालीस य मुहुत्ता। (७) माहिंदे चउवीसं रातिंदियाइं, वीस य मुहुत्ता। (८) बंभलोए पंच चत्तालीसं रातिंदियाइ। (९) लंतए नउति रातिंदियाइ। (१०) महासुक्के सट्ठं राइंदियसतं। (११) सहस्सारे दो राइदियसताइं। (१२) आणय–पाणयाणं संखेज्जा मासा। (१३) आरणऽच्चुयाणं संखेज्जाइं वासाइं। एवं (१४) गेवेज्जगदेवाणं। (१५) विजय–वेजयंत–जयंत अपराजियाण असंखिज्जाइं वाससहस्साइं। सव्वट्ठसिद्धे य पलिओवमस्स संखेज्जइभागो।

एवं भाणियव्वं–वड्ढंति हायंति जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं; अवट्ठियाणं जं भणियं।

१९ शेष सब जीव बढते–घटते है यह पहले की तरह ही कहना चाहिए। किन्तु उनके अवस्थानकाल मे इस प्रकार भिन्नता है, यथा (१) सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो का (अवस्थानकाल) दो अन्तर्मुहूर्त्त का, (२) गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको का चौबीस मुहूर्त्त का, (३) सम्मूर्च्छिम मनुष्यो का ४८ मुहूर्त्त का, (४) गर्भज मनुष्यो का चौबीस मुहूर्त्त का, (५) वाणव्यन्तर ज्योतिष्क और सौधर्म, ईशान देवो का ४८ मुहूर्त्त का, (६) सनत्कुमार देवो का अठारह अहोरात्रि तथा चालीस मुहूर्त्त का अवस्थानकाल है। (७) माहेन्द्र देवलोक के देवो का चौबीस रात्रि-दिन और बीस मुहूर्त्त का, (८) ब्रह्मलोक देवो का ४५ रात्रि दिवस का, (९) लान्तक देवो का ९० रात्रि–दिवस का, (१०) महाशुक्र देवलोक के देवो का १६० अहोरात्रि का, (११) सहस्रार देवो का २०० रात्रि–दिन का, (१२) आनत और प्राणत देवलोक के देवो का सख्येय मास का, (१३) आरण और अच्युत देवलोक के देवो का सख्येय वर्षो का अवस्थानकाल है। इसी प्रकार (१४) नौ ग्रैवेयक देवो के (अवस्थानकाल के) विषय मे जान लेना चाहिए। (१५) विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमानवासी देवो का अवस्थानकाल असख्येय हजार वर्षो का है तथा सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देवो का अवस्थानकाल पल्योपम का सख्यातवाँ भाग है।

और ये सब जघन्य एक समय तक और उत्कृष्ट आवलिका के असख्यातवे भाग तक बढते–घटते है, इस प्रकार कहना चाहिए और इनका अवस्थानकाल जो ऊपर कहा गया है, वही है।

19. In the same way it should be stated as aforesaid that all the remaining beings increase and decrease (in numbers) However, the variation in their duration of remaining constant is—(1) *Sammurchhim panchendriya tiryagyonik jivas* (five-sensed animals of asexual origin) remain constant for two *Antar-muhurt* (less than a *Muhurt*) (2) *Garbhaj panchendriya tiryagyonik jivas* (five-sensed animals born out of womb) for twenty four *Muhurt* (3) *Sammurchhim manushya* (human beings of asexual origin) for 48 *Muhurt* (4) *Garbhaj manushya* (human beings born out of womb) for twenty four *Muhurt* (5) *Vanavyantar, Jyotishk, Saudharma* and *Ishan Devs* (Interstitial, Stellar, *Saudharma* and *Ishan* gods) for 48 *Muhurt* (6) *Sanatkumar* gods for 18 Ahoratra (days and nights) and 40 *Muhurt* (7) Gods of Maahendra divine realm for 24

Ahoratra (days and nights) and 20 *Muhurt* (8) Gods of Brahmalok divine realm for 45 *Ahoratra* (days and nights) (9) Gods of Lantak divine realm for 90 *Ahoratra* (days and nights) (10) Gods of Mahashukra divine realm for 160 *Ahoratra* (days and nights) (11) Gods of Sahasrar divine realm for 200 *Ahoratra* (days and nights) (12) Gods of Anat and Pranat divine realm for countable months (13) Gods of Aran and Achyut divine realm for countable years (14) Same is true for Gods of nine Graiveyak divine realms (15) Celestial-vehicular Gods of Vijaya, Vaijayant, Jayant and Aparajit divine realms for innumerable thousand years (16) Celestial-vehicular Gods of Sarvarth Siddha divine realm for countable fraction of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)

It should be stated that all these increase and decrease (in numbers) for a minimum of one *Samaya* and maximum of uncountable fraction of an *Avalika*, the duration of remaining constant being aforesaid

२०. [प्र. १] **सिद्धा णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढंति ?**

[उ.] **गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया।**

२०. [प्र. १] भगवन् ! सिद्ध कितने काल तक बढते है ?

[उ.] गौतम ! जघन्यत एक समय और उत्कृष्टत आठ समय तक सिद्ध बढते है।

20. [Q. 1] *Bhante* ! How long do liberated beings (*Siddhas*) increase ?

[Ans.] Gautam ! Liberated beings increase for a minimum of one *Samaya* and maximum of eight *Samayas*

[प्र. २] **केवइयं कालं अवट्ठिया ?**

[उ.] **गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा।**

[प्र. २] भगवन् ! सिद्ध कितने काल तक अवस्थित रहते है ?

[उ.] गौतम ! जघन्य एक समय और उत्कृष्ट छह मास तक सिद्ध अवस्थित रहते है।

[Q. 2] *Bhante* ! How long do liberated beings (*Siddhas*) remain constant ?

[Ans.] Gautam ! Liberated beings remain constant for a minimum of one *Samaya* and maximum of six months

विवेचन : वृद्धि, हानि और अवस्थिति का तात्पर्य–ससार का शाश्वत नियम है, जीव–अजीव नही बनता, अजीव–जीव नही बनता। ससार मे न तो कोई नया जीव उत्पन्न होता है, और न किसी जीव का अस्तित्व समाप्त होता है। नैरयिक आदि चौबीसदण्डक के जीव के पर्याय विशेष है। इसलिए इनमे हानि–वृद्धि होती रहती है। कोई भी जीव जब बहुत उत्पन्न होते है और थोडे मरते है, तब 'वे बढते हैं', ऐसा कहा जाता है और जब वे बहुत मरते है और थोडे उत्पन्न होते हैं, तब 'वे घटते है', ऐसा कहा जाता है। जब उत्पत्ति और मरण

समान सख्या मे होता है, अर्थात्-जितने जीव उत्पन्न होते है, उतने ही मरते है, अथवा कुछ काल तक न तो जीव का जन्म होता है और न ही मरण होता, तब यह कहा जाता है कि 'वे अवस्थित है' इसे अवस्थानकाल कहते है।

Elaboration—Increase, decrease and remaining constant—Soul or the living does not turn into matter or the non-living and vice versa, this is the eternal law of nature In this world no new soul is created nor a single soul gets destroyed The infernal and other kinds of beings belonging to the twenty four *Dandaks* are simply modes or varieties of living beings or souls Therefore they continue to increase and decrease When among one kind of beings the number of births are more than the number of deaths then it is said that 'they are increasing (in number)' When it is the other way round it is said that 'they are decreasing' When the number of births is same as that of deaths or when for a specific period their is neither birth nor death, it is said that 'they remain constant'

जीवो मे सोपचयादि चार भग **FOUR DIVISIONS INCLUDING SOPACHAYA**

२१. [प्र] जीवा ण भंते ! किं सोवचया, सावचया, सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया ?

[उ.] गोयमा ! जीवा णो सोवचया, नो सावचया, णो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया।

२१. [प्र] भगवन् ! क्या जीव (१) सोपचय उपचय सहित है, (२) सापचय अपचय-सहित है, (३) सोपचयसापचय उपचय-अपचय-सहित है, या (४) निरुपचय उपचयरहित-निरपचय-अपचयरहित है ?

[उ.] गौतम ! जीव न सोपचय है और न ही सापचय है और न सोपचय-सापचय है, किन्तु निरुपचय-निरपचय है।

21. [Q.] *Bhante* ! Are the living beings (souls) (1) with augmentation (*sopachaya*), (2) with de-augmentation (*sapachaya*), (3) with augmentation and de-augmentation (*sopachaya-sapachaya*) or (4) without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) (in their numbers) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings (souls) are neither with augmentation (*sopachaya*) nor with de-augmentation (*sapachaya*) or with augmentation and de-augmentation (*sopachaya-sapachaya*) but are without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*)

२२. एगिंदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहि वि पदेहिं भाणियव्वा।

२२. एकेन्द्रिय जीवो मे तीसरा पद (सोपचय-सापचय) कहना चाहिए। शेष सब जीवो मे चारो ही पद (विकल्प) कहने चाहिए।

22. With regard to one-sensed beings the third alternative (with augmentation and de-augmentation) should be stated and with regard to all other beings all the four alternatives should be stated

२३. [प्र.] सिद्धा णं भंते ! पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सिद्धा सोवचया, णो सावचया, णो सोवचय–सावचया, निरुवचय–निरवचया।

२३. [प्र.] भगवन् ! क्या सिद्ध भगवान सोपचय है, सापचय है, सोपचय–सापचय है या निरुपचय-निरपचय है ?

[उ.] गौतम ! सिद्ध भगवान सोपचय है, सापचय नही है, सोपचय–सापचय भी नही है, किन्तु निरुपचय-निरपचय है।

23. [Q.] What in case of *Siddhas* ?

[Ans.] Gautam ! *Siddhas* are with augmentation (*sopachaya*) and not with de-augmentation (*sapachaya*) They are also not with augmentation and de-augmentation (*sopachaya-sapachaya*) but are without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*)

२४. [प्र.] जीवा णं भंते ! केवइयं कालं निरुवचय–निरवचया ?

[उ.] गोयमा ! सव्वद्धं।

२४. [प्र.] भगवन् ! जीव कितने काल तक निरुपचय–निरपचय रहते है ?

[उ.] गौतम ! जीव सर्वकाल तक निरुपचय–निरपचय रहते है।

24. [Q.] *Bhante* ! How long do living beings remain without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! living beings remain without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) for all time

२५. [प्र. १] नेरइया णं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं।

२५. [प्र. १] भगवन् ! नैरयिक कितने काल तक सोपचय रहते है ?

[उ.] गौतम ! जघन्य एक समय और उत्कृष्ट आवलिका के असख्येय भाग तक नैरयिक सोपचय रहते है।

25. [Q. 1] *Bhante* ! How long do infernal beings remain with augmentation (*sopachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings remain with augmentation (*sopachaya*) for a minimum of one *Samaya* and maximum of uncountable fraction of an *Avalika*

[प्र. २] केवइयं कालं सावचया ?

[उ.] एवं चेव।

[प्र. २] भगवन् ! नैरयिक कितने काल तक सापचय रहते है ?

[उ.] (गौतम) उसी प्रकार (सोपचय के पूर्वोक्त कालमानानुसार) सापचय का काल जानना चाहिए।

[Q. 2] *Bhante* ! How long do infernal beings remain with de-augmentation (*sapachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! The same (as aforesaid regarding *sopachaya*)

[प्र. ३] केवइयं कालं सोवचय–सावचया ?

[उ.] एवं चेव।

[प्र. ३] और वे सोपचय-सापचय कितने काल तक रहते है ?

[उ.] (गौतम) ! सोपचय का जितना काल कहा है, उतना ही सोपचय–सापचय का काल जानना चाहिए।

[Q. 3] *Bhante* ! How long do infernal beings remain with augmentation and de-augmentation (*sopachaya-sapachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! The same (as aforesaid regarding *sopachaya*)

[प्र. ४] केवइयं कालं निरुवचय–निरवचया ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता।

[प्र. ४] नैरयिक कितने काल तक निरुपचय–निरपचय रहते है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव जघन्य एक समय और उत्कृष्ट बारह मुहूर्त्त तक निरुपचय–निरपचय रहते है।

[Q. 4] *Bhante* ! How long do infernal beings remain without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings remain without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) for a minimum of one *Samaya* and maximum of twelve *Muhurts*

२६. एगिंदिया सव्वे सोवचय–सावचया सव्वद्धं।

२६. सभी एकेन्द्रिय जीव सर्वकाल (सर्वदा) सोपचय–सापचय रहते है।

26. All one-sensed beings always remain with augmentation and de-augmentation (*sopachaya-sapachaya*)

२७. सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया वि, सोवचय-सावचया वि, निरुवचय-निरवचया वि। जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं अवट्ठिएहिं वक्कंतिकालो भाणियव्वो।

२७. शेष सभी जीव सोपचय भी है, सापचय भी है, सोपचय-सापचय भी है और निरुपचय-निरपचय भी है। इन चारो का काल जघन्य एक समय और उत्कृष्ट आवलिका का असख्यातवाँ भाग है। अवस्थितो (निरुपचय-निरपचय) मे व्युत्क्रान्तिकाल (विरहकाल) के अनुसार कहना चाहिए।

27. All the remaining beings are with augmentation (*sopachaya*), with de-augmentation (*sapachaya*), with augmentation and de-augmentation (*sopachaya-sapachaya*) and without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) The period they remain in these four conditions is minimum of one *Samaya* and maximum uncountable fraction of an *Avalika* With regard to the constant state (without augmentation and de-augmentation) it is like the period when there is neither birth nor death (*vyutkranti kaal* or *virah kaal*)

२८. [प्र. १] सिद्धा णं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ?

[उ] गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया।

२८. [प्र. १] भगवन् ! सिद्ध भगवान कितने काल तक सोपचय रहते है ?

[उ] गौतम ! जघन्य एक समय और उत्कृष्ट आठ समय तक वे सोपचय रहते है।

28. [Q. 1] *Bhante* ! How long do *Siddhas* (liberated souls) remain with augmentation (*sopachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! *Siddhas* remain with augmentation (*sopachaya*) for a minimum of one *Samaya* and maximum of eight *Samayas*

[प्र. २] केवइयं कालं निरुवचय-निरवचया ?

[उ.] जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ पंचमसए : अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥

[प्र. २] सिद्ध भगवान, निरुपचय-निरपचय कितने काल तक रहते है ?

[उ] (गौतम !) वे जघन्य एक समय और उत्कृष्ट छह मास तक निरुपचय-निरपचय रहते है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है' यो कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरने लगे।

[Q. 2] *Bhante* ! How long do *Siddhas* (liberated souls) remain without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! *Siddhas* remain without augmentation and de-augmentation (*nirupachaya-nirapachaya*) for a minimum of one *Samaya* and maximum of six months

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन सोपचयादि का तात्पर्य–**सोपचय** का अर्थ है–वृद्धि–सहित। अर्थात्–पहले के जितने जीव है, उनमे नये जीवो की उत्पत्ति होती है, उसे सोपचय कहते है। पहले के जीवों मे से कई जीवो के मर जाने से सख्या घट जाती है, उसे **सापचय** (हानि–सहित) कहते है। उत्पाद (उत्पत्ति) और उद्वर्तन (मरण) द्वारा एक साथ वृद्धि–हानि होती है, उसे **सोपचय–सापचय** (वृद्धि–हानि–सहित) कहते है, उत्पाद और उद्वर्तन के अभाव से वृद्धि–हानि न होना (विरहकाल) **'निरुपचय–निरपचय'** कहलाता है। सिद्ध एक समय से आठ समय तक निरन्तर उत्पन्न हो सकते है, सिद्धो का विरहकाल जघन्य एक समय से उत्कृष्ट छह मास होता है।

॥ पचम शतक अष्टम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—*Sopachaya* means with augmentation, in other words new beings are born among the existing ones When some beings from the existing number die, the total number is reduced This is called *sapachaya* or with de-augmentation. With births and deaths at the same time there is increase as well as decrease This called *sopachaya-sapachaya* or with augmentation and de-augmentation Absence of increase and decrease in numbers due to absence of birth and death is called *nirupachaya-nirapachaya* or without augmentation and de-augmentation This is also called *vyutkranti kaal or virah kaal* The number of *Siddhas* can increase continuously from one to eight *Samayas* and the minimum and maximum period of their number remaining constant is one *Samaya* and six months

● END OF THE EIGHTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : नवम उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) : NINTH LESSON

राजगृह RAJAGRIHA

राजगृह का स्वरूप DESCRIPTION OF RAJAGRIHA

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी–

१. उस काल और उस समय मे गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से इस प्रकार पूछा–

1. During that period of time and so on up to Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir—

२. [प्र. १] किमिदं भंते ! 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति ? किं पुढवी 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति ? आऊ 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति ? जाव वणस्सइ ! जहा एयणुद्देसए पंचिंदिय–तिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वं जाव सचित्त–अचित्त–मीसियाइ दव्वाइं 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति ?

[उ.] गोयमा ! पुढवी वि 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति जाव सचित्त–अचित्त–मीसियाइं दव्वाइं 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति।

२. [प्र. १] भगवन् ! यह 'राजगृह नगर' क्या कहलाता है ? क्या पृथ्वी राजगृह नगर कहलाता है ?, अथवा जल ? यावत् वनस्पति क्या राजगृह नगर कहलाता है ?, जिस प्रकार 'एजन' नामक उद्देशक (पचम शतक के सप्तम उद्देशक) मे पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो की (परिग्रह–विषयक) वक्तव्यता कही है, क्या उसी प्रकार यहाँ भी कहनी चाहिए ? (अर्थात्–क्या 'कूट' राजगृह नगर कहलाता है ? शैल राजगृह नगर कहलाता है ? इत्यादि), यावत् क्या सचित्त, अचित्त और मिश्र द्रव्य (मिलकर) राजगृह नगर कहलाता है ?

[उ.] गौतम ! पृथ्वी भी राजगृह नगर कहलाती है, यावत् सचित्त, अचित्त और मिश्र द्रव्य (सब मिलकर) भी राजगृह नगर कहलाता है।

2. [Q. 1] *Bhante* ! What is it that is called 'Rajagriha City' ? Is this *prithvi* (land) called Rajagriha City ? Or is water and so on up to plants that are called Rajagriha City ? Or as has been stated in lesson titled Ejan (fifth chapter seventh lesson) in context of possession by five sensed animals, is it to be repeated like that about Rajagriha City [Is pinnacle (*koot*) called Rajagriha City ? Is flat-top mountain (*shail*) called Rajagriha City ?.] and so on up to living, non-living and mixed things (combined together) is called Rajagriha City ?

[Ans.] Gautam ! This *prithvi* (land) is also called Rajagriha City and so on up to living, non-living and mixed things (combined together) is also called Rajagriha City

[प्र २] से केणट्ठेण० ?

[उ.] गोयमा ! पुढवी जीवा इ य अजीवा इ य 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति; जाव सचित्त–अचित्त–मीसियाइं दव्वाइ जीवा ति य अजीवा ति य 'नगरं रायगिहं' ति पवुच्चति, से तेणट्ठेण तं चेव।

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ?

[उ] गौतम ! पृथ्वी जीव (पिण्ड) है और अजीव-(पिण्ड) भी है, इसलिए यह राजगृह नगर कहलाता है, यावत् सचित्त, अचित्त और मिश्र द्रव्य भी जीव है, और अजीव भी है, इसलिए ये द्रव्य (मिलकर) राजगृह नगर कहलाते है। हे गौतम ! इसी कारण से पृथ्वी आदि को राजगृह नगर कहा जाता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why so ?

[Ans.] Gautam ! This *prithvi* is a living thing (*jiva*) as well as a non-living thing (*ajiva*) (lump of living things as well as non-living things) and therefore it is called Rajagriha City and so on up to living, non-living and mixed things are also living things as well as non-living things, therefore they (combined together) are called Rajagriha City Gautam ! That is why this *prithvi* etc are called Rajagriha City

उद्योत और अन्धकार LIGHT AND DARKNESS

३. [प्र १] से नूण भंते ! दिया उज्जोए राइं अंधकारे ?

[उ] हंता, गोयमा ! जाव अधकारे।

३. [प्र. १] हे भगवन् ! क्या दिन मे उद्योत और रात्रि मे अन्धकार होता है ?

[उ] हाँ, गौतम ! दिन मे उद्योत और रात्रि मे अन्धकार होता है।

3. [Q. 1] *Bhante* ! Is there light (*udyot*) during the day and darkness during the night ?

[Ans.] Yes, Gautam ! There is light (*udyot*) during the day and darkness during the night

[प्र २] से केणट्ठेण० ?

[उ] गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला, सुभे पोग्गलपरिणामे, राइं असुभा पोग्गला, असुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं० ?

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से दिन मे उद्योत और रात्रि मे अन्धकार होता है ?

[उ.] गौतम! दिन मे शुभ पुद्गल होते है शुभ पुद्गलो का परिणमन होता है, किन्तु रात्रि मे अशुभ पुद्गल होते है, अशुभ पुद्गलो का परिणमन होता है। इस कारण से दिन मे उद्योत और रात्रि मे अन्धकार होता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why so ?

[Ans.] Gautam ! During the day auspicious or bright (*shubh*) particles exist and function, but during the night inauspicious or dark (*ashubh*) particles exist and function That is why there is light (*udyot*) during the day and darkness during the night

४. [प्र. १] नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए, अंधकारे ?

[उ.] गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए, अंधकारे।

४. [प्र १] भगवन्! नैरयिको के (निवास-स्थान मे) उद्योत होता है, अथवा अन्धकार होता है?

[उ] गौतम! नैरयिक जीवो के (स्थान मे) उद्योत नही होता, (किन्तु) अन्धकार होता है।

4. [Q. 1] *Bhante* ! Is there light or darkness in the world of infernal beings ?

[Ans.] Gautam ! In the world of infernal beings there is no light but darkness

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! नेरइयाणं असुभा पोग्गला, असुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं०।

[प्र. २] भगवन्! किस कारण से उद्योत नही होता, अन्धकार होता है?

[उ.] गौतम! नैरयिक जीवो के अशुभ पुद्गल और अशुभ पुद्गल-परिणाम होते है, इस कारण से वहाँ उद्योत नही, किन्तु अन्धकार होता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why so ?

[Ans.] Gautam ! In the (world of) infernal beings only inauspicious or dark (*ashubh*) particles exist and function That is why there is no light (*udyot*) but only darkness there

५. [प्र. १] असुरकुमाराणं भंते ! किं उज्जाते, अंधकारे ?

[उ.] गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए, नो अंधकारे।

५. [प्र. १] भगवन्! असुरकुमारों के क्या उद्योत होता है, अथवा अन्धकार होता है?

[उ.] गौतम! असुरकुमारो के उद्योत होता है, अन्धकार नही होता।

5. [Q. 1] *Bhante* ! Is there light or darkness in the world of Asur Kumar gods ?

[Ans.] Gautam ! In the world of Asur Kumar gods there is light and not darkness

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला, सुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चति०। एवं जाव थणियाणं।

[प्र. २] भगवन् ! यह किस कारण से कहा जाता है ?

[उ] गौतम ! असुरकुमारो के शुभ पुद्गल या शुभ पुद्गल परिणाम होते है, इस कारण से कहा जाता है कि उनके उद्योत होता है, अन्धकार नही होता। इसी प्रकार (नागकुमार देवो से लेकर) स्तनितकुमार देवो तक के लिए कहना चाहिए।

[Q. 2] *Bhante* ! Why so ?

[Ans.] Gautam ! In the (world of) Asur Kumar gods only auspicious or bright (*shubh*) particles exist and function That is why there is only light (*udyot*) and not darkness there The same should be repeated (for Naag Kumar gods and so on up to) up to Stanit Kumar gods

६. पुढविकाइया जाव तेइंदिया जहा नेरइया।

६. जिस प्रकार नैरयिक जीवो के (उद्योत-अन्धकार के) विषय मे कथन किया, उसी प्रकार पृथ्वीकायिक जीवो से लेकर त्रीन्द्रिय जीवो तक के विषय मे कहना चाहिए।

6. As has been stated with regard to infernal beings (about light and darkness) so should be repeated for earth-bodied beings and so on up to three-sensed beings

७. [प्र १] चउरिंदियाणं भंते ! किं उज्जोए, अधकारे ?

[उ] गोयमा ! उज्जोए वि, अंधकारे वि।

७. [प्र १] भगवन् ! चतुरिन्द्रिय जीवो के क्या उद्योत है अथवा अन्धकार है ?

[उ] गौतम ! चतुरिन्द्रिय जीवो के उद्योत भी है, अन्धकार भी है।

7. [Q. 1] *Bhante* ! Is there light or darkness in the world of four-sensed beings ?

[Ans.] Gautam ! In the world of four-sensed beings there is light as well as darkness

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! चतुरिंदियाणं सुभाऽसुभा पोग्गला, सुभाऽसुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं०।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से चतुरिन्द्रिय जीवो के उद्योत भी है, अन्धकार भी है ?

[उ.] गौतम ! चतुरिन्द्रिय जीवो के शुभ और अशुभ (दोनो प्रकार के) पुद्गल होते है, तथा शुभ और अशुभ पुद्गल-परिणाम होते है, इसलिए उनके उद्योत भी है और अन्धकार भी है, ऐसा कहा जाता है।

[Q. 2] Bhante ! Why so ?

[Ans.] Gautam ! In (the world of) four-sensed beings auspicious or bright (*shubh*) as well as inauspicious or dark (*ashubh*) particles exist and function That is why there is light (*udyot*) as well as darkness there

८. एवं जाव मणुस्साणं।

९. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा असुरकुमारा।

८. इसी प्रकार (तिर्यञ्च-पञ्चेन्द्रिय और) यावत् मनुष्यो तक के लिए कहना चाहिए।

९. जिस प्रकार असुरकुमारो के विषय मे कहा, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवो के विषय मे भी कहना चाहिए।

8. The same should be repeated (for five sensed animals and so on) up to human beings

9. As has been stated with regard to Asur Kumar gods (about light and darkness) so also should be repeated for interstitial gods (*Vanavyantar Devs*), stellar gods (*Jyotishk Devs*) and celestial-vehicular gods (*Vaimanik Devas*)

विवेचन उद्योत और अन्धकार के कारण—दिन मे सूर्य की किरणो के सम्पर्क के कारण पुद्गल का परिणमन परिणाम शुभ होता है, किन्तु रात्रि मे सूर्य-किरण का सम्पर्क न होने से पुद्गलो का परिणमन अशुभ होता है।

नरको मे सूर्य किरणो का प्रकाश नही है, इसलिए वहाँ अन्धकार है। पृथ्वीकायिक से लेकर त्रीन्द्रिय तक के जीव, जो मनुष्यक्षेत्र मे है, और उन्हे सूर्य-किरणो आदि का सम्पर्क भी है, फिर भी उनमे अन्धकार कहा है, इसका कारण यह है कि उनके चक्षुरिन्द्रिय न होने से दृश्य वस्तु दिखाई नही देती, फलत शुभ पुद्गलो का कार्य उनमे नही होता, उस अपेक्षा से उनमे अशुभ पुद्गल है, अत उनमे अन्धकार ही है। चतुरिन्द्रिय जीवो से लेकर मनुष्य तक मे शुभाशुभ दोनो पुद्गल होते है, क्योकि उनके आँख होने पर भी जब रवि-किरणादि का सद्भाव होता है, तब दृश्य पदार्थों के ज्ञान मे निमित्त होने से उनमे शुभ पुद्गल होते है, किन्तु रवि-किरणादि का सम्पर्क नही होता, तब पदार्थज्ञान न होने से उनमे अशुभ पुद्गल होते है। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों के रहने के (स्थान) आदि की भास्वरता के कारण वहाँ निरन्तर शुभ पुद्गल है, अतएव अन्धकार नही उद्योत है।

Elaboration—Cause of light and darkness—The consequence (*parinaam*) of functioning (*parinaman*) of matter particles is auspicious due to contact with sun rays However during the night it is inauspicious due to lack of contact with sun rays

As infernal worlds are deprived of the glow of sun rays, darkness prevails there The living beings, from earth-bodied beings to three-sensed beings, dwelling in the world of humans and in physical contact with sun rays, are said to be in darkness This is because of the fact that for the absence of the sense organ of seeing (*chakshurindriya*) they are devoid of vision and as a consequence there is no functioning of auspicious particles in them In this context they have functioning of only inauspicious particles and as such they are in darkness only Four-sensed beings and so on up to human beings have both auspicious and inauspicious particles This is because they are endowed with the sense organ of seeing (eyes) and have vision due to functioning of auspicious particles when in contact with sun rays There is absence of vision in them due to functioning of inauspicious particles when not in contact with sun rays In abode dwelling gods (*Bhavan-pati gods*), interstitial, stellar and celestial-vehicular gods there is continuous functioning of auspicious particles because their realms are ever radiant Thus they always have light and never darkness

नैरयिकादि मे समय ज्ञान AWARENESS OF TIME

१०. [प्र १] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं तत्थ गयाण एवं पण्णायति, तं जहा—समया ति वा आवलिया ति वा जाव ओसप्पिणी ति वा उस्सप्पिणी ति वा ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

१०. [प्र १] भगवन् ! क्या नरकक्षेत्र मे रहे हुए नैरयिको को इस प्रकार का प्रज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) होता है, जैसे कि "यह समय है, आवलिका है, यावत् यह उत्सर्पिणी काल या अवसर्पिणी काल है ?"

[उ] गौतम ! वहाँ रहे हुए नैरयिक जीवो को समयादि का प्रज्ञान नही होता।

10. [Q. 1] *Bhante* ! Do the infernal beings living in hells have the specific awareness (*prajnana*) that this is *Samaya*, this is *Avalika* and so on up to regressive cycle of time and progressive cycle of time ?

[Ans.] Gautam ! No, they do not have that awareness of time

[प्र २] से केणट्ठेणं जाव समया ति वा आवलिया ति वा जाव ओसप्पिणी ति वा उस्सप्पिणी ति वा ?

[उ] गोयमा ! इहं तेसिं माणं, इहं तेसिं पमाणं, इहं तेसिं एवं पण्णायति, तं जहा—समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा। से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायति, तं जहा—समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा।

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से नरक मे रहने वाले नैरयिको को समय, आवलिका, यावत् उत्सर्पिणी - अवसर्पिणी काल का प्रज्ञान नही होता ?

[उ.] गौतम ! यहाँ (मनुष्यलोक मे) समयादि का मान है, यहाँ उनका प्रमाण है, इसलिए यहाँ (समयादि का) ऐसा प्रज्ञापन होता है कि यह समय है, यावत् यह उत्सर्पिणीकाल है, (किन्तु नरक मे न तो समयादि का मान है, न प्रमाण है और न ही प्रज्ञान है।) इस कारण से नरकस्थित नैरयिको को इस प्रकार से समय, आवलिका यावत् उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीकाल का प्रज्ञान नही होता।

[Q. 2] *Bhante* ! Why the infernal beings living in hells do not have the awareness (*prajnana*) of *Samaya*, *Avalika* and so on up to regressive cycle of time and progressive cycle of time ?

[Ans.] Gautam ! Here (in the world of humans) there are comparative measures (*maan* and *pramaan*) of units like *Samaya* and therefore there is the awareness that this is *Samaya* and so on up to progressive cycle of time, (but in the infernal world there is neither comparative measure nor evidence or awareness of units like *Samaya*) that is why the infernal beings living in hells do not have the awareness (*prajnana*) of such units as *Samaya* *Avalika* and so on up to regressive cycle of time and progressive cycle of time

११. एव जाव पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं।

११. जिस प्रकार नरकस्थित नैरयिको के (समयादिप्रज्ञान के) विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार (भवनपति देवो, स्थावर जीवो, तीन विकलेन्द्रियो से लेकर) यावत् पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो तक के लिए कहना चाहिए।

11. As has been stated (about awareness of *Samaya* etc) with regard to infernal beings dwelling in infernal abodes so should be repeated with regard to beings (from *Bhavan-pati Devs*, immobile beings, two to four-sensed beings and so on) up to five sensed animals

१२. [प्र. १] अत्थि णं भंते ! मणुस्साणं इहगयाणं एवं पण्णायति, तं जहा–समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा ?

[उ.] हंता, अत्थि।

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! इहं तेसिं माणं, इहं तेसिं पमाणं, इहं चेव तेसिं एवं पण्णायति, तं जहा–समया ति वा जाव उस्सप्पिणी ति वा। से तेणट्ठेणं०।

१२. [प्र. १] भगवन् ! क्या यहाँ (मनुष्यलोक मे) रहे हुए मनुष्यो को इस प्रकार का प्रज्ञान होता है, कि (यह) समय (है), यावत् (यह) उत्सर्पिणीकाल (है) ?

[उ.] हाँ, गौतम ! होता है।

[प्र. २] भगवन्! किस कारण से (ऐसा कहा जाता है)?

[उ] गौतम! यहाँ (मनुष्यलोक मे) उनका (समयादि का) मान है, यहाँ उनका प्रमाण है, इसलिए यहाँ उनको उनका (समयादि का) इस प्रकार से प्रज्ञान होता है, यथा–'यह समय है, या यावत् यह उत्सर्पिणी काल है। इस कारण से यहाँ रहे हुए मनुष्यो को समयादि का प्रज्ञान होता है।'

12. [Q. 1] *Bhante*! Do the human beings living here (in the world of humans) have the specific awareness (*prajnana*) that this is *Samaya* and so on up to progressive cycle of time?

[Ans.] Yes, Gautam! They have that awareness

[Q. 2] *Bhante*! Why is it so?

[Ans.] Gautam! Here (in the world of humans) there are comparative measures (*maan* and *pramaan*) and therefore there is the awareness that this is *Samaya* and so on up to progressive cycle of time, that is why the human beings living here have the awareness (*prajnana*) of such units like *Samaya*

१३. वाणमतर–जोइस–वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं।

१३. जिस प्रकार नैरयिक जीवो के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क एव वैमानिक देवो के (समयादिप्रज्ञान के) विषय मे कहना चाहिए।

13. As has been stated (about awareness of *Samaya* etc) with regard to infernal beings so should be repeated with regard to *Vanavyantar*, *Jyotishk* and *Vaimanik Devs*

विवेचन जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, अर्धपुष्कर द्वीप, यह अढाई द्वीप समय क्षेत्र (मनुष्यलोक) है। यहाँ सूर्य–चन्द्र भ्रमण करते है, इसलिए दिन–रात होते है। मनुष्यलोक मे स्थित मनुष्यो के अतिरिक्त मनुष्यलोक के बाहर किसी भी जीव को समय, आवलिका आदि का ज्ञान नही होता, क्योकि वहाँ सूर्य–चन्द्र आदि स्थिर होने से समयादि का मान–प्रमाण नही होता है। सूर्य की गति नरकादि मे नही है। यद्यपि मनुष्यलोक मे कितने ही तिर्यंच-पचेन्द्रिय, भवनपति, वाणव्यन्तर और ज्योतिष्क देव है, तथापि वे स्वल्प है। मनुष्यलोक के बाहर वे बहुत है। अत उन बहुतो की अपेक्षा से यह कहा गया है कि पचेन्द्रियतिर्यंच, भवनपति, वाणव्यन्तर एवं ज्योतिष्कदेव समय आदि कालविभाग को नही जानते।

मान और प्रमाण का अर्थ–समय, आवलिका आदि काल के विभाग है। इनमे अपेक्षाकृत सूक्ष्म काल 'मान' कहलाता है और अपेक्षाकृत प्रकृष्ट काल 'प्रमाण'। जैसे 'मुहूर्त' मान है, मुहूर्त की अपेक्षा सूक्ष्म होने से 'लव' प्रमाण है। इस प्रकार अपेक्षा भेद से मान, प्रमाण जानना चाहिए। *(वृत्ति पत्राक २४७)*

Elaboration—Jambudveep, Dhatakikhand and Ardhapushkar Dveep (half Pushkar continent), these two and a half continents (Adhaidveep) comprise area of time (*samaya kshetra*) of the human world Day and

might occur here because there is movement of the sun and the moon in this area No living being other than the humans of the human world and living outside this world has awareness of units of time including *Samaya* and *Avalika* This is because beyond the human world the sun and the moon are stationary and as a consequence there is neither measure nor evidence of units of time In the infernal world sun does not exist Although there are numerous five-sensed animals, abode dwelling, interstitial and stellar gods in the human world, their number is minimal as compared to that outside the human world As such, the statement that five-sensed animals, abode dwelling, interstitial and stellar gods have no awareness of units of time is with regard to that larger number outside the human world

Maan and Pramaan—*Samaya, Avalika* etc are units of time Of these comparatively smaller units are classified as *maan* and larger units are classified as *pramaan* For example when *Muhurt* comes under the class maan, *Lava* being smaller comes under the class maan Thus *maan* and *pramaan* should be taken as relative terms *(Vritti leaf 247)*

पार्श्वापत्य स्थविरो द्वारा पंचमहाव्रत धर्म स्वीकार
ACCEPTANCE OF FIVE GREAT VOWS BY PARSHVAPATYA ASCETICS

१४. [प्र. १] तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी–से नूणं भंते ! असंखेज्जे लोए, अणंता राइंदिया उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ?, विगच्छिंसु वा विगच्छंति वा विगच्छिस्संति वा ?, परित्ता राइंदिया उप्पज्जिंसु वा उपज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ? विगच्छिंसु वा ३ ?

[उ.] हंता, अज्जो ! असंखेज्जे लोए, अणंता राइंदिया० तं चेव।

१४. [प्र. १] उस काल और उस समय मे पार्श्वापत्य (पार्श्वनाथ भगवान के सन्तानीय शिष्य) स्थविर भगवन्त, जहाँ श्रमण भगवान महावीर थे, वहाँ आए। वहाँ आकर वे श्रमण भगवान महावीर से यथायोग्य स्थान पर खडे रहकर इस प्रकार पूछने लगे–भगवन् ! असख्य लोक मे क्या अनन्त रात्रि–दिवस उत्पन्न हुए है, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे, तथा नष्ट हुए है, नष्ट होते है और नष्ट होंगे ? अथवा परिमित (नियत परिमाण वाले) रात्रि–दिवस उत्पन्न हुए हैं, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे, तथा नष्ट हुए हैं, नष्ट होते है और नष्ट होगे ?

[उ.] हाँ, आर्यो ! असख्य लोक मे अनन्त रात्रि–दिवस उत्पन्न हुए है, उत्पन्न होते है, यावत् उपर्युक्त रूप सम्पूर्ण पाठ कहना चाहिए।

14. [Q. 1] During that period of time *Parshvapatya* (followers of Bhagavan Parshva Naath) senior ascetics came to Shraman Bhagavan Mahavir After arriving, they stood keeping their proper distance from Shraman Bhagavan Mahavir and asked—*Bhante* ! In this occupied space (*Lok*) with innumerable space-points has there been, is there and will there be occurrence of dawning and fading of infinite days and nights ? Or has there been, is there and will there be occurrence of dawning and fading of limited number of days and nights ?

[**Ans.**] Yes, noble ones ! In this occupied space (*Lok*) with innumerable space-points there has been, there is and so on up to occurrence of dawning and fading of infinite days and nights (repeat the whole statement)

[प्र २] से केणट्ठेण जाव विगच्छिस्संति वा ?

[उ] से नूणं भे अज्जो ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं "सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे, हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, अहे पलियकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठिए। तंसि च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग्गंसि परित्तंसि परिवुडंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पिं विसालंसि, अहे पलियंकसंठियंसि, मज्झे वरवइरविग्गहियंसि, उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठियसि अणंता जीवघणा उप्पज्जित्ता उप्पज्जित्ता निलीयंति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता उप्पज्जित्ता निलीयंति। से भूए उप्पन्ने विगए परिणए अजीवेहिं लोक्कइ, पलोक्कइ। जे लोक्कइ से लोए ?"

[उ] 'हंता, भगवं !' से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चति असंखेज्जे तं चेव।

[३] तप्पभिइ च णं ते पासावच्चे थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणंति 'सव्वण्णुं सव्वदरिसिं'।

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से असख्य लोक मे अनन्त रात्रि- दिवस उत्पन्न यावत् नष्ट होगे ?

[उ] हे आर्यो ! यह निश्चित है कि आपके (गुरुस्वरूप) पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ ने लोक को शाश्वत कहा है। इसी प्रकार लोक को अनादि, अनवदग्र (अनन्त), परिमित, अलोक से परिवृत (घिरा हुआ), नीचे विस्तीर्ण, मध्य मे सक्षिप्त, और ऊपर विशाल तथा नीचे पल्यंकाकार (ऊपर सँकडा, नीचे विस्तृत पद्मासन मे स्थित) बीच मे उत्तम वज्राकार (मध्य मे पतला) और ऊपर ऊर्ध्वमृदंगाकार (सीधे मृदग पर उल्टा मृदग की आकृति) कहा है। उस प्रकार के शाश्वत, अनादि, अनन्त, परित्त, परिवृत्त, नीचे विस्तीर्ण, मध्य मे सक्षिप्त, ऊपर विशाल, तथा नीचे पल्यकाकार, मध्य मे उत्तमवज्राकार और ऊपर ऊर्ध्वमृदगाकारसस्थित लोक मे अनन्त जीवघन (समूह) हो-होकर नष्ट होते है और परित्त (नियम = असख्य) जीवघन भी उत्पन्न हो-होकर विनष्ट होते है। इसीलिए ही तो यह लोक भूत है, उत्पन्न है, विगत है,

परिणत है। यह, अजीवो (पुद्गलादि) से लोकित–निश्चित होता है, तथा यह (भूत आदि धर्म वाला लोक) विशेष रूप से लोकित–निश्चित होता है। 'जो (प्रमाण से) लोकित–(ज्ञात) होता है, वही लोक है न ?'

(पार्श्वापत्य स्थविर–) हाँ, भगवन् ! (वही लोक है।) इसी कारण से, हे आर्यो ! ऐसा कहा जाता है कि असख्य लोक मे (अनन्त रात्रि-दिवस यावत् परिमित रात्रि-दिवस यावत् विनष्ट होगे।) इत्यादि सब पूर्ववत् कहना चाहिए।

[३] तब से वे पार्श्वापत्य स्थविर भगवन्त श्रमण भगवान महावीर स्वामी को सर्वज्ञ और सर्वदर्शी जानने लगे।

[Q. 2] Bhante ! Why is it so that and so on up to fading of infinite days and nights ?

[Ans.] O noble ones ! It is a fact that your (preceptor) Purushadaniya (most respected among men) Arhat Parshva Naath has stated this universe (*Lok*) to be eternal He has further stated that this universe is without a beginning (*anaadi*) and without an end (*anant*), limited (*parimit*), surrounded (*parivrit*) by unoccupied space (*Alok*), extended at the base, slender in the middle and vast at the top It is shaped like *paryank* (extended like a bed) at the bottom, *vajra* (slender like thunderbolt) in the middle and *urdhvamridang* (upturned drum) at the top In such universe without a beginning and without an end, limited, surrounded, extended at the base, slender in the middle and vast at the top, shaped like *paryank* at the bottom, *vajra* in the middle and *urdhvamridang* at the top, infinite clusters of living beings are born and destroyed as also limited number of clusters of living beings are born and destroyed That is why this universe (*Lok*) is tangible, born, lost and transformed This (universe with aforesaid attributes) is defined and specially defined by (various states of) the non-living (matter etc) Is it not that because it is so defined (by evident reality) it is known as the universe (*Lok*) ?

(The ascetics—) Yes, *Bhante* ! It is so (*Bhagavan*—) That is why, O noble ones ! It is said that in this occupied space (Lok) with innumerable space-points there has been, there is and so on up to occurrence of dawning and fading of infinite days and nights (repeat the whole statement)

[3] Since that moment those senior ascetics (followers of Bhagavan Parshva Naath) accepted Shraman Bhagavan Mahavir to be all knowing and all seeing (omniscient)

१५. [१] **तए णं ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जमाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सप्पडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।**

[२] **'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह।'**

१५. [१] इसके पश्चात् उन (पार्श्वापत्य) स्थविर भगवन्तो ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार बोले- 'भगवन् ! चातुर्याम धर्म के बदले हम आपके पास प्रतिक्रमण सहित पचमहाव्रत रूप धर्म को स्वीकार करके विचरण करना चाहते है।'

[२] भगवन्–'देवानुप्रिय ! जिस प्रकार आपको सुख हो, वैसा करो, किन्तु प्रतिबन्ध (शुभ कार्य मे ढील) मत करो।'

15. [1] Then those senior ascetics (followers of Bhagavan Parshva Naath) paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir Doing that they submitted—*Bhante* ! Instead of our four limbed religion (*Chaturyam dharma*) we want to embrace the religion of five great vows (*Panch Mahavrat*) inclusive of *Pratikraman* (critical review) under your guidance, and move about

[2] Bhagavan—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good auspicious deed "

१६. **तए ण ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाव चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा जाव सव्वदुक्खप्पहीणा, अत्थेगइया देवा देवलोगेसु उववन्ना।**

१६. इसके पश्चात् वे पार्श्वापत्य स्थविर भगवन्त यावत् अन्तिम उच्छ्वास- नि श्वास के साथ सिद्ध हुए यावत् सर्वदु खो से प्रहीण (मुक्त) हुए और (उन्मे से) कई (स्थविर) देवलोको मे देवरूप मे उत्पन्न हुए।

16. In due course some of those senior ascetics (followers of Bhagavan Parshva Naath) and so on up to breathed their last to become *Siddhas* and so on up to terminated all misery And many of them (ascetics) were born as gods in divine realms

विवेचन · पार्श्वापत्य स्थविरो के प्रश्नो का आशय–(१) प्रथम प्रश्न का आशय यह है कि जो लोक असख्यात प्रदेश वाला है, उसमे अनन्त रात्रि–दिवस (काल), कैसे हो या रह सकते है ? (२) दूसरे प्रश्न का आशय यह है कि जब रात्रि–दिवस (काल) अनन्त है, तो परित्त कैसे हो सकते है ?

समाधान–उपर्युक्त दोनो प्रश्नो का समाधान इस प्रकार है–जगत् मे जीव दो प्रकार के है, **साधारण शरीरी**–एक शरीर मे अनन्त जीव, **प्रत्येक शरीरी**–एक शरीर मे एक जीव। साधारण शरीरी की अवस्था मे एक शरीर मे अनन्त जीव उत्पन्न होते है–मरते है। उनकी अपेक्षा से अनन्त रात–दिन उत्पन्न होते है और बीत

जाते है। प्रत्येक शरीरी की अपेक्षा से परिमित रात–दिन उत्पन्न होते है और बीत जाते है। इस प्रकार उक्त दोनो कथन परस्पर विरोधी नही, अपितु सापेक्ष है।

असख्येय प्रदेश वाले लोक मे अनन्त रात–दिन तथा अनन्त जीवो का होना उक्त अपेक्षा से सम्भव है।

साधारण शरीरी अनन्त पर्याय का समूह रूप होने से तथा असंख्येय प्रदेशो का पिण्ड रूप होने से 'जीव घन' कहलाते है, प्रत्येक शरीर वाले भूत–भविष्य काल की सतति की अपेक्षा रहित होने से पूर्वोक्त रूप से **'परित्त जीव घन'** कहलाते है।

चूँकि अनन्त और परित्त जीवो के सम्बन्ध से रात्रि–दिवसरूप कालविशेष भी अनन्त और परित्त कहलाता है, इसलिए अनन्त जीवरूप लोक के सम्बन्ध से रात्रि दिवस रूप कालविशेष भी अनन्त हो जाता है और परित्त जीवरूप लोक के सम्बन्ध से रात्रि–दिवस रूप कालविशेष भी परित्त हो जाता है। अत इन दोनो मे परस्पर विरोध नही है।

चातुर्याम एव सप्रतिक्रमण पचमहाव्रत धर्म–सर्वथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान और बहिद्धादान का त्याग **चातुर्याम धर्म** है, और सर्वथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह से विरमण **पचमहाव्रत** धर्म है। बहिद्धादान मे मैथुन और परिग्रह दोनो का समावेश हो जाता है। भरत और ऐरवत क्षेत्र के २४ तीर्थकरो मे से प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरो के सिवाय बीच के २२ तीर्थंकरो के शासन मे तथा महाविदेह क्षेत्र मे चातुर्याम प्रतिक्रमणरहित (कारण होने पर प्रतिक्रमण) धर्म प्रवृत्त होता है, किन्तु प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरो के शासन मे सप्रतिक्रमण पचमहाव्रत धर्म प्रवृत्त होता है। *(वृत्ति पत्राक २४४)*

Elaboration—The questions—(1) The first question by followers of Bhagavan Parshva Naath means that in the universe having innumerable space-points how can infinite days and nights (time) exist ? (2) The second question means that how can the number of days and nights be infinite and limited at the same time ?

The explanation of the answers to the aforesaid questions is as follows—In this world there are two categories of living beings (1) *Sadharan Shariri* (clustered life forms) having infinite souls or beings in a single body (2) *Pratyek Shariri* (individual life forms) having one soul in one body In the clustered state infinite beings are born and die within one body With reference to these, infinite days dawn and pass away With reference to individual life forms only limited number of days dawn and pass away Thus the aforesaid two statements are not contradictory but relative

Existence of infinite days-nights and infinite souls in the universe constituted of only innumerable space-points is not impossible in aforesaid context

As the *Sadharan Shariri* beings are clusters of infinite modes and lumps of innumerable ultimate particles they are called *jiva-ghan*

(clustered life forms) As the *Pratyek Sharıri* beings are free of the infinite modes of the past and future they are called *paritta jiva-ghan* (limited group of souls)

The number of units of time expressed as day-night follows the pattern of infinite and limited with reference to infinite and limited number of beings Thus with reference to universe with infinite beings the day-night units of time become infinite and with reference to universe with limited beings the day-night units of time become limited Therefore there is no contradiction in the two statements

Religions with four limbs and five great vows—Complete abstention from *praanatipaat* (killing), *mrishavaad* (falsity), *adattadaan* (taking without being given, stealing) and *bahiddhadaan* (material involvements including libido and possessions) is *Chaturyam dharma* (four limbed religion) Complete abstention from *praanatipaat* (killing), *mrishavaad* (falsity), *adattadaan* (taking without being given, stealing) *maithun* (libido) and *parigrah* (possessions) is *Panch Mahavrat dharma* (religion of five great vows) *Bahiddhadaan* covers both libido and possessions *Chaturyam dharma* without *Pratikraman* (done only if and when needed) prevails during the periods of influence of twenty two *Tirthankars* each of Bharat and Airavat areas, leaving aside the first and the last ones And during the periods of influence of the first and the last *Tirthankars* religion of five great vows with *Pratikraman* (critical review) prevails *(Vritti leaf 244)*

१७. [प्र] कइविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?

[उ] गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, त जहा–भवणवासी–वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिय भेएण। भवणवासी दसविहा, वाणमंतरा अट्ठविहा, जोइसिया पंचविहा, वेमाणिया दुविहा।

१७. [प्र] भगवन् ! देवगण कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! देवगण (देव निकाय) चार प्रकार के है, यथा–भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक। भवनवासी दस प्रकार के है। वाणव्यन्तर आठ प्रकार के है, ज्योतिष्क पाच प्रकार के है और वैमानिक दो प्रकार के है।

17. [Q.] *Bhante* ! How many types of *Dev-gan* (gods or divine realms) are there ?

[Ans.] Gautam ! There are four types of *Dev-gan* (gods or divine realms)—*Bhavan-vaasi* (abode dwelling), *Vaanavyantar* (interstitial), *Jyotishk* (stellar) and *Vaimanik* (celestial-vehicular) *Bhavan-vaasi*

(abode dwelling) are of ten kinds, *Vaanavyantar* (interstitial) are of eight kinds, *Jyotishk* (stellar) are of five kinds and *Vaimanik* (celestial-vehicular) are of two kinds

उपसहार रूप सग्रह गाथा **CONCLUSIVE COLLATIVE VERSE**

१८. किमियं रायगिहं ति य, उज्जोए अंधकार–समए य।
पासंतिवासि–पुच्छा, राइंदिय देवलोगा य॥

॥ पंचमसए : नवमो उद्देसओ समत्तो ॥

१८. [गाथार्थ–] यह राजगृह नगर क्या है ? दिन मे उद्योत और रात्रि मे अन्धकार क्यो होता है ? समय आदि काल का ज्ञान किन जीवो को होता है, किनको नही ? रात्रि–दिवस के विषय मे पार्श्वजिनशिष्यो के प्रश्न और देवलोक विषयक प्रश्न, इतने विषय इस नौवे उद्देशक मे कहे गए है।

॥ पंचम शतक . नवम उद्देशक समाप्त ॥

18. What is this Rajagriha city ? Why there is light during the day and darkness during the night ? Which of the beings have awareness of time and which do not ? Questions about day and night by followers of Bhagavan Parshva Naath and question about divine realms All these topics are included in this ninth lesson

● END OF THE NINTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

पंचम शतक : दशम उद्देशक
FIFTH SHATAK (Chapter Five) . TENTH LESSON

चम्पा-चन्द्रमा CHAMPA-CHANDRAMA (THE MOON IN CHAMPA)

१. तेणं कालेण तेणं समएणं चंपा णामं णयरी, जहा पढिमिल्लो उद्देसओ तहा णेयव्वो एसो वि, णवरं चदिमा भाणियव्वा।

॥ पंचमसए : दसमो उद्देसओ समत्तो ॥

१. उस काल और उस समय मे चम्पा नाम की नगरी थी। जैसे (पचम शतक का) प्रथम उद्देशक कहा है, उसी प्रकार यह उद्देशक भी कहना चाहिए। विशेषता यह है कि यहाँ 'चन्द्रमा' कहना चाहिए।

1. During that period of time there was a city named Champa As has been stated in the first lesson (of the fifth chapter) so should be repeated here (verbatim) Only difference being the use of the word '*Chandrama*'

विवेचन . पचम शतक के प्रथम उद्देशक मे वर्णित सूर्य के उदय-अस्त सम्बन्धी वर्णन की भाँति यहाँ चन्द्रमा का उदय अस्त वर्णन कहना चाहिए।

॥ पचम शतक दशम उद्देशक समाप्त ॥

॥ पचम शतक सम्पूर्ण ॥

Elaboration—Here the description of ascent and descent of the moon should be stated like the description of dawning and setting of the sun mentioned in the first lesson of the fifth chapter

● END OF THE TENTH LESSON OF THE FIFTH CHAPTER ●

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

छठा शतक : प्रथम उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : FIRST LESSON

वेदना VEDANA (PAIN)

प्रथम उद्देशक मे महावेदना और महानिर्जरा का विषय विभिन्न उदाहरणो से स्पष्ट किया गया है।

This first lesson contains explanation about extensive pain (*mahavedana*) and extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) using various examples

संग्रहणी गाथा COLLATIVE VERSE

१. वेयण १ आहार २ महस्सवे य ३ सपदेस ४ तमुयाए ५ भविए ६।
साली ७ पुढवी ८ कम्मअन्नउत्थि ९-१० दस छट्ठगम्मि सए॥१॥

१. (१) वेदना, (२) आहार, (३) महास्रव, (४) सप्रदेश, (५) तमस्काय, (६) भव्य, (७) शाली, (८) पृथ्वी, (९) कर्म, और (१०) अन्ययूथिक-वक्तव्यता, इस प्रकार छठे शतक मे ये दस उद्देशक है।

1. In the sixth chapter there are ten lessons as follows—(1) *Vedana* (Pain), (2) *Ahaar* (Intake), (3) *Mahasrava* (Extensive Influx), (4) *Sapradesh* (With Sections), (5) *Tamaskaaya* (Agglomerative Entity of Darkness), (6) *Bhavya* (Worthy to be Born), (7) *Shaali* (Paddy), (8) *Prithvi* (Hells), (9) *Karma*, and (10) *Anyayuthik* (Heretics)

वेदना एव निर्जरा के सम्बन्ध मे दृष्टान्त EXAMPLES OF PAIN AND SHEDDING

२. [प्र] से नूण भंते ! जे महावेयणे से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेयणे ? महावेयणस्स य अप्पवेयणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जे महावेयणे एवं चेव।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या यह निश्चित है कि जो महावेदना वाला है, वह महानिर्जरा वाला है और जो महानिर्जरा वाला है, वह महावेदना वाला है ? तथा क्या महावेदना वाला और अल्पवेदना वाला, इन दोनो मे वही जीव श्रेष्ठ है जो प्रशस्तनिर्जरा वाला है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! जैसा ऊपर कहा है, वैसा ही है।

2. [Q.] *Bhante* ! Is it for sure that one with extensive pain (*mahavedana*) is also with extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) and one with extensive shedding of *karmas* is also with extensive pain ? And among the two, the one with extensive pain and the one with little pain, is the soul that is with extensive shedding of *karmas* superior ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is as you have said

३. [प्र. १] छट्ठी–सत्तमासु णं भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेयणा ?

[उ] हंता, महावेयणा।

३. [प्र १] भगवन् ! क्या छठी और सातवी पृथ्वी (नरक) के नैरयिक महावेदना वाले है ?

[उ] हॉ गौतम ! वे महावेदना वाले है।

3. [Q. 1] *Bhante* ! Are the infernal beings (*nairayik*) of the sixth and the seventh *prithvi* (hell) with extensive pain ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They are with extensive pain

[प्र २] ते ण भते ! समणेहिंतो निग्गथेहिंतो महानिज्जरतरा ?

[उ] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र २] भगवन् ! तो क्या वे (छठी–सातवी पृथ्वी के नैरयिक) श्रमण–निर्ग्रन्थो की अपेक्षा भी महानिर्जरा वाले है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है। (अर्थात्–श्रमण–निर्ग्रन्थो की अपेक्षा महानिर्जरा वाले नही है।

[Q. 2] *Bhante* ! Does this mean that they (infernal beings of the sixth and seventh hell) are with extensive shedding of *karmas* even as compared with *shraman nirgranths* (ascetics) ?

[Ans.] No, Gautam ! That is not correct (they are not with greater shedding of *karmas* as compared with ascetics)

४. [प्र.] से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ जे महावेयणे जाव पसत्थनिज्जराए ?

[उ] गोयमा ! से जहानामए दुवे वत्थे सिया, एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे खजणरागरत्ते। एतेसि णं गोयमा ! दोण्हं वत्थाण कतरे वत्थे दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव ? कयरे वा वत्थे सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते ? जे वा से वत्थे खजणरागरत्ते ?

[प्र] भगव ! तत्थ ण जे से वत्थे कद्दमरागरत्ते से णं वत्थे दुद्धोयतराए चेव दुवामतराए चेव दुप्परिकम्मतराए चेव।

[उ] एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइं चिक्कणीकयाइं सिलिट्ठीकयाइं खिलीभूयाइ भवति; संपगाडं पि य ण ते वेयणं वेएमाणा नो महानिज्जरा, णो महापज्जवसाणा भवंति।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणी आउडेमाणे महया महया सद्देणं महया महया घोसेणं महया महया परपराघाएण नो संचाएति तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे वि पोग्गले परिसाडित्तए। एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं जाव नो महापज्जवसाणा भवति।

भगवं ! तत्थ जे से वत्थे खजणरागरत्ते से ण वत्थे सुद्धोयतराए चेव सुवामतराए चेव सुपरिकम्मतराए चेव।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं निट्ठियाइं कडाइं विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति। जावइयं तावइयं पि णं ते वेयणं वेएमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता, मसमसाविज्जति।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं, जाव महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदू जाव हंता, विद्धंसमागच्छति। एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाण जाव महापज्जवसाणा भवंति।

से तेणट्ठेण जे महावेदणे से महानिज्जरे जाव निज्जराए।

४. [प्र] भगवन् ! तब यह कैसे कहा जाता है कि जो महावेदना वाला है, वह महानिर्जरा वाला है, यावत् प्रशस्त निर्जरा वाला है ?

[उ] गौतम ! जैसे दो वस्त्र है। उनमे से एक **कर्दम** (कीचड) के रग से रगा हुआ है और दूसरा वस्त्र खजन (गाडी के पहिये के कीट) के रग से रगा हुआ है। गौतम ! इन दोनो वस्त्रो मे से कौन-सा वस्त्र दुर्धौततर (कठिनाई से धुलने योग्य), **दुर्वाम्यतर** (कठिनाई से उतारे जा सके, ऐसा) है और कौन-सा वस्त्र **सुधौततर** (जो सरलता से धोया जा सके), **सुवाम्यतर** (आसानी से जिसके दाग उतारे जा सके), तथा **सुपरिकर्मतर** (जिस पर चमक लाना और चित्रादि बनाना सरल) है, कर्दमरागरक्त या खजनरागरक्त ?

(गौतम) भगवन् ! उन दोनो वस्त्रो मे से जो कर्दम-रग से रगा हुआ है, वही (वस्त्र) दुर्धौततर, दुर्वाम्यतर एव दुष्परिकर्मतर है।

(भगवान) गौतम ! इसी तरह नैरयिको के पाप-कर्म **गाढीकृत** (गाढ बँधे हुए), **चिक्कणीकृत** (चिकने किये हुए), **शिलष्ट** (निधत्त किये हुए) एव **खिलीभूत** (निकाचित किये हुए) है, इसलिए वे सम्प्रगाढ वेदना को वेदते हुए भी महानिर्जरा वाले तथा महापर्यवसान वाले नही है।

अथवा जैसे कोई व्यक्ति प्रचण्ड शब्द के साथ महाघोष (ध्वनि) करता हुआ लगातार जोर-जोर से चोट मारकर एरण (अहरन) को (हथौडे से) कूटता-पीटता हुआ भी उस एरण के स्थूल पुद्गलो को विनष्ट करने मे समर्थ नही हो सकता, इसी प्रकार हे गौतम ! नैरयिको के पापकर्म गाढ किये हुए है, यावत् इसलिए वे महानिर्जरा एव महापर्यवसान वाले नही है।

(गौतम स्वामी ने पूछा) 'भगवन् ! उन दोनो वस्त्रो मे से जो खजन के रग से रगा हुआ है, वह वस्त्र सुधौततर, सुवाम्यतर और सुपरिकर्मतर है ?'

(भगवान ने कहा-) हाँ, गौतम ! इसी प्रकार श्रमण-निर्ग्रन्थो के **यथाबादर** (स्थूलतर कर्म पुद्गल, असार पुद्गल) कर्म, **शिथिलीकृत** (मन्द विपाक वाले), **निष्ठितकृत** (नि सत्व किये हुए), **विपरिणामित**

(जिस कर्म के स्थितिघात और रसघात मे परिवर्तन किया गया हो।) होते है। (इसलिए वे) शीघ्र ही विध्वस्त हो जाते है। जिस किसी भी वेदना को वेदते हुए श्रमण-निर्ग्रन्थ महानिर्जरा और महापर्यवसान वाले होते है।'

(भगवान ने पूछा-) हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष सूखे **तृणहस्तक** (घास के पूले) को धधकती हुई अग्नि मे डाल दे तो क्या वह सूखे घास का पूला धधकती आग मे डालते ही शीघ्र जल उठता है ?

(गौतम ने उत्तर दिया-) हॉ, भगवन् ! वह शीघ्र ही जल उठता है।

(भगवान ने कहा-) गौतम ! इसी तरह श्रमण-निर्ग्रन्थो के यथाबादर कर्म शीघ्र ही विध्वस्त हो जाते है, यावत् वे श्रमण-निर्ग्रन्थ महानिर्जरा एव महापर्यवसान वाले होते है।

(अथवा) जैसे कोई पुरुष अत्यन्त तपे हुए लोहे के तवे (या कडाह) पर पानी की बूँद डाले तो वह यावत् शीघ्र ही विनष्ट हो जाती है, इसी प्रकार, हे गौतम ! श्रमण-निर्ग्रन्थो के यथाबादर कर्म भी शीघ्र ही विध्वस्त हो जाते है और वे यावत् महानिर्जरा एव महापर्यवसान वाले होते है।

इसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि जो महावेदना वाला होता है, वह महानिर्जरा वाला होता है, यावत् वही श्रेष्ठ है जो प्रशस्तनिर्जरा वाला है।

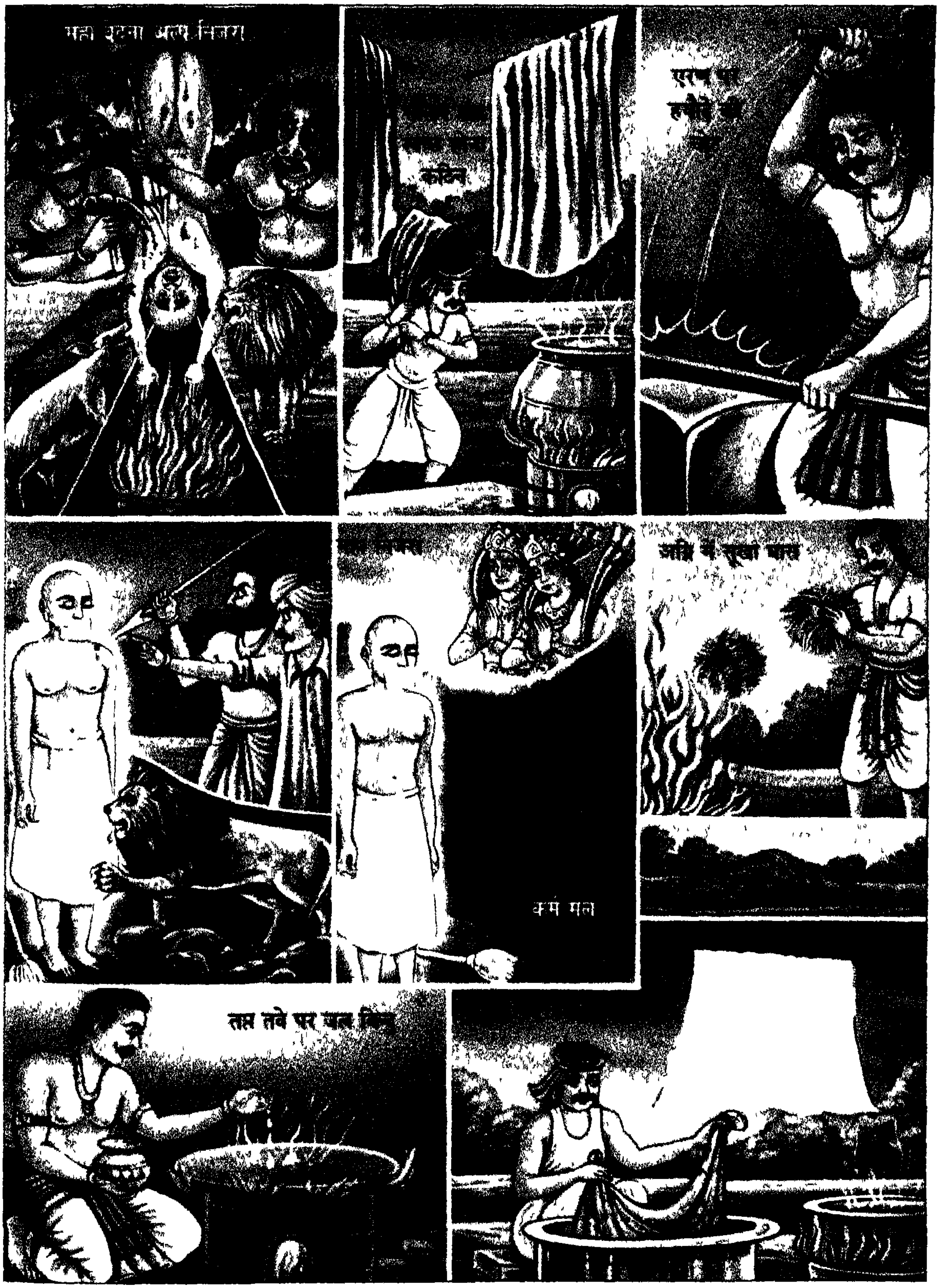
4. [Q.] *Bhante* ! Then why is it said that one with extensive pain (*mahavedana*) is also with extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) and so on up to with extensive shedding of *karmas* superior ?

[Ans.] Gautam ! Suppose there are two pieces of cloth One of these is soaked in slime (*kardam*) and the other in the dirt of a wheel (*khanjan*) Gautam ! Which one of these two pieces of cloth is more difficult to wash and more difficult to make free of stains, which one of these two is easier to wash, easier to make free of stains and easier to make sparkling (and paint)—the one soaked in slime or the one soaked in the dirt of a wheel ?

(Gautam) *Bhante* ! Of these the one soaked in slime is more difficult to wash, more difficult to make free of stains and more difficult to make sparkling

(*Bhagavan*) Gautam ! In the same way the demeritorious *karmas* (*paap-karma*) of the infernal beings (*nairayik*) are firmly adhered (*gaadhikrit*), smoothly fixed (*chikkanikrit*), assimilated (*shlisht*, partially intransigent or *nidhatt*) and fully fused (*khilibhoot*, intransigent or *nikachit*) Therefore, in spite of suffering intense agony they are neither with extensive shedding nor with a noble end (*mahaparyavasaan*)

Or suppose a man is continuously hammering an anvil with great force producing loud sound Even then he is not able to destroy the gross matter particles of that anvil In the same way the demeritorious


तप्त तवे पर
कर्म मल

चित्र परिचय-५	Illustration No. 5

वेदना और निर्जरा

(१) **महावेदना–अल्पनिर्जरा**–कुछ जीव पराधीनता के कारण अपने कृतकर्मों के अनुसार नरक आदि गतियों मे महाभयकर वेदना भोगते है। परन्तु आत्म विशुद्धि कारक कम निर्जरा की दृष्टि से उन नारको को अल्प निर्जरा ही होती है।

उदाहरण- जैसे कीचड मे गहरा रगा अत्यधिक मलिन वस्त्र बहुत परिश्रम करके धोने पर भी बहुत कम साफ होता है। अथवा एरण आदि पर हथोडे की चोट मारने पर भी उसके लोह परमाणु अत्यधिक सघन होने से बहुत अल्प मात्रा मे बिखरते है। इसी प्रकार उन नारक जीवो के सघन, सश्लिष्ट कर्म बन्ध होने के कारण वेदना भोगते हुए विलाप क्रन्दन करने के कारण आत्मा की विशुद्धि बहुत ही कम होती है। उनका मात्र अकाम निर्जरा ही होती है।

–(शतक ६ उ १ सूत्र २ .)

(२) इसके विपरीत जो समभावी श्रमण निर्ग्रन्थ होते है उनको कदाचित घोर उपसर्ग परीषह उत्पन्न होने पर वे अत्यधिक समभाव के साथ उन्हे सहन करते है। इस कारण उनकी आत्मा मे सलग्न कर्म रूपी मलिनता दूर होने पर महावेदना के साथ उन्हे महान कर्म निर्जरा भी होती है।

(i) उदाहरण जैसे आग मे सूखा घास डालने पर वह तुरन्त भस्म हो जाता है। (ii) जलते तवे पर पानी की बूंदे गिरते ही वे जल जाती है तथा (iii) हल्दी आदि हल्के रगो से मलिन वस्त्र धोने पर शीघ्र स्वच्छ हो जाता है। इसी प्रकार उनकी आत्म विशुद्धि शीघ्र ही होती है।

(शतक ६ उ १ सू ३ ४)

PAIN AND SHEDDING

(1) Extensive pain and little shedding—Depending on the acquired karmas, some beings suffer extensive pain during their birth in hell and other lowly genuses But in terms of the shedding leading to spiritual purity those infernal beings have little shedding of karmas

Example – In spite of working hard, effort to wash a dirty cloth made black by slime fails to make it completely clean In spit of hammering hard the densely packed molecules of an iron anvil hardly disintegrate In the same way the densely fused karmic bondage of infernal beings undergoes very little shedding and they gain very little spiritual purity when they suffer the agonizing pain wailing and weeping They only have involuntary shedding of karmas

Shatak 6, lesson 1 Sutra 2 3

(2) As against this, when the equanimous ascetics are faced with great affliction they endure it with great equanimity As a consequence the acquired karmic dirt attached to their soul is removed and this great suffering is followed by extensive shedding

Example—(i) Dry hay is at once turned to ashes when put in fire (ii) A drop of water falling on a hot platen at once evaporates (iii) A cloth with light stains gets completely clean on washing In the same way equanimous ascetics attain purity very soon

– *Shatak 6 lesson 1 Sutra 3 4*

karmas of infernal beings are firmly adhered (*gaadhikrit*) and so on up to they are neither with extensive shedding nor with a noble end (*mahaparyavasaan*)

(Gautam Swami asked) *Bhante* ! Of these, is the one soaked in the dirt of a wheel easier to wash, easier to make free of stains and easier to make sparkling ?

(*Bhagavan* replied) Yes, Gautam ! In the same way the gross (*yathabaadar*) karmic particles acquired by ascetics are loosely adhered (*shithilikrit*, having low intensity of fruition), devoid of potency (*nishthitkrit*) and transformed (*viparinamit*, in terms of duration and quality) Therefore, they are destroyed easily and soon Whatever agony they suffer, ascetics are with extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) and with a noble end (*mahaparyavasaan*)

(*Bhagavan* asked) Gautam ! If a person throws a bundle of hay (*trinahastak*) in blazing fire, is that bundle of hay not aflame at once and soon consumed by that fire ?

(Gautam replied) Yes, *Bhante* ! It is aflame at once and soon consumed by that fire

(Bhagavan said) Gautam ! In the same way the gross (*yathabaadar*) *karmas* of ascetics are soon destroyed and so on up to these ascetics are with extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) and with a noble end (*mahaparyavasaan*)

Also, if some person pours a drop of water on a red-hot iron platen or pan it at once evaporates Gautam ! In the same way the gross *karmas* of ascetics are soon destroyed and so on up to these ascetics are with extensive shedding of *karmas* and with a noble end

That is why it is said that one with extensive pain (*mahavedana*) is also with extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) and so on up to one with extensive shedding of *karmas* superior

विवेचन महावेदना और महानिर्जरा–कर्म की दो अवस्थाएँ होती है–गाढीकृत और शिथिलीकृत। गाढीकृत अवस्था मे अधिक कष्ट सहने पर भी निर्जरा अल्प होती है, जबकि शिथिलीकृत अवस्था मे अल्प कष्ट सहने पर भी निर्जरा अधिक होती है।

भगवान ने कीचड से रगे और खजन से रगे, वस्त्र के दृष्टान्त द्वारा बताया है जो महावेदना वाले होते है, वे सभी महानिर्जरा वाले नही होते। जैसे नारक महावेदना वाले होते है, परन्तु वे उसे समभाव से न सहकर रो–रोकर, विलाप करते हुए सहते है, जिससे वह महावेदना महानिर्जरा रूप नही होती, बल्कि अल्पतर,

अप्रशस्त, अकामनिर्जरा होकर रह जाती है। इसके विपरीत श्रमण-निर्ग्रन्थ बडे-बडे उपसर्गों व परीषहो का समभाव से सहन करने के कारण महानिर्जरा और वह भी प्रशस्तनिर्जरा कर लेते है।

श्रमण-निर्ग्रन्थो के कर्म शिथिल बन्धन वाले सुविशोध्य होते है, जिन्हे वे शीघ्र ही स्थितिघात और रसघात आदि के द्वारा विपरिणाम वाले कर देते है। अतएव वे शीघ्र विध्वस्त हो जाते है। इसके लिए तीन उदाहरण दिये गये है, खजन-अर्थात् सामान्य कीचड का दाग-धब्बा जैसे शीघ्र ही धुल जाता है, तथा जिस प्रकार से सूखे घास का पूला अग्नि मे डालते ही तथा तपे हुए तवे पर पानी की बूँद डालते ही विनष्ट हो जाते है, वैसे ही श्रमणो के कर्म शीघ्र नष्ट हो जाते है।

गाढ बधन से बँधे कर्मों के लिए भी दो उदाहरण दिये है, जैसे कर्दम (चिकने कर्दम का पक्का रग) से रगा वस्त्र मुश्किल से साफ होता है, तथा एरण को लोह के हथोडे से जोर-जोर से कूटने पर भी उसके स्थूल पुद्गल नष्ट नही होते इसी प्रकार गाढ, सचिक्कण बधे कर्म दुर्विशोध्य होते है।

Elaboration—Extensive pain and shedding—There are two states of bonded *karmas*—firmly adhered (*gaadhikrit*) and loosely adhered (*shithilikrit*, having low intensity of fruition) In the state of a firm bond shedding is little in spite of great suffering whereas in the state of a loose bond shedding is extensive in spite of little suffering

By giving the example of cloth with stains of slime and dirt *Bhagavan* has explained that all those suffering great pain are not necessarily with extensive shedding For example the infernal beings are with extensive pain, but they do not endure the pain with equanimity, instead they suffer that pain weeping and wailing As a consequence the shedding is not extensive but very little, ignoble and non-voluntary On the other hand ascetics endure great afflictions and torments with equanimity As a result their shedding is extensive and noble

The *karmic* bonds of *Shraman Nirgranths* (ascetics) are loose and easily removable The ascetics soon transform them through the process of curtailing duration and intensity of these *karmas* As a consequence they are destroyed quickly Three examples have been mentioned here in this regard—as the stain of common dirt (*khanjan*) is removed easily, as a bundle of hay is destroyed the moment it is thrown in fire; and as a drop of water evaporates when poured on a red hot platen, in the same way the *karmas* of ascetics are soon destroyed

Two examples have also been given for strong bonds of *karmas*—as a fast stain of slime is removed with great difficulty, and as an anvil hammered with great force does not disintegrate easily, in the same way the strongly bound *karmas* are destroyed with great difficulty

विशेष शब्दो की व्याख्या—गाढीकयाइ = जो कर्म डोरी से मजबूत बाँधी हुई सुइयो के ढेर के समान आत्म-प्रदेशो के साथ गाढ बँधे हुए है। **चिक्कणीकयाइ** = मिट्टी के चिकने बर्तन के समान सूक्ष्म-कर्मस्कन्धो के रस के साथ परस्परगाढ बन्ध वाले, दुर्भेद्य कर्मों को चिकने किये हुए कर्म कहते है। **सिलिट्ठीकयाइ** = रस्सी से दृढतापूर्वक बाँधकर आग मे तपाई हुई सुइयो का ढेर जैसे परस्पर चिपक जाता है, वे सुइयाँ एकमेक हो जाती है, उसी तरह जो कर्म परस्पर चिपक गये है, ऐसे निधत्त कर्म। **खिलीभूयाइ** = खिलीभूत कर्म, वे निकाचित कर्म होते है, जो बिना भोगे, किसी भी अन्य उपाय से क्षीण नही होते। *(वृत्ति पत्राक २५१)*

आचार्य उमास्वाति ने प्रशस्त अध्यवसायो को आधार मानकर निर्जरा की तरतमता बताते हुए कहा है, मिथ्यात्वी से सम्यग्दृष्टि को असख्य गुनी निर्जरा होती है। उससे श्रावक को, श्रावक सयत के क्रमश क्षीणमोह, जिन के असख्येय गुनी निर्जरा होती है।

TECHNICAL TERMS

Gaadhikayaim or *gaadhikrit* (firmly adhered)—the *karmas* that are tightly tied to soul space-points like a bunch of needles strongly tied with a thread *Chikkanikayaim* or *chikkanikrit* (smoothly fixed)—hard to penetrate *karmas* that are smoothly fixed due to their intensity just like an impervious glazed earthen pot *Silitthikayaim* or *shlisht-krit* (assimilated)—partially intransigent or *nidhatt karmas* like a bunch of needles heated in fire and partially fused *Khilibhuyaim* or *khilibhoot* (fully fused)—these are the intransigent or *nikachit karmas* that cannot be destroyed without fruition and suffering *(Vritti leaf 251)*

Assuming noble endeavour to be the basis of purification, Acharya Umasvati has given the progression of shedding of *karmas* According to him the shedding by a righteous layman is innumerable times more than that by an unrighteous person, that by a *Shravak* (layman observing the prescribed code of conduct) is innumerable times more than that by righteous layman, and so on up to the absolutely detached one (*Jina*)

करण की अपेक्षा साता—असाता—वेदन EXPERIENCE IN CONTEXT OF KARAN

५. [प्र.] कइविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे।

५. [प्र] भगवन् ! करण कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! करण (जीव का वीर्य या प्रवृत्ति) चार प्रकार के है। यथा-मनकरण, वचनकरण, कायकरण और कर्मकरण।

विशेष . जिनसे क्रिया की जाये, वह करण है। प्रवृत्ति के हेतुभूत जीव की 'वीर्य' शक्ति को करण कहते है। वेदना का मुख्य कारण करण ही है।

5. [Q.] *Bhante* ! How many are the kinds of *karan* (instrument or means) ?

[Ans.] Gautam ! There are four kinds of *karan* (instrument or means of indulgence)—*man-karan* (mind-instrument), *vachan-karan* (speech-instrument), *kaayakaran* (body-instrument) and *karmakaran* (*karma*-instrument)

Note : That which is instrumental in action is called *karan* The potency of a being or soul that is the cause of its intent of indulgence is called *karan* The main cause of sufferance is this *karan*

६. [प्र] णेरइयाण भंते ! करणे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। एवं पंचेदियाण सव्वेसि चउव्विहे करणे पण्णत्ते। एगिंदियाणं दुविहे—कायकरणे य कम्मकरणे य। विगलेदियाणं वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे।

६. [प्र] भगवन् ! नैरयिक जीवो के कितने प्रकार के करण होते है ?

[उ] गौतम ! नैरयिक जीवो के चार प्रकार के करण होते है। यथा–मनकरण, वचनकरण, कायकरण और कर्मकरण। इसी प्रकार पचेन्द्रिय जीवो के ये चार प्रकार के करण होते है। एकेन्द्रिय जीवो के दो प्रकार के करण होते है–कायकरण और कर्मकरण। विकलेन्द्रिय जीवो के तीन प्रकार के करण होते है-वचनकरण, कायकरण और कर्मकरण।

6. [Q.] *Bhante* ! How many types of *karans* infernal beings have ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings have four types of *karan*—mind-instrument, speech-instrument, body-instrument and *karma*-instrument In the same way five-sensed beings also have the said four types of *karan* One-sensed beings have two types of *karan*—*kaayakaran* (body-instrument) and *karmakaran* (*karma*-instrument) Two to four-sensed beings (*vikalendriya jivas*) have three types of *karan*—*vachan-karan* (speech-instrument), body-instrument and *karma*-instrument

७. [प्र. १] नेरइयाणं भते ! किं करणओ वेदणं वेदेति ? अकरणओ वेदणं वेदेंति ?

[उ.] गोयमा ! नेरइयाणं करणओ वेदणं वेदेति, नो अकरणओ वेदणं वेदेति।

७. [प्र १] भगवन् ! नैरयिक जीव करण से असातावेदना वेदते है अथवा अकरण से असातावदेना वेदते है ?

[उ] गौतम ! नैरयिक जीव करण से असातावेदना वेदते है, अकरण से असातावेदना नही वेदते।

7. [Q. 1] *Bhante* ! Do infernal beings have unpleasant experience through *karan* (instrument) or do they have unpleasant experience through *akaran* (without instrument) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings have unpleasant experience through instrument and they do not have unpleasant experience without instrument

[प्र. २] से केणट्ठेणं ?

[उ.] गोयमा ! नेरइयाणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएण चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणओ असाय वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ, से तेणट्ठेणं०।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ?

[उ] गौतम ! नैरयिक जीवो के चार प्रकार के करण होते है, जैसे कि मनकरण, वचनकरण, कायकरण और कर्मकरण। उनके ये चारो ही प्रकार के करण अशुभ होने से वे करण द्वारा असातावेदना वेदते है, अकरण द्वारा नही। इस कारण से ऐसा कहा गया है कि नैरयिक जीव करण से असातावेदना वेदते है, अकरण से नही।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings have four types of *karan—man-karan* (mind-instrument), *vachan-karan* (speech-instrument), *kaayakaran* (body-instrument) and *karmakaran* (*karma*-instrument) With them all these four *karans* are ignoble, so they have unpleasant experience through these ignoble *karans* only and not through *akaran* That is why it is said that infernal beings have unpleasant experience through *karan* (instrument) and not through *akaran* (without instrument)

८. [प्र. १] असुरकुमारा णं किं करणओ, अकरणओ ?

[उ.] गोयम ! करणओ, नो अकरणओ।

८. [प्र १] असुरकुमार देव क्या करण से सातावेदना वेदते है, अथवा अकरण से ?

[उ.] गौतम ! असुरकुमार करण से सातावेदना वेदते है, अकरण से नही।

8. [Q. 1] *Bhante* ! Do Asur Kumar gods have pleasant experience through *karan* or through *akaran* ?

[Ans.] Gautam ! Asur Kumar gods have pleasant experience through *karan* (instrument) and not through *akaran* (without instrument)

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते !

[उ.] गोयमा ! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं सुभेणं करणेणं असुरकुमारा णं करणओ सायं वेदणं वेदेति, नो अकरणओ।

९. एवं जाव थणियकुमारा।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! असुरकुमारो के चार प्रकार के करण है। यथा--मनकरण, वचनकरण, कायकरण और कर्मकरण। असुरकुमारो के ये चारो करण शुभ होने से वे करण से सातावेदना वेदते है, किन्तु अकरण से नही।

९. इसी तरह (नागकुमार से लेकर) स्तनितकुमार तक कहना चाहिए।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! Asur Kumar gods have four types of *karan*—mind-instrument, speech-instrument, body-instrument and *karma*-instrument With them all these four *karans* are noble, so they have pleasant experience through these and not through *akaran*

9. The same should be repeated for Stanit Kumar gods (starting from Naag Kumar gods)

१०. [प्र] पुढविकाइयाण एवामेव पुच्छा।

[उ.] नवर इच्चेएणं सुभासुभेण करणेणं पुढविकाइया करणओ वेमायाए वेदणं वेदेति, नो अकरणओ।

११. ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेण वेमायाए। १२. देवा सुभेणं साय।

१०. [प्र] भगवन् ! क्या पृथ्वीकायिक जीव करण द्वारा वेदना वेदते है, या अकरण द्वारा।

[उ.] गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव करण द्वारा वेदना वेदते है, किन्तु अकरण द्वारा नही। विशेष यह है कि इनके ये करण शुभाशुभ होने से ये करण द्वारा विमात्रा से (विविध प्रकार से) वेदना वेदते है, किन्तु अकरण द्वारा नही। अर्थात्–पृथ्वीकायिक जीव शुभकरण होने से सातावेदना वेदते है और कदाचित् अशुभ करण होने से असातावेदना वेदते है।

११. औदारिक शरीर वाले सभी जीव अर्थात् पॉच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यचपचेन्द्रिय और मनुष्य, शुभाशुभ करण द्वारा विमात्रा से वेदना (कदाचित् सातावेदना और कदाचित् असातावेदना) वेदते है। १२. देव (चारो प्रकार के देव) शुभ करण द्वारा सातावेदना वेदते है।

10. [Q.] *Bhante* ! Do Earth-bodied beings have experience through *karan* (instrument) or through *akaran* (without instrument) ?

[Ans.] Gautam ! Earth-bodied beings have experience through instrument and not without instrument However, the difference in their case is that they have both noble and ignoble *karans* (instruments) resulting in diverse experiences through *karan* and not through *akaran* This means that earth-bodied beings have pleasant experience when the *karan* is noble and unpleasant experience when the *karan* is ignoble

11. All beings with *Audarik Sharira* or gross physical body (this includes five kinds of immobile beings, two to four sensed beings, five sensed animals and human beings) have diverse experiences (sometimes pleasant and sometimes unpleasant) through noble and ignoble *karans* 12. Gods of all the four kinds have pleasant experience through noble *karans*

जीवो मे वेदना और निर्जरा SUFFERING AND SHEDDING IN JIVAS

१३. [प्र १] जीवा णं भंते ! किं महावेयणा महानिज्जरा ? महावेयणा अप्पनिज्जरा ? अप्पवेयणा महानिज्जरा ? अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?

[उ.] गोयमा ! अत्थेगइया जीवा महावेयणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा महावेयणा अप्पनिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेयणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा।

१३. [प्र १] भगवन् ! (१) जीव, (क्या) महावेदना और महानिर्जरा वाले है, (२) महावेदना और अल्पनिर्जरा वाले है, (३) अल्पवेदना और महानिर्जरा वाले है, अथवा (४) अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले है ?

[उ] गौतम ! (१) कितने ही जीव महावेदना और महानिर्जरा वाले है, (२) कितने ही जीव महावेदना और अल्पनिर्जरा वाले है, (३) कई जीव अल्पवेदना और महानिर्जरा वाले है, तथा (४) कई जीव अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले है।

13. [Q. 1] *Bhante* ! (1) Are living beings (*jiva*) with extensive pain (*mahavedana*) and extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*), (2) with extensive pain and little shedding of *karmas* (*alpanirjara*), (3) with little pain (*alpavedana*) and extensive shedding of *karmas*, or (4) with little pain and little shedding of *karmas* ?

[Ans.] Gautam ! (1) Some living beings (*jiva*) are with extensive pain (*mahavedana*) and extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*), (2) some with extensive pain and little shedding of *karmas* (*alpanirjara*), (3) some with little pain and extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*), and (4) some with little pain (*alpavedana*) and little shedding of *karmas* (*alpanirjara*) ?

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते !

[उ.] गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेयणे महानिज्जरे। छट्ठ–सत्तमासु पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा। सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे अप्पवेदणे महानिज्जरे। अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है ?

[उ] गौतम ! प्रतिमा-प्रतिपन्न (प्रतिमाधारी) अनगार महावेदना और महानिर्जरा वाला होता है। छठी-सातवी नरक-पृथ्वियो के नैरयिक जीव महावेदना वाले, किन्तु अल्पनिर्जरा वाले होते है। शैलेशी अवस्था को प्राप्त अनगार अल्पवेदना और महानिर्जरा वाले होते है। तथा अनुत्तरौपपातिक देव अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले होते है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said to be so ?

[Ans.] Gautam ! An ascetic observing *pratimas* (special codes and resolutions) is with extensive pain (*mahavedana*) and extensive shedding of *karmas* (*mahanirjara*) Infernal beings of the sixth and seventh hells are with extensive pain and little shedding of *karmas* (*alpanirjara*) Ascetics having attained the *Shaileshi* (rock-like steady) state are with little pain (*alpavedana*) and extensive shedding of *karmas*, and divine beings of the *Anuttaropapatik* realm are with little pain and little shedding of *karmas*

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

उपसंहार रूप CONCLUDING VERSE

१४. महावेयणे य वत्थे कद्दम-खंजणमए य अधिकरणी।
तणहत्थेऽयकवल्ले करण महावेदणा जीवा॥१॥

सेवं भंते ! सेव भते ! ति०।

॥ छट्ठ सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

१४. महावेदन, कर्दम और खजन के रग से रगे हुए वस्त्र, अधिकरणी (एरण), घास का पूला (तृणहस्तक), लोहे का तवा या कडाह, करण और महावेदना वाले जीव, इतने विषयो का निरूपण इस प्रथम उद्देशक मे किया गया है।

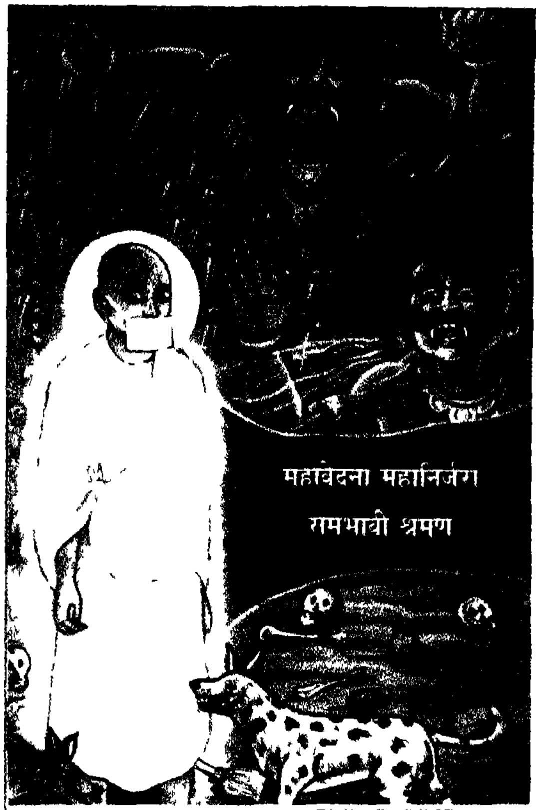
हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है।

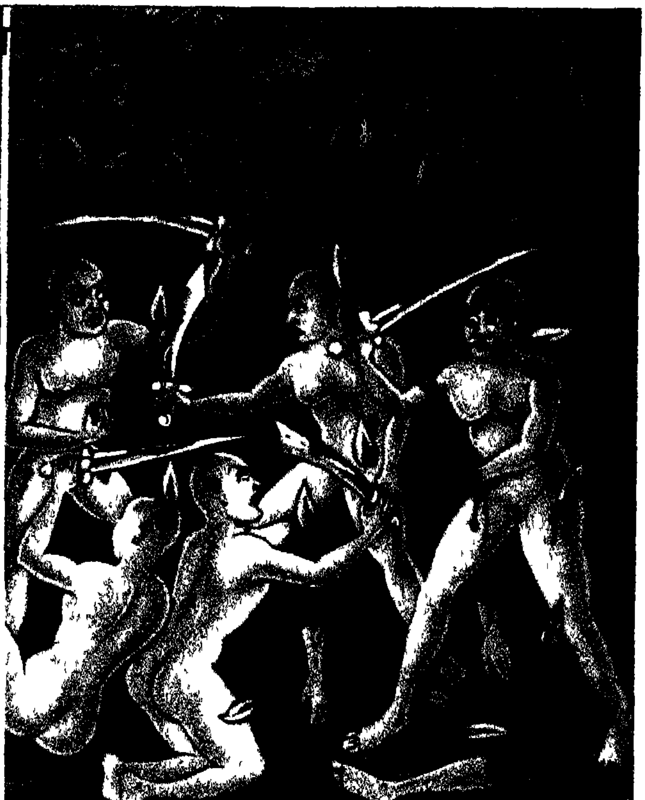
॥ छठा शतक प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

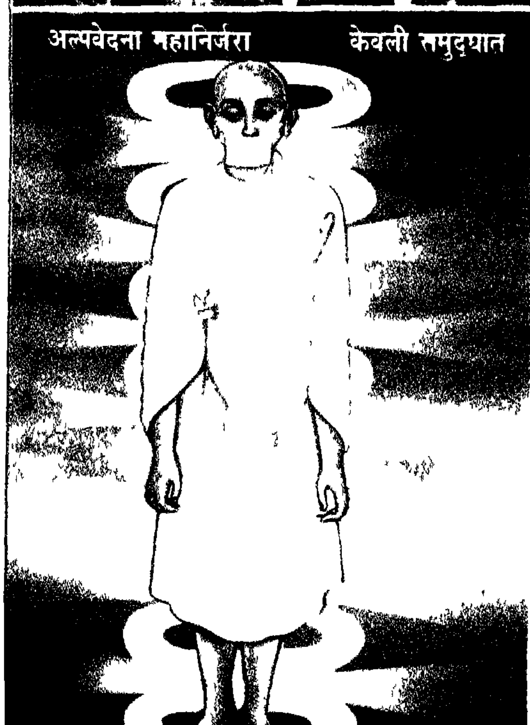
14. Extensive pain (*mahavedan*), pieces of cloth stained with slime (*kardam*) and dirt (*khanjan*), anvil (*adhikarani* or *airun*), bundle of hay (*trinahastak*), iron platen or pan, instrument (*karan*) and living beings with extensive pain are the topics discussed in this first lesson

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

● END OF THE FIRST LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●


महावेदना महानिर्जरा
समभावी श्रमण




अल्पवेदना महानिर्जरा
केवली समुद्घात



चित्र परिचय-६

Illustration No. 6

वेदना और निर्जरा की चौभंगी

१ **महावेदना–महानिर्जरा**–कुछ जीव जैसे प्रतिमाधारी अणगार, उन्हे अनेक प्रकार के घोरातिघोर उपसर्ग उत्पन्न होने पर वे पूर्ण समता व समाधि पूर्वक उसे सहन कर महावेदना महानिर्जरा करते है।

२ **महावेदना–अल्पनिर्जरा**–कुछ जीव जैसे छठी सातवी नरक के नैरयिक अनेक प्रकार की महावेदना तो भोगते है, परन्तु साथ मे आर्त रौद्र ध्यान रहने से उनकी आत्म शुद्धि नहीवत् रहती है। वे महावेदना अल्पनिर्जरा करते है।

३ **अल्पवेदना–महानिर्जरा**–कुछ आत्माएँ जैसे शैलेशी अवस्था प्राप्त अणगार (१४वे गुणस्थानवर्ती केवली) समुद्घात आदि करके कर्मो की महानिर्जरा करते है, परन्तु इस अवस्था मे उनको अल्पवेदना ही होती है।

४ **अल्प वेदना–अल्पनिर्जरा**– जैसे अनुत्तरोपपातिक देवो की वेदना भी अल्प होती है और कर्मनिर्जरा भी अल्प होती है।

शतक ६ उ. १ सूत्र १३

FOUR ALTERNATIVES OF PAIN AND SHEDDING

(1) Extensive pain and extensive shedding—An ascetic observing pratimas endures extensive pain (mahavedana) with equanimity and thereby has extensive shedding of karmas (mahanirjara).

(2) Extensive pain and little shedding—Infernal beings of the sixth and seventh hells suffer extensive pain but with grief and anger and thereby have little shedding of karmas (alpanirjara) and hardly any spiritual purity.

(3) Little pain and extensive shedding—Ascetics having attained the Shaileshi (rock-like steady) state (Kevali at 14th Gunasthan) are with little pain (alpavedana) and extensive shedding of karmas through Samudghat.

(4) Little pain and little shedding—Divine beings of the Anuttaropapatik realm are with little pain and little shedding of karmas.

– Shatak 6 lesson 1 Sutra 13

छठा शतक : द्वितीय उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : SECOND LESSON

आहार AHAAR (INTAKE)

आहार के सम्बन्ध मे कथन STATEMENT ABOUT INTAKE

१. रायगिहं नगर जाव एवं वयासी—आहारुद्देसो जो पण्णवणाए सो सव्वो निरवसेसो नेयव्वो।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।

॥ छट्ठे सए : बीओ उद्देसो समत्तो ॥

१. राजगृह नगर मे यावत् भगवान महावीर ने इस प्रकार फरमाया-यहाँ प्रज्ञापनासूत्र (२८वे आहारपद) के प्रथम उद्देशक के अनुसार ग्यारह प्रश्न और उनके उत्तर जान लेना चाहिए।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है'।

1. In Rajagriha city and so on up to Bhagavan Mahavir said thus—Here the eleven questions and answers from the first lesson of the 28th chapter titled *Ahaar-pad* of *Prajnapana Sutra* should be quoted verbatim

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन प्रज्ञापनासूत्र के २८वे आहारपद के प्रथम उद्देशक मे क्रमश उक्त ११ अधिकारो मे वर्णित विषय इस प्रकार है–

१ पृथ्वीकाय आदि जीव जो आहार करते है, क्या वह सचित्त है, अचित्त है या मिश्र है ?

२ नैरयिक आदि जीव आहारार्थी है या नही ?

३ किन जीवो को कितने-कितने काल से, कितनी–कितनी बार आहार की अभिलाषा उत्पन्न होती है ?

४ कौन–से जीव किस प्रकार के पुद्‌गलो का आहार करते है ?

५ आहार करने वाला अपने समग्र शरीर द्वारा आहार करता है, या अन्य प्रकार से ?

६ आहार के लिए ग्रहीत पुद्‌गलो के कितने भाग का आहार किया जाता है ? इत्यादि।

७ मुँह मे खाने के लिए रखे हुए सभी पुद्‌गल खाये जाते है या कितने ही गिर जाते हैं। इसका स्पष्टीकरण।

८ खायी हुई वस्तुएँ किस–किस रूप मे परिणत होती है ?

९ एकेन्द्रियादि जीवो के शरीरो को खाने वाले जीवो से सम्बन्धित वर्णन।

१० रोमाहार से सम्बन्धित विवेचन।

११ मन द्वारा तृप्त हो जाने वाले मनोभक्षी देवो से सम्बन्धित तथ्यो का निरूपण।

वही पर इन प्रश्नो का उत्तर भी दिया गया है, जैसा प्रथम प्रश्न के उत्तर मे कहा है, नैरयिक जीव सचित्ताहारी या मिश्रआहारी नही है। वे अचित्ताहारी है।

॥ छठा शतक द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—The topics detailed in the aforesaid eleven questions from the first lesson of the 28th chapter titled *Ahaar-pad* of *Prajnapana Sutra* are as follows—

1 Is the food intake by living beings including earth-bodied beings *sachitt* (infested with living organisms), *achitt* (free of living organisms), or mixed ?

2 Do the infernal beings have food intake or not ?

3 Which living beings have desire of food intake, how many times, and after what intervals ?

4 Which living beings have intake of what kinds of matter particles ?

5 Does a being have food intake through its whole body or otherwise ?

6 What portion of the acquired matter is consumed ? etc

7 Clarification of whether all the quantity of food placed in mouth is eaten or some of it falls down

8 What way the consumed matter is transformed ?

9 Description about living beings that consume other living beings including one-sensed beings

10 Elaboration of the process of intake through body-pores

11 Description of facts related to divine beings that consume through mind and get sated

All these questions are with answers For example the answer to the first question is—Infernal beings have intake of *achitt* (free of living organisms) things and not *sachitt* (infested with living organisms) or mixed things

● END OF THE SECOND LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : तृतीय उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : THIRD LESSON

महास्रव MAHASRAVA (EXTENSIVE INFLUX)

संग्रहणी गाथाएँ **COLLATIVE VERSES**

१. बहुकम्म १ वत्थपोग्गल पयोगसा वीससा य २ साइए ३।
कम्मट्ठिति–त्थि ४–५ संजय ६ सम्मद्दिट्ठी ७ य सण्णी ८ य ॥१॥
भविए ९ दंसण १० पज्जत्त ११ भासय १२ परित्त १३ नाण १४ जोगे १५ य।
उवओगा–ऽऽहारग १६–१७ सुहुम १८ चरिम १९ बंधे य, अप्पबहुं २० ॥२॥

१. (१) बहुकर्म, (२) वस्त्र मे प्रयोग से और स्वाभाविक रूप से पुद्‌गल, (३) सादि (आदि सहित), (४) कर्मस्थिति, (५) स्त्री, (६) सयत, (७) सम्यग्दृष्टि, (८) सज्ञी, (९) भव्य, (१०) दर्शन, (११) पर्याप्त, (१२) भाषक, (१३) परित्त, (१४) ज्ञान, (१५) योग, (१६) उपयोग, (१७) आहारक, (१८) सूक्ष्म, (१९) चरम-बन्ध, और (२०) अल्पबहुत्त्व, (इन बीस विषयो का वर्णन इस उद्देशक मे किया गया है।

1. (1) *Bahukarma* (Many *Karmas*), (2) Synthetic and natural matter in cloth, (3) *Saadi* (With a Beginning), (4) *Karmasthiti* (Duration of *Karma*), (5) *Stree* (Women), (6) *Samyat* (Restrained), (7) *Samyagdrishti* (Righteous), (8) *Sanjni* (Sentient), (9) *Bhavya* (Worthy of Liberation), (10) *Darshan* (Perception), (11) *Paryapt* (Fully Developed), (12) *Bhashak* (Capable of Speech), (13) *Paritta* (Limited), (14) *Jnana* (Knowledge), (15) *Yoga* (Association), (16) *Upayog* (Involvement), (17) *Ahaarak* (Having Intake), (18) *Sukshma* (Minute), (19) *Charam* (Final) and (20) *Alpabahutva* (Minimum-maximum) These twenty topics have been discussed in this lesson

१ प्रथम द्वार महाकर्मा और अल्पकर्मा
FIRST PORT (DVAR) · WITH MORE KARMAS AND WITH LESS KARMAS

२. [प्र. १] से नूणं भंते ! महाकम्मस्स महाकिरियस्स महासवस्स महावेदणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति, सव्वओ पोग्गला उवचिज्जंति, सया समियं च णं पोग्गला बज्झंति, सया समियं पोग्गला चिज्जंति, सया समियं पोग्गला उवचिज्जंति, सया समियं च णं तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए, अहत्ताए, नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताए, नो सुहत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ ?

[उ.] हंता, गोयमा ! महाकम्मस्स तं चेव।

२. [प्र. १] भगवन् ! क्या महाकर्म वाले, महाक्रिया वाले, महाआस्रव वाले और महावेदना वाले जीव के सर्वत –(सभी प्रदेशो से और सभी प्रकार से) पुद्गलो का बन्ध होता है ? सर्वत पुद्गलो का चय होता है ? सर्वत पुद्गलो का उपचय होता है ? सदा सतत पुद्गलो का बन्ध होता है ? सदा सतत पुद्गलो का चय होता है ? सदा सतत पुद्गलो का उपचय होता है ? क्या सदा निरन्तर उसका आत्मा (सशरीर जीव) वीभत्सता मे दुर्वर्णता मे, दुर्गन्धता मे, दु रसता मे, दु स्पर्शता मे, **अनिष्टता**–(इच्छा से विपरीतरूप) मे, **अकान्तता**–(असुन्दरता), अप्रियता, अशुभता, अमनोज्ञता और अकमनीयता से अवाछनीयता मे, **अनभिध्यितता** (जिसे प्राप्त करने मे अरुचि हो) मे, अधमता मे, **अनूर्ध्वता** (नीचता) मे, दु खरूप मे–असुखरूप मे बार बार परिणत होता है ?

[उ] हॉ, गौतम ! महाकर्म वाले जीव के ऊपर कहे अनुसार ही आत्मा का परिणमन होता है।

2. [Q. 1] *Bhante* ! Do living beings with extensive *karmas* (*mahakarmaa*), extensive activity (*mahakriya*) and extensive influx (*mahashrava*) get bonded with matter particles through all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do they assimilate (*chaya*) matter particles through all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do they augment (*upachaya*) matter particles through all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do they get bonded with matter particles always and continuously (*sada-satat*) ? Do they assimilate (*chaya*) matter particles always and continuously (*sada-satat*) ? Do they augment (*upachaya*) matter particles always and continuously (*sada-satat*) ? Does his soul (embodied soul) continue to transform time and again into grotesqueness (*vibhatsata*), repulsive colour (*durvarnata*), repulsive smell (*durgandhata*), repulsive taste (*duhrasata*), repulsive touch (*duhsparshata*), into something that is *anisht* (undesirable), *akaant* (not beautiful), *apriya* (not lovable), *ashubha* (ignoble), *amanojna* (not attractive), *akamaniya* (not adorable), *avaanchhaniya* (not covetable), abhorrence (*anabhidhyatata*), vileness (*adhamata*), abjectness (*anurdhvata*), and states of misery and unhappiness ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Living beings with extensive *karmas* (*mahakarmaa*) undergo transformation as you have said

[प्र. २] से केणट्ठेणं ?

[उ.] गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहयस्स वा धोयस्स वा तंतुग्गयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति जाव परिणमंति, से तेणट्ठेणं०।

[प्र २] (भगवन् !) किस कारण से ऐसा कहा है ?

[उ.] गौतम ! जैसे कोई **अहत**-(बिना पहना हुआ), **धौत**-(पहनने के बाद धोया हुआ), और **तन्तुगत**-(ताजा बुनकर उतरा हुआ) वस्त्र हो, वह वस्त्र जब क्रमश उपयोग मे लिया जाता है, तो उसके पुद्गल सब ओर से बँधते है, सब ओर से चय होते है, यावत् कालान्तर मे वह वस्त्र अत्यन्त मैला और दुर्गन्धित रूप मे परिणत हो जाता है, इसी प्रकार महाकर्म वाला जीव उपर्युक्त रूप से यावत् असुखरूप मे बार-बार परिणत होता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! When a new or washed or fresh-from-loom piece of cloth is used regularly, it acquires and assimilates matter particles from all directions and so on up to in due course that piece of cloth turns dirty and malodorous In the same way living beings with extensive *karmas* (*mahakarma*) undergo transformation and so on up to states of misery and unhappiness time and again

३. [प्र. १] से नूणं भंते ! अप्पकम्मस्स अप्पकिरियस्स अप्पासवस्स अप्पवेयणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जति, सव्वओ पोग्गला छिज्जंति, सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति, सया समियं पोग्गला भिज्जंति छिज्जंति विद्धंसंति परिविद्धंसंति, सया समियं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ?

[उ] **हता, गोयमा ! जाव परिणमंति।**

३. [प्र १] भगवन् ! क्या अल्पकर्म वाले, अल्पक्रिया वाले, अल्पआस्रव वाले और अल्पवेदना वाले जीव के पुद्गलो का भेदन होता है। पूर्व सम्बन्ध विशेष को छोडकर अलग होता ? सर्वत पुद्गल छिन्न होते (टूटते) जाते है ? सर्वत पुद्गल विध्वस्त होते जाते है ? सर्वत पुद्गल समग्ररूप से ध्वस्त हो जाते है ? क्या सदा सतत पुद्गल भिन्न, छिन्न, विध्वस्त और परिविध्वस्त होते है ? क्या उस पुरुष की आत्मा (बाह्य आत्मा) सदा सतत सुरूपता मे यावत् सुखरूप मे और अदु खरूप मे बार-बार परिणत होता है ? (पूर्वसूत्र मे अप्रशस्त पदो का कथन किया है, किन्तु यहाँ सब प्रशस्त-पदो का जैसे- शुभ वर्ण, शुभ गन्ध आदि कथन करना चाहिए।)

[उ] हॉ, गौतम ! अल्पकर्म वाले जीव का आत्मा ऊपर कहे अनुसार ही यावत् परिणत होता है।

3. [Q. 1] *Bhante* ! Do living beings with little *karmas* (*alpakarma*), little activity (*alpakriya*), little influx (*alpashrava*) and little pain (*alpavedana*) get separated from matter particles through all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do these matter particles break apart from all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do they get destroyed through all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do they get completely destroyed through all space-points and every way (*sarvatah*) ? Do they get separated, break apart, get destroyed and get completely destroyed

always and continuously (*sada-satat*) ? Does his soul (embodied soul) continue to transform time and again into perfection and so on up to. states of joy and happiness ? (in the preceding aphorism ignoble attributes have been mentioned but here noble attributes like good colour and good odour should be mentioned)

[Ans.] Yes, Gautam ! Living beings with little *karmas* (*alpakarma*) undergo transformation as you have said

[प्र. २] से केणट्ठेणं ?

[उ.] **गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा पंकियस्स वा मइल्लियस्स वा रइल्लियस्स वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेण वारिणा धोव्वेमाणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति जाव परिणमंति, से तेणट्ठेणं०।**

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! जैसे कोई **जल्लित** (शरीर के मल से-मैला), **पंकित** (कीचड से सना), मैलसहित अथवा धूल से भरा वस्त्र हो और उसे शुद्ध करने का क्रमश प्रयत्न किया जाये, उसे स्वच्छ पानी से धोया जाये तो उस पर लगे हुए मैले-अशुभ पुद्‌गल सब ओर से अलग होने लगते है, यावत् उसके पुद्‌गल शुभरूप मे परिणत हो जाते है, (इसी तरह अल्पकर्म वाले जीव के विषय मे भी पूर्वोक्त रूप से सब कथन करना चाहिए।) इसी कारण से, (अल्पकर्म वाले जीव के लिए कहा गया है कि वह यावत् बार-बार परिणत होता है।)

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! Suppose there is a dirty and stained piece of cloth covered with slime and dirt When successive efforts are made to cleanse it and wash it with clear water, the bad matter particles start getting separated from it from all directions and so on up to in due course its constituent particles turn good and clean (in the same way the aforesaid statement about beings with little *karmas* should be repeated) That is why it is said so (beings with little *karmas* continue to transform time and again into perfection)

विवेचन **महाकर्म तथा अल्पकर्म**–इन दोनो अवस्थाओ को ही वस्त्र के दृष्टान्त से समझाया गया है–(१) नया वस्त्र पहनने से धीमे-धीमे मलिन होता जाता है, वैसे ही महाआस्रव वाला आत्मा अशुभ प्रवृत्तियो द्वारा मलिन होता जाता है। (२) जैसे मलिन वस्त्र धोने पर उज्ज्वल हो जाता है, वैसे ही अल्प आस्रव वाला आत्मा तपश्चरण आदि के द्वारा कर्मनिर्जरा करता हुआ निर्मल होता रहता है।

महाकर्म वाले की आत्मा के साथ ही उसका शरीर, आभामण्डल आदि सभी अनिष्ट अदर्शनीय, अशोभनीय तथा मलिन होता जाता है तथा अल्पकर्म वाले का शरीर सुन्दर, शोभनीय, प्रभावशाली, कातिमान होता रहता

है। इन सूत्रो मे आधुनिक आध्यात्मिक चिकित्सा के सूत्र भी खोजे जा सकते है। कर्म, क्रिया, आस्रव तथा वेदना इन चारो का परस्पर सम्बन्ध है। कर्म का सचय विशाल होगा तो क्रिया आस्रव और वेदना भी विशाल होगी। कर्मों की अल्पता होने पर क्रिया, आस्रव और वेदना भी अल्प होगी।

महाकर्मा–जिसके कर्मों की स्थिति आदि लम्बी हो। जिसकी कायिकी आदि क्रियाएँ अधिक हो, वह **महाक्रिया** वाला। कर्मबन्ध के हेतुभूत मिथ्यात्वादि जिसके विशाल गाढ एव प्रचुर हो वह **महास्रव** वाला, तथा महापीडा वाले को **महावेदना** वाला कहा गया है। *(वृत्ति पत्राक २५३)*

Elaboration—Mahakarma and Alpakarma—Both these states have been explained with the help of the example of a piece of cloth (1) A new piece of cloth gets dirty gradually by wearing, in the same way a being with *mahashrava* (extensive influx) gets maligned with ignoble attitude (2) A dirty piece of cloth becomes clean on washing; in the same way a being with little influx sheds *karmas* with the help of austerities and other such purifying activities and gradually attains purity

Along with his soul the body, aura and other attributes of the being with extensive *karmas* become grotesque, repulsive, unattractive and dirty The body and aura of a being with little *karmas* gradually become beautiful, attractive, imposing and radiant These aphorism can also be explored for indicators of modern day spiritual healing *Karma*, action, inflow and experience are mutually connected factors If *karmas* are extensive, action, influx and experience of pain will also be extensive If *karmas* are minuscule, action, influx and experience of pain will also be little

One with ignoble qualities of *karmas*, like long duration, is called *mahakarmaa* One having intense activities, like those of the body, is called one with *mahakriya* One having intense and numerous sources of influx of *karmas*, like unrighteousness, is called one with *mahasrava* One having great sufferance of pain is called one with *mahavedana* *(Vritti leaf 253)*

२ द्वितीय द्वार · वस्त्र और जीव के पुद्गलोपचय

SECOND PORT ACQUISITION OF MATTER BY CLOTH AND SOUL

४. [प्र.] वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए कि पयोगसा, वीससा ?

[उ.] गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि।

४. [प्र.] भगवन् ! वस्त्र मे जो पुद्गलो का उपचय (सचय) होता है, वह क्या प्रयोग (प्रयत्न) से होता है, अथवा विश्रसा (स्वाभाविक) रूप से।

[उ.] गौतम ! वह प्रयोग से भी होता है, स्वाभाविक रूप से भी होता है।

4. [Q.] *Bhante* ! Are matter particles acquired (*upachaya*, here it includes the whole process of acquisition, assimilation and augmentation) by cloth through application (*prayog*) or naturally (*vishrasa*) ?

[Ans.] Gautam ! It happens both through application as well as naturally

५. [प्र १] जहा ण भते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि तहा णं जीवाणं कम्मोवचए किं पयोगसा, वीससा ?

[उ] गोयमा ! पयोगसा, नो वीससा।

५. [प्र १] भगवन् ! जिस प्रकार वस्त्र मे पुद्गलो का उपचय प्रयोग से और स्वाभाविक रूप से होता है, तो क्या उसी प्रकार जीवो के कर्मपुद्गलो का उपचय भी प्रयोग से और स्वभाव से होता है ?

[उ] गौतम ! जीवो के कर्मपुद्गलो का उपचय प्रयोग से होता है, किन्तु स्वाभाविक रूप से नही होता।

5. [Q. 1] *Bhante* ! Just as matter is acquired (*upachaya*) by cloth through application as well as naturally, are *karma* particles also acquired (*upachaya*) by living beings (souls) through application as well as naturally ?

[Ans.] Gautam ! *Karma* particles are acquired (*upachaya*) by living beings (souls) only through application and not naturally

[प्र. २] से केणट्ठेण ?

[उ.] गोयमा ! जीवाणं तिविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा–मणप्पयोगे वइप्पयोगे कायप्पयोगे य। इच्चेएणं तिविहेण पयोगेणं जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। एवं सव्वेसिं पंचेंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे। पुढविक्काइयाणं एगविहेणं पयोगेणं, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। विगलिंदियाण दुविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा–वइप्पयोगे य, कायप्पयोगे य। इच्चेएणं दुविहेण पयोगेणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। से एएणट्ठेणं जाव–नो वीससा। एवं जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाणं।

[प्र. २] भगवन् ! किस अपेक्षा से ऐसा कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! जीवो के तीन प्रकार के प्रयोग कहे है–मन प्रयोग, वचनप्रयोग और कायप्रयोग। इन तीन प्रकार के प्रयोगो से जीवो के कर्मो का उपचय होता है। इस प्रकार समस्त पचेन्द्रिय जीवो के तीन प्रकार का प्रयोग कहना चाहिए। पृथ्वीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक (पचस्थावर) जीवो तक के एक प्रकार के (काय) प्रयोग से (कर्मपुद्गलोपचय होता है।) विकलेन्द्रिय जीवो के दो प्रकार से प्रयोग होते है, यथा–वचनप्रयोग और कायप्रयोग। अत उनके इन दो प्रयोगो से कर्म (पुद्गलो) का उपचय होता है। यो समस्त जीवो के कर्मोपचय प्रयोग से होता है, स्वाभाविक–रूप से नही। इसी कारण से कहा गया है कि यावत् स्वाभाविक रूप से नही होता। इस प्रकार जिस जीव का जो प्रयोग हो, वह कहना चाहिए। यावत् वैमानिक तक (यथायोग्य) प्रयोगो से कर्मोपचय का कथन करना चाहिए।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! Living beings are said to have three types of application (*prayog*)—*manah-prayog* (mental application), *vachan-prayog* (vocal application) and *kaaya-prayog* (physical application) With these three types of applications living beings (souls) acquire *karmas* In the same way these three types of applications should be mentioned in context of all five-sensed beings. Earth-bodied to plant-bodied beings (the five immobile beings) do that (acquire *karma* particles) through one application (physical) Two to four-sensed beings (*vikalendriyas*) have only two applications—vocal and physical Thus they acquire *karmas* through these two applications This way all beings acquires *karmas* through application and not naturally That is why it is said and so on up to not naturally In the same way acquisition (*upachaya*) of *karmas* through applications specific to the type of being and so on up to *Vaimaniks* should be mentioned

विवेचन प्रस्तुत सूत्र मे कर्मबन्ध की प्रक्रिया बताई है। कर्मवर्गणा के पुद्गल पूरे लोक मे व्याप्त है और वे आत्म-प्रदेशो के साथ अनन्तावगाढ भी है, फिर भी जब तक आत्मा, मन, वचन तथा काययोग की प्रवृत्ति कर उन्हे ग्रहण नही करता, तब तक उनका बधन नही होता। ससार के समस्त जीवो के कर्मपुद्गलो का उपचय प्रयोग-स्वप्रयत्न से होता है, स्वाभाविकरूप (काल, स्वभाव, नियति आदि) से नही। अगर ऐसा नही माना जायेगा तो सिद्ध जीव योगरहित है, उनके भी कर्मपुद्गलो का उपचय होने लगेगा, परन्तु यह सम्भव नही।

Elaboration—This aphorism details the process of bonding of *karmas*. The *karmic* particles (*karma vargana*) are spread all over the universe (*Lok*) and they have unending interaction with soul space-points in infinite numbers However, as long as the soul does not acquire them by indulgence or actions through mental, vocal and physical instruments they do not get bonded All the beings in the world acquire *karma* particles through such application and not naturally (time, nature, fate etc) If this is not accepted, even *Siddhas* (the liberated souls) who are free of any association or application will also acquire *karma* particles, but that is not possible

३ तृतीय द्वार कर्मोपचय की सादि-सान्तता

THIRD PORT ACQUISITION OF KARMA WITH BEGINNING AND END

६. [प्र.] बत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं सादीए सपज्जवसिए ? सादीए अपज्जवसिए ? अणादीए सपज्जवसिए ? अणादीए अपज्जवसिए ?

[उ.] गोयमा ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए।

६. [प्र.] भगवन् ! वस्त्र मे पुद्गलो का जो उपचय होता है–(१) क्या वह सादि–सान्त है, (२) सादि–अनन्त है, (३) अनादि–सान्त है, अथवा (४) अनादि–अनन्त है ?

[उ.] गौतम ! वस्त्र मे पुद्गलो का जो उपचय होता है, वह सादि–सान्त होता है, किन्तु न तो वह सादि–अनन्त है, न अनादि–सान्त है और न अनादि–अनन्त होता है।

6. [Q.] *Bhante* ! Is the acquisition (*upachaya*) of matter particles by cloth—(1) with a beginning and with an end, (2) with a beginning and without an end, (3) without a beginning and with an end, or (4) without a beginning and without an end ?

[Ans.] Gautam ! The *upachaya* of matter particles by cloth—is with a beginning and with an end, and neither with a beginning and without an end, nor without a beginning and with an end, or without a beginning and without an end

७. [प्र. १] **जहा णं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए तहा ण जीवाणं कम्मोवचए पुच्छा।**

[उ.] **गोयमा ! अत्थेगइयाण जीवाणं कम्मोवचए साईए सपज्जवसिए, अत्थेगइयाणं अणाईए सपज्जवसिए, अत्थेगइयाणं अणाईए अपज्जवसिए, नो चेव णं जीवाणं कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए।**

७. [प्र. १] हे भगवन् ! जिस प्रकार वस्त्र मे पुद्गलोपचय सादि–सान्त है, किन्तु सादि–अनन्त, अनादि–सान्त और अनादि–अनन्त नही है, क्या उसी प्रकार जीवो का कर्मोपचय भी सादि–सान्त है, सादि–अनन्त है, अनादि–सान्त है, अथवा अनादि–अनन्त है ?

[उ.] गौतम ! कितने ही जीवो का कर्मोपचय (१) सादि–सान्त है, (२) कितने ही जीवो का कर्मोपचय अनादि–सान्त है, और (३) कितने ही जीवो का कर्मोपचय अनादि–अनन्त है, किन्तु (४) जीवो का कर्मोपचय सादि–अनन्त नही है।

7. [Q. 1] *Bhante* ! The acquisition (*upachaya*) of matter particles by cloth is with a beginning and with an end, and neither with a beginning and without an end, nor without a beginning and with an end, or without a beginning and without an end, does the acquisition (*upachaya*) of *karmas* by living beings follow the same pattern ?

[Ans.] Gautam ! The acquisition (*upachaya*) of *karmas* (1) by some beings is with a beginning and with an end, (2) that by some beings is without a beginning and with an end, (3) that by some beings is without a beginning and without an end, (4) but for no being it is with a beginning and without an end

[प्र. २] से केणट्ठेणं ?

[उ.] गोयमा ! इरियावहियाबंधयस्स कम्मोवचए साईए सपज्जवसिए। भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए। अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणाईए अपज्जवसिए। से तेणट्ठेणं।

[प्र. २] भगवन् ! यह किस कारण से कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! (१) ईर्यापथिक–बन्ध की अपेक्षा कर्मोपचय सादि–सान्त है, (२) भवसिद्धिक जीवो का कर्मोपचय अनादि–सान्त है, (३) अभवसिद्धिक जीवो का कर्मोपचय अनादि–अनन्त है। इसी कारण से, हे गौतम ! उपर्युक्त रूप से कहा गया है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! (1) In context of *Iryapathik-bandh* (bondage due to passionless association) acquisition (*upachaya*) of *karmas* is with a beginning and with an end, (2) Acquisition of *karmas* by beings destined to be liberated (*bhavasiddhik*) is without a beginning and with an end, (3) Acquisition of *karmas* by beings not destined to be liberated (*abhavasiddhik*) is without a beginning and without an end That is why, Gautam ! The aforesaid statement

विवेचन ईर्यापथिक बन्ध का स्वरूप ? कर्मबन्ध के मुख्य दो कारण है (१) क्रोधादि कषाय, और (२) योग = मन–वचन-काया की प्रवृत्ति। जिन जीवो का कषाय सर्वथा उपशान्त या क्षीण नही हुआ है, उनको जो कर्मबन्ध होता है, वह सब **साम्परायिक** (काषायिक) कहलाता है, और जिन जीवो का कषाय सर्वथा उपशान्त या क्षीण हो चुका है, उनकी हलन-चलन आदि सारी प्रवृत्तियाँ यौगिक (मन, वचन, कायायोग से जनित) होती है। कषायरहित योगजन्य कर्म को ही **ईर्यापथिक** कर्म कहते है। उपशान्तमोह, क्षीणमोह और सयोगीकेवली को ईर्यापथिक कर्मबन्ध होता है। यह कर्म इस अवस्था से पहले नही बँधता, इस अवस्था की अपेक्षा से इस कर्म की आदि है, अतएव इसका **सादित्व** है, किन्तु सिद्ध अयोगी (आत्मा की अक्रिय) अवस्था मे अथवा उपशमश्रेणी से गिरने पर इस कर्म का बन्ध नही होता, इस कर्म का अन्त हो जाता है, इस दृष्टि से इसका **सान्तत्व** है। भवसिद्धिक जीवो की अपेक्षा से कर्मोपचय **अनादि–सान्त** है। भव्यजीव को भव्यजीवो के सामूहिक दृष्टि से कर्मबन्ध की कोई आदि नही है–प्रवाहरूप से उनके कर्मोपचय अनादि है, किन्तु एक न एक दिन वे कर्मों का सर्वथा अन्त करके सिद्धि (मुक्ति) प्राप्त करेगे, इस अपेक्षा से उनका कर्मोपचय सान्त है।

अभवसिद्धिक अभव्य जीवो की अपेक्षा से कर्मोपचय अनादि–अनन्त है। जिनके कर्मों का कभी अन्त नही होगा, ऐसे अभव्य-जीवो के कर्मोपचय की प्रवाहरूप से न तो आदि है, और न अन्त है। चौथा भग शून्य है। *(वृत्ति पत्राक २५५)*

Elaboration—Karmic bondage—There are two basic causes of *karmic* bondage—(1) passions including anger and (2) association (*yoga*) or mental, vocal and physical indulgence The *karmic* bondage of beings whose passions have not been completely pacified or destroyed is called *saamparayik* or *kashayik* (caused by passions) All activities and movements of living beings whose passions have been completely pacified

or destroyed are caused exclusively by association (*yoga*) or mental, vocal and physical indulgence It is this *karmic* bondage caused by passionless actions that is called *Iryapathik-bandh* This bondage is acquired only by an ascetic with *upashant-moha* (pacified deluding *karma*), *ksheen-moha* (destroyed deluding *karma*) and *Sayogi Kevali* (omniscient with association or action) This *karma* is not bound prior to attaining these states Thus in context of this state this bondage has a beginning However, this bondage stops either when the *Sayogi Kevali* rises to the level of *Ayogi Kevali* (omniscient without association or action) or when he falls from that level of pacification In this context this state of bondage has an end In context of beings destined to liberation (*bhavasiddhik*) the acquisition (*upachaya*) of *karmas* is without a beginning and with an end In generic context or from collective standpoint there is no beginning of *karmic* bondage of the beings destined to liberation In other words in terms of continuity their acquisition of *karmas* is without a beginning But they are sure to attain liberation by ending all *karmas*, therefore their acquisition of *karmas* is with an end

In context of beings not destined to liberation (*abhavasiddhik*) the acquisition of *karmas* is without a beginning and without an end In terms of continuity the acquisition of *karmas* of beings not destined to liberation, there neither is a beginning nor an end The fourth alternative is nonexistent. *(Vritti leaf 255)*

वस्त्र एव जीवो की सादि–सान्तता BEGINNING AND END OF CLOTH AND BEINGS

८. [प्र.] वत्थे ण भंते ! किं सादीए सपज्जवसिए ? चतुभंगो।

[उ] गोयमा ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा तिण्णि वि पडिसेहेयव्वा।

८. [प्र.] भगवन् ! क्या वस्त्र सादि–सान्त है ? इत्यादि पूर्वोक्त रूप से चार भग करके प्रश्न करना चाहिए।

[उ] गौतम ! वस्त्र सादि–सान्त है, शेष तीन भगो का वस्त्र मे निषेध करना चाहिए।

8. [Q.] *Bhante* ! Is cloth with a beginning and with an end ? Put up all aforesaid four question in this context

[Ans.] Gautam ! Cloth is with a beginning and with an end Remaining three questions should be answered in negative

९. [प्र. १] जहा णं भंते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए० तहा णं जीवा किं सादीया सपज्जवसिया ? चतुभंगो, पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! अत्थेगइया सादीया सपज्जवसिया चत्तारि वि भाणियव्वा।

९. [प्र. १] भगवन् ! जैसे वस्त्र सादि-सान्त है, [किन्तु सादि-अनन्त नही है, अनादि-सान्त नही है और न अनादि-अनन्त है] वैसे जीवो के विषय मे भी चारो भगो को लेकर प्रश्न करना चाहिए-अर्थात् (भगवन् ! क्या जीव सादि-सान्त है, सादि-अनन्त है, अनादि-सान्त है अथवा अनादि-अनन्त है ?)

[उ.] गौतम ! कितने ही जीव सादि-सान्त है, [कितने ही जीव सादि-अनन्त है, कई जीव अनादि-सान्त है और कितनेक अनादि-अनन्त है] इस प्रकार जीव मे चारो ही भग कहने चाहिए।

9. [Q. 1] *Bhante* ! (As you have said) Cloth is with a beginning and with an end (but neither with a beginning and without an end, nor without a beginning and with an end, or without a beginning and without an end) In the same way are living beings (souls) with a beginning and with an end ? All the four aforesaid questions should be asked (are they with a beginning and without an end, without a beginning and with an end, and without a beginning and without an end ?)

[Ans.] Gautam ! Some beings are with a beginning and with an end All the four answers should be given here (some are with a beginning and without an end, some are without a beginning and with an end, and some are without a beginning and without an end)

[प्र. २] से केणट्ठेण ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देव गइरागइं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया। सिद्धा गइं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया। भवसिद्धिया लद्धि पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया। अभवसिद्धिया संसारं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया भवति। से तेणट्ठेणं।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक, तिर्यचयोनिक, मनुष्य और देव, गति और आगति की अपेक्षा से सादि-सान्त है, सिद्धगति (एक सिद्ध जीव) की अपेक्षा से सिद्ध जीव सादि-अनन्त है, लब्धि की अपेक्षा (भव्यत्वलब्धि सिद्धि प्राप्ति तक रहती है अत) भवसिद्धिक जीव अनादि-सान्त है, और ससार की अपेक्षा अभवसिद्धिक जीव अनादि-अनन्त है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why it is so ?

[Ans.] Gautam ! With reference to birth and rebirth (*aagati* and *gati*) infernal beings, animals, human beings and divine beings are with a beginning and with an end With reference to *Siddha gati* (state of perfection) a liberated soul is with a beginning and without an end With reference to the quality (worthiness) the beings destined to be liberated (*bhavasiddhik jivas*) are without a beginning and with an end With

reference to cycles of rebirth (*samsar*) beings not destined to liberation (*abhavasiddhik jivas*) are without a beginning and without an end)

४ चतुर्थ द्वार : अष्ट कर्मों की बन्धस्थिति
FOURTH PORT : DURATION OF BONDAGE OF EIGHT KARMAS

१०. [प्र.] कइ णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं जाव अंतराइयं।

१०. [प्र.] भगवन् ! कर्मप्रकृतियाँ कितनी है ?

[उ.] गौतम ! कर्मप्रकृतियाँ आठ है, यथा—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय यावत् अन्तराय।

10. [Q.] *Bhante* ! How many are *karma prakritis* (species of *karma*) ?

[Ans.] Gautam ! There are eight species of *karma*—*Jnanavaraniya* (knowledge obscuring), *Darshanavaraniya* (perception obscuring) and so on up to *Antaraya* (energy hindering)

११. [प्र. १] नाणावरणिज्जस्स ण भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधठिती पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मटिइ कम्मनिसेओ।

[२] एवं दरिसणावरणिज्ज पि।

[३] वेदणिज्जं जहण्णेण दो समया, उक्कोसेण जहा नाणावरणिज्ज।

[४] मोहणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अबाधा, अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेओ।

[५] आउगं जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाणि पुव्वकोडि—तिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिइ कम्मनिसेओ।

[६] नाम—गोयाणं जहन्नेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिइ कम्मनिसेओ।

[७] अंतरायं जहा नाणावरणिज्जं।

११. [प्र. १] भगवन् ! (१) **ज्ञानावरणीय** कर्म की बन्धस्थिति कितने काल की है ?

[उ.] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म की बन्धस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोडी सागरोपम की है। उसका अबाधाकाल तीन हजार वर्ष का है। अबाधाकाल जितनी स्थिति को कम करने से शेष कर्मस्थिति—कर्मनिषेककाल जानना चाहिए।

[२] इसी प्रकार **दर्शनावरणीय** कर्म के विषय मे भी जानना चाहिए।

[३] **वेदनीय कर्म** की जघन्य (बन्ध–) स्थिति दो समय की है, उत्कृष्ट स्थिति ज्ञानावरणीय कर्म के समान तीस कोडाकोड़ी सागरोपम की जाननी चाहिए।

[४] **मोहनीय कर्म** की बन्धस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट ७० क्रोडाक्रोडी सागरोपम की है। सात हजार वर्ष का अबाधाकाल है। अबाधाकाल की स्थिति को कम करने से शेष कर्म–स्थिति–कर्मनिषेककाल जानना चाहिए।

[५] **आयुष्य कर्म** की बन्धस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट पूर्वकोटि के त्रिभाग से अधिक तैतीस सागरोपम की है। इसका कर्मनिषेक काल (तैतीस सागरोपम का तथा शेष) अबाधाकाल जानना चाहिए।

[६] **नाम कर्म** और **गोत्र कर्म** की बन्धस्थिति जघन्य आठ मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट २० क्रोडाक्रोडी सागरोपम की है। इसका दो हजार वर्ष का अबाधाकाल है। अबाधाकाल की स्थिति को कम करने से शेष कर्मस्थिति–कर्मनिषेककाल होता है।

[७] **अन्तराय कर्म** के विषय मे ज्ञानावरणीय कर्म की तरह (बन्धस्थिति आदि) समझ लेना चाहिए।

11. [Q. 1] *Bhante* ! What ıs the duratıon of bondage of *Jnanavaranıya* (knowledge obscurıng) *karma* ?

[Ans.] Gautam ! The mınımum duratıon of bondage of *Jnanavaranıya karma* ıs *Antar-muhurt* (slıghtly less than 48 mınutes) and maxımum ıs thırty *Kodakodı Sagaropam* (a metaphorıc unıt of tıme) The duratıon of ıts dormant state (*abaadha kaal*) ıs three thousand years Subtractıng the dormant perıod from the total gıves the *karma-nıshek kaal* (duratıon of experıence or effectıve duratıon)

[2] Same ıs true for *Darshanavaranıya* (perceptıon obscurıng) *karma*

[3] The mınımum duratıon of bondage of *Vedanıya karma* (*karma* responsıble for mundane experıence of paın and pleasure) ıs two *Samaya* (ultımate fractıonal unıt of tıme) and maxımum ıs thırty *Kodakodı Sagaropam* (a metaphorıc unıt of tıme) lıke *Jnanavaranıya karma*

[4] The mınımum duratıon of bondage of *Mohanıya* (deludıng) *karma* ıs *Antar-muhurt* (slıghtly less than 48 mınutes) and maxımum ıs seventy *Kodakodı Sagaropam* (a metaphorıc unıt of tıme) The duratıon of ıts dormant state (*abaadha kaal*) ıs seven thousand years Subtractıng the dormant perıod from the total gıves the *karma-nıshek kaal* (duratıon of experıence or effectıve duratıon)

[5] The mınımum duratıon of bondage of *Ayushya* (life-span determınıng) *karma* ıs *Antar-muhurt* (slıghtly less than 48 mınutes) and

maximum is a third of *Purva-koti* added to thirty three *Sagaropam* (a metaphoric unit of time) Its *karma-nishek kaal* (effective duration) is (thirty three *Sagaropam*) and the remaining is the duration of its dormant state (*abaadha kaal*)

[6] The minimum duration of bondage of *Naam* (form determining) and *Gotra* (status determining) *karmas* is eight *Antar-muhurts* and maximum is twenty *Kodakodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time) The duration of their dormant state is two thousand years Subtracting the dormant period from the total gives the *karma-nishek kaal* (effective duration)

[7] What has been stated about *Jnanavaraniya karma* should be repeated for *Antaraya* (energy hindering) *karma*

विवेचन चतुर्थद्वार–बन्धस्थिति–कर्मबन्ध होने के बाद वह जितने काल तक रहता है, उसे **बन्धस्थिति** कहते है। **अबाधाकाल**–कर्म का उदय न होना 'अबाधा' कहलाता है। जिस समय कर्म का बध हुआ उस समय से लेकर जब तक उस कर्म का उदय नही होता, तब तक के काल को अबाधाकाल कहते है। **कर्मस्थिति–कर्मनिषेक काल** कर्म का वेदन काल–भोगने का काल **कर्मनिषेक काल** है। प्रत्येक कर्म बँधने के पश्चात् उस कर्म के उदय मे आने पर अर्थात् उस कर्म का अबाधाकाल पूरा होने पर कर्म को वेदन करने के प्रथम समय से लेकर बँधे हुए कर्मदलिको मे से भोगने योग्य कर्मदलिको की एक प्रकार की रचना होती है उसे **कर्मनिषेक** कहते है। प्रथम समय मे बहुत अधिक कर्मनिषेक होता है द्वितीय–तृतीय समय मे उत्तरोत्तर विशेष हीन होता जाता है। निषेक तब तक होता रहता है, जब तक वह बँधा हुआ कर्म आत्मा के साथ बँधा रहता है।

कर्म की स्थिति दो प्रकार की–एक तो, कर्म के रूप मे रहना, और दूसरे, अनुभव, (वेदन) योग्य कर्म रूप मे रहना। कर्म जब से अनुभव (वेदन) मे आता है, उस समय की स्थिति को अनुभव योग्य कर्मस्थिति जानना। अर्थात्–कर्म की कुल स्थिति मे से अनुदय का काल (अबाधाकाल) बाद करने पर जो स्थिति शेष रहती है,उसे अनुभव योग्य कर्मस्थिति समझना चाहिए। कर्म की स्थिति जितने क्रोडाक्रोडी सागरोपम की होती है, उतने सौ वर्ष तक वह कर्म, अनुभव (वेदन) मे आये बिना आत्मा के साथ अकिचित्कर (अप्रभावी अनुदग अवस्था मे) रहता है। जैसे–मोहनीय कर्म की ७० क्रोडाक्रोडी सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति है, उसमे से ७० सौ (७,०००) वर्ष तक तो वह कर्म यो ही अकिंचित्कर पडा रहता है। वही कर्म का अबाधाकाल है। उसके पश्चात् वह मोहनीय कर्म उदय मे आता है,तो ७ हजार वर्ष कम ७० क्रोडीक्रोडी सागरोपम तक अपना फल भुगताता रहता है, उस काल को कर्म निषेककाल कहते है।

वेदनीय कर्म की स्थिति–जिस वेदनीय कर्म के बन्ध मे कषाय कारण नही होता, केवल योग निमित्त होते है, वह वेदनीय कर्म बन्ध की अपेक्षा दो समय की स्थिति वाला है। वह प्रथम समय मे बँधता है, दूसरे समय मे वेदा जाता है, किन्तु सकषाय बन्ध की स्थिति की अपेक्षा वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति १२ मुहूर्त्त की होती है। *(पचसग्रह, गा ३१–३२, पृष्ठ १७६ (द्वार ५ से १९)*

संख्या	कर्म	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति	अबाधाकाल	निषेककाल
१	ज्ञानावरणीय	अन्तर्मुहूर्त	३० क्रोडाक्रोड सागर	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष न्यून ३० क्रोडाक्रोड सागर
२	दर्शनावरणीय	अन्तर्मुहूर्त	३० क्रोडाक्रोड सागर	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष न्यून ३० क्रोडाक्रोड सागर
३	वेदनीय	२ समय	३० क्रोडाक्रोड सागर	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष न्यून ३० क्रोडाक्रोड सागर
४	मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	७० क्रोडाक्रोड सागर	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष न्यून ७० क्रोडाक्रोड सागर
५	आयुष्य	अन्तर्मुहूर्त	३३ सागर १/३ पूर्वकोटि अधिक	-	३३ सागर
६	नाम	८ मुहूर्त	२० क्रोडाक्रोड सागर	२ हजार वर्ष	२ हजार वर्ष न्यून २० क्रोडाक्रोड सागर
७	गोत्र	८ मुहूर्त	२० क्रोडाक्रोड सागर	२ हजार वर्ष	२ हजार वर्ष न्यून २० कोडाक्रोड सागर
८	अन्तराय	अन्तर्मुहूर्त	३० क्रोडाक्रोड सागर	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष न्यून ३० क्रोडाक्रोड सागर

Elaboration—Duration of bondage of karmas—The duration of existence of a *karma* after bonding is called *bandh-sthiti* (duration of bondage) *Abaadha kaal*—the duration for which a *karma* does not come to fruition is called *abaadha kaal* (duration of dormant state) The lapse of time from the moment of bonding to the moment of fruition is this duration of dormant state *Karma-nishek kaal*—the duration of experiencing the fruits of *karmas* is called *karma-nishek kaal* After bonding of each type of *karma* when its dormant state transforms to state of fruition, the clusters (*dalik*) of *karma* particles undergo a special configuration of fruition This configuration is called *karma-nishek* At the first *Samaya* maximum clusters of *karmas* come to fruition and every passing *Samaya* this number continues to reduce This process of *nishek* continues as long as *karma* remains bonded with the soul

The duration of bondage has two divisions First is to remain as dormant *karma* and second is to turn into experience causing *karma* When *karma* comes to fruition the duration of experience commences This means that when the duration of dormant state is subtracted from the total duration of bondage we get the duration of experience of *karma* The formula for this is that when we turn the number of units of total duration from *Kodakodi Sagaropam* to hundred years it gives the duration of the dormant state For example the maximum duration of the *Mohaniya karma* is 70 *Kodakodi Sagaropam* Out of this 70 hundred years (7000 years) is the duration of dormant state. This is called the *abaadha kaal* (dormant state) of that *karma* When this period ends *Mohaniya karma* comes to fruition and continues to cause experience for

7000 years less 70 *Kodakodi Sagaropam* This period is called *karma-nishek kaal*

Duration of Vedaniya karma—When passions are not the cause of bondage of *Vedaniya karma* and they are bonded exclusively due to association (*yoga*) its duration is only two *Samayas* It is bound in the first *Samaya* and experienced in the second *Samaya* But the minimum duration of the bondage of *Vedaniya karma* caused by passions is 12 *Muhurts (Panch-samgraha, verses 31, 32, p 176, Dvar 5 to 19)*

Sr No	Karma	Minimum Duration	Maximum Duration	Dormant Period	Active Period
1	Jnanavaraniya	Antarmuhurt	30 Kodakodi Sagar	3000 years	3000 years less 30 Kodakodi Sagar
2	Darshanavaraniya	Antarmuhurt	30 Kodakodi Sagar	3000 years	3000 years less 30 Kodakodi Sagar
3	Vedaniya	2 Samaya	30 Kodakodi Sagar	3000 years	3000 years less 30 Kodakodi Sagar
4	Mohaniya	Antarmuhurt	70 Kodakodi Sagar	7000 years	7000 years less 30 Kodakodi Sagar
5	Ayushya	Antarmuhurt	33 Sagar + 1/3 Purvakoti	—	33 Sagar
6	Naam	8 Muhurt	20 Kodakodi Sagar	2000 years	2000 years less 20 Kodakodi Sagar
7	Gotra	8 Muhurt	20 Kodakodi Sagar	2000 years	2000 years less 20 Kodakodi Sagar
8	Antaraya	Antarmuhurt	30 Kodakodi Sagar	3000 years	3000 years less 30 Kodakodi Sagar

५ स्त्री द्वार FIFTH PORT STREE (FEMALE)

१२. [प्र. १] नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधति, पुरिसो बंधति, नपुंसओ बधति, णोइत्थी–नोपुरिसो–नोनपुंसओ बंधइ ?

[उ] गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, नपुंसओ वि बधइ, नोइत्थी–नोपुरिसो–नोनपुंसओ सिय बंधइ, सिय नो बंधइ।

[२] एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ।

१२ [प्र १] 'भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या स्त्री बाँधती है ? पुरुष बाँधता है, अथवा नपुंसक बाँधता है ? अथवा नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुंसक (उपशान्त मोह आदि गुणस्थानवर्ती वेदोदय मुक्त आत्मा जो न स्त्री, न पुरुष या नपुंसक न हो) बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म को स्त्री भी बाँधती है, पुरुष भी बाँधता है और नपुंसक भी बाँधता है, परन्तु जो नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुंसक होता है, वह कदाचित् बाँधता है, कदाचित् नही बाँधता।

[२] इसी प्रकार आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सातो कर्मप्रकृतियो के विषय मे समझना चाहिए।

12. [Q. 1] *Bhante* ! Does a female (*stree*) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does a male (*purush*) acquire that ? Does a neuter (*napumsak*) acquire that ? Or does a non-female (no-*stree*), non-male (no-*purush*) or non-neuter (no-*napumsak*) (having attained higher levels of purity or *Gunasthan* including *Upashant Moha*, a soul that is free of gender) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! A female acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and so does a male as well as a neuter However, a non-female, non-male or non-neuter sometimes acquires and sometimes does not

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karma*

१३. [प्र.] आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, नपुंसओ बंधइ ?० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, एव तिण्णि वि भाणियव्वा। नोइत्थी–नोपुरिसो–नोनपुंसओ न बंधइ।

१३. [प्र] भगवन् ! आयुष्य कर्म को क्या स्त्री बाँधती है, पुरुष बाँधता है, नपुसक बाँधता है अथवा नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुसक बाँधता है ?

[उ] 'गौतम ! आयुष्य कर्म स्त्री कदाचित् बाँधती है और कदाचित नही बाँधती। इसी प्रकार पुरुष और नपुसक के विषय मे भी कहना चाहिए। नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुसक आयुष्य कर्म का बध नही करता। (यह अवेद अवस्था है। अवेद जीव आयुष्य कर्म का बध नही करता)

13. [Q.] *Bhante* ! Does a female acquire bondage of *Ayushya* (life-span determining) *karma* ? Does a male acquire that ? Does a neuter acquire that ? Or does a non-female, non-male or non-neuter acquire that ?

[Ans.] Gautam ! A female sometimes acquires bondage of *Ayushya karma* and sometimes does not Same is true for a male as well as a neuter However, a non-female, non-male or non-neuter does not (a non-generic or gender transcendent being does not acquire bondage of *Ayushya karma*)

६ संयत द्वार SIXTH PORT SAMYAT (RESTRAINED)

१४. [प्र. १] णाणवरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं संजए बंधइ, असंजते बंधइ, संजयासंजए बंधइ, नोसंजए–नोअसंजए–नोसंजयासंजए बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! संजए सिय बंधइ सिय नो बंधति, असंजए बंधइ, संजयासंजए वि बंधइ, नोसंजए–नोअसंजए नोसंजयासंजए न बंधइ।

[२] एव आउगवज्जाओ सत्त वि।

[३] आउगे हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले णं बंधइ।

१४. [प्र १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या सयत बाँधता है, असयत बाँधता है, सयता-सयत बाँधता है और नोसयत-नोअसयत-नोसयतासयत बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! (ज्ञानावरणीय कर्म को) सयत कदाचित् बाँधता है और कदाचित् नही बाँधता, किन्तु असयत बाँधता है, सयतासयत भी बाँधता है, परन्तु नोसयत-नोअसयत-नोसयतासयत (सिद्ध आत्मा) नही बाँधता।

[२] इस प्रकार आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सातो कर्मप्रकृतियो के विषय मे समझना चाहिए।

[३] आयुष्य कर्म के सम्बन्ध में नीचे के तीन-सयत, असयत और सयतासयत के लिए **भजना** समझनी चाहिए। (अर्थात्-कदाचित् बाँधते है और कदाचित् नही बाँधते) नोसयत-नोअसयत-नोसयतासयत (सिद्ध) आयुष्य कर्म को नही बाँधते।

14. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *samyat* (the restrained) acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* ? Does an *asamyat* (the unrestrained) acquire that ? Does a *samyat-asamyat* (the restrained-un-restrained) acquire that ? Or does a *no-samyat*, *no-asamyat* and *no-samyatasamyat* (the non-restrained, non-unrestrained and non-restrained-unrestrained) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! A *samyat* sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes does not But an *asamyat* as well as a *samyat-asamyat* acquires that However, *no-samyat*, *no-asamyat* and *no-samyat-asamyat* (a *Siddha*) does not

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karma*

[3] Regarding *Ayushya karma*, the first three i e *samyat* (the restrained), *asamyat* (the non-restrained) and *samyat-asamyat* (the restrained-un-restrained) sometimes acquire bondage and sometimes not The last three i e *no-samyat*, *no-asamyat* and *no-samyat-asamyat* (a *Siddha*) do not acquire that

७. सम्यग्दृष्टि द्वार **SEVENTH PORT SAMYAGDRISHTI (RIGHTEOUS)**

१५. [प्र १] णाणावरणिज्जं ण भते ! कम्म किं सम्मदिट्ठी बंधइ, मिच्छदिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! सम्मदिट्ठी सिय बधइ सिय नो बधइ, मिच्छदिट्ठी बधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ।

[२] एवं आउयवज्जाओ सत्त वि।

[३] आउए हेट्ठिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बंधइ।

१५. [प्र. १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या सम्यग्दृष्टि बाँधता है, मिथ्यादृष्टि बाँधता है अथवा सम्यग्-मिथ्यादृष्टि-बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! (ज्ञानावरणीय कर्म को) सम्यग्दृष्टि कदाचित् बाँधता है, कदाचित् (वीतराग अवस्था मे) नही बाँधता, मिथ्यादृष्टि बाँधता है और सम्यग्-मिथ्यादृष्टि भी बाँधता है।

[२] इसी प्रकार आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सातो कर्मप्रकृतियो के विषय मे समझना चाहिए।

[३] आयुष्य कर्म को नीचे के दो-सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि-भजना से बाँधते है (अर्थात्-कदाचित् बाँधते है, कदाचित् नही बाँधते।) सम्यग्-मिथ्यादृष्टि (मिश्रदृष्टि अवस्था मे) नही बाँधते।

15. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *samyakdrishti* (the righteous) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does a *mithyadrishti* (the unrighteous) acquire that ? Or does a *samyak-mithyadrishti* (the righteous-unrighteous) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! A *samyakdrishti* sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes (in the detached state of mind) does not But a *mithyadrishti* as well as a *samyak-mithyadrishti* acquires that

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karma*

[3] Regarding *Ayushya karma*, the first two i e *samyakdrishti* (the righteous) and *mithyadrishti* (the unrighteous) sometimes acquire bondage and sometimes not The *samyak-mithyadrishti* (the righteous-unrighteous) (in the mixed state) do not acquire that

८ संज्ञी द्वार EIGHTH PORT SANJNI (SENTIENT)

१६. [प्र. १] णाणावरणिज्जं किं सण्णी बंधइ, असण्णी बंधइं, नोसण्णी-नोअसण्णी बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! सण्णी सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असण्णी बंधइ, नोसण्णी-नोअसण्णी न बंधइ।

[२] एवं वेयणिज्जाऽऽउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ। [३] वेयणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बंधंति, उवरिल्ले भयणाए। आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ।

१६. [प्र १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म को क्या संज्ञी बाँधता है, असंज्ञी बाँधता है अथवा नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! (ज्ञानावरणीय कर्म को) संज्ञी कदाचित् बाँधता है, और कदाचित् (वीतराग की अपेक्षा) नही बाँधता। असंज्ञी बाँधता है, और नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी (सयोगीकेवली अयोगीकेवली तथा सिद्ध) नही बाँधता।

[२] इस प्रकार वेदनीय और आयुष्य को छोडकर शेष छह कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] वेदनीय कर्म को सज्ञी भी बाँधता है और असज्ञी भी बाँधता है, किन्तु नोसज्ञी नोअसज्ञी कदाचित् बाँधता है और कदाचित् नही बाँधता। आयुष्य कर्म को नीचे के दो–सज्ञी और असज्ञी जीव भजना से (कदाचित् बाँधते है, कदाचित् नही) बाँधते है। नोसज्ञी–नोअसज्ञी जीव आयुष्य कर्म को नही बाँधते।

16. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *sanjni* (the sentient) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does an *asanjni* (the non-sentient) acquire that ? Or does a *nosanjni-noasanjni* (the not sentient, not non-sentient) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! A *sanjni* sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes (in the detached state of mind) does not An *asanjni* acquires that and a *nosanjni-noasanjni* does not (this is about *Sayogikevali* or omniscient with association, *Ayogikevali* or omniscient without association, and *Siddha*)

[2] The same is true for all six species of *karmas* except for *Vedaniya* and *Ayushya karmas* [3] Regarding *Vedaniya karma*, the first two *i e* the sentient and the non-sentient acquire bondage The *nosanjni-noasanjni* (the not sentient, not non-sentient) sometimes acquire and sometimes do not As regards *Ayushya karma*, the first two *i e. sanjni* and *asanjni* sometimes acquire bondage and sometimes not The *nosanjni-noasanjni* (in the mixed state) does not acquire *Ayushya karma*

९ भवसिद्धिक द्वार NINTH PORT BHAVA SIDDHIK (WORTHY OF LIBERATION)

१७. [प्र. १] णाणावरणिज्जं कम्मं किं भवसिद्धीए बंधइ, अभवसिद्धीए बंधइ, नोभवसिद्धीए–नोअभवसिद्धीए बंधइ ?

[उ] गोयमा ! भवसिद्धीए भयणाए, अभवसिद्धीए बंधइ, नोभवसिद्धीए–नोअभवसिद्धीए ण बंधइ।

[२] एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। [३] आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्लो ण बंधइ।

१७. [प्र. १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म को क्या भवसिद्धिक बाँधता है, अभवसिद्धिक बाँधता है अथवा नोभवसिद्धिक–नोअभवसिद्धिक बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! (ज्ञानावरणीय कर्म को) भवसिद्धिक जीव भजना से (सराग भवसिद्धिक) कदाचित् (वीतराग) बाँधता है, कदाचित् नही बाँधता है। अभवसिद्धिक जीव बाँधता है और नोभवसिद्धिक–नोअभवसिद्धिक जीव (सिद्ध आत्मा) नही बाँधता।

[२] इस प्रकार आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सात कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] आयुष्य कर्म को नीचे के दो (भवसिद्धिक–भव्य और अभवसिद्धिक–अभव्य) भजना से (कदाचित् बाँधते है, कदाचित् नही) बाँधते है। ऊपर का (नोभवसिद्धिक–नोअभवसिद्धिक) नही बाँधता।

17. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *bhavasiddhik* (the worthy of liberation) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does an *abhavasiddhik* (the non-worthy of liberation) acquire that ? Or does a *nobhavasiddhik-noabhavasiddhik* (the not worthy, not non-worthy) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! A *bhavasiddhik* sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* (when he has attachment) and sometimes (in the detached state of mind) does not. An *abhavasiddhik* acquires that and a *nobhavasiddhik-noabhavasiddhik* does not (this is about a *Siddha*)

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karmas*. [3] As regards *Ayushya karma*, the first two *i. e. bhavasiddhik* (the worthy of liberation) and *abhavasiddhik* (the non-worthy of liberation) sometimes acquire bondage and sometimes not. The *nobhavasiddhik-noabhavasiddhik* (the not worthy, not non-worthy) (in the mixed state) does not acquire *Ayushya karma*.

१० दर्शन द्वार TENTH PORT DARSHAN (PERCEPTION)

१८. [प्र. १] णाणावरणिज्जं किं चक्खुदंसणी बंधति, अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी, केवलदंसणी ?

[उ.] गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले णं बंधइ।

[२] एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। [३] वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला तिण्णि बंधंति, केवलदंसणी भयणाए।

१८. [प्र. १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म को क्या चक्षुदर्शनी बाँधता है, अचक्षुदर्शनी बाँधता है, अवधिदर्शनी बाँधता है अथवा केवलदर्शनी बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! (ज्ञानावरणीय कर्म को) नीचे के तीन (चक्षु, अचक्षु और अवधिदर्शनी) भजना से बाँधते है किन्तु–केवलदर्शनी नही बाँधता।

[२] इसी प्रकार वेदनीय को छोडकर शेष सात कर्मप्रकृतियो के विषय मे समझ लेना चाहिए। [३] वेदनीय कर्म को निचले तीन (चक्षु, अचक्षु और अवधिदर्शनी) बाँधते है, किन्तु केवलदर्शनी भजना से बाँधते हैं।

18. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *chakshudarshani* (one with visual perception) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does an *achakshudarshani* (one without visual perception) acquire that ? Does an *avadhidarshani* (one with extrasensory perception of the physical dimension) acquire that ? Or does a *Keval-darshani* (one with ultimate perception, that of an omniscient) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! The first three (with visual, without visual and with *avadhi* perception) sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not However, one with *Keval-darshan* does not acquire.

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Vedaniya karma* **[3]** As regards *Vedaniya karma*, the first three acquire the bondage but *Keval-darshani* sometimes acquires bondage and sometimes does not

विवेचन · उक्त छह द्वारो मे प्रतिपादित जीवो के कर्मबन्ध–अबन्ध–विषयक स्पष्टीकरण–

(५) **स्त्री द्वार**–स्त्री, पुरुष और नपुसक तीनो ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधते है। जिस जीव के केवल स्त्री, पुरुष या नपुसक का शरीर है, किन्तु वेद (कामविकार) का उदय नही होता, उसे **नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुसक** जीव कहते है। वह अनिवृत्तिबादर सम्परायादि गुणस्थानवर्ती होता है। इनमे से अनिवृत्तिबादर सम्पराय और सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थानवर्ती जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बन्धक होता है, उपशान्तमोह से अयोगीकेवली गुणस्थानवर्ती (नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुसक) जीव ज्ञानावरणीय कर्म के अबन्धक होते है। इसीलिए कहा गया है–नोस्त्री–नोपुरुष–नोनपुसक ज्ञानावरणीय कर्म को भजना (विकल्प) से बाँधता है। और यह (वेदरहित) जीव आयुष्य कर्म को तो बाँधता ही नही है, क्योकि निवृत्तिबादर सम्पराय से लेकर अयोगीकेवली गुणस्थान तक मे आयुष्यबन्ध का व्यवच्छेद हो जाता है। स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुसकवेदी जीव आयुष्य कर्म को एक भव मे एक ही बार बाँधता है, वह भी आयुष्य का बन्धकाल होता है, तभी आयुष्य कर्म बाँधता है। जब आयुष्य बन्धकाल नही होता, तब आयुष्य नही बाँधता। इसलिए कहा गया है–ये तीनो प्रकार के जीव आयुष्य कर्म को कदाचित् बाँधते है, कदाचित नही बाँधते।

(६) **सयत द्वार**–सामायिक, छेदोपस्थापनिक, परिहारविशुद्धि और सूक्ष्म सम्पराय, इन चार सयमो मे रहने वाला सयत जीव ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधता है, किन्तु यथाख्यात सयमवर्ती सयत जीव उपशान्तमोहादि वाला होने से ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधता, इसीलिए कहा गया है–सयत भजना से ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधता है, किन्तु असयत (मिथ्यादृष्टि आदि जीव) और सयतासयत (पचम गुणस्थानवर्ती देशविरत) जीव, ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधते है। जबकि नोसयत–नोअसयत–नोसयतासयत (अर्थात्–सिद्ध) जीव न तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है और न ही आयुष्यादि अन्य कर्म। सयत असयत और सयतासयत, ये तीनो पूर्ववत् आयुष्य बन्धकाल मे आयुष्य बाँधते है, अन्यथा नही बाँधते।

(७) **सम्यग्दृष्टि द्वार**–सम्यग्दृष्टि के दो भेद है–सराग सम्यग्दृष्टि और वीतराग सम्यग्दृष्टि। जो वीतराग सम्यग्दृष्टि है, वे ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधते, जबकि सराग सम्यग्दृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधते है। इसीलिए कहा है–सम्यग्दृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म कदाचित् बाँधता है, कदाचित् नही बाँधता। मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि तो ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधते ही है। सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीव आयुष्य कर्म को कदाचित् बाँधते है, कदाचित् नही बाँधते, इस कथन का आशय यह है कि अपूर्वकरणादि सम्यग्दृष्टि जीव आयुष्य को नही बाँधते, जबकि इनसे भिन्न चतुर्थ आदि गुणस्थानो वाले सम्यग्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि जीव पूर्ववत् आयुष्य बन्धकाल मे आयुष्य को बाँधते है, दूसरे समय मे नही बाँधते। सम्यग्–मिथ्यादृष्टि जीवो मे (मिश्रदृष्टि अवस्था मे) आयुष्य बाँधने के अध्यवसाय–स्थानो का अभाव होने से ये आयुष्य बाँधते ही नही है।

(८) **सज्ञी द्वार**–मन –पर्याप्ति वाले जीवो को सज्ञी कहते है। वीतराग सज्ञी जीव ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधते, जबकि सराग संज्ञी जीव बाँधते है, इसीलिए कहा है–सज्ञी जीव ज्ञानावरणीय कर्म को कदाचित् बाँधता है, कदाचित् नही बाँधता, किन्तु मन पर्याप्ति से रहित असज्ञी जीव ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधते ही है। नोसज्ञी–नोअसज्ञी जीवो के तीन भेद होते है–सयोगीकेवली, अयोगीकेवली और सिद्ध भगवान, इनके ज्ञानावरणीय कर्म के बन्ध के कारण न होने से ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधते। अयोगीकेवली और सिद्ध भगवान के सिवाय शेष सभी सज्ञी जीव एव असज्ञी जीव वेदनीय कर्म को बाँधते है। पूर्वोक्त आशयानुसार सज्ञी और असज्ञी, ये दोनो आयुष्य कर्म को भजना से बाँधते है। नोसज्ञी–नोअसज्ञी जीव आयुष्य कर्म को बाँधते ही नही है।

(५) **भवसिद्धिक द्वार**–जो भवसिद्धिक वीतराग होते है, वे ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधते, किन्तु जो भवसिद्धिक सराग होते है, वे इस कर्म को बाँधते है, इसीलिए भवसिद्धिक जीव ज्ञानावरणीय कर्म को भजना से बाँधते है। अभवसिद्धिक तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते ही है, जबकि नोभवसिद्धिक–नोअभवसिद्धिक (सिद्ध) जीव ज्ञानावरणीय कर्म एव आयुष्य कर्मादि को नही बाँधते। भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक ये दोनो आयुष्य कर्म को पूर्वोक्त आशयानुसार कदाचित् बाँधते है, कदाचित् नही बाँधते।

(१०) **दर्शन द्वार**–चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी, यदि छद्मस्थ वीतरागी हो तो ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधते, क्योकि वे केवल वेदनीय कर्म के बन्धक होते है। ये यदि सरागी–छद्मस्थ हो तो इसे बाँधते है। इसीलिए कहा गया है कि ये तीनो ज्ञानावरणीय कर्म को भजना से बाँधते है। भवस्थ केवलदर्शनी और सिद्ध केवलदर्शनी, इन दोनो के ज्ञानावरणीय कर्मबन्ध का हेतु न होने से, ये दोनो इसे नही बाँधते। चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी, छद्मस्थ वीतरागी और सरागी वेदनीय कर्म को बाँधते ही है। सयोगीकेवली भी वेदनीय कर्म बाँधते है, किन्तु अयोगीकेवली नही बाँधते।

Elaboration—Explanation regarding acquiring and not acquiring bondage of *karmas* enumerated in the aforesaid six ports of influx (*bandh dvar*)—

(5) Stree dvar—Female, male and neuter, all the three acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* An individual with the physical body of female, male or neuter but devoid of the feelings associated with the respective gender is called a *no-stree*, *no-purush* and *no-napumsak* being This being belongs to the *Anivritti-baadar Samparaya* (9th level of purity) and higher *Gunasthans* (levels of spiritual ascendance or level of purity of soul) Of these, a being at *Anivritti-baadar Samparaya* (9th level of purity) and *Sukshma Samparaya* (10th level of purity) acquires bondage of *Jnanavaraniya karma*. Those at still higher levels *Upashanta Moha* (11th) to *Ayogi Kevali* (14th) (non-genderic or gender transcendent beings) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* That is the reason for stating that non-genderic or gender transcendent beings sometimes acquire *Jnanavaraniya karma* and sometimes not Such beings never acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) because at the

Anivritti-baadar Samparaya (9th level of purity) to *Ayogi Kevali* (14th) *Gunasthans* there is total absence of this bondage. *Streevedi* (female), *purush-vedi* (male) and *napumsak-vedi* (neuter) beings acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) only once during one birth and that too only at the allotted time of this bondage. Other than the allotted time there is no bondage of *Ayushya karma* That is why it is said that these three kinds of beings sometimes acquire bondage of *Ayushya karma* and sometimes not

(6) Samyat dvar—A restrained being (*samyat jiva*) observing *Samayik Chaaritra* (equanimous conduct), *Chhedopasthapanik Chaaritra* (conduct of re-initiation after rectifying faults), *Parihar-vishuddhi Chaaritra* (destroying *karma* through special austerities) or *Sukshma samparaya Chaaritra* (discipline with residual subtle passions) acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* However, a restrained being observing *Yathakhyat chaaritra* (conduct conforming to perfect purity) does not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* because he has completely pacified fondness (*upashant moha*) That is why it is said that a restrained being sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not However, *asamyat* (unrestrained or unrighteous) and *samyatasamyat* (restrained unrestrained or the partially detached one at the fifth *Gunasthan*) beings acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* The *no-samyat*, *no-asamyat* and *no-samyatasamyat* beings (*Siddhas*) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* as well as *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) or any other *karma* *Samyat, asamyat* and *samyatasamyat* beings acquire bondage of *Ayushya karma* only at the allotted time as aforesaid otherwise not

(7) Samyagdrishti dvar—There are two kinds of *Samyagdrishti* (righteous)—*Saraag Samyagdrishti* (righteous with attachment) and *Vitaraag Samyagdrishti* (righteous without attachment) *Vitaraag Samyagdrishti* beings do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) whereas *Saraag Samyagdrishti* beings acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* That is why it is said that *Samyagdrishti* beings sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not The unrighteous and righteous-unrighteous (mixed) beings necessarily acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* The righteous and unrighteous beings sometimes acquire bondage of *Ayushya karma* and sometimes not This means that beings at higher levels including *Apurvakaran* do not acquire bondage of *Ayushya karma*

whereas righteous beings from fourth to seventh *Gunasthan* as well as the unrighteous beings acquire bondage of *Ayushya karma* only at the allotted time as aforesaid otherwise not As regards righteous-unrighteous beings, they do not acquire bondage of *Ayushya karma* in absence of intent of effort

(8) Sanjni dvar—A being endowed with fully developed mental faculty (*manah-paryapti*) is called *sanjni* A detached *sanjni* (sentient) being does not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* whereas a sentient being with attachment acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* that is why it is said that sentient beings sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not. However, non-sentient (*asanjni*) beings or those devoid of fully developed faculty of mind necessarily acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* No-*sanjni*-no-*asanjni* (not sentient, not non-sentient) beings have three categories—*Sayogi Kevali*, *Ayogi Kevali*, and *Siddha* As they are above any cause of this bondage they do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) Besides *Ayogi Kevali* and *Siddha* all other sentient and non-sentient beings acquire bondage of *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) Sentient and non-sentient beings acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) in aforesaid manner No-*sanjni*-no-*asanjni* do not acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*)

(9) Bhavasiddhik dvar—*Vitaraag Bhavasiddhik* (detached ones destined to be liberated) beings do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) whereas *Saraag Bhavasiddhik* (destined to be liberated but having attachment) beings acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* That is why it is said that *Bhavasiddhik* (destined to be liberated) beings sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not *Abhavasiddhik* (not destined to be liberated) beings necessarily acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* whereas *nobhavasiddhik-noabhavasiddhik* beings (*Siddhas*) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and other *karmas* *Bhavasiddhik* and *abhavasiddhik* beings sometimes acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) in aforesaid manner and sometimes not

(10) Darshan dvar—If a *chakshudarshani* (one with visual perception), *achakshudarshani* (one without visual perception) or

avadhidarshani (one with extrasensory perception of the physical dimension) is a *chhadmasth vitaraag* (one who is detached but short of omniscience due to residual *karmic* bondage), he does not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) This is because they are capable of acquiring bondage of *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) alone However if he is *saraagi chhadmasth* (one who is not detached but short of omniscience due to residual *karmic* bondage), he acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* That is why it is said that these three sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* and sometimes not *Bhavasth Keval-darshani* (a living omniscient) and *Siddha Keval-darshani* (a liberated omniscient) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* because they are above any cause of such bondage *Chakshudarshani, achakshudarshani, avadhidarshani, chhadmasth vitaraag* and *saraagi chhadmasth* acquire bondage of *Vedaniya karma* *Sayogikevali* also acquires bondage of *Vedaniya karma* but *Ayogikevali* does not

११ पर्याप्तक द्वार ELEVENTH PORT PARYAPTAK (FULLY DEVELOPED)

१९. [प्र १] णाणावरणिज्ज कम्मं किं पज्जत्तओ बंधइ, अपज्जत्तओ बंधइ, नोपज्जत्तए-नोअपज्जत्तए बंधइ ?

[उ] गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ, नोपज्जत्तए-नोअपज्जत्तए न बंधइ।

[२] एवं आउगवज्जाओ। [३] आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले णं बंधइ।

१९. [प्र १] भगवन् ! क्या ज्ञानावरणीय कर्म को पर्याप्तक जीव बाँधता है, अपर्याप्तक जीव बाँधता है अथवा नोपर्याप्तक-नोअपर्याप्तक जीव बाँधता है ?

[उ] गौतम ! (ज्ञानावरणीय कर्म को) पर्याप्तक जीव भजना से बाँधता है, अपर्याप्तक जीव बाँधता है और नोपर्याप्तक-नोअपर्याप्तक (सिद्ध) जीव नही बाँधता।

[२] इस प्रकार आयुष्य कर्म के सिवाय शेष सात कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] आयुष्य कर्म को निचले दो (पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीव) भजना से बाँधते है। नोपर्याप्त नही बाँधता।

19. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *paryaptak jiva* (fully developed being) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does an *aparyaptak jiva* (underdeveloped being) acquire that ? Or does a no-*paryaptak*-no-*aparyaptak jiva* (neither developed nor underdeveloped being, *Siddha*) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! *Paryaptak jiva* (fully developed being) sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes does not However, one with *Keval-darshan* does not acquire *Aparyaptak jiva* (underdeveloped being) acquires that and *no-paryaptak-no-aparyaptak jiva* (neither developed nor underdeveloped being, *Siddha*) does not acquire.

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karma* [3] As regards *Ayushya karma* (life-span determining *karma*), the first two sometimes acquire bondage and sometimes do not The third does not acquire

१२ भाषक द्वार TWELFTH PORT BHASHAK (CAPABLE OF SPEECH)

२०. [प्र. १] नाणावरणिज्जं किं भासए बंधइ, अभासए बधइ ?

[उ.] गोयमा ! दो वि भयणाए।

[२] एव वेयणिज्जवज्जाओ सत्त। [३] वेयणिज्जं भासए बंधइ, अभासए भयणाए।

२०. [प्र. १] भगवन ! क्या ज्ञानावरणीय कर्म को भाषक जीव बॉधता है, या अभाषक जीव बॉधता है ?

[उ] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म को दोनो-भाषक और अभाषक भजना से बॉधते है।

[२] इसी प्रकार वेदनीय को छोडकर शेष सात कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] वेदनीय कर्म को भाषक जीव बाँधता है, अभाषक जीव भजना से बाँधता है।

20. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *bhashak jiva* (a being capable of speech) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Or does an *abhashak jiva* (a being not capable of speech) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! *Bhashak* (a being capable of speech) and *abhashak jiva* (a being not capable of speech) both sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) [3] As regards *Vedaniya karma, bhashak jiva* (a being capable of speech) acquires bondage and *abhashak jiva* (a being not capable of speech) sometimes acquires bondage and sometimes does not

१३ परित्त द्वार THIRTEENTH PORT PARITTA (LIMITED)

२१. [प्र. १] णाणावरणिज्जं किं परित्ते बंधइ, अपरित्ते बंधइ, नोपरित्ते—नोअपरित्ते बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बंधइ, नोपरित्ते—नोअपरित्ते न बंधइ।

[२] एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ। [३] आउए परित्तो वि, अपरित्तो वि भयणाए। नोपरित्तो–नोअपरित्तो न बंधइ।

२१. [प्र. १] भगवन् ! क्या परित्त जीव ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधता है, अपरित्त जीव बाँधता है, अथवा नोपरित्त-नोअपरित्त जीव बाँधता है ?

[उ] गौतम ! परित्त जीव ज्ञानावरणीय कर्म को भजना से बाँधता है, अपरित्त जीव बाँधता है और नोपरित्त-नोअपरित्त (सिद्ध) जीव नहीं बाँधता।

[२] इस प्रकार आयुष्यकर्म को छोडकर शेष सात कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] आयुष्यकर्म को परित्तजीव भी और अपरित्तजीव भी भजना से बाँधते है तथा नोअपरित्तजीव नही बाँधते।

21. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *paritta jiva* (limited in terms of body or cycles of birth) acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* ? Does an *aparitta jiva* (unlimited in terms of body or cycles of birth) acquire that ? Or does a *no-paritta-no-aparitta jiva* (neither limited nor unlimited, *Siddha*) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! *Paritta jiva* sometimes acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes does not *Aparitta jiva* acquires that and *no-paritta-no-aparitta jiva* (*Siddha*) does not acquire

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karma* **[3]** As regards *Ayushya karma, Paritta jiva* and *Aparitta* both sometimes acquire bondage and sometimes do not *No-paritta-no-aparitta jiva* does not acquire

१४ ज्ञानद्वार FOURTEENTH PORT JNANA (KNOWLEDGE)

२२. [प्र १] णाणावरणिज्जं कम्मं किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ, सुयनाणी०, ओहिनाणी०, मणपज्जवनाणी०, केवलनाणी बंधइ० ?

[उ.] गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए, केवलनाणी न बंधइ।

[२] एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। [३] वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला चत्तारि बंधंति, केवलनाणी भयणाए।

२२. [प्र] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या आभिनिबोधिक (मति) ज्ञानी बाँधता है, श्रुतज्ञानी बाँधता है, अवधिज्ञानी बाँधता है, मन पर्यवज्ञानी बाँधता है अथवा केवलज्ञानी बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म को निचले चार (आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी और मन पर्यवज्ञानी) भजना से बाँधते है, केवलज्ञानी नही बाँधता।

[२] इसी प्रकार वेदनीय को छोडकर शेष सातो कर्म-प्रकृतियो के विषय मे समझ लेना चाहिए। [३] वेदनीय कर्म को निचले चारो बाँधते हैं, केवलज्ञानी भजना से बाँधता है।

22. [Q. 1] *Bhante* ! Does an *abhinibodhik jnani* (*mati-jnani* or one having sensory knowledge) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does a *shrut jnani* or *avadhi jnani* or *manahparyav jnani* or *Keval jnani* (one endowed with scriptural knowledge, extrasensory perception of the physical dimension, extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings or ultimate perfect knowledge) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! The first four (*mati jnani, shrut jnani, avadhi jnani* and *manahparyav jnani*) sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not However, *Keval jnani* does not acquire.

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) [3] As regards *Vedaniya karma*, the first four do not acquire bondage, *Keval-jnani* sometimes acquires bondage and sometimes does not

२३. [प्र.] णाणावरणिज्जं किं मतिअण्णाणी बंधइ, सुयनाणी अण्णाणी विभंगनाणी बंधइ ?

[उ] गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्त वि बंधंति। आउग भयणाए।

२३. [प्र] भगवन् ! क्या ज्ञानावरणीय कर्म को मति–अज्ञानी बाँधता है, श्रुत–अज्ञानी बाँधता है या विभगज्ञानी बाँधता है ?

[उ] गौतम ! आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सातो कर्मप्रकृतियो को ये उक्त तीनो बाँधते है। आयुष्य कर्म को ये तीनो कदाचित् नही बाँधते।

23. [Q.] *Bhante* ! Does a *mati-ajnani* (one not having sensory knowledge) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does a *shrut ajnani* (one not endowed with scriptural knowledge) or a *vibhang jnani* (one endowed with pervert knowledge) acquire that ?

[Ans.] All these three acquire bondage of all the seven species of *karmas* excepting for *Ayushya karma* They sometimes acquire bondage of *Ayushya karma* and sometimes not

१५. योग द्वार FIFTEENTH PORT · YOGA (ASSOCIATION)

२४. [प्र. १] णाणावरणिज्जं किं मणजोगी बंधइ, वय जोगी; काय जोगी, अजोगी बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न बंधइ।

[२] एवं वेदणिज्जवज्जाओ। [३] वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला बंधंति, अजोगी न बंधइ।

२४. [प्र. १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म को क्या मनोयोगी बाँधता है, वचनयोगी बाँधता है, काययोगी बाँधता है, या अयोगी बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म को निचले तीन-(मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी) भजना से बाँधते है, अयोगी नही बाँधता।

[२] इसी प्रकार वेदनीय को छोडकर शेष सातो कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] वेदनीय कर्म को मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी बाँधते है, अयोगी नही बॉधता।

24. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *manoyogi* (one having mental association) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Does a *vachan-yogi* or *kaaya yogi* or *ayogi* (one having vocal association, or physical association or no association) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! The first three (*mano yogi, vachan-yogi* and *kaaya yogi*) sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not However, *ayogi* does not acquire.

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Vedaniya karma* [3] As regards *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*), the first three acquire bondage and *ayogi* does not

१६ *उपयोग द्वार* SIXTEENTH PORT UPAYOG (INVOLVEMENT)

२५. [प्र.] णाणावरणिज्जं किं सागारोवउत्ते बधइ, अणागारोवउत्ते बधइ ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए।

२५ [प्र] भगवन् ! ज्ञानावरणीय (आदि अष्टविध) कर्म को क्या साकारोपयोग वाला बॉधता है या अनाकारोपयोग वाला बॉधता है ?

[उ] गौतम ! (दोनो प्रकार के जीव) आठो कर्मप्रकृतियो को भजना से बॉधते है।

25. [Q.] *Bhante* ! Does one with *saakaar upayoga* (cognitive involvement) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Or does one with *anaakaar upayoga* (perceptive involvement acquire that ?

[Ans.] Gautam ! Both these types of beings sometimes acquire bondage of all the eight species of *karma* and sometimes do not

१७ *आहारक द्वार* SEVENTEENTH PORT AHAARAK (HAVING INTAKE)

२६. [प्र. १] णाणावरणिज्जं किं आहारए बधइ, अणाहारए बंधइ ?

[उ] गोयमा ! दो वि भयणाए।

[२] एवं वेदणिज्ज-आउगवज्जाणं छण्ह। [३] वेदणिज्जं आहारए बधति, अणाहारए भयणाए। आउगं आहारए भयणाए, अणाहारए न बंधति।

२६. [प्र. १] भगवन् ! क्या ज्ञानावरणीय कर्म आहारक जीव बाँधता है या अनाहारक जीव बाँधता है ?

[उ] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म को आहारक और अनाहारक, दोनो प्रकार के जीव, कदाचित् बाँधते है और कदाचित् नही बाँधते।

[२] इसी प्रकार वेदनीय और आयुष्य कर्म को छोडकर शेष छहो कर्मप्रकृतियो के विषय मे समझ लेना चाहिए। [३] आहारक जीव वेदनीय कर्म को बाँधता है, अनाहारक भजना से बाँधता है। (इसी प्रकार) आयुष्य कर्म को आहारक भजना से बाँधता है, अनाहारक नही बाँधता।

26. [Q. 1] *Bhante* ! Does an *ahaarak jiva* (a being capable of intake) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Or does an *anahaarak jiva* (a being not capable of intake) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! Both *ahaarak jiva* and *anahaarak jiva* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not

[2] The same is true for all six species of *karmas* except for *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) and *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) [3] As regards *Vedaniya karma, ahaarak jiva* acquires bondage and *anahaarak jiva* sometimes acquires bondage and sometimes not As regards *Ayushya karma, ahaarak jiva* sometimes acquires bondage and sometimes not, and *anahaarak jiva* does not

१८ *सूक्ष्म द्वार* EIGHTEENTH PORT SUKSHMA (MINUTE)

२७. [प्र. १] णाणावरणिज्ज किं सुहुमे बंधइ, बादरे बधइ, नोसुहुमे–नोबादरे बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए, नोसुहुमे–नोबादरे न बधइ।

[२] एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। [३] आउए सुहुमे, बादरे भयणाए, नोसुहुमे–नोबादरे ण बंधइ।

२७. [प्र १] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म को क्या सूक्ष्म जीव बाँधता है, बादर जीव बाँधता है, अथवा नोसूक्ष्म-नोबादर जीव बाँधता है ?

[उ] गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म को सूक्ष्म जीव बाँधता है, बादर जीव भजना से बाँधता है, किन्तु नोसूक्ष्म–नोबादर (सिद्ध) जीव नही बाँधता।

[२] इसी प्रकार आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सातो कर्मप्रकृतियो के विषय मे कहना चाहिए। [३] आयुष्य कर्म को सूक्ष्म और बादर जीव भजना से बाँधते है, नोबादर जीव नही बाँधता।

27. [Q. 1] Bhante ! Does a *sukshma jiva* (minute being) acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* ? Does a *baadar jiva* (gross being) acquire that ? Or does a *no-sukshma-no-baadar jiva* (neither minute nor gross, *Siddha*) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! *Sukshma jiva* acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* Baadar *jiva* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not And *no-sukshma-no-baadar jiva* (*Siddha*) does not acquire

[2] The same is true for all seven species of *karmas* except for *Ayushya karma* [3] As regards *Ayushya karma, Sukshma jiva* and *Baadar* both sometimes acquire bondage and sometimes do not *No-sukshma-no-baadar jiva* does not acquire

१९ चरम द्वार NINETEENTH PORT CHARAM (FINAL)

२८. [प्र.] णाणावरणिज्जं किं चरिमे बंधइ, अचरिमे बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठ वि भयणाए।

२८. [प्र] भगवन् ! क्या ज्ञानावरणीय (आदि अष्टविध) कर्म को चरम जीव बाँधता है, अथवा अचरम जीव बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! चरम और अचरम, दोनो प्रकार के जीव, आठो कर्मप्रकृतियो को कदाचित् बाँधते है, (भवान्तकर्ता केवली की अपेक्षा) कदाचित् नही बाँधते।

28. [Q. 1] *Bhante* ! Does a *charam jiva* (a being in his final birth) acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* ? Or does an *acharam jiva* (a being not in his final birth) acquire that ?

[Ans.] Gautam ! Both *charam jiva* and *acharam jiva* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes (in context of an omniscient terminating birth-cycles) do not

विवेचन (११) **पर्याप्तक द्वार**–जिस जीव ने उत्पन्न होने के बाद अपने योग्य आहार-शरीरादि पर्याप्तियाँ पूर्ण कर ली हो, वह **पर्याप्तक** और जिसने पूर्ण न की हो, वह **अपर्याप्तक** कहलाता है। अपर्याप्तक जीव ज्ञानावरणीयादि सात कर्म बाँधते है। पर्याप्तक जीवो के दो भेद- वीतराग और सराग। इनमे से वीतराग पर्याप्तक ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधते, सराग पर्याप्तक बाँधते है। कहा गया है कि पर्याप्तक भजना से ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है। नोपर्याप्तक–नोअपर्याप्तक (सिद्ध) जीव ज्ञानावरणीयादि आठो कर्मो को नही बाँधते। पर्याप्तक और अपर्याप्तक दोनो आयुष्यबन्ध के काल मे आयुष्य बाँधते है, दूसरे समय मे नही, इसीलिए कहा गया है कि ये दोनो आयुष्य बन्ध भजना से करते है।

(१२) **भाषक द्वार**–भाषालब्धि वाले को 'भाषक' और भाषालब्धि से विहीन को 'अभाषक' कहते है। भाषक के दो भेद-वीतराग भाषक और सराग भाषक। वीतराग भाषक ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधते, सराग भाषक बाँधते है। इसीलिए कहा गया कि भाषक जीव भजना से ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है। अभाषक के चार भेद-अयोगीकेवली, सिद्ध भगवान, विग्रहगति समापन्न और एकेन्द्रिय पृथ्वीकायिकादि के जीव। इनमे से प्रथम दो तो ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधते, किन्तु शेष दो बाँधते है। आदि के दोनो अभाषक वेदनीय कर्म को नही

बाँधते, जबकि पिछले दोनो वेदनीय कर्म बाँधते है। इसीलिए कहा गया है कि अभाषक जीव ज्ञानावरणीय और वेदनीय कर्म भजना से बाँधते है। भाषक जीव (सयोगीकेवली गुणस्थान के अन्तिम समय तक के भाषक भी) वेदनीय कर्म बाँधते है।

(१३) **परित्त द्वार**–एक शरीर मे एक जीव हो उसे 'परित्त' अथवा अल्प–सीमित ससार वाले को भी 'परित्त' जीव कहते है। परित्त के दो प्रकार–वीतराग–परित्त और सराग परित्त। वीतराग परित्त ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधता, सराग परित्त बाँधता है। इसीलिए कहा गया है कि परित्त जीव भजना से ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधता है। जो जीव अनन्त जीवो के साथ एक शरीर मे रहता है, ऐसे साधारण काय वाले जीव को 'अपरित्त' कहते है, अथवा अनन्त ससारी को 'अपरित्त' कहते है। दोनो प्रकार के अपरित्त जीव ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है। नोपरित्त–नोअपरित्त अर्थात् सिद्ध जीव, ज्ञानावरणीयादि अष्ट कर्म नही बाँधते। परित्त और अपरित्त जीव आयुष्य बन्धकाल मे आयुष्य बाँधते है, किन्तु दूसरे समय मे नही, इसीलिए कहा गया है–परित्त और अपरित्त भजना से आयुष्य बाँधते है।

(१४) **ज्ञान द्वार**–प्रथम के चारो ज्ञान वाले वीतराग अवस्था मे ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधते, सराग अवस्था मे बाँधते है। इसीलिए इन चारो के ज्ञानावरणीय कर्मबन्ध के विषय मे भजना कही गई है। आभिनिबोधिक आदि चार ज्ञानो वाले वेदनीय कर्म को बाँधते है, क्योकि छद्मस्थ वीतराग भी वेदनीय कर्म के बन्धक होते है। केवलज्ञानी वेदनीय कर्म को भजना से बाँधते है, क्योकि सयोगीकेवली वेदनीय के बन्धक तथा अयोगीकेवली और सिद्ध वेदनीय के अबन्धक होते है।

(१५) **योग द्वार**–मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी, ये तीनो सयोगी जब ११वे, १२वे, १३वे गुणस्थानवर्ती होते है, तब ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधते, इनके अतिरिक्त अन्य सभी सयोगी जीव ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है। इसीलिए कहा गया है कि सयोगी जीव भजना से ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है। अयोगी के दो भेद–अयोगीकेवली और सिद्ध। ये दोनो ज्ञानावरणीय, वेदनीयादि कर्म नही बाँधते, किन्तु सभी सयोगी जीव वेदनीय कर्म के बन्धक होते है, क्योकि सयोगीकेवली गुणस्थान तक सातावेदनीय का बन्ध होता है।

(१६) **उपयोग द्वार**–सयोगी जीव और अयोगी जीव, इन दोनो के साकार (ज्ञान) और अनाकार (दर्शन) ये दोनो उपयोग होते है। इन दोनो उपयोगो मे वर्तमान सयोगी जीव, ज्ञानावरणीयादि आठो कर्मप्रकृतियो को यथायोग्य बाँधता है और अयोगी जीव नही बाँधता, क्योकि अयोगी जीव आठो कर्मप्रकृतियो का अबन्धक होता है। इसीलिए साकारोपयोगी और निराकारोपयोगी दोनो मे अष्टकर्मबन्ध की भजना कही है।

(१७) **आहारक द्वार**–आहारक दो प्रकार के है–वीतरागी और सरागी। वीतरागी आहारक ज्ञानावरणीय कर्म नही बाँधते, जबकि सरागी आहारक बाँधते है। इसी प्रकार अनाहारक के चार भेद होते है–(१) विग्रहगति समापन्न, (२) समुद्घातप्राप्त केवली, (३) अयोगीकेवली, और (४) सिद्ध। इनमे से प्रथम बाँधते है, शेष तीनो ज्ञानावरणीय कर्म को नही बाँधते। इसलिए कहा गया है–आहारक की तरह अनाहारक भी ज्ञानावरणीय कर्म को भजना से बाँधते है। आहारक जीव (सयोगीकेवली तक) वेदनीय कर्म को बाँधते है, जबकि अनाहारको मे से प्रथम व द्वितीय ये दोनो अनाहारक वेदनीय कर्म को बाँधते है, अयोगीकेवली और सिद्ध अनाहारक इसे नही बाँधते। इसीलिए कहा है कि अनाहारक जीव वेदनीय कर्म को भजना से बाँधते है। सभी प्रकार के अनाहारक जीव आयुष्य कर्म के अबन्धक है, जबकि आहारक जीव आयुष्य बन्धकाल मे आयुष्य बाँधते है, दूसरे समय मे नही बाँधते।

(१८) **सूक्ष्म द्वार**–सूक्ष्म जीव ज्ञानावरणीय कर्म बाँधते है। बादर जीवो के दो भेद है–(१) वीतराग बादर जीव ज्ञानावरणीय कर्म के अबन्धक है, (२) सराग बादर जीव इसके बन्धक है। नोसूक्ष्म–नोबादर अर्थात्–सिद्ध ज्ञानावरणीयादि सभी कर्मों के अबन्धक है। सूक्ष्म और बादर दोनो आयुष्य बन्धकाल मे आयुष्य कर्म बाँधते है, दूसरे समय मे नही। इसीलिए इनका आयुष्य कर्मबन्ध भजना से कहा गया है।

(१९) **चरम द्वार**–जिसका यह भव अन्तिम भव है या होने वाला है, उसे 'चरम' कहते है। यहाँ 'भव्य' को 'चरम' कहा गया है। अचरम का अर्थ है–जिसका अन्तिम भव नही होने वाला है अथवा जिसने भवो का अन्त कर दिया है। इस दृष्टि से अभव्य और सिद्ध को यहाँ 'अचरम' कहा है। चरम जीव यथायोग्य आठ कर्मप्रकृतियो को बाँधता है और जब चरम जीव अयोगी अवस्था मे हो, तब नही भी बाँधता। इसीलिए कहा गया है कि चरम जीव आठो कर्मप्रकृतियो को भजना से बाँधता है। जिसका कभी चरम भव नही होगा–ऐसा अभव्य अचरम तो आठो प्रकृतियो को बाँधता है, और सिद्ध अचरम (भवो का अन्तकर्ता) तो किसी भी कर्मप्रकृति को नही बाँधता। इसीलिए कहा गया कि अचरम जीव आठो कर्मप्रकृतियो को भजना से बाँधता है। *(वृत्ति पत्राक २५६ से २५९ तक)*

Elaboration—(11) Paryaptak dvar—A being who has attained full development of physical and mental capacities including food intake and body formation is called *paryaptak* One who has not attained this full development is called *aparyaptak* The *aparyaptak jivas* acquire bondage of seven species of *karmas* including *Jnanavaraniya karma* *Paryaptak jivas* (fully developed beings) are of two kinds—*vitaraag* and *saraag* Out of these *vitaraag* (detached) *paryaptak jivas* do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* but *saraag* (with attachment) *paryaptak jivas* acquire That is why the general statement that *paryaptak jivas* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* and sometimes not *No-paryaptak-no-aparyaptak jiva* (neither developed nor underdeveloped being, *Siddha*) does not acquire bondage of any of the eight *karma* species *Paryaptak* and *aparyaptak jivas* both acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) only at the allotted time and not otherwise That is why it is mentioned that these two sometimes acquire bondage of *Ayushya karma* and sometimes not

(12) Bhashak dvar—A being capable of speech is called *bhashak jiva* and that not capable of speech is called *abhashak jiva* *Bhashak jivas* are of two kinds—*vitaraag bhashak* and *saraag bhashak* A *Vitaraag bhashak* does not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* but *saraag bhashak* does so That is why it is mentioned that *bhashak jivas* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not *Abhashak jivas* are of four kinds—*Ayogikevali* (omniscient without association), *Siddha* (liberated soul), *Vigrahagati Samapanna* (those

undergoing oblique movement) and *Ekendriya jivas* (one-sensed beings like earth-bodied beings) Out of these, the first two do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* but the remaining two do so The first two of the *abhashak jivas* do not acquire bondage of *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*), whereas the last two do so That is why it is said that *abhashak jiva* (a being not capable of speech) sometimes acquires bondage *Jnanavaraniya karma* and *Vedaniya karma* and sometimes does not *Bhashak jivas* (even those at the last moment of the *Sayogikevali Gunasthan*) acquire bondage of *Vedaniya karma*

(13) Paritta dvar—*Paritta* means one soul confined to one body or a being with limited cycles of birth *Paritta* (limited in terms of body or cycles of birth) are of two kinds—*Vitaraag paritta* and *saraag paritta* *Vitaraag paritt* does not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* but *saraag* does That is why it is mentioned that *paritta jiva* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring) *karma* and sometimes not A soul that lives in a body along with infinite other souls is called *aparitta jiva* or *saadhaaran kaaya jiva* Also, a being with infinite cycles of birth is called *aparitta jiva* Both these kinds of *aparitta jivas* acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* *No-paritta-no-aparitta jiva* or *Siddha* does not acquire any of the eight species of *karmas* including *Jnanavaraniya karma* *Paritta jiva* and *aparitta* both acquire bondage of *Ayushya karma* at the allotted time otherwise not That is why it is said that they sometimes acquire bondage and sometimes do not

(14) Jnana dvar—Those endowed with first four *jnanas* (knowledge) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* in their *vitaraag* (detached) state but do so in their *saraag* (with attachment) state That is why it is stated that they sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not Those with the first four *jnanas* including *mati-jnana* acquire bondage of *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) because even the *chhadmasth vitaraag* (one who is detached but short of omniscience due to residual *karmic* bondage) acquire bondage of *Vedaniya karma* *Keval-jnani* (omniscient) sometimes acquires bondage of *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) and sometimes not because *Sayogikevali* acquires that bondage and *Ayogikevali* and *Siddha* does not

(15) Yoga dvar—*Manoyogi, vachan-yogi* or *kaaya yogi* (one having mental association, vocal association, or physical association), all these

three *sayogi* (with association) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* when they are at 11th, 12th or 13th *Gunasthan*. Besides these, all *sayogis* acquire bondage of *Jnanavaraniya karma*. That is why it is said that *sayogis* sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes do not *Ayogis* (without association) are of two kinds—*Ayogikevali* and *Siddha*. Both these do not acquire bondage of *karmas* including *Jnanavaraniya karma* and *Vedaniya karma* However, all *sayogi jivas* acquire bondage of *Vedaniya karma* because even at *Sayogikevali Gunasthan* there is a bondage of *sata-vedaniya karma* (the *karma* that causes feelings of pleasure)

(16) Upayog dvar—Both *sayogi* and *ayogi jivas* have *saakaar upayoga* (cognitive involvement, *jnana*) and *anaakaar upayoga* (perceptive involvement, *darshan*) *Sayogi jiva* with both these involvements acquires bondage of all the eight species of *karmas* including *Jnanavaraniya karma* depending on the involvement However, *ayogi jiva* does not do so because he is beyond the scope of bondage of all the eight species of *karmas* That is why it is said that both these types of beings sometimes acquire bondage of all the eight species of *karma* and sometimes do not

(17) Ahaarak dvar—*Ahaarak jivas* (beings capable of intake) are of two kinds—*vitaraag* and *saraag* *Vitaraag ahaarak jivas* do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* whereas *saraag ahaarak jivas* do so In the same way there are four categories of *anahaarak jivas*—(1) *Vigrahagati Samapanna* (those undergoing oblique movement), (2) *Samudghat-prapt Kevali* (omniscient undergoing the special process of expanding and contracting sections of soul), (3) *Ayogikevali* (omniscient without association) and (4) *Siddha* (liberated soul) Of these, the first category acquires bondage of *Jnanavaraniya karma* and the remaining three do not That is why it is stated that like *ahaarak jivas*, *anahaarak jivas* also sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not *Ahaarak jivas* (up to *sayogikevali*) acquire bondage of *Vedaniya karma* (sensation producing *karma*) whereas among the *anahaarak jivas* the first two acquire bondage of *Vedaniya karma*, the remaining two do not That is why it is mentioned that *anahaarak jivas* sometimes acquire bondage of *Vedaniya karma* and sometimes not. All categories of *anahaarak jivas* do not acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) whereas *ahaarak jivas* acquire bondage of *Ayushya karma* only at the allotted time and not otherwise

(18) Sukshma dvar—*Sukshma jivas* (minute beings) acquire bondage of *Jnanavaraniya karma*. *Baadar jivas* (gross beings) are of two kinds—(1) *Vitaraag baadar jivas* (detached gross beings) do not acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* (2) *Saraag baadar jivas* (gross beings with attachment) acquire this bondage *No-sukshma-no-baadar jiva* (neither minute nor gross; *Siddha*) do not acquire bondage of any of the eight species of *karmas* including *Jnanavaraniya karma* Both *sukshma* and *baadar jivas* acquire bondage of *Ayushya karma* (life-span determining *karma*) only at the allotted time and not otherwise That is why it is stated that they sometimes acquire bondage of *Jnanavaraniya karma* and sometimes not

(19) Charam dvar—A being in his final birth before liberation is called *charam jiva* Here the term *charam* has been used for *bhavya* (worthy of being liberated) *Acharam jiva* is one who has no final birth Generally it means unworthy of being liberated but here it also means one who has terminated his final birth (*Siddha*) Thus here both *abhavya* as well as *Siddha* have been called *acharam* A *charam jiva* acquires bondage of the eight species of *karmas* depending on his mental state, however when he is in *ayogi* state, he does not do so That is why it is mentioned that a *charam jiva* sometimes acquires bondage of eight species of *karmas* and sometimes not An *abhavya charam* acquires bondage of all eight species of *karmas* where as a *Siddha charam* does not do so That is why it is said that *acharam jiva* sometimes acquires bondage of all eight species of *karmas* and sometimes not *(Vritti, leaves 256 to 259)*

वेदक जीवो का अल्प–बहुत्व ALPABAHUTVA (MINIMUM-MAXIMUM) OF GENDERIC BEINGS

२९. [प्र. १] एएसि ण भंते ! जीवाणं इत्थिवेयगाणं पुरिसवेयगाणं नपुंसगवेयगाणं अवेयगाण य कयरे कयरे हिंतो अप्पा वा ४ ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेयगा, इत्थिवेयगा संखेज्जगुणा, अवेयगा अणंतगुणा, नपुंसगवेयगा अणंतगुणा।

२९. [प्र. १] भगवन् ! स्त्रीवेदक, पुरुषवेदक, नपुसकवेदक और अवेदक, इन जीवो मे से कौन किससे अल्प है, बहुत है, तुल्य है अथवा विशेषाधिक है ?

[उ.] गौतम ! सबसे थोडे जीव पुरुषवेदक है, उनसे सख्येयगुणा अधिक स्त्रीवेदक जीव है, उनसे अनन्तगुणा अवेदक है और उनसे भी अनन्तगुणा नपुसकवेदक है।

29. [Q. 1] *Bhante* ! Of the *streevedak jivas* (beings with female gender), *purush-vedak jivas* (beings with male gender), *napumsak-vedak jivas* (beings with neuter gender) and *avedak jivas* (beings with no gender, *Siddha*) which one are comparatively less, more, equal and much more ?

[Ans.] Gautam ! *Purush-vedak jivas* (beings with male gender) are minimum, *streevedak jivas* (beings with female gender) are countable times more then these, *avedak jivas* (beings with no gender, *Siddha*) are infinite times more than these and *napumsak-vedak jivas* (beings with neuter gender) are infinite times more than these

[२] एएसि सव्वेसिं पदाणं अप्पबहुगाइ उच्चारेयव्वाइं जाव सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा।

सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति !

॥ छट्ठसए : तइओ उद्देसो समत्तो ॥

[२] इन (पूर्वोक्त) सर्व पदो (सयतादि से लेकर चरम तक चतुर्दश द्वारो मे उक्त पदो) का अल्प - बहुत्व कहना चाहिए। (सयत पद से लेकर) यावत् सबसे थोडे अचरम (सिद्ध तथा अभव्य) जीव है, और उनसे अनन्तगुणा चरम (भव्य) जीव है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है, यो कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरने लगे।

[2] In the same way comparative minimum-maximum for all these (preceding fourteen ports from *samyat* to *charam*) should be stated Starting from *samyat jivas* and so on up to minimum are *acharam* (*Siddhas*) and infinite times more than these are *charam jivas* (beings worthy of liberation)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so" With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन वेदको के अल्प–बहुत्व का स्पष्टीकरण–यहाँ पुरुषवेदक जीवो की अपेक्षा स्त्रीवेदक जीवो को सख्यातगुणा अधिक बताने का कारण यह है कि देवो की अपेक्षा देवियाँ बत्तीस गुणी और बत्तीस अधिक है, नर मनुष्य की अपेक्षा नारी सत्ताईस गुणी और सत्ताईस अधिक है और तिर्यच नर की अपेक्षा तिर्यचनी तीन गुणी और तीन अधिक है। स्त्रीवेदको की अपेक्षा अवेदको को अनन्तगुणा बताने का कारण यह है कि अनिवृत्ति बादर सम्परायादि वाले जीव और सिद्ध जीव अनन्त है, इसलिए वे स्त्रीवेदको की अपेक्षा अनन्तगुणा है। अवेदको से नपुसकवेदी अनन्त इसलिए है कि सिद्धो की अपेक्षा अनन्तकायिक जीव अनन्तगुणा है, जो सब नपुसक है। *(वृत्ति, पत्राक २६०)*

॥ छठा शतक · तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Alpabahutva (minimum-maximum) of genderic beings—The reason for stating females to be more than males is that it is believed that among divine beings goddesses are thirty two times and thirty two more than gods, among human beings females are twenty seven times and twenty seven more than males and among animals females are three times and three more than males The reason for stating that non-genderic or gender transcendent beings are infinite times more than those with female gender is that the beings at *Anivritti Baadar Samparaaya* and higher *Gunasthans* inclusive of *Siddhas* are infinite, therefore they are infinite times more than those with female gender Beings with neuter gender are infinite times more than non-genderic or gender transcendent beings because as compared with *Siddhas, anantakaayik jivas* (infinite souls in one body) are infinite times more, and they all are with neuter gender *(Vritti leaf 260)*

● END OF THE THIRD LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : चतुर्थ उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : FOURTH LESSON

सप्रदेश SAPRADESH (WITH SECTIONS)

प्रस्तुत उद्देशक मे जीव की सप्रदेशता–अप्रदेशता पर काल आदि विभिन्न अपेक्षाओ से चिन्तन किया गया है।

This lesson discusses the sectional (*sapradeshi*) and non-sectional (*apradeshi*) states of *jiva* (soul, living being) from different viewpoints including time

१ प्रदेश द्वार : जीव–प्रदेश निरूपण **PRADESH DVAR (PORT OF SECTIONS) SOUL-SECTIONS**

१. [प्र.] जीवे णं भंते ! कालापदेसेणं किं सपदेसे, अपदेसे ?

[उ.] गोयमा ! नियमा सपदेसे।

१. [प्र] भगवन् ! क्या जीव कालादेश (काल की अपेक्षा) से सप्रदेश है या अप्रदेश है ?

[उ.] गौतम ! कालादेश से जीव नियमत (निश्चित रूप से) सप्रदेश है।

1. [Q.] *Bhante* ! Relative to time (*kaaladesh*), is soul (*jiva*) with sections (*sapradesh*) or without sections (*apradesh*) ?

[Ans.] Gautam ! As a rule it is with sections relative to time

२. [प्र.] नेरइए ण भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे, अपदेसे ?

[उ] गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय अपदेसे। एवं जाव सिद्धे।

२. [प्र] भगवन् ! क्या नैरयिक जीव कालादेश से सप्रदेश है या अप्रदेश है ?

[उ] गौतम ! एक नैरयिक जीव कालादेश से कदाचित् सप्रदेश है और कदाचित् अप्रदेश है। इस प्रकार यावत् (भवनपति से वैमानिक देव) यावत् सिद्ध–जीव–पर्यन्त कहना चाहिए।

2. [Q.] *Bhante* ! Relative to time (*kaaladesh*), is an infernal being (*nairayik jiva*) with sections (*sapradesh*) or without sections (*apradesh*) ?

[Ans.] Gautam ! Relative to time, single infernal being is sometimes with sections and sometimes without sections The same should be repeated for and so on up to (divine beings up to *Vaimaniks*) and so on up to *Siddha*

३. [प्र.] जीवा णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा, अपदेसा ?

[उ.] गोयमा ! नियमा सपदेसा।

३. [प्र.] भगवन्! कालादेश की अपेक्षा बहुत जीव (अनेक जीव) सप्रदेश है या अप्रदेश हैं?

[उ.] गौतम! अनेक जीव कालादेश की अपेक्षा नियमत सप्रदेश है।

3. [Q.] *Bhante* ! Relative to time (*kaaladesh*), are many souls (*jiva*) with sections (*sapradesh*) or without sections (*apradesh*)?

[Ans.] Gautam ! As a rule many souls are with sections relative to time

४. [प्र.] नेरइया णं भंते! कालादेसेणं किं सपदेसा, अपदेसा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सपदेसा, अहवा सपदेसा य अपदेसे य, अहवा सपदेसा य अपदेसा य। एवं जाव थणियकुमारा।

४. [प्र.] भगवन्! नैरयिक जीव (बहुत-से नैरयिक) कालादेश की अपेक्षा क्या सप्रदेश है या अप्रदेश है?

[उ.] गौतम! (१) सभी (नैरयिक) सप्रदेश है, (२) बहुत-से सप्रदेश और एक अप्रदेश है, और (३) बहुत-से सप्रदेश और बहुत-से अप्रदेश है। इसी प्रकार असुरकुमारो से स्तनित कुमारो तक कहना चाहिए।

4. [Q.] *Bhante* ! Relative to time (*kaaladesh*), are many infernal beings (*nairayik jiva*) with sections (*sapradesh*) or without sections (*apradesh*)?

[Ans.] Gautam ! Relative to time (1) all infernal beings are with sections, (2) many are with sections and one without sections, and (3) many are with sections and many are without sections The same should be repeated for divine beings from Asur Kumars to Stanit Kumars

५. [प्र.] पुढविकाइया णं भंते! किं सपदेसा, अपदेसा ?

[उ.] गोयमा! सपदेसा वि, अपदेसा वि। एवं जाव वणप्फतिकाइया।

६. सेसा जहा नेरइया तहा जाव सिद्धा।

५. [प्र.] भगवन्! पृथ्वीकायिक जीव सप्रदेश है या अप्रदेश है?

[उ.] गौतम! पृथ्वीकायिक जीव सप्रदेश भी है, अप्रदेश भी है। इसी प्रकार (अप्कायिक से) वनस्पतिकायिक तक कहना चाहिए।

६. शेष सभी जीवो के लिए जिस प्रकार नैरयिक जीवो का कथन किया गया है, उसी प्रकार सिद्धपर्यन्त कहना चाहिए।

5. [Q.] *Bhante* ! Relative to time (*kaaladesh*), are earth-bodied beings (*prithvikaayik jivas*) with sections (*sapradesh*) or without sections (*apradesh*)?

[Ans.] Gautam ! Earth-bodied beings (*prithvikaayik jivas*) are with sections (*sapradesh*) as well as without sections (*apradesh*) The same should be repeated for (*apkaayiks* or water-bodied beings) and so on up to plant-bodied beings (*vanaspatikaayiks*)

6. For all the remaining *jivas* (souls, living beings) up to *Siddhas* the statement about infernal beings should be repeated

विवेचन इस उद्देशक मे भी १४ द्वारो के माध्यम से जीवो की सप्रदेशता, अप्रदेशता का वर्णन है। वृत्तिकार द्वारा इनका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया गया है–

१ सप्रदेश द्वार–कालादेश का अर्थ है- काल की अपेक्षा से। विभागरहित को अप्रदेश और विभागसहित को सप्रदेश कहते है। समुच्चय मे जीव अनादि है, इसलिए उसकी स्थिति अनन्त समय की है, इसलिए वह सप्रदेश है। जो जिस भाव (पर्याय व अवस्था) मे प्रथम समयवर्त्ती होता है वह काल की अपेक्षा अप्रदेशी होता है और एक समय से अधिक दो–तीन–चार आदि समयो मे वर्तने वाले काल की अपेक्षा सप्रदेश होता है।

कालादेश की अपेक्षा जीवो के भग–जिस नैरयिक जीव को उत्पन्न हुए एक समय हुआ है, वह कालादेश से अप्रदेश है, और प्रथम समय के पश्चात् द्वितीय–तृतीयादि समयवर्ती नैरयिक सप्रदेश है। इस प्रकार औधिक जीव का एक नैरयिक आदि के २४ दण्डक और सिद्ध के मिलाकर २६ दण्डको मे एकवचन को लेकर कदाचित् अप्रदेश, कदाचित् सप्रदेश, ये दो-दो भग होते है। इन्ही २६ दण्डको मे बहुवचन को लेकर विचार करने पर तीन भग (विकल्प) होते है–

(१) उपपात के विरहकाल मे पूर्वोत्पन्न जीवो की सख्या असख्यात होने से सभी सप्रदेश होते है, अत वे सब सप्रदेश है।

(२) पूर्वोत्पन्न नैरयिको मे जब एक नया नैरयिक उत्पन्न होता है, तब उसकी प्रथम समय की उत्पत्ति की अपेक्षा से वह 'अप्रदेश' कहलाता है। बाकी नैरयिक जीव जिनकी उत्पत्ति को दो–तीन–चार आदि समय हो गये है, वे 'सप्रदेश' कहलाते है।

(३) पूर्वोत्पन्न नैरयिको के मध्य अनेक नैरयिक एक साथ उत्पन्न होते है, तब तीसरा भग बनता है, अनेक सप्रदेश (पूर्वोत्पन्न की अपेक्षा) अनेक अप्रदेश (तत्काल उत्पद्यमान की अपेक्षा) पृथ्वीकायिकादि एकेन्द्रिय जीवो मे दो भग होते है–वे कदाचित् सप्रदेश भी होते है, और कदाचित् अप्रदेश भी। क्योकि उनमे प्रति समय अनेक जीव उत्पन्न होते रहते है। द्वीन्द्रियो से लेकर सिद्धपर्यन्त पूर्ववत् (नैरयिको की तरह) तीन–तीन भग होते है।

Elaboration—This lesson describes sectionality and non-sectionality of *jivas* (souls, living beings) under 14 *dvars* (ports, headings) The commentator (*Vritti*) has explained these as follows—

(1) Sapradesh Dvar—*Kaaladesh* means relative to time (here it means in terms of sections or units of time) One without sections is *apradesh* (without sections) and one with sections is *sapradesh* (with sections) Collectively speaking *jiva* (souls, living beings) are without a beginning, therefore their existence is of infinite duration and thus

relative to time it falls in the category of sapradesh (with sections or with units of time) A being commencing its existence in a particular mode or state (*paryaya*) is *apradesh* (without sections) at the first *Samaya* (*Samaya* being the smallest unit of time, it does not have any further sections) As time passes and its existence is two, three, four and more *Samayas* long it is *sapradesh* (with sections) relative to time

Divisions of beings in relation to time—The infernal being at the first *Samaya* of its birth is *apradesh* relative to time When its existence is two, three, four and more *Samayas* long it is *sapradesh* (with sections) This way generally speaking a single *jiva*, belonging to any of the 24 *Dandaks* (places of suffering) including infernal beings and 26 *Dandaks* including *Siddha*, has two alternatives (*bhang*)—sometimes *apradesh* and sometimes *sapradesh* For the same 26 places when the general statement is about many *jivas* there are three alternatives—

(1) During the intervening time (*virah kaal*) after an instantaneous birth (*upapaat*) the number of living beings already born is innumerable and they all are *sapradesh* (with sections) relative to time

(2) Among the already born infernal beings when one new being is born then at that moment of birth he is *apradesh* relative to time and all other previously born beings are *sapradesh* because they are already past two, three, four or more *Samayas* after birth

(3) Among the already born infernal beings when many new being are born at the same moment then at that moment of birth they all are *apradesh* relative to time and all other previously born beings are *sapradesh* This is the third alternative

Among one-sensed beings, including earth-bodied beings, there are only two alternatives—they are sometimes *apradesh* (without sections) and sometimes *sapradesh* This is because they have numerous beings born among them every moment. All other beings from two-sensed ones to *Siddhas* have three alternatives just like infernal beings

२. आहारक द्वार AHARAK DVAR (PORT OF BEINGS WITH INTAKE)

७. [१] आहारगाणं जीवेगेंदियवज्जो तियभंगो।

[२] अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा छब्भंगा एवं भाणियव्वा–सपदेसा वा, अपदेसा वा, अहवा सपदेसे य अपदेसे य, अहवा सपदेसे य अपदेसा य, अहवा सपदेसा य अपदेसे य, अहवा सपदेसा य अपदेसा य। सिद्धेहिं तियभंगो।

७. [१] जीव और एकेन्द्रियो को छोडकर शेष सभी आहारक जीवों के लिए तीन भग कहने चाहिए–यथा (१) सभी सप्रदेश, (२) बहुत सप्रदेश और एक अप्रदेश, तथा (३) बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश।

[२] अनाहारक जीवो के लिए एकेन्द्रिय को छोडकर छह भग इस प्रकार होते है–यथा–(१) सभी सप्रदेश, (२) सभी अप्रदेश, (३) एक सप्रदेश और एक अप्रदेश, (४) एक सप्रदेश और बहुत अप्रदेश, (५) बहुत सप्रदेश और एक अप्रदेश, तथा (६) बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश। सिद्धो के लिए तीन भग (सूत्र ४–१) कहने चाहिए।

7. [1] Leaving aside *jiva* (in general) and one-sensed beings, three alternative should be stated for all other *ahaarak jivas* (living beings with intake)—Relative to time (1) all beings are with sections, (2) many are with sections and one without sections, and (3) many are with sections and many are without sections

[2] For *anahaarak jivas* (living beings without intake) other than one-sensed beings, there are six alternatives for all beings—(1) all beings are with sections (*sapradesh*), (2) all are without sections (*apradesh*), (3) one with sections and one without sections, (4) one with sections and many without sections, (5) many with sections and one without sections, and (6) many with sections and many without sections With regard to *Siddhas* three alternatives should be stated (aphorism 4/1)

विवेचन २ **आहारक द्वार**–आहारक और अनाहारक दोनो प्रकार के जीवो के प्रत्येक के एकवचन और बहुवचन को लेकर क्रमश एक-एक दण्डक यानी दो-दो दण्डक कहने चाहिए। जो जीव विग्रहगति मे या केवली समुद्घात मे अनाहारक होकर फिर आहारकत्व को प्राप्त करता है, वह आहारक काल के प्रथम समय वाला जीव 'अप्रदेश' और प्रथम समय के अतिरिक्त द्वितीय-तृतीयादि समयवर्ती जीव 'सप्रदेश' कहलाता है। इसीलिए कदाचित् कोई सप्रदेश और कदाचित् कोई अप्रदेश कहा गया है–इसी प्रकार सभी आदि वाले (शुरू होने वाले) भावो मे एकवचन मे जान लेना चाहिए। अनादि वाले भावो मे तो सभी नियमत सप्रदेश होते है। बहुवचन वाले दण्डक मे भी इसी प्रकार–कदाचित् सप्रदेश भी और कदाचित् अप्रदेश भी होते है। जैसे–आहारकपने मे रहे हुए बहुत जीव होने से उनका सप्रदेशत्व है तथा बहुत-से जीव विग्रहगति के पश्चात् प्रथम समय मे तुरन्त ही अनाहारक होने से उनका अप्रदेशत्व भी है। इस प्रकार आहारक जीवो मे सप्रदेशत्व और अप्रदेशत्व ये दोनो पाये जाते है। इसी प्रकार एकेन्द्रिय (पृथ्वीकायिक आदि) जीवो के लिए भी कहना चाहिए। सिद्ध अनाहारक होने से उनमे आहारकत्व नही होता है। अत सिद्ध पद और एकेन्द्रिय को छोडकर नैरयिकादि जीवो मे मूल पाठोक्त तीन भग–(१) सभी सप्रदेश, अथवा (२) बहुत सप्रदेश और एक अप्रदेश, अथवा (३) बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश कहने चाहिए। अनाहारक के भी इसी प्रकार एकवचन–बहुवचन को लेकर दो दण्डक कहने चाहिए। ये जब अनाहारकत्व के प्रथम समय मे होते है तो 'अप्रदेश' और द्वितीय–तृतीय आदि समय मे होते है तो 'सप्रदेश' कहलाते है। बहुवचन के दण्डक मे जीव और एकेन्द्रिय को नही लेना चाहिए, क्योंकि इन दोनो पदो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश', यह एक ही भग पाया जाता है, क्योंकि इन

दोनो पदो मे विग्रहगति-समापन्न अनेक जीव सप्रदेश और अनेक जीव अप्रदेश मिलते है। नैरयिकादि तथा द्वीन्द्रिय आदि जीवो मे थोडे जीवो की उत्पत्ति होती है। अतएव उनमे एक-दो आदि अनाहारक होने से छह भग सभवित होते है, यहाँ एकवचन की अपेक्षा दो भग नही होते, क्योंकि यहाँ बहुवचन का अधिकार चलता है। सिद्धो मे तीन भग होते है, उनमे सप्रदेश पद बहुवचनान्त ही सम्भवित है।

Elaboration—(2) Aharak Dvar—For *ahaarak* (with intake) and *anahaarak jivas* each one has two alternatives (*bhang*) depending on singularity and plurality. The beings who become *anahaarak* (without intake) when they commence either the process of oblique movement or *Kevali Samudghat* and then again become *ahaarak* are *apradesh* (without sections) at the first moment of this transformation and later become *sapradesh* (with sections) That is why it is said that sometimes some are *sapradesh* and sometimes some are *apradesh* The same is true for all in context of singularity and the moment of commencement In post-commencement cases all are *sapradesh* as a rule In case of plurality also sometimes *sapradesh* and sometimes *apradesh* is applicable For example as there are numerous *ahaarak* beings *sapradesh* is applicable and as there are numerous *anahaarak* beings in the first moment of their transformation after oblique movement *apradesh* (without sections) is applicable Thus *sapradesh* and *apradesh* both states are found in *ahaarak jivas* Same is true for one-sensed beings including earth-bodied beings As all *Siddhas* are *anahaarak* they do not have *ahaarak* category Therefore, leaving aside one-sensed beings and *Siddhas* three alternatives should be mentioned for all beings including infernal ones—(1) all beings are with sections, (2) many are with sections and one without sections, and (3) many are with sections and many are without sections For *anahaarak jivas* also two divisions related to singularity and plurality should be stated At the first moment of their being *ahaarak* they are *apradesh* and during the second, third and more *Samayas* they are *sapradesh* (with sections). In case of plurality, *jivas* (in general) and one-sensed beings should not be included because in both these cases only one state (*abhang*) is applicable—many *sapradesh* (with sections) and many *apradesh* (without sections). This is because in both these cases many post-oblique-movement beings are *sapradesh* and many *apradesh* Comparatively less beings are born among infernal beings and other beings including two-sensed ones Therefore there are periods when there are only one, two or more *anahaarak jivas* among them As such there are six alternatives (*bhang*) of *sapradesh* and *apradesh* possible for them In these cases there is an

absence of even two alternatives related to singularity because only plurality is possible here *Siddhas* have three alternatives, because for them *sapradesh* is possible only with respect to plurality

३ भव्य द्वार BHAVYA DVAR (PORT OF THE WORTHY)

८. [१] भवसिद्धिया अभवसिद्धिया जहा ओहिया।

[२] नोभवसिद्धिय–नोअभवसिद्धिया जीव–सिद्धेहिं तियभंगो।

८. [१] भवसिद्धिक (भव्य) और अभवसिद्धिक (अभव्य) जीवो मे औघिक (सामान्य) जीवो की तरह होते है।

[२] नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक जीव और सिद्धो मे (पूर्ववत्) तीन भग होते है।

8. [1] *Bhavasiddhik* (worthy of liberation) and *abhavasiddhik* (unworthy of liberation) follow the pattern of the general statement (*aughik*) about *jivas*

[2] *No-bhavasiddhik-no-abhavasiddhik* (neither worthy of liberation nor unworthy of liberation) and *Siddhas* have three alternatives (as aforesaid)

४ सज्ञी द्वार SANJNI DVAR (PORT OF THE SENTIENT)

९. [१] सण्णीहिं जीवादिओ तियभगो।

[२] असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइय–देव–मणुएहिं छब्भंगा।

[३] नोसण्णि–नोअसण्णिणो जीव–मणुय–सिद्धेहिं तियभंगो।

९. [१] सज्ञी जीवो मे जीव आदि तीन भग पाये जाते है।

[२] असज्ञी जीवो मे एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग। नैरयिक, देव और मनुष्यो मे छह भग कहने चाहिए।

[३] नोसज्ञी नोअसज्ञी जीव, मनुष्य और सिद्धो मे तीन भग कहने चाहिए।

9. [1] *Sanjni jivas* (sentient beings) have three alternatives (*bhang*) including general statement about *jivas*

[2] Three alternatives should be stated for *Asanjni jivas* (non-sentient beings) leaving aside one-sensed beings Six alternatives should be stated for infernal, divine and human beings

[3] *No-sanjni-no-asanjni* (neither sentient nor non-sentient) beings have three alternatives each, related to *jiva* (in general), humans and *Siddhas*

विवेचन : ३ भव्य द्वार—भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक, इन दोनो के प्रत्येक के दो-दो दण्डक है, जो औधिक (सामान्य) जीव–दण्डक की तरह है। इनमे भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक जीव नियमत सप्रदेश होता है। क्योकि ये दोनो भाव अनादिपारिणामिक है। अत भव्यत्व और अभव्यत्व का प्रथम समय कभी नही होता। नैरयिक आदि जीव, सप्रदेश भी होता है, अप्रदेश भी। बहुत जीव तो सप्रदेश ही होते है। नैरयिक आदि जीवो मे तीन भग होते है। एकेन्द्रिय जीवो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश', यह एक ही भग होता है। क्योकि ये बहुत सख्या मे ही प्रति समय उत्पन्न होते रहते है। यहाँ भव्य और अभव्य के प्रकरण मे सिद्धपद नही कहना चाहिए, क्योकि वे नोभवसिद्धिक–नोअभवसिद्धिक होते है। अत उनमे एकवचन और बहुवचन को लेकर दो दण्डक कहने चाहिए। इसमे जीवपद और सिद्धपद, ये दो पद ही कहने चाहिए, क्योकि नैरयिक आदि जीवो के साथ 'नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक' विशेषण लग नही सकता।

४ **सज्ञी द्वार**—सज्ञी जीवो के एकवचन और बहुवचन को लेकर दो दण्डक होते है। बहुवचन के दण्डक मे जीवादि पदो मे तीन भग होते है, यथा-(१) जिन सज्ञी जीवो को उत्पन्न हुए बहुत सा समय हो गया है, वे कालादेश से सप्रदेश है, (२) उत्पातविरह के बाद जब एक जीव की उत्पत्ति होती है, तब उसको प्रथम समय की अपेक्षा 'बहुत जीव सप्रदेश और एक जीव अप्रदेश' कहा जाता है, और (३) जब बहुत जीवो की उत्पत्ति एक ही समय मे होती है, तब 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश' यो भी कहा जाता है। इस प्रकार ये तीन भग सभी पदो मे जान लेने चाहिए। किन्तु इन दो दण्डको मे एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सिद्धपद नही कहना चाहिए, क्योकि इनमे 'सज्ञी' विशेषण ही नही है। असज्ञी जीवो मे एकेन्द्रिय पदो को छोडकर दूसरे दण्डक मे ये ही तीन भग कहने चाहिए। पृथ्वीकायिकादि एकेन्द्रियो मे सदा बहुत जीवो की उत्पत्ति होती है, इसलिए उन पदो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश', यह एक ही भग सम्भव है। नैरयिको से लेकर व्यन्तर देवो तक असज्ञी जीव उत्पन्न होते है, वे जब तक सज्ञी न हो, तब तक उनका असज्ञीपन जानना चाहिए। नैरयिक आदि मे असज्ञीपन कादाचित्क होने से एकत्व एव बहुत्व की सम्भावना होने के कारण मे ६ भग बताये गये है। असज्ञी प्रकरण मे ज्योतिष्क, वैमानिक और सिद्ध का कथन नही करना चाहिए, क्योकि उनमे असज्ञीपन सम्भव नही है। नोसज्ञी–नोअसज्ञी विशेषण वाले जीवो के दो दण्डक कहने चाहिए। उसमे बहुवचन को लेकर द्वितीय दण्डक मे जीव, मनुष्य और सिद्ध मे उपर्युक्त तीन भग कहने चाहिए, क्योकि उनमे बहुत–से अवस्थित मिलते है। उनमे उत्पद्यमान एकादि सम्भव है। नोसज्ञी–नोअसज्ञी के इन दो दण्डको मे जीव, मनुष्य और सिद्ध, ये तीन पद ही कहने चाहिए, क्योकि नैरयिकादि जीवो के साथ 'नोसज्ञी–नोअसज्ञी' विशेषण घटित नही हो सकता।

Elaboration—(3) Bhavya dvar—*Bhavasiddhik* (worthy of liberation) and *abhavasiddhik* (unworthy of liberation) have two categories each similar to those of *jiva* (in general) *Bhavasiddhik* and *abhavasiddhik* beings are as a rule *sapradesh* This is because both these states are without a beginning and thus there is never a first *Samaya* related to these states Infernal beings are *sapradesh* as well as *apradesh* In context of plurality of beings the state is always *sapradesh* (with sections). Infernal and other beings have three alternatives (*bhang*) One-sensed beings have no alternative (*abhang*) just one state—many *sapradesh* and many *apradesh* This is because they are born in large numbers every moment Here *Siddhas* should not be included with

bhavya and *abhavya* because they are *no-bhavasiddhik-no-abhavasiddhik* Therefore only two categories of singular and plural should be stated for them This is applicable only to categories of *jiva* (in general) and *Siddhas* because other beings including infernal ones do not qualify for the category *no-bhavasiddhik-no-abhavasiddhik*

(4) Sanjni dvar—*Sanjni* (sentient) beings have two categories of singular and plural In the plural category there are three alternatives for *jiva* (in general)—(1) The *sanjni jivas* past the moment of birth are *sapradesh* relative to time, (2) after the intervening period when one being is born then in context of its first *Samaya* of birth it is said that many beings are *sapradesh* and one is *apradesh*, and (3) when numerous beings are born at the same *Samaya* it is said that many beings are *sapradesh* and many are *apradesh* Thus these three alternatives are applicable to all categories However, one-sensed beings, two to four sensed beings (*vikalendriya*), and *Siddhas* should not be included in these two categories This is because these beings are never sentient For *asanjni* (non-sentient) *jivas* other than one-sensed beings these three alternatives (*bhang*) should be stated One-sensed beings have no alternative (*abhang*) just one state—many *sapradesh* and many *apradesh* (without sections) This is because they are born in large numbers every moment *Asanjni jivas* are born among all beings from infernal to interstitial gods As long as they do not become sentient they should be treated as *asanjni* For infernal beings six alternatives have been mentioned due to probability of non-sentience as well as singularity and plurality Jyotishk gods, Vaimanik gods and Siddhas should not be included in *asanjni* category because that state is impossible in them There are two categories of *no-sanjni-no-asanjni* beings Of these the second category of plurality has three aforesaid alternatives for *jiva* (in general), humans and *Siddhas* This is because among them many are already born and there is possibility of one or more being born In the said two categories of *no-sanjni-no-asanjni*, only *jiva* (in general), humans and *Siddhas* are included because infernal and other beings do not qualify for this class

५ लेश्या द्वार LESHYA-DVAR (PORT OF SOUL-COMPLEXION)

१०. [१] सलेसा जहा ओहिया। कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा जहा आहारओ, नवरं जस्स अत्थि एयाओ। तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, नवरं पुढविकाइएसु आउ–वणप्फतीसु छब्भंगा। पम्हलेस–सुक्कलेस्साए जीवाइओ तियभंगो।

[२] अलेसेहिं जीव–सिद्धेहिं तियभंगो, मणुएसु छब्भंगा।

१०. [१] सलेश्य जीवो का औधिक जीवो की तरह कथन करना चाहिए। कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या वाले जीवो का कथन आहारक जीव की तरह (सूत्र ७–१) कहना चाहिए। किन्तु इतना विशेष है कि जिसके जो लेश्या हो, उसके वह लेश्या कहनी चाहिए। तेजोलेश्या मे जीव आदि तीन भग कहने चाहिए, किन्तु इतनी विशेषता है कि पृथ्वीकायिक, अप्कायिक और वनस्पतिकायिक जीवो मे छह भग कहने चाहिए। पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या मे जीवादिक तीन भग कहने चाहिए।

[२] अलेश्य (लेश्यारहित) जीव और सिद्धो मे तीन भग कहने चाहिए, तथा अलेश्य मनुष्यो मे (पूर्ववत्) छह भग कहने चाहिए।

10. [1] Living beings with *leshyas* (soul-complexions) follow the pattern of statement about *jiva* (in general) Beings with *krishna leshya* (black complexion of soul), neel *leshya* (blue complexion of soul) and *kapot leshya* (pigeon complexion of soul) follow the pattern of *ahaarak jivas* (aphorism 7/1) The difference is that the related *leshya* should be mentioned As regards *tejoleshya* (fiery complexion of soul) three alternatives (bhang) including *jiva* (in general) should be stated with the difference that for earth-bodied, water-bodied and plant-bodied beings six alternatives should be stated For *padma leshya* (yellow complexion of soul) and *shukla leshya* (white complexion of soul) three alternatives including *jiva* (in general) should be stated

[2] For *aleshya* (without complexion of soul) beings and *Siddhas* three alternatives should be mentioned For *aleshya* human beings six alternatives (as aforesaid) should be stated

विवेचन ५ **लेश्या द्वार**–लेश्या वाले जीवो के दो दण्डको मे जीव और नैरयिको का कथन सामान्य दण्डक के समान करना चाहिए, क्योकि जीवत्व की तरह सलेश्यत्व भी अनादि है, इसलिए इन दोनो मे किसी प्रकार की विशेषता नही है, किन्तु इतना विशेष है कि सलेश्य प्रकरण मे सिद्ध पद नही कहना चाहिए। कृष्ण–नील–कापोतलेश्यावान् जीव और नैरयिको के प्रत्येक के दो–दो दण्डक आहारक जीव की तरह कहने चाहिए। जिन जीव एव नैरयिकादि मे जो लेश्या हो, वही कहनी चाहिए। जैसे कि कृष्णादि तीन लेश्याएँ, ज्योतिष्क एव वैमानिक देवो मे नही होती। तेजोलेश्या के एकवचन और बहुवचन को लेकर दो दण्डक कहने चाहिए। बहुवचन की अपेक्षा द्वितीय दण्डक मे जीवादि पदो के तीन भग होते है। पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय मे ६ भग होते है, क्योकि पृथ्वीकायादि जीवो मे तेजोलेश्या वाले एकादि जीव–(पूर्वोत्पन्न और उत्पद्यमान दोनो प्रकार के) पाये जाते है। तेजोलेश्या प्रकरण मे नैरयिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, विकलेन्द्रिय और सिद्ध, ये पद नही कहने चाहिए, क्योकि इनमे तेजोलेश्या नही होती। पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या के दो–दो दण्डक कहने चाहिए। दूसरे दण्डक मे जीवादि पदो मे तीन भग कहने चाहिए। पद्म–शुक्ललेश्या प्रकरण मे पचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य

और वैमानिक देव ही कहने चाहिए, क्योकि इनके सिवाय दूसरे जीवो मे ये लेश्याएँ नही होती। अलेश्य जीव के एकवचन और बहुवचन को लेकर दो दण्डको मे जीव, मनुष्य और सिद्ध पद का ही कथन करना चाहिए, क्योकि दूसरे जीवो मे अलेश्यत्व सम्भव नही है। इनमे जीव और सिद्ध मे तीन भग और मनुष्य मे छह भग कहने चाहिए, क्योकि अलेश्यत्व प्रतिपन्न (प्राप्त किये हुए) और प्रतिपद्यमान (प्राप्त करते हुए) एकादि मनुष्यो का सम्भव होने से सप्रदेशत्व मे और अप्रदेशत्व मे एकवचन और बहुवचन सम्भव है।

Elaboration—(5) Leshya dvar—The two categories of beings with *leshya—jiva* (in general) and infernal beings—follow the pattern of the general category This is because like life the complexion of soul is also without a beginning and thus there is no difference The only difference is that *Siddhas* should not be included among beings with *leshya* Beings with *krishna leshya* (black complexion of soul), *neel leshya* (blue complexion of soul) and *kapot leshya* (pigeon complexion of soul) have two categories each like *ahaarak jivas* The specific related *leshya* should also be mentioned For example the said three *leshyas* including the black hue are not applicable to Jyotishk and Vaimanik gods *Tejoleshya* has two categories of singular and plural In context of plural, *jiva* (in general) and others belonging to the plural category have three alternatives (*bhang*) Earth, water and plant-bodied beings have six alternatives because among these one or more beings with *tejoleshya* in states of 'already born' and 'just born' are available Infernal beings, fire-bodied beings, air-bodied beings, two to four sensed beings and *Siddhas* are not included in the *tejoleshya* category because they are devoid of this *leshya* *Padma leshya* and *shukla leshya* have two categories each For *jiva* (in general) and others belonging to the second category three alternatives should be stated Only five-sensed animals, human beings and Vaimanik gods are included in these two *leshyas* because beings other than these do not have these two *leshyas* *Aleshya* (without soul complexion) beings have two categories of singular and plural These beings include only *jiva* (in general), humans, and *Siddhas* Beings other than these cannot be without *leshyas* Among these, *jiva* (in general) and *Siddhas* have three alternatives and humans have six alternatives (*bhang*) This is because one or more human beings are in states of having already become and just become without *leshyas* Thus there are chances of singularity and plurality of states of *sapradesh* (with sections) and *apradesh*

६ दृष्टि द्वार DRISHTI DVAR (PORT OF ATTITUDE)

११. [१] सम्मद्दिट्ठीहिं जीवाइओ तियभंगो। विगलिदिएसु छब्भंगा।

[२] मिच्छद्दिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो।

[३] सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिं छब्भंगा।

११. [१] सम्यग्दृष्टि जीवो मे जीवादिक तीन भग कहने चाहिए। विकलेन्द्रियो मे छह भग कहने चाहिए।

[२] मिथ्यादृष्टि जीवो मे एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए।

[३] सम्यग्–मिथ्यादृष्टि जीवो मे छह भग कहने चाहिए।

11. [1] For *Samyagdrishti jivas* (righteous beings) three alternatives, including *jiva* (in general) should be mentioned For *vikalendriyas* (two to four sensed beings) six alternatives should be mentioned

[2] For *Mithyadrishti jivas* (unrighteous beings), leaving aside one-sensed beings, three alternatives should be mentioned

[3] For *Samyag-mithyadrishti jivas* (righteous-unrighteous beings) six alternatives should be mentioned

विवेचन ६ दृष्टि द्वार–सम्यग्दृष्टि के दो दण्डको मे सम्यग्दर्शन प्राप्ति के प्रथम समय मे अप्रदेशत्व है और बाद के द्वितीय–तृतीयादि समयो मे सप्रदेशत्व है। इनमे दूसरे दण्डक मे जीवादि पदो मे पूर्वोक्त तीन भग कहने चाहिए। विकलेन्द्रियो मे पूर्वोत्पन्न और उत्पद्यमान एकादि सास्वादन सम्यग्दृष्टि जीव पाये जाते है, इस कारण इनमे ६ भग जानने चाहिए। एकेन्द्रिय सर्वथा मिथ्यादृष्टि होते है, उनमे सम्यग्दर्शन न होने से सम्यग्दृष्टि द्वार मे एकेन्द्रिय पद का कथन नही करना चाहिए। मिथ्यादृष्टि के एकवचन और बहुवचन से दो दण्डक कहने चाहिए। उनमे से दूसरे दण्डक मे जीवादि पदो के तीन भग होते है, क्योकि मिथ्यात्व–प्रतिपन्न (प्राप्त) जीव बहुत है और सम्यक्त्व से भ्रष्ट होने के बाद मिथ्यात्व को प्रतिपद्यमान एक जीव भी सम्भव है। मिथ्यादृष्टि के प्रकरण मे एकेन्द्रिय जीवो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश', यह एक ही भग पाया जाता है, क्योकि एकेन्द्रिय जीवो मे अवस्थित और उत्पद्यमान बहुत होते है। इस (मिथ्यादृष्टि–) प्रकरण मे सिद्धो का कथन नही करना चाहिए–सम्यग्–मिथ्यादृष्टि जीवो के एकवचन और बहुवचन, ये दो दण्डक कहने चाहिए। उनमे से बहुवचन के दण्डक मे ६ भग होते है, क्योंकि सम्यग्–मिथ्यादृष्टित्व को प्राप्त और प्रतिपद्यमान एकादि जीव भी पाये जाते है। इस सम्यग्–मिथ्यादृष्टि द्वार मे एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सिद्ध जीवो का कथन नही करना चाहिए, क्योकि उनमे सम्यग् मिथ्यादृष्टित्व असम्भव है।

Elaboration—(6) Drishti dvar—In the two categories of *Samyagdrishti* at the first moment of attaining righteousness it is *apradesh* state and after that it is *sapradesh* For the second category aforesaid three alternatives should be stated for beings including *jiva* (in general) In *vikalendriyas* one or more *sasvadan samyagdrishti jivas* (one who had a fleeting taste of righteousness) already born or just born are available For this reason six alternatives (*bhang*) should be mentioned for them One-sensed beings are exclusively unrighteous, as such they are not

included among the righteous For unrighteous jivas two categories of singular and plural should be stated For the second category aforesaid three alternatives should be stated for beings including jiva (in general) This is because there are numerous beings who have become unrighteous and there may be one being who falls from righteousness In context of unrighteousness there is no alternative (*abhang*) just one state possible for one-sensed beings—many with sections and many without sections This is because every moment many one-sensed beings are born In the unrighteous category *Siddhas* are not included. For righteous-unrighteous *jivas* two categories of singular and plural should be stated For the second category there are six aforesaid alternatives This is because one or more righteous-unrighteous *jivas* already born or just born are available In this category of righteous-unrighteous one-sensed beings, two to four sensed beings and *Siddhas* are not to be included because that is impossible

७ सयत द्वार SAMYAT DVAR (PORT OF THE RESTRAINED)

१२. [१] संजतेहिं जीवाइओ तियभगो।

[२] असजतेहिं एगिंदियवज्जो तियभगो।

[३] संजतासंजतेहिं तियभंगो जीवादिओ।

[४] नोसंजय–नोअसजय–नोसंजतासजत जीव–सिद्धेहिं तियभंगो।

१२. [१] सयतो मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए।

[२] असयतो मे एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए।

[३] सयतासयत जीवो मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए।

[४] नोसयत–नोअसयत–नोसयतासयत जीव और सिद्धो मे तीन भग कहने चाहिए।

12. [1] For *samyat jivas* (restrained beings) three alternatives, including *jiva* (in general), should be mentioned

[2] For *asamyat jivas* (unrestrained beings), other than one-sensed beings three alternatives, including *jiva* (in general), should be mentioned.

[3] For *samyat-asamyat jivas* (restrained-unrestrained beings) three alternatives, including *jiva* (in general), should be mentioned.

[4] For *no-samyat - no-asamyat - no-samyat-asamyat jivas* (neither restrained nor unrestrained or restrained-unrestrained beings) and *Siddhas* three alternatives should be mentioned

विवेचन ७. **संयत द्वार**–'सयत' जीवो मे तीन भग कहने चाहिए, क्योंकि सयम को प्राप्त बहुत जीव होते है, संयम को प्रतिपद्यमान एकादि जीव होते है। संयत द्वार मे केवल दो ही पद कहने चाहिए–जीव पद और मनुष्य पद, क्योंकि दूसरे जीवो मे सयतत्व का अभाव है। असयत जीवो के एकवचन और बहुवचन को लेकर दो दण्डक कहने चाहिए। उनमे से बहुवचन सम्बन्धी द्वितीय दण्डक मे तीन भग होते है, क्योंकि असंयतत्व को प्राप्त बहुत जीव होते है, तथा संयतत्व से भ्रष्ट होकर असयतत्व को प्राप्त करते हुए एकादि जीव होने है, इसलिए उनमे तीन भग घटित हो सकते है। एकेन्द्रिय जीवो मे पूर्वोक्त युक्ति के अनुसार 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश'–यह एक ही भग पाया जाता है। इस असयत प्रकरण मे 'सिद्ध पद' नही कहना चाहिए, क्योंकि सिद्धो मे असयतत्व नही होता। **'सयतासयत'** पद मे भी एकवचन–बहुवचन को लेकर दो दण्डक कहने चाहिए। उनमे से दूसरे दण्डक मे बहुवचन की अपेक्षा पूर्वोक्त तीन भग कहने चाहिए, क्योंकि सयतासयत्व–देशविरतिपन को प्राप्त बहुत जीव होते है, और उससे भ्रष्ट होकर या असयम का त्याग कर सयतासयतत्व को प्राप्त होते हुए एकादि जीव होते है। अत तीन भग घटित होते है। इस सयतासंयत द्वार मे भी जीव, पचेन्द्रियतिर्यंच और मनुष्य, ये तीन पद ही कहने चाहिए, क्योंकि इन तीन पदो के अतिरिक्त अन्य जीवो मे सयतासयतत्व नही पाया जाता। नोसयत–नोअसयत–नोसयतासयत द्वार मे जीव और सिद्ध, ये दो पद ही कहने चाहिए, भग भी पूर्वोक्त तीन होते है।

Elaboration—(7) Samyat dvar—For restrained beings three alternatives should be stated because there are numerous beings who have attained that state and there are one or more beings in the process of attaining that state In the *samyat* state there are only two classes—*jiva* (in general) and human beings. In all beings other than humans there is absence of restraint In unrestrained (*asamyat*) there are two categories of singular and plural For the second category aforesaid three alternatives (*bhang*) should be stated This is because there are numerous beings who have become unrestrained and there may be one or more beings who fall from the state of restraint to become unrestrained For one-sensed beings there is no alternative (*abhang*) just one state as aforesaid—many *sapradesh* and many *apradesh* *Siddhas* are not included in this class of unrestrained because they are beyond it For *samyat-asamyat* too there are two categories of singular and plural For the second category aforesaid three alternatives should be stated This is because there are numerous beings who have become *samyat-asamyat* (partial detachment or *desh-virati*) and there may be one or more beings who shift from the state of *asamyat* to become *samyat-asamyat* In this *samyat-asamyat dvar* too only *jiva* (in general), five-sensed animals and humans are included because this state is not possible in other beings In the *no-samyat - no-asamyat - no-samyat-asamyat* class only *jiva* (in general) and *Siddhas* should be stated and they too have three alternatives as aforesaid.

८ कषाय द्वार KASHAAYA DVAR (PORT OF PASSIONS)

१३. [१] सकसाईहिं जीवादिओ तियभंगो। एगिंदिएसु अभंगकं। कोहकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। देवेहिं छब्भंगा। माणकसाई मायाकसाई जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइयदेवेहिं छब्भंगा। लोभकसायीहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइएसु छब्भगा।

[२] अकसाई जीव–मणुएहिं सिद्धेहिं तियभंगो।

१३. [१] सकषायी जीवो मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए। एकेन्द्रियो (सकषायी) मे अभगक (तीन भग नही, किन्तु मात्र एक भग) कहना चाहिए। क्रोधकषायी जीवो मे जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए। मानकषायी और मायाकषायी जीवो मे जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए। नैरयिको और देवो मे छह भग कहने चाहिए। लोभकषायी जीवों मे जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए। नैरयिक जीवो मे छह भग कहने चाहिए।

[२] अकषाई जीवो, जीव, मनुष्य और सिद्धो मे तीन भग कहने चाहिए।

13. [1] For *sakashaayı jıvas* (beings with passions) three alternatives, including *jıva* (in general) should be stated For one-sensed (with passions) no alternative (*abhang*) just one state should be stated For *krodh-kashaayı jıvas* (beings with anger), leaving aside one-sensed beings, three alternatives should be stated For *maan-kashaayı* and *maaya-kashaayı jıvas* (beings with conceit and deceit), leaving aside *jıva* (in general) and one-sensed beings, three alternatives should be stated For infernal and divine beings six alternatives should be stated For *lobh-kashaavı jıvas* (beings with greed), leaving aside *jıva* (in general) and one-sensed beings, three alternatives (*bhang*) should be stated For infernal beings six alternatives should be stated

[2] For *akashaayı jıvas* (beings without passions)—three alternatives should be stated for *jıva* (in general), humans and *Sıddhas*

विवेचन ८ **कषाय द्वार**–सकषायी जीवो मे तीन भग पाये जाते है, यथा- (१) सकषायी जीव, सदा अवस्थित होने से सप्रदेश होते है -यह प्रथम भग, (२) उपशमश्रेणी से गिरकर सकषायावस्था को प्राप्त होते हुए एकादि जीव पाये जाते है इसलिए 'बहुत सप्रदेश और एक अप्रदेश' यह दूसरा भग तथा 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश' यह तीसरा भग। नैरयिकादि मे तीन भग पाये जाते है। एकेन्द्रिय जीवो मे अभग है–अर्थात् उनमे अनेक भग नही, किन्तु 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश' यह एक ही भग पाया जाता है, क्योकि एकेन्द्रिय जीवो मे बहुत जीव 'अवस्थित' और बहुत जीव 'उत्पद्यमान' पाये जाते है। सकषायी द्वार मे 'सिद्ध पद' नही कहना चाहिए, क्योकि सिद्ध कषायरहित होते है। इसी तरह क्रोधादि कषायो मे कहना चाहिए। क्रोधकषाय के एकवचन–बहुवचन दण्डकद्वय मे से दूसरे दण्डक मे बहुवचन से जीव पद मे और पृथ्वीकायादि पदो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश' यह एक भग ही कहना चाहिए, क्योंकि मान, माया और लोभ से निवृत्त होकर

क्रोधकषाय को प्राप्त होते हुए जीव अनन्त होने से यहाँ एकादि का सम्भव नही है, इसलिए सकषायी जीवो की तरह तीन भग नही हो सकते। शेष (एकवचन) मे तीन भग कहने चाहिए।

देवपद मे देवो सम्बन्धी तेरह ही दण्डको मे छह भग कहने चाहिए, क्योकि उनमे क्रोधकषाय के उदय वाले जीव अल्प होने से एकत्व और बहुत्व, दोनो सम्भव है, अत सप्रदेशत्व-अप्रदेशत्व दोनो सम्भव है। मानकषाय और मायाकषाय वाले जीवो के भी एकवचन-बहुवचन को लेकर दण्डद्वय क्रोधकषाय की तरह कहने चाहिए। उनमे से दूसरे दण्डक मे नैरयिको और देवो मे ६ भग होते है, क्योकि मान और माया के उदय वाले जीव थोडे ही पाये जाते है। लोभकषाय का कथन, क्रोधकषाय की तरह करना चाहिए। लोभकषाय के उदय वाले नैरयिक अल्प होने से उनमे ६ भग पाये जाते है। निष्कर्ष यह है कि देवो मे लोभ बहुत होता है, और नैरयिको मे क्रोध अधिक। इसलिए क्रोध, मान और माया मे देवो के ६ भग और मान, माया और लोभ मे नैरयिको के ६ भग कहने चाहिए। **अकषायी द्वार** के भी एकवचन और बहुवचन ये दो दण्डक होते है। उनमे से दूसरे दण्डक मे जीव, मनुष्य और सिद्ध पद मे तीन भग कहने चाहिए। इन तीन पदो के सिवाय अन्य दण्डको का कथन नही करना चाहिए, क्योकि दूसरे जीव अकषायी नही हो सकते।

Elaboration—(8) Kashaaya dvar—There are three alternatives for beings with passions (*sakashaayi*)—(1) Because they always exist, *sakashaayis* are *sapradesh*, there are one or more beings falling from the path of pacification (*upasham shreni*) to the state maligned with passions involving two alternatives—(2) many *sapradesh* and one *apradesh* and (3) many *sapradesh* and many *apradesh* Infernal and other beings also have three alternatives For one-sensed beings there is no alternative (*abhang*) just one state—many *sapradesh* (with sections) and many *apradesh* (without sections) This is because in one-sensed beings there are always many existent beings and many in the process of being born *Siddhas* are not included among the *sakashaayi jivas* because they are absolutely free of passions The same should be repeated for other passions including anger Out of the singular and plural categories of *krodh-kashaaya* (anger) in the plural category there is only one state 'many *sapradesh* and many *apradesh*' for *jiva* (in general) and one-sensed beings including earth-bodied ones This is because every moment there are infinite beings rising above conceit, deceit and greed into anger alone, thus singular option is not applicable here As regards the singular category all the three alternatives should be stated.

In the class of divine beings six alternatives (*bhang*) should be stated for all the thirteen kinds This is because among divine beings the number of those with fruition of anger is very low and thus one and more both are possible, therefore both the states of *sapradesh* and *apradesh*

are possible For beings with conceit and deceit two categories of singular and plural should be stated just like anger In the plural category there are six alternatives for infernal and divine beings because there are very few beings with the fruition of conceit and deceit What has been stated for anger should be repeated for greed As the number of infernal beings with greed is low, for them six alternatives should be stated This means that greed is more among divine beings and anger is more among infernal beings Therefore with regard to anger, conceit and deceit there are six alternatives among divine beings and with regard to conceit, deceit and greed there are six alternatives among infernal beings In *akashaayi* (without passions) class also there are two categories of singular and plural. In the plural category three alternatives should be stated for *jiva* (in general), humans and *Siddhas.* No other class of beings are included here because besides these three other beings cannot be without passions

९ ज्ञान द्वार JNANA DVAR (PORT OF KNOWLEDGE)

१४. [१] ओहियनाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, जीवादिओ तियभंगो। विगलिंदिएहिं छब्भंगा। ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे जीवादिओ तियभंगो।

[२] ओहिए अण्णाणे, मतिअण्णाणे, सुयअण्णाणे एगिंदियवज्जो तियभंगो। विभंगनाणे जीवादिओ तियभंगो।

१४. [१] औघिक (समुच्चय) ज्ञान आभिनिबोधिक ज्ञान, और श्रुतज्ञान मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए। विकलेन्द्रियो मे छह भग कहने चाहिए। अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान और केवलज्ञान मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए।

[२] औघिक (समुच्चय) अज्ञान, मति–अज्ञान और श्रुत–अज्ञान मे एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए। विभगज्ञान मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए।

14. [1] For *jnana* (in general), *abhinibodhik jnana* (sensory knowledge) and *shrut jnana* (scriptural knowledge) three alternatives (*bhang*) should be stated for *jiva* (in general) For *vikalendriyas* six alternatives should be stated For *avadhi jnana, manah-paryav jnana* and *Keval jnana* three alternatives should be stated for *jiva* (in general).

[2] For *ajnana* (in general), *abhinibodhik ajnana* (lack of sensory knowledge) and *shrut ajnana* (lack of scriptural knowledge) three alternatives should be stated for beings other than one-sensed ones For *vibhang jnana* (perverse knowledge) three alternatives should be stated for *jiva* (in general).

विवेचन · ९. **ज्ञान द्वार**–मति आदि सामान्य ज्ञान को औघिक ज्ञान कहते है। औघिक (सामान्य) ज्ञान मे तथा मतिज्ञान और श्रुतज्ञान मे एकवचन और बहुवचन को लेकर दो दण्डक होते है। दूसरे दण्डक मे जीवादि पदो के तीन भग होते है। यथा–औघिकज्ञानी, मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी सदा अवस्थित होने से वे सप्रदेश है, यह एक भंग, मिथ्याज्ञान से निवृत्त होकर मात्र मत्यादिज्ञान को प्राप्त होने वाले एवं श्रुत–अज्ञान से निवृत्त होकर श्रुतज्ञान को प्राप्त होने वाले एकादि जीव पाये जाते है, इसलिए, तथा मति–अज्ञान से निवृत्त होकर मतिज्ञान को प्राप्त होने वाले 'बहुत सप्रदेश और एकादि अप्रदेश' यह दूसरा भग, तथा 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश' यह तीसरा भग होता है। विकलेन्द्रियो मे सास्वादन सम्यक्त्व होने से मत्यादिज्ञान वाले एकादि जीव पाये जाते हैं, इसलिए उनमे ६ भग घटित हो जाते है। यहाँ पृथ्वीकायादि जीव तथा सिद्धपद का कथन नही करना चाहिए, क्योंकि उनमे मत्यादिज्ञान नही होते। इसी प्रकार अवधिज्ञान आदि मे भी तीन भग सम्भव है। विशेषता यह है कि अवधिज्ञान के एकवचन–बहुवचन–दण्डकद्वय मे एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सिद्धो का कथन नही करना चाहिए। *मन पर्यवज्ञान के उक्त दण्डकद्वय मे जीव और मनुष्य का ही कथन करना चाहिए, क्योकि इनके सिवाय* अन्यो को मन पर्यवज्ञान नही होता। केवलज्ञान के उक्त दोनो दण्डको मे भी मनुष्य और सिद्ध का ही कथन करना चाहिए, क्योंकि दूसरे जीवो को केवलज्ञान नही होता।

मति आदि सामान्य (औघिक) अज्ञान, मति–अज्ञान और श्रुत–अज्ञान, इनमे जीवादि पदो मे तीन भग घटित हो जाते है, तथा–(१) ये सदा अवस्थित होते है, इसलिए 'सभी सप्रदेश' यह प्रथम भग हुआ, (२–३) अवस्थित के सिवाय जब दूसरे जीव, ज्ञान को छोडकर मति–अज्ञानादि को प्राप्त होते है, तब उनके एकादि का सम्भव होने से दूसरा और तीसरा भग भी घटित हो जाता है। एकेन्द्रिय जीवो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत प्रदेश' यह एक ही भग पाया जाता है। सिद्धो मे तीनो अज्ञान असम्भव होने से उनमे अज्ञानो का कथन नही करना चाहिए। विभगज्ञान मे जीवादि पदो मे मति–अज्ञानादि की तरह तीन भग कहने चाहिए। इसमे एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सिद्धो का कथन नही करना चाहिए।

Elaboration—(9) Jnana dvar—*Aughık jnana* means knowledge ın general There are two categories of singular and plural for *jnana* (in general) and *Mati* and *Shrut jnana* For *jiva* (in general) there are three alternatives in the plural category—(1) As beings with *aughik-jnana, mati-jnana* and *shrut-jnana* always exist they are *sapradesh*, there are one or more beings progressing from states of ignorance, *mati-ajnana* and *shrut-ajnana* to state of knowledge, *mati-jnana* and *shrut-jnana* respectively, involving two alternatives—(2) many *sapradesh* and one *apradesh* and (3) many *sapradesh* and many *apradesh*. As *vikalendriyas* have *saasvadan samyaktva* (fleeting taste of righteousness), one or more beings with *jnana* including the right one are available among them, for this reason there are six alternatives (*bhang*) for them. Here one-sensed beings including earth-bodied beings and *Siddhas* are to be excluded because they are devoid of the said *jnanas* In the same way, for *avadhi-jnana* and other higher *jnanas* there are three alternatives each The difference is that in the two categories of beings with *avadhi-jnana* one to

four sensed beings and *Siddhas* are not included In the two categories of beings with *manah-paryav jnana* only *jiva* (in general) and humans are included because all others are incapable of acquiring *manah-paryav jnana* In the two categories of beings with *Keval jnana* only humans and *Siddhas* are included because others cannot acquire *Keval-jnana*

For *ajnana* (in general) and *Mati* and *Shrut ajnana*, for *jiva* (in general) there are three alternatives in the plural category—(1) As beings with *aughik-ajnana*, *mati-ajnana* and *shrut-ajnana* always exist they are *sapradesh* (with sections), there are one or more beings regressing from states of knowledge, *mati-jnana* and *shrut-jnana* to states of ignorance, *mati-ajnana* and *shrut-ajnana* respectively, involving two alternatives—(2) many *sapradesh* and one *apradesh* and (3) many *sapradesh* and many *apradesh* (without sections) For one-sensed beings there is only one state possible—many *sapradesh* and many *apradesh* As there is no scope of any of these three *ajnanas* in *Siddhas* they are not included here With regard to *vibhang jnana* the pattern of *ajnana* is to be followed Here one to four sensed beings and *Siddhas* are not included

१० योग द्वार YOGA DVAR (PORT OF ASSOCIATION)

१५. [१] सजोगी जहा ओहिओ। मणजोगी वयजोगी कायजोगी जीवादिओ तियभंगो, णवरं कायजोगी एगिंदिया तेसु अभगक।

[२] अजोगी जहा अलेसा।

१५. [१] औधिक जीवो की भाँति सयोगी जीवो का कथन करना चाहिए। मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी मे जीवादि तीन भग कहने चाहिए। विशेषता यह है कि जो काययोगी एकेन्द्रिय होते है, उनमे अभगक (अधिक भग नही, केवल एक भग) होता है।

[२] अयोगी जीवो का कथन अलेश्य जीवो के समान है।

15. [1] *Sayogi jivas* (beings with association) should be described like *jivas* (in general) For *manoyogi*, *vachan-yogi* and *kaaya yogi* three alternatives including *jiva* etc should be stated The difference is that for one-sensed *kaaya yogi* beings there is only one state (*abhang*)

[2] *Ayogi jivas* (beings without association) follow the pattern of *aleshya jivas* (beings without soul complexion)

विवेचन . १०. योग द्वार–सयोगी जीवो के एक-बहुवचन दोनो दण्डक औधिक जीवादि की तरह कहने चाहिए। यथा–सयोगी जीव नियमत सप्रदेशी होते है। नैरयिकादि सयोगी तो सप्रदेश और अप्रदेश दोनो होते है, किन्तु बहुत जीव सप्रदेश ही होते है। इस प्रकार नैरयिकादि सयोगी मे तीन भग होते है–एकेन्द्रियादि सयोगी

जीवो में केवल तीसरा ही भग पाया जाता है। यहाँ सिद्ध का कथन नही करना चाहिए, क्योकि वे अयोगी होते है। मनोयोगी, अर्थात् तीनो योगो वाले सज्ञी जीव, वचनयोगी अर्थात् एकेन्द्रियो को छोडकर शेष सभी जीव, और काययोगी, अर्थात् एकेन्द्रियादि सभी जीव। इनमे जीवादि पद मे तीन भग होते है। जब मनोयोगी आदि जीव अवस्थित होते है, तब उनमे 'सभी सप्रदेश' यह प्रथम भग पाया जाता है और जब अमनोयोगीपन छोडकर मनोयोगीपन आदि मे उत्पत्ति होती है, तब प्रथम समयवर्ती अप्रदेशत्व की दृष्टि से दूसरे दो भग पाये जाते है। विशेष यह है–काययोगी मे एकेन्द्रियो मे अनेक भग न होकर सिर्फ एक ही भग होता है 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश'। तीनो योगो के दण्डको मे यथासम्भव जीवादि पद कहने चाहिए, किन्तु सिद्धपद का कथन नही करना चाहिए। **अयोगी द्वार** का कथन अलेश्य द्वार के समान कहना चाहिए। अत इसके दूसरे दण्डक मे अयोगी जीवो मे, जीव और सिद्धपद मे तीन भग और अयोगी मनुष्य मे छह भग कहने चाहिए।

Elaboration—(10) Yoga dvar—Two categories of *Sayogi jivas* (beings with association) should be described like *jivas* (in general) As a rule *sayogi jivas* are *sapradeshi* *Sayogi* infernal beings are *sapradesh* as well as *apradesh* but most of them are *sapradesh* (with sections) therefore *sayogi* infernal beings have three alternatives For one-sensed *sayogi* beings there is only the third alternative *Siddhas* are not included here because they are *ayogi* *Manoyogi* means sentient beings with three *yogas* *Vachan-yogi* means all beings besides one-sensed beings *Kaayayogi* means all beings including one-sensed beings Among these for *jiva* etc there are three alternatives (*bhang*)—in context of existent beings the first alternative of 'all *sapradesh*' is applicable In context of the transitional state from non-association to association the other two alternatives related to the first moment of transition are applicable The difference is that with regard to *kaayayogis* there is only one alternative for one-sensed beings—many *sapradesh* and many *apradesh* For all categories of the three *yogas* mostly *jiva* etc. should be stated but never *Siddha* *Ayogi jivas* (beings without association) follow the pattern of *aleshya jivas* (beings without soul-complexion) Thus for the plural category of *ayogi jivas* three alternatives for *jiva* (in general) and *Siddhas* and six alternatives for humans should be stated

११ *उपयोग द्वार* UPAYOGA DVAR (DOOR OF INVOLVEMENT)

१६. सागारोवउत्त–अणागारोवउत्तेहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो।

१६. साकार उपयोग वाले और अनाकार उपयोग वाले जीवो मे जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए।

16. For *jivas* with *saakaar upayoga* (cognitive involvement) and *anaakaar upayoga* (perceptive involvement), leaving aside *jiva* (in general) and one-sensed beings, three alternatives should be stated.

विवेचन ११ उपयोग द्वार–साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी नैरयिक आदि मे तीन भग तथा जीव पद और पृथ्वीकायादि पदो में एक ही भग (बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश) कहना चाहिए। इन दोनो उपयोगो मे से किसी एक मे से दूसरे उपयोग मे जाते हुए प्रथम समय मे अप्रदेशत्व और इतर समयो मे सप्रदेशत्व स्वय घटित कर लेना चाहिए। सिद्धो मे तो एक समयोपयोगीपन है, तो भी साकार और अनाकार उपयोगी की बारम्बार प्राप्ति होने से सप्रदेशत्व और एक बार प्राप्ति होने से अप्रदेशत्व होता है। इस प्रकार साकार–उपयोग को बारम्बार प्राप्त ऐसे बहुत सिद्धो की अपेक्षा एक भग (सभी सप्रदेश), उन्ही सिद्धो की अपेक्षा तथा एक बार साकारोपयोग को प्राप्त एक सिद्ध की अपेक्षा–'बहुत सप्रदेश और एक अप्रदेश', यह दूसरा भग तथा बारम्बार साकारोपयोग–प्राप्त बहुत सिद्धो की अपेक्षा एव एक बार साकारोपयोग–प्राप्त बहुत सिद्धो की अपेक्षा–'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश'–यह तृतीय भग समझना चाहिए। अनाकार उपयोग मे बारम्बार अनाकारोपयोग को प्राप्त बहुत सिद्धो की अपेक्षा प्रथम भग, उन्ही सिद्धो की अपेक्षा तथा एक बार अनाकारोपयोग प्राप्त एक सिद्ध जीव की अपेक्षा द्वितीय भग और बारम्बार अनाकारोपयोग प्राप्त बहुत सिद्धो की अपेक्षा तथा एक बार अनाकारोपयोग प्राप्त बहुत सिद्धो की अपेक्षा तृतीय भग जानना चाहिए।

Elaboration—(11) Upayoga dvar—For infernal beings with *saakaar upayoga* (cognitive involvement) and *anaakaar upayoga* (perceptive involvement) three alternatives should be stated For *jiva* (in general) and one-sensed beings including earth-bodied ones only one alternative (many *sapradesh* and many *apradesh*) should be stated For transitional state from one to another of these two, *apradesh* for the first moment of transition and *sapradesh* for post transition should be stated *Siddhas* have a continuous transition of involvement (*samayopayogi*) but they have two alternatives (*bhang*)—*sapradesh* related to continuous transition and *apradesh* related to one time transition Thus the three alternatives for *saakaar upayoga* are—in context of many *Siddhas* with continuous transition to *saakaar* state it is 'all *sapradesh*', in context of many *Siddhas* with continuous transition to *saakaar* state and one *Siddha* with one time transition to *saakaar* state it is 'many *sapradesh* and one *apradesh*', in context of many *Siddhas* with continuous transition to *saakaar* state and many *Siddhas* with one time transition to *saakaar* state it is 'many *sapradesh* and one *apradesh*' Three alternatives for *anakaar upayoga* are—in context of many *Siddhas* with continuous transition to *anakaar* state it is 'all *sapradesh*', in context of many *Siddhas* with continuous transition to *anakaar* state and one *Siddha* with one time transition to *anakaar* state it is 'many *sapradesh* and one *apradesh*', in context of many *Siddhas* with continuous transition to *anakaar* state and many *Siddhas* with one time transition to *anakaar* state it is 'many *sapradesh* and one *apradesh*'.

१२. वेद द्वार VEDA DVAR (DOOR OF GENDER)

१७. [१] सवेयगा य जहा सकसाई। इत्थिवेयग–पुरिसवेयग–नपुंसगवेयगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवरं नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं।

[२] अवेयगा जहा अकसाई।

१७. [१] सवेदक जीवो का कथन सकषायी जीवो के समान है। स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुसकवेदी जीवो मे जीवादि तीन भग पाये जाते है। विशेष यह है कि नपुसकवेद मे जो एकेन्द्रिय होते है, उनमे अभगक (अधिक भग नही, किन्तु एक भग) है।

[२] जैसे अकषायी जीवो के विषय मे कथन किया, वैसे ही अवेदक (वेदरहित) जीवो के विषय मे कहना चाहिए।

17. [1] *Jıvas* wıth *vedas* (genderıc beıngs) should be descrıbed lıke *sakashaayı jıvas* (beıngs wıth passıons) In femınıne, masculıne and neuter beıngs there are three alternatıves of *jıva* etc Dıfference ıs that ın the one-sensed neuter beıngs there ıs only one state (*abhang*)

[2] What has been stated about *akashaayı jıvas* (beıngs wıthout passıons) should be repeated for *aveda jıvas* (non-genderıc beıngs).

विवेचन १२ वेद द्वार–सवेदक जीवो का कथन सकषायी जीवो के समान है। सवेदक जीवो मे भी जीवादि–पद मे वेद को प्राप्त बहुत जीवो और उपशम श्रेणी से गिरने के बाद सवेद अवस्था को प्राप्त होने वाले एकादि जीवो की अपेक्षा तीन भग घटित होते है। एकेन्द्रियो मे एक ही भग तथा स्त्रीवेदक आदि मे तीन भग पाये जाते है। जब एक वेद से दूसरे वेद मे सक्रमण होता है, तब प्रथम समय मे अप्रदेशत्व और द्वितीय आदि समयो मे सप्रदेशत्व होता है, यो तीन भग घटित होते है। नपुसकवेद के एकवचन–बहुवचन रूप दो दण्डकों मे तथा एकेन्द्रियो मे 'बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश' यह एक भग पाया जाता है। स्त्रीवेद और पुरुषवेद के दण्डको मे देव, पचेन्द्रिय तिर्यंच एव मनुष्य ही कहने चाहिए। सिद्धपद का कथन तीनो वेदो मे नही करना चाहिए। अवेदक जीवों का कथन अकषायी की तरह करना चाहिए। इसमे जीव, मनुष्य और सिद्ध ये तीन पद ही कहने चाहिए। इनमे तीन भग पाये जाते है।

Elaboration—(12) Veda dvar—*Savedak jıvas* (genderıc beıngs or beıngs classıfied on the basıs of theır mental and physıcal sexual functıons—male, female and neuter) are descrıbed lıke *sakashaayı jıvas* (beıngs wıth passıons) To *savedak jıvas* (genderıc beıngs) three alternatıves, ıncludıng *jıva* (ın general) are applıcable because of the exıstence of many beıngs wıth gender and one or more ın transıtıonal state from *upasham shrenı* (hıgher level of pacıficatıon, eıghth and hıgher *Gunasthans*) to genderıc state For one-sensed beıngs there ıs only one alternatıve and for each gender ıncludıng femınıne there are three alternatıves Thıs ıs because ın these cases also there is exıstence of

many beings with one particular gender and one or more in transitional state from one gender to another For the two categories of singular and plural in neuter gender as well as one-sensed beings there is only one state—'many *sapradesh* and many *apradesh*' In the class of feminine and masculine genders only divine beings, five-sensed animals and humans are included *Siddhas* are not included in any of these three genders *Avedak jivas* (non-genderic or gender transcendent beings) are to be described as *akashaayi jivas* (beings without passions) These include only *jiva* (in general), humans and *Siddhas* and there are three alternatives (*bhang*)

१३ शरीर द्वार **SHARIRA DVAR (PORT OF THE BODY)**

१८. [१] ससरीरी जहा ओहिओ। ओरालिय–वेउव्वियसरीराणं जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो। आहारगसरीरे जीव–मणुएसु छब्भंगा। तेयग–कम्मगाणं जहा ओहिया।

[२] असरीरेहिं जीव–सिद्धेहिं तियभंगो।

१८. [१] औघिक जीवो के समान ही सशरीर जीवो के विषय मे कहना चाहिए। औदारिक और वैक्रियशरीर वाले जीवो मे जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए। आहारक शरीर वाले जीवो मे जीव और मनुष्य मे छह भग कहने चाहिए। तैजस् और कार्मण शरीर वाले जीवो का कथन औघिक जीवो के समान कहना चाहिए।

[२] अशरीरी, जीव और सिद्धो के लिए तीन भग कहने चाहिए।

18. [1] *Sasharira jivas* (beings with a body) should be described as *aughik jivas* (beings in general) For beings with *Audarik* and *Vaikriya sharira* (gross physical and transmuted body), leaving aside *jiva* (in general) and one-sensed beings, three alternatives should be stated For *jiva* (in general) and humans among beings with *ahaarak sharira* (telemigratory body) six alternatives are to be stated Beings with *taijas* and *karman sharira* (fiery and *karmic* bodies) should be described like *aughik jivas* (beings in general)

[2] Three alternatives should be stated for *ashariri jivas* (soul without body), *jiva* (in general) and *Siddhas*

विवेचन १३. शरीर द्वार–सशरीर के दो दण्डको मे औघिक दण्डक के समान जीवपद मे सप्रदेशत्व ही कहना चाहिए। क्योकि सशरीरीपन अनादि है। नैरयिकादि मे सशरीरत्व का बाहुल्य होने से तीन भग और एकेन्द्रियो मे केवल तृतीय भग ही कहना चाहिए। औदारिक और वैक्रियशरीर वाले जीवो मे जीवपद और एकेन्द्रिय पदो मे बहुत्व के कारण केवल तीसरा भग ही पाया जाता है, क्योंकि जीवपद और एकेन्द्रिय पदो मे प्रतिक्षण शरीर प्रतिपन्न और प्रतिपद्यमान जीव बहुत पाये जाते है। शेष जीवो मे तीन भग पाये जाते है, क्योकि उनमे प्रतिपन्न बहुत

पाये जाते है। एक औदारिक या एक वैक्रियशरीर को छोडकर दूसरे औदारिक या दूसरे वैक्रियशरीर को प्राप्त होने वाले एकादि जीव पाये जाते है। औदारिकशरीर के दण्डकद्वय मे नैरयिको और देवो का कथन तथा वैक्रियशरीर के दण्डकद्वय मे पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वनस्पतिकाय और विकलेन्द्रिय जीवो का कथन नही करना चाहिए, क्योकि नारको और देवो के औदारिक तथा (वायुकाय के सिवाय) पृथ्वीकायादि मे वैक्रियशरीर नही होता। वैक्रिय दण्डक मे एकेन्द्रिय पद मे जो तृतीय भग-(बहुत सप्रदेश और बहुत अप्रदेश) कहा गया है, वह असख्यात वायुकायिक जीवो मे प्रतिक्षण होने वाली वैक्रिय क्रिया की अपेक्षा से कहा गया है। यद्यपि वैक्रियलब्धि वाले पचेन्द्रिय तिर्यच और मनुष्य अल्प होते है, तथापि उनमे जो तीन भग कहे गये है, वे वैक्रियावस्था वाले अधिक सख्या मे है, इस अपेक्षा से सम्भावित है। इसके अतिरिक्त पचेन्द्रिय तिर्यच और मनुष्यो मे एकादि जीवो की वैक्रियशरीर की प्रतिपद्यमानता जाननी चाहिए। आहारकशरीर की अपेक्षा जीव और मनुष्यो मे पूर्वोक्त छह भग होते है, क्योकि आहारक-शरीर जीव और मनुष्य पदो के सिवाय अन्य जीवो मे न होने से आहारकशरीरी थोडे होते है। तैजस और कार्मण शरीर का कथन औघिक जीवो के समान करना चाहिए। औघिक जीव सप्रदेश होते है, क्योकि तैजस-कार्मणशरीर-सयोग अनादि है। नैरयिकादि मे तीन भग और एकेन्द्रियो मे केवल तृतीय भग कहना चाहिए। इन सशरीरादि दण्डको मे सिद्धपद का कथन नही करना चाहिए। (सप्रदेशत्वादि से कहने योग्य) अशरीर जीवादि मे जीवपद और सिद्धपद ही कहना चाहिए, क्योकि इनके सिवाय दूसरे जीवो मे अशरीरत्व नही पाया जाता। इस तरह अशरीरपद मे तीन भग कहने चाहिए।

Elaboration—(13) Sharira dvar—Like the general category the plural and singular categories of beings (in general) with a body (*sasharíri*) are to be described in the *sapradesh* (with sections) class This is because the association of soul and body is without a beginning For infernal beings three alternatives should be stated because majority of them possess a body For one-sensed beings only the third alternative should be stated In beings with *audarik* and *vaikriya shariras* for beings (in general) and one-sensed beings only third alternative is applicable due to their numbers This is because in these two categories the number of *jivas* born and in process of being born every moment is very high In other types of *jivas* there are three alternatives because among them there are many already born *jivas* and one or more beings in states of transition from one type of *audarik* or *vaikriya* body to another type of *audarik* and *vaikriya* body In the two categories of *audarik sharira* infernal and divine beings are not included as they do not have *audarik* bodies In the two categories of *vaikriya sharira* earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, plant-bodied beings and two to four sensed beings are not included because they do not have *vaikriya* bodies For the *vaikriya* category the third alternative (many *sapradesh* and many *apradesh*) is stated because of the process of transmutation the air-bodied beings undergo every moment Although the number of five-sensed animals and humans endowed with power of transmutation is small, the three

alternatives (*bhang*) attributed to them could be because of the larger number of those in the state of transmutation. Besides this there are one or more *jivas* in the process of transition In the *aharak sharira* category for *jiva* (in general) and human beings there are six categories as aforesaid This is because *aharak shariras* are available only in *jiva* (in general) and humans and thus the number of beings with this type of body is very small *Taijas* and *karman shariras* follow the pattern of *jivas* in general They are only *sapradesh* because the association of soul with *taijas* and *karman shariras* is without a beginning For infernal beings three alternatives should be stated and for one-sensed beings only third alternative In all these categories of soul with a body *Siddhas* are not included For *jivas* without body (*asharira*) only *jiva* (in general) and *Siddha* should be included because no other *jiva* class can be without a body Thus there are three alternatives for *asharira* category

१४ पर्याप्ति द्वार PARYAPTI DVAR (DOOR OF FULL DEVELOPMENT)

१९. [१] आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाणपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। भासामणपज्जत्ती जहा सण्णी।

[२] आहारअपज्जत्तीए जहा अणाहारगा। सरीरअपज्जत्तीए इंदियअपज्जत्तीए आणआपाणअपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा। भासामणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, णेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा।

१९. [१] आहार-पर्याप्ति, शरीर-पर्याप्ति, इन्द्रिय-पर्याप्ति और श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति वाले जीवो मे जीव और एकेन्द्रिय को छोडकर तीन भग कहने चाहिए। भाषा-पर्याप्ति और मन -पर्याप्ति वाले जीवो का कथन सज्ञी जीवो के समान कहना चाहिए।

[२] आहार-अपर्याप्ति वाले जीवो का कथन अनाहारक जीवो के समान कहना चाहिए। शरीर-अपर्याप्ति, इन्द्रिय-अपर्याप्ति और श्वासोच्छ्वास-अपर्याप्ति वाले जीवो मे जीव और एकेन्द्रिय को छोड तीन भग कहने चाहिए। (अपर्याप्तक) नैरयिक, देव और मनुष्यो मे छह भग कहने चाहिए। भाषा-अपर्याप्ति और मन -अपर्याप्ति वाले जीवो मे जीव आदि तीन भग कहने चाहिए। नैरयिक, देव और मनुष्यो मे छह भग जानने चाहिए।

19. [1] For *jivas* with fully developed faculties of intake, body, sense organs and respiration (*ahaar-paryapti, sharira-paryapti, indriya-paryapti,* and *shvasochhavas-paryapti*), leaving aside *jiva* (in general) and one-sensed beings, three alternatives should be stated *Jivas* with fully developed faculties of speech and mind (*bhasha-paryapti* and *manah-paryapti*) follow the pattern of sentient beings (*sanjni jivas*)

[2] Beings with underdeveloped faculty of intake (*ahaar-aparyapti*) follow the pattern of *anahaarak jivas* (beings without intake). For *jivas* with underdeveloped faculties of body, sense organs and respiration (*sharira-aparyapti, indriya-aparyapti,* and *shvasochhavas-aparyapti*), leaving aside *jiva* (in general) and one-sensed beings, three alternatives should be stated For underdeveloped infernal, divine and human beings six alternatives should be stated For beings with underdeveloped faculties of speech and mind (*bhasha-paryapti* and *manah-paryapti*) three alternatives (*bhang*) should be stated including *jiva* (in general). In this context six alternatives should be stated for infernal, divine and human beings

विवेचन १४. **पर्याप्ति द्वार**–जीवपद और एकेन्द्रिय पदो मे आहार–पर्याप्ति आदि को प्राप्त तथा आहारादि की अपर्याप्ति से मुक्त होकर आहारादि–पर्याप्ति को प्राप्त होने वाले जीव बहुत है, इसलिए इनमे 'बहुत सप्रदेश और वहुत अप्रदेश' यह एक ही भग होता है, शेष जीवो मे तीन भग पाये जाते है। यद्यपि भाषा–पर्याप्ति और मन – पर्याप्ति, ये दोनो पर्याप्तियॉ भिन्न–भिन्न है, तथापि बहुश्रुत महापुरुषो द्वारा सम्मत होने से ये दोनो पर्याप्तियाँ एकरूप मान ली गई है। अतएव भाषा-मन -पर्याप्ति द्वारा पर्याप्त जीवो का कथन सज्ञी जीवो की तरह करना चाहिए। इन सब पदो मे तीन भग कहने चाहिए। यहाँ केवल पचेन्द्रिय पद ही लेना चाहिए। आहार–अपर्याप्ति दण्डक मे जीवपद और पृथ्वीकायिक आदि पदो मे 'बहुत सप्रदेश–बहुत अप्रदेश'–यह एक ही भग कहना चाहिए। क्योकि आहार–पर्याप्ति से रहित विग्रहगति समापन्न बहुत जीव निरन्तर पाये जाते है। शेष जीवो मे पूर्वोक्त ६ भग होते है, क्योकि शेष जीवो मे आहार–पर्याप्ति रहित जीव थोडे पाये जाते है। शरीर–अपर्याप्ति द्वार मे जीवो और एकेन्द्रियो में एक भग एव शेष जीवो मे तीन भग कहने चाहिए, क्योकि शरीरादि से अपर्याप्त जीव कालादेश की अपेक्षा सदा सप्रदेश ही पाये जाते है, अप्रदेश तो कदाचित् एकादि पाये जाते है। नैरयिक, देव और मनुष्यो मे छह भग कहने चाहिए। भाषा और मन की पर्याप्ति से अपर्याप्त जीव वे है, जिनको जन्म से भाषा और मन की योग्यता तो हो, किन्तु उसकी सिद्धि न हुई हो। ऐसे जीव पचेन्द्रिय ही होते है। अत इन जीवो मे और पचेन्द्रिय तिर्यंचो मे भाषा व मन–अपर्याप्ति को प्राप्त बहुत जीव होते है, और इसकी अपर्याप्ति को प्राप्त होते हुए एकादि जीव ही पाये जाते है। इसलिए उनमे पूर्वोक्त तीन भग घटित होते है। नैरयिकादि मे भाषा–मन अपर्याप्तको की अल्पतरता होने से उनमे एकादि सप्रदेश और अप्रदेश पाये जाने से पूर्वोक्त ६ भग होते है। इन पर्याप्ति–अपर्याप्ति के दण्डको मे सिद्धपद नही कहना चाहिए, क्योकि सिद्धो मे पर्याप्ति और अपर्याप्ति नही होती। *[वृत्ति, पत्राक २६१ से २६६ तक, भगवती सूत्र (हिन्दी विवेचनयुक्त) भा २, पृष्ठ १८४ से १९५ तक]*

Elaboration—(14) Paryapti dvar—Among *jiva* (in general) and one-sensed beings there is a large number of beings having attained and in the process of attaining the said full developments, therefore only one state is applicable—many *sapradesh* and many *apradesh* (without sections) For the remaining *jivas* three alternatives are applicable. Although *bhasha-paryapti* and *manah-paryapti* are different they are considered as one by great scholarly sages Therefore, *jivas* with fully

developed faculties of speech and mind (*bhasha-manah-paryapti*) follow the pattern of sentient beings (*sanjni jivas*) For all these categories that are applicable only to five-sensed beings three alternatives are applicable In the *ahaar-aparyapti* category for *jiva* (in general) and one-sensed beings including earth-bodied beings only one state—many *sapradesh* and many *apradesh*—should be stated This is because always a large number of beings devoid of the faculty of intake and undergoing oblique movement exist For remaining beings aforesaid six alternatives are applicable because there are very few beings devoid of *ahaar-paryapti* For the *sharira-aparyapti* category there is only one state in *jivas* (in general) and one-sensed beings and three alternatives in other beings This is because underdeveloped beings are always *sapradesh* in relation to time, very rarely they are *apradesh* Here six alternatives (*bhang*) should be stated for infernal, divine and human beings Beings with underdeveloped faculties of speech and mind are only those that do have these faculties but have not attained full development Such beings are always five-sensed beings Therefore in these beings and five-sensed animals there is a large number of beings with *bhasha-manah-aparyapti* and one or more in process That is the reason three alternatives are applicable to them In infernal beings there are only a few in this category As such, among them there are only one or more *sapradesh* (with sections) and *apradesh* requiring aforesaid six alternatives In these categories of fully developed and underdeveloped beings *Siddha* category is not included because they are beyond these *(Vritti, leaves 261-266 and Bhagavati Sutra with Hindi commentary, part 2, pp 984-995)*

उपसंहार CONCLUSION

२०. गाहा— सपदेसाऽऽहारग भविय सण्णि लेस्सा दिट्ठी संजय कसाए।
णाणे जोगुवओगे वेदे य सरीर पज्जत्ती॥१॥

२०. संग्रहणी गाथा–सप्रदेश, आहारक, भव्य, संज्ञी, लेश्या, दृष्टि, संयत, कषाय, ज्ञान, योग, उपयोग, वेद, शरीर और पर्याप्ति, इन चौदह द्वारों का कथन ऊपर किया गया है।

20. Collative verse—*Sapradesh* (with sections), *ahaarak* (beings with intake), *bhavya* (worthy), *sanjni* (sentient), *leshya* (soul complexion), *drishti* (attitude), *samyat* (restrained), *kashaaya* (passions), *jnana* (knowledge), *yoga* (association), *upayog* (involvement), *veda* (gender), *sharira* (body) and *paryapti* (full development)—these fourteen *dvars* (ports, categories) have been mentioned above

२१. [प्र. १] जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ?

[उ.] गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणाऽपच्चक्खाणी वि।

२१. [प्र. १] भगवन् ! क्या जीव (१) प्रत्याख्यानी है (पाप का त्याग करने वाले), (२) अप्रत्याख्यानी है, या (३) प्रत्याख्याना-प्रत्याख्यानी है ?

[उ.] गौतम ! जीव प्रत्याख्यानी भी है, अप्रत्याख्यानी भी है और प्रत्याख्याना-प्रत्याख्यानी भी है।

21. [Q. 1] *Bhante* ! Are living beings (*jivas*) (1) with *pratyakhyan* (renunciation of sinful activities), (2) with *apratyakhyan* (non-renunciation of sinful activities) or (3) with *pratyakhyan-apratyakhyan* (renunciation - non-renunciation of sinful activities) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings are with *pratyakhyan* (renunciation of sinful activities), with *apratyakhyan* (non-renunciation of sinful activities) as well as with *pratyakhyan-apratyakhyan* (renunciation - non-renunciation of sinful activities)

[प्र. २] सव्वजीवाणं एवं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव चउरिंदिया, सेसा दो पडिसेहेयव्वा। पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणे वि। मणुस्सा तिण्णि वि। सेसा जहा नेरइया।

[प्र. २] इसी तरह सभी जीवो के सम्बन्ध मे यही प्रश्न है, (कि वे प्रत्याख्यानी है, अप्रत्याख्यानी है या प्रत्याख्याना-प्रत्याख्यानी है ?)

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव अप्रत्याख्यानी है, यावत् चतुरिन्द्रिय जीवो तक अप्रत्याख्यानी है, अत इन जीवो मे शेष दो भगो का निषेध करना चाहिए। पचेन्द्रिय तिर्यच प्रत्याख्यानी नही है, किन्तु अप्रत्याख्यानी है और प्रत्याख्याना-प्रत्याख्यानी भी है। मनुष्य तीनो भग के स्वामी है। शेष जीवो का कथन नैरयिको की तरह करना चाहिए।

[Q. 2] Is it universally true for all *jivas* (living beings, souls) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings are *apratyakhyani* (without renunciation of sinful activities) and so on up to four-sensed beings are *apratyakhyani*, therefore the other two aforesaid alternatives are not applicable to them Five-sensed animals are not *pratyakhyani* (with renunciation) but *apratyakhyani* (without-renunciation) as well as *pratyakhyani-apratyakhyani* (with and without renunciation) To humans all the three said alternatives are applicable All the remaining beings follow the pattern of infernal beings

२२. [प्र.] **जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं जाणंति, अपच्चक्खाणं जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं जाणंति ?**

[उ.] **गोयमा ! जे पंचेंदिया ते तिण्णि वि जाणंति, अवसेसा पच्चक्खाणं न जाणंति।**

२२. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यान को जानते है, अप्रत्याख्यान को जानते है और प्रत्याख्याना-प्रत्याख्यान को जानते है ?

[उ.] गौतम ! जो पचेद्रिय जीव है, वे तीनो को जानते है। शेष जीव प्रत्याख्यान आदि तीनो को नहीं जानते।

22. [Q.] *Bhante* ! Do living beings (*jivas*) know *pratyakhyan* (renunciation of sinful activities), do they know *apratyakhyan* (non-renunciation of sinful activities) and do they know *pratyakhyan-apratyakhyan* (renunciation - non-renunciation of sinful activities) ?

[Ans.] Gautam ! The five-sensed beings know all the three The rest do not know renunciation (any of the three)

२३. [प्र.] **जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति अपच्चक्खाणं कुव्वंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति ?**

[उ.] **जहा ओहिया तहा कुव्वणा।**

२३. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यान करते है, अप्रत्याख्यान करते है, प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान करते है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार औधिक दण्डक (समुच्चय मे) कहा है, उसी प्रकार प्रत्याख्यान करने के विषय मे कहना चाहिए।

23. [Q.] *Bhante* ! Do living beings (*jivas*) practice *pratyakhyan* (renunciation of sinful activities), do they practice *apratyakhyan* (non-renunciation of sinful activities) and do they practice *pratyakhyan-apratyakhyan* (renunciation - non-renunciation of sinful activities) ?

[Ans.] Gautam ! What has been stated about beings in general (aphorism 21) should be repeated for practice of *pratyakhyan*

प्रत्याख्यान निबद्ध आयु LIFE SPAN DETERMINED BY PRATYAKHYAN

२४. [प्र.] **जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ?**

[उ.] **गोयमा ! जीवा य वेमाणिया य पच्चक्खाणणिव्वत्तियाउया तिण्णि वि। अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया।**

२४. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव, प्रत्याख्यान से निबद्ध आयुष्य वाले है ? अप्रत्याख्यान से निबद्ध आयुष्य वाले है अथवा प्रत्याख्याना–प्रत्याख्यान से निबद्ध आयुष्य वाले है ? (अर्थात्–क्या जीवो का आयुष्य प्रत्याख्यान से बँधता है यावत्   )

[उ.] गौतम ! जीव और वैमानिक देव प्रत्याख्यान से निबद्ध आयुष्य वाले है, अप्रत्याख्यान से और प्रत्याख्याना–प्रत्याख्यान से निबद्ध आयुष्य वाले भी है। शेष सभी जीव अप्रत्याख्यान से निबद्ध आयुष्य वाले है।

24. [Q.] *Bhante* ! Are beings with a life-span determined by *pratyakhyan*, are they with a life-span determined by *apratyakhyan*, or are they with a life-span determined by *pratyakhyan-apratyakhyan* ?

[Ans.] Gautam ! *Jiva* (in general) and Vaimanik gods are with a life-span determined by *pratyakhyan*, they are with a life-span determined by *apratyakhyan* as well as by *pratyakhyan-apratyakhyan* All other beings are with a life-span determined by *apratyakhyan*

विवेचन · **प्रत्याख्यानी**–सावद्य प्रवृत्ति का त्यागी। **अप्रत्याख्यानी**–अविरत, जिसने कोई भी व्रत स्वीकार नही किया हो।

प्रत्याख्यानाऽप्रत्याख्यानी–देशविरत। व्रतधारी श्रावक। चारित्रमोह कर्म के क्षयोपशम से प्रत्याख्यान की पात्रता आती है।

(१) जीव प्रत्याख्यानी भी है, अप्रत्याख्यानी भी है, प्रत्याख्यानी–अप्रत्याख्यानी भी है। (२) नैरयिको से लेकर चतुरिन्द्रिय जीव तक तथा भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव अप्रत्याख्यानी होते है। तिर्यंच पचेन्द्रिय अप्रत्याख्यानी और प्रत्याख्याना–प्रत्याख्यानी दोनो होते है, तथा मनुष्य तीनो ही होते है। (३) सज्ञी पचेन्द्रिय के सिवाय कोई भी जीव प्रत्याख्यानादि को नही जानते है। (४) समुच्चय जीव और मनुष्य प्रत्याख्यानादि तीनो ही करते है, तिर्यंच पचेन्द्रिय अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्याना–प्रत्याख्यान करते है और शेष २२ दण्डक के जीव प्रत्याख्यान नही करते। (५) समुच्चय जीव और वैमानिक देवो मे उत्पन्न होने वाले जीव प्रत्याख्यान आदि तीनो भगो मे आयुष्य बाँधते है, शेष २३ दण्डक के जीव अप्रत्याख्यान मे आयुष्य बाँधते है।

प्रत्याख्यानकरण का आशय–प्रत्याख्यान तभी होता है, जबकि वह किया जाता है। सच्चे अर्थो मे प्रत्याख्यान वही करता है, जो प्रत्याख्यान एव प्रत्याख्यान–अप्रत्याख्यान को जानता हो।

प्रत्याख्यानादि निर्वर्तित आयुष्यबन्ध का आशय–प्रत्याख्यान आदि से आयुष्य बाँधे हुए को प्रत्याख्यानादि–निर्वर्तित आयुष्यबन्ध कहते है। प्रत्याख्यान वाले जीवो की उत्पत्ति प्राय वैमानिको मे, एव अप्रत्याख्यानी अविरत जीवो की उत्पत्ति प्राय नैरयिक आदि मे होती है। *(वृत्ति, पत्राक २६७)*

Elaboration—*Pratyakhyani* means one who has renounced all sinful activities *Apratyakhyani* means one who is attached and who has not taken any vow of abstainment *Pratyakhyani-apratyakhyani* means one with partial detachment or a *shraavak* who has taken vows The capacity of renunciation develops with the destruction-cum-pacification of *Chaaritramoha karma* (conduct-disturbing *karma*)

(1) Generally speaking living beings are *pratyakhyani, apratyakhyani* as well as *pratyakhyan-apratyakhyani* (2) Starting from infernal beings up to four-sensed beings as also Bhavanpati, Vaanavyantar, Jyotishk and Vaimanik gods are *apratyakhyani* Five-sensed animals are *apratyakhyani* as well as *pratyakhyan-apratyakhyani* Humans can be of all the three classes (3) Besides five-sensed beings no other beings know of these three (4) *Jiva* (in general) and humans practice all the three Five-sensed animals practice *apratyakhyan* as well as *pratyakhyan-apratyakhyan* All other beings belonging to 22 *Dandaks* practice only *apratyakhyan* (5) *Jiva* (in general) and Vaimanik gods are with a life-span determined by all the three alternatives of *pratyakhyan* All other beings belonging to 23 *Dandaks* are with a life-span determined by *apratyakhyan*

Doing pratyakhyan—*Pratyakhyan* manifests only when it is resolved or formally accepted In the true sense of the word, *pratyakhyan* is done only by a person who knows and understands these three alternatives (*bhang*)

Life-span—The life-span determined by the bondage of *karmas* acquired through *pratyakhyan* (etc) is called *pratyakhyan* (etc) *nirvartit ayushya bandh* Living beings practicing *pratyakhyan* are generally born as Vaimanik gods and those who are attached and do not practice *pratyakhyan* are generally born in the infernal world *(Vritti, leaf 267)*

उपसहार गाथा CONCLUDING VERSE

२५. पच्चक्खाण १ जाणइ २ कुव्वति ३ तेणेव आउनिव्वत्ती ४।
सपदेसुद्देसम्मि य एमेए दडगा चउरो॥२॥

सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ छट्ठे सए : चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

२५. प्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान का जानना, करना, तीनो का (जानना, करना), तथा आयुष्य की निर्वृत्ति, इस प्रकार ये चार दण्डक सप्रदेश (नामक चतुर्थ) उद्देशक मे कहे गये है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् यह इसी प्रकार है।

॥ छठा शतक : चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

25. *Pratyakhyan*, knowing and practicing *pratyakhyan*, knowing and practicing all three and determining of life-span, these four topics have been discussed in this lesson titled *Sapradesh* (fourth lesson)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so "

● END OF THE FOURTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : पंचम उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : FIFTH LESSON

तमस्काय TAMASKAAYA (BODY OF DARKNESS)

तमस्काय क्या, कैसी है ? WHAT IS TAMASKAAYA ?

१. [प्र. १] किमियं भंते ! तमुक्काए त्ति पवुच्चति, किं पुढवी तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति ?

[उ.] गोयमा ! नो पुढवी तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति।

१. [प्र. १] भगवन् ! 'तमस्काय' किसे कहा जाता है ? क्या पृथ्वी को 'तमस्काय' कहते है या पानी को ?

[उ.] गौतम ! पृथ्वी तमस्काय नही किन्तु पानी 'तमस्काय' कहलाता है।

1. [Q. 1] *Bhante* ! What is called *Tamaskaaya* (body of darkness or agglomerative entity of water-derived darkness) ? Is earth called *Tamaskaaya* or water ?

[Ans.] Earth is not called *Tamaskaaya* (body of darkness) but water is called *Tamaskaaya*

[प्र. २] से केणट्ठेणं ?

[उ] गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेति, अत्थेगइए देसं नो पकासेइ, से तेणट्ठेणं।

[प्र. २] भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

[उ.] गौतम ! कुछ पृथ्वीकाय ऐसी शुभ है, जो देश (कुछ भाग) को प्रकाशित करती है और कुछ पृथ्वीकाय ऐसी है, जो देश (भाग) को प्रकाशित नही करती। इस कारण से पृथ्वी तमस्काय नही कहलाती, पानी ही तमस्काय कहलाता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! There are some earth-bodies that glow in sections and there are some earth-bodies that do not glow in sections Therefore earth is not called *Tamaskaaya* but water is called *Tamaskaaya*.

२. [प्र.] तमुक्काए णं भंते ! कहिं समुट्ठिए ? कहिं सन्निट्ठिए ?

[उ.] गोयमा ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स बहिया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे वीइवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ

जलंताओ एकपदेसियाए सेढीए इत्थ णं तमुक्काए समुट्ठिए। सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उप्पतित्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण–सणंकुमार–माहिंदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता ण उड्ढ पि य णं जाव बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपत्ते, एत्थ णं तमुक्काए सन्निट्ठिए।

२. [प्र] भगवन् ! तमस्काय कहाँ से समुत्थित (उत्पन्न- प्रारम्भ) होती है और कहाँ जाकर सन्निष्ठित (समाप्त) होती है ?

[उ] गौतम ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप के बाहर तिरछे असख्यात द्वीप–समुद्रो को पार करने के बाद अरुणवर द्वीप आता है, उस द्वीप की बाहरी वेदिका के अन्त से अरुणोदय समुद्र मे ४२,००० योजन जाने पर वहाँ जल के ऊपर के सिरे से एक प्रदेश की श्रेणी मे तमस्काय उठती है। (अर्थात् नीचे से लेकर ऊपर उठती एक समान दीवार रूप है।) वहाँ से १,७२१ योजन ऊँची जाने के बाद तिरछी विस्तृत होती हुई, सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार और माहेन्द्र, इन चार देवलोको (कल्पो) को आच्छादित करके उनसे भी ऊपर पचम ब्रह्मलोककल्प के रिष्टविमान नामक पाथडे तक पहुँच जाती है। यहीं तमस्काय समाप्त होती है।

2. [Q.] *Bhante* ! Where does *Tamaskaaya* (agglomerative entity of darkness) begin (*samutthit*) and where does it end ?

[Ans.] Gautam ! Outside the Jambudveep continent after obliquely crossing innumerable pairs of island-seas (*dveep-samudra*) one reaches Arunavar continent At the end of its outer *vedika* (plateau) is Arunavar sea Crossing 42 thousand Yojans (a linear measure approximately equal to 8 miles) in that sea comes a point on the water surface from where *Tamaskaaya* (agglomerative entity of darkness) rises into space as a matrix (*shreni*) of single space-point dimension (depth) Going perpendicular for 1721 Yojans it turns and extends to envelope four divine dimensions (heavens), namely Saudharma, Ishan, Sanatkumar and Maahendra kalps, and goes up to Risht Vimaan of the fifth Brahmalok *kalp* This is the point where *Tamaskaaya* ends

३. [प्र.] तमुक्काए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! अहे मल्लगमूलसंठिए, उप्पि कुक्कुडगपंजरगसंठिए पण्णत्ते।

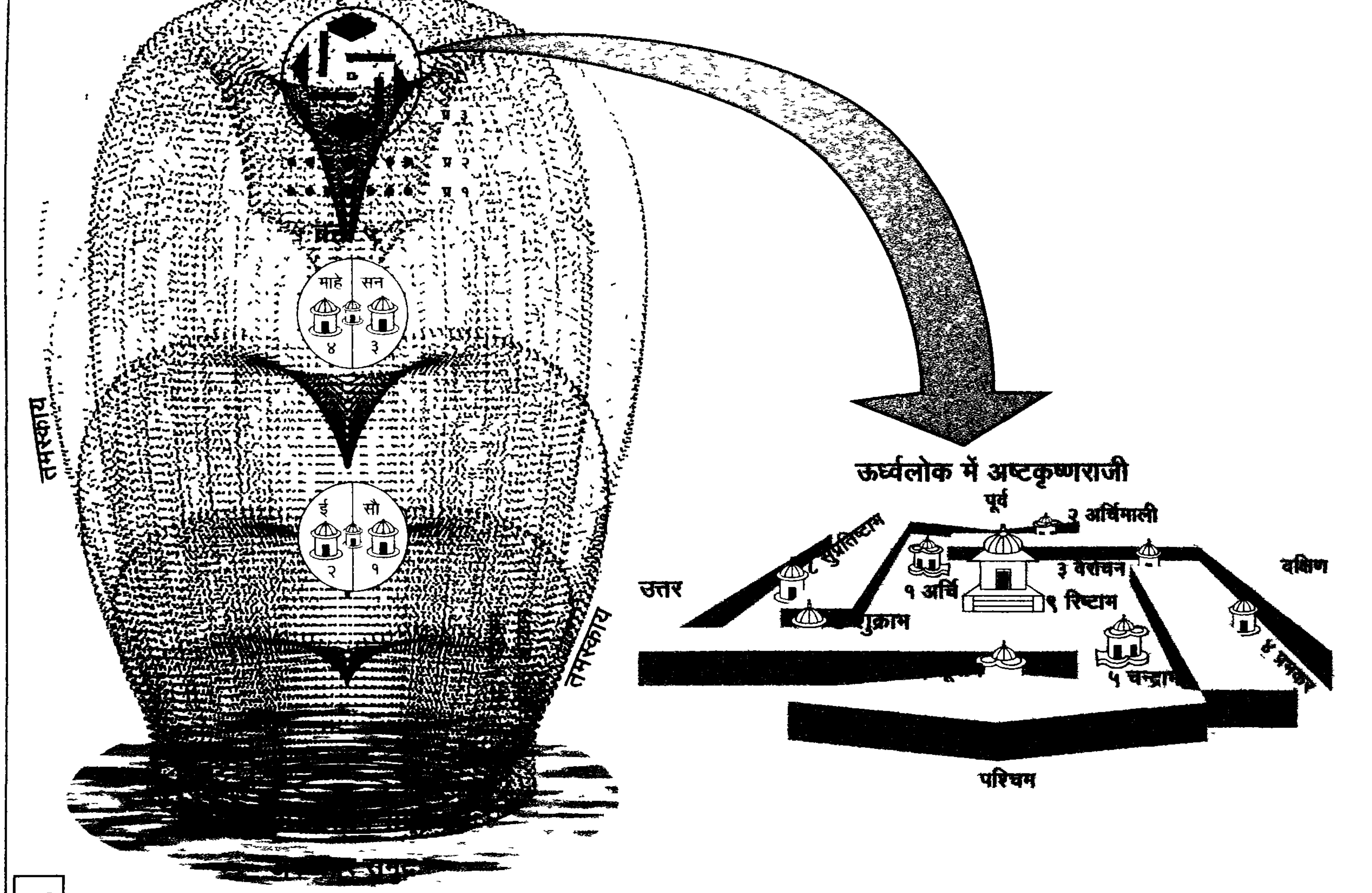
३. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय का संस्थान (आकार) किस प्रकार का है ?

[उ] गौतम ! तमस्काय नीचे तो मल्लक (शराब या सिकोरे) के मूल के आकार का है और ऊपर कुर्क्कुपजरक अर्थात् मुर्गे के पिंजरे के आकार का है।

3. [Q.] *Bhante* ! What is the shape of *Tamaskaaya* ?

[Ans.] Gautam ! At the base it is of the shape of the base of a *mallak* (earthen pot of the shape of a conical tumbler) and at the top it is like cage of a cock (square shaped)

अरुणवर समुद्र में से उछलता तमस्काय का दृश्य



7

चित्र परिचय-७	Illustration No. 7

तमस्काय

कहाँ से कहाँ तक–मध्यलोक स्थित जम्बूद्वीप के बाहर असख्य द्वीप समुद्रो के बाद अरुणवर समुद्र आता है। इस समुद्र मे ४२,००० योजन भीतर जाने पर जल के सघन पुदगलो का एक अधकार मय समूह सीधा ऊपर की ओर उठता है। यह अधकाराच्छन्न जल जातीय पुदगलो का समूह है। इसे तमस्काय (अधकार समूह) कहते है। यह सीधी दीवार की आकृति मे ऊपर उठती हुई १७२१ योजन ऊपर जाने के बाद तिरछी विस्तार लेती हुई ऊपर की ओर जाती है। १ सौधर्म ईशान इन दोनो देवलोको को घेरती हुई ऊपर ३ सनत्कुमार ४ माहेन्द्र देवलोक से भी ऊपर जाकर पाँचवे देवलोक के रिष्ट विमान के प्रस्तट तक पहुँच जाती है।

यह इतना सघन अधकार समूह होता है कि देवता भी इसे पार करने मे भयभीत होते है।

-शतक ६ उ ५ सूत्र १ से १५

अष्ट कृष्णराजि–पाँचवे देवलोक के तृतीय प्रस्तट के नीचे समचौरस आकार वाली आठ कृष्णराजिया है। ये तमस्काय जैसी ही भयानक है। परन्तु यह बादर अप्कायिक जीव नही किन्तु पृथ्वीकायिक जीवो का पुदगल पिण्ड है। इनको पार करने मे अत्यन्त शीघ्र गति वाले देव को भी १५ दिन तक लग सकते है। इनके बीच कोनो पर आठ लोकान्तिक देवो के (काल अधकार की श्रेणी) आठ विमान है। तथा नौवा रिष्टाभ विमान मध्य मे स्थित है। कृष्णराजि पूर्व पश्चिम षटकोण उत्तर दक्षिण त्रिकोण तथा मध्य कोनो मे चतुष्कोण आकृति मे है।

– [illegible]

TAMASKAAYA

In the middle world outside the Jambudveep continent after crossing innumerable pairs of island-seas one reaches Arunavar sea. Crossing 42 thousand Yojans in that sea comes a point on the water surface from where Tamaskaaya rises into space as a matrix (shrem) of single space-point dimension (depth). Going perpendicular for 1721 Yojans it turns and extends to envelope four divine dimensions (heavens) namely Saudharma Ishan, Sanatkumar and Maahendra kalps, and goes up to Risht Vimaan of the fifth Brahmalok kalp.

This conglamorative entity of water-derived darkness is so dense that even gods are afraid to cross it.

- Shatak 6 lesson 5 Sutra 1-15

Eight Krishna-rajis—Below the third level of the fifth heaven there are eight square shaped krishna-rajis. They are as fierce as Tamaskaaya. But they are earth-derived and not water-derived. To cross these even the fastest gods may take fifteen days. Eight celestial vehicles of eight Lokantik gods are located between the corners of these Rajis. A ninth celestial vehicle called Rishtabh is at the center. The outer krishna-rajis of east and west are hexagonal and those of north and south are triangular. All the inner krishna-rajis are square.

– Shatak 6 lesson 5 Sutra 17-18

४. [प्र.] तमुक्काए णं भंते केवइयं विक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?

[उ] गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडे य। तत्थ णं जे से संखेज्जवित्थडे से णं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते। तत्थ णं जे से असंखिज्जवित्थडे से असंक्खेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

४. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय का विष्कम्भ—विस्तार और परिक्षेप—घेरा कितना है ?

[उ] गौतम ! तमस्काय दो प्रकार की है—एक तो सख्येय विस्तृत और दूसरी असखेय विस्तृत। इनमे से जो सख्येय विस्तृत है, उसका विस्तार सख्येय हजार योजन है और घेरा असख्येय हजार योजन है। जो तमस्काय असख्येय विस्तृत है, उसका विष्कम्भ, असख्येय हजार योजन और परिक्षेप भी असख्येय हजार योजन है।

4. [Q.] *Bhante* ! What is the *vishkambh* (spread or area) and *parikshep* (circumference) of *Tamaskaaya* ?

[Ans.] Gautam ! *Tamaskaaya* is of two kinds—with limited expanse and with unlimited expanse One with limited expanse has a spread of countable thousand Yojans and a circumference of innumerable thousand Yojans One with unlimited expanse has a spread of innumerable thousand Yojans and a circumference of innumerable thousand Yojans

५. [प्र.] तमुक्काए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?

[उ] गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्व दीव—समुद्दाण सब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते। देवे ण महिड्ढीए जाव 'इणामेव इणामेव' त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिर्हि अच्छरानिवाएर्हि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताण हव्वमागच्छिज्जा। से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जाव एकाहं वा दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेणं छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगइयं तमुक्काय वीईवएज्जा, अत्थेगइयं तमुक्कायं नो वीईवएज्जा। एमहालए णं गोयमा ! तमुक्काए पन्नत्ते।

५. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय कितनी बडी है ?

[उ.] गौतम ! समस्त द्वीप–समुद्रो के बीचोबीच यह जम्बूद्वीप है। यावत् यह एक लाख योजन का लम्बा-चौडा है। इसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन तीन कोस एक सौ अट्ठाईस धनुष और साढे तेरह अगुल से कुछ अधिक है। कोई महाऋद्धि यावत् महानुभाव वाला देव–'यह चला, यह चला', ऐसा करके तीन चुटकी बजाये, उतने समय मे सम्पूर्ण जम्बूद्वीप की इक्कीस बार परिक्रमा करके शीघ्र वापस आ जाये, इस प्रकार की उत्कृष्ट और त्वरायुक्त देव की गति से चलता हुआ देव यावत् एक दिन, दो दिन, तीन दिन चले, यावत् उत्कृष्ट छह महीने तक चले तब जाकर कुछ

तमस्काय का उल्लघन कर पाता है और कुछ तमस्काय का उल्लघन नही कर पाता। हे गौतम ! तमस्काय इतना बडा है।

5. [Q.] *Bhante* ! How large is *Tamaskaaya* ?

[Ans.] At the center of all continents and all oceans there is a continent named Jambudveep Its length and breadth is one hundred thousand Yojans Its circumference is slightly more than three hundred sixteen thousand two hundred twenty seven (3,16,227) Yojans, three Kos (a linear measure equal to 2 miles), twenty eight Dhanush (a linear measure equivalent to four cubits), and thirteen and a half Angul (a linear measurement equal to the width of a finger) Suppose a god with great opulence and so on up to great influence goes around this Jambudveep 21 times and returns within the time taken in uttering—'Here I go'—and snapping his finger thrice If such a god moves with such great and fast divine speed for one day, two days, three days and so on up to a maximum of six months then he is able to cross some portion of *Tamaskaaya* and fails to cross some portion of *Tamaskaaya* Gautam ! So large is *Tamaskaaya*

६. [प्र.] अत्थि ण भंते ! तमुकाए गेहा ति वा, गेहावणा ति वा ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

७. [प्र.] अत्थि णं भंते ! तमुक्काए गामा ति वा जाव सन्निवेसा ति वा ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

८. [प्र. १] अत्थि णं भंते ! तमुक्काए ओराला बलाहया ससेयंति, सम्मुच्छंति, वासं वासंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

[प्र. २] तं भंते ! किं देवो पकरेति, असुरो पकरेति? णागो पकरेति?

[उ.] गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, णागो वि पकरेति।

६. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय मे गृह (घर) है, अथवा गृहापण (दुकाने) है।

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

७. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय मे ग्राम है यावत् अथवा सन्निवेश है ?

[उ.] गौतम ! ऐसा नही है।

८. [प्र. १] भगवन् ! क्या तमस्काय मे उदार (विशाल) मेघ सस्वेद को प्राप्त होते है, सम्मूर्च्छित मेघ का आकार लेते है और वर्षा बरसाते है ?

[उ] हाँ, गौतम ! ऐसा है।

[प्र. २] भगवन् ! क्या वह (मेघ सस्वेदन–सम्मूर्च्छन–वर्षण) देव करता है, असुर करता है या नाग करता है ?

[उ] हाँ, गौतम ! (ऐसा) देव भी करता है, असुर भी करता है और नाग भी करता है।

6. [Q.] *Bhante* ! Are there houses or shops (*grihapan*) in *Tamaskaaya*

[Ans.] Gautam ! It is not so

7. [Q.] *Bhante* ! Are there villages and so on up to. *sanniwesh* (temporary settlement) in *Tamaskaaya* ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

8. [Q. 1] *Bhante* ! In *Tamaskaaya* do great clouds accumulate moisture, form into rain-clouds and cause shower ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is so

[Q. 2] *Bhante* ! Is it (aforesaid activities of clouds) done by a *Dev*, *Asur* or *Naag* (classes of divine beings) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is done by a *Dev*, *Asur* as well as a *Naag*

९. [प्र १] अत्थि णं भंते ! तमुक्काए बादरे थणियसद्दे, बायरे विज्जुए ?

[उ.] हंता, अत्थि।

[प्र. २] तं भंते ! किं देवो पकरेति ३ ?

[उ] तिण्णि वि पकरेति।

९. [प्र. १] भगवन् ! तमस्काय मे क्या बादर स्तनित शब्द (स्थूल मेघगर्जन) है, क्या बादर विद्युत् है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! है।

[प्र २] भगवन् ! क्या उसे देव करता है, असुर करता है या नाग करता है ?

[उ] गौतम ! तीनो ही करते है।

9. [Q. 1] *Bhante* ! In *Tamaskaaya* is there loud thundering sound (of clouds) and gross (bright) lightening ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is so

[Q. 2] *Bhante* ! Is it produced by a *Dev*, *Asur* or *Naag* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is done by all three

१०. [प्र.] अत्थि णं भंते ! तमुक्का बायरे पुढविकाए, बायरे अगणिकाए ?

[उ.] णो तिणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं।

१०. [प्र] भगवन् ! क्या तमस्काय मे बादर पृथ्वीकाय है और बादर अग्निकाय है ?

[उ] गौतम ! ऐसा नही है। किन्तु वहाँ विग्रहगतिसमापन्न बादर पृथ्वी और बादर अग्नि हो सकती है।

10. [Q.] *Bhante* ! Does *Tamaskaaya* contain gross (*baadar*) earth-bodies (*prithvikaaya*) and gross fire-bodies (*tejaskaaya*) ?

[Ans.] Gautam ! That is not so However, it may contain gross earth-bodies and gross fire-bodies with oblique movement (*vigrahagati samapanna*)

११. [प्र.] अत्थि णं भते ! तमुक्काए चंदिम–सूरिय–गहगण–णक्खत्त–तारारूवा ?

[उ] णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि।

११. [प्र] भगवन् ! क्या तमस्काय मे चन्द्रमा, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र और तारारूप है ?

[उ.] गौतम ! यह ऐसा नही है, किन्तु वे (चन्द्रादि) तमस्काय के परिपार्श्व मे है।

11. [Q.] *Bhante* ! Does *Tamaskaaya* have cosmic formations like moon, sun, planets, constellations and stars ?

[Ans.] Gautam ! It is not so However, such formations including moon are in its vicinity

१२. [प्र] अत्थि णं भते ! तमुक्काए चदाभा ति वा, सूराभा ति वा ?

[उ.] णो तिणट्ठे समट्ठे, कादूसणिया पुण सा।

१२. [प्र] भगवन् ! क्या तमस्काय मे चन्द्रमा की आभा (प्रभा) या सूर्य की आभा है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ ऐसा नही है, किन्तु तमस्काय मे (जो प्रभा है, वह) **कादूषणिका**–(चन्द्र–सूर्य की प्रभा को दूषित करने वाली) है।

12. [Q.] *Bhante* ! Does *Tamaskaaya* have glow like the moon or the sun ?

[Ans.] Gautam ! It is not so However, it has murkiness (the attribute that defiles or darkens the glow of the sun and the moon)

१३. [प्र.] तमुक्काए णं भंते ! केरिसए वण्णेणं पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! काले कालोभासे गंभीरलोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणे परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते। देवे वि णं अत्थेगइए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता णं खुभाएज्जा। अहे णं अभिसमागच्छेज्जा, ततो पच्छा सीहं सीहं तुरियं तुरियं खिप्पामेव वीईवएज्जा।

१३. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय का वर्ण कैसा है ?

[उ.] गौतम ! तमस्काय वर्ण से काला, काली कान्ति वाला, गम्भीर (गहरा), रोमहर्षक (रोंगटे खडे करने वाला), भीम (भयकर), उत्त्रासजनक और परम कृष्ण है। कोई एक देव भी उस तमस्काय को देखते ही सर्वप्रथम तो घबरा जाता है। कदाचित् कोई देव उस तमस्काय मे प्रवेश करता है तो वह शीघ्रातिशीघ्र त्वरित गति से झटपट उसे पार कर जाता है।

13. **[Q.]** *Bhante* ! What is the appearance (colour) of *Tamaskaaya* ?

[Ans.] Gautam ! In appearance *Tamaskaaya* is black, with a black hue, dense, gruesome, hideous, terrifying and deep black At its first sight even a god is horrified If by chance a god enters it, he at once rushes out with great speed

१४. [प्र.] तमुक्कायस्स ण भंते ! कइ नामधेज्जा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! तेरस नामधेज्ज पण्णत्ता, तं जहा–तमे ति वा, तमुकाए ति वा, अंधकारे इ वा, महधकारे इ वा, लोगंधकारे इ वा, लोगतमिस्से इ वा, देवंधकारे ति वा, देवंतमिस्से ति वा, देवारण्णे ति वा, देववूहे ति वा, देवफलिहे ति वा, देवपडिक्खोभे ति वा, अरुणोदए ति वा समुद्दे।

१४. [प्र.] भगवन् ! तमस्काय के कितने नाम है ?

[उ.] गौतम ! तमस्काय के तेरह नाम है, यथा-(१) तम, (२) तमस्काय, (३) अन्धकार, (४) महान्धकार, (५) लोकान्धकार, (६) लोकतमिस्र, (७) देवान्धकार, (८) देवतमिस्र, (९) देवारण्य (देवो के लिए भी अरण्य जगल के समान भयावह), (१०) देवव्यूह (देवो के लिए भी चक्रव्यूह के समान दुर्भेद्य), (११) देवपरिध (गहरी खाई के समान गति मे बाधक), (१२) देवप्रतिक्षोभ (देवो के क्षोभ का विषय), (१३) अरुणोदक समुद्र।

14. **[Q.]** *Bhante* ! How many names *Tamaskaaya* has ?

[Ans.] Gautam ! *Tamaskaaya* has thirteen names—(1) *Tam*, (2) *Tamaskaaya*, (3) *Andhakaar*, (4) *Mahandhakaar*, (5) *Lokandhakaar*, (6) *Lokatamisra*, (7) *Devandhakaar*, (8) *Devatamisra*, (9) *Devaranya* (terrifying like a forest even for gods), (10) *Devavyuha* (like a labyrinth impassable even for gods), (11) *Devaparigh* (impassable like a gorge), (12) *Devapratikshobh* (matter of disappointment for gods) and (13) *Arunodak Samudra*

१५. [प्र.] तमुक्काए णं भंते ! किं पुढविपरिणामे, आउपरिणामे, जीवपरिणामे, पोग्गलपरिणामे ?

[उ.] गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि।

१५. [प्र] भगवन् ! क्या तमस्काय पृथ्वी का परिणाम है, जल का परिणाम है, जीव का परिणाम है अथवा पुद्गल का परिणाम है ?

[उ] गौतम ! तमस्काय पृथ्वी का परिणाम नही है, किन्तु जल का परिणाम है, जीव का परिणाम भी है और पुद्गल का परिणाम भी है।

15. [Q.] *Bhante* ! Is *Tamaskaaya* a derivative of earth, a derivative of water, a derivative of *jiva* (life force or soul) or a derivative of matter ?

[Ans.] Gautam ! *Tamaskaaya* is not a derivative of earth, but a derivative of water, a derivative of *jiva* (life force or soul) as well as a derivative of matter

१६. [प्र.] तमुक्काए णं भंते ! सव्वे पाणा भूता जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ?

[उ.] हंता, गोयमा ! असइं, अदुवा अणतखुत्तो, णो चेव ण बादरपुढविकाइयत्ताए वा, बादरअगणिकाइयत्ताए वा।

१६. [प्र] भगवन् ! क्या तमस्काय मे सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्व-पृथ्वीकायिक रूप मे यावत् त्रसकायिक रूप मे पहले उत्पन्न हो चुके है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! (वे सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, तमस्काय मे) अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुके है, किन्तु बादर पृथ्वीकायिक रूप मे या बादर अग्निकायिक रूप मे उत्पन्न नही हुए है।

16. [Q.] *Bhante* ! Have all beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*) been born in *Tamaskaaya* earlier in the form of earth-bodied and so on up to mobile beings many times or infinite times ?

[Ans.] Yes, Gautam ! All these have been born many times or infinite times but never in the form of gross earth-bodies or gross fire-bodies

विवेचन **तमस्काय** का अर्थ-यह अन्धकारमय सघन पुद्गलो का समूह है। तमस्काय उदकरज स्कन्धरूप है। क्योकि जल अप्रकाशक होता है और तमस्काय भी अप्रकाशक है। दोनो (अप्काय और तमस्काय) का समान स्वभाव होने से तमस्काय अप्काय का ही परिणाम है। तमस्काय एकप्रदेश श्रेणीरूप है, इसका अर्थ है कि वह समभित्ति वाली अर्थात् नीचे से लेकर ऊपर तक एक समान भीत रूप श्रेणी है। एक आकाश-प्रदेश की श्रेणीरूप नही। तमस्काय का सस्थान मिट्टी के सकोरे के (मूल का) आकार-सा और ऊपर मुर्गे के पिजरे के जैसा है। वह दो प्रकार का है-सख्येय योजन विस्तृत और असख्येय योजन विस्तृत। पहला जलान्त (जल के ऊपर का स्तर) से प्रारम्भ होकर सख्येय योजन तक फैला हुआ है, दूसरा असख्येय योजन तक विस्तृत और असख्येय द्वीपो को घेरे हुए है। तमस्काय इतना विस्तृत है कि कोई देव ६ महीने तक अपनी उत्कृष्ट शीघ्र दिव्यगति से चले

तो भी वह सख्येय योजन विस्तृत तमस्काय तक पहुँचता है, असख्येय योजन तमस्काय तक पहुँचना बाकी रह जाता है।

तमस्काय मे घर, ग्राम, नगर आदि नही है, किन्त वहाँ बडे-बडे मेघ उठते है, उमडते है, गर्जते है, बरसते है। बिजली भी चमकती है। देव, असुर या नागकुमार ये सब कार्य करते है। विग्रहगतिसमापन्न बादर पृथ्वी या अग्नि को छोडकर तमस्काय मे न बादर पृथ्वीकाय है, न अग्निकाय। तमस्काय मे चन्द्र-सूर्यादि नही है, किन्तु उसके आसपास मे है, उनकी प्रभा तमस्काय मे पडती भी है, किन्तु तमस्काय के परिणाम से परिणत हो जाने के कारण नही जैसी है। तमस्काय काला भयकर काला और रोमहर्षक तथा त्रासजनक है। देवता भी उसे देखकर घबरा जाते है। यदि कोई देव साहस करके उसमे घुस भी जाये तो भी वह भय के मारे कायगति से अत्यन्त तेजी से और मनोगति से अतिशीघ्र बाहर निकल जाता है। तमस्काय पानी, जीव और पुद्गलो का परिणाम है, जलरूप होने के कारण वहाँ बादर वायु, वनस्पति और त्रस जीव उत्पन्न होते है। इनके अतिरिक्त अन्य जीवो का स्वस्थान न होने से उनकी उत्पत्ति तमस्काय मे सम्भव नही है।

कृष्ण विवर के साथ समानता—आधुनिक वैज्ञानिको ने बरमूदा-त्रिकोण (त्रिनिडाड समुद्र तट) के रहस्यमय क्षेत्र मे यात्रा करते हुए जल का एक अत्यन्त सघन काला भयानक पर्वताकार अधकार देखा। उसके निकट जाते ही राडार आदि ने काम करना बन्द कर दिया। जहाज की सब बत्तियाँ बुझ गई। इजन का स्टीम प्रेशर भी खत्म हो गया। वैज्ञानिको ने उस यात्रा का पूरा विवरण दिया है। जो साप्ताहिक हिन्दुस्तान ९ सितम्बर १९७९ मे 'बरमूदा-त्रिकोण नये पुराने कितने कोण' नाम से छपा है। वैज्ञानिको ने इसे कृष्ण विवर नाम दिया है। तमस्काय के उक्त वर्णन से कृष्ण विवर का वर्णन बहुत ही आश्चर्यजनक समानता रखता है। *(विशेष द्रष्टव्य भगवई भाष्य, भाग २ पृष्ठ २७७)*

Elaboration—*Tamaskaaya* means a dense cluster of dark matter particles (*pudgala*) It is formed of water-bodies because water-bodies do not emit light and *Tamaskaaya* too does not As they have same properties it can be inferred that *Tamaskaaya* is a derivative of water-bodies *Tamaskaaya* is a matrix of one space-point depth It has a uniform wall like structure from base to top and not a row of single space-points At the base it is of the shape of the base of a *mallak* (earthen pot of the shape of a conical tumbler) and at the top it is like cage of a cock (square shaped) *Tamaskaaya* is of two kinds—with limited expanse and with unlimited expanse The first starts at water surface and has a spread of countable thousand Yojans The second has a spread of innumerable thousand Yojans and envelopes innumerable continents The expanse of *Tamaskaaya* is so great that a god travelling with his maximum divine speed can cover only the *Tamaskaaya* with countable Yojan expanse and not that with innumerable Yojan expanse

There are no houses, villages or cities in *Tamaskaaya* but gigantic clouds are formed there producing thunder and rain There is lightening also These acts are performed by gods including *Dev*, *Asurs* and *Naag*

Kumars Except for gross earth-bodies and fire-bodies with oblique movement there are no other gross earth-bodies and fire-bodies in *Tamaskaaya* There are no suns, moons or other cosmic bodies within *Tamaskaaya* but there are in its vicinity Their light falls on *Tamaskaaya* but it is reduced to nothing due to its unique properties In appearance *Tamaskaaya* is oppressively black, gruesome and terrifying Even gods are horrified seeing it If by chance a god enters it, he at once rushes out with great speed and mental alacrity *Tamaskaaya* is a derivative of water, *jiva* (life force or soul) and matter Being a form of water it is conducive to origin of gross air-bodies, plant-bodies and mobile beings No other beings are born here because it is hostile to them

Similarity with areas of darkness—Modern scientists observed an intense dark and ominous mountain-like water body while travelling in the mysterious Bermuda triangle area (near Trinidad coast) When they approached this body radar and other instruments stopped functioning All the lights went off and the steam pressure in the engine was reduced to zero Scientists have described that voyage in details An article based on that and titled "*Bermuda Trikone Naye Purane Kitne Kone*" (Bermuda triangle Many angles new and old) was published in *Saptahik Hindustan* (a Hindi weekly) of 9th September 1979 The scientists named it as area of darkness (krishna vivar) The aforesaid description of *Tamaskaaya* has astonishing similarities with that description of area of darkness *(Bhagavai Bhashya, part 2, p 277)*

आठ कृष्णराजियाँ EIGHT KRISHNA-RAJIS

१७. [प्र.] कइ ण भंते ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठ कण्हराईओ पण्त्ताओ।

१७ [प्र] भगवन् ! कृष्णराजियाँ कितनी है ?

[उ] गौतम ! कृष्णराजियाँ आठ है।

17. [Q.] *Bhante* ! How many are the *krishna-rajis* (cluster of darkness or agglomerative entity of earth-derived darkness) ?

[Ans.] Gautam ! There are eight *krishna-rajis*

१८. [प्र.] कहि णं भंते ! एयाओ अट्ठ कण्हराईयो पण्णत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं, हव्विं बंभलोगे कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे, एत्थ णं अक्खाडग-समचउरंसठाणसंठियाओ अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ, तं जहा-पुरत्थिमेणं दो, पच्चत्थिमेणं

दो, दाहिणेणं दो, उत्तरेणं दो। पुरत्थिमऽब्भंतरा कण्हराई दाहिणबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दाहिणऽब्भतरा कण्हराई पच्चत्थिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, पच्चत्थिमऽब्भंतरा कण्हराई उत्तरबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, उत्तरऽब्भंतरा कण्हराई पुरत्थिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। दो पुरत्थिमपच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हराईओ छलंसाओ, दो उत्तरदाहिणबाहिराओ कण्हराईओ तंसाओ, दो पुरत्थिमपच्चत्थिमाओ अब्भिंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ, दो उत्तरदाहिणाओ अब्भिंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ।

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा।

अब्भंतर चउरंसा सव्वा वि य कण्हराईओ॥१॥

१८. [प्र.] भगवन् ! ये आठ कृष्णराजियाँ कहाँ है ?

[उ] गौतम ! ऊपर सनत्कुमार (तृतीय) और माहेन्द्र (चतुर्थ) कल्पो (देवलोको) पर और नीचे ब्रह्मलोक (पचम) देवलोक के अरिष्ट नामक विमान के (तृतीय) पाथडे से नीचे, (अर्थात्) इस स्थान मे, अखाडा (प्रेक्षास्थल) के आकार की समचतुरस्र (सम-चौरस) सस्थान-वाली आठ कृष्णराजियाँ है। यथा-पूर्व मे दो, पश्चिम मे दो, दक्षिण मे दो और उत्तर मे दो। पूर्वाभ्यन्तर अर्थात्-पूर्व दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि दक्षिण दिशा की बाह्य कृष्णराजि से सटी हुई है। दक्षिण दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि ने पश्चिम दिशा की बाह्य कृष्णराजि को स्पर्श किया हुआ है। पश्चिम दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि ने उत्तर दिशा की बाह्य कृष्णराजि को स्पर्श किया हुआ है, और उत्तर दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पूर्व दिशा की बाह्य कृष्णराजि को स्पर्श की हुई है। पूर्व और पश्चिम दिशा की दो बाह्य कृष्णराजियाँ षडश (षट्कोण) है, उत्तर और दक्षिण की दो बाह्य कृष्णराजियाँ त्र्यस्र (त्रिकोण) है, पूर्व और पश्चिम की दो आभ्यन्तर कृष्णराजियाँ चतुरस्र (चतुष्कोण-चौकोन) है, इसी प्रकार उत्तर और दक्षिण की दो आभ्यन्तर कृष्णराजियाँ भी चतुष्कोण है।

[गाथार्थ-] "पूर्व और पश्चिम की कृष्णराजि षट्कोण है, तथा दक्षिण और उत्तर की बाह्य कृष्णराजि त्रिकोण है। शेष सभी आभ्यन्तर कृष्णराजियाँ चतुष्कोण है।" (स्पष्टता के लिए चित्र देखे)

18. [Q.] *Bhante* ! Where are these eight *krishna-rajis* ?

[Ans.] In the space above the Sanatkumar *kalp* (a divine dimension or the third heaven) and the Maahendra kalp (the fourth heaven) and below the celestial vehicle (*vimaan*) named Risht belonging to the Brahmalok *kalp* (the fifth heaven) there are eight *krishna-rajis* resembling the shape (cross section) of a square wrestling arena — two in the east, two in the west, two in the south and two in the north The inner *krishna-raji* of the east touches the outer *krishna-raji* of the south, the inner *krishna-raji* of the south touches the outer *krishna-raji* of the west, the inner *krishna-raji* of the west touches the outer *krishna-raji* of the north, and the inner *krishna-raji* of the north touches the outer *krishna-raji* of the east The two outer *krishna-rajis* of east and west are

hexagonal, the two outer *krishna-rajis* of north and south are triangular, the two inner *krishna-rajis* of east and west are square, and the two inner *krishna-rajis* of north and south are also square

Verse—The outer *krishna-rajis* of east and west are hexagonal and those of north and south are triangular All the inner *krishna-rajis* are square (see the illustration)

१९. [प्र] **कण्हराईओ णं भंते ! केवइय आयामेणं, केवइयं विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ?**

[उ.] **गोयमा ! असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ आयामेण, सखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेण, असंखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ।**

१९. [प्र] भगवन् ! कृष्णराजियो का आयाम-(लम्बाई), विष्कम्भ-(विस्तार-चौडाई) और परिक्षेप-(घेरा = परिधि) कितना है ?

[उ] गौतम ! कृष्णराजियो का आयाम असख्यात हजार योजन है, विष्कम्भ सख्यात हजार योजन है और परिक्षेप असख्यात हजार योजन है।

19. [Q.] *Bhante* ! What is the length (*aayaam*), breadth or spread (*vishkambh*) and circumference (*parikshep*) of the *krishna-rajis* ?

[Ans.] The length (*aayaam*) of the *krishna-rajis* is innumerable thousand Yojans, the breadth or spread (*vishkambh*) is countable thousand Yojans and the circumference (*parikshep*) is innumerable thousand Yojans

२०. [प्र.] **कण्हराईओ णं भंते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ?**

[उ] **गोयमा ! अय णं जबुद्दीवे दीवे जाव अद्धमासं वीतीवएज्जा। अत्थेगइयं कण्हराइं वीतीवएज्जा, अत्थेगइय कण्हराइं णो वीईवएज्जा। एमहालियाओ णं गोयमा ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ।**

२०. [प्र.] भगवन् ! कृष्णराजियाँ कितनी बडी है ?

[उ.] गौतम ! तीन चुटकी बजाये, उतने समय मे इस सम्पूर्ण जम्बूद्वीप की इक्कीस बार परिक्रमा करके आ जाये-इतनी शीघ्र दिव्यगति से कोई देव लगातार एक दिन, दो दिन, यावत् अर्द्ध-मास (१५ दिन) तक चले, तब कही वह देव किसी कृष्णराजि को पार कर पाता है और किसी कृष्णराजि को पार नही कर पाता। गौतम ! कृष्णराजियाँ इतनी बडी है।

20. [Q.] *Bhante* ! How vast are the *krishna-rajis* ?

[Ans.] Gautam ! Suppose a god goes around this Jambudveep 21 times and returns within the time taken in snapping his finger thrice If such a god moves with such great and fast divine speed for one day, two

days, and so on up to a maximum of half a month (15 days) then he is able to cross some *krishna-raji* and unable to cross some *krishna-raji* Gautam ! So large are *krishna-rajis*.

२१. [प्र.] अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु गेहा ति वा, गेहावणा इ वा ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

२२. [प्र.] अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु गामा इ वा ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

२३. [प्र. १] अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु ओराला बलाहया संसेयंति सम्मुच्छंति वासं वासंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

[प्र. २] तं भंते ! किं देवो पकरेइ, असुरो पकरेइ, नागो पकरेइ ?

[उ.] गोयमा ! देवो पकरेइ, नो असुरो, नो नागो य।

२१. [प्र.] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे गृह है अथवा गृहापण है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

२२. [प्र.] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे ग्राम आदि है ?

[उ.] यह अर्थ समर्थ नही है।

२३. [प्र. १] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे उदार (विशाल) महामेघ सस्वेद को प्राप्त होते है, सम्मूर्च्छित होते है और वर्षा बरसाते है ?

[उ. १] हाँ, गौतम ! कृष्णराजियो मे ऐसा होता है।

[प्र. २] भगवन् ! क्या इन सबको देव करता है, असुर (कुमार) करता है अथवा नाग (कुमार) करता है ?

[उ. २] गौतम ! (वहाँ यह सब) देव ही करता है, किन्तु न असुर (कुमार) करता है और न नाग (कुमार) करता है।

21. [Q.] *Bhante* ! Are there houses or shops (*grihapan*) in *krishna-rajis*

[Ans.] Gautam ! It is not so

22. [Q.] *Bhante* ! Are there villages. and so on up to . *sannivesh* (temporary settlement) in *krishna-rajis* ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

23. [Q. 1] *Bhante* ! In *krishna-rajis* do great clouds accumulate moisture, form into rain-clouds and cause shower ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is so

[Q. 2] *Bhante* ! Is it (aforesaid activities of clouds) done by a *Dev*, *Asur* or *Naag* (classes of divine beings) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is done by a *Dev* only and not by an *Asur* or a *Naag*

२४. [प्र] अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु बादरे थणियसद्दे ?

[उ.] जहा ओराला (सु. २३) तहा।

२४. [प्र] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे बादर स्तनित शब्द है ?

[उ] गौतम ! जिस प्रकार उदार मेघो के विषय मे कहा है, उसी प्रकार इनका भी कथन करना चाहिए। (अर्थात्-कृष्णराजियो मे बादर स्तनित शब्द है और उसे देव करता है, किन्तु असुरकुमार या नागकुमार नही करता।)

24. [Q. 1] *Bhante* ! In *krishna-rajis* is there loud thundering sound ?

[Ans.] What has been said about clouds should be repeated here (It is done by a *Dev* only and not by an *Asur* or a *Naag*)

२५. [प्र] अत्थि णं भंते ! कण्हराईसु बादरे आउकाए, बादरे अगणिकाए, बायरे वणस्सइकाए ?

[उ] णो इणट्ठे समट्ठे, णऽण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएण।

२५. [प्र] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे बादर अप्काय बादर अग्निकाय और बादर वनस्पतिकाय है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है। यह निषेध विग्रहगतिसमापन्न जीवो के विषय मे नही है।

25. [Q.] *Bhante* ! Do *krishna-rajis* contain gross (*baadar*) earth-bodies and gross fire-bodies ?

[Ans.] Gautam ! That is not so. However, this negation is not for bodies with oblique movement (*vigrahagati samapanna*)

२६. [प्र.] अत्थि ण भंते ! कण्हराईसु चदिम-सूरिय० ४ ?

[उ.] णो इणट्ठेसयट्ठे।

२७. [प्र] अत्थि णं कण्हराईसु चंदाभा ति वा २?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

२६. [प्र] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे चन्द्रमा, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र और तारारूप है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

२७ [प्र.] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे चन्द्र की कान्ति या सूर्य की कान्ति (आभा) है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

26. [Q.] Do *krishna-rajis* have formations like moon, sun, planets, constellations and stars ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

27. [Q.] *Bhante* ! Do *krishna-rajis* have glow like the moon or the sun ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

२८. [प्र.] कण्हराईओ णं भंते केरिसियाओ वण्णेणं पन्नत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! कालाओ जाव खिप्पामेव वीईवएज्जा।

२८ [प्र] भगवन् ! कृष्णराजियो का वर्ण कैसा है ?

[उ] गौतम ! कृष्णराजियो का वर्ण काला है, यह काली कान्ति वाली है, यावत् परम कृष्ण (एकदम काला) है। तमस्काय की तरह अतीव भयकर होने से इसे देखते ही देव क्षुब्ध हो जाता है, यावत् अगर कोई देव (साहस करके इनमे प्रविष्ट हो जाये, तो भी वह) शीघ्र गति से झटपट इसे पार कर जाता है।

28. [Q.] *Bhante* ! What is the appearance (colour) of *krishna-rajis* ?

[Ans.] Gautam ! In appearance *krishna-rajis* are black . and so on up to deep black They are as horrifying as *Tamaskaaya* and so on up to if a god enters these he rushes out with great speed

२९. [प्र.] कण्हराईणं भंते ! कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हराई इ वा, मेहराई इ वा, मघा इ वा, माघवती इ वा, वातफलिहे इ वा, वातपलिक्खोभे इ वा, देवफलिहा इ वा, देवपलिक्खोभा इ वा।

२९. [प्र] भगवन् कृष्णराजियो के कितने नाम है ?

[उ] गौतम ! कृष्णराजियो के आठ नाम है। यथा–(१) कृष्णराजि, (२) मेघराजि, (३) मघा, (४) माघवती, (५) वातपरिघा, (६) वातपरिक्षोभा, (७) देवपरिघा, और (८) देवपरिक्षोभा।

29. [Q.] *Bhante* ! How many names *krishna-rajis* have ?

[Ans.] Gautam ! *Krishna-rajis* have eight names—(1) *Krishna-raji*, (2) *Megh-raji*, (3) *Maghaa*, (4) *Maaghavati*, (5) *Vaat-parigha*, (6) *Vaat-parikshobh*, (7) *Devaparigha* and (8) *Devaparikshobh*

३०. [प्र.] कण्हराईओ णं भंते ! किं पुढविपरिणामाओ, आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ, पुग्गलपरिणामाओ ?

[उ.] **गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि, पुग्गलपरिणामाओ वि।**

३०. [प्र.] भगवन् ! क्या कृष्णराजियाँ पृथ्वी के परिणामरूप है, जल के परिणामरूप है, या जीव के परिणामरूप है, अथवा पुद्गलो के परिणामरूप है ?

[उ.] गौतम ! कृष्णराजियाँ पृथ्वी के परिणामरूप है, किन्तु जल के परिणामरूप नही है, वे जीव के परिणामरूप भी है और पुद्गलो के परिणामरूप भी है।

30. [Q.] *Bhante* ! Are *krishna-rajis* derivatives of earth, derivatives of water, derivatives of *jiva* (life force or soul) or derivatives of matter ?

[Ans.] Gautam ! *Krishna-rajis* are derivatives of earth and not derivatives of water, but are derivatives of *jiva* (life force or soul) as well as derivatives of matter

३१. [प्र.] कण्हराईसु ण भते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता उववन्नपुव्वा ?

[उ.] हता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं बादरआउकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताइ, बादरवणस्सइकाइयत्ताए वा।

३१. [प्र.] भगवन् ! क्या कृष्णराजियो मे सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व पहले उत्पन्न हो चुके है ?

[उ.] हॉ, गौतम ! सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व कृष्णराजियो मे अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके है, किन्तु बादर अप्काय रूप से, बादर अग्निकाय रूप से और बादर वनस्पतिकाय रूप से उत्पन्न नही हुए है।

31. [Q.] *Bhante* ! Have all beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*) been born earlier in *krishna-rajis* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! All these have been born many times or infinite times but never in the form of gross water-bodies, gross fire-bodies or gross plant-bodies

विवेचन **आठ नामो की व्याख्या—कृष्णराजि** = काले वर्ण की पृथ्वी और पुद्गलो के परिणामरूप होने से काले पुद्गलो की राजि = रेखा। **मेघराजि** = काले मेघ की रेखा के सदृश। **मघा** = छठी नरक के समान अन्धकार वाली। **माघवती** = सातवी नरक के समान गाढान्धकार वाली। **वातपरिघा** = आँधी के समान अन्धकार वाली और दुर्लंघ्य। **वातपरिक्षोभा** = आँधी के समान अन्धकार वाली और क्षोभजनक। **देवपरिघा** = देवो के लिए दुर्लंघ्य खाई के सदृश। **देवपरिक्षोभा** = देवो को क्षुब्ध करने वाली।

Elaboration—The eight names—Krishna-raji=row of black matter particles derived from black earth matter **Megh-raji** = resembling a row of black clouds **Maghaa** = dark like the sixth hell named Maghaa

Maaghavati = intensely dark like the seventh hell **Vaat-parigha** = dark and impassable like a storm **Vaat-parikshobh** = dark and tormenting like a storm. **Devaparigha** = like a gorge impassable even for gods **Devaparikshobh** = tormenting even for gods

३२. एयासिं णं अट्ठण्ह कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तं जहा– अच्ची, अच्चिमाली, वइरोयणे, पभंकरे, चंदाभे, सूराभे, सुक्काभे, सुपतिट्ठाभे, मज्झे रिट्ठाभे।

३२. इन (पूर्वोक्त) आठ कृष्णराजियो के आठ अवकाशान्तरो मे आठ लोकान्तिक विमान है। यथा–(१) अर्चि, (२) अर्चिमाली, (३) वैरोचन, (४) प्रभकर, (५) चन्द्राभ, (६) सूर्याभ, (७) शुक्राभ, और (८) सुप्रतिष्ठाभ। इन सबके मध्य मे रिष्टाभ विमान है।

32. In the eight intervening (*avakashantar*) areas between the (aforesaid) eight *krishna-rajis* there are eight *Lokantik Vimaans* (celestial vehicles at the edge of the universe) — (1) Archi, (2) Archimali, (3) Vairochan, (4) Prabhankar, (5) Chandraabh, (6) Suryaabh, (7) Shukraabh and (8) Supratishtaabh At the center of all these is the Rishtaabh Vimaan

३३. [प्र.] कहि णं भंते ! अच्ची विमाणे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! उत्तरपुरत्थिमेणं।

३४. [प्र.] कहि णं भंते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! पुरत्थिमेणं।

३५. [प्र.] एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव कहि णं भंते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! बहुमज्झदेसभागे।

३३. [प्र.] भगवन् ! अर्चि विमान कहाँ है ?

[उ.] गौतम ! अर्चि विमान उत्तर और पूर्व के बीच मे है।

३४. [प्र.] भगवन् ! अर्चिमाली विमान कहाँ है ?

[उ.] गौतम ! अर्चिमाली विमान पूर्व मे है।

३५. [प्र.] इसी क्रम (परिपाटी) से सभी विमानो के विषय मे जानना चाहिए। यावत्–हे भगवन् ! रिष्ट विमान कहाँ बताया गया है ?

[उ.] गौतम ! रिष्ट विमान बहुमध्यभाग (सबके मध्य) मे है।

33. [Q.] Where is the Archi Vimaan ?

[Ans.] Archi Vimaan is in the north-east

34. [Q.] Where is the Archimali Vimaan ?

[Ans.] Archimali Vimaan is in the east

35. [Q.] In this order the directions of all the Vimaans should be known and so on up to *Bhante* ! Where is the Risht Vimaan ?

[Ans.] Gautam ! Rishtaabh Vimaan is at the center of all these

३६. एएसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति, तं जहा–

सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य॥१॥

३६. इन आठ लोकान्तिक विमानो मे अष्टविध (आठ जाति के) लोकान्तिक देव निवास करते है। जैसे–

(१) सारस्वत, (२) आदित्य, (३) वह्नि, (४) वरुण, (५) गर्दतोय, (६) तुषित, (७) आग्नेय, और (८) रिष्ट देव (बीच मे)।

36. In these eight *Lokantik Vimaans* reside eight classes of Lokantik Devs (gods of the edge of the universe)—

(1) Saarasvat, (2) Aditya, (3) Vahni, (4) Varun, (5) Gardatoya, (6) Tushit, (7) Aagneya and (8) Risht (at the center)

३७. [प्र.] कहि णं भंते ए सारस्सता देवा परिवसंति ?

[उ] गोयमा ! अच्चिम्मि विमाणे परिवसंति।

३८. [प्र] कहि णं भते ! आदिच्चा देवा परिवसति ?

[उ.] गोयमा ! अच्चिमालिम्मि विमाणे०।

३९. [प्र.] एव नेयव्व जहाणुपुव्वीए जाव कहि णं भते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?

[उ.] गोयमा ! रिट्ठम्मि विमाणे।

३७. [प्र.] भगवन् ! सारस्वत देव कहाँ रहते है ?

[उ] गौतम ! सारस्वत देव अर्चि विमान मे रहते है।

३८. [प्र] भगवन् ! आदित्य देव कहाँ रहते है ?

[उ] गौतम ! आदित्य देव अर्चिमाली विमान मे रहते है।

३९. [प्र.] इस प्रकार अनुक्रम से यावत् रिष्ट विमान तक जान लेना चाहिए कि भगवन् ! रिष्ट देव कहाँ रहते है ?

[उ.] गौतम ! रिष्ट देव रिष्ट विमान मे रहते है।

37. [Q.] *Bhante* ! Where do the Saarasvat Devs live ?

[Ans.] Gautam ! Saarasvat Devs live in the Archi Vimaan

38. [Q.] *Bhante* ! Where do the Aditya Devs live ?

[Ans.] Gautam ! Aditya Devs live in the Archimali Vimaan

39. [Q.] In this order the *vimaans* of all the (aforesaid) gods should be known. and so on up to *Bhante* ! Where do the Risht Devs live ?

[Ans.] Gautam ! Risht Devs live in the Risht Vimaan

४०. [प्र. १] सारस्सय–माइच्चाणं भंते ! देवाणं कइ देवा, कइ देवसया पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो पण्णत्तो।

[२] वण्ही–वरुणाणं देवाणं चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो।

[३] गद्दतोय–तुसियाणं देवाणं सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो।

[४] अवसेसाण नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्ता।

पढमजुगलम्मि सत्त उ सयाणि बीयम्मि चोद्दस सहस्सा।
ततिए सत्त सहस्सा नव चेव सयाणि सेसेसु॥ ३॥

४०. [प्र १] भगवन् ! सारस्वत और आदित्य, इन दो देवो के कितने देव है और कितने सौ देवो का परिवार है ?

[उ.] गौतम ! सारस्वत और आदित्य, इन दो देवो के सात देव (स्वामी) है और इनके ७०० देवो का परिवार है।

[२] वह्नि और अरुण, इन दो देवो के १४ देव स्वामी और १४ हजार देवो का परिवार है।

[३] गर्दतोय और तुषित देवो के ७ देव स्वामी और ७ हजार देवो का परिवार है।

[४] शेष (अव्याबाध, आग्नेय और रिष्ट, इन) तीनो देवो के नौ देव स्वामी और ९०० देवो का परिवार है।

(गाथार्थ–) प्रथम युगल मे ७००, दूसरे युगल मे १४,००० देवो का परिवार, तीसरे युगल मे ७,००० देवो का परिवार और शेष तीन देवो के ९०० देवो का परिवार है।

40. [Q. 1] *Bhante* ! How many are the divine overlords and families of divine subjects among the gods of the two classes Saaraswat and Aditya ?

[Ans.] Gautam ! In the two classes Saaraswat and Aditya there are seven overlord gods and a family of 700 gods

[2] In the two classes Vahni and Varun there are fourteen overlord gods and a family of 14, 000 gods.

[3] In the two classes Gardatoya and Tushit there are seven overlord gods and a family of 7000 gods

[4] In the remaining three classes (Avyabadh, Agneya and Risht) there are nine overlord gods and a family of 900 gods

Verse—First pair has family of 700 gods, second pair has that of 14000 gods, third pair has that of 7000 gods, and the remaining three classes has family of 900 gods

४१. [प्र १] लोगतियविमाणा ण भंते ! किंपइट्ठिआ पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! वाउपइट्ठिया पण्णत्ता।

४१. [प्र. १] भगवन् ! लोकान्तिक विमान किसके आधार पर (स्थित) है ?

[उ] गौतम ! लोकान्तिक विमान वायुप्रतिष्ठित (वायु के आधार पर रहे हुए) है।

41. [Q. 1] *Bhante* ! On what rest *Lokantik Vimaans* ?

[Ans.] Gautam ! *Lokantik Vimaans* rest on air

[२] एवं नेयव्वं-'विमाणाणं पइट्ठाणं बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं', बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा जाव हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए।

[२] इस प्रकार-जिस तरह विमानो का प्रतिष्ठान, विमानो का बाहल्य, विमानो की ऊँचाई और विमानो के सस्थान आदि का वर्णन, जीवाभिगमसूत्र के देव-उद्देशक मे ब्रह्मलोक की वक्तव्यता मे कहा है, तदनुसार यहाँ भी कहना चाहिए, यावत्-हाँ, गौतम ! सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व यहाँ अनेक बार और अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुके है, किन्तु लोकान्तिक विमानो मे देवरूप मे उत्पन्न नही हुए।

[2] In the same way the details about the situation (*pratishthaan*), dimensions, height and structure etc should be mentioned according to that about Brahmalok given in the chapter titled *Dev* in *Jivabhigam Sutra* and so on up to Gautam ! All beings (*praan*), organisms (*bhoot*), souls (*jiva*), and entities (*sattva*) have been born many times or infinite times but never in the form of divine beings in the *Lokantik Vimaans*

४२. [प्र.] लोगंतिगविमाणेसु लोगंतियदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

४२. [प्र.] भगवन् ! लोकान्तिक विमानो मे देवो की कितने काल की स्थिति है ?

[उ.] गौतम ! लोकान्तिक विमानो मे आठ सागरोपम की स्थिति है।

42. [Q.] *Bhante* ! What is the life-span of gods in *Lokantik Vimaans* ?

[Ans.] Gautam ! The life-span of gods in *Lokantik Vimaans* is eight *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

४३. [प्र.] लोगंतियविमाणेहिं णं भंते ! केवइयं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति.।

॥ छट्ठ सए : पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥

४३. [प्र.] भगवन् ! लोकान्तिक विमानो से लोकान्त कितना दूर है ?

[उ.] गौतम ! लोकान्तिक विमानो से असख्येय हजार योजन दूर लोकान्त है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है,' इस प्रकार कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरण करने लगे।

43. [Q.] *Bhante* ! How far is the edge of the universe from the *Lokantik Vimaans* ?

[Ans.] Gautam ! The edge of the universe is innumerable thousand Yojans away from the *Lokantik Vimaans*

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so "With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन सूत्र १ से १६ तक तमस्काय का वर्णन है, तथा १७ से ४३ तक कृष्णराजि का। दोनो मे कुछ समानताएँ है, कुछ भिन्नताएँ है।

समानता निम्न है–(१) दोनो का वर्ण काला, भयजनक परम कृष्ण है।

(२) दोनो मे ही रिक्त स्थान है, वहाँ घर है, न ही ग्राम आदि।

भिन्नताएँ–(१) दोनो का परिमाण तथा परिधि भिन्न-भिन्न है।

(२) तमस्काय मुख्य रूप से अप्कायिक (जल) है, जबकि कृष्णराजि मुख्यत पृथ्वीकायिक (पृथ्वी) है।

(३) तमस्काय मे बादर पृथ्वीकाय, बादर अग्निकाय नही है। कृष्णराजि मे बादर अप्काय, बादर अग्निकाय और बादर वनस्पतिकाय नही है।

लोकान्तिक देव ब्रह्मलोक नामक पचम देवलोक के पास लोक के किनारे पर रहते है, इसलिए इन्हे लोकान्तिक कहते है। अथवा ये ससार रूप लोक के अन्त (करने मे) करने मे निकट है, क्योकि ये सब स्वामी देव एकभवावतारी (एक भव के पश्चात् मोक्षगामी) होते है, इसलिए भी इन्हे लोकान्तिक कहते है।

इन विमानो का वर्ण लाल, पीला और श्वेत होता है, ये प्रकाशयुक्त, इष्ट वर्ण-गन्धयुक्त एव सर्वरत्नमय होते है। इन विमानो के निवासी देव समचतुरस्र सस्थान वाले, पद्मलेश्यायुक्त एव सम्यग्दृष्टि होते है। (जीवाभिगमसूत्र द्वितीय वैमानिक उद्देशक)

॥ छठा शतक · पंचम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Aphorisms 1 to 16 contain information about *Tamaskaaya* and aphorisms 17 to 43 about *krishna-rajis*. These two have some similarities and some differences—

Similarities—(1) The appearance of both is black, terrifying pitch black (2) Both have only empty space where neither houses nor inhabited places exist

Differences—(1) The spread and circumferences of the two differ (2) *Tamaskaaya* is mainly *apkaayik* (water-bodied) and *krishna-rajis* are mainly *prithvi-kaayik* (earth-bodied) (3) *Tamaskaaya* does not contain gross earth-bodies and gross fire-bodies *Krishna-rajis* do not contain gross water-bodies, gross fire-bodies and gross plant-bodies

Lokantik gods live at the edge of the universe (*lokant*) near the fifth divine realm called Brahmalok, that is why they are called *Lokantik* Also, the overlords of these gods are destined to be liberated after just one rebirth Thus they are about to end the cycles of rebirth in the *Lok* That is another reason they are called *Lokantik*

The colour of these *vimaans* is red, yellow and white They are illuminated, have pleasant appearance and smell and are embellished with all kinds of gems The gods residing there have perfect body constitution (*sam-chaturasra samsthan*), *Padma leshya* (yellow soul-complexion) and are righteous (*Jivabhigam Sutra, chapter 2, Vaimanik*)

● END OF THE FIFTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : छठा उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : SIXTH LESSON

भव्य BHAVYA (WORTHY OF LIBERATION)

पृथ्वियाँ और अनुत्तर विमान **HELLS AND ANUTTAR VIMAAN**

१. [प्र. १] कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–रयणप्पभा जाव तमतमा।

१. [प्र १] भगवन् ! पृथ्वियाँ कितनी है ?

[उ] गौतम ! पृथ्वियाँ सात है। यथा–रत्नप्रभा यावत् [शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा] तमस्तम प्रभा।

1. [Q. 1] *Bhante* ! How many hells (*prithvi*) are there ?

[Ans.] Gautam ! There are seven hells—Ratnaprabha and so on up to (Sharkaraprabha, Balukaprabha, Pankaprabha, Dhoom-prabha, Tamah-prabha and) Tamstamah-prabha

[२] रयणप्पभाईणं आवासा भाणियव्वा जाव अहेसत्तमाए। एवं जे जत्तिया आवासा ते भाणियव्वा जाव।

[२] रत्नप्रभा पृथ्वी से लेकर अध सप्तमी (तमस्तम प्रभा) पृथ्वी तक, जिस पृथ्वी के जितने आवास हो, उतने कहने चाहिए यावत्।

[2] From Ratnaprabha Prithvi to Adhah-saptami (Tamstamah-prabha) the number of abodes in each hell respectively should be mentioned

२. [प्र.] कइ णं भते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तं जहा–विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे।

२. [प्र.] भगवन् ! अनुत्तर विमान कितने है ?

[उ.] गौतम ! पाँच अनुत्तरविमान है। यथा–विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध विमान।

2. [Q.] *Bhante* ! How many Anuttar Vimaans are there ?

[Ans.] Gautam ! There are five Anuttar Vimaans (matchless celestial vehicles or divine realms)—Vijaya, Vaijayant, Jayant, Aparajit and Sarvarthasiddha Vimaan

३. [प्र.] जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा ?

[उ.] गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा, अत्थेगइए तओ पडिनियत्तित्ता, इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्चं पि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए तओ पच्छा आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा। एवं जाव अहेसत्तमा पुढवी।

३. [प्र.] भगवन् ! जो जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुआ (समुद्घात किया) है और समवहत होकर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नारकावासो मे से किसी एक नारकावास मे नैरयिक रूप मे उत्पन्न होने के योग्य है, भगवन् ! क्या वह वहाँ जाकर आहार करता है ? आहार को परिणमाता है ? और शरीर बॉधता है ?

[उ.] गौतम ! कोई जीव वहाँ जाकर ही आहार करता है, आहार को परिणमाता है या शरीर बाँधता है, और कोई जीव वहाँ जाकर वापस लौटता है, वापस लौटकर यहॉ आता है। यहॉ आकर वह फिर दूसरी बार मारणान्तिक समुद्घात द्वारा समवहत होता है। समवहत होकर इस रत्नप्रभापृथ्वी के तीस लाख नारकावासो मे से किसी एक नारकावास मे नैरयिक रूप से उत्पन्न होता है। इसके पश्चात् आहार ग्रहण करता है, परिणमाता है और शरीर बॉधता है। इसी प्रकार यावत् अध सप्तमी (तमस्तम प्रभा) पृथ्वी तक कहना चाहिए।

3. [Q.] *Bhante* ! When a soul (*jiva*) having undergone *maranantik samudghat* (bursting forth of some soul-space-points before the moment of death) is destined to be born as an infernal being in any one of the three million hell-abodes, on reaching there does this soul have food intake, does it transform that food and does it take a body ?

[Ans.] Gautam ! On reaching there, some soul (*jiva*) has food intake, it transforms that food and it takes a body, while some other soul goes there, returns and once again undergoes *maranantik samudghat* After this it is born as an infernal being in any one of the three million hell-abodes After that it has food intake, it transforms that food and it takes a body The same should be repeated for all hells up to Adhah-saptami (Tamstamah-prabha)

४. [प्र.] जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए।

[उ.] जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा।

४. [प्र.] भगवन् ! जो जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुआ है और समवहत होकर असुरकुमारो के चौसठ लाख आवासो मे से किसी एक आवास मे उत्पन्न होने के योग्य है, क्या वह जीव वहाँ जाकर ही आहार करता है ? उस आहार को परिणमाता है और शरीर बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार नैरयिको के विषय मे कहा, उसी प्रकार असुरकुमारो के विषय मे, यावत् स्तनितकुमारो तक कहना चाहिए।

4. **[Q.]** *Bhante* ! When a soul (*jiva*) having undergone *maranantik samudghat* is destined to be born as a divine being in any one of the 6 4 million abodes of Asur Kumar gods, on reaching there does this soul have food intake, does it transform that food and does it take a body ?

[Ans.] Gautam ! What has been stated about infernal beings should be repeated for Asur Kumar gods and so on up to Stanit Kumar gods

५. [प्र. १] जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं केवइयं गच्छेज्जा, केवइयं पाउणेज्जा ?

[उ.] गोयमा ! लोयंतं गच्छेज्जा, लोयंतं पाउणिज्जा।

५. [प्र. १] भगवन् ! जो जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुआ है, और समवहत होकर असख्येय लाख पृथ्वीकायिक आवासो मे से किसी एक पृथ्वीकायिक आवास मे पृथ्वीकायिक रूप से उत्पन्न होने के योग्य है, भगवन् ! वह जीव मदर (मेरु) पर्वत से पूर्व मे कितनी दूर जाता है ? और कितनी दूरी को प्राप्त करता है ?

[उ.] हे गौतम ! वह लोकान्त तक जाता है और लोकान्त को प्राप्त करता है।

5. **[Q. 1]** *Bhante* ! When a soul (*jiva*) having undergone *maranantik samudghat* is destined to be born as a divine being in any one of the innumerable million abodes of earth-bodied beings, *Bhante* ! What distance to the east of Mandar (Meru) mountain does it cover and how far does it reach ?

[Ans.] Gautam ! It goes up to the edge of the universe (*Lokaant*) and reaches the edge of the universe

[प्र. २] से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा ?

[उ] गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्ज, अत्थेगइए तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्चं पि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तं वा संखेज्जइभागमेत्तं वा, वालग्गं वा, वालग्गपुहुत्तं वा एव लिक्ख जूयं जवं अंगुलं जाव जोयणकोडिं वा, जोयणकोडाकोडिं वा, संखेज्जेसु वा असंखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगते वा एगपएसियं सेढिं मोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससहसहस्सेसु अन्नयरसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा।

[३] जहा पुरत्थिमेणं मंदरस्स पव्वयस्स आलावगो भणिओ एवं दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं, उड्ढे, अहे।

[प्र २] भगवन् ! क्या पृथ्वीकायिक जीव, वहाँ जाकर ही आहार करता है, आहार को परिणमाता है और शरीर बाँधता है ?

[उ] गौतम ! कोई जीव, वहाँ जाकर ही आहार करता है। उस आहार को परिणमाता है और शरीर बाँधता है, और कोई जीव वहाँ जाकर वापस लौटता है, वापस लौटकर यहाँ आता है, यहाँ आकर फिर दूसरी बार मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होता है। समवहत होकर मेरु पर्वत के पूर्व मे अगुल के असख्येय भागमात्र, या सख्येय भागमात्र, या बालाग्र, अथवा बालाग्र पृथक्त्व (दो से नौ तक बालाग्र), इसी तरह लीख, जूँ, यव, अगुल यावत् कोटि योजन, कोटाकोटि योजन, सख्येय हजार योजन और असख्येय हजार योजन मे, अथवा एक प्रदेशात्मक श्रेणी को छोडकर लोकान्त मे पृथ्वीकाय के असख्य लाख आवासो मे से किसी आवास मे पृथ्वीकायिक रूप से उत्पन्न होता है और उसके पश्चात् आहार करता है, उस आहार को परिणमाता है और शरीर बाँधता है।

[३] जिस प्रकार मेरु पर्वत की पूर्व दिशा के विषय मे कथन किया गया है, उसी प्रकार से दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्व और अधोदिशा के सम्बन्ध मे कहना चाहिए।

[Q. 2] *Bhante* ! On reaching there does this earth-bodied being have food intake, does it transform that food and does it take a body ?

[Ans.] Gautam ! On reaching there some soul (*jiva*) has food intake, it transforms that food and it takes a body While some other soul goes there, returns and once again undergoes *maranantik samudghat* After this it is born as an earth-bodied being in any one of the innumerable million abodes of earth-bodied beings to the east of Meru mountain located at a distance of innumerable fraction of an Angul, or countable fraction of an Angul, or Baalaagra (hair-tip), or Baalaagra *prithakatva* (two to nine Baalaagras), or Leekh, or Joon, or Yava, or Angul and so on up to billion Yojans, or billion-billion Yojans or at Lokaant except for

a single space-point row After that it has food intake, it transforms that food and it takes a body

[3] What has been stated for the area east of Meru mountain should be repeated for south, west, north, above and below of Meru mountain

६. जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा।

६. जिस प्रकार पृथ्वीकायिक जीवो के विषय मे कहा है, उसी प्रकार से सभी एकेन्द्रिय जीवो के विषय मे कहना चाहिए। एक-एक के छह-छह आलापक कहने चाहिए।

6. What has been said about earth-bodied beings should be repeated for all one-sensed beings Six statements each

७. [प्र] जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहइ, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेइदियावाससयसहस्सेसु अन्नतरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते तत्थगते चेव० !

[उ] जहा नेरइया। एवं जाव अणुत्तरोववाइया।

७. [प्र] भगवन् ! जो जीव, मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुआ है और समवहत होकर द्वीन्द्रिय जीवो के असख्येय लाख आवासो मे से किसी एक आवास मे द्वीन्द्रिय रूप मे उत्पन्न होने वाला है, भगवन् ! क्या वह जीव वहाँ जाकर ही आहार करता है, उस आहार को परिणमाता है, और शरीर बाँधता है ?

[उ] गौतम ! जिस प्रकार नैरयिको के लिए कहा गया, उसी प्रकार द्वीन्द्रिय जीवो से लेकर अनुत्तरौपपातिक देवो तक सब जीवो के लिए कथन करना चाहिए।

7. [Q.] When a soul (*jiva*) having undergone *maranantik samudghat* is destined to be born as a two-sensed being in any one of the innumerable million abodes, on reaching there does this soul have food intake, does it transform that food and does it take a body ?

[Ans.] What has been said about infernal beings should be repeated for all beings starting from two-sensed beings and so on up to Anuttaropapatik gods

८. [प्र.] जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए एवं पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अन्नयरंसि अनुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते तत्थगए चेव !

[उ.] तं चेव जाव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।

॥ छट्ठे सए : छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

८. [प्र.] हे भगवन् ! जो जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत हुआ है और समवहत होकर सबसे महान् महाविमानरूप पच अनुत्तरविमानो मे से किसी एक अनुत्तर विमान मे अनुत्तरौपपातिक देवरूप मे उत्पन्न होने वाला है, क्या वह जीव वहाँ जाकर ही आहार करता है, आहार को परिणमाता है और शरीर बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! पहले कहा गया है, उसी प्रकार कहना चाहिए यावत् आहार करता है, उसे परिणमाता है और शरीर बाँधता है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् । यह इसी प्रकार है', ऐसा कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरण करते है।

8. **[Q.]** When a soul (*jiva*) having undergone *maranantik samudghat* is destined to be born as an Anuttaropapatik god in any one of the five great celestial vehicles called Anuttaropapatik Vimaans, on reaching there does this soul have food intake, does it transform that food and does it take a body ?

[Ans.] Gautam ! It is as stated before and so on up to it has food intake, it transforms that food and it takes a body

"Bhante ! Indeed that is so Indeed that is so "With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन निष्कर्ष–एक जीवन मे मारणान्तिक समुद्घात (मरण के समय होने वाली आत्मा की उग्र क्रिया) का प्रयोग दो बार होता है-(१) कुछ जीव मारणातिक समुद्घात का प्रयोग करके अपने उत्पत्तिस्थान पर जन्म ले लेते है। जो जीव मारणान्तिक समुद्घात करके नरकावासादि मे अपने आगामी उत्पत्तिस्थान पर जाते है, उस काल मे उनमे से कोई एक जीव, जो समुद्घात-काल मे ही मरण प्राप्त हो जाता है, वह वहाँ मारणान्तिक समुद्घात करके पुन उत्पत्तिस्थान पर आता है, फिर आहारयोग्य पुद्गलो को ग्रहण करता है, तत्पश्चात् ग्रहण किये हुए उन पुद्गलो को पचाकर उनका खलरूप और रसरूप विभाग करता है। फिर पुद्गलो से शरीर की रचना करता है।

द्वीन्द्रिय आदि जीवो के आवासस्थान लोक के एक भाग मे है। एकेन्द्रिय के आवासस्थान सम्पूर्ण लोक मे है। इसलिए वे जीव लोकान्त तक उत्पन्न होते है। प्रत्येक जीव का आकाश के असख्य प्रदेशो मे अवगाहन होता है। इसलिए वह एक प्रदेशात्मक आकाश श्रेणी को छोडकर अनेक प्रदेशात्मक-असख्य प्रदेशात्मक आकाश श्रेणी मे उत्पन्न होता है। *(वृत्ति पत्राक २७३-२७४)*

॥ छठा शतक छठा उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Conclusion—In one rebirth a soul may undergo *maranantik samudghat* (bursting forth of some soul-space-points before the moment of death) twice After *maranantik samudghat* some souls (*jiva*) take rebirth at their destined place including infernal abodes Out

of these some soul goes there, returns and once again undergoes *maranantik samudghat* to be born at the destined place After that it acquires suitable particles as food, transforms these particles into digestible solids and liquids, and finally forms its body with these particles

The abodes of two sensed and higher beings are only in a portion of Lok (occupied space) whereas those of one-sensed beings are in the whole Lok That is why these beings are born right up to Lokaant (the edge of the universe) Every single being occupies innumerable space-points and therefore it takes birth in areas of innumerable space-point dimension and not those with single space-point dimension *(Vritti, leaves 273-274)*

● END OF THE SIXTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : सप्तम उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : SEVENTH LESSON

'शाली' SHAALI (PADDY)

धान्यो की योनि–स्थिति SPROUTING OF CORN

१. [प्र.] अह णं भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाण, जवाणं, जवजवाणं, एएसि ण धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताण लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धसति, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणिवोच्छेदे पन्नत्ते समणाउसो !

१. [प्र.] भगवन् ! **शाली** (कमल आदि श्रेष्ठ जाति का चावल), **व्रीहि** (सामान्य चावल), **गोधूम** (गेहूँ), **यव** (जौ) तथा **यवयव** (विशिष्ट प्रकार का जौ = जई धान्य) इत्यादि धान्य कोठे मे सुरक्षित रखे हो, बाँस के **पल्ले** (छबडे), **मच** (मचान) पर रखे हो, माल मे डालकर रखे हो, (बर्तन मे डालकर) गोबर से उनके मुख **उल्लिप्त** (विशेष प्रकार से लीपे हुए) हो, लिप्त हो, ढँके हुए हो, मिट्टी आदि से उन बर्तनो के मुख मुद्रित हो, (उनके मुँह बन्द करके) लाछित (सील लगाकर चिन्हित) किये हुए हो, (इस प्रकार सुरक्षित किये हुए हो) तो उन (धान्यो) की योनि (अकुरोत्पादक शक्ति) कितने काल तक रहती है ?

[उ] हे गौतम ! उनकी योनि कम से कम अन्तर्मुहूर्त्त तक और अधिक से अधिक तीन वर्ष तक रहती है। उसके पश्चात् उन (धान्यो) की योनि म्लान हो जाती है, विध्वस को प्राप्त हो जाती है, फिर वह बीज, अबीज हो जाता है। इसके पश्चात् हे आयुष्मान् श्रमण ! उस योनि का विच्छेद हो जाता है।

1. [Q.] *Bhante* ! Say there are corns including *shali* (fine paddy), *brihi* (coarse paddy), *godhoom* (wheat), *yav* (barley) and *yav-yav* (special variety of barley, also called *jayi*) stored safely in a barn, a basket, a loft after being filled in large containers covered and sealed after properly besmearing and plastering with clay and cow-dung How long does the sprouting capacity (*yoni*) of these secured corns remain intact ?

[Ans.] Gautam ! The sprouting capacity of these remains intact for a minimum period of Antar-muhurt (less than 48 minutes) and a maximum period of three years After that this capacity of these corns fades and gets destroyed to make that seed a non-seed After that, O long lived *Shraman*, that sprouting capacity ends

२. [प्र.] अह भंते ! कलाय–मसूर–तिल–मुग्ग–मास–निप्फाव–कुलत्थ–आलिसंदग–सईण–पलिमंथगमाईणं एएसिं णं धन्नाणं० ?

[उ.] जहा सालीणं तहा एयाण वि, नवरं पंच संवच्छराइं। सेसं तं चेव।

२. [प्र.] भगवन् ! कलाय, मसूर, तिल, मूँग, उडद, बाल (बालोर), कुलथ, आलिसन्दक (एक प्रकार का चवला), सतीण (अरहर), पलिमथक (गोल चना या काला चना) इत्यादि (धान्य पूर्वोक्त रूप से कोठे आदि मे रखे हुए हो तो इन) धान्यो की (योनि कितने काल तक कायम रहती है ?)

[उ] गौतम ! जिस प्रकार शाली धान्य के विषय मे कहा, उसी प्रकार इन धान्यो के लिए भी कहना चाहिए। विशेषता इतनी ही है कि यहाँ उत्कृष्ट पाँच वर्ष कहना चाहिए। शेष सारा वर्णन उसी तरह है।

2. [Q.] *Bhante* ! For how long the aforesaid capacity of pulses including *Kalaaya*, *Masoor* (a small-grained pulse, Lens esculenta), *Til* (sesame seed), *Moong* (green gram), *Urad* (a pulse, Phaseolus mungo), *baal* or *Balor* (a bean, Canavalia gladiata and Canavalia ensiformis), *Kulath* (a kind of gray or black gram, Dolichos biflorus), *Aalisandak* (a kind of bean), *Satina* or *Arahar* (a type of pulse, Cajamus Indicus), *Palimanthak* (round or black gram) lasts (if they are safely stored as aforesaid) ?

[Ans.] Gautam ! As has been stated about *shali* or corns so should be repeated for these pulses The only difference being that in this case the maximum period is five years Remaining details are same

३. [प्र.] अह भंते ! अयसि–कुसुंभग–कोद्दव–कंगु–वरग–रालग–कोदूसग–सण–सरिसव–मूलगबीयमाईणं एएसिं णं धन्नाण० ?

[उ] एयाणि वि तहेव, नवरं सत्त संवच्छराइं। सेसं तं चेव।

३. [प्र.] हे भगवन् ! अलसी, कुसुम्भ, कोद्रव (कोदो) कागणी, बरट (बटी), राल, सण, सरसो, मूलक बीज (एक जाति के शाक के बीज) आदि धान्यो की योनि कितने काल तक कायम रहती है ?

[उ] गौतम ! उसी प्रकार इन धान्यो के लिए भी कहना चाहिए। विशेषता इतनी ही है कि इनकी योनि उत्कृष्ट सात वर्ष तक रहती है। शेष वर्णन पूर्ववत् समझ लेना चाहिए।

3. [Q.] *Bhante* ! For how long the aforesaid capacity of seeds including *Alasi* (linseed, Linum Usita-tssium), *Kusumbh*, *Kodrav* or *Kodon* (Paspalum scrobiculum), *Kaangani* (a millet, Setaria italica), *Barat* or *Bunty*, *Raal*, *Sarason* (mustard), and *Moolak beej* lasts (if they are safely stored as aforesaid) ?

[Ans.] Same as aforesaid (aphorism 2) The only difference being that in this case the maximum period is seven years Remaining details are same

गणनीय काल मुहूर्त का मान **MEASURABLE TIME MUHURT**

४. [प्र.] एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया ऊसासद्धा वियाहिया ?

[उ.] गोयमा ! असंखेज्जाण समयाण समुदय–समिति–समागमेणं सा एगा आवलिय त्ति पवुच्चइ, संखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलिया निस्सासो।

हट्ठस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स जंतुणो।
एगे ऊसासनीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चइ॥१॥

सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे।
लवाणं सत्तहत्तरिए एस मुहुत्ते वियाहिए॥२॥

तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा।
एस मुहुत्तो दिट्ठो सव्वेहिं अणंतनाणीहिं॥३॥

४. [प्र.] भगवन् ! एक-एक मुहूर्त्त के कितने उच्छ्वास होते है ?

[उ.] गौतम ! असख्यात समय मिलकर जितना काल होता है, उसे एक **'आवलिका'** कहते है। सख्येय आवलिका का एक 'उच्छ्वास' होता है और सख्येय आवलिका का एक 'नि श्वास' होता है।

4. [Q.] *Bhante* ! How many *Uchchhavaases* are there in each *Muhurt* ? (Or how many *Uchchhavaases* make a *Muhurt* ?)

[Ans.] Gautam ! Innumerable *Samayas* (the smallest indivisible unit of time, something even beyond nanosecond) make one *Avalika* Countable *Avalikas* make one *Uchchhavaas* (time taken for one inhalation) and countable *Avalikas* make one *Nihshvaas* (time taken for one inhalation)

[गाथाओ का अर्थ–] (१) हृष्ट–पुष्ट, वृद्धावस्था और व्याधि से रहित मानसिक सक्लेश (टेशन) से रहित प्राणी का एक उच्छ्वास और एक नि श्वास-(ये दोनो मिलकर) एक **'प्राण'** कहलाते है। (२) सात प्राणो का एक **'स्तोक'** होता है। सात स्तोको का एक **'लव'** होता है। ७७ लवो का एक मुहूर्त्त कहा गया है। (३) अथवा ३,७७३ उच्छ्वासो का एक मुहूर्त्त होता है, ऐसा समस्त अनन्तज्ञानियो ने देखा है।

Verses—(1) One inhalation (*Uchchhavaas*) and one exhalation of a healthy, young, person free of any disease or stress make one *Praan* (2) Seven *Praans* make one *Stoka* Seven *Stokas* make one *Lava* and 77 *Lavas* make one *Muhurt* Also 3773 *Uchchhavaasas* make one *Muhurt* Such *Muhurt* has been seen by all sages possessing infinite knowledge

५. एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा ऊऊ, तिण्णि उऊ अयणे, दो अयणा संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससतसहस्सं, चउरासीइं वाससतसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीइं पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडिअंगे तुडिए, अडडंगे अडडे, अववंगे अववे, हूहूअंगे हूहूए, उप्पलंगे उप्पले, पउमंगे पउमे, नलिणंगे नलिणे, अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे, अउअंगे अउए, पउअंगे पउए य, नउअंगे नउए य, चूलिअंगे चूलिआ य, सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिया। एताव ताव गणिए। एताव ताव गणियस्स विसए। तेण परं ओवमिए।

५. इस मुहूर्त्त के अनुसार तीस मुहूर्त्त का एक 'अहोरात्र' होता है। पन्द्रह अहोरात्र का एक 'पक्ष', दो पक्षो का एक 'मास', दो मासो की एक 'ऋतु', तीन ऋतुओ का एक 'अयन', दो अयन का एक 'सवत्सर' (वर्ष), पॉच सवत्सर का एक 'युग', बीस युग का एक 'वर्षशत' (सौ वर्ष) है, दस वर्षशत का एक 'वर्षसहस्र' (एक हजार वर्ष), सौ वर्ष सहस्रो का एक 'वर्षशतसहस्र' (एक लाख वर्ष), ८४ लाख वर्षो का एक 'पूर्वाग'। ८४ लाख पूर्वाग का एक 'पूर्व', ८४ लाख पूर्व का एक 'त्रुटिताग' और ८४ लाख त्रुटिताग का एक 'त्रुटित' होता है। इस प्रकार पहले की राशि को ८४ लाख से गुणा करने से उत्तरोत्तर राशियॉ बनती है। वे इस प्रकार है–अटटाग, अटट, अववाग, अवव, हूहूकाग, हूहूक, उत्पलाग, उत्पल, पद्माग, पद्म, नलिनाग, नलिन, अर्थनुपूराग, अर्थनुपूर, अयुताग, अयुत, प्रयुताग, प्रयुत, नयुताग, नयुत, चूलिकाग, चूलिका, शीर्षप्रहेलिकाग और शीर्षप्रहेलिका। इस सख्या तक गणित है। यह गणित का विषय है। इसके बाद औपमिक काल है (उपमा का विषय है–उपमा द्वारा जाना जाता है, गण्ति (गणना) का नही)।

5. 30 such *Muhurts* make one *Ahoratra* (day and night) 15 *Ahoratras* make one *Paksha* 2 *Pakshas* make one *Maas* (30 days or a month) 2 *Maases* make one *Ritu* (season) 3 *Ritus* make one *Ayan* (the time from one solstice to another, 6 months) 2 *Ayans* make one *Samvatsar* (year) 5 *Samvatsars* make one *Yug* 20 *Yugs* make one *Varshashat* (century) 10 *Varshashat* make one *Varshasahasra* (millennium) 100 *Varshasahasra* make one *Varshashatsahasra* (one hundred thousand years) 8 4 million *Varsh* make one *Purvanga* 8 4 million *Purvangas* make one *Purva* 8 4 million *Purvas* make one *Trutitanga* 8 4 million *Trutitanga* make one *Trutit* In the same way multiplying the preceding unit by 8.4 million gives the following units that are — *Adadanga, Adada, Avavanga, Avava, Huhukanga, Huhuka, Utpalanga, Utpala, Padmanga, Padma, Nalinanga, Nalina, Arthanupuranga, Arthanupura, Ayutanga, Ayut, Prayutanga, Prayuta, Nayutanga, Nayuta, Chulikanga, Chulika, Sheershaprahelikanga,* and *Sheershaprahelika* (a number having 194 digits). This is the point up to which arithmetic is applicable Up to this

point is the subject of arithmetic After this comes metaphoric time (expressed through metaphors not numerals or arithmetic)

विवेचन **गणनीय काल**—मुहूर्त्त से लेकर शीर्ष-प्रहेलिकापर्यन्त गणितयोग्य काल है। काल का सूक्ष्मतम भाग समय होता है। असख्यात समय की एक 'आवलिका' होती है। २५६ आवलिका का एक क्षुल्लकभवग्रहण होता है। १७ से कुछ अधिक क्षुल्लकभवग्रहण (४४४६ $\frac{२४५८}{३७७३}$ आवलिका) का एक उच्छ्वास-नि श्वासकाल होता है। मानसिक सक्लेशरहित व्यक्ति के श्वास निश्वास की सख्या सम व स्थिर रहती है। अत वही प्रमाण माना गया है। एक पूर्ण उच्छ्वास-नि श्वास का एक 'प्राण' इसके आगे की सख्या स्पष्ट है। सबसे अन्तिम गणनीय काल 'शीर्षप्रहेलिका' है, और जो १९४ अको की सख्या है। *(काल का विस्तृत वर्णन अनुयोगद्वार भाग १, पृष्ठ २८९, तथा भाग २, काल प्रमाण, पृष्ठ १५८ पर किया जा चुका है।)*

Elaboration—Countable or measurable time is expressed by various aforesaid units from *Muhurt* to *Sheershaprahelika* The smallest indivisible unit of time is called one *Samaya*, it is something even beyond nanosecond Innumerable *Samayas* make one *Avalika* 256 *Avalikas* make one *Kshullak-bhava-grahan* Slightly more than 17 *Kshullak-bhava-grahan* (4446 $\frac{2458}{3773}$ *Avalika*) make one *Uchchhavaas-Nihshvaas* The rhythm of respiration of a healthy and stress free person is uniform and that is why it is taken as a standard unit Time taken in one complete inhalation and exhalation is called *Praan* The following units are exact and as aforesaid The last countable unit of time is *Sheershaprahelika* (a number having 194 digits) *(for more details refer to Illustrated Anuyogadvar Sutra, part 1, p 289 and part 2, p 158)*

औपमिक काल का स्वरूप **METAPHORIC UNITS TIME**

६. [प्र.] से किं तं ओवमिए ?

[उ] ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य।

६. [प्र] भगवन् ! वह औपमिक (काल) क्या है ?

[उ] गौतम ! औपमिक काल दो प्रकार है। यथा-पल्योपम और सागरोपम।

6. [Q.] *Bhante* ! What is this metaphoric unit of time ?

[Ans.] Gautam ! There are two metaphoric units of time—*Palyopam* and *Sagaropam*

७. [प्र] से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ?

सत्थेण सुतिक्खेण वि छेत्तु भेत्तुं च ज किर न सक्का।
तं परमाणुं सिद्धा वदंति आदिं पमाणाणं॥४॥

अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया ति वा, सण्हसण्हिया ति वा, उड्ढरेणू ति वा, तसरेणू ति वा, रहरेणू ति वा, वालग्गे ति वा, लिक्खा ति वा, जूया ति वा, जवमज्झे ति वा, अंगुले ति वा। अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाणं मणूसाणं वालग्गे, एवं हरिवास-रम्मग-हेमवत-एरण्णवताणं पुव्वविदेहाणं मणूसाणं अट्ठ वालग्गा स एगा लिक्खा, अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले, एतेणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाणि पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी, चउव्वीसं अंगुलाणि रयणी, अडयालीसं अगुलाइं कुच्छी, छण्णउतिं अंगुलाणि से एगे दंडे ति वा, धणू ति वा, जूए ति वा, नालिया ति वा, अक्खे ति वा, मुसले ति वा, एतेणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइ जोयणं।

एएणं जोयणप्पमाणेणं जे पल्ले जोयणं आयामविक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं त तिउणं सविसेसं परिरएणं। से णं एगाहिय-बेयाहिय-तेयाहिय उक्कोस सत्तरत्तप्परूढाण संसट्ठे सन्निचिते भरिते वालग्गकोडीणं, ते णं वालग्गे नो अग्गी दहेज्जा, नो वाऊ हरेज्जा, नो कुत्थेज्जा नो परिविद्धसेज्जा, नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा। तओ ण वाससते वाससते गते एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएण कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवति। से तं पलिओवमे।

गाहा-एतेसि पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया।
तं सागरोवमस्स तु एक्कस्स भवे परीमाणं॥५॥

७. [प्र] भगवन् ! पल्योपम' (काल) क्या है ? तथा 'सागरोपम' (काल) क्या है ?

[उ] हे गौतम ! जो सुतीक्ष्ण शस्त्रो द्वारा भी छेदा-भेदा न जा सके, ऐसे परम-अणु (परमाणु) को सिद्ध (केवली) भगवान समस्त प्रमाणो का आदिभूत प्रमाण कहते है। ऐसे अनन्त परमाणु पुद्गलो के समुदाय की समितियो के समागम से एक उच्छ्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका, श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका, ऊर्ध्वरेणु, त्रसरेणु, रथरेणु, बालाग्र, लिक्षा, यूका, यवमध्य और अगुल होता है। आठ उच्छ्लक्ष्ण -श्लक्ष्णिका के मिलने से एक श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका होती है। आठ श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका से एक ऊर्ध्वरेणु, आठ ऊर्ध्वरेणु से एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणुओ के मिलने से एक रथरेणु और आठ रथरेणुओ के मिलने से देवकुरु-उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्यो का एक बालाग्र होता है, तथा देवकुरु और उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्यो के आठ बालाग्रो से हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष के मनुष्यो का एक बालाग्र होता है। हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष के मनुष्यो के आठ बालाग्रो से हैमवत और हैरण्यवत के मनुष्यो का एक बालाग्र होता है। हैमवत और हैरण्यवत के मनुष्यो के आठ बालाग्रो से पूर्वविदेह के मनुष्यो का एक बालाग्र होता है। पूर्वविदेह के मनुष्यो के आठ बालाग्रो से एकलिक्षा (लीख), आठ लिक्षा से एक यूका (जूँ), आठ यूका से एक यवमध्य और आठ यवमध्य से एक अगुल होता है। इस प्रकार के छह अगुल का एक पाद (पैर), बारह अगुल की एक वितस्ति (बेत), चौबीस अगुल का एक हाथ, अडतालीस अगुल की एक कुक्षि, छियानवे अगुल का दण्ड, धनुष, युग,

नालिका, अक्ष अथवा मूसल होता है। दो हजार धनुष का एक गाऊ होता है और चार गाऊ का एक योजन होता है।

इस योजन के परिमाण से एक योजन लम्बा, एक योजन चौडा और एक योजन गहरा (ऊपर मे ऊँचा), तिगुणी से अधिक परिधि वाला एक पल्य (कोठा) हो, उस पल्य मे एक दिन के उगे हुए, दो दिन के उगे हुए, तीन दिन के उगे हुए, और अधिक से अधिक सात रात्रि के उगे हुए करोडो बालाग्र, किनारे तक ऐसे ठूॅस-ठूॅसकर भरे हो, सनिचित (इकट्ठे) किये हो, अत्यन्त भरे हो, कि उन बालाग्रो को अग्नि न जला सके और हवा उन्हे उडाकर न ले जा सके, वे बालाग्र सडे नही, न ही परिध्वस्त (नष्ट) हो, और न ही वे शीघ्र दुर्गन्धित हो। इसके पश्चात् उस पल्य मे से सौ-सौ वर्ष मे एक-एक बालाग्र को निकाला जाये। इस क्रम से तब तक निकाला जाये, जब तक कि वह पल्य क्षीण हो जाय नीरज, निर्मल और निष्ठित (पूर्ण) हो जाये, निर्लेप, अपहरित और विशुद्ध (पूरी तरह खाली) हो जाये। उतने काल को एक **'पल्योपम काल'** (व्यावहारिक) कहते है। (सागरोपम काल के परिमाण को बताने वाली गाथा का अर्थ-) इस पल्योपम काल का जो परिमाण ऊपर बतलाया गया है, वैसे दस कोटाकोटि पल्योपमो का एक सागरोपम-कालपरिमाण होता है।

7. [Q.] *Bhante* ! What is this *Palyopam* unit of time ? And what is this *Sagaropam* unit of time ?

[Ans.] Gautam ! The ultimate (*param*) particle (*anu*) of matter that cannot be pierced and divided even by sharpest of weapons is called the first of all validations (*Adi-pramaan*) by the Omniscient Combinations of lumps of clusters of such infinite *paramanu pudgals* (ultimate-particles of matter) form (the following linear units)—*Uchchhlakshn-shlakshnika*, *Shlakshn-shlakshnika*, *Urdhvarenu*, *Trasarenu*, *Ratharenu*, *Baalaagra* (hair-tip), *Liksha*, *Yuka*, *Yavamadhya* and *Angul* 8 *Uchchhlakshn-shlakshnikas* make one *Shlakshn-shlakshnika* 8 *Shlakshn-shlakshnikas* make one *Urdhvarenu* 8 *Urdhvarenus* make one *Trasarenu* 8 *Trasarenus* make one *Ratharenu* 8 *Ratharenus* make one *Baalaagra* (hair-tip) of humans of Devakuru and Uttarakuru area 8 *Baalaagras* (hair-tips) of humans of Devakuru and Uttarakuru area make one *Baalaagra* (hair-tip) of humans of Harivarsha-Ramyakvarsha area 8 *Baalaagras* (hair-tips) of humans of Harivarsha-Ramyakvarsha area make one *Baalaagra* (hair-tip) of humans of Haimavat-Hairanyavat area 8 *Baalaagras* (hair-tips) of humans of Haimavat-Hairanyavat area make one *Baalaagra* (hair-tip) of humans of Purva-videh area 8 *Baalaagras* (hair-tips) of humans of Purva-videh area make one *Liksha* (*Leekh*) 8 *Likshas* make one *Yuka* 8 *Yukas* make one *Yavamadhya* 8 *Yavamadhyas* make one *Angul* (finger-width) Such 6 *Anguls* make one

Paad (foot), 12 *Anguls* make one *Vitasti* (*Baint* or *Bitta*), 24 *Anguls* make one *Haath*, 48 *Anguls* make one *Kukshi*, 96 *Anguls* make one *Dand* or *Dhanush* or *Yuga* or *Nalika* or *Aksha* or *Musal* 2000 *Dhanush* make one *Gau* (*Gavyut* or *Kosa*) and 4 *Gau* make one *Yojan*

With this *Yojan* measure, take for example a silo one *Yojan* long, one Yojan wide, one *Yojan* high and with a circumference of a little more than three times (three *Yojans*) That silo is filled to the brim with hair tips grown in one day, two days, three days, up to a maximum of seven days (after shaving the head) The hair are tightly packed into a solid mass so that afterwards they cannot be burnt by fire or swept by air and are neither decayed, destroyed or putrefied Now, *Palyopam* (*Vyavaharik*) is the total time taken in completely emptying this silo by taking out one hair-tip at a time every one hundred years and sweeping it clean and free from any sand particles, slime, and even odour so that it remains itself only (Verse—) Such ten *Kotakoti* (1014) *Palyopams* make one *Sagaropam*

उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी **UTSARPINI-AVASARPINI**

८. एएणं सागरोवम पमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा १, तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २, दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम–दूसमा ३, एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम–सुसमा ४, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसमा ५, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसम–दूसमा ६।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसमदूसमा १। एक्कवीसं वाससहस्साइं जाव चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा ६। दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी। दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी य उस्सप्पिणी य।

८. इस सागरोपम–परिमाण के अनुसार चार कोटाकोटि सागरोपम–काल का एक (१) सुषम–सुषमा आरा होता है। (२) तीन कोटाकोटि सागरोपम–काल का एक सुषमा आरा होता है। (३) दो कोटाकोटि सागरोपम–काल का एक सुषम–दु षमा आरा होता है। (४) बयालीस हजार वर्ष कम एक कोटाकोटि सागरोपम–काल का एक दु षम–सुषमा आरा होता है। (५) इक्कीस हजार वर्ष का एक दु षम आरा होता है। (६) इक्कीस हजार वर्ष का एक दु षम–दु षमा आरा होता है।

इसी प्रकार उत्सर्पिणीकाल मे पुन इक्कीस हजार वर्ष परिमित काल का प्रथम दु षम–दुषमा आरा होता है। इक्कीस हजार वर्ष का द्वितीय दु षम आरा होता है, बयालीस हजार वर्ष कम एक कोटाकोटि सागरोपम काल का तीसरा दु षमा–सुषमा आरा होता है, दो कोटाकोटि सागरोपमकाल का चौथा

सुषमा-दुःषमा आरा होता है। तीन कोटाकोटि सागरोपमकाल का पाँचवाँ सुषम आरा होता है और चार कोटाकोटि सागरोपमकाल का छठा सुषम-सुषमा आरा होता है। इस प्रकार (कुल) दस कोटाकोटि सागरोपमकाल का एक अवसर्पिणीकाल होता है और दस कोटाकोटि सागरोपम काल का ही उत्सर्पिणीकाल होता है। यो बीस कोटाकोटि सागरोपमकाल का एक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी-**कालचक्र** होता है।

8. (In the *Avasarpini* kaal or regressive cycle of time) In this *Sagaropam* measure (1) *Sukham-sukhama Ara* (epoch of extreme happiness) is 4 *Kotakoti Sagaropam* long, (2) *Sukhama Ara* (epoch of happiness) is 3 *Kotakoti Sagaropam* long, (3) *Sukham-dukhama* (epoch of more happiness than sorrow) is 2 *Kotakoti Sagaropam* long, (4) *Dukham-sukhama* (epoch of more sorrow than happiness) is 42,000 year less one *Kotakoti Sagaropam* long, (5) *Dukhama* (epoch of sorrow) is 21,000 years long and (6) *Dukham-dukhama* (epoch of extreme sorrow) is 21,000 years long

In the same way in the *Utsarpini kaal* (progressive cycle of time) the first *Dukham-dukhama* (epoch of extreme sorrow) is 21,000 years long, the second *Dukhama* (epoch of sorrow) is 21,000 years long, the third *Dukham-sukhama* (epoch of more sorrow than happiness) is 42,000 year less one *Kotakoti Sagaropam* long, the fourth *Sukham-dukhama* (epoch of more happiness than sorrow) is 2 *Kotakoti Sagaropam* long, the fifth *Sukhama Ara* (epoch of happiness) is 3 *Kotakoti Sagaropam* long, and the sixth *Sukham-sukhama* Ara (epoch of extreme happiness) is 4 *Kotakoti Sagaropam* long This way there is one *Avasarpini kaal* (regressive half-cycle of time) ten *Kotakoti Sagaropam* long and one *Utsarpini kaal* (progressive half-cycle of time) also ten *Kotakoti Sagaropam* long Thus one complete progressive-regressive cycle of time *Avasarpini Utsarpini kaal-chakra* is of 20 *Kotakoti Sagaropam* duration

विवेचन पल्योपम का स्वरूप-यहाँ जो पल्योपम का स्वरूप बतलाया है, वह व्यवहार अद्धापल्योपम का स्वरूप है। पल्योपम के मुख्य तीन भेद है-(१) उद्धारपल्योपम, (२) अद्धापल्योपम, और (३) क्षेत्रपल्योपम। उद्धारपल्योपम आदि के प्रत्येक के दो प्रकार है-व्यवहार उद्धारपल्योपम एव सूक्ष्म उद्धारपल्योपम, व्यवहार अद्धापल्योपम एव सूक्ष्म अद्धापल्योपम, तथा व्यवहार क्षेत्रपल्योपम एव सूक्ष्म क्षेत्रपल्योपम। (विस्तृत वर्णन अनुयोगद्वार, भाग १ मे किया जा चुका है)

Elaboration—Palyopam—the *Palyopam* unit detailed here is *Vyavahar Addhapalyopam* There are three kinds of *Palyopam* units—(1) *Uddhar Palyopam*, (2) *Addha Palyopam*, and (3) *Kshetra Palyopam* All these have two sub-categories each—*Vyavahar Uddhar Palyopam*, *Sukshma*

Uddhar Palyopam, *Vyavahar Addha Palyopam*, *Sukshma Addha Palyopam*, *Vyavahar Kshetra Palyopam*, and *Sukshma Kshetra Palyopam* (for detailed description refer to *Illustrated Anuyogadvar Sutra*, part 1)

सुषमसुषमाकालीन भारतवर्ष के भाव **BHARAT VARSH IN SUKHAM-SUKHAMA ARA**

९. [प्र.] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए उत्तमट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयगारे होत्था ?

[उ.] गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए आलिंगपुक्खरे इ वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव आसयंति सयंति। तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे उराला कुद्दाला, जाव कुसविकुस–विसुद्धरुक्खमूला जाव छव्विहा मणूसा अणुसज्जित्था, तं०–१. पम्हगंधा, २. मियगंधा, ३. अममा, ४. तेयली, ५. सहा, ६. सणिंचारी।

सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

।। छट्ठे सए : सत्तमो सालिउद्देसो समत्तो ।।

९. [प्र] भगवन् ! इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे उत्तमार्थ–प्राप्त (आयुष्य आदि उत्तम अवस्था प्राप्त) इस अवसर्पिणीकाल के सुषम–सुषमा नामक आरे मे भरतक्षेत्र (भारतवर्ष) के आकार (आचार–) भाव–प्रत्यवतार (आचारो और पदार्थों के भाव–पर्याय–अवस्था) किस प्रकार के थे ?

[उ] गौतम ! (उस समय) भूमिभाग बहुत सम होने से अत्यन्त रमणीय था। जैसे–कोई आलिग मुरज (तबला) नामक वाद्य का चर्ममण्डित मुखपट हो, वैसा बहुत ही सम भरतक्षेत्र का भूभाग था। इस प्रकार उस समय के भरतक्षेत्र के लिए उत्तरकुरु की वक्तव्यता (वर्णन) के समान कहनी चाहिए। यावत् बैठते है, सोते है। उस काल (अवसर्पिणी के प्रथम आरे) मे भारतवर्ष मे उन–उन देशो के उन–उन स्थलो मे उदार (प्रधान) एव कुद्दालक यावत् कुश और विकुश से विशुद्ध वृक्षमूल थे, यावत् छह प्रकार के मनुष्य थे। यथा–(१) पद्मगन्ध वाले, (२) मृग (कस्तूरी के समान) गन्ध वाले, (३) अमम (ममत्वरहित), (४) तेजस्तली (तेजस्वी एव रूपवान्), (५) सहा (सहनशील), और (६) शनैश्चर (उतावल व उत्सुकतारहित होने से धीरे–धीरे गजगति से चलने वाले) थे।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है' यों कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरने लगे।

।। छठा शतक : सप्तम उद्देशक समाप्त ।।

9. [Q.] *Bhante* ! In this *Avasarpini kaal* (regressive half-cycle of time) in the noblest *Sukham-sukhama Ara* what were the forms (things and conduct) and appearances (modes or variety of conduct and things) that prevailed in *Bharat* area (Bharat-varsh or Indian sub-continent) ?

[Ans.] Gautam ! Being very even, the land was delightful. The land of the Bharat area was as even and smooth as the leather mounted surface of *Muraj* (a tabla-like hand-drum). The description of Bharat area of that period should follow the pattern of Uttar Kuru .... and so on up to .... they sit, they sleep. During that period in those countries and those places in Bharat area there were luxuriant trees free of *Uddalak*, *Kuddalak*.... and so on up to .... grass and weeds .... and so on up to .... six kinds of human beings—(1) with lotus fragrance, (2) with musk fragrance, (3) free of attachment, (4) imposing and handsome, (5) tolerant, and (6) with serene gait (free of curiosity and rush).

"*Bhante* ! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words .... and so on up to.... ascetic Gautam resumed his activities.

● END OF THE SEVENTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : अष्टम उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : EIGHTH LESSON

पृथ्वी PRITHVI (WORLDS)

रत्नप्रभादि पृथ्वियो के नीचे BELOW THE WORLDS

१. [प्र.] कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–रयणप्पभा जाव ईसीपब्भारा।

१. [प्र.] भगवन् ! कितनी पृथ्वियाँ है ?

[उ] गौतम ! आठ पृथ्वियाँ है। वे यथा–(१) रत्नप्रभा, [(२) शर्कराप्रभा, (३) बालुकाप्रभा, (४) पकप्रभा, (५) धूमप्रभा, (६) तम प्रभा, (७) महातम प्रभा], और (८) ईषत्प्राग्भारा।

1. [Q.] *Bhante* ! How many *prithvis* (worlds) are there ?

[Ans.] Gautam ! There are eight *prithvis* (worlds)—(1) Ratnaprabha, and so on up to [(2) Sharkaraprabha, (3) Balukaprabha, (4) Pankaprabha, (5) Dhoom-prabha, (6) Tamah-prabha, (7) Adhah saptami (Tamstamah-prabha) and] (8) Ishatpragbhara (Siddhashila)

२. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा इ वा गेहावणा इ वा ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

३. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा इ वा जाव सन्निवेसा इ वा ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

४. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उराला बलाहया संसेयंति, सम्मुच्छंति, वासं वासंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

५. तिण्णि वि पकरेति–देवो वि पकरेइ, असुरो वि, नागो वि पकरेइ।

६–७. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बायरे थणियसद्दे ?

[उ.] हंता, अत्थि। तिण्णि वि पकरेंति।

८. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे बादरे अगणिकाए ?

[उ.] गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नऽन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं।

९. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदिम जाव तारारूवा ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

१०. [प्र.] अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चंदाभा। ति वा सूराभा ति वा।

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे गृह (घर) अथवा गृहापण (दुकाने) आदि है?

[उ.] गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे गृह या गृहापण नही है।

३. [प्र.] भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे ग्राम यावत् सन्निवेश आदि है?

[उ.] गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे ग्राम यावत् सन्निवेश नही है।

४. [प्र.] भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे महान् (उदार) मेघ सस्वेद (बादलो के रूप मे) को प्राप्त होते है, (घटा के रूप मे) सम्मूर्च्छित होते है और वर्षा बरसाते है?

[उ.] हाँ, गौतम ! ऐसा होता है।

५. भगवन् ! (महामेघो को सस्वेदित करने, सम्मूर्च्छित करने तथा वर्षा बरसाने का कार्य) ये तीनो कार्य देव भी करते है, असुर भी करते हैं और नाग भी करते है।

६–७. [प्र.] भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे बादर (स्थूल) स्तनित शब्द (मेघगर्जना की आवाज) है?

[उ.] हाँ, गौतम ! बादर स्तनित शब्द है, जिसे (उपर्युक्त) तीनो ही करते है।

८. [प्र.] भगवन् ! क्या रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे बादर अग्निकाय है?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है। यह निषेध विग्रहगति समापन्नक जीवो के सिवाय (दूसरे जीवो के लिए समझना चाहिए)।

९. [प्र.] भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे क्या चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारारूप है?

[उ.] (गौतम !) यह अर्थ समर्थ नही है।

१०. [प्र.] भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी मे चन्द्राभा (चन्द्रमा का प्रकाश), सूर्याभा (सूर्य का प्रकाश आदि) है?

[उ.] (गौतम !) ऐसा नही है।

2. [Q.] *Bhante* ! Are there houses or shops (*grihapan*) below this Ratnaprabha *prithvi* ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

3. [Q.] *Bhante* ! Are there villages. and so on up to *sanniwesh* (temporary settlement) below this Ratnaprabha *prithvi* ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

4. [Q.] *Bhante* ! Below this Ratnaprabha prithvi do great clouds accumulate moisture, form into rain-clouds and cause shower ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is so

5. These activities of clouds are done by a *Dev*, *Asur* as well as a *Naag*.

6-7. [Q.] *Bhante* ! Below this Ratnaprabha *prithvi* is there loud thundering sound (of clouds) and gross (bright) lightening ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is so And it is produced by all three

8. *Bhante* ! Does this Ratnaprabha *prithvi* contain gross (*baadar*) fire-bodies ?

[Ans.] Gautam ! That is not so However, this negation is for beings other than those with oblique movement (*vigrahagati samapanna*)

9. [Q.] Does this Ratnaprabha *prithvi* have formations like moon, sun, planets, constellations and stars ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

10. [Q.] *Bhante* ! Does this Ratnaprabha *prithvi* have glow of the moon or the sun ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

११. एवं दोच्चाए वि पुढवीए भाणियव्वं।

१२. एवं तच्चाए वि भाणियव्वं, नवरं देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, णो णागो पकरेति।

१३. चउत्थीए वि एवं, नवरं देवो एक्को पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति।

१४. एवं हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो एक्को पकरेति।

११. इसी प्रकार (पूर्वोक्त सभी बाते) दूसरी पृथ्वी (शर्कराप्रभा) के लिए भी कहना चाहिए।

१२. इसी प्रकार (पूर्वोक्त सब बाते) तीसरी पृथ्वी (बालुकाप्रभा) के लिए भी कहना चाहिए। इतना विशेष है कि वहाँ देव भी (ये सब) करते है, असुर भी करते है, किन्तु नाग (कुमार) नही करते।

१३. चौथी पृथ्वी मे भी इसी प्रकार सब बाते कहनी चाहिए। इतना विशेष है कि वहाँ देव ही अकेले (यह सब) करते है, किन्तु असुर और नाग नही करते है।

१४. इसी प्रकार नीचे की (पाँचवीं, छठी और सातवी नरक) सब पृथ्वियो में केवल देव ही (यह सब कार्य) करते है (असुरकुमार और नागकुमार नही करते)।

11. The same (aforesaid statements) should be repeated for the second world (Sharkaraprabha).

12. The same (aforesaid statements) should be repeated for the third world (Balukaprabha) The only exception is that here all activities are done by gods and Asur Kumars but not by Naag Kumars

13. The same (aforesaid statements) should be repeated for the fourth world (Pankaprabha) The only exception is that here all activities are done by gods alone and not by Asur Kumars or Naag Kumars

14. In the same way in the three lower most worlds (fifth, sixth and seventh) all activities are done by gods alone and not by Asur Kumars or Naag Kumars

देवलोको के नीचे BELOW THE DIVINE REALMS

१५. [प्र.] अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा २ ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे।

१६. [प्र.] अत्थि णं भंते ! उराला बलाहया ?

[उ] हंता, अत्थि।

१७. देवो पकरेति, असुरो वि पकरेइ, नो नागो पकरेति।

१८. एवं थणियसद्दे वि।

१५. [प्र] भगवन् ! क्या सौधर्म और ईशान कल्पो के नीचे गृह अथवा गृहापण है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

१६. [प्र] भगवन् ! क्या सौधर्म और ईशान देवलोक के नीचे महामेघ (उदार बलाहक) है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! (वहाँ महामेघ है)।

१७. (सौधर्म और ईशान देवलोक के नीचे पूर्वोक्त सब कार्य (बादलो का छाना, मेघ उमडना, वर्षा बरसाना आदि) देव करते है, असुर भी करते है, किन्तु नागकुमार नही करते।

१८. इसी प्रकार वहाँ स्तनित शब्द के लिए भी कहना चाहिए।

15. [Q.] *Bhante* ! Are there houses or shops (*grihapan*) below Saudharma and Ishan *kalps* (divine realms) ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

16. [Q.] *Bhante* ! Below Saudharma and Ishan *kalps* are there great clouds ?

[Ans.] Yes, Gautam ! It is so

17. These activities of clouds (accumulate moisture, form into rain-clouds and cause shower) are done by a *Dev*, an *Asur* but not a *Naag*

18. The same should be repeated for loud thundering sound (of clouds)

१९. [प्र.] अत्थि णं भंते ! बादरे पुढविकाए, बादरे अगणिकाए ?

[उ.] नो इणट्ठे समट्ठे, नऽन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं।

२०. [प्र.] अत्थि णं भंते ! चंदिम० ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

२१. [प्र.] अत्थि णं भंते ! गामाइ वा० ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

२२. [प्र.] अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा २ ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

२३. एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं देवो एगो पकरेति।

२४. एवं बंभलोए वि।

२५. एवं बंभलोगस्स उवरिं सव्वहिं देवो पकरेति।

१९. [प्र.] भगवन् ! क्या वहाँ (सौधर्म और ईशान देवलोक के नीचे) बादर पृथ्वीकाय और बादर अग्निकाय है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही। यह निषेध विग्रहगति समापन्न जीवो के सिवाय दूसरे जीवो के लिए जानना चाहिए।

२०. [प्र.] भगवन् ! क्या वहाँ चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारारूप है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

२१. [प्र.] भगवन् ! क्या वहाँ ग्राम यावत् सन्निवेश है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

२२. [प्र.] भगवन् ! क्या यहाँ चन्द्राभा, सूर्याभा आदि है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

२३. इसी प्रकार सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोको मे भी कहना चाहिए। विशेष यह है कि वहाँ (यह सब) केवल देव ही करते है।

२४. इसी प्रकार ब्रह्मलोक (पचम देवलोक) मे भी कहना चाहिए।

२५. इसी तरह ब्रह्मलोक से ऊपर (पच अनुत्तरविमान देवलोक तक) सर्वस्थलो मे पूर्वोक्त प्रकार से कहना चाहिए। इन सब स्थलो मे केवल देव ही (पूर्वोक्त कार्य) करते है।

19. [Q.] *Bhante* ! Do Saudharma and Ishan *kalps* contain gross (*baadar*) earth-bodies and gross fire-bodies ?

[Ans.] Gautam ! That is not so. However, this negation is for beings other than those with oblique movement (*vigrahagati samapanna*)

20. [Q.] Do Saudharma and Ishan *kalps* have formations like moon, sun, planets, constellations and stars ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

21. [Q.] *Bhante* ! Are there villages . and so on up to *sanniwesh* (temporary settlement) in Saudharma and Ishan *kalps* ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

22. [Q.] *Bhante* ! Do Saudharma and Ishan *kalps* have glow like the moon or the sun ?

[Ans.] Gautam ! It is not so

23. The same (aforesaid statements) should be repeated for Sanatkumar and Maahendra *kalps* The only exception is that here all activities are done by gods alone

24. The same (aforesaid statements) should be repeated for Brahmalok (the fifth *kalp*)

25. The same (aforesaid statements) should be repeated for *kalps* above Brahmalok (up to the five Anuttar Vimaan *kalps*) In all these *kalps* all activities are done by gods alone

२६. [प्र. उ.] पुच्छियव्वे य बादरे आउकाए, बादरे तेउकाए, बायरे वणस्सइकाए। अन्नं तं चेव।

तमुक्काए कप्पपणए अगणी पुढवी य, अगणी पुढवीसु।
आऊ–तेउ–वणस्सति कप्पुवरिम–कण्हराईसु॥१॥ (गाहा)

२६. [प्र. उ.] इन सब स्थलो मे बादर अप्काय, बादर अग्निकाय और बादर वनस्पतिकाय के विषय मे प्रश्न (पृच्छा) करना चाहिए। उनका उत्तर भी पूर्ववत् कहना चाहिए। अन्य सब बाते पूर्ववत् कहनी चाहिए।

[गाथा का अर्थ–] तमस्काय मे और पाँच देवलोको तक मे अग्निकाय और पृथ्वीकाय के सम्बन्ध मे प्रश्न करना चाहिए। रत्नप्रभा आदि नरकपृथ्वियो मे अग्निकाय के सम्बन्ध मे प्रश्न करना चाहिए। इसी तरह पचम कल्प–देवलोक से ऊपर सब स्थानो मे तथा कृष्णराजियो मे अप्काय, तेजस्काय और वनस्पतिकाय के सम्बन्ध मे प्रश्न करना चाहिए।

26. [Q. Ans.] For all these areas questions should be asked about *gross* (*baadar*) water-bodies, gross fire-bodies and gross plant-bodies

Same answers should also be repeated All other information is also as aforesaid

[Verse—] With regard to *Tamaskaaya* and five divine realms questions about fire-bodies and earth-bodies should be asked With regard to Ratnaprabha and other worlds questions about fire-bodies should be asked In the same way with regard to all areas above the fifth *kalp* and *krishna-rajis* questions about water-bodies, fire-bodies and plant-bodies should be asked

विवेचन रत्नप्रभादि पृथ्वियो के नीचे बादर पृथ्वीकाय और बादर अग्निकाय नही है, किन्तु वहाँ घनोदधि आदि होने से अप्काय, वायुकाय और वनस्पतिकाय है। सौधर्म, ईशान आदि देवलोको मे बादर पृथ्वीकाय नही है, क्योकि वहाँ उसका स्वस्थान न होने से उत्पत्ति नही है तथा सौधर्म, ईशान उदधिप्रतिष्ठित होने से वहॉ बादर अप्काय, वायुकाय और वनस्पतिकाय का सद्‌भाव है। इसी तरह सनत्कुमार और माहेन्द्र मे तमस्काय होने से वहाँ बादर अप्काय और वनस्पतिकाय का होना सुसगत है। तमस्काय मे और पॉचवे देवलोक तक बादर अग्निकाय और बादर पृथ्वीकाय का अस्तित्व नही है। शेष तीन का सद्‌भाव है। बारहवे देवलोक तक इसी तरह जान लेना चाहिए। पॉचवे देवलोक से ऊपर के स्थानो मे तथा कृष्णराजियो मे भी बादर अप्काय, तेजस्काय और वनस्पतिकाय का सद्‌भाव नही है, क्योकि उनके नीचे वायुकाय का ही सद्‌भाव है। सक्षेप मे सार यह है-पहला, दूसरा स्वर्ग घनोदधि पर प्रतिष्ठित है। ३, ४, ५ घनवात पर, ६, ७, ८ घनोदधि और घनवात पर, ९ से १२वे ९ ग्रैवेयक तथा पाँच अनुत्तर विमान ये सब आकाश प्रतिष्ठित है। *(वृत्ति, पत्राक २७९)*

Elaboration—Gross earth-bodies (*baadar prithvikaaya*) and gross fire-bodies (*baadar agnikaaya*) do not exist below Ratnaprabha and other worlds However, due to the presence of *Ghanodadhi* (dense water) gross water-bodies (*baadar apkaaya*), gross air-bodies (*baadar vayukaaya*) and gross plant-bodies (*baadar vanaspatikaaya*) do exist there In divine realms including Saudharma and Ishaan there are no gross earth-bodies because those areas are not conducive to evolution of these However, as Saudharma and Ishan kalps rest on water, gross water-bodies, gross air-bodies and gross plant-bodies do exist there. In the same way due to the presence of *Tamaskaaya* in Sanatkumar and Maahendra *kalps*, there is existence of gross water-bodies and gross plant-bodies there In *Tamaskaaya* and up to the fifth divine realm (*Dev Lok*) there is no existence of gross earth-bodies and gross fire-bodies Remaining three do exist there The same holds true up to the twelfth heaven (*Dev Lok*) Above the fifth heaven and in *krishna-rajis* there is absence of gross water-bodies, gross fire-bodies and gross plant-bodies; this is because only gross air-bodies can exist there. In brief — First and second heavens rest on dense water, third, fourth and fifth on dense air, sixth seventh

and eighth on dense water and dense air, ninth to twelfth, the nine Graiveyaks and five Anuttar Vimaans, all rest on space (Vritti, leaf 279)

जीवों के आयुष्य का बन्ध LIFE-SPAN BONDAGE OF LIVING BEINGS

२७. [प्र.] कतिविहे ण भते ! आउयबंधे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठितिनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए पदेसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए।

२७. [प्र.] भगवन् ! आयुष्यबन्ध कितने प्रकार का है ?

[उ.] गौतम ! आयुष्यबन्ध छह प्रकार का है। वह इस प्रकार है–(१) जातिनामनिधत्तायु, (२) गतिनामनिधत्तायु, (३) स्थितिनामनिधत्तायु, (४) अवगाहनामनिधत्तायु, (५) प्रदेशनामनिधत्तायु, और (६) अनुभागनामनिधत्तायु।

27. [Q.] *Bhante* ! Of how many kinds is life-span bondage (*ayushya-bandh*) ?

[Ans.] Gautam ! Life-span bondage (*ayushya-bandh*) is of six kinds—(1) *Jati-naam-nidhatt-ayu* (race programmed life-span), (2) *Gati-naam-nidhatt-ayu* (genus programmed life-span), (3) *Sthiti-naam-nidhatt-ayu* (duration programmed life-span), (4) *Avagahana-naam-nidhatt-ayu* (space-occupation or form programmed life-span), (5) *Pradesh-naam-nidhatt-ayu* (space-point programmed life-span), and (6) *Anubhag-naam-nidhatt-ayu* (potency programmed life-span)

२८. एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं।

२८. यावत् वैमानिको तक दण्डक कहना चाहिए।

28. Repeat these for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks*.

२९. [प्र.] जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता, गतिनामनिहत्ता जाव अणुभागनामनिहत्ता ?

[उ.] गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि।

३०. दंडओ जाव वेमाणियाणं।

२९. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव जातिनामनिधत्त है ? गतिनामनिधत्त है ? यावत् अनुभागनामनिधत्त है ?

[उ.] गौतम ! जीव जातिनामनिधत्त भी है, यावत् अनुभागनामनिधत्त भी है।

३०. यह दण्डक यावत् वैमानिक तक कहना चाहिए।

29. [Q.] *Bhante* ! Have beings undergone (these kinds of *karma* programming)—*Jati-naam-nidhatt* (race programming), *Gati-naam-nidhatt* (genus programming).. and so on up to. *Anubhag-naam-nidhatt* (potency programming) ?

[Ans.] Gautam ! They have undergone *Jati-naam-nidhatt* (race programming) and so on up to . *Anubhag-naam-nidhatt* (potency programming).

30. Repeat these for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks*

३१. [प्र] जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहित्ताउया जाव अणुभागनामनिहित्ताउया ?

[उ.] गोयमा ! जातिनामनिहित्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहित्ताउया वि।

३२. दंडओ जाव वेमाणियाणं।

३१. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव जातिनामनिधत्तायुष्क है, यावत् अनुभागनामनिधत्तायुष्क है ?

[उ] गौतम ! जीव, जातिनामनिधत्तायुष्क भी है, यावत् अनुभागनामनिधत्तायुष्क भी है।

३२. यह दण्डक यावत् वैमानिक तक कहना चाहिए।

31. [Q.] *Bhante* ! Are beings with bondage of *Jati-naam-nidhatt-ayushk* (race programmed life-span) and so on up to *Anubhag-naam-nidhatt-ayushk* (potency programmed life-span)

[Ans.] Gautam ! They are with bondage of *Jati-naam-nidhatt-ayushk* (race programmed life-span) and so on up to *Anubhag-naam-nidhatt-ayushk* (potency programmed life-span)

32. Repeat these for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks*

३३. [प्र.] एवमेए दुवालस दंडगा भाणियव्वा—जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता १, जातिनामनिहत्ताउया २, जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिउत्ता ३, जातिनामनिउत्ताउया ४, जातिगोयनिहत्ता ५, जातिगोयनिहत्ताउया ६, जातिगोत्तनिउत्ता ७, जातिगोत्तनिउत्ताउया ८, जातिणामगोत्तनिहत्ता ९, जातिणामगोयनिहत्ताउया १०, जातिणामगोयनिउत्ता ११, जीवा णं भंते ! किं जातिनामगोत्तनिउत्ताउया जाव अणुभागनामगोत्तनिउत्ताउया १२ ?

[उ.] गोयमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोत्तनिउत्ताउया वि।

३४. दंडओ जाव वेमाणियाणं।

३३. [प्र.] इस प्रकार ये बारह दण्डक कहने चाहिए—भगवन् ! क्या जीव, १ जातिनामनिधत्त है ? २ जातिनामनिधत्तायु है ? ३ क्या जीव, जातिनामनियुक्त है ? ४ जातिनामनियुक्तायु है ?

५ जातिगोत्रनिधत्त है ? ६ जातिगोत्रनिधत्तायु है ? ७ जातिगोत्रनियुक्त है ? ८ जातिगोत्रनियुक्तायु है ? ९ जातिनामगोत्रनिधत्त है ? १० जातिनामगोत्रनिधत्तायु है ? भगवन् ! ११ जातिनामगोत्रनियुक्त है ? १२ क्या जातिनामगोत्रनियुक्तायु है ? यावत् अनुभागनामगोत्रनियुक्तायु है ?

[उ.] गौतम ! जीव, जातिनामगोत्रनिधत्त भी है, यावत् अनुभागनामगोत्रनियुक्तायु भी है।

३४. यह दण्डक यावत् वैमानिको तक कहना चाहिए।

33. [Q.] This way these twelve kinds (*dandaks*) should be stated—*Bhante* ! Are beings with—1 *Jati-naam-nidhatt* (race programming) ? 2 *Jati-naam-nidhatt-ayu* (race programmed life-span) ? 3 *Jati-naam-niyukt* (race programme activation) ? 4 *Jati-naam-niyukt-ayu* (race programme activated life-span) ? 5 *Jati-gotra-nidhatt* (race-status programming) ? 6 *Jati-gotra-nidhatt-ayu* (race-status programmed life-span) ? 7 *Jati-gotra-niyukt* (race-status programme activation) ? 8 *Jati-gotra-niyukt-ayu* (race-status programme activated life-span) ? 9 *Jati-naam-gotra-nidhatt* (race-form-status programming) ? 10 *Jati-naam-gotra-nidhatt-ayu* (race-form-status programmed life-span) ? 11 *Jati-naam-gotra-niyukt* (race-form-status programme activation) ? 12 Are they with *Jati-naam-gotra-niyukt-ayu* (race-form-status programme activated life-span) ? and so on up to *Anubhag-naam-gotra-niyukt-ayu* (potency-race-status programme activated life-span)

[Ans.] Gautam ! Beings are with *Jati-naam-gotra-niyukt-ayu* (race-status programme activated life-span) ? and so on up to Anubhag-naam-gotra-niyukt-ayu (potency-race-status programme activated life-span)

34. Repeat these for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks*

विवेचन प्रस्तुत आठ सूत्रो (सूत्र २७ से ३४ तक) मे जीवो के आयुष्यबन्ध के ६ प्रकार, तथा चौबीस ही दण्डक के जीवो मे जातिनामनिधत्तादि बारह दण्डको–आलापको की प्ररूपणा की गई है।

षड्विध आयुष्यबन्ध की व्याख्या–आठ कर्मो मे पाँचवाँ कर्म है आयुष्य ! इसके पुद्‌गलो से जीवनी शक्ति का निर्माण होता है। अगले जन्म के आयुष्य का बन्ध वर्तमान जीवन काल मे ही हो जाता है। आयुष्य बन्ध के समय छह अन्य कर्मप्रकृतियो का भी बन्ध होता है। जैसे–(१) **जातिनामकर्म**–इससे अगले जन्म मे एकेन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक की जाति का निर्धारण होता है, (२) **गतिनामकर्म**–इससे नरकगति से देवगति तक चार गतियो का, (३) **स्थितिनामकर्म**–इससे जीवन की कालावधि का, (४) **अवगाहनानामकर्म**–इससे औदारिक–वैक्रिय आदि शरीर का, (५) **प्रदेशनामकर्म**–इससे आयुष्य कर्म के पुद्‌गलो का परिमाण, तथा (६) **अनुभागनामकर्म**–आयुष्य कर्म के पुद्‌गलो का विपाक निर्धारित होता है। जाति, गति नाम, के साथ ही इन छहो प्रकृतियो का बध होता है।

एकेन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक जाति रूप कर्म–जाति नाम है। उसके साथ प्रतिसमय अनुभव मे आने योग्य कर्मपुद्गलो की रचना को **'जातिनामनिधत्तायु'** कहते हैं। इसी प्रकार गति आदि को समझना चाहिए।

निधत्त (निषिक्त)–कर्म के उदय मे आने की एक स्वाभाविक व्यवस्था है। **निधत्त** (निषिक्त) सब कर्मपुद्गल एक साथ उदय मे नही आते, किन्तु उनकी एक क्रमिक श्रेणी बन जाती है, विपाक मे आने वाले पुद्गलो के निषेक (श्रेणी) बन जाते है। प्रतिसमय उदय मे आने वाले कर्मपुद्गलो की विशिष्ट रचना होती है जिसे 'निषेक' कहा जाता है। विपाक की पूर्ववर्ती अवस्था मे निषेक की द्रव्य राशि अधिक होती है, उत्तर अवस्था मे वह कम होती जाती है। कर्म की स्थिति की समाप्ति के क्षण तक निषेक व्यवस्था सक्रिय रहती है।

नामकर्म से विशेषित १२ दण्डको की व्याख्या–(१) **जातिनाम–निधत्त**–जिन जीवो ने जातिनाम निषिक्त (निश्चित बाँधा है) किया है वे जीव **'जातिनामनिधत्त'** कहलाते है। (२) **जातिनामनिधत्तायु**–जिन जीवो ने जातिनाम के साथ आयुष्य को निधत्त किया है, उन्हे **'जातिनामनिधत्तायु'** कहते है। (३) **जातिनामनियुक्त**–जिन जीवो ने जातिनाम को नियुक्त (सम्बन्ध–निकाचित) किया है अथवा वेदन प्रारम्भ किया है, वे। (४) **जातिनामनियुक्त–आयु**–जिन जीवो ने जातिनाम के साथ आयुष्य नियुक्त किया है अथवा उसका वेदन प्रारम्भ किया है। इसी प्रकार गतिनाम, स्थितिनाम, अवगाहनानाम, प्रदेशनाम और अनुभागनाम के सभी पदो का अर्थ भी जान लेना चाहिए। (५) **जातिगोत्रनिधत्त**–जिन जीवो ने एकेन्द्रियादिरूप जाति तथा गोत्र–एकेन्द्रियादि जाति के योग्य नीचगोत्रादि को निधत्त किया है। (६) **जातिगोत्रनिधत्तायु**–जिन जीवो ने जाति और गोत्र के साथ आयुष्य को निधत्त किया है। (७) **जातिगोत्रनियुक्त**–जिन जीवो ने जाति और गोत्र को नियुक्त किया है। (८) **जातिगोत्रनियुक्तायु**–जिन जीवो ने जाति और गोत्र के साथ आयुष्य को नियुक्त कर लिया है। (९) **जातिनाम–गोत्र–निधत्त**–जिन जीवो ने जाति, नाम और गोत्र को निधत्त किया है। इसी प्रकार दूसरे पदो का अर्थ भी जान ले। (१०) **जाति–नाम–गोत्रनिधत्तायु**–जिन जीवो ने जाति, नाम और गोत्र के साथ आयुष्य को निधत्त कर लिया है। (११) **जाति–नाम–गोत्र–नियुक्त**–जिन जीवो ने जाति, नाम और गोत्र को नियुक्त किया है। (१२) **जाति–नाम–गोत्र–नियुक्तायु**–जिन जीवो ने जाति, नाम और गोत्र के साथ आयुष्य को नियुक्त किया है। इसी तरह अन्य सभी पदो का अर्थ भी समझ लेना चाहिए। *(वृत्ति, पत्राक २८०–२८१ एव हिन्दी विवेचन, भा २, पृ १०५३ से १०५६ तक)*

Elaboration—These eight aphorisms (27-34) discuss six kinds of life-span bondage of beings and twelve statements about various levels of bondage including *Jati-naam-gotra-niyukt-ayu* (race-status programme activated life-span)

Six kinds of bondage—Of the eight *karmas* fifth is *Ayushya* or life-span determining *karma* The particles of this *karma* impart the life force The bondage of life-span of next birth is concluded during this birth With this life-span bondage six other species of *karmas* (*karma prakritis*) are also bound **(1) Jati-naam-karma**—this *karma* determines the race (one-sensed to five-sensed beings) during the next birth **(2) Gati-naam-karma**—it determines the genus (infernal to divine) during the next birth **(3) Sthiti-naam-karma**—it determines the

duration of the karma or the life-span. **(4) Avagahana-naam-karma**—this determines space-occupation or form of the body (*Audarik*, *Vaikriya* etc) **(5) Pradesh-naam-karma**—this determines the total number of space-points of the acquired *Ayushya karma* **(6) Anubhag-naam-karma**—it determines the potency of fruition of *Ayushya karma* Along with the *jati* and *gati naam* species all these six species of *karmas* are bound

Jati-naam-karma is the *karma* that determines the race (one-sensed to five-sensed beings) during the next birth While assimilating these *karmas* they are also programmed for fruition in bunches every passing moment This process of programming is called *nidhatt* and the so programmed *karma* is called *Jati-naam-nidhatt-ayu* (race programmed life-span) This is also true for other aforesaid *karmas* including *gati*

There is an inherent programming of activation or fruition of the so assimilated *karmas* All the programmed *karmas* do not come to fruition at the same time A series of *karmas* due for fruition is formed This special arrangement of *karmas* to come to fruition every passing moment is called *nishek* At the initial levels of fruition the density of the *nishek* is highest and it gradually reduces This special arrangement of *nishek* continues till the duration of the *karmic* bondage

The twelve statements about *naam-karma*—**1. Jati-naam-nidhatt**—The beings that have undergone race programming are called *Jati-naam-nidhatt* **2. Jati-naam-nidhatt-ayu**—The beings that have undergone race programming along with life-span programming are called *Jati-naam-nidhatt-ayu* **3. Jati-naam-niyukt**—The beings that have undergone race programme activation are called *Jati-naam-niyukt* **4. Jati-naam-niyukt-ayu**—The beings that have undergone race and life-span programme activation are called *Jati-naam-niyukt-ayu* The same pattern holds good for *Gati-naam*, *Sthiti-naam*, *Avagahana-naam*, *Pradesh-naam* and *Anubhag-naam* **5. Jati-gotra-nidhatt**—The beings that have undergone race and status programming are called *Jati-gotra-nidhatt* **6. Jati-gotra-nidhatt-ayu**—The beings that have undergone race-status programming along with life-span programming are called *Jati-gotra-nidhatt-ayu* **7. Jati-gotra-niyukt**—The beings that have undergone race-status programme activation are called *Jati-gotra-niyukt* **8. Jati-gotra-niyukt-ayu**—The beings that have undergone race-status and life-span programme activation are called *Jati-gotra-niyukt-ayu*. The same pattern holds good for other aforesaid bondages **9. Jati-**

naam-gotra-nidhatt—The beings that have undergone race-form-status programming are called *Jati-naam-gotra-nidhatt* **10. Jati-naam-gotra-nidhatt-ayu**—The beings that have undergone race-form-status programming along with life-span programming are called *Jati-naam-gotra-nidhatt-ayu* **11. Jati-naam-gotra-niyukt**—The beings that have undergone race-form-status programme activation are called *Jati-naam-gotra-niyukt*. **12. Jati-naam-gotra-niyukt-ayu**—The beings that have undergone race-form-status and life-span programme activation are called *Jati-naam-gotra-niyukt-ayu*. The same pattern holds good for other aforesaid bondages (*Vritti*, leaves 280-281; Hindi Commentary, part 2, pp 1053-1056)

असख्यात-द्वीप-समुद्र INNUMERABLE ISLANDS AND SEAS

३५. [प्र.] लवणे णं भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए, पत्थडोदए, खुब्भियजले, अखुब्भियजले ?

[उ.] गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए; खुब्भियजले, नो अखुब्भियजले। एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से तेण० गोयमा ! बाहिरिया णं दीव-समुद्दापुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति, संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थरओ अणेगविहिविहाणा, दुगुणा दुगुणप्पमाणाओ जाव अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीव-समुद्दा सयंभूरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !

३५. [प्र] भगवन् ! क्या लवणसमुद्र, उच्छ्रितोदक (उछलते हुए जल वाला) है, प्रस्तृतोदक (सम जल वाला) है, क्षुब्ध जल वाला है अथवा अक्षुब्ध जल वाला है ?

[उ.] गौतम ! लवणसमुद्र उच्छ्रितोदक है, किन्तु प्रस्तृतोदक नही है, वह क्षुब्ध जल वाला है, किन्तु अक्षुब्ध जल वाला नही है। यहाँ से प्रारम्भ करके जिस प्रकार जीवाभिगम सूत्र (तृतीय प्रतिपत्ति) मे कहा है, इसी प्रकार से जान लेना चाहिए, यावत् इस कारण, हे गौतम ! (अढाई द्वीप से) बाहर के (द्वीप-) समुद्र पूर्ण, पूर्ण प्रमाण वाले (अक्षुब्ध एव सम जल वाले), छलाछल भरे हुए, छलकते हुए और समभर घट के रूप मे, (अर्थात् परिपूर्ण भरे हुए घडे के समान) तथा सस्थान से एक ही तरह के स्वरूप वाले, किन्तु विस्तार की अपेक्षा अनेक प्रकार के स्वरूप वाले है, द्विगुण-द्विगुण विस्तार वाले है, (अर्थात् अपने पूर्ववर्ती द्वीप से दुगुने प्रमाण वाले है) यावत् इस तिर्यक्लोक मे असख्येय द्वीप-समुद्र है। सबसे अन्त मे 'स्वयम्भूरमण-समुद्र' है। हे श्रमणायुष्मन् ! इस प्रकार द्वीप और समुद्र कहे गये है।

35. [Q.] *Bhante* ! Does Lavan Samudra (Salt Sea) have surging water (*uchchhritodak*), level water (*prastritodak*), turbulent water or calm water ?

[Ans.] Gautam ! Lavan Samudra (Salt Sea) has surging water (*uchchhritodak*) and not level water (*prastritodak*), it has turbulent

water and not calm water Startıng from thıs poınt read *Jıvabhıgam Sutra* (thırd chapter). and so on up to For thıs reason, Gautam, the outer seas (beyond Adhaı Dveep) are full, filled to capacıty (wıth level and serene waters) filled to the brım, splashıng lıke a filled pıtcher They are sımılaı ın shape but dıfferent ın sıze or double the precedıng one ın sıze and so on up to In thıs transverse world there are ınnumerable such ıslands and seas, the last one beıng Svayambhuraman sea O long lıved one! Thıs ıs what ıs saıd about ıslands and seas

विवेचन · असख्यात द्वीप समुद्र–मध्यलोक मे असख्य द्वीप तथा असख्य समुद्र है। उनमे प्रथम लवण–समुद्र है और सबसे अन्त मे स्वयभूरमण–समुद्र है। लवण–समुद्र मे जल–स्तर ऊपर उछलता है और उसका जल क्षुब्ध रहता है। उसमे ज्वार–भाटा आता रहता है। उसमे वर्षा होती रहती है। समय–क्षेत्र के बाह्यवर्ती समुद्रो का जल-स्तर सम रहता है। उनमे वर्षा नही होती तथा ज्वार–भाटा नही आता। उनमे उदक योनिक जीव और पुद्गल उदक रूप मे उत्पन्न होते रहते है, विनष्ट होते रहते है।

Elaboratıon—In the mıddle or transverse world there are ınnumerable ıslands and seas First of these ıs Lavan Samudra and the last one ıs Svayambhuraman sea The waters ın the Lavan Samudra are surgıng and turbulent It has ebb and tıde as well as raıns The seas beyond the area of tıme (Adhaı Dveep), where humans lıve, have level and serene water There are neıther raıns nor ebb and tıde In these seas water bodıes and matter partıcles contınue to be created and destroyed

द्वीप समुद्रो के शुभ नाम **NAMES OF ISLANDS AND SEAS**

३६. [प्र] दीव–समुद्दा णं भंते ! केवइया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! जावइया लोए सुभा नामा, सुभा रूवा, सुभा गंधा, सुभा रसा, सुभा फासा एवइयाण दीव–समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता। एवं नेयव्वा सुभा नामा, उद्धारो परिणामो सव्वजीवाणं।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ छट्ठे सए : अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥

३६ [प्र] भगवन् ! द्वीप–समुद्रो के कितने नाम है ?

[उ] गौतम ! इस लोक मे जितने भी शुभ नाम है, शुभ रूप, शुभ रस, शुभ गन्ध और शुभ स्पर्श है, उतने ही नाम द्वीप-समुद्रो के है। इस प्रकार सब द्वीप-समुद्र शुभ नाम वाले जानने चाहिए। तथा उद्धार, परिणाम और सर्व जीवो का (द्वीपो एव समुद्रो मे) उत्पाद जानना चाहिए।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर यावत् श्री गौतम स्वामी विचरण करने लगे।

36. [Q.] *Bhante* ! How many are the names of islands and seas ?

[Ans.] Gautam ! Islands and seas have as many names as are all noble names, noble forms, noble tastes, noble smells and noble touches in this universe (*Lok*) This way all island-seas have noble names The numbers, attributes and evolutionary activities of these should be stated

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so. "With these words . and so on up to ascetic Gautam resumed his activities.

विवेचन **द्वीप-समुद्रो के शुभ नाम**–ये समुद्र बहुत-से उत्पल, पद्म, कुमुद, नलिन, सुन्दर एव सुगन्धित पुण्डरीक-महापुण्डरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, केशर एव विकसित पद्मो आदि से युक्त है। स्वस्तिक, श्रीवत्स आदि सुशब्द, पीतादि सुन्दर रूपवाचक शब्द, कपूर आदि सुगन्धवाचक शब्द, मधुररसवाचक शब्द तथा नवनीत आदि मृदुस्पर्शवाचक शब्द जितने भी इस लोक मे है, उतने ही शुभ नामो वाले द्वीप-समुद्र है।

ये द्वीप-समुद्र उद्धार, परिणाम और उत्पाद वाले–ढाई सूक्ष्म उद्धार सागरोपम या २५ क्रोडा-क्रोडी सूक्ष्म उद्धार पल्योपम मे जितने समय होते है, उतने लोक मे द्वीप-समुद्र है, ये द्वीप-समुद्र पृथ्वी, जल, जीव और पुद्गलो के परिणाम वाले है, इनमे जीव पृथ्वीकायिक से यावत् त्रसकायिक रूप में अनेक या अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुके है। *(जीवाभिगम सवृत्तिक पत्र ३७२-३७३)*

॥ छठा शतक · अष्टम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Names—These seas are filled with a variety of blooming lotuses including—*Utpal*, *Padma*, *Kumud*, *Nalin*, beautiful and fragrant *Pundarik-Mahapundarik* with hundred and thousand petals as well as pollen There are island-seas with all the noble names including good sounding names like *Swastika*, *Shrivatsa*, names depicting good colour like yellow, names depicting good smell like camphor; names depicting good taste like sweet; and names depicting good touch like butter

The number of island-seas in this universe is equal to the number of *Samayas* in two and a half *Sukshma Uddhar Palyopam* or 25 *Kotakoti Sukshma Uddhar Palyopam* These have attributes of earth, water, living beings and matter Many beings have taken birth many or infinite times in these island-seas in the form of earth-bodied to mobile beings (*Jivabhigam Sutra with Vritti*, leaves 372-373)

● END OF THE EIGHTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : नवम उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : NINTH LESSON

कर्म KARMA

कर्मबन्ध के प्रकार TYPES OF KARMIC BONDAGE

१. [प्र.] जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ?

[उ.] गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा, छव्विहबंधए वा। बंधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो।

१. [प्र.] भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधता हुआ जीव कितनी कर्म-प्रकृतियो को बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! सात प्रकृतियो को बाँधता है, आठ प्रकार को बाँधता है अथवा छह प्रकृतियो को बाँधता है। यहाँ प्रज्ञापनासूत्र का बन्ध-उद्देशक कहना चाहिए।

1. [Q.] *Bhante* ! While acquiring bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*), how many species of *karma* (*karma-prakriti*) does a being (*jiva*) acquire ?

[Ans.] Gautam ! He acquires bondage of seven species, eight species or six species. Here the lesson titled Bandh from *Prajnapana Sutra* should be quoted

विवेचन : प्रज्ञापना सूत्रानुसार स्पष्टीकरण—जिस समय जीव का आयुष्यबन्धकाल नही होता, उस समय वह ज्ञानावरणीय कर्म को बाँधते समय आयुष्यकर्म को छोडकर सात कर्मो को बाँधता है, आयुष्य के बन्धकाल में आठ कर्मप्रकृतियो को बाँधता है, किन्तु सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान की अवस्था मे मोहनीय कर्म और आयुकर्म को नही बाँधता, इसलिए वहाँ ज्ञानावरणीय कर्म बाँधता हुआ जीव छह कर्मप्रकृतियो को बाँधता है। *(प्रज्ञापना पद २४, बन्धोद्देशक)*

Elaboration—Explanation according to Prajnapana Sutra—While acquiring bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*), if it is not the proper time for acquiring bondage of *ayushya karma* (life-span determining *karma*) a living being binds seven out of the total eight species of *karma* If the time is ripe for acquiring *ayushya karma*, he binds all the eight species However, if he is at the level of *Sukshma Samparaya Gunasthan* he does not bind *Mohaniya karma* (deluding *karma*) and *Ayushya karma*; therefore at that level he binds only six species while acquiring bondage of *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) *(Prajnapana Sutra, Bandhoddeshak, verse 24)*

महर्द्धिक देवों की विकुर्वणा SELF-MUTATION BY GODS WITH GREAT OPULENCE

२. [प्र.] देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?

[उ.] गोयमा ! नो इणट्ठेसमट्ठे।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव बाहर के पुद्गलो को ग्रहण किये बिना एक वर्ण वाले और एक रूप (एक आकार वाले) (स्वशरीरादि) की विकुर्वणा करने मे समर्थ है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

2. [Q.] *Bhante* ! Is a god with great opulence and so on up to great influence capable of self-mutation (*vikurvana*) into a body of single colour and single form without acquiring external matter ?

[Ans.] Gautam ! This is not possible

३. [प्र.] देवे ण भंते ! बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ?

[उ] हंता, पभू।

३. [प्र] भगवन् ! क्या वह देव बाहर के पुद्गलो को ग्रहण करके (उपर्युक्त रूप से) विकुर्वणा करने मे समर्थ है ?

[उ] हाँ गौतम ! हाँ, (वह ऐसा करने मे) समर्थ है।

3. [Q.] *Bhante* ! Is a he capable of the said self-mutation (*vikurvana*) by acquiring external matter ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He is capable of doing that

४. [प्र.] से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वति, अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?

[उ.] गोयमा ! नो इहगते पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगते पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वति, नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति।

४. [प्र.] भगवन् ! क्या वह देव इहगत (यहाँ मनुष्यलोक या पार्श्ववर्ती क्षेत्र मे रहे हुए) पुद्गलों को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है अथवा तत्रगत (वहाँ–देवलोक मे देव के पार्श्ववर्ती क्षेत्र रहे हुए) पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है या अन्यत्रगत (किसी अन्य स्थान मे रहे हुए) पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है ?

[उ.] गौतम ! वह देव, यहाँ रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा नही करता, वह वहाँ (देवलोक मे रहे हुए तथा जहाँ विकुर्वणा करता है वहाँ) के पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है, किन्तु अन्यत्र रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा नही करता।

4. [Q.] *Bhante* ! Does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from here (the world of humans or adjoining areas) ? Does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from there (the divine realm or adjoining areas) ? Or does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from elsewhere (some area other then the said two areas) ?

[Ans.] Gautam ! He does not perform the said self-mutation by acquiring matter particles from here He performs the said self-mutation by acquiring matter particles from there (the divine realm or the place where he is performing the act) He also does not perform the said self-mutation by acquiring matter particles from elsewhere

५. एवं एएणं गमेणं जाव एगवण्णं एगरूवं, एगवण्णं अणेगरूवं, अणेगवण्णं एगरूवं, अणेगवण्णं अणेगरूवं, चउण्हं चउभंगो।

५. इस प्रकार इस गम (आलापक) द्वारा विकुर्वणा के चार भग कहने चाहिए--(१) एक वर्ण वाला, एक आकार (रूप) वाला, (२) एक वर्ण वाला, अनेक आकार वाला, (३) अनेक वर्ण वाला और एक आकार वाला, तथा (४) अनेक वर्ण वाला और अनेक आकार वाला। (अर्थात् वह इन चारो प्रकार के रूपो को विकुर्वित करने मे समर्थ है।)

5. In the same way four alternatives of self-mutation described in the aforesaid statement should be stated—(1) of single colour and single form (or shape), (2) of single colour and many forms (or shapes), (3) of many colours and single form (or shape), and (4) of many colours and many forms (or shapes)

६. [प्र.] देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामित्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामित्ताए ?

[उ.] गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, परियाइत्ता पभू।

६. [प्र.] भगवन् ! क्या महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव, बाहर के पुद्गलो को ग्रहण किये बिना काले पुद्गल को नीले पुद्गल के रूप मे और नीले पुद्गल को काले पुद्गल के रूप मे परिणत करने मे समर्थ है ?

[उ] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है, किन्तु बाहरी पुद्गलो को ग्रहण करके देव वैसा करने मे समर्थ है।

6. [Q.] *Bhante* ! Is a god with great opulence and so on up to. great influence capable of transforming black matter into blue matter and blue matter into black matter without acquiring external matter particles ?

[Ans.] Gautam ! This is not possible However, he is capable of doing that by acquiring external matter particles

७. [प्र.] से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले० ?

[उ.] तं चेव, नवरं परिणामेति त्ति भाणियव्वं।

८. [१] एवं कालगपोग्गलं लोहियपोग्गलत्ताए। [२] एवं कालएणं जाव सुक्किलं।

९. एवं णीलएणं जाव सुक्किलं।

१०. एवं लोहिएणं जाव सुक्किलं।

११. एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं।

७. [प्र.] भगवन् ! वह देव इहगत, तत्रगत या अन्यत्रगत पुद्गलो (मे से किन) को ग्रहण करके वैसा करने मे समर्थ है ?

[उ.] गौतम ! वह इहगत और अन्यत्रगत पुद्गलो को ग्रहण करके वैसा नही कर सकता, किन्तु तत्र (देवलोक–) गत पुद्गलो को ग्रहण करके वैसा परिणत करने मे समर्थ है। (विशेष यह है कि यहाँ **'विकुर्वित करने मे'** के बदले **'परिणत करने मे'** कहना चाहिए।)

८. [१] इसी प्रकार काले पुद्गल को लाल पुद्गल के रूप मे (परिणत करने मे) समर्थ है। [२] इसी प्रकार काले पुद्गल के साथ यावत् शुक्ल पुद्गल तक समझना।

९. इसी प्रकार नीले पुद्गल के साथ यावत् शुक्ल पुद्गल तक जानना।

१०. इसी प्रकार लाल पुद्गल को यावत् शुक्ल तक।

११. इसी प्रकार पीले पुद्गल को यावत् शुक्ल तक (परिणत करने मे) समर्थ है।

7. [Q.] *Bhante* ! By acquiring matter particles from which place—existing here (*ihagat*), there (*tatragat*) or elsewhere (*anyatragat*)—is he capable of doing so ?

[Ans.] Gautam ! He cannot do so by acquiring matter particles existing here (*ihagat*) and elsewhere (*anyatragat*) but is capable of doing so by acquiring matter particles existing there (*tatragat*) (instead of self-mutation transforming should be stated here)

8. [1] In the same way he is capable of transforming black matter into red matter. [2] In the same way he is capable of transforming black matter into matter with colours up to white

9. The same should be repeated for blue matter and so on up to white matter.

10. The same should be repeated for red matter and so on up to white matter

11. The same should be repeated for yellow matter .. and so on up to . white matter.

१२. एवं एताए परिवाडीए गंध–रस–फास० कक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए।

एवं दो दो गरुय–लहुय २, सीय–उसिण २, णिद्ध–लुक्ख २, वण्णाइ सव्वत्थ परिणामेइ। आलावगा य दो दो–पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता।

१२. इसी प्रकार इस क्रम (परिपाटी) के अनुसार गन्ध, रस और स्पर्श के विषय मे भी समझना चाहिए। यथा–(यावत्) कर्कश स्पर्श वाले पुद्‌गल को मृदु (कोमल) स्पर्श वाले (पुद्‌गल मे परिणत करने मे समर्थ है।)

इसी प्रकार दो–दो विरुद्ध गुणो को अर्थात् गुरु और लघु, शीत और उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष, वर्ण आदि को वह सर्वत्र परिणमाता है। 'परिणमाता है' इस क्रिया के साथ यहाँ इस प्रकार दो–दो आलापक कहने चाहिए, यथा–(१) पुद्‌गलो को ग्रहण करके परिणमाता है, (२) पुद्‌गलो को ग्रहण किये बिना नही परिणमाता।

12. The same pattern is applicable to matter with properties of smell, taste and touch in this order and so on up to capable of transforming matter with hard touch into matter with soft touch

In the same way he is capable of transforming matter with pairs of opposite qualities—heavy-light, cold-hot, smooth-rough, etc (one into the other) With this act of transformation two statements should be added—(1) transforms by acquiring matter particles, and (2) does not transform without acquiring matter particles

विवेचन सूत्र २ से १२ तक का निष्कर्ष–महर्द्धिक यावत् महाप्रभावशाली देव देवलोक मे रहे हुए पुद्‌गलो को ग्रहण करके उत्तरवैक्रियरूप बना सकता (विकुर्वणा करता) है और फिर दूसरे स्थान मे जाता है, किन्तु इहगत अर्थात् प्रश्नकार के समीपस्थ क्षेत्र मे रहे हुए पुद्‌गलो को तथा अन्यत्रगत–प्रज्ञापक के क्षेत्र और देव के स्थान से भिन्न क्षेत्र मे रहे हुए पुद्‌गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा नही कर सकता।

उक्त सूत्रानुसार पाँच वर्ण के १०, दो गध का एक, पाँच रस के १० तथा आठ स्पर्श के चार विकल्प करने पर कुल २५ भग (विकल्प) होते है। *(विस्तार के लिए देखे, भगवती सूत्र भाग २ पृ ९५ आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर)*

Elaboration—A god with great opulence and so on up to. great influence is capable of self-mutation (vikurvana) into a secondary transmutated body by acquiring matter particles from the divine realm He then goes to other places But he is not capable of performing self-mutation by acquiring matter particles from here (place where the question has been raised) or elsewhere (other than his own divine realm)

According to the aforesaid aphorism there are 25 alternatives—10 for five colours, 1 for two tastes, 10 for five tastes, and 4 for eight touches. (for more details refer to Bhagavati Sutra, part 2, p 95, Agam Prakashan Samiti, Beawar)

देवो की जानने–देखने की क्षमता CAPACITY OF GODS TO SEE AND KNOW

१३. [प्र. १] अविसुद्धलेसे णं भंते ! देवे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं देविं अन्नयरं जाणति पासति ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे १।

१३. [प्र. १] भगवन् ! क्या अविशुद्ध लेश्या वाला देव असमवहत–(उपयोगरहित) आत्मा से अविशुद्ध लेश्या वाले देव को या देवी को या अन्यतर को (–इन दोनो मे से किसी एक को) जानता और देखता है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

13. [Q. 1] *Bhante* ! Does a god with impure *leshya* (complexion of soul) and a soul devoid of application (*asamvahat* or *upayogarahit*) know and see a god and a goddess or either of them with impure *leshya* ?

[Ans.] Gautam ! That is not possible

[२] एवं अविसुद्धलेसेदेवे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं० ? २ अविसुद्धलेसेदेवे समोहएणं अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं० ? ३। अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं० ? ४। अविसुद्धलेसेदेवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं० ? ५। अविसुद्धलेसेदेवे समोहयासमोहएणंअप्पाणेणं विसुद्धलेस देवं० ? ६। विसुद्धलेसेदेवे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं० ७। विसुद्धलेसेदेवे असमोहएणं विसुद्धलेसं देव० ८।

[प्र. ९] विसुद्धलेसे णं भंते ! देवे समोहएणं० अविसुद्धलेसं देवं० जाणइ० ?

[उ.] हंता, जाणइ०।

[प्र. १०] एवं विसुद्धलेसेदेवे समोहएणं० विसुद्धलेसं देवं० जाणइ० ?

[उ.] हंता, जाणइ०।

[प्र. ११] विसुद्धलेसेदेवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं जाणइ २ ?

[उ.] हंता जाणइ०।

[प्र. १२] विसुद्धलेसेदेवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं० ?

[उ.] हंता, जाणइ०।

एवं हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ, उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ पासइ।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ छट्ठ सए : नवमो उद्देसो समत्तो ॥

[२] (२) इसी तरह अविशुद्ध लेश्या वाला देव अनुपयुक्त (असमवहत) आत्मा से, विशुद्ध लेश्या वाले देव को, देवी को या अन्यतर को जानता और देखता है? (३) अविशुद्ध लेश्या वाला देव उपयुक्त आत्मा से अविशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है? (४) अविशुद्ध लेश्या वाला देव उपयुक्त आत्मा से विशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है? (५) अविशुद्ध लेश्या वाला देव उपयुक्तानुपयुक्त आत्मा से अविशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है? (६) अविशुद्ध लेश्या वाला देव, उपयुक्तानुपयुक्त आत्मा से विशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है? (उक्त छह विकल्पो वाले देव मिथ्यात्वी होने से विभग ज्ञानी होते है।) (७) विशुद्ध लेश्या वाले देव, अनुपयुक्त आत्मा द्वारा, अविशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है? (८) विशुद्ध लेश्या वाला देव, अनुपयुक्त आत्मा द्वारा, विशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है? [आठो प्रश्नो का उत्तर] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है। (अर्थात् नही जानता-देखता।)

[प्र ९] भगवन् ! विशुद्ध लेश्या वाला देव क्या उपयुक्त आत्मा से अविशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है?

[उ.] हाँ गौतम ! ऐसा देव जानता और देखता है।

[प्र १०] इसी प्रकार क्या विशुद्ध लेश्या वाला देव, उपयुक्त आत्मा से विशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है?

[उ] हाँ गौतम ! वह जानता-देखता है।

[प्र. ११] विशुद्ध लेश्या वाला देव, उपयुक्तानुपयुक्त आत्मा से, अविशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है?

[उ] हाँ गौतम ! वह जानता और देखता है।

[प्र. १२] विशुद्ध लेश्या वाला देव, उपयुक्तानुपयुक्त आत्मा से, विशुद्ध लेश्या वाले देव, देवी या अन्यतर को जानता-देखता है?

[उ.] किन्तु पीछे (ऊपर के) जो चार भग कहे गये है, उन चार भगो वाले देव, जानते और देखते है।

यो पहले (निचले) जो आठ भग कहे गये है, उन आठ भगो वाले देव नही जानते-देखते।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर श्री गौतम स्वामी यावत् विचरण करने लगे। (इन चार विकल्पो वाले देव सम्यग् दृष्टि होने के कारण जानते-देखते है।)

Also, the same answer applies to the following questions—[2] Does a god with impure *leshya* and a soul devoid of application (*asamvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with pure *leshya* ? [3] Does a god with impure *leshya* and a soul capable of application (*samvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with impure *leshya* ? [4] Does a god with impure *leshya* (soul-complexion) and a soul capable of application (*samvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with pure *leshya* ? [5] Does a god with impure *leshya* and a soul capable and incapable of application (*samvahat-asamvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with impure *leshya* ? [6] Does a god with impure *leshya* and a soul capable and incapable of application (*samvahat-asamvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with pure *leshya* ? [7] Does a god with pure *leshya* (soul-complexion) and a soul incapable of application (*asamvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with impure *leshya* ? [8] Does a god with pure *leshya* and a soul incapable of application (*asamvahat atma*) know and see a god and a goddess or either of them with pure *leshya* ?

[Q. 9] *Bhante* ! Does a god with pure *leshya* and a soul capable of application (*samvahat* or *upayogasahit*) know and see a god and a goddess or either of them with impure *leshya* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He knows and sees

[Q. 10] In the same way does a god with pure *leshya* and a soul capable of application (*samvahat* or *upayogasahit*) know and see a god and a goddess or either of them with pure *leshya* (soul-complexion) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He knows and sees

[Q. 11] Does a god with pure *leshya* and a soul capable and incapable of application (*samvahat-asamvahat*) know and see a god and a goddess or either of them with impure *leshya* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He knows and sees

[Q. 12] Does a god with pure *leshya* and a soul capable and incapable of application (*samvahat-asamvahat*) know and see a god and a goddess or either of them with pure *leshya* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He knows and sees

Thus the first eight types of gods do not know and see but the last four types of gods do know and see

"*Bhante*! Indeed that is so Indeed that is so" With these words . and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विशेषार्थ : अविशुद्ध लेश्या-कृष्ण, नील, कापोत लेश्या वाला देव। वह मिथ्यात्वी होने से विभगज्ञानी होता है। **समवहत**-उपभोग सहित आत्मा। *(वृत्ति पत्रांक २८४)*

॥ छठा शतक नवम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Avishuddha leshya—impure *leshya*—black, blue and gray (*kapot*) *leshyas* Being unrighteous (*mithyatvi*), the gods with these *leshyas* are with pervert knowledge (*vibhang jnana*) **Samvahat**—with *upayoga* or application (a soul with an inclination to know and see)

● END OF THE NINTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

छठा शतक : दशम उद्देशक
SIXTH SHATAK (Chapter Six) : TENTH LESSON

अन्यतीर्थी ANYATIRTHI (HERETICS)

सुख-दुःख का प्रदर्शन सम्भव नही DISPLAY OF PLEASURE AND PAIN

१. [प्र. १] अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेति—जावइया रायगिहे नयरे जीवा एवइयाणं जीवाणं नो चक्किया केइ सुहं वा दुहं वा जाव कोलट्ठिगमायमवि निप्फावमायमवि कलममायमवि मासमायमवि मुग्गमायमवि जूयामायमवि लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता उवदंसित्तए, से कहमेयं भंते ! एवं ?

[उ.] गोयमा ! जं ण ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि, सव्वलोए वि य णं सव्वजीवाणं णो चक्किया केइ सुहं वा तं चेव जाव उवदंसित्तए।

१. [प्र १] भगवन् ! अन्यतीर्थिक इस प्रकार कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है कि–'राजगृह नगर मे जितने जीव है, उन सबके दु ख या सुख को **कोलास्थिक** (बेर की गुठली) जितना भी, **बाल**–(निष्पाव नामक धान्य) जितना भी, **कलाय** (ग्वार के दाने या काली दाल अथवा मटर या चावल) जितना भी, उडद के जितना भी, मूँग-प्रमाण, यूका (जू) प्रमाण, लिक्षा (लीख) प्रमाण भी बाहर निकालकर नही दिखा सकता। भगवन् ! यह बात यो कैसे हो सकती है ?

[उ] गौतम ! जो अन्यतीर्थिक उपर्युक्त प्रकार से कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है, वे मिथ्या कहते है। हे गौतम ! मै इस प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि (केवल राजगृह नगर मे ही नही) सम्पूर्ण लोक मे रहे हुए सर्व जीवो के सुख या दु ख को कोई भी पुरुष उपर्युक्तरूप से यावत् किसी भी प्रमाण मे बाहर निकालकर नही दिखा सकता।

1. [Q. 1] *Bhante* ! People of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that—It is not possible to bring out and display (physically) the misery and happiness of all the living beings in Rajagriha city even to the extant matching the size of a berry seed (*Kolasthik*), grain of *Baal* (a type of corn), pea, rice, *Udad* (a pulse), *Moong* (green gram), a louse (*joon*), or even a nit (*leekh*). *Bhante* ! How is it so ?

[Ans.] Gautam ! What the heretics say (*akhyanti*) and so on up to . propagate (*prarupayanti*) is not true Gautam ! I say (*akhyanti*). and so on up to. propagate (*prarupayanti*) that it is not possible for any person to bring out and display (physically) the misery and happiness of all the

living beings in the whole universe (what to say of Rajagriha city) to any extant as aforesaid.

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे जाव–विसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नत्ते। देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभागे एगं महं सविलेवणं गंधसमुग्गगं गहाय तं अवद्दालेति, तं अवद्दालित्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, से नूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ?

हंता, फुडे, चक्किया णं गोयमा ! केइ तेसिं घाणपोग्गलाणं कोलट्ठियमायमवि जाव उवदंसित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे। से तेणट्ठेणं जाव उवदंसेत्तए।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ?

[उ] गौतम ! यह जम्बूद्वीप नाम द्वीप एक लाख योजन का लम्बा-चौडा है। इसकी परिधि ३ लाख १६ हजार २२७ योजन १२८ धनुष, १३ $\frac{1}{2}$ अगुल से कुछ अधिक है। कोई महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव एक बडे विलेपन वाले (सुगधित चूर्ण) गन्धद्रव्य के डिब्बे को लेकर उघाडे और उघाड कर तीन चुटकी बजाए (लगभग एक सेकड) उतने समय मे उपर्युक्त जम्बूद्वीप की ११ बार परिक्रमा करके वापस शीघ्र आए तो हे गौतम ! (मै तुमसे पूछता हूँ–) उस देव की इस प्रकार की शीघ्र गति से गन्ध पुद्गलों के स्पर्श से यह सम्पूर्ण जम्बूद्वीप स्पृष्ट हुआ या नही ?

(गौतम–) हाँ भगवन् ! वह स्पृष्ट हो गया। (भगवान–) गौतम ! कोई पुरुष उन गन्धपुद्गलो को बेर की गुठली जितना भी, यावत् लिक्षा जितना भी दिखलाने मे समर्थ है ? (गौतम–) भगवन् ! यह अर्थ समर्थ नही है। (भगवन्–) हे गौतम ! इसी प्रकार जीव के सुख-दु ख को भी बाहर निकालकर बतलाने में, यावत् कोई भी व्यक्ति समर्थ नही है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! The length and breadth of this Jambudveep is one hundred thousand *Yojans* Its circumference is slightly more than three hundred sixteen thousand two hundred twenty seven (3,16,227) *Yojans*, three *Kos* (a linear measure equal to 2 miles), twenty eight *Dhanush* (a linear measure equivalent to four cubits), and thirteen and a half *Angul* (a linear measurement equal to the width of a finger) Suppose a god with great opulence. . and so on up to great influence takes a box of fragrant paste, removes its cover and carrying it goes around this Jambudveep 11 times and returns within the time taken in snapping his fingers thrice (Now, I ask you—) Gautam ! Due to this speedy movement of that god, did the smell particles of the fragrant paste touch the whole Jambudveep or not ?

(Gautam) Yes, *Bhante* ! It is so touched (*Bhagavan*) Gautam ! Is it possible for some person to bring out and display (physically) those smell particles to the extant matching the size of a berry seed (*Kolasthik*).. and so on up to a nit (*leekh*) ? (Gautam) *Bhante* ! That is not possible. (*Bhagavan*) Gautam ! In the same way it is not possible for any person to bring out and display (physically) the misery and happiness of living beings

सार : सुख-दुःख मानसिक संवेदन है, उन्हे पौद्गलिक पदार्थ के समान आकार देकर प्रदर्शित नही किया जा सकता। यद्यपि उनको प्रत्यक्ष दर्शन, अनुमान और सूक्ष्म छायांक (फोटोग्राफी) द्वारा जाना जा सकता है, किन्तु आकार मे नही बताया जा सकता।

Gist—Happiness and sorrow are feelings or psychological activities It is not possible to display them in some physical form like matter They can be assessed through direct perception, hypothetically or through micro-photography (or some other advanced technology) but cannot be physically shown

जीव और प्राण का स्वरूप **SOUL AND LIFE-FORCE**

२. [प्र.] जीवे णं भंते ! जीवे ? जीवे जीवे ?

[उ.] गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव चैतन्य है या चैतन्य जीव है ?

[उ.] गौतम ! जीव तो नियमतः (निश्चितरूप से) जीव (चैतन्य स्वरूप है) और जीव (चैतन्य) भी निश्चितरूप से जीवरूप है।

2. [Q.] *Bhante* ! Is soul (*jiva*) sentience (*jiva*) or is sentience soul ?

[Ans.] Gautam ! As a rule soul (*jiva*) is sentience (*jiva*) and also sentience is soul

३. [प्र.] जीवे णं भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवे ?

[उ.] गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए।

४. [प्र.] जीवे णं भंते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ?

[उ.] गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे, सिय णो असुरकुमारे।

५. एवं दंडओ णेयव्वो जाव वेमाणियाणं।

३. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव नैरयिक है या नैरयिक जीव है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक तो नियमतः जीव है और जीव तो कदाचित् नैरयिक भी हो सकता है, कदाचित् नैरयिक से भिन्न भी हो सकता है।

४. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव असुरकुमार है या असुरकुमार जीव है ?

[उ] गौतम ! असुरकुमार तो निश्चित ही जीव है, किन्तु जीव तो कदाचित् असुरकुमार भी होता है, कदाचित् असुरकुमार नही भी होता।

५. इसी प्रकार वैमानिक तक सभी दण्डक (आलापक) कहने चाहिए।

3. *Bhante* ! Is soul (*jiva*) infernal being (*nairayik*) or is infernal-being soul ?

[Ans.] Gautam ! As a rule infernal being is soul but soul (*jiva*) may be an infernal being or sometimes other than an infernal being

4. Bhante ! Is soul (*jiva*) *Asur Kumar* (a class of divine beings) or is *Asur Kumar* soul ?

[Ans.] Gautam ! As a rule *Asur Kumar* is soul but soul (*jiva*) may be an *Asur Kumar* or sometimes not an *Asur Kumar*

5. Same statement should be repeated for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik*

६. [प्र] जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?

[उ.] गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति।

६. [प्र] भगवन् ! जो जीता–प्राण धारण करता है, वह जीव कहलाता है या जो जीव है, वह जीता–प्राण धारण करता है ?

[उ] गौतम ! जो जीता–प्राण धारण करता है, वह तो निश्चित ही जीव कहलाता है, किन्तु जो जीव होता है, वह प्राण धारण करता (जीता) भी है और कदाचित् प्राण धारण नही भी करता। (सिद्ध आत्मा की अपेक्षा, चूँकि वे जीव होते हुए भी द्रव्य प्राण धारण नही करते।)

6. [Q.] *Bhante* ! Is one who lives called *jiva* (soul) or is it soul that is called a living being (or one possessing life force) ?

[Ans.] Gautam ! As a rule one who lives is called *jiva* (soul) but soul is sometimes a living being and sometimes not (This relates to *Siddha* who, although a soul, does not exist as a physical living being)

७. [प्र.] जीवति भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवति ?

[उ.] गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए।

८. एवं दंडओ नेयव्वो जाव वेमाणियाणं।

७. [प्र.] भगवन् ! जो जीता है, वह नैरयिक कहलाता है या जो नैरयिक होता है, वह जीता–प्राण धारण करता है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक तो निश्चित ही जीता है, किन्तु जो जीता है, वह नैरयिक भी होता है और अनैरयिक भी होता है।

८. इसी प्रकार यावत् वैमानिकपर्यन्त सभी दण्डक (आलापक) कहने चाहिए।

7. [Q.] *Bhante* ! Is one who lives called infernal being (*nairayik*) or is an infernal being called living ?

[Ans.] Gautam ! As a rule an infernal being is called living but one who lives is sometimes infernal being (*nairayik*) and sometimes not

8. Same statements should be repeated for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik*

विवेचन . जीव द्रव्य है, चैतन्य उसका गुण है। गुण–गुणी मे अविनाभाव सम्बन्ध है। नरक आदि जीव के पर्याय है, पर्याय के साथ अविनाभाव सम्बन्ध नही होता जीवन का मूल आधार आयुष्य कर्म है। कोई भी ससारी जीव आयुष्य कर्म के बिना नही रहता।

Elaboration—*Jiva* (soul) is an entity and sentience is its attribute An object and its attributes have a perennial relationship Infernal and other states are modes of soul and modes do not have such perennial relationship with the object

९. [प्र.] भवसिद्धिए णं भंते ! नेरइए ? नेरइए भवसिद्धिए ?

[उ] गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरइए, सिय अनेरइए। नेरतिए वि य सिय भवसिद्धिए, सिय अभवसिद्धिए।

१०. एवं दंडओ जाव वेमाणियाण।

९ [प्र] भगवन् ! जो भवसिद्धिक होता है, वह नैरयिक होता है या जो नैरयिक होता है, वह भवसिद्धिक होता है ?

[उ.] गौतम ! जो भवसिद्धिक (भव्य) होता है, वह नैरयिक भी होता है और अनैरयिक भी होता है। तथा जो नैरयिक होता है, वह भवसिद्धिक भी होता है और अभवसिद्धिक भी होता है।

१०. इसी प्रकार यावत् वैमानिकपर्यन्त सभी दण्डक (आलापक) कहने चाहिए।

9. [Q.] *Bhante* ! Is a *bhavasiddhik* (destined to be liberated) an infernal being or is an infernal being a *bhavasiddhik* ?

[Ans.] Gautam ! A *bhavasiddhik* (destined to be liberated) can be an infernal being and some other being as well An infernal being can be a *bhavasiddhik* as well as an *abhavasiddhik* (not destined to be liberated).

10. Same statements should be repeated for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik*

जीवो की सुख-दुःख धारणा CONCEPT OF HAPPINESS AND SORROW

११. [प्र. १] अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति-"एवं खलु सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति से कहमेयं भंते ! एवं ?

[उ.] गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया जाव मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेदणं वेदेति, आहच्च सायं। अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतसायं वेदणं वेदेंति, आहच्च असायं वेयणं वेदेति। अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेयणं वेयंति, आहच्च सायमसायं।

११. [प्र १] भगवन् ! अन्यतीर्थिक इस प्रकार कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है कि सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, एकान्तदु खरूप वेदना को वेदते (अनुभव करते) है, तो भगवन् ! ऐसा कैसे हो सकता है ?

[उ] गौतम ! अन्यतीर्थिक जो यह कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है, वे मिथ्या कहते है। हे गौतम ! मै इस प्रकार कहता हूँ, यावत् प्ररूपणा करता हूँ-कितने ही प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, एकान्तदु ख रूप वेदना वेदते है और कदाचित् साता (सुख) रूप वेदना भी वेदते है, कितने ही प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, एकान्तसाता (सुख) रूप वेदना वेदते है और कदाचित् असाता (दु ख) रूप वेदना भी वेदते है, तथा कितने ही प्राण, भूत, जीव और सत्त्व विमात्रा (विविध प्रकार) से वेदना वेदते है, (अर्थात्-) कदाचित् सातारूप और कदाचित् असातारूप (वेदना वेदते है।)

11. [Q. 1] *Bhante* ! People of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that—all *praan* (two to four sensed beings, beings), *bhoot* (plant bodied beings, organisms), *jiva* (five sensed beings, souls), and *sattva* (immobile beings, entities) exclusively suffer pain *Bhante* ! How is it so ?

[Ans.] Gautam ! What the people of other faiths (*anyatirthik*) or heretics say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) is wrong. I say (*akhyanti*) and so on up to propagate (*prarupayanti*) that—some *praan* (two to four sensed beings, beings), *bhoot* (plant bodied beings, organisms), *jiva* (five sensed beings, souls), and *sattva* (immobile beings, entities) exclusively suffer pain (*asaata*) but sometimes experience happiness (*saata*) Some *praan*, *bhoot*, *jiva*, and *sattva* exclusively experience happiness but sometimes experience pain And some *praan*, *bhoot*, *jiva*, and *sattva* have diverse experiences (they sometimes suffer happiness and sometimes pain)

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया एगतदुक्खं वेयणं वेयंति, आहच्च सायं। भवणवति–वाणमंतर–जोइस–वेमाणिया एगंतसायं वेदणं वेदेंति, आहच्च असायं। पुढविक्काइया जाव मणुस्सा वेमायाए वेदणं वेदेंति, आहच्च सायमसायं। से तेणट्ठेणं।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कथन किया जाता है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव, एकान्तदु खरूप वेदना वेदते है और कदाचित् सातारूप वेदना भी वेदते है। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक एकान्तसाता (सुख) रूप वेदना वेदते है, किन्तु कदाचित् असातारूप वेदना भी वेदते है। तथा पृथ्वीकायिक जीवो से लेकर मनुष्यो पर्यन्त विमात्रा से वेदना वेदते है। (अर्थात्) कदाचित् सुख और कदाचित् दु ख वेदते है। इसी कारण से, हे गौतम ! उपर्युक्त रूप से कहा गया है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings exclusively suffer pain (*asaata*) but sometimes experience happiness (*saata*) *Bhavan-pati* (abode dwelling), *Vanavyantar* (interstitial), *Jyotishk* (stellar) and *Vaimanik* (celestial vehicular) gods exclusively experience happiness but sometimes experience pain And living beings from earth-bodied ones to humans have diverse experiences (they sometimes suffer happiness and sometimes pain) That is the reason, Gautam, for stating as aforesaid.

विवेचन प्राचीन भारतीय दर्शनो मे साख्य (योग) और बौद्ध दर्शन एकान्त दु खवादी दर्शन है। दुःखमेवं सर्वं विवेकिन. (पातजल २/१५) किन्तु जैन दर्शन सापेक्षवादी है, सुख–दु ख दोनो को ही एकान्त सापेक्ष मानता है।

Elaboration—In the ancient Indian philosophies *Sankhya* (*Yoga*) philosophy and Buddhist philosophy are based exclusively on sufferance. But Jain philosophy is relativistic as it considers happiness and sorrow to be absolutely relative states

नैरयिकादि का आहार INTAKE OF INFERNAL AND OTHER BEINGS

१२. [प्र.] नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ते किं आयसरीरक्खेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ?

[उ.] गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो परंपरखेत्तोगाढे।

१३. जहा नेरइया तहा जाव वेमाणियाणं दंडओ।

१२. [प्र.] भगवन् ! नैरयिक जीव, जिन पुद्गलो का आत्मा (अपने) द्वारा ग्रहण करके आहार करते है, क्या वे आत्म–शरीर क्षेत्रावगाढ (जिन आकाशप्रदेशो मे अपना शरीर है, उन्ही प्रदेशो मे

स्थित) पुद्गलों को आत्मा द्वारा ग्रहण करते है? या अनन्तरक्षेत्रावगाढ (आत्मा से दूर) पुद्गलो को आत्मा द्वारा ग्रहण करते है? अथवा परम्परक्षेत्रावगाढ (परक्षेत्र) पुद्गलो को आत्मा द्वारा ग्रहण करते है?

[उ.] गौतम! वे आत्म-शरीर-क्षेत्रावगाढ पुद्गलो को आत्मा द्वारा ग्रहण करते है, किन्तु न तो अनन्तर क्षेत्रावगाढ पुद्गलो को आत्मा द्वारा ग्रहण करते है और न ही परम्परक्षेत्रावगाढ पुद्गलो को आत्मा द्वारा ग्रहण करते है।

१३. जिस प्रकार नैरयिको के लिए कहा, उसी प्रकार यावत् वैमानिक-पर्यन्त दण्डक (आलापक) कहना चाहिए।

12. [Q.] *Bhante!* Infernal beings have intake of matter particles through the soul (self) Do they have this intake of matter particles through soul from the area occupied by their own body (*atma kshetravagadh*)? Or from an area away from their own body (*anantar kshetravagadh*)? Or from an area far away from their bodies (*parampar kshetravagadh*)?

[Ans.] Gautam! They have this intake of matter particles through soul from the area occupied by their own body (*atma kshetravagadh*) but neither form an area away from their own body (*anantar kshetravagadh*) nor from an area far away from their bodies (*parampar kshetravagadh*).

13. As has been said about infernal beings so should be repeated for all *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik*

केवली अनिन्द्रिय होते है OMNISCIENT IS WITHOUT SENSE ORGANS

१४. [प्र. १] केवली णं भंते! आयाणेहिं जाणति पासति?

[उ.] गोयमा! नो इणट्ठे०।

१४. [प्र. १] भगवन्! क्या केवली भगवान इन्द्रियो द्वारा जानते-देखते है?

[उ.] गौतम! यह अर्थ समर्थ नही है।

14. [Q. 1] *Bhante!* Do the omniscient know and see with the help of sense organs?

[Ans.] Gautam! That is not correct

[प्र. २] से केणट्ठेणं?

[उ.] गोयमा! केवली णं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणति अमियं पि जाणति जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स, से तेणट्ठेणं।

[प्र. २] भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! केवली भगवान पूर्व दिशा मे मित (परिमित) को भी जानते है और अमित (अपरिमित) को भी जानते है, यावत् केवली का (ज्ञान और) दर्शन निर्वृत्त, (परिपूर्ण और निरावरण) होता है। हे गौतम ! इस कारण से ऐसा कहा जाता है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] The omniscient knows the limited as well as the unlimited in the east and so on up to the (knowledge and) perception of the omniscient is unobstructed (complete and unveiled). Gautam ! That is why it is so ?

उपसहार की संग्रहणी गाथा **CONCLUSIVE COLLATIVE VERSE**

१५. जीवाण सुहं दुक्खं जीवे जीवति तहेव भविया य।
एगंतदुक्खवेयण अत्तमायाय केवली॥१॥

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ छट्ठे सए . दसमो उद्देसओ समत्तो ॥

॥ छट्ठं सतं समत्तं ॥

१५. जीवो का सुख-दु ख, जीव, जीव का प्राणधारण, भव्य, एकान्त दु ख-वेदना, आत्मा द्वारा पुद्गलो का ग्रहण और केवली, इन विषयो पर दसवे उद्देशक मे विचार किया गया है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरने लगे।

॥ छठा शतक . दशम उद्देशक समाप्त ॥

॥ छठा शतक सम्पूर्ण ॥

15. Happiness and misery of living beings, living beings, life-force of living beings, the worthy, exclusive misery, intake of matter by soul and the omniscient, all these topics have been discussed in this tenth lesson

"Bhante ! Indeed that is so Indeed that is so." With these words and so on up to. ascetic Gautam resumed his activities

● END OF THE TENTH LESSON OF THE SIXTH CHAPTER ●

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : प्रथम उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : FIRST LESSON

आहार AHAAR (INTAKE)

उपोद्घात INTRODUCTION

१. आहार १ विरति २ थावर ३ जीवा ४ पक्खी ५ य आउ ६ अणगारे ७।
छउमत्थ ८ असंवुड ९ अन्नउत्थि १० दस सत्तमम्मि सए॥१॥ (संग्रहणी गाथा)

१. इस सातवे शतक मे निम्न दस उद्देशक है–(१) आहार, (२) विरति, (३) स्थावर, (४) जीव, (५) पक्षी, (६) आयुष्य, (७) अनगार, (८) छद्मस्थ, (९) असवृत, और (१०) अन्यतीर्थिक।

प्रस्तुत शतक मे आहार, (आहार सम्बन्धी विविध विकल्प तथा आहार के दोषो का वर्णन) लोक सस्थान, जीव की ऊर्ध्वगति, सुप्रत्याख्यान आदि अनेक प्रकार के रोचक ज्ञानवर्धक तात्कालिक, प्रश्नो का विविध दृष्टियो से समाधान प्रस्तुत है।

1. This seventh chapter (*shatak*) has the following ten lessons (*uddeshak*)—(1) *Ahaar* (Food Intake), (2) *Virati* (Renunciation), (3) *Sthavar* (Immobile Beings), (4) *Jiva* (Living Beings), (5) *Pakshi* (Aerial Beings, Birds), (6) *Ayushya* (Life-span), (7) *Anagaar* (Homeless), (8) *Chhadmasth* (Ascetic), (9) *Asamvrit* (Unrestrained) and (10) *Anyatirthik* (Heretics)

Food and its range as well as faults, structure of the universe, ascent of soul, noble renunciation and many other interesting and edifying questions related to general as well as periodic information have been answered in this chapter from varied angles

अनाहार और सर्वाल्पाहार का काल PERIOD OF TOTAL AND PARTIAL FASTING

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी–

३. [प्र. १] जीवे णं भंते ! क समयमणाहारए भवति ?

[उ.] गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए, सिय अणाहारए। बितिए समए सिय आहारए, सिय अणाहारए। ततिए समए सिय आहारए, सिय अणाहारए। चउत्थे समए नियमा आहारए। [२] एवं दंडओ। जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए। सेसा तइए समए।

२. उस काल और उस समय मे गौतम स्वामी ने (श्रमण भगवान महावीर से) वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार पूछा–

३. [प्र. १] भगवन् ! (परभव मे जाता हुआ) जीव किस समय मे अनाहारक होता है ?

[उ.] गौतम ! (परभव मे जाता हुआ) जीव, प्रथम समय मे कदाचित् आहारक होता है और कदाचित् अनाहारक होता है, द्वितीय समय मे भी कदाचित् आहारक और कदाचित् अनाहारक होता है, तृतीय समय मे भी कदाचित् आहारक और कदाचित् अनाहारक होता है, परन्तु चौथे समय मे अवश्य आहारक होता है। [२] इसी प्रकार नैरयिक आदि चौबीस ही दण्डको मे कहना चाहिए। सामान्य जीव और एकेन्द्रिय ही चौथे समय मे आहारक होते है। इनके सिवाय शेष जीव, तीसरे समय मे आहारक होते है।

2. During that period of time Indrabhuti Anagar, the senior disciple of Bhagavan Mahavir and so on up to . paid his homage and obeisance and submitted—

3. [Q. 1] *Bhante* ! When does a soul (while going to its next birth) remain without food intake (*anahaarak*) ?

[Ans.] Gautam ! At the first moment (*Samaya*) (while going to its next birth) a soul sometimes remains with food intake (*ahaarak*) and sometimes without food intake, at the second *Samaya* also it sometimes remains with food intake and sometimes without food intake, at the third *Samaya* too it sometimes remains with food intake and sometimes without food intake, but at the fourth *Samaya* it is necessarily with food intake [2] The same should be repeated for all twenty four *Dandaks* (places of suffering) including infernal beings *Jiva* (in general) and one-sensed beings become *ahaarak* (with food intake) at the fourth *Samaya* All the remaining living beings become *ahaarak* at the third *Samaya*

४. [प्र. १] **जीवे णं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति ?**

[उ.] **गोयमा ! पढमसमयोववन्नए वा, चरमसमयभवत्थे वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारए भवति। [२] दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं।**

४. [प्र. १] भगवन् ! जीव किस समय मे सबसे अल्प आहार लेता है ?

[उ.] गौतम ! उत्पत्ति के प्रथम समय मे अथवा भव (जीवन) के अन्तिम समय मे जीव सबसे अल्प आहार वाला होता है। [२] वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको मे इसी प्रकार कहना चाहिए।

4. [Q. 1] *Bhante* ! When does a *jiva* (soul, living being) have least intake of food ?

[Ans.] Gautam ! A *jiva* (soul, living being) has least intake of food at the first *Samaya* of its birth or the last *Samaya* of a life-span [2] The same should be repeated for all twenty four *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik*.

विवेचन . आहार चार प्रकार का है-(१) **ओज आहार**-जन्म के प्रारम्भ मे अन्तर्मुहूर्त्त तक किया जाता है। (२) **लोम आहार**-(श्वासोच्छ्वास द्वारा) जन्म से जीवन के अन्तिम क्षण तक किया जाता है। (३) **प्रक्षेप आहार**-मुख से (कवल रूप) भोजन काल मे किया जाता है। (४) **मनोभक्ष्य**-मानसिक सकल्प द्वारा ग्रहण किया जाता है।

दो स्थितियो मे जीव अनाहारक होता है-(१) **अन्तराल गति**-मृत्यु के पश्चात् जन्म-स्थान तक जाने के मध्य का समय। (२) केवली समुद्‌घात। अन्तराल गति दो प्रकार की है-(१) ऋजु गति, और (२) वक्र गति।

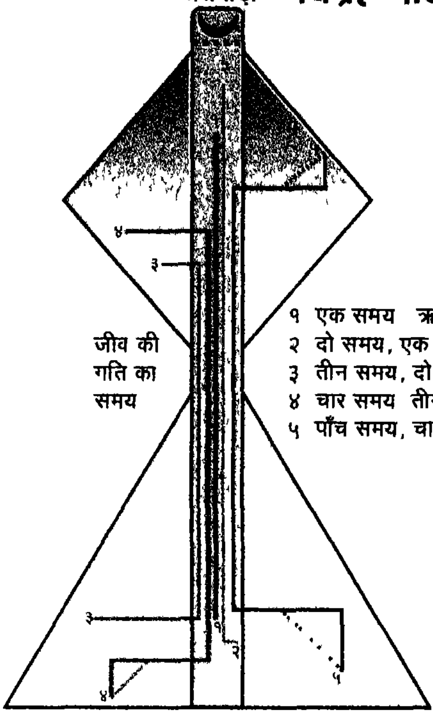
(१) ससारी जीव जब आयुष्य पूर्ण करके ऋजुगति (सीधी गति दडाकार) से परभव मे उत्पत्ति स्थान मे चला जाता है, तब परभव-सम्बन्धी आयुष्य के प्रथम समय मे ही आहारक होता है, किन्तु जब वक्र (मोड वाली) विग्रहगति (वक्रगति) से जाता है, तब प्रथम समय मे वक्र मार्ग मे चलता हुआ वह अनाहारक होता है, इसलिए वह कदाचित् आहारक और कदाचित् अनाहारक होता है। तथा (२) जब एक वक्र (मोड) लेकर दो समय मे उत्पन्न होता है, तब पहले समय मे अनाहारक और द्वितीय समय मे आहारक होता है, (३) जब दो वक्रो (मोडो) से तीन समय मे उत्पन्न होता है, तब प्रारम्भ के दो समयो तक अनाहारक रहता है, तीसरे समय मे आहारक होता है, और (४) जब तीन वक्र मोड लेकर चार समय मे उत्पन्न होता है, तब तीन समय तक अनाहारक और चौथे समय मे अवश्य आहारक होता है। तीन मोडो का क्रम इस प्रकार होता है-त्रसनाडी से बाहर विदिशा मे रहा हुआ कोई जीव, जब अधोलोक से ऊर्ध्वलोक मे त्रसनाडी से बाहर की दिशा मे जाकर उत्पन्न होता है, तब वह प्रथम एक समय मे विश्रेणी से समश्रेणी मे आता है। दूसरे समय मे त्रसनाडी मे प्रविष्ट होता है, तृतीय समय मे ऊर्ध्वलोक मे जाता है और चौथे समय मे लोकनाडी से बाहर निकलकर उत्पत्ति-स्थान मे उत्पन्न होता है। इनमे से पहले के तीन समयो मे तीन वक्र समश्रेणी मे जाने से हो जाते है। जब त्रसनाडी से निकल कर जीव बाहर विदिशा मे ही उत्पन्न हो जाता है तो चार समय मे चार वक्र भी हो जाते है, पाँचवे समय मे वह उत्पत्तिस्थान को प्राप्त करता है। ऐसा कई आचार्य कहते है। विग्रह गति विग्रह गति होती है। (सलग्न रेखाचित्र से स्पष्ट समझा जा सकेगा)

जो नारकादि त्रस, त्रसजीवो मे ही उत्पन्न होता है, उसका गमनागमन त्रसनाडी से बाहर नही होता, अतएव वह तीसरे समय मे नियमत आहारक हो जाता है। जैसे-कोई मत्स्यादि भरत क्षेत्र के पूर्व भाग मे स्थित है, वह वहाँ से मरकर ऐरवत क्षेत्र के पश्चिम भाग मे नीचे नरक मे उत्पन्न होता है, तब एक समय मे भरत क्षेत्र के पूर्व भाग से पश्चिम भाग मे चला जाता है, दूसरे समय मे ऐरवत क्षेत्र के पश्चिम भाग मे जाता है और तीसरे समय मे नरक मे उत्पन्न होता है। इन तीनो समयो मे से प्रथम दो मे वह अनाहारक और तीसरे समय मे आहारक होता है।

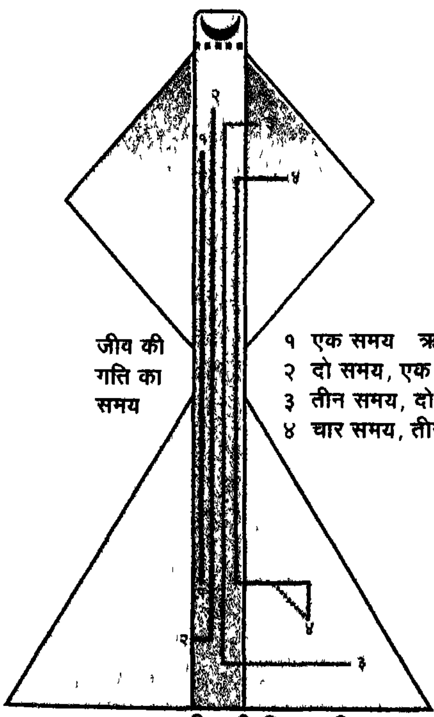
सर्वाल्पाहारता-आहार ग्रहण करने का हेतु शरीर है। उत्पत्ति के प्रथम समय मे आहार ग्रहण करने वाला शरीर अल्प होता है, इसलिए उस समय जीव सर्वाल्पाहारी होता है तथा अन्तिम समय मे प्रदेशो के सकुचित हो जाने एव जीव के शरीर के अल्प अवयवो मे स्थित हो जाने के कारण जीव सर्वाल्पाहारी होता है। यह कथन अनाभोग निवर्तित (बिना इच्छा के गृहीत) आहार की अपेक्षा से है। *(वृत्ति, पत्राक २८७-२८८)*

Elaboration—Intake (*ahaar*) is of four kinds—(1) *Oj ahaar* (energy intake)—intake at the time of conception of a being lasting one *Antar-muhurt* (less than forty eight minutes) (2) *Loam ahaar* (intake through

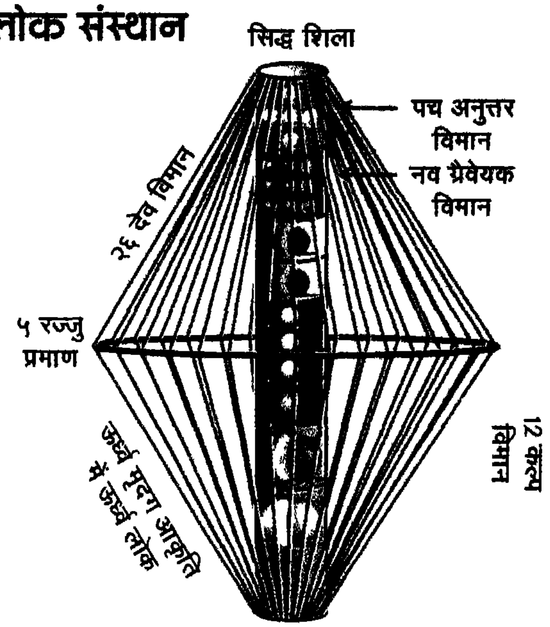
विग्रह गति और लोक संस्थान

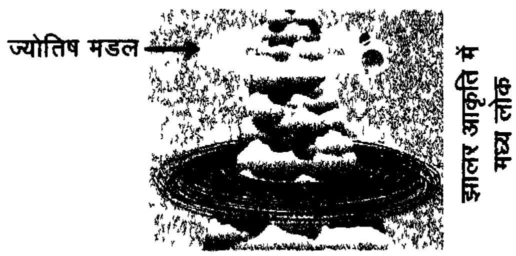


ग्रथानुसार जीव की विग्रह गति

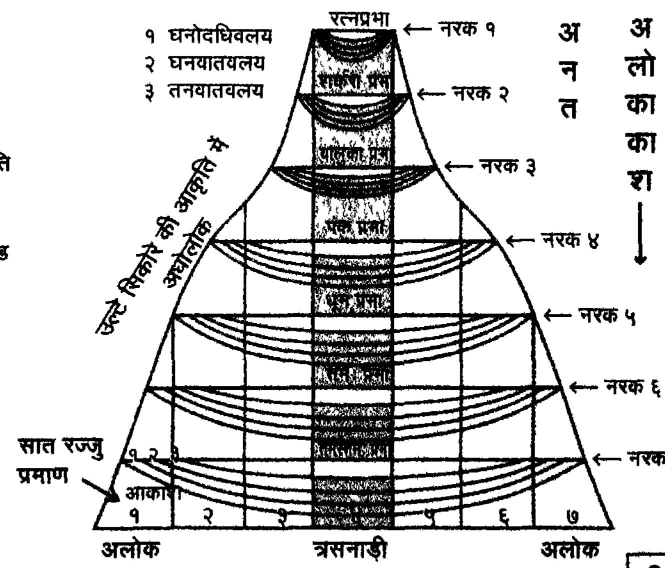


सूत्रानुसार जीव की विग्रह गति





१ रज्जु प्रमाण



अधोलोक

चित्र परिचय-८	Illustration No. 8

विग्रह गति और लोक संस्थान

१ **एक समय की ऋजुगति**–मृत्यु स्थान से उत्पत्ति स्थान पर एक समय की ऋजुगति से जाने वाला जीव प्रथम समय मे आहारी होता है।

२ **दो समय की वक्रगति**–मृत्यु स्थान से एक मोड लेकर वक्रगति से उत्पत्ति स्थान पर जाने वाले जीव को दो समय लगते है। तब प्रथम समय अनाहारक दूसरे समय आहारक होता है।

३ **तीन समय**–त्रस नाडी के बाहर से त्रस नाडी मे प्रवेश कर पुन त्रस नाडी के बाहर उत्पन्न होने वाले जीव को उत्पत्ति स्थान तक जाने मे दो मोड लेने पडते है तीन समय लगते है। प्रथम दो समय मे वह अनाहारक तथा तीसरे समय मे आहारक होता है।

४ **चार समय**–त्रस नाडी के बाहर विदिशा मे पहले सीधी दिशा मे फिर त्रस नाडी मे फिर ऊपर सीध मे तथा पुन मोड लेकर त्रस नाडी के बाहर उत्पन्न होने पर चार समय लगते है। जीव प्रथम तीन समय अनाहारक रहता है।

टीका आदि ग्रन्थो मे पाच समय की वक्रगति का कथन भी है।

शतक ७ उ. १ सू. १

लोक संस्थान–चौदह राजू ऊँचा लोक नीचे मूल मे अधोलोक मे सात रज्जू चौडा है। अधोलोक का संस्थान उल्टे सिकोरे जैसा आकृति मे बनता है। मध्यलोक झालर पूर्ण चन्द्रमा या थाली का आकार मे दिखाई देता है और ऊर्ध्वलोक खडे मृदग (ढोलक) की आकृति मे नीचे ऊपर सकडा बीच मे चौडा दिखाई देता है। चित्र मे तीनो दृश्य अलग अलग दिखाये है

शतक ७ उ. १ सू. ४

OBLIQUE MOVEMENT AND STRUCTURE OF LOK

1 **Straight movement of one Samaya**—On death when a jiva moves in a straight line to the new place of birth then at the first Samaya he is ahaarak (with intake)

2 **Oblique movement of two Samayas**—In the oblique movement if he takes just one turn and takes birth at the second Samaya then at the first Samaya he remains anahaarak and at the second Samaya he becomes ahaarak

3 **Three Samayas**—A jiva entering Tras Nadi going out again and then taking birth has to take two turns taking three Samayas During the first two Samayas he remains anahaarak and at the third Samaya he becomes ahaarak

4 **Four Samayas**—A jiva entering Tras-naadi from some other direction first has a vertical movement Then it takes a horizontal turn to enter the Tras-naadi It then takes a vertical turn and again a horizontal turn to come out of the Tras-naadi and get born He takes four Samayas in this process and during the first three remains anahaarak

In Tika and other commentaries there is a mention of oblique movements taking five Samayas

-Shatak 7 lesson 1 Sutra 1

Structure of Lok—The total height of Lok from base to top is 14 Rajjus It is 7 Rajjus wide at the base The shape of Adholok is like an upturned cup Middle world or Tiryak Lok is like a cymbal, full moon or a round plate and Urdhvalok is wide at middle and narrow at ends like an upturned Mridang (a cask-shaped drum)

-Shatak 7 lesson 1, Sutra 4

body hair or follicle)—this also includes respiration and continues till the last moment of life. (3) *Prakshep ahaar* or *Kavalahar* (intake of morsel)—intake through mouth or the normal act of eating (4) *Manobhakshya* (mental food intake)—This is done with the help of mental resolve

In two states a *jiva* (soul) is *anahaarak*—(1) *Antaraal gati* (transitional movement)—this is the movement when on death a soul moves to the new place of birth (2) *Kevali Samudghat*—bursting forth and withdrawal of soul-space-points by an omniscient just before his death (see chapter 2, lesson 2) Transitional movement is of two types—(a) *Riju gati* (straight movement) and (2) *Vakra gati* (oblique movement)

In context of intake there are four alternatives of the transitional movement—(1) When a worldly being completes his life-span and moves in a straight line (*riju gati*) to the new place of birth then right at the first *Samaya* of life-span of the new birth he is *ahaarak* (with intake) However, if he moves in a oblique way (*vakra gati*) he is *anahaarak* (without intake) in the first *Samaya* of movement That is why the general statement about the first *Samaya* of movement is that a *jiva* may be *ahaarak* or *anahaarak* (2) Now in the oblique movement if he takes just one turn and takes birth at the second *Samaya* then at the first *Samaya* he remains *anahaarak* and at the second *Samaya* he becomes *ahaarak* (3) If he takes two turns and takes birth at the third *Samaya* then during the first two *Samayas* he remains *anahaarak* and at the third *Samaya* he becomes *ahaarak* (4) If he takes three turns and takes birth at the fourth *Samaya* then during the first three *Samayas* he remains *anahaarak* and at the fourth *Samaya* he becomes *ahaarak* The sequence of three turns is like this—Suppose a being is located outside the *Tras-naadi* (the central spine of the *Lok* or occupied space where living beings exist) in some direction When he goes from lower world to upper world and gets reborn outside the *Tras-nadi* then at the first moment it has a vertical movement to come in line with the point of entry into the *Tras-naadi* In the second *Samaya* it takes a horizontal turn to enter the *Tras-naadi* In the third *Samaya* it takes a vertical turn and moves to the upper world. In the fourth *Samaya* it again takes a horizontal turn to come out of the *Tras-naadi* moving to the place of birth and get born Of these the first three movements are oblique (see illustration).

Those infernal and mobile beings that are reborn as mobile beings only, do not move outside the *Tras-naadi*, therefore as a rule they become *ahaarak* in the third *Samaya*. For example—Suppose a fish or other animal lives in the eastern part of *Bharat* area If it dies there and is reborn in a hell below western Airavat area, then at the first *Samaya* it moves from east Bharat to west Bharat, in the second *Samaya* it moves to west Airavat and in the third *Samaya* it moves to the infernal world and gets born Of these three *Samayas* it is *anahaarak* for first two and *ahaarak* at the third

Sarvalpahaarata—The purpose of food intake is creation and sustenance of body The body of an *ahaarak* (with intake) at the first *Samaya* of birth is minute Therefore at that moment a *jiva* (soul) is *sarvalpahaari* (with minute food intake) Also at the last moment before death as the space-points of soul undergo contraction and are occupying a very small fraction of the body, the soul becomes *sarvalpahaari* This statement is in context of non-voluntary food intake (*anaabhog nivartit*) (Vritti, leaf 287-288)

लोक के सस्थान **STRUCTURE OF LOK**

५. [प्र.] किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! सुपतिट्ठिगसंठिए लोए पण्णत्ते, हेट्ठा विच्छिण्णे जाव उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठिए। तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणति पासति, अजीवे वि जाणति पासति। ततो पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति।

५. [प्र.] भगवन् ! लोक का सस्थान (आकार) किस प्रकार का है ?

[उ.] गौतम ! लोक का सस्थान सुप्रतिष्ठिक (सकोरे) के आकार का है। वह नीचे विस्तीर्ण (चौडा) है और क्रमश ऊपर ऊर्ध्व मृदग के आकार का है। ऐसे नीचे से विस्तृत ऊपर ऊर्ध्व मृदगाकार इस शाश्वत लोक मे उत्पन्न केवलज्ञान-दर्शन के धारक, अर्हन्त, जिन, केवली, जीवो को भी जानते और देखते है तथा अजीवो को भी जानते और देखते है। इसके पश्चात् वे सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होते है, यावत् सब दु खो का अन्त करते है।

5. [Q.] *Bhante* ! What is the structure (*samsthaan*) of the *Lok* (universe) ?

[Ans.] The shape of the *Lok* is like that of a *supratishthit* (an earthen pot of the shape of a wine glass) It is wide at the base with a gradual taper ending with the shape of an upturned *Mridang* (a two sided drum with bulging middle and unequal ends) *Arhants*, *Jinas*, *Kevalis*

(synonyms of *Tirthankar*), endowed with perfect knowledge and perception (*Keval jnana-darshan*) and born in this *Lok* that is wide at the base with a gradual taper ending with the shape of an upturned *Mridang*, know and see *jivas* (souls, living beings) as well as non-souls (matter, space, time and other entities). Finally they become *Siddha* (perfected), *buddha* (enlightened), *mukta* (liberated) . and so on up to end all miseries

विवेचन . लोक का विस्तार नीचे सात रज्जूपरिमाण है। ऊपर क्रमश घटते हुए सात रज्जू की ऊँचाई पर एक रज्जू विस्तृत है। तत्पश्चात् उत्तरोत्तर क्रमश बढते हुए साढे दस रज्जू (नीचे से) की ऊँचाई पर पाँच रज्जू और शिरोभाग मे एक रज्जू विस्तार है। मूल (नीचे) से लेकर ऊपर तक की कुल ऊँचाई १४ रज्जू है।

लोक का संस्थान—लोक की आकृति को यथार्थरूप से समझाने के लिए लोक के तीन विभाग किये गये है– अधोलोक, तिर्यक्लोक और ऊर्ध्वलोक। अधोलोक का आकार उलटे सकोरे (शराव) जैसा है, तिर्यक्लोक का आकार झालर थाली या पूर्ण चन्द्रमा जैसा है और ऊर्ध्वलोक का आकार ऊर्ध्व मृदग जैसा है। (सलग्न रेखा चित्र देखे)

Elaboration—The spread of *Lok* is seven *Rajjus* (a very large linear measure) at the base With a gradual taper it becomes one *Rajju* at the height of seven *Rajjus* After that it gradually expands to five *Rajjus* at the height of ten and a half *Rajjus* Then it again reduces gradually to one *Rajju* at the height of 14 *Rajjus* Thus the total height from base to top is 14 *Rajjus*

Structure—In order to properly understand the structure, *Lok* has been divided into three parts—lower world (*Adholok*), transverse world (*Tiryak lok*) and upper world (*Urdhvalok*) The shape of *Adholok* is like an upturned cup, *Tiryak Lok* is like a disc or full moon and *Urdhvalok* is like an upturned *Mridang* (see illustration)

श्रमणोपासक की कितनी क्रिया ACTIVITIES OF SHRAMANOPASAK

६. [प्र. १] समणोवासगस्स णं भंते ! समाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स तस्स णं भंते ! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

[उ.] गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ।

[प्र. २] से केणट्ठेणं जाव संपराइयाकिरिया कज्जइ ?

[उ.] गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिकरणी भवति। आयाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ। से तेणट्ठेणं जाव संपराइया०।

६. [प्र. १] भगवन्! श्रमण के उपाश्रय (धर्मस्थान) मे बैठे हुए सामायिक किये हुए श्रमणोपासक (श्रावक) को क्या ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है अथवा साम्परायिकी क्रिया लगती है?

[उ.] गौतम! उसे साम्परायिकी क्रिया लगती है, ऐर्यापथिकी क्रिया नही लगती।

[प्र. २] भगवन्! किस हेतु से ऐसा कहा जाता है?

[उ.] गौतम! श्रमण के उपाश्रय मे बैठे हुए सामायिक किये हुए श्रमणोपासक की आत्मा अधिकरणी (कषाय के साधन से युक्त) होती है। जिसकी आत्मा अधिकरण का निमित्त होती है, उसे ऐर्यापथिकी क्रिया नही लगती, किन्तु साम्परायिकी क्रिया लगती है। हे गौतम! इसी कारण से (कहा गया है कि उसे) साम्परायिकी क्रिया लगती है।

6. [Q. 1] *Bhante!* Is a *shramanopasak* (follower of *Shraman*) seated in *upashraya* (place of stay for ascetics) and performing *Samayik* (a formal Jain meditational practice) said to be performing *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) or *Samparayik kriya* (passion inspired activity)?

[Ans.] Gautam! He is said to be performing *Samparayik kriya* (passion inspired activity) and not *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic)

[Q. 2] *Bhante!* Why is it so?

[Ans.] The soul of a *shramanopasak* (follower of *Shraman*) seated in *upashraya* (place of stay for ascetics) and performing *Samayik* is still an instrument of passions (*adhikarani*) A person who is an instrument of passions is not qualified for *Iryapathiki kriya* but only for *Samparayik kriya* That is why Gautam! He is said to be performing *Samparayik kriya* (passion inspired activity)

विवेचन : प्रवृत्ति निमित्त से होने वाली दो क्रियाएँ मुख्य है-ऐर्यापथिकी तथा सापरायिकी। सापरायिक क्रिया कर्म बध का कारण है। वीतराग आत्मा एव उपयोग युक्त सयत आत्मा को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है तथा कषाययुक्त एव अनुपयुक्त आत्मा को सापरायिकी क्रिया। जो श्रावक सामायिक करके श्रमणोपाश्रय मे बैठा है, उसे साम्परायिक क्रिया लगने का कारण है, उक्त श्रावक मे कषाय का सद्भाव। जब तक आत्मा मे कषाय (अप्रत्याख्यान या अविरति विद्यमान है) रहेगा, तब तक तन्निमित्तक साम्परायिक क्रिया लगेगी, क्योकि साम्परायिक क्रिया कषाय के कारण लगती है।

Elaboration—Among voluntary activities two are main—*Iryapathiki* and *Samparayiki* The *Samparayiki kriya* is the cause of *karmic* bondage A detached soul and a restrained soul aspiring for liberation qualify for *Iryapathiki kriya* [careful movement of *apramatt chhadmasth sadhu* (accomplished ascetic who is short of omniscience due to residual

karmic bondage) or *sayogi Kevali* (an omniscient with non-vitiating *karmas*)] A soul infested with passions and no aspiration for liberation qualifies for *Samparayiki kriya* (activity inspired by association and passions and leading to *karmic* bondage) A *shramanopasak* (follower of *Shraman*) seated in *upashrdya* (place of stay for ascetics) and performing *Samayik* qualifies for *Samparayik kriya* because he is still under the influence of passions As long as a soul is not free of passions (also non-abstainment and attachment) he qualifies only for *Samparayik kriya*, which is an outcome of passions

श्रमणोपासक का व्रत–प्रत्याख्यान **ABSTAINMENT OF SHRAMANOPASAK**

७. [प्र.] समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवति, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भवति, से य पुढविं खणमाणे अन्नयरं तस पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरइ ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टति।

७. [प्र] भगवन् ! जिस श्रमणोपासक ने पहले से ही त्रस-प्राणियो के समारम्भ का प्रत्याख्यान कर लिया हो, किन्तु पृथ्वीकाय के समारम्भ का प्रत्याख्यान नही किया हो, उस श्रमणोपासक से पृथ्वी खोदते हुए किसी त्रसजीव की हिसा हो जाए, तो भगवन् ! क्या उसके व्रत (त्रसजीववध-प्रत्याख्यान) का उल्लघन होता है ?

[उ] गौतम ! ऐसा नही है। क्योकि वह श्रमणोपासक त्रसजीव के अतिपात (वध) के लिए प्रवृत्त नही होता।

7. [Q.] *Bhante* ! A *shramanopasak* who has already renounced violence towards mobile beings but has not renounced violence towards earth-bodied beings, if while digging earth he happens to harm some mobile being, Bhante, does this amount to transgression of his aforesaid vow ?

[Ans.] Gautam ! It is not so This is because that *shramanopasak* does not intend to kill a mobile being

८. [प्र.] समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणस्सइसमारंभे पच्चक्खाए, से य पुढविं खणमाणे अन्नयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टति।

८. [प्र.] भगवन् ! जिस श्रमणोपासक ने पहले से ही वनस्पति के समारम्भ का प्रत्याख्यान किया हो (किन्तु पृथ्वी के समारम्भ का प्रत्याख्यान न किया हो), पृथ्वी को खोदते हुए (उसके हाथ से) किसी वृक्ष का मूल छिन्न (कट) हो जाए, तो भगवन् ! क्या उसका व्रत भग होता है ?

[उ] गौतम ! ऐसा नही है, क्योकि वह श्रमणोपासक उस (वनस्पति) के वध के लिए प्रवृत्त नही होता।

8. [Q.] *Bhante* ! A *shramanopasak* who has already renounced violence towards plants (but has not renounced violence towards earth-bodied beings), if while digging earth he happens to cut roots of some tree, *Bhante*, does this amount to transgression of his aforesaid vow ?

[Ans.] Gautam ! It is not so This is because that *shramanopasak* does not intend to kill it (the plant)

विवेचन हिंसा के दो मुख्य विकल्प है-(१) **आभोग जनित हिंसा**-सकल्पपूर्वक की जाने वाली हिंसा। (२) **अनाभोग जनित हिंसा**-अनजाने मे होने वाली हिसा। (समाधान) सामान्यत देशविरति श्रावक के आभोग जनित सकल्पपूर्वक आरम्भी हिंसा का त्याग होता है, इसलिए जिन जीवो की हिंसा का उसने प्रत्याख्यान किया है, उन जीवो की सकल्पपूर्वक हिंसा करने मे जब तक वह प्रवृत्त नही होता, तब तक उसका व्रत भग नही होता।

Elaboration—There are two conditions of violence—(1) intentional violence and (2) unintentional violence Generally a *shravak* (lay follower) following partial detachment abstains from violence Therefore as long as he is not involved in intentional killing of beings he had resolved not to harm, his vow is not broken

श्रमणो को दान देने का लाभ BENEFITS OF DONATION TO ASCETICS

९. [प्र.] समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणे किं लभति ?

[उ.] गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा माहणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए णं तमेव समाहिं पडिलभति।

९. [प्र.] भगवन् ! तथारूप (उत्तम) श्रमण एव माहन को प्रासुक (अचित्त), एषणीय (निर्दोष) अशन, पान, खादिम और स्वादिम रूप (चतुर्विध आहार) द्वारा प्रतिलाभित करते (विधिपूर्वक बहराते) हुए श्रमणोपासक को क्या लाभ होता है ?

[उ] गौतम ! तथारूप श्रमण या माहन को यावत् प्रतिलाभित करता हुआ श्रमणोपासक, तथारूप श्रमण या माहन को समाधि पहुँचाता है। उन्हे समाधि प्राप्त कराने वाला श्रमणोपासक उसी प्रकार समाधि को प्राप्त करता है।

9. [Q.] *Bhante* ! What benefit does a *shramanopasak* derive by giving (following prescribed procedure) pure (*achitt*) and faultless (*eshaniya*) staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) to an ascetic (*Shraman* or *Brahmin*) conforming to the description in *Agams* (*tatharupa*) ?

[Ans.] Gautam ! A *shramanopasak* by giving donation to an ascetic (etc.) helps him attain equanimous serenity (*samadhi*). By helping him (*Shraman*) attain equanimous serenity (*samadhi*) he (*shramanopasak*) himself attains the same *samadhi*.

१०. [प्र.] समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ?

[उ.] गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं चयति, दुक्करं करेति, दुल्लभं लभति, बोहिं बुज्झति तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति।

१०. [प्र.] भगवन् ! तथारूप श्रमण या माहन को यावत् प्रतिलाभित करता हुआ श्रमणोपासक क्या त्याग (या सचय) करता (देता) है ?

[उ.] गौतम ! वह श्रमणोपासक जीवित (जीवननिर्वाह के सहायक अन्नपानादि द्रव्य) का त्याग करता-(देता) है, दुस्त्यज वस्तु का त्याग करता है, दुष्कर कार्य करता है, दुर्लभ वस्तु का लाभ लेता है, बोधि (सम्यग्दर्शन) का बोध प्राप्त (अनुभव) करता है, उसके पश्चात् वह सिद्ध (मुक्त) होता है, यावत् सब दुःखो का अन्त करता है।

10. [Q.] *Bhante* ! What does a *shramanopasak* give (or give up) by donating to an ascetic (*Shraman* or *Brahmin*) conforming to the description in *Agams* (*tatharupa*) ?

[Ans.] Gautam ! That *shramanopasak* gives (and gives up) the living (food, water and other life-sustaining things), he gives up things difficult to renounce, he performs difficult tasks, draws benefits difficult to attain, attains right perception (*samyagdarshan*) and then becomes *Siddha* (perfected) ... and so on up to ... end all miseries.

विवेचन : 'चयति' क्रिया पद के फलितार्थ के रूप मे वृत्तिकार ने श्रमणोपासक को होने वाले ८ लाभो का निरूपण इस प्रकार किया है-(१) 'अन्न-पानी' प्राण तुल्य है, अतः अन्न-पानी देना-जीवनदान देना है, अतः वह जीवन का दान करता है। (२) जीवन का सबसे प्रिय दुस्त्याज्य अन्नादि द्रव्य का दुष्कर त्याग करता है। (३) कर्मों की दीर्घस्थिति को ह्रस्व (अल्प) करता है। (४) दुष्ट कर्मद्रव्यो के सचय का, उसका त्याग करता है। (५) फिर अपूर्वकरण के द्वारा ग्रन्थिभेदरूप दुष्कर कार्य करता है। (६) इसके फलस्वरूप दुर्लभ-अनिवृत्तिकरणरूप दुर्लभ वस्तु को उपलब्ध (चय) करता है। (७) तत्पश्चात् बोधि का लाभ (चय) = उपार्जन = अनुभव करता है। (८) तदनन्तर परम्परा से सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होता है, यावत् समस्त कर्मो-दुःखो का अन्त (त्याग) कर देता है। *(वृत्ति, पत्रांक २८९)*

Elaboration—Interpreting the verb root *chayati*, the commentator (*Vritti*) has listed eight benefits to a *shramanopasak*—(1) Food and water sustain life and as such giving these is like bestowing life, thus he bestows life. (2) The most difficult thing to give up is food and water, thus he gives up things difficult to renounce. (3) He shortens the

duration of long lasting *karmas* (4) He gives up accumulating malignant *karmic* matter (5) He then attains the unprecedented level of *Apurvakaran* (a *Gunasthaan*) and accomplishes the difficult task of terminating the bonds (6) As a result of this he acquires (*chaya*) the rare status of *Anivrittikaran* (7) After this he earns (*chaya*) and experiences enlightenment (8) At last he gradually becomes *Siddha* (perfected), *buddha* (enlightened), *mukta* (liberated) and so on up to destroys (gives up) all *karmas* to end all miseries (*Vritti*, leaf 289)

कर्मरहित जीव की गति MOVEMENT OF A KARMA-FREE SOUL

११. [प्र.] अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

१२. [प्र.] कहं णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?

[उ.] गोयमा ! निस्संगयाए १ निरंगणयाए २ गतिपरिणामेण ३ बंधणछेयणयाए ४ निरिंधणयाए ५ पुव्वपओगेणं ६ अकम्मस्स गती पण्णायति।

११. [प्र.] भगवन् ! क्या कर्मरहित जीव की गति होती है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! हाँ, अकर्म जीव की गति होती है।

१२. [प्र.] भगवन् ! अकर्म जीव की गति कैसे होती है ?

[उ.] गौतम ! निःसंगता से, नीरागता (निरंजनता) से, गतिपरिणाम से, बन्धन का छेद (विच्छेद) हो जाने से, निरिन्धनता--(कर्मरूपी ईंधन के अभाव मे) होने से और पूर्व प्रयोग से कर्मरहित जीव की गति होती है।

11. [Q.] *Bhante* ! Does a *karma*-free soul have movement (*gati*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! A soul without *karma* has movement

12. [Q.] *Bhante* ! How does a *karma*-free soul move ?

[Ans.] Gautam ! A *karma*-free soul moves due to non-association (*nihsangata*), detachment (*niraagata* or *niranjanata*), due to movement orientation (*gati parinaam*), destruction of bondage, absence of fuel of *karmas* (*nirindhanata*), and prior endeavour (*purva prayogata*)

१३. [प्र. १] कहं णं भंते ! निस्संगयाए १ निरंगणयाए २ गतिपरिणामेणं ३ बंधणछेयणयाए ४ निरिंधणयाए ५ पुव्वप्पओगेणं ६ अकम्मस्स गती पण्णायति ?

[उ.] गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिद्दं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढित्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपति, लिंपित्ता उण्हे दलयति, भूइं

भूइं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए सलिलतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवति ? हंता, भवति।

अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवति ? हंता भवति। एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति।

१३. [प्र. १] भगवन् ! नि सगता से, नीरागता से, गतिपरिणाम से, बन्धन का छेद होने से, निरिन्धनता से और पूर्वप्रयोग से कर्मरहित जीव की गति कैसे होती है ?

[उ] गौतम ! जैसे कोई पुरुष एक छिद्ररहित और निरुपहत (बिना फटे-टूटे) सूखे तुम्बे पर क्रमश परिकर्म (सस्कार) करता-करता उस पर डाभ (नारियल की जटा) और कुश लपेटे। फिर उस पर आठ बार मिट्टी के लेप लगा दे, फिर उसे (सूखने के लिए) धूप मे रख दे। बार-बार (धूप मे देने से) अत्यन्त सूखे हुए उस तुम्बे को अथाह, अतरणीय (जिस पर तैरा न जा सके), पुरुष-प्रमाण से भी अधिक जल मे डाल दे, तो हे गौतम ! वह तुम्बा मिट्टी के उन आठ लेपो से अधिक भारी हो जाने से क्या पानी के उपरितल को छोडकर नीचे पृथ्वीतल पर जा बैठता है ? (गौतम-) हाँ, भगवन् ! वह तुम्बा नीचे पृथ्वीतल पर जा बैठता है।

(भगवान ने पुन पूछा-) गौतम ! (पानी मे पडा रहने के कारण) आठो ही मिट्टी के लेपो के (गलकर) नष्ट हो जाने से क्या वह तुम्बा पृथ्वीतल को छोडकर पानी के उपरितल पर आ जाता है ? (गौतम-) हाँ, भगवन् ! वह पानी के उपरितल पर आ जाता है। (भगवान-) हे गौतम ! इसी तरह नि सगता (कर्ममल लेप हट जाने) से, नीरागता (रागरहित) से एव गतिपरिणाम से कर्मरहित जीव की भी (ऊर्ध्व) गति होती जाती है।

13. [Q. 1] *Bhante* ! How does a *karma*-free soul move due to non-association (*nihsangata*), detachment (*niraagata* or *niranjanata*), due to movement orientation (*gati parinaam*), destruction of bondage, absence of fuel of *karmas* (*nirindhanata*), and prior endeavour (*purva prayogata*) ?

[Ans.] Gautam ! Suppose a person carefully anoints and wraps an intact (*nirupahat*) and dry gourd with coconut husk and grass After that he plasters it eight times with clay and puts it in sun (to dry) He then throws that repeatedly dried (in sun) gourd in a more than man-height deep water-body difficult to cross Now, Gautam ! Does that gourd weighed by eight layers of clay go below the surface of water and reach the bottom ? Yes, *Bhagavan* ! That gourd settles at the bottom

(*Bhagavan* asked further—) Gautam ! When the eight layers of clay get destroyed (by dissolving into the water it is lying) does that gourd not

leave the bottom and come to the surface of water again ? (Gautam—) Yes, *Bhagavan* ! It returns to the surface (*Bhagavan*—) Gautam ! In the same way on becoming free of *karmic* association (*nihsangata*) and attachment (*niraagata*), a *karma*-free soul moves upward due to its natural movement orientation (*gati parinaam*)

[प्र. २] कह णं भंते ! बंधणछेदणत्ताए अकम्मस्स गती पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! से जहानामए कलसिबलिया इ वा, मुग्गसिंबलिया इ वा, माससिंबलिया इ वा, सिंबलिसिंबलिया इ वा, एरडमिंजिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी फुडित्ताणं एगंतमंतं गच्छइ एवं खलु गोयमा !०।

[प्र २] भगवन् ! बन्धन का छेद हो जाने से अकर्म (कर्ममुक्त) जीव की गति कैसे होती है ?

[उ.] गौतम ! जैसे–कोई मटर की फली, मूँग की फली, उडद की फली, सेम की फली और एरण्ड के फल (बीज) को धूप मे रखकर सुखाए तो सूख जाने पर वह फटता है और उसमे का बीज उछलकर दूर जा गिरता है, हे गौतम ! इसी प्रकार कर्मरूप बन्धन का छेद हो जाने पर कर्मरहित जीव की गति होती है।

[Q. 2] *Bhante* ! How does a *karma*-free soul move on destruction of bondage ?

[Ans.] Gautam ! When a pod of pea, green gram, *Urad* and beans or *Erand* fruit is put in sun to dry, it bursts and the seed is thrown out at a distance In the same way when the bondage of *karma* is destroyed a *karma*-free soul move away

[प्र ३] कहं णं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती० ?

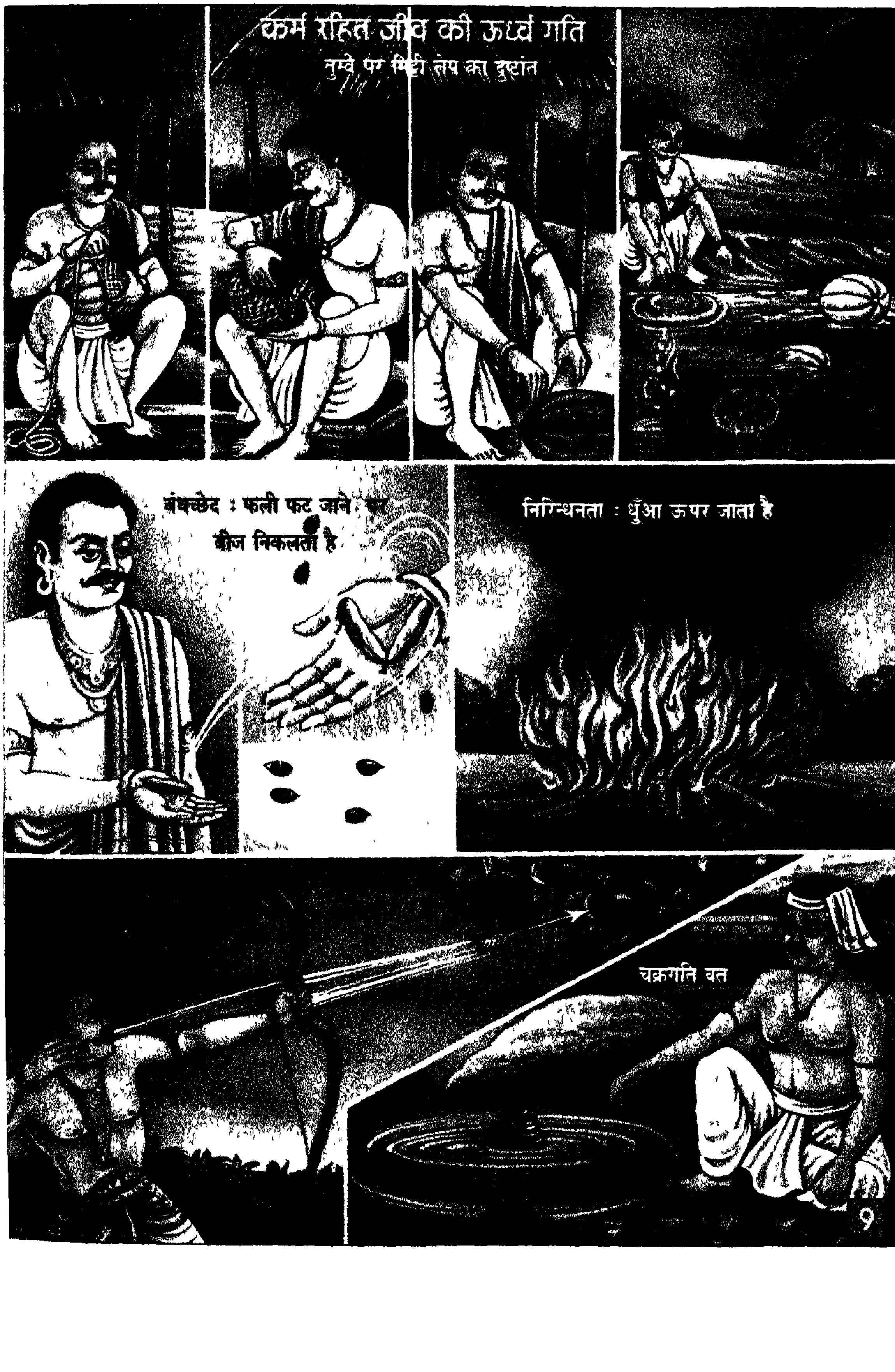
[उ.] गोयमा ! से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति एवं खलु गोयमा !०।

[प्र. ३] भगवन् ! ईधनरहित होने (निरिन्धनता) से कर्मरहित जीव की गति किस प्रकार होती है ?

[उ.] गौतम ! जैसे–ईधन से छूटे हुए धुएँ की गति किसी प्रकार की रुकावट न हो तो स्वाभाविक रूप से ऊपर की ओर होती है, इसी प्रकार, हे गौतम ! कर्मरूप ईधन से रहित होने से कर्मरहित जीव की गति (ऊपर की ओर) होती है।

13. [Q. 3] *Bhante* ! How does a *karma*-free soul move in absence of fuel of *karmas* (*nirindhanata*) ?

[Ans.] Gautam ! When smoke emanating from a (burning) fuel naturally moves upwards in absence of any obstruction In the same way,



कर्म रहित जीव की ऊर्ध्व गति
तुम्बे पर मिट्टी लेप का दृष्टांत
बंधच्छेद : फली फट जाने पर
बीज निकलता है
निरिन्धनता : धुँआ ऊपर जाता है
चक्रगति वत

चित्र परिचय-९

Illustration No 9

कर्मरहित जीव की ऊर्ध्वगति कैसे ?

कर्मरहित जीव ऊर्ध्वगति में कैसे जाता है? इसके छह हेतु हैं- १. **निःसंगता**-निर्लेप होने से, २. **नीरागता**-मोह मुक्त हो जाने से, ३. **गतिपरिणाम**-जीव का ऊर्ध्वगमन स्वभाव होने के कारण, ४. **बंध छेद**-गति में बंधन या रुकावट हट जाने पर, ५. **निरिन्धनता**-ईंधन का अभाव होने से, ६. **पूर्व प्रयोग**-पहले किये गये प्रयत्न की सप्रयत्नता बनी रहने से।

उदाहरण-१, २, ३. किसी ने एक अखण्ड सूखा तुम्बा लेकर उस पर नारियल की जटा तथा कुश सूखी घास लपेटी। फिर उस पर आठ बार मिट्टी का लेप लगाकर धूप में सुखाया। बाद में उसे गहरे जल में डुबो दिया। मिट्टी आदि के लेप से भारी तुम्बा जल में डूब गया। फिर धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों मिट्टी के लेप हटते गये, तुम्बा हल्का होकर स्वतः ऊपर उठता गया। इसी प्रकार कर्ममल का लेप हटने से, आसक्ति कम होने से तथा हल्का बनकर ऊपर उठने का स्वभाव होने के कारण आत्मा ऊर्ध्वगमन करता है।

४. **बंधच्छेद**-मूंग की फली (अथवा एरण्ड व सेम आदि की फली) सूख जाने पर अपने आप फट जाती है और उसका बीज (दाना) उछलकर बाहर आ जाता है।

५. **निरिन्धनता**-ईंधन जलने पर धुआँ हल्का होने से स्वभावतः ऊपर उठता है।

६. **पूर्व प्रयोग**-किसी ने पूरी ताकत लगाकर बाण छोड़ा तो धनुष से छूटा बाण बिना रुके अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है। अथवा कुम्हार ने डण्डे से चाक घुमाकर छोड़ दिया तब भी वह तेजी से पूर्व प्रयोग वश स्वतः घूमता रहता है। इसी प्रकार कर्मरहित जीव शरीर का बंधन छूट जाने से ऊर्ध्वगमन करता है।

(शतक ७, उ. १, सू. ११)

UPWARD MOVEMENT OF KARMA-FREE SOUL

There are six reasons for the upward movement of karma free — (1) **Nihsangata**—non-association (2) **Niraagata**—absence of attachment or fondness (3) **Gati parinaam**—upward movement orientation (4) **Bandhachhed**—destruction of bondage or obstruction, (5) **Nirindhanata**—absence of fuel and (6) **Purva prayogata**—inertia of prior endeavour

Examples—1, 2, 3 A person mounts and wraps an intact and dry gourd with coconut husk and grass. After that he plasters it eight times with clay and puts it in sun (to dry). He then throws it in a deep water body. That gourd weighed by layers of clay submerges in the water. When the layers of clay dissolve into the water it gradually rises to the surface. In the same way on becoming free of karmic association and attachment a karma free soul moves upward due to its natural upward movement orientation

4 Bandhachhed—When a pod of pea, green gram, Udad and beans or Erand fruit is put in sun to dry, it bursts and the seed is thrown out at a distance

5 Nirindhanata—Smoke emanating from a (burning) fuel naturally moves upwards in absence of any obstruction

6 Purva prayogata—An arrow launched from a bow rushes towards the target in absence of an obstructions. Also a potter's wheel continues to rotate even after the hand stops moving it. In the same way a karma free soul moves with the force of prior endeavour when free of the bondage of its body

Shatak 7 lesson 1 Sutra 11

Gautam ! Getting free from the fuel of *karmas* a *karma*-free soul naturally moves upwards

[प्र. ४] कहं णं भंते ! पुव्वप्पयोगेणं अकम्मस्स गती पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तति एव खलु गोयमा ! नीसंगयाए निरंगणयाए पुव्वप्पयोगेणं अकम्मस्स गती पण्णत्ता।

[प्र ४] भगवन् ! पूर्वप्रयोग से कर्मरहित जीव की गति किस प्रकार होती है ?

[उ.] गौतम ! जैसे -धनुष से छूटे हुए बाण की गति बिना किसी रुकावट के लक्ष्याभिमुखी (निशाने की ओर) होती है, इसी प्रकार, हे गौतम ! पूर्वप्रयोग से कर्मरहित जीव की गति होती है। इसीलिए हे गौतम ! ऐसा कहा गया कि नि सगता से, नीरागता से यावत् पूर्वप्रयोग से कर्मरहित जीव की (ऊर्ध्व) गति होती है।

[Q. 4] *Bhante* ! How does a *karma*-free soul move due to prior endeavour (*purva prayogata*) ?

[Ans.] Gautam ! An arrow launched from a bow rushes towards the target without any obstructions In the same way, Gautam ! A *karma*-free soul moves with the force of prior endeavour That is why, Gautam ! it is said that a *karma*-free soul moves (upwards) due to non-association, detachment and so on up to prior endeavour

विवेचन · जैनदर्शन आत्मा को शरीरव्यापी मानता है, तथा कर्ममुक्त होने पर ऊर्ध्वगति स्वभाव वाला भी। पुद्गल की स्वाभाविक गति नीचे की ओर होती है तथा आत्मा (जीव) ऊर्ध्वगति स्वभाव वाला है। कर्म सयोग से जीव नीची, तिरछी व ऊँची गति मे जाता है। किन्तु आत्मा की स्वाभाविक गति, ऊर्ध्वगति है। प्रस्तुत सूत्र मे आत्मा (कर्ममुक्त जीव) की ऊर्ध्वगति के छह कारण बताये है-(१) **निःसगता**-कर्मों से निर्लेपता मिट्टी के लेप से रहित तुम्बे की तरह। (२) **नीरागता**-मोह (राग) रहितता। (३) **गतिपरिणाम**-जिस प्रकार दीपशिखा स्वभाव से ऊपर की ओर गमन करती है, वैसे ही मुक्त (कर्मरहित) आत्मा भी जीव के ऊर्ध्वगति स्वभाव होने से ऊपर की ओर ही गति करता है। (तत्त्वार्थ राज १०/६) (४) **बन्धछेद**-जिस प्रकार बीजकोष के बन्धन के टूटने से एरण्ड आदि की फली के बीज की ऊर्ध्वगति देखी जाती है, वैसे ही मुक्त जीव की ऊर्ध्वगति जानी जाती है। (५) **निरिन्धनता**-जैसे ईंधन से रहित होने से धुँआ स्वभावत ऊपर की ओर गति करता है, वैसे ही कर्मरूप इन्धन से रहित अकर्म जीव की स्वभावत ऊर्ध्वगति होती है। (६) **पूर्वप्रयोग**-धनुष से छूटे हुए बाण की निराबाध लक्ष्याभिमुख गति का दृष्टान्त सूत्र मे दिया गया है। दूसरा दृष्टान्त (तत्त्वार्थ राज) यह भी है-जैसे कुम्हार के प्रयोग से किया गया हाथ, दण्ड और चक्र के संयोगपूर्वक जो चाक घूमता है, वह चाक उस प्रयत्न के बन्द होने पर भी पूर्वप्रयोगवश सस्कारक्षय होने तक घूमता है, इसी प्रकार ससारस्थित आत्मा ने मोक्ष प्राप्ति के लिए जो अनेक बार प्रणिधान (प्रयत्न) किया है, उसका अभाव होने पर भी उसके आवेशपूर्वक मुक्त जीव का गमन निश्चित होता है। *(वृत्ति, पत्राक २९०, देखो सलग्न चित्र)*

Elaboration—Jain philosophy believes that although soul is confined in a body, it has a tendency to move upwards when free of *karmic* bondage The natural movement of matter is downward and that of soul

is upwards It is due to the association with *karmas* that a soul moves in all directions including downwards, transverse and upwards But the natural direction of movement of soul is upwards In this aphorism six reasons for the upward movement of *karma*—infested soul have been discussed—(1) *Nihsangata* (non-association)—absence of any association with *karmas* like a clean gourd not plastered with clay (2) *Niraagata* (detachment)—absence of attachment or fondness (3) *Gati parinaam*—(movement orientation)—As the flame of a lamp always moves upwards, so does a liberated soul (from bondage of *karmas*) tends to move upwards (*Tattvarth Rajavartika* 10/6) (4) *Bandhachhed* (destruction of bondage)—As the seeds of *Erand* fruit are thrown upwards when its pod breaks, likewise soul moves upwards when its bondage of *karmas* is shattered (5) *Nirindhanata* (absence of fuel)—When fuel is consumed the smoke moves upwards in the same way free from of the fuel of *karmas*, the soul naturally moves upwards (6)—*Purva prayogata* (prior endeavour)—An arrow launched from a bow rushes unobstructed towards the target , in the same way, *karma*-free soul moves with the force of prior endeavour Another example of this is the continuing movement of a potter's wheel even after the hand stops moving it The movement is due to the prior effort In the same way a mundane soul moves towards liberation due to the prior efforts made during past numerous births even in absence of efforts at the present time (*Vritti*, leaf 290) (see illustration)

दुःख की स्पृष्टता TOUCH OF MISERY

१४. [प्र.] दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ?

[उ.] गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेण फुडे।

१४. [प्र] भगवन् ! क्या दु खी जीव (कर्मसहित जीव) दु ख से स्पृष्ट (बद्ध या व्याप्त) होता है अथवा अदु खी (कर्मरहित) जीव दु ख से स्पृष्ट होता है ?

[उ.] गौतम ! दु खी जीव ही दु ख से स्पृष्ट होता है, किन्तु अदु खी (दु खरहित) जीव दु ख से स्पृष्ट नही होता।

14. [Q.] *Bhante* ! Is a miserable *jiva* (karma infested soul) touched (bound or overwhelmed) by misery ? Or a non-miserable *jiva* (*karma*-free soul) touched (bound or overwhelmed) by misery ?

[Ans.] Gautam ! Only a miserable *jiva* (*karma* infested soul) is touched (bound or overwhelmed) by misery and not a non-miserable *jiva* (*karma*-free soul)

१५. [प्र १] दुक्खी भंते ! नेरइए दुक्खेण फुडे ? अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ?

[उ.] गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे। [२] एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं। [३] एवं पंच दंडगा नेयव्वा–दुक्खी दुक्खेणं फुडे १ दुक्खी दुक्खं परियायइ २ दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ३ दुक्खी दुक्खं वेदेइ ४ दुक्खी दुक्खं निज्जरेइ ५।

१५. [प्र १] भगवन् ! क्या दु खी नैरयिक दु ख से स्पृष्ट होता है या अदु खी नैरयिक दु ख से स्पृष्ट होता है ?

[उ] गौतम ! दु खी नैरयिक ही दु ख से स्पृष्ट होता है, अदु खी नैरयिक दु ख से स्पृष्ट नही होता। [२] इसी तरह वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको मे कहना चाहिए। [३] इसी प्रकार के पाँच दण्डक (आलापक) कहने चाहिए, यथा–(१) दु खी दु ख से स्पृष्ट होता है, (२) दु खी दु ख का परिग्रहण करता है, (३) दु खी दु ख की उदीरणा करता है, (४) दु खी दु ख का वेदन करता है, और (५) दु खी दु ख की निर्जरा करता है।

15. [Q.] *Bhante* ! Is a miserable infernal being touched (bound or overwhelmed) by misery ? Or a non-miserable infernal beings touched (bound or overwhelmed) by misery ?

[Ans.] Gautam ! Only a miserable infernal being is touched (bound or overwhelmed) by misery and not a non-miserable one [2] The same should be repeated for all twenty four *Dandaks* (places of suffering) including *Vaimanik* [3] In the same way five statements should be mentioned—(1) The miserable is touched (*sprisht*) by misery (2) The miserable acquires (*parigrahan*) misery (3) The miserable fructifies (*udirana*) misery (4) The miserable suffers (*vedan*) misery (5) The miserable sheds (*nirjara*) misery

अनगार को साम्परायिकी क्रिया SAMPARAYIKI KRIYA OF AN ASCETIC

१६. [प्र १] अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा; अणाउत्तं वत्थं पडिग्गह कंबलं पादपुछणं गेण्हमाणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

[उ.] गोयमा ! नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ।

१६. [प्र. १] भगवन् ! उपयोगरहित गमन करते हुए, खडे होते (ठहरते) हुए, बैठते हुए, या सोते हुए और इसी प्रकार बिना उपयोग के वस्त्र, पात्र, कम्बल और पादप्रोछन (प्रमार्जनिका या रजोहरण) ग्रहण करते (उठाते) हुए या रखते हुए अनगार को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है अथवा साम्परायिकी क्रिया लगती है ?

[उ.] गौतम ! ऐसे (पूर्वोक्त) अनगार को ऐर्यापथिक क्रिया नही लगती, साम्परायिक क्रिया लगती है।

16. [Q. 1] *Bhante* ! When an ascetic moves, stands, sits or sleeps without *upayog* (careful application of knowledge) and also handles clothes, pots, blanket and ascetic-broom in the same way, is he liable of involvement in *Airyapathiki kriya* (careful movement of an accomplished ascetic or an omniscient with non-vitiating *karmas*) or *Samparayiki kriya* (activity inspired by association and passions and leading to *karmic* bondage) ?

[Ans.] Gautam ! Such an ascetic is liable of involvement in *Samparayiki kriya* and not in *Airyapathiki kriya*

[प्र. २] से केणट्ठेणं० ?

[उ.] गोयमा ! जस्स णं कोह–माण–माया–लोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जति, नो संपराइया किरिया कज्जति। जस्स णं कोह–माण–माया–लोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जति, नो इरियावहिया। अहासुत्तं रियं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जति। उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जति, से णं उस्सुत्तमेव रियति। से तेणट्ठेणं०।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! जिस जीव के क्रोध, मान, माया और लोभ व्युच्छिन्न (उदयावस्थारहित अथवा क्षीण) हो गए, उसी को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, उसे साम्परायिकी क्रिया नही लगती। किन्तु जिस जीव के क्रोध, मान, माया और लोभ (ये चारो) व्युच्छिन्न नही हुए, उसको साम्परायिकी क्रिया लगती है, ऐर्यापथिकी क्रिया नही लगती। सूत्र (आगम) के अनुसार प्रवृत्ति करने वाले अनगार को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है और उत्सूत्र प्रवृत्ति करने वाले अनगार को साम्परायिकी क्रिया लगती है। उपयोगरहित गमनादि प्रवृत्ति करने वाला अनगार, सूत्रविरुद्ध प्रवृत्ति करता है। हे गौतम ! इस कारण से उसे साम्परायिकी क्रिया लगती है।

16. [Q. 2] *Bhante* ! Why is it so ?

[Ans.] Gautam ! Only that soul whose anger, conceit, deceit and greed are free of the state of fruition or have been destroyed (*vyuchchhinn*) is liable of involvement in *Airyapathiki kriya* but not in *Samparayiki kriya* But the soul whose anger, conceit, deceit and greed are not free of the state of fruition or have not been destroyed is liable of involvement in *Samparayiki kriya* but not in *Airyapathiki kriya* An ascetic who acts according to *Sutra* (*Agam*) is liable of involvement in *Airyapathiki kriya* and an ascetic who acts contrary to *Sutra* (*Agam*) is liable of involvement in *Samparayiki kriya* An ascetic indulging in movement and other

activities without *upayog* (careful application of knowledge) acts contrary to *Sutra* (*Agam*) Gautam ! That is why he is liable of involvement in *Samparayiki kriya*

विवेचन : प्रस्तुत सूत्र मे 'अहासुत्त' का विशेष अर्थ है-११वे से १३वे गुणस्थानवर्ती यथाख्यात चारित्री अनगार तथा 'उत्सूत्र' का अर्थ है-यथाख्यात चारित्र के विपरीत प्रवृत्ति करना।

Elaboration—In this aphorism the term *ahasuttam* (according to *Agams*) has a special meaning that points at the ascetics at the level of 11 to 13 *Gunasthaans* and follow *Yathakhyat chaaritra* (conduct conforming to perfect purity) And *utsutra* means acting contrary to the same

अगारादि दोषयुक्त पान-भोजन **FAULTY FOOD**

१७. [प्र.] अह भंते ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

[उ] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहित्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारं आहारेइ एस णं गोयमा ! सइंगाले पाण-भोयणे। जे ण निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहित्ता महयाअप्पत्तियं कोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! सधूमे पाणभोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव पडिग्गाहित्ता गुणुप्पायणहेतुं अन्नदव्वेणं सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! संजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे। एस णं गोयमा ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते।

१७. [प्र.] भगवन् ! अगारदोष, धूमदोष और सयोजनादोष से दूषित पान-भोजन (आहार-पानी) का क्या अर्थ कहा है ?

[उ.] गौतम ! जो निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थी प्रासुक और एषणीय अशन-पान-खादिम-स्वादिम रूप आहार ग्रहण करके उसमे मूर्च्छित, गृद्ध, ग्रथित और आसक्त (मोह मे एकाग्रचित्त) होकर आहार करते है, हे गौतम ! यह **अंगार-दोष** से दूषित आहार-पानी कहलाता है। जो निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थी, प्रासुक और एषणीय अशन-पान-खादिम-स्वादिम रूप आहार ग्रहण करके, उसके प्रति अत्यन्त अप्रीतिपूर्वक, क्रोध से खिन्नता करते हुए आहार करते है, तो हे गौतम ! यह **धूम-दोष** से दूषित आहार-पानी कहलाता है। जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी प्रासुक यावत् आहार ग्रहण करके गुण (स्वाद) उत्पन्न करने हेतु दूसरे पदार्थों के साथ सयोग करके आहार-पानी करते है, हे गौतम ! वह आहार-पानी **सयोजनादोष** से दूषित कहलाता है। हे गौतम ! यह अगारदोष, धूमदोष और सयोजनादोष से दूषित पान-भोजन का अर्थ कहा है।

17. [Q.] *Bhante* ! What is the meaning of food and drink with these faults—*angaar dosh*, *dhoom dosh* and *samyojana dosh* ?

[Ans.] Gautam ! When a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and prescribed (*eshaniya*) staple food, liquids, general food, and savoury

food (*ashan, paan, khadya, svadya*), and while eating gets fond of (*murchhit*), infatuated with (*griddha*), captivated by (*baddha*) and obsessed with (*aasakt*) that food, then Gautam ! that food is said to have the fault called *angaar dosh* When a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and prescribed (*eshaniya*) staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), and while eating, gets dissatisfied, angry and irritated with that food, then Gautam ! that food is said to have the fault called *dhoom dosh* When a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and so on up to savoury food, and while eating, mixes enriching (taste etc) ingredients with that food, then Gautam ! that food is said to have the fault called *samyojana dosh* Gautam ! This is the meaning of food and drink with these faults—*angaar dosh, dhoom dosh and samyojana dosh*

१८. [प्र.] अह भंते ! वीतिगालस्स वीयधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! जे णं णिग्गंथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता अमुच्छिए जाव आहारेइ एस ण गोयमा ! वीतिंगाले पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता णो महयाअप्पत्तिय जाव आहारेइ, एस ण गोयमा ! वीतधूमे पाण-भोयणे। जे णं निग्गथे वा २ जाव पडिगाहेत्ता जहा लद्ध तहा आहारं आहारेइ एस णं गोयमा ! संजोयणादोसविप्पमुक्के पाण-भोयणे। एस णं गोयमा ! वीतिगालस्स वीतधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते।

१८. [प्र] भगवन् ! अगारदोष, धूमदोष और सयोजनादोष, इन तीन दोषो से मुक्त पान-भोजन का क्या अर्थ कहा है ?

[उ.] गौतम ! जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी प्रासुक और एषणीय अशन-पान-खादिम-स्वादिम रूप चतुर्विध आहार को ग्रहण करके मूर्च्छारहित यावत् आसक्तिरहित होकर आहार करते है, हे गौतम ! यह **अंगारदोषरहित** पान-भोजन कहलाता है। जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी यावत् अशनादि को ग्रहण करके अत्यन्त अप्रीतिपूर्वक यावत् आहार नही करता है, हे गौतम ! यह धूम दोषरहित पान-भोजन है। जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी यावत् अशनादि को ग्रहण करके, जैसा मिला है, वैसा ही आहार कर लेते है (दूसरे पदार्थों का सयोग नही करते), तो हे गौतम ! यह **सयोजनादोषरहित** पान-भोजन कहलाता है। हे गौतम ! यह अगारदोषरहित, धूमदोषरहित एव सयोजनादोषविमुक्त पान-भोजन का अर्थ कहा गया है।

18. [Q.] *Bhante* ! What is the meaning of food and drink without these faults—*angaar dosh, dhoom dosh and samyojana dosh* ?

[Ans.] Gautam ! When a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and prescribed (*eshaniya*) staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), and while eating, does not get fond

of (murchhit), infatuated with (griddha), captivated by (baddha) and obsessed with (aasakt) that food, then Gautam ! that food is said to be free of the fault called *angaar dosh* When a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and prescribed (*eshaniya*) staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), and while eating, does not get dissatisfied, angry and irritated with that food, then Gautam ! that food is said to be free of the fault called *dhoom dosh* When a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and so on up to savoury food, and while eating does not mix enriching (taste etc) ingredients with that food, then Gautam ! that food is said to be free of the fault called *samyojana dosh* Gautam ! This is the meaning of food and drink without these faults—*angaar dosh, dhoom dosh and samyojana dosh*

१९. [प्र.] अह भंते ! खेत्तातिक्कंतस्स कालातिक्कंतस्स मग्गातिक्कंतस्स पमाणातिक्कंतस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?

[उ] गोयमा ! (१) जे ण निग्गंथे वा निग्गथी वा फासुएसणिज्जं असण–पाण–खाइम–साइमं अणुग्गते सूरिए पडिग्गाहित्ता उग्गते सूरिए आहारं आहारेति एस णं गोतमा ! खेत्तातिक्कंते पाण–भोयणे।

(२) जे णं निग्गंथे वा २ जाव० साइम पढमाए पोरिसीए पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवायणावेत्ता आहारं आहारेति एस णं गोयमा ! कालातिक्कते पाण–भोयणे।

(३) जे णं निग्गंथे वा २ जाव० सातिमं पडिगाहित्ता परं अद्धजोयणमेराए वीतिक्कमावेत्ता आहारमाहारेति एस णं गोयमा ! मग्गातिक्कंते पाण–भोयणे।

(४) जेणं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं जाव सातिमं पडिगाहित्ता परं बत्तीसाए कुक्कुडिअंडगप्पमाणेत्ताणं कवलाणं आहारमाहारेति एस णं गोतमा ! पमाणातिक्कंते पाण–भोयणे।

अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालसकुक्कुडिअडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया, सोलसकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते जाव आहारमाहारेमाणए ओमोदरिया, बत्तीसं कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केण वि गासेणं ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोई इति वत्तव्वं सिया। एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्कंतस्स कालातिक्कंतस्स मग्गातिक्कंतस्स पमाणातिक्कंतस्स पाण–भोयणस्स अट्ठे पणण्णत्ते।

१९. [प्र] भगवन् ! (१) क्षेत्रातिक्रान्त, (२) कालातिक्रान्त, (३) मार्गातिक्रान्त, और (४) प्रमाणातिक्रान्त पान–भोजन का क्या अर्थ है ?

[उ.] गौतम ! (१) जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी, प्रासुक और एषणीय अशन-पान-खादिम-स्वादिम रूप चतुर्विध आहार को सूर्योदय से पूर्व ग्रहण करके सूर्योदय के पश्चात् उस आहार को सेवन करते है, हे गौतम ! यह **क्षेत्रातिक्रान्त** पान-भोजन कहलाता है।

(२) जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी यावत् चतुर्विध आहार को प्रथम प्रहर मे ग्रहण करके अन्तिम प्रहर तक रखकर सेवन करते है, हे गौतम ! यह **कालातिक्रान्त** पान-भोजन कहलाता है।

(३) जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी यावत् चतुर्विध आहार को ग्रहण करके आधे योजन (दो कोस) की मर्यादा (सीमा) का उल्लघन करके खाते है, हे गौतम ! यह **मार्गातिक्रान्त** पान-भोजन कहालाता है।

(४) जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी प्रासुक एव एषणीय यावत् आहार को ग्रहण करके **कुक्कुटीअण्डक** (मुर्गी के अण्डे के) प्रमाण बत्तीस कवल (कौर या ग्रास) की मात्रा से अधिक (उपरान्त) आहार करता है, तो हे गौतम ! यह **प्रमाणातिक्रान्त** पान-भोजन कहलाता है।

कुक्कुटी-अण्डे जितने आठ कवल का आहार करने वाला साधु **'अल्पाहारी'** कहलाता है। कुक्कुटी-अण्डे जितने बारह कवल का आहार करने वाला साधु **अपार्द्ध अवमोदरिका** (किंचित् न्यून अर्ध ऊनोदरी) वाला होता है। कुक्कुटी-अण्डे जितने सोलह कवल का आहार करने वाला साधु **द्विभागप्राप्त** आहार वाला (अर्धाहारी) कहलाता है। कुक्कुटी-अण्डे जितने चौबीस कवल का आहार करने वाला साधु **ऊनोदरिका** वाला होता है। कुक्कुटी-अण्डे जितने बत्तीस कवल का आहार करने वाला साधु **प्रमाणप्राप्त** (प्रमाणोपेत) आहारी कहलाता है। इस (बत्तीस कवल) से एक भी ग्रास कम आहार करने वाला श्रमणनिर्ग्रन्थ **'प्रकामरसभोजी'** (अत्यधिक मधुरादि रसभोक्ता) नही है, यह कहा जा सकता है। हे गौतम ! यह क्षेत्रातिक्रान्त, कालातिक्रान्त, मार्गातिक्रान्त और प्रमाणातिक्रान्त पान-भोजन का अर्थ कहा है।

19. [Q.] *Bhante* ! What is the meaning of taking food and drink with following transgressions—(1) *Kshetratikrant* (transgression related to movement of the sun) (2) *Kaalatikrant* (transgression related to time) (3) *Maargatikrant* (transgression related to distance) (4) *Pramanatikrant* (transgression related to quantity)

[Ans.] Gautam ! (1) Suppose a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and prescribed (*eshaniya*) staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), before sunrise and eats it after sunrise Gautam ! This is called eating and drinking with the fault of transgression of prescribed code related to the movement of the sun (*Kshetratikrant paan-bhojan*)

(2) Suppose a male or female ascetic collects pure (*prasuk*). and so on up to. savoury food during the first quarter of the day and eats it during the last quarter of the day Gautam ! This is called eating and

drinking with the fault of transgression of prescribed code related to time (*Kaalatikrant paan-bhojana*)

(3) Suppose a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and so on up to savoury food at a place and eats it after crossing the prescribed limit of walking half a *Yojan* (four miles) distance Gautam ! This is called eating and drinking with the fault of transgression of prescribed code related to distance (*Maargatikrant paan-bhojana*)

(4) Suppose a male or female ascetic collects pure (*prasuk*) and so on up to savoury food and eats a quantity more than thirty two morsels, each more than the size of hen's egg (*kukkuti andak*) Gautam ! This is called eating and drinking with the fault of transgression of prescribed code related to quantity (*Pramanatikrant paan-bhojana*)

An ascetic who eats a quantity equivalent to eight morsels of the size of hen's egg is called *Alpahaari* (one who eats very little) An ascetic who eats a quantity equivalent to twelve morsels of the size of hen's egg is called *Apardha Avamodarika* (eating a little less than half *Unodari*) An ascetic who eats a quantity equivalent to sixteen morsels of the size of hen's egg is called *Dvibhaag-prapt* (eating half the standard quantity) An ascetic who eats a quantity equivalent to twenty four morsels of the size of hen's egg is called *Unodaarika* (eating less than the standard quantity) observer An ascetic who eats a quantity equivalent to thirty two morsels of the size of hen's egg is called *Pramaan-prapt* (eating standard quantity) An ascetic who eats a quantity even one morsel less than this thirty two morsels of the size of hen's egg cannot be called *Prakamarasabhoji* (one who eats very sweet and rich food) Gautam ! This is the meaning of taking food and drink with transgressions like *Kshetratikrant*, *Kaalatikrant*, *Maargatikrant* and *Pramanatikrant*

शस्त्रातीत आदि दोष FAULTS INCLUDING SHASTRATEET

२०. [प्र.] अह भंते ! सत्थातीतस्स सत्थपरिणामितस्स एसियस्स वेसियस्स सामुदाणियस्स पाण–भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला–वण्णगविलेवणे ववगयचुय–चइय–चत्तदेहं जीव–वप्पजढं अकयंअकारियंअसंप्पियंअणाहूयंमकीयकडंअणुदिट्ठं नवकोडी–परिसुद्धं दसदोसविप्पमक्कं उग्गम–उप्पायणेसणासुपरिसुद्धं वीतिंगालं वीतधूमं संजयोणादोस–विप्पमुक्कं असुरसुरं अचवचवं अदुतमविलंबितं अपरिसाडि अक्खोवंजण–वणाणुलेवणभूयं संयमजाया मायाबत्तियं

संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण आहारमाहारेति; एस ण गोयमा ! सत्थातीतस्स सत्थपरिणामितयस्स जाव पाण–भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते।

।। सत्तम सए : पढमो उद्देसो समत्तो ।।

२०. [प्र.] भगवन् ! **शस्त्रातीत** (अग्नि से पका हुआ), **शस्त्रपरिणामित** (अचित्त किया हुआ), एषित, व्येषित, (मुनिवेश के कारण प्राप्त) सामुदायिक भिक्षारूप पान–भोजन का क्या अर्थ है ?

[उ.] गौतम ! जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी शस्त्र (चाकू आदि) और मूसलादि का प्रयोग न करने वाले है। पुष्प–माला और चन्दनादि के विलेपन से रहित है, वे यदि उस आहार को करते है, जो (भोज्य वस्तु मे पैदा होने वाले) कृमि आदि जन्तुओ से रहित, जीवच्युत और जीवविमुक्त (प्रासुक) है, जो साधु के लिए नही बनाया गया है, न बनवाया गया है, जो **असकंल्पित**–(आधाकर्मादि दोषरहित) है, **अनाहूत**–(आमत्रणरहित) है, **अक्रीतकृत**–(नही खरीदा हुआ) है, **अनुद्दिष्ट**–(औद्देशिक दोष से रहित) है, **नवकोटिविशुद्ध** है, (शकित आदि) दस दोषो से विमुक्त है, **उद्‌गम** (१६ उद्‌गम दोष) और **उत्पादना** (१६ उत्पादन सम्बन्धी) एषणा दोषो से रहित परिशुद्ध है, अगारदोषरहित है, धूमदोषरहित है, सयोजनादोषरहित है। तथा जो 'सुरसुर' और 'चपचप' शब्द नही करते हुए बहुत शीघ्रता और अत्यन्त विलम्ब से रहित, आहार का लेशमात्र भी छोडे बिना, भूमि पर नही गिराते हुए, गाडी की धुरी के अजन अथवा घाव पर लगाये जाने वाले लेप (मल्हम) की तरह केवल सयमयात्रा के निर्वाह के लिए और सयम–भार को वहन करने के उद्देश्य से जिस प्रकार सर्प बिल मे (सीधा) प्रवेश करता है, उसी प्रकार (सहजता व सरलतापूर्वक) जो आहार करते है, तो हे गौतम ! वह शस्त्रातीत, शस्त्रपरिणामित, एषित, वेशित और सामुदायिक पान–भोजन का अर्थ है।

'हे भगवन् ! यह इस प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है' (यो कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरते है)।

20. [Q.] *Bhante* ! What is the meaning of taking food and drink with following qualities—*Shastrateet* (cooked in fire), *Shastraparinanamit* (made life-less), *Eshit* (suitable for an ascetic), *Vyeshit* (offered due to ascetic garb), *Saamudayik* (collected from various houses) ?

[Ans.] Gautam ! Suppose there is a male or female ascetic (*nirgranth* or *nirgranthi*) who does not use a weapon (knife etc) or mace etc , does not have flowers or garlands and does not apply any fragrant paste like sandal-wood He or she takes food that is free or made free of any insect or other living organism, that conforms to the code of purity prescribed for an ascetic (*prasuk*), that has neither been cooked or got cooked for an ascetics, that is not predetermined (free of faults like *Aadhaakarma*), that is not an outcome of an invitation (*anaahoot*), that is neither bought (*akritakrit*) nor meant (*anuddisht*) for an ascetic, that has nine purities

(*navakoti vishuddha*), that is free of ten faults including doubtful, that is free of faults of exploring related to origin (sixteen faults of *udgam*) and production (sixteen faults of *utpadan*), that is free of any contamination, and that is free of (aforesaid) faults like *Angaar-dosh*, *Dhoom-dosh* and *Samyojana dosh* And he or she eats that food without producing any slurping or chewing sound, without any haste or delay, without leaving any leftovers, without dropping on the ground He or she eats only small quantity, just like grease on an axle or ointment on a wound, simply for the purpose of facilitating his path of discipline and carrying the burden of restraint He or she eats simply and naturally just like a snake enters (straight) into its hole Gautam ! That food (taken thus) is called *Shastrateet* (cooked in fire), *Shastraparinanamit* (made life-less), ***Eshit*** (suitable for an ascetic), *Vyeshit* (offered due to ascetic garb), *Saamudayik* (collected from various houses)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन अगारादि दोषो का स्वरूप– मुनि गवेषणैषणा और ग्रहणैषणापूर्वक जो आहार लाता है। उस आहार को साधुओ के मण्डल (माडले) मे बैठकर सेवन करते समय जो दोष लगते है, उन्हे ग्रासैषणा (परिभोगैषणा) के पाँच दोष कहते है। वे इस प्रकार है-(१) **अगार**–सरस स्वादिष्ट आहार मे आसक्त होकर खाना। इस प्रकार अग्नि से सयम रूप ईंधन कोयले (अगार) की तरह दूषित हो जाता है। (२) **धूम**–नीरस या अमनोज्ञ आहार करते हुए आहार या दाता की निन्दा करना। (३) **सयोजना**–स्वादिष्ट एव रोचक बनाने के लिए लोलुपतावश एक द्रव्य के साथ दूसरे द्रव्यो को मिलाना। (४) **अप्रमाण**–शास्त्रोक्तप्रमाण से अधिक आहार करना, और (५) **अकारण**–साधु के लिए ६ कारणो से आहार करने और ६ कारणो से छोडने का विधान है, किन्तु उक्त कारणो के बिना केवल बलवीर्यवृद्धि के लिए आहार करना। इन ५ दोषो का वर्णन सूत्र १७ से २० तक मे किया गया है।

कुक्कुटी–अण्डप्रमाण का तात्पर्य–आहार का प्रमाण बताने के लिए 'कुक्कुटी–अण्डकप्रमाण' शब्द दिया है। इसके दो अर्थ होते है-(१) कुक्कुटी (मुर्गी) के अडे के जितने प्रमाण का एक कवल (ग्रास) होता है। तथा (२) जीवरूपी पक्षी के लिए आश्रय रूप होने से यह गन्दी अशुचिप्राय काया 'कुकुटी' है, इस कुकुटी के उदरपूरक पर्याप्त आहार को कुकुटी–अण्डकप्रमाण कहते है।

शस्त्रातीतादि की व्याख्या–शस्त्रातीत = अग्नि आदि शस्त्र से पका हुआ, **शस्त्र परिणामित** = शस्त्रो से वर्ण–गन्ध–रस–स्पर्श अन्य रूप मे परिणत किया हुआ, अर्थात्–अचित्त किया हुआ। **एसियस्स** = एषणीय–गवेषणा आदि से गवेषित। **वेसियस्स** = विशेष या विविध प्रकार से गवेषणा, ग्रहणैषणा एव ग्रासैषणा से विशोधित मुनि वेष के निमित्त से प्राप्त। **सामुदाणियस्स** = गृहसमुदायो से प्राप्त।

नवकोटिविशुद्ध का अर्थ–(१) किसी जीव की हिसा न करना, (२) न कराना, (३) न ही अनुमोदन करना, (४) स्वय न पकाना, (५) दूसरो से न पकवाना, (६) पकाने वालो का अनुमोदन न करना, (७) स्वय न

खरीदना, (८) दूसरो से न खरीदवाना, और (९) खरीदने वाले का अनुमोदन न करना। इन दोषो से रहित आहारादि नवकोटिविशुद्ध कहलाते है।

उद्‌गम, उत्पादना और एषणा के दोष–शास्त्र मे आधाकर्म आदि १६ उद्‌गम के, धात्री, दूती आदि १६ उत्पादना के, एव शकित आदि १० एषणा के दोष बताए है। उनमे से प्रथम वर्ग के दोष दाता से, द्वितीय वर्ग के साधु से और तृतीय वर्ग के दोनो से लगते है। *(विस्तार के लिए देखे, हिन्दी विवेचन, भाग ३, पृष्ठ ११०४ से ११०९ तक, वृत्ति, पत्राक २९४)*

॥ सप्तक शतक प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—The faults—An ascetic collects food with careful exploration and careful acquisition He then sits in the group of other ascetics and eats it The faults applicable at the time of eating are called five faults of *grasaishana* or *paribhogaishana* (care in eating) They are as follows—(1) **Angaar**—to eat with excessive liking for tasty and rich food Here *angaar* means coal and infatuation for foods tarnishes restraint like a piece of coal (2) **Dhoom**—to criticize food or its donor while eating drab and repulsive food (3) **Samyojana**—to mix one item of food with another to improve its taste in order to satiate taste buds (4) **Apramaan**—to eat more then the quantity prescribed in scriptures (5) **Akaaran**—There are six reasons to eat food and six to avoid food prescribed in the ascetic code To eat in absence of these reasons just for taste or to enhance one's physical strength and potency is *akaaran* eating These five faults have been discussed in aphorisms 17 to 20

Kukkuti-and pramaan—In order to explain the quantity of food to be eaten this term has been used It has two interpretations—(1) equivalent to the size (*pramaan*) of hen's egg (*kukkuti-andak*) is the size of a morsel (2) This filthy body (*kukuti*) is the resting place of the bird that is soul The quantity of food required to satiate the hunger of this body (*kukuti*) is called *kukuti-and pramaan*

Shastrateet—Cooked by fire or other means *Shastra-parinamit*—transformed by fire or other means in terms of colour, smell, taste and touch, in other words made free of any living organism (*achitt*) *Esiyassa* (*eshaniya*)—explored with proper care *Vesiyassa* (*vyeshaniya*)—explored with particular care regarding exploration, acceptance and eating prescribed for an ascetic. *Samudaaniyassa* (*saamudaniya*)— collected from various houses

Navakoti vishuddha—Food that is free of the following nine faults—(1) to kill, (2) to get killed, or (3) to approve killing of a living being for

food, (4) to cook, (5) to get cooked, or (6) to approve cooking of food, (7) to buy, (8) to get bought, or (9) to approve buying of food

Faults of udgam, utpaadan and eshana—According to scriptures there are 16 faults of *udgam* (origin) including *aadhaakarma* (food specifically prepared for an ascetic), 16 faults of *utpaadan* (production) including *dhaatri* (food prepared for a nurse) and *dooti* (food prepared for a maid), and 10 faults of *eshana* (exploration) including doubt Of these the faults of first group are caused by donor, those of the second group are caused by ascetic and those of the third group are caused by both (*for details refer to Hindi commentary, part-3, pp 1104-1109 and Vritti leaf 294*)

● END OF THE FIRST LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : द्वितीय उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) . SECOND LESSON

विरति VIRATI (RENUNCIATION)

सुप्रत्याख्यानी और दुष्प्रत्याख्यानी **RIGHT AND WRONG RENUNCIATION**

१. [प्र. १] से नूणं भंते ! सव्वपाणेहिं सव्वभूतेहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति ? दुपच्चक्खायं भवति ?

[उ.] गोयमा ! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खाय' इति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खायं भवति।

१. [प्र. १] भगवन् ! 'मैने सर्व प्राण, सर्व भूत, सर्व जीव और सभी सत्त्वो की हिसा का प्रत्याख्यान किया है', इस प्रकार कहने वाले के सुप्रत्याख्यान होता है या दुष्प्रत्याख्यान ?

[उ.] गौतम ! 'मैने सभी प्राण यावत् सभी सत्त्वो की हिसा का प्रत्याख्यान किया है', इस प्रकार कहने वाले के कदाचित् सुप्रत्याख्यान है और कदाचित दुष्प्रत्याख्यान होता है।

1. [Q. 1] *Bhante* ! Is a person saying—"I have renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings, beings), all *bhoot* (plant bodied beings, organisms), all *jiva* (five sensed beings, souls), and all *sattva* (immobile beings, entities)"—liable of achieving good renunciation or bad renunciation ?

[Ans.] Gautam ! A person saying—"I have renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities)"—is some times liable of achieving good renunciation and sometimes bad renunciation

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'सव्वपाणेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवति ?'

[उ.] गोयमा ! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स णो एव अभिसमन्नागय भवति 'इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा' तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खाय भवति, दुपच्चक्खायं भवति। एवं खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणो नो सच्चं भासं भासति, मोसं भासं भासइ, एवं खलु से मुसावाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं अस्संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगतबाले यावि भवति।

जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवति 'इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा' तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति

वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति। एवं खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं 'पच्चक्खायं' इति वयमाणे सच्चं भासं भासति, नो मोसं भासं भासति।

एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अकिरिए संवुडे [एगतअदंडे] एगंतपंडिए यावि भवति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खायं भवति।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा क्यो कहा जाता है कि सभी प्राण यावत् सभी सत्त्वो की हिंसा का प्रत्याख्यान-उच्चारण करने वाले के कदाचित् सुप्रत्याख्यान और कदाचित् दुष्प्रत्याख्यान होता है ?

[उ] गौतम ! 'मैने समस्त प्राण यावत् सर्व सत्त्वो की हिंसा का प्रत्याख्यान किया है', इस प्रकार कहने वाले पुरुष को यदि इस प्रकार यह अभिसमन्वागत का ज्ञान नही होता कि 'ये जीव है, ये अजीव है, ये त्रस है, ये स्थावर है', उस पुरुष का प्रत्याख्यान सुप्रत्याख्यान नही होता, किन्तु दुष्प्रत्याख्यान होता है। साथ ही, 'मैने सभी प्राण यावत् सभी सत्त्वो की हिंसा का प्रत्याख्यान किया है', इस प्रकार कहने वाला वह दुष्प्रत्याख्यानी पुरुष सत्य भाषा नही बोलता, किन्तु मृषा भाषा बोलता है। इस प्रकार वह मृषावादी सर्व प्राण यावत् समस्त सत्त्वो के प्रति तीन करण, तीन योग से असयत (सयमरहित), अविरत (हिसादि से अनिवृत्त या विरतिरहित), पापकर्म से अप्रतिहत (नही रुका हुआ) और पापकर्म का अप्रत्याख्यानी (जिसने पापकर्म का प्रत्याख्यान-त्याग नही किया है), (कायिकी आदि) क्रियाओ से युक्त-(सक्रिय), असवृत (सवररहित), एकान्तदण्ड (हिंसा) करने वाला एव एकान्तबाल (अज्ञानी व विरति शून्य) है।

'मैने सर्व प्राण यावत् सर्व सत्त्वो की हिसा का प्रत्याख्यान किया है', यो कहने वाले पुरुष को यह ज्ञात होता है कि 'ये जीव है, ये अजीव है, ये त्रस है, और ये स्थावर है', उस (सर्व प्राण, यावत् सर्व सत्त्वो की हिसा का मैने त्याग किया है, यो कहने वाले) पुरुष का प्रत्याख्यान सुप्रत्याख्यान है, किन्तु दुष्प्रत्याख्यान नही है। 'मैने सर्व प्राण यावत् सर्व सत्त्वो की हिंसा का प्रत्याख्यान किया है', इस प्रकार कहता हुआ वह सुप्रत्याख्यानी सत्य भाषा बोलता है, मृषा भाषा नही बोलता, इस प्रकार वह सुप्रत्याख्यानी सत्यभाषी, सर्व प्राण यावत् सत्त्वो के प्रति तीन करण, तीन योग से सयत, विरत है। (अतीतकालीन) पापकर्मो को (पश्चात्ताप-आत्मनिन्दा से) उसने प्रतिहत (घात) कर रोक दिया है, (अनागत पापो को) प्रत्याख्यान से त्याग दिया है, वह अक्रिय (कर्मबन्ध की कारणभूत क्रियाओ से रहित) है, संवृत-(आस्रवद्वारो को रोकने वाला, सवरयुक्त) है, (एकान्त अदण्डरूप है) और एकान्त पण्डित है। इसीलिए, हे गौतम ! ऐसा कहा जाता है कि यावत् कदाचित् सुप्रत्याख्यान होता है और कदाचित् दुष्प्रत्याख्यान होता है।

1. [Q. 2] *Bhante* ! Why do you say that a person saying—"I have renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings; beings). and so on up to all *sattva* (immobile beings; entities)"—is sometimes liable of achieving good renunciation and sometimes bad renunciation ?

[Ans.] "I have renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities)"—Gautam ! If a person saying thus does not have complete awareness about, 'These are *jivas* (souls), these are *ajivas* (non-souls), these are mobile beings and these are immobile beings,' then his renunciation (*pratyakhyan*) is not good renunciation but bad renunciation Also, that person, with bad renunciation, who utters that he has renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities), is not telling the truth but is telling a lie Thus that liar is devoid of restraint (*asamyat*), detachment (*avirat*), control on and renunciation of sinful indulgence (*apratihat* and *apratyakhyan*) towards all praan (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities) through three means (*karan*) and three methods (*yoga*) He is active (physically and otherwise), devoid of blockage of inflow of *karmas* (*asamvrit*), with singular indulgence in violence (*ekaant dand*) and a complete ignorant (*ekaant baal*)

In contrast, Gautam !—"I have renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities)"—if a person saying thus does have complete awareness about, 'These are jivas (souls), these are ajivas (non-souls), these are mobile beings and these are immobile beings,' then his renunciation (*pratyakhyan*) is good renunciation and not bad renunciation Also, that person, with good renunciation, who utters that he has renounced violence towards all *praan* (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities), is telling the truth and not telling a lie Thus that speaker of truth is endowed with restraint (*samyat*) and detachment (*virat*) He blocks (the fruition of) or destroys (*pratihat*) demeritorious *karmas* (acquired in the past) and renounces (*pratyakhyan*) sinful indulgence (the source of future acquisition of *karmas*) towards all *praan* (two to four sensed beings, beings) and so on up to all *sattva* (immobile beings, entities), through three means (*karan*) and three methods (*yoga*) He is inactive (in terms of all activities that cause acquisition of *karmas*) He blocks the inflow of *karmas* (*samvrit*) He accomplishes singular abstinence from violence (*ekaant adand*) and is completely sagacious (*ekaant pundit*) That is why I say that and so on up to some times liable of achieving good renunciation and sometimes bad renunciation

प्रत्याख्यान के भेद–प्रभेद CATEGORIES AND SUB-CATEGORIES OF RENOUNCING

२. [प्र.] कतिविहे णं भंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा–मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य।

२. [प्र.] भगवन् ! प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है ?

[उ.] गौतम ! प्रत्याख्यान दो प्रकार का है। यथा–(१) मूलगुण प्रत्याख्यान, और (२) उत्तरगुण प्रत्याख्यान।

2. [Q.] *Bhante* ! Of how many kinds is renunciation (*pratyakhyan*) ?

[Ans.] Gautam ! Renunciation is of two kinds—(1) *Mool-guna pratyakhyan* (basic-virtue enhancing renunciation) and (2) *Uttar-guna pratyakhyan* (auxiliary-virtue enhancing renunciation)

३. [प्र.] मूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य देसमूलगुणपच्चक्खाणे य।

४. [प्र.] सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–सव्वाओ पाणातिवायाओ, वेरमणं जाव सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।

३. [प्र.] भगवन् ! मूलगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है ?

[उ.] गौतम ! वह दो प्रकार का है। यथा–(१) सर्व–मूलगुण प्रत्याख्यान, और (२) देश–मूलगुण प्रत्याख्यान।

४. [प्र.] भगवन् ! सर्व–मूलगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है ?

[उ.] गौतम ! वह पाँच प्रकार का है। यथा–(१) सर्व–प्राणातिपात से विरमण, (२) सर्व–मृषावाद से विरमण, (३) सर्व–अदत्तादान से विरमण, (४) सर्व–मैथुन से विरमण, और (५) सर्व–परिग्रह से विरमण।

3. [Q.] *Bhante* ! Of how many kinds is *Mool-guna pratyakhyan* (basic-virtue enhancing renunciation) ?

[Ans.] Gautam ! It is of two kinds—(1) *Sarva-mool-guna pratyakhyan* (complete basic-virtue enhancing renunciation) and (2) *Desh-mool-guna pratyakhyan* (partial basic-virtue enhancing renunciation).

4. [Q.] *Bhante* ! Of how many kinds is *Sarva-mool-guna pratyakhyan* (complete basic-virtue enhancing renunciation) ?

[Ans.] It is of five kinds—(1) *Sarva Pranatipat viraman* (to abstain completely from harming or destroying life), (2) *Sarva Mrishavad*

viraman (to abstain completely from falsity), (3) *Sarva Adattadan viraman* (to abstain completely from taking without being given, to abstain completely from acts of stealing), (4) *Sarva Maithun viraman* (to abstain completely from indulgence in sexual activities), and (5) *Sarva Parigraha viraman* (to abstain completely from acts of possession of things)

५. [प्र] देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

[उ] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–थूलाओ पाणातिवायाओ वेरमणं जाव थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं।

५. [प्र.] भगवन् ! देश–मूलगुण–प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है ?

[उ] गौतम ! वह पाँच प्रकार का है। यथा–स्थूल प्राणातिपात से विरमण यावत् स्थूल परिग्रह से विरमण।

5. [Q.] *Bhante* ! Of how many kinds is *Desh-mool-guna pratyakhyan* (partial basic-virtue enhancing renunciation) ?

[Ans.] It is of five kinds—(1) *Sthula Pranatipat viraman* (to abstain grossly or partially from harming or destroying life) and so on up to *Sthula Parigraha viraman* (to abstain grossly or partially from acts of possession of things)

६. [प्र.] उत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

[उ.] गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं०–सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य।

६. [प्र.] भगवन् ! उत्तरगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है ?

[उ.] गौतम ! वह दो प्रकार का है। यथा–(१) सर्व–उतरगुण प्रत्याख्यान, और (२) देश उत्तरगुण–प्रत्याख्यान।

6. [Q.] *Bhante* ! Of how many kinds is *Uttar-guna pratyakhyan* (auxiliary-virtue enhancing renunciation) ?

[Ans.] Gautam ! It is of two kinds—(1) *Sarva-uttar-guna pratyakhyan* (complete auxiliary-virtue enhancing renunciation) and (2) *Desh-uttar-guna pratyakhyan* (partial auxiliary-virtue enhancing renunciation)

७. [प्र.] सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

[उ] गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, तं जहा–

अणागतं १ अतिक्कंतं २ कोडीसहितं ३ नियंटियं ४ चेव।
सागारमणागारं ५–६ परिमाणकडं ७ निरवसेसं ८॥१॥

साकेयं ९ चेव अद्धाए १०, पच्चक्खाणं भवे दसहा।

७. [प्र.] भगवन्! सर्व-उत्तरगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है?

[उ.] गौतम! वह दस प्रकार का है। यथा-(१) अनागत, (२) अतिक्रान्त, (३) कोटिसहित, (४) नियन्त्रित, (५) साकार (सागार), (६) अनाकार (अनागार), (७) परिमाणकृत, (८) निरवशेष, (९) सकेत, और (१०) अद्धा-प्रत्याख्यान। इस प्रकार (सर्वोत्तरगुण) प्रत्याख्यान दस प्रकार का होता है।

7. [Q.] *Bhante*! Of how many kinds is *Sarva Uttar-guna pratyakhyan* (complete auxiliary-virtue enhancing renunciation)?

[Ans.] Gautam! It is of ten kinds—(1) *Anagat*, (2) *Atikrant*, (3) *Kotisahit*, (4) *Niyantrit*, (5) *Sagaar*, (6) *Anagaar*, (7) *Parimanakrit*, (8) *Niravashesh*, (9) *Sanket*, and (10) *Addha-pratyakhyan* Thus *pratyakhyan* is of ten kinds

८. [प्र] देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते?

[उ] गोयमा! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-दिसिव्वयं १ उवभोग-परीभोगपरिमाणं २ अणत्थदंडवेरमणं ३ सामाइयं ४ देसावगासिय ५ पोसहोववासो ६ अतिहिसंविभागो ७ अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणाऽऽराहणता।

८. [प्र] भगवन्! देश-उत्तरगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकार का है?

[उ.] गौतम! देश-उत्तरगुण प्रत्याख्यान सात प्रकार का है। यथा-(१) दिग्व्रत (दिशापरिमाणव्रत), (२) उपभोग-परिभोगपरिणाम, (३) अनर्थदण्डविरमण, (४) सामायिक, (५) देशावकाशिक, (६) पौषधोपवास, और (७) अतिथि-सविभाग तथा अपश्चिम मारणान्तिक-सलेखना-जोषणा-आराधना।

8. [Q.] *Bhante*! Of how many kinds is *Desh Uttar-guna pratyakhyan* (partial auxiliary-virtue enhancing renunciation)?

[Ans.] Gautam! It is of seven kinds—(1) *Digvrat* or *dishaparimaan vrat* (limiting movement in each direction), (2) *Upabhoga-paribhoga-parimaan* (limiting of means of subsistence and comforts), (3) *Anarthdanda viraman* (abstention from needless and wanton violence), (4) *Samayik* (meditational and other prescribed practices), (5) *Deshavakashik* (limiting area of activity), (6) *Paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting) and (7) *Atithi Samvibhag* (taking care of the guests or the needy) and *Apashchim maranantik-samlekhana-joshana-aradhana* (accepting final ultimate vow till death)

विवेचन . मूलगुण-चारित्र रूप कल्पवृक्ष के मूल (जड) के समान जो गुण है, जैसे प्राणातिपात विरमण आदि। उत्तरगुण-वृक्ष की शाखा के समान जो गुण है, (आगे बताये अनुसार)। सर्व-मूलगुण प्रत्याख्यान मुनि के तथा देश-मूलगुण प्रत्याख्यान देशविरत श्रावक के होता है।

दशविध सर्वोत्तरगुण प्रत्याख्यान–(१) **अनागत**–भविष्य मे जो तप, नियम या प्रत्याख्यान करना है, उसमे भविष्य मे बाधा पडती देखकर उसे पहले ही कर लेना। (२) **अतिक्रान्त**–पहले जो तप, नियम, व्रत-प्रत्याख्यान करना था, उसमे गुरु, तपस्वी एव रुग्ण की सेवा आदि कारणो से बाधा पडने के कारण उस तप, व्रत-प्रत्याख्यान आदि को बाद मे करना, (३) **कोटिसहित**–जहाँ एक प्रत्याख्यान की समाप्ति तथा दूसरे प्रत्याख्यान की आदि एक ही दिन मे हो जाये। तप की कडी नही टूटे। जैसे-उपवास के पारणे मे आयबिल आदि तप करना। (४) **नियंत्रित**–जिस दिन जो प्रत्याख्यान करने का निश्चय किया है, उस दिन रोगादि बाधाओ के आने पर भी, उसे नही छोडना, नियमपूर्वक करना। (५) **साकार (सागार)**–जिस प्रत्याख्यान मे कुछ आगार (छूट या अपवाद) रखा जाय। उन आगारो मे से किसी आगार के उपस्थित होने पर त्यागी हुई वस्तु के त्याग का काल पूरा होने से पहले ही उसे सेवन कर लेने पर भी प्रत्याख्यान-भग नही होता। जैसा-नवकारसी, पोरसी आदि। (६) **अनाकार (अनागार)**–जिस प्रत्याख्यान मे 'महत्तरागार' आदि कोई आगार न हो। 'अनाभोग' और 'सहसाकार' तो उसमे होते ही है। (७) **परिमाणकृत**–दत्ति कवल (ग्रास), घर, भिक्षा या भोज्यद्रव्यो की मर्यादा करना। (८) **निरवशेष**-अशन, पान, खादिम और स्वादिम, इन चारो प्रकार के आहार का सर्वथा प्रत्याख्यान-त्याग करना। (९) **सकेतप्रत्याख्यान**–अगूठा, मुट्ठी, गाँठ आदि किसी भी वस्तु के सकेत को लेकर किया जाने वाला प्रत्याख्यान। (१०) **अद्धाप्रत्याख्यान**–अद्धा अर्थात् काल विशेष को नियत करके जो प्रत्याख्यान किया जाता है। जैसे-पोरिसी, दो पोरिसी, मास, अर्द्ध-मास आदि। श्रावक के दिग्व्रत आदि तीन गुणव्रत और सामायिक आदि चार शिक्षाव्रत ये सात देशान्तर गुण प्रत्याख्यान है।

अपश्चिम-मारणान्तिक-सलेखना-जोषणा-आराधना की व्याख्या–अपश्चिम अर्थात् जिसके पीछे कोई सलेखनादि कार्य करना शेष नही, ऐसी **अन्तिम मारणान्तिक** (आयुष्यसमाप्ति के अन्त-मरणकाल मे) की जाने वाली शरीर और कषाय आदि को कृश करने वाली तपस्याविशेष **'अपश्चिम-मारणान्तिक सलेखना'** है। उसकी **जोषणा**–स्वीकार करने की आराधना आयु समाप्ति तक जाती है। अन्तिम समय मे यह सबके लिए अवश्यकरणीय है। (वृत्ति, पत्राक २९७)

Elaboration—Mool-guna—*mool* means root and *guna* means virtues The virtues (complete abstention from violence, etc) that are like roots of the tree of conduct *Uttar-guna*—the auxiliary virtues that are like branches of the tree of conduct (detailed as following) *Sarva-mool-guna pratyakhyan* (complete basic-virtue enhancing renunciation) is meant for ascetics and *Desh-mool-guna pratyakhyan* (partial basic-virtue enhancing renunciation) is meant for vow observing *shravak* (layman)

Ten *Sarva-uttar-guna pratyakhyan* (complete basic-virtue enhancing renunciation)—(1) *Anagat-pratyakhyan*—to advance, under special circumstances (like anticipated impediments in future), the observation of some austerity resolved to be observed in future. (2) *Atikrant-pratyakhyan*—to postpone for future the observation of some austerity for some specific reason (like serving senior and ailing ascetics) (3) *Kotisahit-pratyakhyan*—where the last day of one abstainment and the first day of the immediate next abstainment become common (for

example breaking a fast with the austerity of *ayambil*) (4) *Niyantrit-pratyakhyan*—a *tap* (austerity) done with complete control, following prescribed rules, irrespective of being normal or ailing (5) *Sagaar-pratyakhyan*—austerities done with some predetermined relaxations (like observing some vow and concluding it prematurely in case some predetermined cause occurs) (6) *Anagaar-pratyakhyan*—austerities done without any relaxations (unforeseen obstructions being allowed) (7) *Parimanakrit-pratyakhyan*—abstainment related to specific quantity or number of things like servings, morsels, houses, things and alms (8) *Niravashesh-pratyakhyan*—abstaining completely from all the four kinds of food (staple food, liquids, general food, and savoury food) (9) *Sanket-pratyakhyan*—abstainment done with specific signs or indications (done with fingers, thumb, fist etc) or that done with special resolves (10) *Addha-pratyakhyan*—abstainment done for specific duration such as *Muhurt* (48 minutes), *Prahar* (three hours), etc

Apashchim maranantik-samlekhana-joshana-aradhana—the practice (*aradhana*) of acceptance (*joshana*) of final (*apashchim*) ultimate vow (*samlekhana*) till death (*maranantik*) This emaciates passions and other vices as well as the body This is done when the end of life is near and is obligatory for all indoctrinated people (Vritti, leaf 297)

प्रत्याख्यानी–अप्रत्याख्यानी RENOUNCER AND NON-RENOUNCER

९. [प्र] जीवा णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ?

[उ.] गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि।

९. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव, मूलगुण प्रत्याख्यानी है, उत्तरगुण प्रत्याख्यानी है, अथवा अप्रत्याख्यानी है ?

[उ.] गौतम ! जीव मूलगुण प्रत्याख्यानी भी है, उत्तरगुण प्रत्याख्यानी भी है और अप्रत्याख्यानी भी है।

9. [Q.] *Bhante* ! Are living beings (*jiva*) *mool-guna-pratyakhyani* (basic-virtue enhancing renouncers), *uttar-guna pratyakhyani* (auxiliary-virtue enhancing renouncers), or *apratyakhyani* (non-renouncers) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings (*jiva*) are basic-virtue enhancing renouncers, auxiliary-virtue enhancing renouncers as well as non-renouncers

१०. [प्र.] नेरइया णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी० ? पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी।

११. एवं जाव चउरिंदिया।

१२. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा (सू. ९)।

१३. वाणमंतर–जोतिसिय–वेमाणिया जहा नेरइया (सू. १०)।

१०. [प्र.] भगवन् ! क्या नैरयिक जीव, मूलगुण प्रत्याख्यानी है, उत्तरगुण प्रत्याख्यानी है या अप्रत्याख्यानी है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव, न तो मूलगुण प्रत्याख्यानी है और न उत्तरगुण प्रत्याख्यानी है, किन्तु अप्रत्याख्यानी है।

११. इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय जीवो पर्यन्त कहना चाहिए।

१२. पचेन्द्रियतिर्यंचो और मनुष्यो के विषय मे (समुच्चय–औधिक) जीवो की तरह कहना चाहिए।

१३. वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवो के सम्बन्ध मे नैरयिक जीवो की तरह कथन करना चाहिए। ये सब अप्रत्याख्यानी है।

10. [Q.] *Bhante* ! Are infernal beings (*nairayik jiva*) *mool-guna-pratyakhyani* (basic-virtue enhancing renouncers), *uttar-guna pratyakhyani* (auxiliary-virtue enhancing renouncers), or *apratyakhyani* (non-renouncers) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings are neither basic-virtue enhancing renouncers nor auxiliary-virtue enhancing renouncers but non-renouncers only

11. Same should be repeated for living beings up to four sensed beings

12. What has been said about living beings (in general) should be repeated for five sensed animals and human beings

13. What has been said about infernal beings should be repeated for *Vanavyantar*, *Jyotishk* and *Vaimanik* gods. They all are *apratyakhyani* (non-renouncers)

विवेचन निष्कर्ष–नैरयिको, पचस्थावरो, तीन विकलेन्द्रिय जीवो, तथा वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिको मे मूलगुण प्रत्याख्यानी या उत्तरगुण प्रत्याख्यानी नही होते, वे सर्वथा अप्रत्याख्यानी होते है। तिर्यंचपचेन्द्रिय जीवो और मनुष्यो मे तीनो ही विकल्प पाये जाते है। किन्तु तिर्यंचो मे मात्र देशप्रत्याख्यानी ही हो सकते है।

Elaboration—Infernal, immobile (five kinds), and two to four sensed beings as well as divine beings like interstitial, stellar and celestial vehicular gods are all singularly non-renouncers; they are neither basic-

virtue enhancing renouncers nor auxiliary-virtue enhancing renouncers The said three alternatives are applicable only to five sensed animals and human beings In animals there can only be partial renouncers (*desh-pratyakhyani*)

१४. [प्र.] एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं जाव अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा।

१४. [प्र.] भगवन् ! मूलगुण प्रत्याख्यानी, उत्तरगुण प्रत्याख्यानी और अप्रत्याख्यानी, इन जीवो मे कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ?

[उ] गौतम ! सबसे थोडे जीव मूलगुण प्रत्याख्यानी है, (उनसे) उत्तरगुण प्रत्याख्यानी असख्येय गुणा है, और (उनसे) अप्रत्याख्यानी अनन्तगुणा है।

14. *Bhante* ! Of these *mool-guna-pratyakhyani* (basic-virtue enhancing renouncer), *uttar-guna pratyakhyani* (auxiliary-virtue enhancing renouncer), and *apratyakhyani* (non-renouncer) living beings (*jivas*), which are less (or more or equal or much more) than the other ?

[Ans.] Gautam ! Of the said living beings minimum (in number) are basic-virtue enhancing renouncers, innumerable times more than these are auxiliary-virtue enhancing renouncers, and infinite times more than these are non-renouncers

१५. [प्र.] एएसि णं भंते ! पचेंदियतिरिक्खजोणियाणं० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखिज्जगुणा।

१६. [प्र.] एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा।

१५. [प्र.] भगवन् ! इन मूलगुण प्रत्याख्यानी आदि (पूर्वोक्त) जीवो मे पचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव कौन किनसे अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

[उ.] गौतम ! मूलगुण प्रत्याख्यानी पचेन्द्रिय तिर्यंच जीव सबसे थोडे है, उनसे उत्तरगुण प्रत्याख्यानी असख्यगुणा है, और उनसे अप्रत्याख्यानी असख्यगुणा है।

१६. [प्र.] भगवन् ! इन मूलगुण प्रत्याख्यानी आदि जीवो मे मनुष्य कौन किनसे अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

[उ.] गौतम ! मूलगुण प्रत्याख्यानी मनुष्य सबसे थोडे है, उनसे उत्तरगुण प्रत्याख्यानी सख्यातगुणा है और उनसे अप्रत्याख्यानी मनुष्य असख्यातगुणा है।

15. *Bhante* ! Of these basic-virtue enhancing renouncer, auxiliary-virtue enhancing renouncer, and non-renouncer five sensed animals, which are less (or more or equal or much more) than the other ?

[Ans.] Gautam ! Of the said five sensed animals minimum (in number) are basic-virtue enhancing renouncers, innumerable times more than these are auxiliary-virtue enhancing renouncers, and innumerable times more than these are non-renouncers

16. [Q.] *Bhante* ! Of these basic-virtue enhancing renouncer, auxiliary-virtue enhancing renouncer, and non-renouncer human beings, which are less (or more or equal or much more) than the other ?

[Ans.] Gautam ! Of the said human beings, minimum (in number) are basic-virtue enhancing renouncers, countable times more than these are auxiliary-virtue enhancing renouncers, and innumerable times more than these are non-renouncers

१७. [प्र.] जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

[उ.] गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि।

१७. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव, सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी है, देशमूलगुण प्रत्याख्यानी है या अप्रत्याख्यानी है ?

[उ.] गौतम ! जीव (समुच्चय मे), सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी भी है, देशमूलगुण प्रत्याख्यानी भी है और अप्रत्याख्यानी भी है।

17. [Q.] *Bhante* ! Are living beings (*jiva*) *Sarva-mool-guna-pratyakhyani* (complete basic-virtue enhancing renouncers), *Desh-mool-guna pratyakhyani* (partial basic-virtue enhancing renouncers), or *apratyakhyani* (non-renouncers) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings (in general) are complete basic-virtue enhancing renouncers, partial basic-virtue enhancing renouncers as well as non-renouncers

१८. [प्र.] नेरइयाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी।

१९. एवं जाव चउरिंदिया।

२०. [प्र.] पंचेंदियतिरिक्खपुच्छा।

[उ.] **गोयमा ! पंचेंदियतिरिक्खा नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि।**

१८. [प्र.] भगवन् ! नैरयिक जीवो के विषय मे भी यही प्रश्न है ?

[उ] गौतम ! नैरयिक जीव, न तो सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी है, और न ही देशमूलगुण प्रत्याख्यानी है, वे अप्रत्याख्यानी है।

१९. इसी तरह यावत् चतुरिन्द्रियपर्यन्त कहना चाहिए।

२०. [प्र] पचेन्द्रियतिर्यंच जीवो के विषय मे भी यही प्रश्न है।

[उ.] गौतम ! पचेन्द्रियतिर्यच सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी नही है, देशमूलगुण प्रत्याख्यानी है और अप्रत्याख्यानी भी है।

18. [Q.] *Bhante* ! The same question about infernal beings ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings are neither complete basic-virtue enhancing renouncers nor partial basic-virtue enhancing renouncers but are non-renouncers

19. The same should be repeated for all beings up to four sensed beings

20. [Q.] *Bhante* ! The same question about five sensed animals ?

[Ans.] Gautam ! Five sensed animals are not complete basic-virtue enhancing renouncers but are partial basic-virtue enhancing renouncers as well as non-renouncers

२१. **मणुस्सा जहा जीवा।**

२२. **वाणमंतर–जोतिस–वेमाणिया जहा नेरइया।**

२१. मनुष्यो के विषय मे जीवो की तरह कथन करना चाहिए।

२२. वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवो के विषय मे नैरयिको की तरह कहना चाहिए।

21. What has been said about living beings (in general) should be repeated for human beings

22. What has been said about infernal beings should be repeated for *Vanavyantar*, *Jyotishk* and *Vaimanik* gods.

२३. [प्र.] **एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?**

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी। एव अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्लए दंडए (सु. १४–१६), नवरं सव्वत्थोवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा।

२३. [प्र] भगवन् ! इन सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी, देशमूलगुण प्रत्याख्यानी और अप्रत्याख्यानी जीवो मे कौन किनसे अल्प, अधिक, तुल्य और विशेषाधिक है ?

[उ] गौतम ! सबसे थोडे सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी जीव है, उनसे असख्यातगुणे देशमूलगुण प्रत्याख्यानी जीव है, और अप्रत्याख्यानी जीव उनसे अनन्तगुणे है। इसी प्रकार तीनो–औधिक जीवो, पचेन्द्रियतिर्यंचो और मनुष्यो का अल्प–बहुत्व प्रथम दण्डक मे कहे अनुसार कहना चाहिए, किन्तु इतना विशेष है कि देशमूलगुण प्रत्याख्यानी पचेन्द्रियतिर्यच सबसे थोडे है और अप्रत्यख्यानी पचेन्द्रियतिर्यच उनसे असख्येयगुणे है।

23. [Q.] *Bhante* ! Of these *Sarva-mool-guna-pratyakhyani* (complete basic-virtue enhancing renouncer), *Desh-mool-guna pratyakhyani* (partial basic-virtue enhancing renouncer), or *apratyakhyani* (non-renouncer) living beings (*jivas*), which are less (or more or equal or much more) than the other ?

[Ans.] Gautam ! Of the said living beings minimum (in number) are complete basic-virtue enhancing renouncers, innumerable times more than these are partial basic-virtue enhancing renouncers, and infinite times more than these are non-renouncers The same is true for all the three—living beings (in general), five sensed animals and human beings The difference is that in case of five sensed animals minimum are partial basic-virtue enhancing renouncers and infinite times more than these are non-renouncers

२४. [प्र.] जीवा ण भते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

[उ] गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, तिण्णि वि।

२४. [प्र.] भगवन् ! जीव क्या सर्व–उत्तरगुण प्रत्याख्यानी है, देश–उत्तरगुण प्रत्याख्यानी है अथवा अप्रत्याख्यानी है ?

[उ.] गौतम ! जीव सर्व–उत्तरगुण प्रत्याख्यानी भी है, देश–उत्तरगुण प्रत्याख्यानी भी है और अप्रत्याख्यानी भी है। (अर्थात्–तीनो प्रकार के है)

24. [Q.] *Bhante* ! Are living beings (*jiva*) *Sarva-uttar-guna-pratyakhyani* (complete auxiliary-virtue enhancing renouncers), *Desh-uttar-guna pratyakhyani* (partial auxiliary-virtue enhancing renouncers), or *apratyakhyani* (non-renouncers) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings (in general) are complete auxiliary-virtue enhancing renouncers, partial auxiliary-virtue enhancing renouncers as well as non-renouncers

२५. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव।

२६. सेसा अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया।

२५. पचेन्द्रियतिर्यंचो और मनुष्यो का कथन भी इसी तरह करना चाहिए।

२६. वैमानिकपर्यन्त शेष सभी जीव अप्रत्याख्यानी है।

25. The same should be repeated for five sensed animals and human beings

26. All other beings up to *Vaimaniks* are *apratyakhyani* (non-renouncers)

२७. [प्र.] एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी०, अप्पाबहुगाणि।

[उ.] तिण्णि वि जहा पढमे दंडए (सु. १४–१६) जाव मणूसाणं।

२७. [प्र.] भगवन् ! इन सर्वोत्तरगुण प्रत्याख्यानी, देशोत्तरगुण प्रत्याख्यानी एव अप्रत्याख्यानी जीवो मे से कौन किनसे अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

[उ] गौतम ! इन तीनो का अल्पबहुत्व प्रथम दण्डक (सू १४–१६) मे कहे अनुसार यावत् मनुष्यो तक जान लेना चाहिए।

27. [Q.] *Bhante* ! Of these *Sarva-uttar-guna-pratyakhyani* (complete auxiliary-virtue enhancing renouncer), *Desh-uttar-guna pratyakhyani* (partial auxiliary-virtue enhancing renouncer), or *apratyakhyani* (non-renouncer) living beings (*jivas*), which are less (or more or equal or much more) than the other ?

[Ans.] Gautam ! The statement of comparative numbers of these three should be repeated like that about the first category (aphorisms 14-16) and so on up to human beings

विवेचन · निष्कर्ष–सर्व–मूलगुण प्रत्याख्यान केवल मनुष्य मे ही होता है, देश–मूलगुण प्रत्याख्यानी मनुष्य और पचेन्द्रियतिर्यंच दोनो ही हो सकते है, तथा शेष सभी जीव अप्रत्याख्यानी होते है। अत सबसे थोडे सर्व–मूलगुण प्रत्याख्यानी है, उनसे अधिक देश–मूलगुण प्रत्याख्यानी जीव है, और सबसे अधिक अप्रत्याख्यानी है।

Elaboration—Conclusion—Only human beings can be *Sarva-mool-guna-pratyakhyani* (complete basic-virtue enhancing renouncers) Human beings and five sensed animals both can be *Desh-mool-guna pratyakhyani* (partial basic-virtue enhancing renouncers) All the

remaining classes of beings are necessarily *apratyakhyani* (non-renouncers). That is why in number minimum are complete basic-virtue enhancing renouncers, more then them are partial basic-virtue enhancing renouncers and maximum are non-renouncers

सयत तथा प्रत्याख्यानी आदि का अल्पबहुत्व

COMPARATIVE NUMBERS OF RESTRAINED AND RENOUNCERS

२८. [प्र.] जीवा णं भंते ! किं संजया ? असंजया ? संजयासंजया ?

[उ.] गोयमा ! जीवा संजया वि०, तिण्णि वि, एवं जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्वं जाव वेमाणिया। अप्पाबहुगं तहेव (सु. १४-१६) तिण्ह वि भाणियव्वं।

२८. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव संयत (सर्वथा सावद्य का त्यागी) है, असयत है, अथवा सयतासयत (आशिक त्यागी) है ?

[उ.] गौतम ! जीव सयत भी है, असयत भी है और सयतासयत भी है। इस तरह प्रज्ञापनासूत्र ३२वे पद मे कहे अनुसार यावत् वैमानिकपर्यन्त कहना चाहिए और अल्पबहुत्व भी तीनो का पूर्ववत् (सू. १४ से १६ तक मे उक्त) कहना चाहिए।

28. [Q.] *Bhante* ! Are living beings *samyat* (restrained), *asamyat* (unrestrained) or *samyat-asamyat* (restrained-unrestrained or partially restrained)?

[Ans.] Gautam ! Living beings are *samyat* (restrained), *asamyat* (unrestrained) and *samyat-asamyat* (restrained-unrestrained or partially restrained) also In the same way what has been mentioned in *Pada 32 of Prajanapana Sutra* should be repeated up to *Vaimanik* The statement about comparative numbers of the three should be repeated as aforesaid (aphorisms 14-16)

२९. [प.] जीवा णं भते ! किं पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ?

[उ.] गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि, एवं तिण्णि वि।

३०. एवं मणुस्साण वि।

३१. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया।

३२. सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया।

२९. [प्र.] भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यानी है, अप्रत्याख्यानी है, अथवा प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी हैं ?

[उ.] गौतम ! जीव प्रत्याख्यानी भी हैं, (अप्रत्याख्यानी भी हैं और प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी भी है)। अर्थात् तीनों प्रकार के है।

३०. इसी प्रकार मनुष्य भी तीनो ही प्रकार के है।

३१. पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव प्रारम्भ के विकल्प से रहित है, (अर्थात् वे प्रत्याख्यानी नही है), किन्तु अप्रत्याख्यानी है या प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी है।

३२. शेष सभी जीव यावत् वैमानिक तक अप्रत्याख्यानी है।

29. [Q.] *Bhante* ! Are living beings *pratyakhyani* (renouncers), *apratyakhyani* (non-renouncer) or *pratyakhyani-apratyakhyani* (renouncer-non-unrenouncers or partial renouncers) ?

[Ans.] Gautam ! Living beings are renouncers, (non-renouncers and renouncer-non-renouncers or partial renouncers too) Or of all the three types

30. In the same way human beings are also of all the three types

31. Five sensed animals have absence of the first alternative (i e they are not renouncers) but are non-renouncers and partial renouncers

32. All the remaining beings up to *Vaimanik* are non-renouncers

३३. [प्र.] एतेसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] **गोयमा ! सव्वत्थोवा जीव पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा।**

३३. [प्र.] भगवन् ! इन प्रत्याख्यानी आदि जीवो मे कौन किनसे अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

[उ.] गौतम ! सबसे अल्प जीव प्रत्याख्यानी है, उनसे प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी असख्येयगुणे है और उनसे अप्रत्याख्यानी अनन्तगुणे है।

33. [Q.] *Bhante* ! Of these *pratyakhyani* (renouncer) and other aforesaid living beings (*jivas*), which are less (or more or equal or much more) than the other ?

[Ans.] Gautam ! Of these living beings minimum are renouncers, innumerable times more than these are partial renouncers and infinite times more than these are non-renouncers

३४. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा।

३५. मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा।

३४. पचेन्द्रिय तिर्यंच जीवो मे प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी जीव सबसे थोडे है, और उनसे असख्यातगुणे अप्रत्याख्यानी है।

३५. मनुष्यो मे प्रत्याख्यानी मनुष्य सबसे थोडे है, उनसे सख्येयगुणे प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी है और उनसे भी असख्येयगुणे अप्रत्याख्यानी है।

34. In five sensed animals minimum are partial renouncers and innumerable times more than these are non-renouncers

35. In human beings minimum are renouncers, countable times more than these are partial renouncers and innumerable times more than these are non-renouncers

जीवो की शाश्वतता–अशाश्वतता **ETERNALITY AND NON-ETERNALITY OF BEINGS**

३६. [प्र १] जीवा णं भंते ! किं सासया ? असासया ?

[उ.] गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया।

३६. [प्र १] भगवन् ! क्या जीव शाश्वत है या अशाश्वत है ?

[उ] गौतम ! जीव कथचित् शाश्वत है और कथचित् अशाश्वत है।

36. [Q. 1] *Bhante* ! Are living beings (*jiva*) eternal (*shaashvat*) or are they non-eternal ?

[Ans.] From one angle they are eternal and from another angle they are non-eternal

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ 'जीवा सिय सासया, सिय असासया'?

[उ.] गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ जाव सिय असासया।

[प्र. २] भगवन् ! यह किस कारण से कहा जाता है कि जीव कथचित् शाश्वत है, कथचित् अशाश्वत है ?

[उ.] गौतम ! द्रव्य की दृष्टि से जीव शाश्वत है, और भाव (पर्याय) की दृष्टि से जीव अशाश्वत है। गौतम ! इस कारण ऐसा कहा गया है कि जीव कथचित् शाश्वत है, कथचित् अशाश्वत है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that from one angle they are eternal and from another they are non-eternal ?

[Ans.] Gautam ! From the standpoint of entity (*dravya*) living beings (souls) are eternal and from the standpoint of state or mode (*bhaava* or *paryaya*) they are non-eternal Gautam ! That is why it is said that from one angle they are eternal and from another angle they are non-eternal

३७. [प्र.] नेरइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ?

[उ.] एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि।

३८. एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासया।

सेवं भंते ! सेवं भंते। त्ति०।

॥ सत्तम सए : बिइओ उद्देसओ समत्तो ॥

३७. भगवन् ! क्या नैरयिक जीव शाश्वत है या अशाश्वत है ?

[उ.] जिस प्रकार (औधिक) जीवो का कथन किया था, उसी प्रकार नैरयिको को कथन करना चाहिए।

37. [Q.] *Bhante* ! Are infernal beings eternal (*shaashvat*) or are they non-eternal ?

[Ans.] What has been said about living beings (in general) should be repeated for infernal beings

३८. इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको के विषय मे कथन करना चाहिए कि वे जीव कथचित् शाश्वत है, कथचित् अशाश्वत है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे।

38. In the same way the statement that from one angle they are eternal and from another angle they are non-eternal, should be repeated for all the twenty four places of suffering (*Dandak*)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन साराश–द्रव्यार्थिकनय की दृष्टि से जीव (जीवद्रव्य) शाश्वत है, किन्तु विभिन्न गतियो एव योनियो मे परिभ्रमण करने और विभिन्न पर्याय धारण करने के कारण पर्यायार्थिक–नय की दृष्टि से वह अशाश्वत है।

॥ सप्तम शतक द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—From *dravyarthik naya* (existent material aspect) living being (soul entity) is eternal However as it undergoes a variety of transformations while moving around in various genuses in cycles of rebirth, from *paryayarthik naya* (transformational aspect) it is non-eternal

● END OF THE SECOND LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : तृतीय उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) · THIRD LESSON

स्थावर STHAVAR (IMMOBILE BEINGS)

वनस्पतिकायिक जीवों का आहारकाल **PERIOD OF INTAKE BY PLANT-BODIED BEINGS**

१. [प्र.] वणस्सइकाइया णं भंते ! कं कालं सव्वप्पाहारगा वा सव्वमहाहारगा वा भवंति ?

[उ.] गोयमा ! पाउस–वरिसारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सइतिकाइया सव्वमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं च णं सरदे, तयाणंतरं च णं हेमंते, तयाणंतरं च णं वसंते, तयाणंतरं च णं गिम्हे। गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति।

१. [प्र.] भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव किस काल मे सर्वाल्पाहारी (सबसे थोडा आहार करने वाले) होते है और किस काल मे सर्वमहाहारी (सबसे अधिक आहार करने वाले) होते है ?

[उ.] गौतम ! पावस ऋतु (श्रावण और भाद्रपद मास) मे तथा वर्षा ऋतु (आश्विन और कार्तिक मास) मे वनस्पतिकायिक जीव (अधिक जल बरसने के कारण) सर्वमहाहारी होते है। इसके पश्चात् शरद् ऋतु (कार्तिक और मार्गशीर्ष मास) मे, तदनन्तर हेमन्त ऋतु (पौष और माघ मास) मे, इसके बाद वसन्त ऋतु (फाल्गुन और चैत्र मास) मे और तत्पश्चात् ग्रीष्म ऋतु (वैशाख और ज्येष्ठ मास) मे वनस्पतिकायिक जीव क्रमश अल्पाहारी होते है। ग्रीष्म ऋतु मे वे सर्वाल्पाहारी होते है।

1. [Q.] *Bhante* ! During what period plant-bodied beings (*vanaspati-kayik jivas*) have least intake and during what period they have most intake ?

[Ans.] Gautam ! Plant-bodied beings (*vanaspati-kayik jivas*) have maximum intake during four months of monsoon season (*Pavas ritu* and *Varsha ritu*), which according to Indian calendar are months of Ashadh, Shravan, Bhadrapad and Ashvin (the cause being excess of rain water during these months) After that their intake gradually reduces in the following seasons of autumn (*Sharad ritu* or Kartik and Margshirsh months), winter (*Hemant ritu* or Paush and Maagh months) and spring (*Vasant ritu* or Phalgun and Chaitra months) In the summer season (*Grishm ritu* or Vaishaakh and Jyeshth months) their intake is minimum

२. [प्र.] जइ णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरितगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ?

[उ.] गोयमा ! गिम्हासु णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य पुग्गला य वणस्सइकाइयत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया जाव चिट्ठंति।

२. [प्र.] भगवन् ! यदि ग्रीष्म ऋतु मे वनस्पतिकायिक जीव सर्वाल्पाहारी होते है, तो बहुत से वनस्पतिकायिक ग्रीष्म ऋतु मे पत्तो वाले, फूलो वाले, फलो वाले, हरियाली से देदीप्यमान (हरे-भरे) एव श्री (शोभा) से अतीव सुशोभित कैसे होते है ?

[उ.] गौतम ! ग्रीष्म ऋतु मे बहुत से उष्ण योनि वाले जीव और पुद्‌गल वनस्पतिकाय के रूप मे उत्पन्न हो जाते है, विशेष रूप से उत्पन्न होते है, वृद्धि को प्राप्त होते है, और विशेष रूप से वृद्धि को प्राप्त होते है। इस कारण से हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतु मे बहुत से वनस्पतिकायिक पत्तो वाले, फूलो वाले, फलो वाले यावत् सुशोभित होते है।

2. **[Q.]** *Bhante* ! If plant-bodied beings have minimum intake in the summer season then how is it that in summer many plant-bodied beings are loaded with leaves, flowers, fruits, and appear lush green and extremely beautiful ?

[Ans.] Gautam ! In summer many heat-thriving (*ushna-yoni*) beings and matter particles are commonly and specially born and they grow as plant-bodied beings. That is why, Gautam ! In summer many plant-bodied beings are loaded with leaves, flowers, fruits and so on up to appear beautiful.

विवेचन छह ऋतुओ मे से प्रावृट् और वर्षा ऋतु, इन दो ऋतुओं मे वनस्पतिकायिक जीव सर्वाधिक आहारी होते है, क्योंकि इन ऋतुओ मे वर्षा अधिक होती है, जलस्नेह की अधिकता के कारण वनस्पति को अधिक आहार मिलता है। अन्य ऋतुओ मे क्रमश जल की अल्पता के कारण आहार भी अल्प मिलता है।

ग्रीष्म ऋतु मे सर्वाल्पाहारी होते हुए भी वनस्पतियाँ हरी-भरी क्यो रहती है ? क्योकि ग्रीष्म ऋतु मे जो वनस्पतियाँ पत्र, पुष्प, फलो से युक्त हरी-भरी दिखाई देती है, इसका कारण उस समय उष्णयोनिक जीवो और पुद्‌गलो के उत्पन्न होने, बढने आदि का सिलसिला चालू हो जाना है। *(वृत्ति, पत्राक ३००)*

Elaboration—Of the six seasons, plant-bodied beings have maximum nutrient intake during the pre-monsoon and monsoon seasons. This is because of availability of water, the nutrient carrier, in abundance due to rains. In other seasons there is a gradual decline of intake due to reduced supply of water.

In summer although there is least intake of nutrients, why the plants are green ? The reason for plants appearing lush green and loaded with leaves, flowers and fruits is that with the advent of summer the sprouting and growing of heat thriving organism and matter begins. (*Vritti, leaf 300*)

३. [प्र.] से नूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ?

[उ.] हंता, गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा।

३. [प्र.] भगवन् ! क्या वनस्पतिकाय के मूल, निश्चय ही मूल जीवो से स्पृष्ट (व्याप्त) होते है, कन्द–कन्द के जीवो से स्पृष्ट होते है, यावत् बीज, बीज के जीवो से स्पृष्ट होते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! मूल, मूल के जीवो से स्पृष्ट होते है, यावत् बीज, बीज के जीवो से स्पृष्ट होते है।

3. [Q.] *Bhante* ! Are the roots (mool) of plant-bodied beings essentially touched (pervaded) by living organism (souls) of the root-class (*mool-jivas*), trunk (*kand*) by *kand-jivas* (living organism of the trunk-class) and so on up to seed (*beej*) by *beej-jivas* ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Roots (*mool*) are touched (pervaded) by living organism (souls) of the root-class (*mool-jivas*) and so on up to seed (*beej*) by *beej-jivas*

४. [प्र.] जइ ण भंते ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा, कम्हा ण भंते। वणस्सइकाइया आहारेति ? कम्हा परिणामेति ?

[उ.] गोयमा ! मूल मूलजीवफुडा पुढविजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति। कदा कदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति। एव जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति।

४. [प्र.] भगवन् ! यदि मूल, मूल जीवो से स्पृष्ट होते है, यावत् बीज, बीज के जीवो से स्पृष्ट होते है, तो फिर, भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव किस प्रकार से (कैसे) आहार करते है, और किस तरह से उसे परिणमाते है ?

[उ.] गौतम ! मूल, मूल के जीवो से व्याप्त (स्पृष्ट) है और वे पृथ्वी के जीव के साथ सम्बद्ध (सयुक्त–जुडे हुए) होते है, इस तरह से वनस्पतिकायिक जीव आहार करते है, और उसे परिणमाते है। इसी प्रकार कन्द, कन्द के जीवो के साथ स्पृष्ट (व्याप्त) होते है और मूल के जीवो से सम्बद्ध (जुडे हुए) रहते है, इस प्रकार यावत् बीज, बीज के जीवो से व्याप्त (स्पृष्ट) होते है, और वे फल के जीवो के साथ सम्बद्ध रहते है, इस प्रकार वे आहार करते और उसे परिणमाते है।

4. [Q.] *Bhante* ! If roots (*mool*) are touched (pervaded) by living organism (souls) of the root-class (*mool-jivas*) and so on up to . seed (*beej*) by *beej-jivas*, then, *Bhante* ! How do plant-bodied beings take in and digest nutrients ?

[Ans.] Gautam ! Roots (*mool*) are touched (pervaded) by living organism (souls) of the root-class (*mool-jivas*) and they, in turn, are linked with living organism (souls) of earth, that is how plant-bodied

beings take in and digest nutrients In the same way trunks (*kand*) are touched by *kand-jivas* (living organism of the trunk class) and they, in turn, are linked with *mool-jivas* (living organism of root), and so on up to seeds (*beej*) are touched by *beej-jivas* (living organism of the seed class) and they, in turn, are linked with *phal-jivas* (living organism of fruit), that is how plant-bodied beings take in and digest nutrients

विवेचन वृक्षादि रूप वनस्पति के दस अग होते है-मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा (छाल), शाखा, प्रवाल, पत्र, पुष्प, फल और बीज।

मूलादि जीवो से व्याप्त मूलादि द्वारा आहारग्रहण-मूलादि, अपने-अपने जीवो से व्याप्त होते हुए भी परस्पर एक-दूसरे से सम्बद्ध रहते है। इस कारण मूल पृथ्वी से रस ग्रहण करते है और परम्परा से कन्द आदि सब एक दूसरे से जुडे हुए होने से अपना-अपना आहार ले लेते है और उसे परिणमाते है।

Elaboration—There are ten parts of trees and other plants — root (*mool*), trunk (*kand*), thick branch (*skandh*), bark (*chhaal*), branch (*shakha*), sprout (*praval*), leaf (*patra*), flower (*pushp*), fruit (*phal*) and seed (*beej*)

Intake—Roots and other parts of plants are pervaded by living organism of their specific classes but at the same time they are also linked with living organism of each other This way the organism of roots take nutrients from earth and pass on the same to the next part in sequence in the aforesaid order to complete the cycle up to fruit

वनस्पतियो मे अनन्तजीवत्व **CLUSTERS OF INFINITE SOULS IN PLANTS**

५. [प्र.] अह भंते ! आलुए मूलए सिंगबेरे हिरिली सिरिली सिस्सिरिली किट्टिया छिरिया छीरविरालिया कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे खिलूडे भद्दमुत्था पिंडहलिद्दा लोहीणी हूथिहमगा (थिरुगा) मुग्गकण्णी अस्सकण्णी सीहकण्णी सीहढी मुसुढी, जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता ?

[उ.] हंता, गोयमा ! आलुए मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता।

५. [प्र] भगवन् ! आलू, मूला, शृगबेर (अदरख), हिरिली, सिरिली (चीड), सिस्सिरिली, किट्टिका (वाराहीकद), छिरिया, छीरविदारिका, (सफेद और अधिक दूध वाला कद), वज्रकन्द, सूरणकन्द, खिलूडा, (आर्द्र-) भद्रमोथा, (नागर मोक्ष), पिडहरिद्रा (हल्दी की गाँठ), रोहिणी, हुथीहू, थिरुगा, मुद्गकर्णी, अश्वकर्णी, सिहकर्णी (अडूसा), सिहण्डी (दूधिया थोहर), मुसुण्ढी (काली मुसली), ये और इसी प्रकार की जितनी भी दूसरी वनस्पतियाँ है, क्या वे सब अनन्त जीव वाली और विविध (पृथक्-पृथक्) जीव वाली है।

[उ.] हॉ, गौतम ! आलू, मूला यावत् मुसुण्ढी, ये और इसी प्रकार की जितनी भी दूसरी वनस्पतियाँ है, वे सब अनन्त जीव वाली और विविध (भिन्न-भिन्न) जीव वाली है। अर्थात् एककायिक होते हुए भी अनेक जीव पृथक्-पृथक् चेतन सत्ता वाले है।

5. [Q.] *Bhante* ! *Aalu* (potato), *Mula* (radish), *Shringaber* (ginger), *Hirili*, *Sirili* (*Cheed*, Pinus roxburghii Sargent), *Sissirili*, *Kittika* (*Varaha-kand*, Tacca leontopetaloides), *Chhiriya*, *Chhiravidarika*, *Vajra-kand*, *Suran-kand*, *Khiluda*, *Bhadra Motha* (*Naagar Motha*, Cyperus rotundus), *Pindaharidra* (turmeric), *Rohini*, *Huthihoo*, *Thiruga*, *Mudgakarni*, *Ashvakarni*, *Simhakarni* (*Adusa*, Adhatoda vasica), *Sihandi* (a type of cactus), *Musundhi* (Syaha Musli, Murdannia scapiflorum), are all these and other such vegetables with infinite and diverse living beings ?

[Ans.] Yes, Gautam ! *Aalu* (potato), *Mula* (radish) and so on up to *Musundhi*, all these and other such vegetables are with infinite and diverse living beings In other words, in spite of being single bodied, these vegetables are clusters of numerous independent individual beings

लेश्या की अपेक्षा अल्पकर्म महाकर्म LESHYA AND KARMA

६. [प्र. १] सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?

[उ.] हंता, गोयमा ! सिया।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए' ?

[उ] गोयमा ! ठितिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए।

६. [प्र. १] भगवन् ! क्या कृष्णलेश्या वाला नैरयिक कदाचित् अल्पकर्म वाला और नीललेश्या वाला नैरयिक कदाचित् महाकर्म वाला होता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! कदाचित् ऐसा होता है।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते है कि कृष्णलेश्या वाला नैरयिक कदाचित् अल्पकर्म वाला होता है और नीललेश्या वाला नैरयिक कदाचित् महाकर्म वाला होता है ?

[उ.] गौतम ! स्थिति की अपेक्षा से ऐसा कहा जाता है कि यावत् (नीललेश्या वाला नैरयिक कदाचित्) महाकर्म वाला होता है।

6. [Q. 1] *Bhante* ! Are black soul-complexioned (*Krishna leshya*) infernal beings sometimes with less *karmas* (*alpakarma*) and blue soul-complexioned (*Neel leshya*) infernal beings sometimes with much *karmas* (*mahakarma*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Sometimes it happens

6. [Q. 2] *Bhante* ! Why is it so that and so on up to blue soul-complexioned infernal beings sometimes with much *karmas* ?

[Ans.] It is in context of their remaining life-span that it is said that and so on up to blue soul-complexioned infernal beings sometimes with much *karmas*

७. [प्र. १] सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?

[उ.] हंता, सिया।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'नीललेसे अप्पकम्मतराए, काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए' ?

[उ.] गोयमा ! ठितिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा जाव महाकम्मतराए।

७. [प्र १] भगवन् ! क्या नीललेश्या वाला नैरयिक कदाचित् अल्पकर्म वाला होता है और कापोतलेश्या वाला नैरयिक कदाचित् महाकर्म वाला होता है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! कदाचित् ऐसा होता है।

[प्र २] भगवन् ! आप किस कारण से ऐसा कहते है कि नीललेश्या वाला नैरयिक कदाचित अल्पकर्म वाला होता है और कापोतलेश्या वाला नैरयिक कदाचित् महाकर्म वाला होता है ?

[उ] गौतम ! स्थिति की अपेक्षा ऐसा कहता हूँ कि यावत् (कापोतलेश्या वाला नैरयिक कदाचित्) महाकर्म वाला होता है।

7. [Q. 1] *Bhante* ! Are blue soul-complexioned (*Neel leshya*) infernal beings sometimes with less *karmas* (*alpakarma*) and pigeon soul-complexioned (*Kapot leshya*) infernal beings sometimes with much *karmas* (*mahakarma*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Sometimes it happens

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it so that and so on up to pigeon soul-complexioned infernal beings sometimes with much *karmas* ?

[Ans.] It is in context of their remaining life-span that it is said that and so on up to pigeon soul-complexioned infernal beings sometimes with much *karmas*

८. एवं असुरकुमारे वि, नवरं तेउलेसा अब्भहिया।

८. इसी प्रकार असुरकुमारो के विषय मे भी कहना चाहिए, परन्तु उनमे एक तेजोलेश्या अधिक होती है। (अर्थात् उनमे कृष्ण, नील, कापोत और तेजो, ये चार लेश्याएँ होती है।)

8. The same should be repeated for *Asur Kumar* gods but they have one *leshya* more (In other words they have four *leshyas—Krishna* or black, *Neel* or blue, *Kapot* or pigeon and *Tejo* or fiery)

९. [प्र.] एवं जाव वेमाणिया, जस्स जति लेसाओ तस्स तति भाणियव्वाओ। जोतिसियस्स न भण्णति।

जाव सिय भंते ! पम्हलेसे वेमाणिए अप्पकम्मतराए, सुक्कलेसे वेमाणिए महाकम्मतराए ?

[उ.] हंता, सिया।

[प्र.] से केणट्ठेणं० सेसं जहा नेरइयस्स जाव महाकम्मतराए।

९. [प्र.] इसी तरह यावत् वैमानिक देवो तक कहना चाहिए। जिसमे जितनी लेश्याएँ हो, उतनी कहनी चाहिए, किन्तु ज्योतिष्क देवो मे केवल एक तेजोलेश्या ही होती है। अत दूसरी लेश्या की अपेक्षा अल्पकर्मी महाकर्मी नही कहा जा सकता। (प्रश्नोत्तर की सयोजना इस प्रकार कर लेनी चाहिए, यथा–) भगवन् ! क्या पद्मलेश्या वाला वैमानिक कदाचित् अल्प कर्म वाला और शुक्ललेश्या वाला वैमानिक कदाचित् महाकर्म वाला होता है ?

[उ.] हॉ, गौतम ! कदाचित् होता है।

[प्र.] भगवन् ! किस कारण से आप ऐसा कहते है ? (इसके उत्तर मे) शेष सारा कथन नैरयिक की तरह यावत् 'महाकर्म वाला होता है', यहाँ तक करना चाहिए।

9. [Q.] The same should be repeated for (all beings up to) *Vaimanik* gods Number of *leshyas* specific to particular beings should be mentioned It should be noted that *Jyotishk* (stellar) gods have only one *tejoleshya* therefore comparative statement about less and much is not possible (The questions and answers should follow the same pattern as aforesaid, i e) *Bhante* ! Are yellow soul-complexioned (*Padma leshya*) divine beings sometimes with less *karmas* (*alpakarma*) and white soul-complexioned (*Shukla leshya*) divine beings sometimes with much *karmas* (*mahakarma*) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Sometimes it happens

[Q.] *Bhante* ! Why is it so ? (in answer) rest of the statement should be stated like that about infernal beings and so on up to are sometimes with much *karmas* ?

विवेचन सापेक्ष कथन का आशय–सामान्यतया कृष्णलेश्या वाला जीव महाकर्मी और नीललेश्या वाला जीव उससे अल्पकर्मी होता है, किन्तु आयुष्य की स्थिति की अपेक्षा से कृष्णलेश्यी जीव अल्पकर्मी और नीललेश्यी जीव महाकर्मी भी हो सकता है। उदाहरणार्थ–सप्तम नरक मे उत्पन्न कोई कृष्णलेश्यी नैरयिक है, जिसने अपने आयुष्य की बहुत-सी स्थिति क्षय कर दी है, इस कारण उसने बहुत-से कर्म भी क्षय कर दिये है, किन्तु उसकी

अपेक्षा कोई नीललेश्यी नैरयिक दस सागरोपम की स्थिति से पचम नरक मे अभी तत्काल उत्पन्न हुआ है, उसने अपने आयुष्य की स्थिति अभी अधिक क्षय नही की। इस कारण पूर्वोक्त कृष्णलेश्यी नैरयिक की अपेक्षा इस नीललेश्यी के कर्म अभी बहुत बाकी है। इस दृष्टि से नीललेश्यी कृष्णलेश्यी की अपेक्षा महाकर्म वाला है।

Elaboration—The meaning of comparative statement—Generally a black soul-complexioned being is with much *karmas* and blue complexioned one is comparatively with less *karmas* But in context of the remaining life-span a black soul-complexioned being can be with less *karmas* and blue complexioned one can be with much *karmas* For example a black soul-complexioned infernal being in the seventh hell, when completes a larger part of his life-span he has shed a larger portion of his *karmas* On the other hand a blue soul-complexioned infernal being just born in the fifth hell with a life-span of ten *Sagaropam* has not yet started completing his life-span and shedding his *karmas* The blue soul-complexioned infernal being is left with much *karmas* as compared with black soul-complexioned infernal being who is left with less *karmas* The aforesaid statements have been made from this angle

वेदना और निर्जरा **SUFFERING AND SHEDDING**

१०. [प्र १] से नूण भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?

[उ] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

१०. [प्र १] भगवन् ! क्या वास्तव मे, जो वेदना है, वह निर्जरा कही जा सकती है ? और जो निर्जरा है, वह वेदना कही जा सकती है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ उपयुक्त नही है।

10. [1] [Q.] *Bhante* ! In reality can suffering or experiencing (*vedana*) be called shedding (*nirjara*) and can shedding (*nirjara*) be called suffering (*vedana*) ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ 'जा वेयणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा' ?

[उ.] गोयमा ! कम्मं वेदणा, णोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव न सा वेदणा।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहा जाता है कि जो वेदना है, वह निर्जरा नही कही जा सकती और जो निर्जरा है, वह वेदना नही कही जा सकती ?

[उ.] गौतम ! वेदना कर्म है और निर्जरा नोकर्म है। इस कारण से ऐसा कहा जाता है कि यावत् जो निर्जरा है, वह वेदना नही कही जा सकती।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that suffering (*vedana*) cannot be called shedding (*nirjara*) and shedding (*nirjara*) cannot be called suffering (*vedana*)?

[Ans.] Gautam ! (What causes) suffering (*vedana*) is *karma* (potent *karma* particles) and (what is) shed (*nirjara*) is *no-karma* (spent *karma* particles). That is why it is said that and so on up to shedding (*nirjara*) cannot be called suffering (*vedana*)

११. [प्र. १] नेरइयाणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति नेरइयाणं जा वेयणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ?

[उ.] गोयमा ! नेरइयाणं कम्मं वेयणा, णोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा।

१२. एवं जाव वेमाणियाणं।

११. [प्र. १] भगवन् ! क्या नैरयिको की जो वेदना है, उसे निर्जरा कहा जा सकता है और जो निर्जरा है, उसे वेदना कहा जा सकता है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ उपयुक्त नही है।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा आप किस कारण से कहते है कि नैरयिको की जो वेदना है, उसे निर्जरा नही कहा जा सकता और जो निर्जरा है, उसे वेदना नही कहा जा सकता ?

[उ.] गौतम ! नैरयिको की जो वेदना है, वह कर्म है और जो निर्जरा है, वह नोकर्म है। इस कारण से, हे गौतम ! मै ऐसा कहता हूँ कि यावत् जो निर्जरा है, उसे वेदना नही कहा जा सकता।

१२. इसी प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त (चौबीस ही दण्डको मे) कहना चाहिए।

11. [Q. 1] *Bhante* ! Can the suffering (*vedana*) of infernal beings be called shedding (*nirjara*) and can shedding (*nirjara*) by them be called suffering (*vedana*) ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[Q. 2] Bhante ! Why is it said that suffering (vedana) of infernal beings cannot be called shedding (*nirjara*) and shedding (*nirjara*) by them cannot be called suffering (*vedana*) ?

[Ans.] Gautam ! (What causes) suffering (*vedana*) to infernal beings is *karma* (potent *karma* particles) and (what is) shed (*nirjara*) by them is *no-karma* (spent *karma* particles) That is why it is said that and so on up to shedding (*nirjara*) cannot be called suffering (*vedana*).

12. The same should be repeated for (all twenty four *Dandaks*) up to *Vaimaniks*

१३. [प्र. १] से नूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु ? जं निज्जरिंसु तं वेदेंसु ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जं वेदेंसु नो तं निज्जरेसु, जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु' ?

[उ.] गोयमा ! कम्मं वेदेंसु, नोकम्मं निज्जरिंसु, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु।

१३. [प्र. १] भगवन् ! जिन कर्मों का वेदन कर (भोग) लिया, क्या उनको निर्जीर्ण कर लिया और जिन कर्मो को निर्जीर्ण कर लिया, क्या उनका वेदन कर लिया ?

[उ.] गौतम ! यह बात (अर्थ) शक्य नही है।

[प्र २] भगवन् ! किस कारण से आप ऐसा कहते है कि जिन कर्मो का वेदन कर लिया, उनको निर्जीर्ण नही किया और जिन कर्मो को निर्जीर्ण कर लिया, उनका वेदन नही किया ?

[उ.] गौतम ! कर्मों का वेदन किया गया है, किन्तु निर्जीर्ण किया गया है–नोकर्मो को, इस कारण से, हे गौतम ! मैने कहा कि यावत् उनका वेदन नही किया।

13. [Q. 1] *Bhante* ! Are the *karmas* that have been experienced (*vedana*) have also been shed (*nirjara*) ? And the *karmas* that have been shed have already been experienced ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that the *karmas* that have been experienced (*vedana*) have not been shed (*nirjara*) ? And the *karmas* that have been shed have not already been experienced ?

[Ans.] Gautam ! What is experienced (*vedana*) is *karma* (potent *karma* particles) but what is shed (*nirjara*) is *no-karma* (spent *karma* particles) That is why it is said that and so on up to have not already been experienced

१४. [प्र.] नेरइया णं भंते ! जं वेदेसु तं निज्जरिंसु ?

[उ.] एवं नेरइया वि।

१५. एवं जाव वेमाणिया।

१४. [प्र.] भगवन् ! नैरयिक जीवो ने जिस कर्म का वेदन कर लिया, क्या उसे निर्जीर्ण कर लिया ?

[उ.] पहले कहे अनुसार नैरयिको के विषय मे भी जान लेना चाहिए।

१५. इसी प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डक मे कथन करना चाहिए।

14. [Q.] *Bhante* ! Are the *karmas* that have been experienced (*vedana*) by infernal beings have also been shed (*nirjara*) ?

[Ans.] Gautam ! The aforesaid (answer of aphorism 13) should be repeated about infernal beings also

15. The same should be repeated for (all twenty four *Dandaks*) up to *Vaimaniks*

१६. [प्र. १] से नूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरिंति, जं निज्जरेंति तं वेदेंति ?

[उ] गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चति जाव 'नो तं वेदेति' ?

[उ.] गोयमा ! कम्मं वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेति।

१७. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया।

१६. [प्र. १] भगवन् ! क्या वास्तव मे जिस कर्म को वेदते है, उसकी निर्जरा करते है और जिसकी निर्जरा करते है, उसको वेदते है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ उपयुक्त नही है।

[प्र २] भगवन् ! यह आप किस कारण से कहते है कि जिसको वेदते है, उसकी निर्जरा नही करते और जिसकी निर्जरा करते है, उसको वेदते नही है ?

[उ.] गौतम ! कर्म को वेदते है, और नोकर्म को निर्जीर्ण करते है। इस कारण से हे गौतम ! मै कहता हूँ कि यावत् जिसको निर्जीर्ण करते है, उसका वेदन नही करते।

१७. इसी तरह नैरयिको के विषय मे जानना चाहिए। यावत् वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको मे इसी तरह कहना चाहिए।

16. [Q. 1] *Bhante* ! Is it true that the *karma* that is experienced (*vedana*) is also shed and that which is shed is also experienced ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that and so on up to that which is shed is not experienced ?

[Ans.] Gautam ! *Karma* is what is experienced and *no-karma* is what is shed That is why, Gautam ! I say that and so on up to that which is shed is not experienced

17. The same should be repeated for infernal beings and so on up to (all twenty four *Dandaks*) up to *Vaimaniks*

१८. [प्र. १] से नूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति ? जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेणं जाव 'णो तं वेदिस्संति' ?

[उ.] गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति। से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरि(वेदि)स्संति।

१९. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया।

१८. [प्र १] भगवन् ! क्या वास्तव मे, जिस कर्म का वेदन करेगे, उसकी निर्जरा करेगे और जिस कर्म की निर्जरा करेगे, उसका वेदन करेगे ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

[प्र २] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते है कि यावत् उसका वेदना नही करेगे ?

[उ] गौतम ! कर्म का वेदन करेगे, नोकर्म की निर्जरा करेगे। इस कारण से ऐसा कहा जाता है कि जिसका वेदन करेगे, उसकी निर्जरा नही करेगे और जिसकी निर्जरा करेगे, उसका वेदन नही करेगे।

१९ इसी तरह नैरयिको के विषय मे जान लेना चाहिए। यावत् वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको मे इसी तरह कहना चाहिए।

18. [Q. 1] *Bhante* ! Is it true that the *karma* that will be experienced (*vedana*) will also be shed and that which will be shed will also be experienced ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that and so on up to that which will be shed will not be experienced ?

[Ans.] Gautam ! *Karma* is what will be experienced and *no-karma* is what will be shed. That is why, Gautam ! I say that and so on up to that which will be shed will not be experienced

19. The same should be repeated for infernal beings and so on up to (all twenty four *Dandaks*) up to *Vaimaniks*

२०. [प्र. १] से नूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?

[उ.] गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जे वेदणासमए न से णिज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?

[उ.] गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति; अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेति; अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए। से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए।

२०. [प्र. १] भगवन् ! जो वेदना का समय है, क्या वह निर्जरा का समय है और जो निर्जरा का समय है, वह वेदना का समय है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा आप किस कारण से कहते है कि जो वेदना का समय है, वह निर्जरा का समय नही है और जो निर्जरा का समय है, वह वेदना का समय नही है ?

[उ] गौतम ! जिस समय मे वेदते है, उस समय निर्जरा नही करते और जिस समय निर्जरा करते है, उस समय वेदन नही करते। अन्य समय मे वेदन करते है और अन्य समय मे निर्जरा करते है। वेदना का समय दूसरा है और निर्जरा का समय दूसरा है। इसी कारण से, हे गौतम ! मै कहता हूँ कि यावत् निर्जरा का जो समय है, वह वेदना का समय नही है।

20. [Q. 1] *Bhante* ! Is it true that what is the time of experiencing (*vedana*) *karma* is also the time of shedding (*nirjara*) it ? And what is the time of shedding *karma* is also the time of experiencing it ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that what is the time of experiencing is not the time of shedding ? And what is the time of shedding is not the time of experiencing ?

[Ans.] Gautam ! At the time of experiencing shedding is not done and at the time of shedding experiencing is not done Experiencing is done at a different time and shedding is done at a different time Time of experiencing is different and that of shedding is different That is why I say that and so on up to what is the time of shedding is not the time of experiencing

२१. [प्र. १] नेरइयाणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरइयाणं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेदणासमए' ?

[उ.] गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेंति णो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति; अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेंति; अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए। से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए।

२२. एवं जाव वेमाणियाणं।

२१. [प्र. १] भगवन् ! क्या नैरयिक जीवो का जो वेदना का समय है, वह निर्जरा का समय है और जो निर्जरा का समय है, वह वेदना का समय है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा आप किस कारण से कहते है कि नैरयिको के जो वेदना का समय है, वह निर्जरा का समय नही है और जो निर्जरा का समय है, वह वेदना का समय नही है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव, जिस समय मे वेदन करते है, उस समय मे निर्जरा नही करते और जिस समय मे निर्जरा करते है, उस समय मे वेदन नही करते। अन्य समय मे वे वेदन करते है और अन्य समय मे निर्जरा करते है। उनके वेदना का समय दूसरा है और निर्जरा का समय दूसरा है। इस कारण से, मै ऐसा कहता हूँ कि यावत् जो निर्जरा का समय है, वह वेदना का समय नही है।

२२. इसी प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डको मे कहना चाहिए।

21. [Q. 1] *Bhante* ! In case of infernal beings, what is the time of experiencing (*vedana*) *karma* is also the time of shedding (*nirjara*) it ? And what is the time of shedding karma is also the time of experiencing it ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that in case of infernal beings what is the time of experiencing is not the time of shedding ? And what is the time of shedding is not the time of experiencing ?

[Ans.] Gautam ! In case of infernal beings at the time of experiencing shedding is not done and at the time of shedding experiencing is not done Experiencing is done at a different time and shedding is done at a different time Time of experiencing is different and that of shedding is different That is why I say that and so on up to what is the time of shedding is not the time of experiencing

22. The same should be repeated and so on up to (all twenty four *Dandaks*) up to *Vaimaniks*

विवेचन · वेदना और निर्जरा मे अन्तर–उदयप्राप्त कर्म को भोगना 'वेदना' है। और जो कर्म भोगकर क्षय कर दिया गया है, उसे 'वेदित रस कर्म', 'नोकर्म' निर्जरा कहते है। वेदना का हेतु कर्म है। इसी कारण वेदना को (उदयप्राप्त) कर्म कहा गया है और निर्जरा को नोकर्म (स्वत्त्वहीन कर्म)। तात्पर्य यह है कि कार्मण वर्गणा के पुद्गल सदैव विद्यमान रहते है, किन्तु वे सदा कर्म नही कहलाते। कषाय और योग के निमित्त से जीव के साथ बद्ध होने पर ही उन्हे 'कर्म' सज्ञा प्राप्त होती है और वेदन के अन्तिम समय तक उसकी कर्म सज्ञा रहती है। निर्जरा होने पर वे पुद्गल 'कर्म' नही रहते, नोकर्म (अकर्म) हो जाते है।

Elaboration—Difference between Vedana and Nirjara—To experience precipitated or fructified *karma* is *vedana* On being experienced after

fruition a *karma* particle loses its potency Such spent *karma* particle is called *no-karma* The shedding of this *no-karma* is called *nirjara*. Karma is the cause of experience (*vedana*) That is why *vedana* is called fructified *karma*, or simply *karma* And *nirjara* is called *no-karma* (spent *karma* or *karma* devoid of potency) In other words although *karmic* particles always exist, they are not always called *karma* They are classified as *karma* only when they fuse with soul due to passions (*kashaya*) and association (*yoga*). They remain *karma* till the last moment of experience Once they lose their potency they no more remain *karma* but turn into *no-karma* and are shed

जीवों की शाश्वतता–अशाश्वतता **ETERNALITY AND NON-ETERNALITY OF JIVAS**

२३. [प्र. १] नेरइया भंते ! किं सासया, असासया ?

[उ.] गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया।

[प्र. १] भगवन् ! नैरयिक जीव शाश्वत है या अशाश्वत है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव कथचित् शाश्वत है और कथचित् अशाश्वत है।

23. [Q. 1] *Bhante* ! Are infernal beings eternal (*shaashvat*) or non-eternal (*ashaashvat*) ?

[Ans.] Gautam ! Infernal beings are sometimes eternal (*shaashvat*) and sometimes non-eternal (*ashaashvat*)

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नेरइया सिय सासया, सिय असासया' ?

[उ.] गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठताए सासया, वोच्छित्तिणयट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेणं जाव सिय असासया।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा आप किस कारण से कहते है कि नैरयिक जीव कथचित् शाश्वत है और कथचित् अशाश्वत है ?'

[उ.] गौतम ! अव्युच्छित्ति (द्रव्यार्थिक) नय की अपेक्षा से नैरयिक जीव शाश्वत है और व्युच्छित्ति (पर्यायार्थिक) नय की अपेक्षा से नैरयिक जीव अशाश्वत है। इस कारण से, गौतम ! मै ऐसा कहता हूँ कि नैरयिक जीव कथचित् शाश्वत है और कथचित् अशाश्वत है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why did you say that infernal beings are sometimes eternal (*shaashvat*) and sometimes non-eternal (*ashaashvat*) ?

[Ans.] Gautam ! From the existent material aspect or substantial standpoint (*avyuchchhitti naya* or *dravyarthik naya*) infernal beings are eternal (*shaashvat*) and from transformational aspects or modal stand point (*vyuchchhitti naya* or *paryayarthik naya*) infernal beings are non-

eternal (*ashaashvat*) That is why, Gautam ! I say that infernal beings are sometimes eternal (*shaashvat*) and sometimes non-eternal (*ashaashvat*)

२४. एवं जाव वेमाणियाणं जाव सिय असासया।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ सत्तम सए . तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

२४. इसी प्रकार यावत् वैमानिक देव-पर्यन्त कहना चाहिए कि वे कथचित् शाश्वत है और कथचित् अशाश्वत है। यावत् इसी कारण से मै कहता हूँ कि वैमानिक देव कथंचित् शाश्वत है, कथचित् अशाश्वत है।

भगवन् ! 'यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', इस प्रकार कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते है।

24. The same should be repeated and so on up to (all twenty four *Dandaks*) up to *Vaimaniks* (sometimes eternal and sometimes non-eternal) That is why I say that *Vaimanik Devs* are sometimes eternal and sometimes non-eternal

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन साराश-नरक कभी भी नैरयिको से शून्य नही होता। अत प्रवाह की दृष्टि से नैरयिक शाश्वत है और एक-एक व्यक्ति की अपेक्षा वह अशाश्वत है।

॥ सप्तम शतक तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Gist—Hells are never devoid of infernal beings, therefore in terms of continuity the existence of infernal beings is eternal However, in terms of single infernal being they are non-eternal

● END OF THE THIRD LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : चतुर्थ उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : FOURTH LESSON

जीव JIVA (LIVING BEINGS)

षड्विध ससारसमापन्नक जीव SIX KINDS OF WORLDLY LIVING BEINGS

१. रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी–

२. [प्र.] कतिविहा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, त जहा–पुढविकाइया एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा।

[संग्रहणी गाथा (वाचनान्तरे)–जीवा छव्विह पुढवी जीवाण ठिती, भवट्ठिती काए।
निल्लेवण अणगारे किरिया सम्मत्त मिच्छत्ता।।]

सेव भंते ! सेवं भंते त्ति० !

।। सत्तम सए : चउत्थो उद्देसओ समत्तो ।।

१. राजगृह नगर मे (श्री गौतम स्वामी ने) श्रमण भगवान महावीर से इस प्रकार पूछा–

२. [प्र] भगवन् ! ससारसमापन्नक (ससारी) जीव कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! ससारसमापन्नक जीव छह प्रकार के है। यथा–(१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायकि, एव (६) त्रसकायिक।

इस प्रकार यह समस्त वर्णन जीवाभिगमसूत्र के तिर्यंच–सम्बन्धी दूसरी उद्देशक मे कहे अनुसार सम्यक्त्वक्रिया और मिथ्यात्वक्रिया पर्यन्त कहना चाहिए।

[**गाथा का अर्थ**–(१) जीव के छह भेद, (२) पृथ्वीकायिक जीवो के छह भेद, (३) पृथ्वीकायिक आदि जीवो की स्थिति, भवस्थिति, सामान्य कायस्थिति, (४) निर्लेपन, (५) अनगार–सम्बन्धी वर्णन, (६) सम्यक्त्वक्रिया और मिथ्यात्वक्रिया।]

1. In the city of Rajagriha . and so on up to Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir as follows

2. [Q.] *Bhante* ! How many kinds of worldly living beings (*Samsar-samapannak jivas*) are there ?

[Ans.] Gautam ! Worldly living beings (*samsar-samapannak jivas*) are of six kinds—(1) earth-bodied (*prithvikayik*), (2) water-bodied (*apkayik*), (3) fire-bodied (*tejaskayik*), (4) air-bodied (*vayukayik*), (5) plant-bodied (*vanaspatikayik*), and (6) mobile-bodied (*traskayik*) This way the whole

description should be excerpted from the second lesson about animals from *Jivabhigam Sutra* up to *Samyaktvakriya* (righteous activity) and *Mithyatvakriya* (unrighteous activity)

[**Collative verse**—(1) Six kinds of living beings (*jiva*), (2) six kinds of earth-bodied beings, (3) state of being, life-span and state of body of earth-bodied and other beings, (4) cleansing (*nirlepan*), (5) description of the homeless, and (6) *Samyaktvakriya* (righteous activity) and *Mithyatvakriya* (unrighteous activity)]

विवेचन यह गाथा वाचनान्तर की है, जिसमे जीवाभिगमसूत्र के दूसरे उद्देशक मे कथित विषयो का विस्तृत वर्णन यहाँ करने की सूचना दी है। पाठक इसके लिए देखे श्री अमर मुनि जी द्वारा सम्पादित व्याख्याप्रज्ञप्ति, भाग २, पृष्ठ १४७–१७८, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर।

॥ सप्तम शतक चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—This verse is from an alternative text and lists the topics to be quoted from the second lesson of *Jivabhigam Sutra* For details of this refer to *Vyakhyaprajnapti* part 2 edited by Shri Amar Muni ji and published from Agam Prakashan Samiti, Beawar

● END OF THE FOURTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : पंचम उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : FIFTH LESSON

पक्षी PAKSHI (BIRDS)

खेचर–पचेन्द्रिय जीवो के भेद **KINDS OF AERIAL BEINGS**

१. रायगिहे जाव एव वयासी–

२. [प्र] खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते ?

[उ] गोयमा ! तिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा–अडया, पोयया, सम्मुच्छिमा। एवं जहा जीवाभिगमे जाव नो चेव णं ते विमाणे वीतीवएज्जा। एमहालया ण गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता।

[संग्रहणी गाथा (वाचनान्तर)– 'जोणीसगह लेसा दिट्ठी णाणे य जोग–उवओग।
उववाय–ट्ठिइ–समुग्घाय–चवण–जाइ–कुल–विहीओ॥]

सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ सत्तम सए : पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥

१. राजगृह नगर मे (गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से) इस प्रकार पूछा–

२. [प्र] भगवन् ! खेचर पचेन्द्रिय तिर्यच जीवो का योनिसग्रह कितने प्रकार का है ?

[उ] गौतम ! (खेचर पचेन्द्रिय तिर्यच जीवो का) योनिसग्रह तीन प्रकार का है। यथा–(१) अण्डज, (२) पोतज, और (३) सम्मूर्च्छिम। इस प्रकार (आगे का सारा वर्णन) जीवाभिगमसूत्र मे कहे अनुसार यावत् 'उन विमानो का उल्लघन नही किया जा सकता, हे गौतम ! वे विमान इतने महान् (बडे) कहे गये है,' यहाँ तक कहना चाहिए।

[सग्रहणी गाथा का अर्थ–योनिसग्रह, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, उपयोग, उपपात, स्थिति, समुद्घात, च्यवन और जाति–कुलकोटि।]

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरने लगे।

1. In the city of Rajagriha and so on up to Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir as follows

2. [Q.] *Bhante* ! How many ways of birth (*yoni samgraha*) do aerial five-sensed animals or birds (*khechar panchendriya tiryanch*) have ?

[Ans.] Gautam ! They have three kinds of ways of birth (*yoni samgraha*)—(1) *Andaj* (birth from an egg), (2) *Potaj* (birth as fully

formed infants) and (3) *Sammoorchchhim* (birth from asexual origin) This way the whole description should be excerpted from *Jivabhigam Sutra* up to 'so expansive are those *vimaans* (celestial vehicles) said to be that they cannot be crossed through'

[**Collative verse**—Ways of birth (*yoni samgraha*), soul complexion (*leshya*), outlook or perception (*drishti*), knowledge (*jnana*), association (yoga), cognition (*upayoga*), genesis (*upapat*), life-span (*sthiti*), bursting forth (*samudghat*), descent (*chyavan*), and caste-lineage (*jaati-kulakoti*)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन खेचर पचेन्द्रिय जीवो के योनिसग्रह के प्रकार–उत्पत्ति के हेतु को **योनि** कहते है, तथा अनेक का कथन एक शब्द द्वारा कर दिया जाये, उसे **सग्रह** कहते है। खेचर तिर्यंच पचेन्द्रिय अनेक प्रकार के होते हुए भी उक्त तीन प्रकार के योनिसग्रह द्वारा उनका कथन किया गया है। **अण्डज**–अण्डे से उत्पन्न होने वाले मोर, कबूतर, हस आदि। **पोतज**–जरायु (जड-जेर) बिना उत्पन्न होने वाले चिमगादड आदि। **सम्मूर्च्छिम**–माता-पिता के सयोग के बिना उत्पन्न होने वाले।

जीवाभिगमसूत्रानुसार खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंच मे लेश्या ६, दृष्टि–३, ज्ञान–३ (भजना से), अज्ञान–३ (भजना से), योग-३, उपयोग–२ पाये जाते है। सामान्यत ये चारो गति से आते है, और चारो गतियो मे जाते है। इनकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट पल्योपम के असख्यातवे भाग है। केवलीसमुद्घात और आहारसमुद्घात को छोडकर इनमे पाँच समुद्घात पाये जाते है। इनकी बारह लाख कुलकोडी है।

इस प्रकरण मे अन्तिम सूत्र विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमान का है। इन चारो विमानो का विस्तार इतना है कि यदि कोई देव नौ आकाशान्तर प्रमाण (८,५०,७४० $\frac{१८}{६०}$ योजन) का एक डग भरता हुआ छह महीने तक चले तो किसी विमान के अन्त को प्राप्त करता है, किसी विमान के अन्त को नही। जीवाभिगम से विस्तृत वर्णन जान लेना चाहिए।

॥ सप्तम शतक पचम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—Ways of birth of birds—Place or way of birth is called *yoni* *Samgraha* means collection, here it is used as suffix for making the plural form Although birds are of many kinds they can be put into aforesaid three classes in context of way of birth *Andaj*, or born from an egg, as are peacock, pigeon, swan etc *Potaj* or born as fully formed infants, as are bats *Sammoorchchhim*, or produced from asexual origin

According to Jivabhigam Sutra birds or *khechar panchendriya tiryanch* have six types of soul-complexions (leshya), three perceptions (*drishti*), three types of knowledge (sometimes and sometimes not), three types of ignorance (sometimes and sometimes not), three types of

associations (*yoga*), and two types of cognitions Generally speaking these beings come from four genuses and go also to four genuses Their life span is minimum *Antar-muhurt* (less than forty eight minutes) and maximum innumerable fraction of a *Palyopam* Leaving aside *Kevali Samudghat* and *Ahaar Samudghat*, they have five types of *Samudghat* They have 1 2 million caste-lineages or species

In this section of *Jivabhigam Sutra* the last aphorism is about Vijaya, Viajayant, Jayant and Aparajit celestial vehicles The expanse of these celestial vehicles is so large that if a divine being walks for six months with one step covering 8,50,740$\frac{18}{60}$ *Yojans*, he may cross some *vimaan* and not others For more details refer to *Jivabhigam Sutra*

● END OF THE FIFTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : छठा उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : SIXTH LESSON

आयु AYU (LIFE-SPAN)

आयुष्य का बन्ध और वेदन **BONDAGE AND EXPERIENCING OF AYUSHYA**

१. रायगिहे जाव एवं वयासी–

२. [प्र.] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगते नेरइयाउयं पकरेति ? उववज्जमाणए नेरइयाउयं पकरेति ? उववन्ने नेरइयाउयं पकरेति ?

[उ.] गोयमा ! इहगते नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ।

३. एवं असुरकुमारेसु वि। ४. एवं जाव वेमाणिएसु।

१ राजगृह नगर मे (गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से) इस प्रकार पूछा–

२. [प्र] भगवन् ! जो जीव नारको (नैरयिको) मे उत्पन्न होने योग्य है वह क्या इस भव मे रहता हुआ नारकायुष्य बाँधता है, अथवा वहाँ (नरक मे) उत्पन्न होता हुआ नारकायुष्य बाँधता है या फिर (नरक मे) उत्पन्न होने पर नारकायुष्य बाँधता है ?

[उ.] गौतम ! वह जीव इस भव मे रहता हुआ ही नारकायुष्य बाँध लेता है, परन्तु नरक मे उत्पन्न होता हुआ नारकायुष्य नही बाँधता और न नरक मे उत्पन्न होने पर नारकायुष्य बाँधता है।

३. इसी प्रकार असुरकुमारो के विषय मे। ४. इसी प्रकार यावत् वैमानिकपर्यन्त कहना चाहिए।

1. In the city of Rajagriha . and so on up to . Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir as follows

2. [Q.] *Bhante* ! Does a *jiva* (soul) destined to be born among infernal beings acquires the bondage of *naarakayushya karma* (infernal life-span determining *karma*) right here during this birth, or acquires the bondage of *naarakayushya karma* while he is in the process of being born among infernal beings, or acquires the bondage of *naarakayushya karma* after he is born among infernal beings ?

[Ans.] Gautam ! That *jiva* (soul) acquires the bondage of *naarakayushya karma* (infernal life-span determining *karma*) right here during this birth He does not acquire the bondage of *naarakayushya karma* while he is in the process of being born among infernal beings nor does he acquire the bondage of *naarakayushya karma* after he is born among infernal beings

3. The same should be repeated for *Asur Kumar* gods **4.** and so on up to. *Vaimaniks*

५. [प्र.] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगते नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? उववज्जमाणए नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ?

[उ.] गोयमा ! णो इहगते नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, उववन्ने वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेति।

६. एवं जाव वेमाणिएसु।

५. [प्र.] भगवन् ! जो जीव नारको मे उत्पन्न होने वाला है, भगवन् ! क्या वह इस भव मे रहता हुआ नरकायुष्य का वेदन (प्रतिसवेदन) करता है, या वहाँ उत्पन्न होता हुआ नरकायुष्य का वेदन करता है, अथवा वहाँ उत्पन्न होने के पश्चात् नरकायुष्य का वेदन करता है ?

[उ] गौतम ! वह (नरक मे उत्पन्न होने योग्य जीव) इस भव मे रहता हुआ नरकायुष्य का वेदन नही करता, किन्तु वहाँ उत्पन्न होता हुआ वह नरकायुष्य का वेदन करता है, और उत्पन्न होने के पश्चात् भी नरकायुष्य का वेदन करता है।

६. इसी प्रकार असुर कुमारो से वैमानिक तक चौबीस दण्डको मे (आयुष्यवेदन का) कथन करना चाहिए।

5. [Q.] *Bhante* ! Does a *jiva* (soul) destined to be born among infernal beings experiences *naarakayushya* (infernal life-span) right here during this birth, or experiences *naarakayushya* while he is in the process of being born among infernal beings, or experiences *naarakayushya* after he is born among infernal beings ?

[Ans.] Gautam ! That *jiva* (soul) experiences *naarakayushya* (infernal life-span) not here during this birth He experiences the *naarakayushya* while he is in the process of being born among infernal beings as well as after he is born among infernal beings

6. The same should be repeated for *Asur Kumar* gods and so on up to *Vaimaniks* (all twenty four *Dandaks*)

विवेचन इन सूत्रो मे आयुष्य निर्धारण का सार्वभौम नियम सूचित किया है कि किसी भी जीव के अगले जन्म के आयुष्य का निर्धारण इसी भव मे हो जाता है, उसके पश्चात् ही जीव परलोक की यात्रा प्रारम्भ करता है।

Elaboration—These aphorisms inform about the universal law of determination of life-span. And it is that the life-span of the next birth of any living being is fixed right in this birth Only then he starts the journey of the next life

महावेदना—अल्पवेदना GREAT AND LITTLE PAIN

७. [प्र.] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए महावेदणे, उववज्जमाणे महावेदणे उववन्ने महावेदणे ?

[उ.] गोयमा ! इहगते सिय महावेयणे, सिय अप्पवेदणे; उववज्जमाणे सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; अहे णं उववन्ने भवति तओ पच्छा एगतदुक्खं वेदणं वेदेति, आहच्च सायं।

७. [प्र] भगवन् ! जो जीव नारको मे उत्पन्न होने वाला है क्या वह यहाँ (इस भव मे) रहता हुआ ही महावेदना वाला हो जाता है, या नरक मे उत्पन्न होता हुआ महावेदना वाला होता है, अथवा नरक मे उत्पन्न होने के पश्चात् महावेदना वाला होता है ?

[उ.] गौतम ! वह (नरक मे उत्पन्न होने वाला जीव) इस भव मे रहा हुआ कदाचित् महावेदना वाला होता है, कदाचित् अल्पवेदना वाला होता है। नरक मे उत्पन्न होता हुआ भी कदाचित् महावेदना वाला और कदाचित् अल्पवेदना वाला होता है, किन्तु जब नरक मे उत्पन्न हो जाता है, तब वह एकान्त दु खरूप वेदना वेदता है, कदाचित् सुख (साता) रूप (वेदना वेदता है)।

7. [Q.] *Bhante* ! Does a *jiva* (soul) destined to be born among infernal beings experiences great pain right here during this birth, or experiences great pain while he is in the process of being born in hell, or experiences great pain after he is born in hell ?

[Ans.] Gautam ! That *jiva* (soul) sometimes experiences great pain and sometimes not during this birth He sometimes experiences great pain and sometimes not while he is in the process of being born in hell But after he is born in hell he mostly experiences great pain and very rarely some relief or pleasure

८. [प्र. १] जीवे णं भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! इहगते सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; उववज्जमाणे सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; अहे णं उववन्ने भवति तओ पच्छा एगंतसातं वेदणं वेदेति, आहच्च असातं।

[२] एवं जाव थणियकुमारेसु।

८. [प्र १] भगवन् ! जो जीव असुरकुमारो मे उत्पन्न होने वाला है, (उसके सम्बन्ध मे भी) यही प्रश्न है।

[उ] गौतम ! (असुरकुमारो मे उत्पन्न होने वाला जीव) यहाँ (इस भव मे) रहा हुआ तथा वहाँ उत्पन्न होता हुआ कदाचित् महावेदना वाला और कदाचित् अल्पवेदना वाला होता है, किन्तु जब वह वहाँ उत्पन्न हो जाता है, तब एकान्तसुख (साता) रूप वेदना वेदता है, कदाचित् दु ख (असाता) रूप वेदना वेदता है।

[२] इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारो तक कहना चाहिए।

8. [Q. 1] *Bhante* ! What about a *jiva* (soul) destined to be born among *Asur Kumar* gods ?

[Ans.] Gautam ! A *jiva* (soul) destined to be born among *Asur Kumar* gods experiences sometimes great pain and sometimes little pain during this birth and also while he is in the process of being born in the divine realm. But after he is born there he mostly experiences pleasure (*saata vedana*) and very rarely pain (*asaata vedana*)

[2] The same should be repeated (for divine realms) up to *Stanit Kumars*

९. [प्र.] जीवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाएसु उववज्जित्तए पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे, सिय अप्पवेदणे; एवं उववज्जमाणे वि; अहे णं उववन्ने भवति तओ पच्छा वेमायाए वेदणं वेदेति।

१०. एवं जाव मणुस्सेसु।

११. वाणमंतर–जोतिसिय–वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु (सु. ८ [१])

९. [प्र.] भगवन् ! जो जीव पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होने योग्य है, (उसके सम्बन्ध मे भी) यही पृच्छा है।

[उ.] गौतम ! वह (पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होने योग्य) जीव इस भव मे रहा हुआ कदाचित् महावेदनायुक्त और कदाचित् अल्पवेदनायुक्त होता है, इसी प्रकार वहाँ उत्पन्न होता हुआ भी वह कदाचित् महावेदना और कदाचित् अल्पवेदना से युक्त होता है और जब वहाँ उत्पन्न हो जाता है, तत्पश्चात् वह विमात्रा (विविध प्रकार) से वेदना वेदता है।

१०. इसी प्रकार का कथन मनुष्यपर्यन्त करना चाहिए।

११. जिस प्रकार असुरकुमारो के विषय मे (अल्पवेदना–महावेदना–सम्बन्धी) कथन किया गया है, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवो के विषय मे भी कहना चाहिए।

9. [Q.] *Bhante* ! What about a *jiva* (soul) destined to be born among earth-bodied beings ?

[Ans.] Gautam ! A *jiva* (soul) destined to be born among earth-bodied beings experiences sometimes great pain and sometimes little pain during this birth and also while he is in the process of being born in the divine realm. But after he is born there he has diverse experiences

10. The same should be repeated (for all beings) up to human beings

11. As has been stated about *Asur Kumar* gods (in connection with great and little pain) should be repeated for *Vaanavyantar* (interstitial), *Jyotishk* (stellar), and *Vaimanik* (celestial vehicular) gods

विवेचन निष्कर्ष–नरकोत्पन्न जीव प्राय एकान्त दु ख रूप महावेदना ही भोगता है, किन्तु नरकपालादि के सयोग न होने पर या तीर्थंकरो के कल्याणक–अवसरो पर कदाचित् सुख का वेदन भी करता है। दस भवनपति आदि प्राय एकान्त सुख ही भोगते है, किन्तु अकस्मात् प्रहारादि आ पडने पर दु ख भी भोगते है।

Elaboration—Conclusion—Infernal beings generally suffer great pain in the form of singular misery. However, occasionally at the moments of absence of the guardians of hell or the auspicious events (*kalyanak*) in the lives of Tirthankars they experience pleasure Ten *Bhavan-pati* (abode dwelling) gods and other divine beings experience singular pleasure They occasionally experience pain at times of sudden attacks

अनाभोगनिर्वर्तित आयुष्य **LIFE-SPAN BONDAGE UNAWARES**

१२. [प्र.] जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तिताउया ? अणाभोगनिव्वत्तिताउया ?

[उ] गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तिताउया, अणाभोगनिव्वत्तिताउया।

१३. एवं नेरइया वि।

१४. एव जाव वेमाणिया।

१२. [प्र] भगवन् ! जीव आभोगनिर्वर्तित आयुष्य का बध करते है या अनाभोगनिर्वर्तित आयुष्य का बन्ध करते है ?

[उ] गौतम ! जीव आभोगनिर्वर्तित जानते हुए आयुष्य वाले नही है, किन्तु अनाभोगनिर्वर्तित (अनजानपने मे न जानते हुए) आयुष्य वाले है।

१३. इसी प्रकार नैरयिको के (आयुष्य के) विषय में।

१४. यावत् वैमानिक पर्यन्त इसी तरह कहना चाहिए।

12. [Q.] *Bhante* ! Do *jivas* (souls/living beings) acquire bondage of life-span determining *karma* with awareness (*aabhoganirvartit*) or do they acquire bondage of life-span determining *karma* unawares (*anaabhoganirvartit*) ?

[Ans.] Gautam ! *Jivas* (souls/living beings) do not acquire bondage of life-span determining *karma* with awareness (*aabhoganirvartit*) but they acquire bondage of life-span determining *karma* unawares (*anaabhoganirvartit*)

13. The same should be repeated for (life-span determining *karma* of) infernal beings

14. .. and so on up to. *Vaimaniks*

विवेचन : समस्त सासारिक जीव अनाभोगपूर्वक (अनजानपने मे = न जानते हुए) आयुष्य बाँधते है, वे आभोगपूर्वक (जानपने मे = जानते हुए) आयुष्य बन्ध नही करते। आयुष्य बध के नियमो की विस्तृत चर्चा शतक ५, उ ३ मे की जा चुकी है।

Elaboration—All worldly beings acquire bondage of life-span determining *karma* unawares (*anaabhoganirvartit*) or without knowing about it, none acquires this bondage knowingly or with awareness of the process The rules of bondage of life-span determining *karmas* have already been discussed in detail in Shatak 5 Uddeshak 3

कर्कश–अकर्कश–वेदनीय HARSH AND MILD SUFFERING

१५. [प्र.] अत्थि ण भंते ! जीवा णं कक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

१५. [प्र] भगवन् ! क्या जीवो के कर्कश वेदनीय (अत्यन्त दु ख से भोगने योग्य–कठोर वेदना वाले) कर्म बँधते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! बँधते है।

15. [Q.] *Bhante* ! Do *jivas* acquire bondage of *karkash vedaniya karmas* (*karmas* causing harsh suffering or extreme anguish) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

१६. [प्र] कहं ण भंते ! जीवा णं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ] गोयमा ! पाणातिवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण, एव खलु गोयमा ! जीवाण कक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति।

१६. [प्र] भगवन् ! जीवो के कर्कशवेदनीय कर्म कैसे बँधते है ?

[उ.] गौतम ! प्राणातिपात से यावत् मिथ्यादर्शन शल्य (१८ पापो के सेवन) से जीवो के कर्कशवेदनीय कर्म बँधते है।

16. [Q.] *Bhante* ! How do *jivas* acquire bondage of *karmas* causing harsh suffering or extreme anguish ?

[Ans.] Gautam ! They acquire bondage of such *karmas* by indulging in killing of beings (*pranatipat*) and so on up to *mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness) [eighteen *paap sthanak* or sources of sin]

१७. [प्र] अत्थि ण भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] एवं चेव।


खंधक मुनि
३. दोषारोपण

चित्र परिचय-१०	Illustration No. 10

कर्कश वेदनीय कर्म का बंध व भोग

कर्कश वेदनीय कर्म उदय काल मे अत्यन्त उग्र व भयानक पीडा दायक होता है। (i) जैसे विपाक सूत्र मे नन्दीषेण कुमार आदि के उदाहरण है। जिन्होने पूर्वजन्म मे घोर हिंसा, चोरी व्यभिचार आदि का सेवन किया। वे कर्म उदय मे आने पर राजपुरुषो ने गाढ बंधन मे बाँधकर लोहे को गर्म तवे पर उसे बैठाया सिर पर तपे लोहे की पटटी बाँधी, भालो, तलवारो से शरीर का छेदन कर उस पर खौलता सीसा नमक आदि डाला। वह घोर वेदना भोगता रहा।

(ii) जिस प्रकार खधक मुनि के पूर्व मे बाँधे कर्कश वेदनीय कर्म का उदय होने पर जल्लादो ने उनके शरीर की चमडी उतारी। इस प्रकार की असह्य वेदना का भोग कर्कश वेदनीय का दृष्टान्त है।

कर्कश वेदनीय बँधने के मुख्य कारण है-१८ प्रकार के पाप स्थानो का पुन-पुन आचरण सेवन। जैसे हिंसा झूठ, चोरी व्यभिचार, लोभ क्रोध, मान माया लोभ, राग (परस्त्री से राग) द्वेष कलह अभ्याख्यान झूठा दोषारोपण चुगली पर निन्दा, माया कपटाचार झूठ लेख आदि करना तथा मिथ्यादर्शन-हिंसा आदि मे धर्म पुण्य मानना।

चित्र मे क्रोध का प्रतीक फुंकारता नाग, मान का प्रतीक स्वच्छन्द हाथी, कपट का प्रतीक मछली पकडता बगुला। लोभ का प्रतीक धान्य सग्रह करता चूहा तथा जाति द्वेष का प्रतीक लडते हुए सांप नेवला दिखाया गया है।

[illegible]

BONDAGE AND EXPERIENCE OF KARKASH VEDANIYA KARMAS

Karkash vedaniya karma causes extremely intense and fierce pain on fruition

(i) One of the examples of this from Vipaak Sutra is about prince Nandishen Kumar He indulged in extreme violence, theft and adultery in his previous birth When the so acquired karmas came to fruition guards shackled him and seated him on a red hot platen tied a red hot strip of iron on his head, goaded his body with spears and swords and sprinkled molten lead and salt on the wounds He continued to suffer extreme agony

(ii) Another example of suffering such grave torments is that of ascetic Khandhak who was skinned by butchers when his Karkash vedaniya karmas came to fruition

The main causes of acquiring Karkash vedaniya karmas are continued indulgence in the 18 sources of sin--violence, falsity, stealing, adultery, possession, anger, conceit, deceit, greed, attachment (libido) aversion, dispute, blaming falsely, inculpating someone slandering, indiscipline, betray and wrong belief or unrighteousness

In the illustrations anger is presented as hissing snake, conceit as mad elephant, deceit as fish catching heron greed as a mice collecting grains, and aversion as fighting snake and mongoose

Shatak 7 lesson 6, Sutra 15 16

१८. एवं जाव वेमाणियाणं।

१७. [प्र] भगवन् ! क्या नैरयिक जीवो के कर्कशवेदनीय कर्म बँधते है ?

[उ] हॉं, गौतम ! पहले कहे अनुसार बँधते है।

१८. इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिए।

17. [Q.] *Bhante* ! Do infernal beings acquire bondage of *karkash vedaniya karmas* (*karmas* causing harsh suffering or extreme anguish) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do as aforesaid

18. The same should be repeated and so on up to. . *Vaimaniks*

१९. [प्र.] अत्थि ण भंते ! जीवाणं अकक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ] हंता, अत्थि।

२०. [प्र] कहं णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं कोहविवेगेणं जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति।

१९. [प्र] भगवन् ! क्या जीवो के अकर्कशवेदनीय (सुखपूर्वक भोगने योग्य) कर्म बँधते है ?

[उ] हॉं, गौतम ! बँधते है।

२०. [प्र] भगवन् ! जीवो के अकर्कशवेदनीय कर्म कैसे बॅधते है ?

[उ] गौतम ! प्राणातिपातविरमण से यावत् परिग्रह-विरमण तक से, इसी तरह क्रोध-विवेक से (लेकर) यावत् मिथ्यादर्शन शल्यविवेक से हे गौतम ! इस प्रकार से जीवो के अकर्कशवेदनीय कर्म बॅधते है।

19. [Q.] *Bhante* ! Do *jivas* acquire bondage of *akarkash vedaniya karmas* (*karmas* not causing harsh suffering or extreme anguish) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

20. [Q.] *Bhante* ! How do *jivas* acquire bondage of *karmas* not causing harsh suffering or extreme anguish ?

[Ans.] Gautam ! By abstaining from indulging in killing of beings (*pranatipat*) and so on up to fondness for possessions and having prudence against anger . and so on up to *mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness) Gautam ! This way beings acquire bondage of *akarkash vedaniya karmas* (*karmas* not causing harsh suffering or extreme anguish)

२१. [प्र.] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे।

२२. एवं जाव वेमाणिया। नवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं (सु. १९)।

२१. [प्र.] भगवन् ! क्या नैरयिक जीवो के अकर्कशवेदनीय कर्म बँधते है ?

[उ] गौतम ! (नैरयिको के अकर्कशवेदनीय कर्मो का बन्ध नही होता।)

२२. इसी प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना चाहिए। परन्तु मनुष्यो के विषय मे इतना विशेष है कि जैसे औधिक जीवो के विषय मे कहा गया है, वैसे ही सारा कथन करना चाहिए।

21. [Q.] *Bhante* ! Do infernal beings acquire bondage of *akarkash vedaniya karmas* (*karmas* causing harsh suffering or extreme anguish) ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct (they do not acquire bondage of *akarkash vedaniya karmas*)

22. The same should be repeated. and so on up to *Vaimaniks* However, in case of human beings the statement follows the pattern of *jivas* (in general)

साता–असातावेदनीय कर्म PLEASURE AND PAIN CAUSING VEDANIYA KARMA

२३. [प्र.] अत्थि णं भंते ! जीवाण सातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

२३. [प्र.] भगवन् ! क्या जीवो के सातावेदनीय कर्म बँधते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! बँधते है।

23. [Q.] *Bhante* ! Do *jivas* acquire bondage of *sata vedaniya karmas* (*karmas* causing pleasant experience) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

२४. [प्र.] कहं णं भंते ! जीवाणं सातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए, जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए, बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए, असोयणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपिट्टणयाए, अपरितावणयाए; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति।

२४. [प्र.] भगवन् ! जीवो के सातावेदनीय कर्म कैसे बँधते है ?

[उ.] गौतम ! प्राणो पर (१) अनुकम्पा करने से, भूतो पर अनुकम्पा करने से, जीवो के प्रति अनुकम्पा करने से और सत्त्वो पर अनुकम्पा करने से, तथा बहुत से प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो को (२) दुःख न देने से, (३) उन्हे शोक (दैन्य) उत्पन्न न करने से, (४) (शरीर को सुखा देने वाली) चिन्ता

(विषाद या खेद) उत्पन्न न कराने से, (५) विलाप एव रुदन कराकर आँसू न बहवाने से, (६) उनको न पीटने से, (७) उन्हे परिताप न देने से इस प्रकार की अनुकम्पा वृत्ति से, (जीवो के सातावेदनीय कर्म बँधते है)। गौतम ! इस प्रकार से जीवो के सातावेदनीय कर्म बँधते है।

24. [Q.] *Bhante* ! How do *jivas* acquire bondage of *karmas* causing pleasant experience?

[Ans.] Gautam ! They do so by (1) showing compassion (*karuna*) towards numerous *praan* (two to four sensed beings, beings), *bhoot* (plant bodied beings; organisms), *jiva* (five sensed beings; souls), and *sattva* (immobile beings, entities), (2) not causing pain to them, (3) not causing distress to them, (4) not causing anxiety to them (thereby making them physically weak due to grief); (5) by not making them weep and shed tears, (6) by not beating them, and (7) by not tormenting them Through such compassion (*jivas* acquire bondage of *karmas* causing pleasant experience) Gautam ! This way *jivas* acquire bondage of *karmas* causing pleasant experience

२५. एवं नेरइयाण वि।

२६. एवं जाव वेमाणियाणं।

२५. इसी प्रकार नैरयिक जीवो के (भी सातावेदनीय कर्मबन्ध के) विषय मे कहना चाहिए।

२६. इसी प्रकार यावत् वैमानिकपर्यन्त कहना चाहिए।

25. The same should be repeated for (bondage of *karmas* causing pleasant experience) infernal beings

26. and so on up to . *Vaimaniks*.

२७. [प्र.] अत्थि णं भंते ! जीवाणं असातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

२७. [प्र.] भगवन् ! क्या जीवो के असातावेदनीय कर्म बँधते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! बँधते है।

27. [Q.] *Bhante* ! Do *jivas* acquire bondage of *asata vedaniya karmas* (*karmas* causing unpleasant experience) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do.

२८. [प्र.] कहं णं भंते ! जीवाणं अस्सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?

[उ.] गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरितावणयाए, बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परितावणयाए, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं असातावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति।

२९. एवं नेरइयाण वि।

३०. एवं जाव वेमाणियाणं।

२८. [प्र.] भगवन् ! जीवो के असातावेदनीय कर्म कैसे बँधते है ?

[उ.] गौतम ! (१) दूसरो को दु ख देने से, (२) दूसरे जीवो को शोक उत्पन्न करने से, (३) जीवो को विषाद या चिन्ता उत्पन्न करने से, (४) दूसरो को रुलाने या विलाप कराने से, (५) दूसरो को पीटने से, और (६) जीवो को परिताप देने से तथा बहुत से प्राण, भूत, जीव एव सत्त्वो को दु ख पहुँचाने से, शोक उत्पन्न करने से यावत् उनको परिताप देने से (इस प्रकार की क्रूर वृत्ति से जीवो के असातावेदनीय कर्मबन्ध होता है)। गौतम ! इस प्रकार से जीवो के असातावेदनीय कर्म बँधते है।

२९. इसी प्रकार नैरयिक जीवो के विषय मे।

३०. इसी प्रकार यावत् वैमानिकपर्यन्त (असातावेदनीयबन्धविषयक) कथन करना चाहिए।

28. [Q.] *Bhante* ! How do *jivas* acquire bondage of *karmas* causing unpleasant experience ?

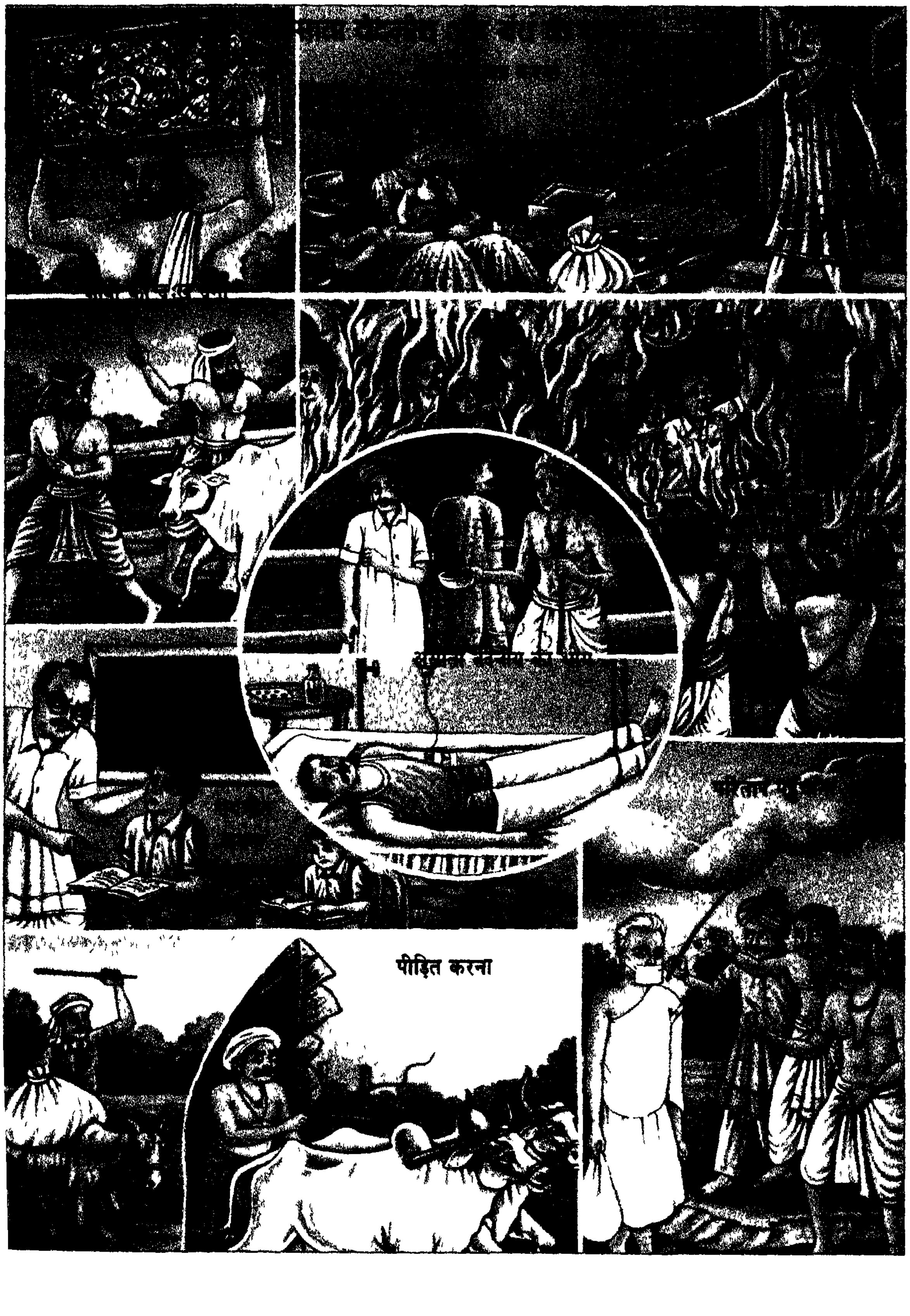
[Ans.] Gautam ! They do so by (1) causing pain to living beings, (2) causing distress to them, (3) causing anxiety and grief to them, (4) by making them weep and shed tears, (5) by beating them, (6) by tormenting them and by causing pain and so on up to torment to numerous living beings Through such cruel acts (*jivas* acquire bondage of *karmas* causing unpleasant experience) Gautam ! This way *jivas* acquire bondage of *karmas* causing unpleasant experience

29. The same should be repeated for (bondage of *karmas* causing unpleasant experience) infernal beings

30. and so on up to *Vaimaniks*

विवेचन सूत्र १५ से २२ तक मे कर्कश वेदनीय अकर्कश वेदनीय का तथा २३ से ३० तक साता-असाता वेदनीय का कथन है। कर्कशवेदनीय का अर्थ है बध हुआ कर्म उदयकाल मे अत्यन्त उग्र व भयानक रूप मे पीडादायक होता है। कर्कशवेदनीय व असातावेदनीय मे अन्तर है। कर्कशवेदनीय का सम्बन्ध अनेक कर्मो के वेदन से है, जबकि असातावेदनीय का सम्बन्ध केवल वेदनीय कर्म से है। दूसरी बात–कर्कशवेदनीय बध के हेतु प्राणातिपात आदि १८ पापस्थानक है, जबकि असातावेदनीय कर्म का बध हेतु दूसरे को दु ख व परिताप देना है। अकर्कशवेदनीय का बध हेतु १८ पापो से विरमण (सवर) करना, तथा सातावेदनीय का बध हेतु प्राणियो की अनुकम्पा करना है। उमास्वाति ने साता वेदनीय कर्मबध के ७ कारण बताये है। (तत्त्वार्थ ६/१३) कर्कशवेदनीय उदयकाल मे अत्यन्त तीव्र रूप मे उदय आते है, जैसे स्कन्दक आचार्य के शिष्यो ने पहले किसी भव मे कर्कशवेदनीय कर्म बाँधे थे, जो तीव्र रूप मे उदय आये। (वृत्ति, पत्राक ३०५)

Elaboration—Aphorisms 15-22 detail *karmas* causing experiences of extreme pain (*karkash*) and not so extreme pain (*akarkash*) and 23-30


पीड़ित करना

चित्र परिचय-११	Illustration No. 11

असाता वेदनीय और बंध के कारण

चित्र के मध्य मे असाता वेदनीय कर्म भोग के दो दृश्य है। इस कर्म के उदय से शरीर मे अनेक प्रकार की व्याधियाँ, दुर्बलता, आकस्मिक आघात आदि के रूप मे शारीरिक व मानसिक कष्ट भोगने पडते है।

असाता वेदनीय कर्म बन्ध के मुख्य रूप मे छह कारण है -

(१) **जीवो को दु ख देना**—जैसे पक्षियो को पिजरो मे बाँधना गाय आदि मूक पशुओ पर चोट व प्रहार कर उन्हे दु ख पहुँचना अथवा किसी भी प्राणी का दु ख देना।

(२) **दूसरो को शोक उत्पन्न करना**—उदाहरण स्वरूप किसी ने निर्दयता पूर्वक किसी अनाथ महिला का घर से बेघर कर दिया। उसका सामान तोड-फोड कर सडक पर फैक दिया।

(३) **विषाद व चिन्ता उत्पन्न करना**—जैसे रहते घरो मे आग लगा देना शस्त्र आदि से भयाक्रान्त करना।

(४) दूसरो को रुलाना, भयभीत करना।

(५) **दूसरो को पीटना**—जैसे धोबी गधे को व गाडी वाला बूढे बैलो को पीटता है।

(६) **दूसरो को परिताप देना**—जैसे अज्ञान लोग साधु को दुर्वचन आदि बोलकर सताप पहुँचाते है। ये उदाहरण किसी भी जीव पर लागू हो सकते है।

[illegible]

CAUSES OF ACQUIRING PAIN CAUSING KARMAS

The illustration in the middle has two scenes of pain caused by asaata vedaniya karma The fruition of this karma causes physical and mental suffering in the form of ailments, weakness accident etc

There are six main causes of bondage of these karmas—

(1) Tormenting living beings—to trap and encage birds, to hurt cows and other mute animals by hitting and beating or to hurt any being in any way

(2) Causing grief to others—to dispossess a helpless woman of her abode and throw away her belongings

(3) Causing panic and worry—to set fire to inhabited houses or spread panic by display of weapons etc

(4) To make others weep and wail by terrorizing them

(5) To beat others—like a washer-man beats his donkey and a bullock-cart driver beats the bullocks

(6) To torment others—like heretics torment ascetics with abuses and harsh words All these examples are applicable to any living being

—Shatak 7 lesson 6, Sutra 28

inform about those causing pleasure and pain. *Karkash vedaniya karma* means the *karma* that causes extremely intense and fierce pain on fruition. There is a difference between *karkash vedaniya* and *asata vedaniya karmas* *Karkash vedaniya* relates to experience of many species of *karmas* whereas *asata vedaniya* relates only to *vedaniya karmas* Another thing is that the cause of bondage of *karkash vedaniya karma* is indulgence in the eighteen sinful activities including killing living beings whereas that of *asata vedaniya karma* is causing pain and torment to others The cause of bondage of *akarkash vedaniya karma* is abstaining from indulgence in the eighteen sinful activities including killing living beings whereas that of *sata vedaniya karma* is compassion towards living beings Umaswati has mentioned seven causes of bondage of *sata vedaniya karma* (Tattvarth Sutra 6/13) The example of extreme pain caused by fruition of *karkash vedaniya karmas* can been seen in the story of disciples of Skandak Acharya who suffered such intolerable agony due to fruition of bondage of *karmas* acquired in some past birth (Vritti, leaf 305)

भरत मे दु:षम दु:षम काल का प्रभाव EPOCH OF EXTREME SORROW IN BHARAT

३१. [प्र.] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए दुस्समदुस्समाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ ?

[उ.] गोयमा ! काले भविस्सति हाहाभूए भंभाभूए कोलाहलभूए, समयाणुभावेणं य ण खरफरुसधूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा वाया संवट्टगा य वाइंति। इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समता रयस्सला रेणु–कलुस–तमपडल–निरालोग। समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छंति, अहियं सूरिया तवइस्संति। अदुत्तरं च णं अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा (खट्टमेहा) अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा अपिबणिज्जोदगा वाहिरोगवेदणोदीरणापरिणामसलिला अमणुण्णपाणियगा चंडानिलपहयतिक्खधारानिवायपउरं वासं वासिहिंति।

जेणं भारहे वासे गामागरनगर–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणाऽऽसमगतं जणवयं, चउप्पयगवेलए खहयरे य पक्खिसंघे, गामाऽरण्णपयारनिरए तसे य पाणे बहुप्पगारे, रुक्ख–गुच्छ–गुम्म–लय–वल्लि–तण–पव्वग–हरितोसहि–पवालं–कुरमादीए य तणवणस्सतिकाइए विद्धंसेहिंति। पव्वय–गिरि–डोगरुत्थल–भट्ठिमादीए य वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति। सलिलबिल–गड्ड–दुग्ग–विसमनिण्णुन्नताइं गंगा–सिंधु–वज्जाइं समीकरेहिंति।

३१. [प्र.] भगवन् ! इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारतवर्ष मे इस अवसर्पिणी काल का दु षम-दु षम नामक छठा आरा जब अत्यन्त उत्कट अवस्था को प्राप्त होगा, तब भारतवर्ष का आकारभाव-प्रत्यवतार (आकार = बाह्य स्वरूप। भाव-पर्याय का आविर्भाव) कैसा होगा ?

[उ.] गौतम ! वह काल **हाहाभूत** (मनुष्यो के हाहाकार से युक्त), **भभाभूत** (दु खार्त्त पशुओ के भा-भा शब्दरूप आर्त्तनाद से युक्त) और कोलाहल भूत होगा। काल के प्रभाव से अत्यन्त कठोर, धूल से मलिन (धूमिल), असह्य, **व्याकुल** (जीवो को व्याकुल कर देने वाली), भयकर **वात** (हवाएँ) एव **सवर्त्तक वायु** चलेगी। इस काल मे यहाँ बार-बार चारो ओर से धूल उडने से दिशाएँ धूल से मलिन और रेत से कलुषित, अन्धकारपटल से युक्त एव आलोक से रहित होगी। समय (काल) की रूक्षता के कारण चन्द्रमा अत्यन्त शीतलता फैकेगे, सूर्य अत्यन्त तपेगे। इसके अनन्तर बारम्बार बहुत से खराब रस वाले मेघ, विपरीत रस वाले मेघ, खारे जल वाले मेघ, **खत्तमेघ** (खाद के समान पानी वाले मेघ), **विद्युत्मेघ** (बिजली सहित मेघ), **विषमेघ** (जहरीले पानी वाले मेघ,), **अशनिमेघ** (ओले-गडे बरसाने वाले या वज्र के समान पर्वतादि को चूर-चूर कर देने वाले मेघ), **अपेय** (न पीने योग्य) जल से पूर्ण मेघ (अथवा तृषा शान्त न कर सकने वाले पानी से युक्त मेघ), व्याधि, रोग और वेदना को उत्पन्न करने (उभाडने) वाले जल से युक्त तथा अमनोज्ञ जल वाले मेघ, प्रचण्ड वायु के थपेडो से आहत होकर तीक्ष्ण धाराओ के साथ गिरते हुए प्रचुर वर्षा बरसायेगे।

जिससे भारतवर्ष के ग्राम, आकर (खान), नगर, खेडे, कर्बट, मडम्ब, द्रोणमुख (बन्दरगाह), पट्टण (व्यापारिक मडियो) और आश्रम मे रहने वाले जनसमूह, चतुष्पद (चौपाये जानवर), खग (आकाश-चारी पक्षीगण), ग्रामो और जगलो मे सचार मे रस त्रस प्राणी तथा अनेक प्रकार के वृक्ष, गुच्छ, गुल्म, लताएँ, बेले, घास, दूब, पर्व्वक (गन्ने आदि), हरियाली, शालि आदि धान्य, प्रवाल और अकुर आदि तृणवनस्पतियाँ, ये सब विनष्ट हो जायेगी। वैताढ्य पर्वत को छोडकर शेष सभी पर्वत, छोटे पहाड, टीले, डूगर, स्थल, रेगिस्तान बजर भूमि आदि सबका विनाश हो जायेगा। गगा और सिन्धु, इन दो नदियो को छोडकर शेष नदियाँ, पानी के झरने, सरोवर, झील आदि (नष्ट हो जायेगे), दुर्गम और विषम (ऊँची-नीची) भूमि मे रहे हुए सब स्थल समतल क्षेत्र (सपाट मैदान) हो जायेगे।

31. [Q.] *Bhante* ! In this *Avasarpini kaal* (regressive half-cycle of time) when the *Dukham-dukhama Ara* (epoch of extreme sorrow) will be at its worst, what will be the forms (things and conduct) and appearances (modes or variety of conduct and things) that will evolve in Bharat area (Bharat-varsh or Indian sub-continent) in Jambudveep ?

[Ans.] Gautam ! That period will be replete with wails (*hahabhoot*), bawls (*bhambhabhoot*) and pandemonium (*kolahal*) Due to the impact of times extremely harsh, dusty, intolerable, tormenting and fierce winds and whirlwinds (*samvartak vaat*) will blow During that period all directions will be dusky, murky, dismal and dark due to continued dust-storms all around Adverse times will make moon impart extreme cold

and the sun impart extreme heat (nights will be freezing cold and days will be scorching hot) Besides this, churned by stormy winds, different kinds of menacing clouds will cause repeated torrential rains and cloud burst These are—clouds bearing bad water, harmful water, acidic water, alkaline water (*khattamegh*), electric charge (*vidyunmegh*) (thundering clouds), toxic water (*vish-megh*), ashanimegh (hail-bearing cloud or rock-smashing cloud), non-potable water, and detestable water capable of causing ailments, disease and pain

All this will cause destruction of tormented masses of humans, quadrupeds and birds living in villages (*gram*), settlements near mines (*aakar*), cities (*nagar*), kraals (*khet*), markets (*karbat*), boroughs (*madamb*), hamlets (*dronmukh*), harbours (*pattan*), and hermitages (*ashram*), mobile beings as well as various trees, herbs, creepers, plants, grass, hay, canes, paddy and other grains, sprouts and other flora abundant in villages and forests Leaving aside Vaitadhya mountain all other mountains, hills, mounds, hillocks, plains, deserts, sterile land etc will be destroyed (submerged) Besides the Ganges and Indus all other rivers, streams, ponds, lakes etc ditches, tanks will be destroyed (inundated) All the uneven and difficult terrains of the land will be swept level into flat lands

३२. [प्र.] तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सति ?

[उ.] गोयमा ! भूमि भविस्सइ इंगालभूया मुम्मुरभूया छारियाभूया तत्तकवेल्लयभूया तत्तसमजोइभूया धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणगबहुला चलणिबहुला, बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुनिक्कमा यावि भविस्सति।

३२. [प्र.] भगवन् ! उस समय भारतवर्ष की भूमि का आकार और भावो का आविर्भाव (स्वरूप) किस प्रकार का होगा ?

[उ.] गौतम ! उस समय इस भरतक्षेत्र की भूमि अगारभूत (अगारो के समान), मुर्मुरभूत (गोबर के उपलो की अग्नि के समान), भस्मीभूत (गर्म राख के समान), तपे हुए लोह के कडाह के समान, तप्तप्राय अग्नि के समान, बहुत धूल वाली, बहुत रज वाली, बहुत कीचड वाली, बहुत शैवाल (अथवा पाँच रग की काई) वाली, चलने जितने बहुत कीचड वाली होगी, जिस पर पृथ्वीस्थित जीवो का चलना बडा ही दुष्कर हो जायेगा।

32. [Q.] *Bhante* ! During that period what will be the forms (things and conduct) and appearances (modes or variety of conduct and things) of the land surface that will evolve in Bharat-varsh ?

[Ans.] Gautam ! During that period the land surface in Bharat-varsh will be ablaze like embers (*angaar-bhoot*), like burning cow-dung cake (*murmur-bhoot*), like scalding ashes (*bhasmibhoot*), like a red hot cauldron, like a burning fire, full of dust, full of dirt, full of mud, full of moss, and slippery to walk It would be extremely difficult to walk for the living beings inhabiting the earth

३३. [प्र] तीसे ण भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं केरिसए आयारभाव–पडोयारे भविस्सइ ?

[उ] गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा दुव्वण्णा दुगंधा दूरसा दूफासा, अणिट्ठा अकंता जाव अमणामा, हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा, अणादिज्जवयण–पच्चायाया निल्लज्जा कूड–कवड–कलह–वह–बंध–वेर–निरया मज्जायातिक्कमप्पहाणा अकज्जनिच्चुज्जता गुरुनियोग–विणयरहिया य विकलरूवा परूढनह–केस–मंसुरोमा काला खरफरुसझामवण्णा फुट्टसिरा कविलपलियकेसा बहुण्हारुसंपिणद्धदुद्दंसणिज्जरूवा संकुडियवलीतरंगपरिवेढियंगमगा जरापरिणतव्व थेर गनरा पविरलपरिसडियदंतसेढी उब्भडघडमुहा विसमनयणा वंकनासा वंकवलीविगतभेसणमुहा कच्छूकसराभिभूता खर–तिक्खनक्ख–कंडूइय–विक्खयतणू दुद्द–किडिभ–सिज्झफुडियफरूसच्छवी चित्तलंगा टोल–गइ–विसम–संधिबंधणउक्कुडु–अट्ठिगविभत्तदुब्बला–कुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिता कुरूवा कुट्ठाणासण–कुसेज्ज–कुभोइणो असुइणो अणेगवाहिपरिपीलियंगमंगा खलंतिविब्भलगती निरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिया विगयचेट्ठनट्ठतेया अभिक्खणं सीय–उण्ह–खर–फरुस–वायविज्झडियमलिणपंसु–रयगुंडितंगमंगा।

बहुकोह–माण–माया बहुलोभा असुहदुक्खभागी ओसन्नं धम्मसण्णा–सम्मत्तपरिब्भट्ठा उक्कोसेणं रयणिपमाणमेत्ता सोलसवीसतिवासपरमाउसा पुत्त–णत्तुपरियालपणयबहुला गंगा–सिंधूओ महानदीओ वेयड्ढं च पव्वय निस्साए बहुत्तरिं णिगोदा बीयंबीयामेत्ता बिलवासिणो भविस्संति।

३३. [प्र] भगवन् ! उस समय (दु षम दु षम नामक छठे आरे) मे भारतवर्ष के मनुष्यो का आकार या आचार और भावो का स्वरूप कैसा होगा ?

[उ] गौतम ! उस समय मे भारतवर्ष के मनुष्य अति कुरूप, कुवर्ण, कुगन्ध, कुरस और कुस्पर्श से युक्त, अनिष्ट, अकान्त (कान्तिहीन या अप्रिय) यावत् अमनोगम, हीन स्वर वाले, दीन स्वर वाले, अनिष्ट स्वर वाले यावत् अमनाम स्वर वाले, अनादेय और अप्रतीतियुक्त वचन वाले, निर्लज्ज, कूट-कपट, कलह, वध (मारपीट), बन्ध और वैर-विरोध मे रत, मर्यादा का उल्लघन करने मे प्रधान (प्रमुख), अकार्य करने मे नित्य उद्यत, गुरुजनो (माता पिता आदि पूज्यजनो) के आदेशपालन और विनय से रहित, **विकलरूप** (बेडौल सूरत शक्ल) वाले, बढे हुए नख, केश, दाढी, मूँछ और रोम वाले, कालेकलूटे, अत्यन्त कठोर श्यामवर्ण के बिखरे हुए बालो वाले, पीले और सफेद केशो वाले, बहुत-सी नसो (स्नायुओ) से शरीर बँधा हुआ होने से दुर्दर्शनीय रूप वाले, सकुचित (सिकुडे हुए) और वलीतरगो (झुर्रियो) से परिवेष्टित, टेढे-मेढे अगोपाग वाले, इसलिए जरापरिणत वृद्ध पुरुषो के समान थोडे-से

टूटे और सडे हुए दाँतो वाले, उद्भट घट के समान भयकर मुख वाले, विषम नेत्रो वाले, टेढी नाक वाले तथा टेढे-मेढे एव झुर्रियो से विकृत हुए भयकर मुख वाले, एक प्रकार की भयकर खुजली वाले, कठोर एव तीक्ष्ण नखो से खुजलाने के कारण विकृत बने हुए, दाद, एक प्रकार के कोढ, **सिध्म** (एक प्रकार के भयकर कोढ) वाले, फटी हुई कठोर चमडी वाले, विचित्र अग वाले, ऊँट आदि-सी गति (चाल) वाले (बुरी आकृति वाले), शरीर के जोडो के विषम बधन वाले, ऊँची-नीची विषम हड्डियो एव पसलियो से युक्त, कुगठनयुक्त, कुसहनन वाले, कुप्रमाणयुक्त विषम सस्थानयुक्त, कुरूप, कुस्थान मे बढे हुए शरीर वाले, **कुशय्या** वाले (खराब स्थान मे शयन करने वाले), कुभोजन करने वाले, विविध व्याधियो से पीडित, स्खलित गति (लडखडाती चाल) वाले, उत्साहरहित, सत्त्वरहित, विकत चेष्टा वाले, तेजोहीन, बार-बार शीत, उष्ण, तीक्ष्ण और कठोर वात से **व्याप्त** (सत्रस्त), रज आदि से मलिन अग वाले होगे।

अत्यन्त क्रोध, मान, माया और लोभ से युक्त, अशुभ दु ख के भागी, धर्मसज्ञा और सम्यक्त्व से प्राय परिभ्रष्ट होगे। उनकी अवगाहना उत्कृष्ट एक **रत्निप्रमाण** (एक मुड हाथ भर) होगी। उनका आयुष्य (प्राय) सोलह वर्ष का और अधिक से अधिक बीस वर्ष का (परमायुष्य) होगा। वे बहुत से पुत्र-पौत्रादि परिवार वाले होगे और उन पर उनका अत्यन्त स्नेह (ममत्व या मोहयुक्त) होगा। इनके ७२ कुटुम्ब **बीजभूत** (आगामी मनुष्यजाति के लिए बीजरूप) तथा बीजमात्र होगे। ये गगा और सिन्धु महानदियो के बिलो मे और वैताढ्य पर्वत की गुफाओ का आश्रय लेकर निवास करेगे।

33. [Q.] *Bhante* ! During that period what will be the forms (things and conduct) and appearances (modes or variety of conduct and things) of human beings that will evolve in *Bharat-varsh* ?

[Ans.] Gautam ! During that period human beings in *Bharat-varsh* will have bad shape, bad colour, bad smell, bad taste and bad touch They will be *anisht* (not desirable), *akaant* (not beautiful) and so on up to *amanojna* (not attractive) They will have meek, humble, *anisht* (not desirable) and so on up to... *amanojna* (not attractive) voice They will have repulsive and offending speech They will be shameless, deceitful, crafty as well as quarrelsome and will indulge in killing, capturing, animosity and vengeance They will be ready to violate modesty, indulge in misdeeds, disobey orders of seniors (including parents) and will be devoid of humility They will be grotesque with grown nails, hair, beard, moustache and body hair. They will be black complexioned with unkempt and untidy hair of black, yellow and white colours They will have detestable appearance with bunched sinews, contracted and contorted limbs covered with folds and wrinkles Like ageing persons, they will have few, broken and decayed teeth, repulsive mouth like a deformed pitcher, terrible eyes, curved nose and a wrinkle filled

contorted and barbarous face Their body will be infested with acute eczema, ringworm, leucoderma and leprosy making the skin hard, parched, and broken due to scratching with hard and sharp nails. They will be with strange limbs, with bizarre movements like camel, with peculiar joints and uneven bones and ribs They will have ugly formation, constitution, proportions, structure, and appearance as well as body growth at unusual places They will choose bad places and beds to sleep and bad food to eat They will suffer from a variety of ailments and have limping gait They will be devoid of enthusiasm, vigour, right intent and radiance Tormented by continuous cold, hot, sharp and hard winds, they will have bodies made dull be dirt and slime

They will be filled with intense anger, conceit, deceit and greed They will suffer agonizing pain and will go astray from the religious and righteous path Their body size (*avagahana*) will not be more than one cubit (*Ratni*) Their average life-span will be sixteen years going to a maximum of twenty years They will have large families with numerous sons and grandsons for whom they will have deep attachment Seventy two of these families will turn into and act as seeds for the future These families will take shelter in the hollows in the Ganges and Indus rivers and caves in the Vaitadhya mountain

छठे आरे के मनुष्यों के आहार आदि FOOD OF THE HUMANS OF THE SIXTH EPOCH

३४. [प्र] ते णं भंते ! मणुया कमाहारमाहारेहिंति ?

[उ.] **गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगा–सिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थाराओ अक्खसोतप्पमाणमित्तं जलं वोज्झिहिंति, से वि य णं जले बहुमच्छ–कच्छभाइण्णे णो चेव णं आउबहुले भविस्सति। तए णं ते मणुया सूरोग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तसि य बिलेहिंतो निद्धाहिंति, बिलेहिंतो निद्धाइत्ता मच्छ–कच्छभे थलाइं गाहेहिंति, मच्छ–कच्छभे थलाइं गाहेत्ता सीतातवतत्तएहिं मच्छ–कच्छएहिं एक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाण विहरिस्संति।**

३४. [प्र] भगवन् ! (उस दु षमदु षमकाल के) मनुष्य किस प्रकार का आहार करेगे ?

[उ] गौतम ! उस काल और उस समय मे गगा और सिन्धु महानदियाँ रथ के मार्ग–प्रमाण (अत्यन्त अल्प) विस्तार वाली होगी। उनमे **अक्षस्रोतप्रमाण** (रथ की धुरी के प्रवेश करने के छिद्र जितने भाग में आ सके उतना) पानी बहेगा। वह पानी भी अनेक मत्स्य, कच्छप आदि से भरा होगा और उसमे भी पानी बहुत नही होगा। वे बिलवासी मनुष्य सूर्योदय के समय एक मुहूर्त्त और सूर्यास्त के समय एक मुहूर्त्त (अपने–अपने) बिलो से बाहर निकलेगे। बिलो से बाहर निकलकर वे गगा और सिन्धु नदियो मे से मछलियो और कछुओ आदि को पकडकर जमीन मे गाडेगे। इस प्रकार गाडे हुए मत्स्य–कच्छपादि

(रात की) ठण्ड और (दिन की) धूप से सिक जायेगे। (तब वे शाम को गाडे हुए मत्स्य आदि को सुबह और सुबह के गाडे हुए मत्स्य आदि को शाम को निकालकर खायेगे)। इस प्रकार शीत और आतप से पके हुए मत्स्य-कच्छपादि से इक्कीस हजार वर्ष तक जीविका चलाते हुए (जीवन-निर्वाह करते हुए) जीवनयापन करेगे।

34. [Q.] *Bhante* ! What type of food will the humans (of that period) take ?

[Ans.] Gautam ! During that period of time the great rivers, Ganges and Indus, will shrink to the width of a chariot-path. In their beds the flow of water will be no more than the diameter of the axle of a chariot Even that meager flow and small quantity of water will be filled with numerous fish, tortoise and other animals Those hole-dwelling humans will come out of their holes for one *Muhurt* at the dawn and one *Muhurt* at the dusk They will then catch some fish and tortoise from the Ganges and Indus and bury them in the sand The buried fish etc will get roasted in the deep chill of the night and scorching sun of the day (They will eat in the morning the meat buried at the dusk and in the evening the meat buried at dawn) This way they will subsist on meat roasted in chill and sun and will (the species) survive for twenty one thousand years

३५. [प्र] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला णिग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा उस्सन्नं मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ?

[उ.] गोयमा ! ओसन्नं नरग-तिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जिहिंति।

३५. [प्र.] भगवन् ! वे (उस समय के) शीलरहित, गुणरहित, मर्यादाहीन, प्रत्याख्यान (त्याग-नियम) और पौषधोपवास से रहित, प्राय मॉसाहारी, मत्स्याहारी, क्षुद्राहारी (अथवा मधु का आहार करने वाले अथवा भूमि खोदकर कन्दमूलादि का आहार करने वाले) एव कुणिमाहारी (मृत शव का मॉस खाने वाले) मनुष्य मृत्यु के समय पर (काल) कर कहॉ जायेगे, कहॉ उत्पन्न होगे ?

[उ.] गौतम ! वे (पूर्वोक्त प्रकार के) मनुष्य मरकर प्राय (नरक और तिर्यचगति मे जायेगे, और) नरक एव तिर्यंच-योनियो मे उत्पन्न होगे।

35. [Q.] *Bhante* ! Where will these men, devoid of all vows including *sheel-vrats* or *shikshavrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline), *Gunavrats* (restraints that reinforce the practice of anuvrats), *Viraman-vrats* or *Anuvrats* (five minor vows), *pratyakhyan* (rules of renouncing) and *paushadhopavas* (partial ascetic vow and

fasting); mostly subsisting on meat, fish, mean food (like honey and roots) and carrion (*kunimahaari*), go and be born after their death ?

[Ans.] Gautam ! Most of these (aforesaid humans) after their death will go and be born in hell and as animals

३६. [प्र.] ते णं भंते ! सीहा वग्घा विगा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा णिस्सीला तहेव जाव कहिं उववज्जिहिंति ?

[उ.] गोयमा ! ओसन्नं नरग–तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति।

३६. [प्र] भगवन् ! (उस काल और उस समय के) नि शील यावत् कुणिमाहारी सिह, व्याघ्र, वृक (भेडिये), द्वीपिक (चीते, अथवा गेडे), रीछ (भालू), तरक्ष (जरख) और शरभ (गेडा) आदि (हिंस्र पशु) मृत्यु के समय मरकर कहाँ जायेगे, कहाँ उत्पन्न होगे ?

[उ.] गौतम ! वे प्राय नरक और तिर्यंचयोनि मे उत्पन्न होगे।

36. [Q.] *Bhante* ! Where will these lions, tigers, wolves, leopards, bears, hyenas, rhinos and other animals, devoid of all vows and so on up to carrion (*kunimahaari*), go and be born after their death ?

[Ans.] Gautam ! Most of these will go and be born in hell and as animals

३७. [प्र] ते णं भंते ! ढंका कंका विलका मद्दुगा सिही णिस्सीला ?

[उ.] तहेव जाव ओसन्नं नरग–तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति।

सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति०।

।। सत्तम सए : छट्ठो उद्देसओ समत्तो ।।

३७. [प्र] भगवन् ! उस समय के नि शील आदि पूर्वोक्त विशेषणो से युक्त ढक (द्रोण काक बडे कौए), कक, (सफेद कौआ) बिलक, (नील पक्षी) मद्गुक (जलकाक–जलकौए), शिखी (मोर) (आदि पक्षी मरकर कहाँ उत्पन्न होगे ?)

[उ] गौतम ! (वे पूर्वोक्त पक्षीगण मरकर) प्राय नरक एव तिर्यंच योनियो मे उत्पन्न होगे।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है, यो कहकर श्री गौतम स्वामी यावत् विचरण करने लगे।

37. [Q.] *Bhante* ! Where will these birds including raven (*Dhank*), white crows (*kank*), Bilak, Madguk and peacocks, devoid of all vows and so on up to . carrion (*kunimahaari*), go and be born after their death ?

[Ans.] Gautam ! Most of these will go and be born in hell and as animals

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन निष्कर्ष—उस समय के मनुष्य प्राय माँस, मत्स्य और मृत कलेवरो का आहार करेगे। मृत कलेवर खाना अधिक निर्दयता का प्रतीक है। वे शील, गुण, मर्यादा, त्याग-प्रत्याख्यान एव व्रत-नियम आदि धर्म-पुण्य से नितान्त विमुख होगे।

उक्त वर्णन मे छठे आरे की पर्यावरणीय परिस्थिति का बडा रोमाचक वर्णन भी मिलता है। जैसे-

१ प्रलयकर वायु चलेगी।

२ दिशाएँ धूमिल हो जायेगी।

३ चन्द्रमा से अधिक ठण्ड निकलेगी।

४ सूर्य अधिक तपेगा।

५ वर्षा वैसी होगी, जिसका पानी व्याधि पैदा करने वाला होगा एव पीने योग्य नही होगा।

६ वर्षा तूफानी हवा के साथ इतनी तेज बरसेगी, जिससे ग्राम, नगर, पशु-पक्षी तथा वनस्पति-जगत् का विध्वस हो जायेगा।

७ वैताढ्य गिरि को छोड शेष पर्वत, डूगर नष्ट हो जायेगे।

८ गगा, सिन्धु को छोड शेष नदियाँ समतल बन जायेगी।

९ भूमि अगारे की भाँति तप्त, धूलि-बहुल हो जायेगी एव निवास योग्य नही रहेगी।

१० मनुष्य दया, सौन्दर्य, सदाचार और शक्ति से हीन हो जायेगा।

११ मनुष्य के शरीर की ऊँचाई एक रत्निप्रमाण (मुण्ड हाथ) हो जायेगी।

१२ कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) प्रबल हो जायेगा।

१३ भोजन पोषणहीन होगा और रोग बढ जायेगे।

१४ आयुष्य का कालमान १६ से २० वर्ष जितना होगा।

।। सप्तम शतक · छठा उद्देशक समाप्त ।।

Elaboration—The human beings of that period will mostly eat meat, fish and carrion Eating carrion is a sign of excessive callousness These people will be devoid of all virtues connected with religion and merit, such as *sheel-vrats* or *shikshavrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline), *Gunavrats* (restraints that reinforce the practice of *anuvrats*), *Viraman-vrats* or *Anuvrats* (five minor vows), *pratyakhyan* (rules of renouncing) and *paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting)

The aforesaid hair-raising description of the environmental conditions of the sixth epoch of time cycle can be summed up as follows—

1 Stormy winds will blow

2 All directions will become dull and dusty

3. Nights will be very cold

4 Days will be very hot

5 Rains will bring harmful, infectious and non-potable water

6 Cloudburst and stormy rains will destroy villages, cities, animals, birds and vegetation

7 Except for Vaitadhya mountain all mountains and hills will be destroyed

8 Except for the Ganges and Indus all rivers will turn into plains

9 Land will become hot like embers, full of dust and uninhabitable.

10 Humans will be devoid of compassion, beauty, good conduct and strength

11 The height of humans will be just one cubit

12 Passions (anger, conceit, deceit and greed) will magnify

13 Food will be devoid of nutrition and diseases will multiply

14 The average life-span will be between 16 to 20 years

● END OF THE SIXTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : सप्तम उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : SEVENTH LESSON

अनगार ANAGAAR (HOMELESS-ASCETIC)

संवृत अनगार और क्रिया ACTIVITIES OF A SAMVRIT ASCETIC

१. [प्र. १] संवुडस्स णं भंते अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव आउत्तं तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जति ? संपराइया किरिया कज्जति ?

[उ.] गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जति, णो संपराइया किरिया कज्जति।

१. [प्र १] भगवन् ! उपयोगपूर्वक चलते-बैठते, यावत् उपयोगपूर्वक करवट बदलते (सोते) तथा उपयोगपूर्वक वस्त्र, पात्र, कम्बल, पादप्रोछन (रजोहरण) आदि ग्रहण करते और रखते हुए उस सवृत (सवरयुक्त) अनगार को क्या ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है अथवा साम्परायिकी क्रिया लगती है ?

[उ.] गौतम ! उपयोगपूर्वक गमन करते हुए यावत् रखते हुए उस सवृत अनगार को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, किन्तु साम्परायिकी क्रिया नही लगती।

1. [Q. 1] *Bhante* ! While walking and sitting and so on up to turning in bed carefully as also while accepting and keeping garb carefully, is a *Samvrit Anagaar* (an ascetic who has blocked the inflow of *karmas*) said to be performing *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) or *Samparayiki kriya* (passion inspired activity) ?

[Ans.] Gautam ! While walking and so on up to keeping garb carefully, a *Samvrit Anagaar* is said to be performing *Iryapathiki kriya* (careful activity of an accomplished ascetic) and not *Samparayiki kriya* (passion inspired activity)

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'संवुडस्स णं जाव नो संपराइया किरिया कज्जति' ?

[उ.] गोयमा ! जस्स णं कोह–माण–माया–लोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जति तहेव जाव उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जति, से णं अहासुत्तमेव रीयति; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो संपराइया किरिया कज्जति।

[प्र. २] भगवन् ! यह किस कारण से कहते है कि उस सवृत अनगार को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, किन्तु साम्परायिकी क्रिया नही लगती ?

[उ] गौतम ! जिसके क्रोध, मान, माया और लोभ व्यवच्छिन्न (अनुदयप्राप्त अथवा सर्वथा क्षीण) हो गये है, उस (११-१२-१३वे गुणस्थानवर्ती अनगार) को ही ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, क्योकि

वही यथासूत्र (सूत्रो–नियमो के अनुसार) प्रवृत्ति करता है। इस कारण से, हे गौतम ! संवृत अनगार उपयोगयुक्त दशा मे चलता है, यावत् उसे साम्परायिकी क्रिया नही लगती।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that the said *Samvrit Anagaar* is said to be performing *Iryapathiki kriya* and not *Samparayiki kriya* ?

[Ans.] Gautam ! One whose anger, conceit, deceit and greed have disintegrated (suppressed or destroyed) is said to perform *Iryapathiki kriya* (an ascetic at the 11th, 12th and 13th *Gunasthan*) This is because he alone acts as prescribed in scriptures (*yathasutra*) That is why, Gautam ! *Samvrit Anagaar*, is always in a state of alertness and so on up to is said to be not performing *Samparayiki kriya*

विवेचन शतक ७, उद्दे १ के सूत्र १६ के अनुसार उक्त सभी कथन समझे।

Elaboration—Refer to Aphorism 16 of Lesson 1 of Chapter 7 for detailed explanation

काम–भोग सम्बन्धी विचारण **CEREBRAL EXPERIENCES AND PHYSICAL EXPERIENCES**

२. [प्र.] रूवी भंते ! कामा ? अरूवी कामा ?

[उ.] गोयमा ! रूवी कामा समणाउसो ! नो अरूवी कामा।

३. [प्र.] सचित्ता भंते ! कामा ? अचित्ता कामा ?

[उ.] गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा।

४. [प्र.] जीवा भंते ! कामा ? अजीवा कामा ?

[उ.] गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा।

५. [प्र.] जीवाण भंते ! कामा ? अजीवाण कामा ?

[उ.] गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा।

६. [प्र.] कतिविहा णं भंते ! कामा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! दुविहा कामा पण्णत्ता, तं जहा–सद्दा य, रूवा य।

२. [प्र.] भगवन् ! काम रूपी है या अरूपी है ?

[उ.] गौतम ! काम रूपी है, अरूपी नही है।

३. [प्र.] भगवन् ! काम सचित्त है अथवा अचित्त है ?

[उ.] गौतम ! काम सचित्त भी है और काम अचित्त भी है।

४. [प्र.] भगवन् ! काम जीव है अथवा अजीव है ?

[उ.] गौतम ! काम जीव भी है और अजीव भी है।

५. [प्र.] भगवन् ! काम जीवो के होते है या अजीवो के होते है ?

[उ.] गौतम ! काम जीवो के होते है, अजीवो के नही होते।

६. [प्र.] भगवन् ! काम कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! काम दो प्रकार के है। यथा-(१) शब्द, और (२) रूप।

2. [Q.] *Bhante* ! Are cerebral experiences (*kaam*) with form or without form ?

[Ans.] Gautam ! Cerebral experiences are with form and not without form

3. [Q.] *Bhante* ! Are cerebral experiences (*kaam*) with life (*sachitt*) or without life (*achitt*) ?

[Ans.] Gautam ! Cerebral experiences are with life and also without life

4. [Q.] *Bhante* ! Are cerebral experiences (*kaam*) living (*jiva*) or non-living (*ajiva*) ?

[Ans.] Gautam ! Cerebral experiences are living and also non-living

5. [Q.] *Bhante* ! Do cerebral experiences effect the living (*jiva*) or the non-living (*ajiva*) ?

[Ans.] Gautam ! Cerebral experiences effect the living (*jiva*) and not the non-living (*ajiva*)

6. [Q.] *Bhante* ! How many kinds of cerebral experiences are there ?

[Ans.] Gautam ! Cerebral experiences are of two kinds—(1) sound (*shabd*) and (2) appearance or form (*rupa*).

७. [प्र.] रूवी भंते ! भोगा ? अरूवी भोगा ?

[उ.] गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा।

८. [प्र.] सचित्ता भंते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ?

[उ.] गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा।

९. [प्र.] जीवा भते ! भोगा ?० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा।

१०. [प्र.] जीवाणं भंते ! भोगा ? अजीवाणं भोगा ?

[उ.] गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा।

११. [प्र.] कतिविहा णं भंते ! भोगा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, तं जहा–गंधा, रसा, फासा।

७. [प्र.] भगवन् ! भोग रूपी है अथवा अरूपी है ?

[उ.] गौतम ! भोग रूपी होते है, अरूपी नही होते।

८. [प्र.] भगवन् ! भोग सचित्त होते है या अचित्त होते है ?

[उ.] गौतम ! भोग सचित्त भी होते है और अचित्त भी होते है।

९. [प्र.] भगवन् ! भोग जीव होते है या अजीव होते है ?

[उ.] गौतम ! भोग जीव भी होते है और अजीव भी होते है ?

१०. [प्र.] भगवन् ! भोग जीवो के होते है या अजीवो के होते है ?

[उ.] गौतम ! भोग जीवो के होते है, अजीवो के नही होते।

११. [प्र.] भगवन् ! भोग कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! भोग तीन प्रकार के है। यथा-(१) गन्ध, (२) रस, और (३) स्पर्श।

7. [Q.] *Bhante* ! Are physical experiences (*bhoga*) with form or without form ?

[Ans.] Gautam ! Physical experiences are with form and not without form

8. [Q.] *Bhante* ! Are physical experiences (*bhoga*) with life (*sachitt*) or without life (*achitt*) ?

[Ans.] Gautam ! Physical experiences are with life and also without life

9. [Q.] *Bhante* ! Are physical experiences (*bhoga*) living (*jiva*) or non-living (*ajiva*) ?

[Ans.] Gautam ! Physical experiences are living and also non-living

10. [Q.] *Bhante* ! Do physical experiences effect the living (*jiva*) or the non-living (*ajiva*) ?

[Ans.] Gautam ! Physical experiences effect the living (*jiva*) and not the non-living (*ajiva*)

11. [Q.] *Bhante* ! How many kinds of physical experiences are there ?

[Ans.] Gautam ! Physical experiences are of three kinds—(1) smell (*gandh*), (2) taste (*rasa*) and (3) touch (*sparsh*)

१२. [प्र.] **कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पण्णत्ता ?**

[उ.] **गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पण्णत्ता, तं जहा–सद्दा रूवा गंधा रसा फासा।**

१२. [प्र.] भगवन् ! काम-भोग कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! काम-भोग पाँच प्रकार के है। यथा-शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्श।

12. [Q.] *Bhante* ! How many kinds of *kaam-bhoga* (cerebral-physical experiences) are there ?

[Ans.] Gautam ! Cerebral-physical experiences are of five kinds—(1) sound (*shabd*), (2) appearance or form (*rupa*), (3) smell (*gandh*), (4) taste (*rasa*) and (5) touch (*sparsh*)

१३. [प्र. १] जीवा णं भंते ! किं कामी ? भोगी ?

[उ.] गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि।

१३. [प्र. १] भगवन् ! जीव कामी है अथवा भोगी है ?

[उ.] गौतम ! जीव कामी भी है और भोगी भी है।

13. [Q. 1] *Bhante* ! Do living beings (*jivas*) have cerebral experience or physical experience ?

[Ans.] Gautam ! Living beings (*jivas*) have cerebral experience as well as physical experience.

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'जीवा कामी वि, भोगी वि' ?

[उ.] गोयमा ! सोइंदिय-चक्खिंदियाइं पडुच्च कामी, घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव भोगी वि।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा किस अपेक्षा से कहा जाता है कि जीव कामी भी है और भोगी भी है ?

[उ.] गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय की अपेक्षा से जीव कामी है और घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय एवं स्पर्शनेन्द्रिय की अपेक्षा से जीव भोगी है। इस अपेक्षा से, हे गौतम ! जीव कामी भी है और भोगी भी है।

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that living beings (*jivas*) have cerebral experience as well as physical experience ?

[Ans.] Gautam ! In relation to the sense organs of hearing (*shrotrendriya*) and seeing (*chakshurindriya*) living beings have cerebral experience and in relation to the sense organs of smell (*ghranendriya*), taste (*jihvendriya*) and touch (*sparshanendriya*) they have physical experience. That is why, Gautam ! they have cerebral experience as well as physical experience.

१४. [प्र.] नेरइया णं भंते ! किं कामी ? भोगी ?

[उ.] एवं चेव।

१५. एवं जाव थणियकुमारा।

१४. [प्र.] भगवन् ! नैरयिक जीव कामी है अथवा भोगी है ?

[उ.] गौतम ! नैरयिक जीव भी पूर्ववत् कामी भी है, भोगी भी है।

१५. इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारो तक कहना चाहिए।

14. [Q.] *Bhante* ! Do infernal beings (*jivas*) have cerebral experience or physical experience ?

[Ans.] Gautam ! As aforesaid, infernal beings (*jivas*) too have cerebral experience as well as physical experience

15. The same should be repeated for beings up to *Stanit Kumar* gods

१६. [प्र १] पुढविकाइयाणं पुच्छा।

[उ] गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी।

[प्र २] से केणट्ठेणं जाव भोगी ?

[उ.] गोयमा ! फासिंदियं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव भोगी।

[३] एवं जाव वणस्सइकाइया।

१६. [प्र. १] भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवो के सम्बन्ध मे भी यही प्रश्न है ?

[उ.] गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव कामी नही है, किन्तु भोगी है।

[प्र. २] भगवन् ! किस अपेक्षा से ऐसा कहा जाता है कि पृथ्वीकायिक जीव कामी नही, किन्तु भोगी है ?

[उ] गौतम ! स्पर्शेन्द्रिय की अपेक्षा से पृथ्वीकायिक जीव भोगी है। इस अपेक्षा से, हे गौतम ! पृथ्वीकायकि जीव यावत् भोगी है।

[३] इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक जीवो तक कहना चाहिए।

16. [Q. 1] *Bhante* ! The same question regarding earth-bodied beings (*prithvikayik jivas*) ?

[Ans.] Gautam ! Earth-bodied beings do not have cerebral experience but have physical experience ?

[Q. 2] *Bhante* ! Why is it said that earth-bodied beings do not have cerebral experience but have physical experience ?

[Ans.] In relation to the sense organ of touch (as they have only this organ) earth-bodied beings have physical experience That is why, Gautam ! It is said that earth-bodied beings have physical experience only

[3] The same should be repeated for beings up to plant-bodied beings (*vanaspatikaaya jivas*)

१७. [१] बेइंदिया एवं चेव। नवरं जिब्भिंदिय–फासिंदियाइं पडुच्च।

[२] तेइंदिया वि एवं चेव। नवरं घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियाइं पडुच्च।

[प्र. ३] चउरिंदियाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! चउरिंदिया कामी वि भोगी वि।

[प्र. ४] से केणट्ठेणं जाव भोगी वि ?

[उ.] गोयमा ! चक्खिंदियं पडुच्च कामी, घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियाइं पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेणं जाव भोगी वि।

१७. [१] इसी प्रकार द्वीन्द्रिय जीव भी भोगी है, किन्तु विशेषता यह है कि वे जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय की अपेक्षा भोगी है।

[२] त्रीन्द्रिय जीव भी इसी प्रकार भोगी है, किन्तु वे घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय की अपेक्षा से भोगी है।

[प्र ३] भगवन् ! चतुरिन्द्रिय जीवो के सम्बन्ध मे प्रश्न है ?

[उ.] गौतम ! चतुरिन्द्रिय जीव कामी भी है और भोगी भी है।

[प्र. ४] भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते है कि चतुरिन्द्रिय जीव कामी भी है और भोगी भी है ?

[उ] गौतम ! (चतुरिन्द्रिय जीव) चक्षुरिन्द्रिय की अपेक्षा से कामी है और घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय की अपेक्षा से भोगी है। इस कारण से हे गौतम ! चतुरिन्द्रिय जीव कामी भी है और भोगी भी है।

17. [Q. 1] In the same way two-sensed beings (*dvindriya jivas*) also have physical experience only but with the difference that they have physical experience in relation to the sense organs of taste and touch

[2] In the same way three-sensed beings (*trindriya jivas*) also have physical experience only but with the difference that they have physical experience in relation to the sense organs of smell, taste and touch

[Q. 3] *Bhante* ! Same question about four-sensed beings ?

[Ans.] Gautam ! Four-sensed beings (*chaturindriya jivas*) have cerebral experience as well as physical experience

[Q. 4] *Bhante* ! Why is it said that four-sensed beings have cerebral experience as well as physical experience ?

[Ans.] Gautam ! In relation to the sense organ of seeing they (four-sensed beings) have cerebral experience and in relation to the sense

organs of smell, taste and touch they have physical experience. That is why, Gautam ! Four-sensed beings have cerebral experience as well as physical experience

१८. अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया।

१८. शेष वैमानिक-पर्यन्त सभी जीवो के विषय मे औधिक जीवो की तरह कहना चाहिए कि वे कामी भी है, भोगी भी है।

18. Rest of the beings up to *Vaimaniks* follow the pattern of the general statement about living beings, i e they have cerebral experience as well as physical experience

१९. [प्र.] एतेसि ण भंते ! जीवाणं कामभोगीणं नोकामीणं, नोभोगीणं, भोगीण य कतरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा।

१९. [प्र] भगवन् ! काम-भोगी, नोकामी नोभोगी और भोगी, इन जीवो मे से कौन किनसे अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

[उ.] गौतम ! काम-भोगी जीव सबसे थोडे है, नोकामी नोभोगी जीव उनसे अनन्तगुणे है और भोगी जीव उनसे अनन्तगुणे है।

19. [Q.] *Bhante* ! Of the *kaam-bhogi* (with cerebral and physical experience), *no-kaami-no-bhogi* (without cerebral experience and without physical experience), and *bhogi* (with physical experience) which *jivas* (beings) are comparatively less, more, equal and much more ?

[Ans.] Gautam ! *Kaam-bhogi jivas* (beings with cerebral experience and with physical experience) are minimum, *no-kaami-no-bhogi jivas* (beings without cerebral experience and without physical experience) are infinite times more than these, and *bhogi jivas* (beings with physical experience) are infinite times more than these

विवेचन : श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसन और स्पर्शन ये पाँच इन्द्रियाँ है। इनके पाँच विषय है-शब्द, रूप, गध, रस और स्पर्श। श्रोत्र और चक्षु ये दो इन्द्रियाँ कामी है, शेष तीन भोगी।

जिन विषयो की कामना-अभिलाषा की जाती है, किन्तु शरीर से भोगे नही जाते वे 'काम' कहलाते है। जैसे-शब्द और रूप। जिनका विषय सवेदन या अनुभव उत्पन्न करता है। वे भोग है, जैसे-गध, रस और स्पर्श।

काम और भोग पौद्गलिक है। इसलिए वे रूपी है। चैतन्य युक्त (जीव का) शब्द और रूप सचित्त है, तथा चैतन्यरहित (अजीव का) शब्द और रूप अचित्त है।

सजीव शरीर के रूप की अपेक्षा तथा जीव शब्द की अपेक्षा 'काम' जीव भी है, तथा चित्र, पुतली आदि के रूप की अपेक्षा एव अजीव शब्द की अपेक्षा काम अजीव भी है। भोग का विषय भी 'काम' की ही भाँति समझना चाहिए। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीव केवल भोगी होते है, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रिय जीव

कामी और भोगी दोनो प्रकार के होते है। वे सबसे थोडे है। उनसे नोकामी, नोभोगी (सिद्ध जीव) अनन्तगुणे है और भोगी जीव एकेन्द्रिय से त्रीन्द्रिय तक उनसे अनन्त गुणे है। क्योकि वनस्पति मे भी अनेक जीव होते है। इस अपेक्षा से भोगी जीव सिद्धो की अपेक्षा अनन्तगुणा अधिक है। *(वृत्ति, पत्रांक ३१०)*

Elaboration—There are five sense organs, those of hearing, seeing, smelling, tasting and touching These have five subjects respectively—sound, form or appearance, smell, taste and touch The medium of activity of the two organs of hearing and seeing is cerebral experience (*kaam*), and that of the remaining three organs is physical experience (*bhog*)

The subjects that can be cerebrally experienced but cannot be physically experienced are called *kaam*—sound and form The subjects that cause tangible physical sensation and physical experience are called *bhoga*—smell, taste and touch.

Cerebral experience and physical experience both are dependent on matter and thus they have form (*rupa*) Forms and sounds associated with life are *sachitt* and those not associated with life are *achitta*

In context of the form of a living body and the sound produced by a living being, *kaam* is termed as living (*jiva*) and in context of the form of a non-living thing like picture or image and sound produced by a non-living thing, *kaam* is also non-living (*ajiva*). *Bhog* also follows the same pattern One-sensed, two-sensed and three-sensed beings exclusively experience *bhog* Four-sensed and five-sensed beings experience both *kaam* as well as *bhog* They are minimum in number. *No-kaami* (without cerebral experience) and *no-bhogi* (without physical experience), i e *Siddhas* (liberated beings) are infinite times more than these Exclusively *bhogi* (with physical experience) beings (one to three-sensed beings) are infinite time more than these As plant life too has vast number of beings, the total of exclusively *bhogi* beings becomes infinite times more than liberated beings (*Vritti*, leaf 310)

छद्मस्थ एव केवली **CHHADMASTH AND KEVALI**

२०. [प्र.] छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?

[उ.] गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे पभू णं से उट्ठाणेण वि कम्मेण वि बलेण वि वीरिएण वि पुरिसक्कारपरक्कमेण वि अन्नयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति।

२०. [प्र.] भगवन् ! ऐसा छद्मस्थ मनुष्य, जो किसी देवलोक मे देव रूप मे उत्पन्न होने वाला है, भगवन् ! वास्तव में, **क्षीणभोगी** (दुर्बल शरीर वाला) उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार-पराक्रम के द्वारा विपुल और भोगने योग्य भोगो को भोगता हुआ विहरण (जीवनयापन) करने मे समर्थ नही है ? भगवन् ! क्या आप इस अर्थ (तथ्य) को इसी तरह कहते है ?

[उ.] गौतम ! यह अर्थ समर्थ नही है, क्योंकि वह (देवलोक मे उत्पत्तियोग्य क्षीण-शरीरी भी) उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार-पराक्रम द्वारा किन्हीं विपुल एव भोग्य भोगो को (यत्किंचित् रूप मे, मन से भी) भोगने मे समर्थ है। इसलिए वह भोगी है। वह भोगो का (मन से) परित्याग करता हुआ ही महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

20. [Q.] *Bhante* ! A *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage), destined to be born as a divine being in some divine realm and with an emaciated body (*ksheen-bhogi*) is, in fact, not capable of leading a life enjoying ample pleasant experiences due to his feeble effort to rise (*utthaan*) and act (*karma*), dwindling physical strength (*bal*); reduced mental capacity (*virya*), wavering intent to act (*purushakar*), and insignificant valour (*parakram*). *Bhante* ! Do you affirm this statement ?

[Ans.] Gautam ! That is not correct because that person (a *chhadmasth* destined to be born as a divine being and with an emaciated body) is, in fact, capable of enjoying ample pleasant experiences with his effort to rise and act, physical strength; mental capacity, intent to act, and valour. That is why he is a *bhogi* He is able to attain extensive shedding of *karmas* (*maha nirjara*) and a noble end (*mahaparyavasan*) only by voluntary renouncing of pleasant experiences

२१. [प्र.] आहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु०।

[उ.] एवं चेव जहा छउमत्थे जाव महापज्जवसाणे भवति।

२१. [प्र] भगवन् ! ऐसा अधोऽवधिक (नियत क्षेत्र का अवधिज्ञानी) मनुष्य, जो किसी देवलोक मे उत्पन्न होने योग्य है, क्या वह क्षीणभोगी उत्थान यावत् पुरुषकार-पराक्रम द्वारा विपुल एव भोग्य भोगो को भोगने मे समर्थ है ?

[उ.] (हे गौतम !) इसके विषय में उपर्युक्त छद्मस्थ के समान ही कथन जान लेना चाहिए।

21. [Q.] *Bhante* ! An *adho-avadhik* (a person with limited *avadhi jnana*), destined to be born as a divine being in some divine realm and with an emaciated body. and so on up to wavering intent to act; and insignificant valour. *Bhante* ! Do you affirm this statement ?

[Ans.] (Gautam !) What has been said about a *chhadmasth* should be repeated here

२२. [प्र.] **परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी०।**

[उ.] **सेसं जहा छउमत्थस्स।**

२२. [प्र.] भगवन् ! परम अवधिज्ञानी मनुष्य जो उसी भव मे सिद्ध होने वाला यावत् सर्व-दु खों को अन्त करने वाला है, क्या वह क्षीणभोगी (दुर्बल शरीर वाला है) यावत् भोगने योग्य विपुल भोगों को भोगने मे समर्थ है ?

[उ.] (हे गौतम !) इसका उत्तर भी छद्मस्थ के लिए दिए हुए उत्तर के समान जानना चाहिए। (अर्थात् वह भोगी है। भोगो का परित्याग करता हुआ महानिर्जरा महापर्यवसान को प्राप्त होता है।

22. [Q.] *Bhante* ! A *param-avadhi jnani* (a person with perfect *avadhi jnana*), destined to be liberated in the same birth with an emaciated body and so on up to wavering intent to act; and insignificant valour. *Bhante* ! Do you affirm this statement ?

[Ans.] (Gautam !) What has been said about a *chhadmasth* should be repeated here (Which means that he is a *bhogi* and is able to attain extensive shedding of *karmas* and a noble end only by voluntary renouncing pleasant experiences)

२३. [प्र.] **केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं०।**

[उ.] **एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महापज्जवसाणे भवति।**

२३. [प्र.] भगवन् ! केवलज्ञानी मनुष्य भी, जो उसी भव मे सिद्ध होने वाला है, यावत् सभी दु खो का अन्त करने वाला है, क्या वह विपुल और भोग्य भोगो को भोगने मे समर्थ है ?

[उ.] (हे गौतम !) इसका कथन भी परमावधिज्ञानी की तरह करना चाहिए, या यावत् वह महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

23. [Q.] *Bhante* ! A *Keval jnani* (a person with omniscience), destined to be liberated in the same birth .. and so on up to .. end all miseries, with an emaciated body.. and so on up to... wavering intent to act; and insignificant valour *Bhante* ! Do you affirm this statement ?

[Ans.] (Gautam !) What has been said about a *param-avadhi jnani* should be repeated here . . and so on up to.. He is able to attain extensive shedding of *karmas* (*maha nirjara*) and a noble end (*mahaparyavasan*)

विवेचन : सूत्र २१ से २३ तक के वर्णन का निष्कर्ष यह है कि चाहे कोई शरीर से दुर्बल अशक्त होने पर भोग भोगने में असमर्थ हो, किन्तु जब तक वह मन-वचन-काया से भोगों का त्याग नही करता है, तब तक

वह भोग त्यागी नही है। दुर्बल शरीर वाला भी अध्यवसाय (मानसिक) स्तर पर विषय का भोग कर सकता है, इस अपेक्षा से कहा है-भोग त्याग करने पर ही महानिर्जरा महापर्यवसान होती है।

Elaboration—The message of aphorisms 21-23 is that although a weak person with emaciated body may be unable to enjoy physical pleasures, as long as he does not renounce these desires mentally, vocally and physically he is not a renouncer of pleasures. A person with a weak body can still indulge in pleasant experiences mentally That is why it is mentioned here that extensive shedding of *karmas* (*maha nirjara*) and a noble end (*mahaparyavasan*) is attained only on complete renunciation

अकाम वेदना का वेदन **INVOLUNTARY EXPERIENCE OF PAIN**

२४. [प्र.] जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा–पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा य एगइया तसा, एए णं अंधा मूढा तमं पविट्ठा तमपडल–मोहजालपलिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेतीति वत्तव्वं सिया ?

[उ.] हंता, गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेतीति वत्तव्वं सिया।

२४. [प्र] भगवन् ! ये जो असज्ञी (मनरहित) प्राणी है, यथा-पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक, ये पाँच (स्थावर) तथा छठे कई त्रसकायिक (सम्मूर्च्छिम) जीव है, जो अन्ध (अन्धो की तरह अज्ञानान्ध) है, मूढ़ (मोहयुक्त होने से तत्त्वश्रद्धान के अयोग्य) है, तामस (अज्ञानरूप अन्धकार) मे प्रविष्ट की तरह है, (ज्ञानावरणरूप) तम पटल और (मोहनीयरूप) मोहजाल से आच्छादित है, वे अकामनिकरण (अज्ञान रूप मे या अनिच्छापूर्वक) वेदना वेदते है, क्या ऐसा कहा जा सकता है ?

[उ] हाँ, गौतम ! जो ये असज्ञी प्राणी पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक और छठे कई त्रसकायिक (सम्मूर्च्छिम) जीव है, यावत् ये सब अकामनिकरण वेदना वेदते है। (क्योकि उनमे इच्छा शक्ति का अभाव है)

24. [Q.] There are non-sentient (*asanjni*) beings including five kinds of immobile beings, like earth-bodied beings, water-bodied beings, fire-bodied beings, air-bodied beings, and plant-bodied beings, and, sixth, many mobile beings, which are blind (ignorant), stupid (incapable of observing reality due to stupor of fondness), engulfed in darkness (of ignorance), encumbered by veil of darkness (*jnanavaran*) and web of fondness. Can it be said that they undergo involuntary (*akaam-nikaran*) experience of pain ?

[Ans.] Yes, Gautam ! These non-sentient (*asanjni*) beings including five kinds of immobile beings, like earth-bodied beings. and so on up

to. sixth, many mobile beings, . and so on up to.. they all undergo involuntary experience of pain (This is because they are devoid of will)

२५. [प्र.] अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरण वेदणं वेदेति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! अत्थि।

२५. [प्र] भगवन् ! क्या ऐसा होता है कि समर्थ होते हुए भी जीव, अकामनिकरण (अज्ञानपूर्वक–अनिच्छापूर्वक) वेदना को वेदते है ?

[उ.] हॉ, गौतम ! वेदते है।

25. [Q.] *Bhante* ! Is it possible that even when they are capable (endowed with sentience) they undergo involuntary experience of pain ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

२६. [प्र.] कहं णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?

[उ.] गोयमा ! जे णं णो पभू विणा पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरतो रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति।

२६. [प्र.] भगवन् ! समर्थ होते हुए भी जीव, अकामनिकरण वेदना को कैसे वेदते है ?

[उ.] गौतम ! जो जीव समर्थ होते हुए भी अन्धकार मे दीपक के बिना पदार्थों को देखने मे समर्थ नही होते, जो अवलोकन किये बिना सम्मुख रहे हुए पदार्थों को देख नही सकते, अवेक्षण किये बिना पीठ के पीछे के भाग को नही देख सकते, अवलोकन किये बिना अगल–बगल के (पार्श्व भाग के दोनो ओर के) रूपो को नही देख सकते, आलोकन किये बिना ऊपर के रूपो को नही देख सकते और न आलोकन किये बिना नीचे के रूपो को देख सकते हैं, इसी प्रकार गौतम ! ये जीव समर्थ होते हुए भी अकामनिकरण वेदना वेदते है।

26. *Bhante* ! In spite of being capable (endowed with sentience) why do they undergo involuntary experience of pain ?

[Ans.] Gautam ! Those beings who, although capable (*prabhu*), are not able to see things in dark without the help of a lamp, who are not able to see things in front without looking (directly) at them, who are not able to see things in the rear without turning, who are not able to see things at their flanks without looking (directly) at them, who are not able to see things above without looking (directly) at them and who are

not able to see things below without looking (directly) at them, Gautam ! such beings, although capable, undergo involuntary experience of pain

२७. [प्र.] अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति।

[उ.] हंता, अत्थि।

२७. [प्र.] भगवन् ! क्या ऐसा भी होता है कि समर्थ होते हुए भी जीव, प्रकामनिकरण (तीव्र इच्छापूर्वक) वेदना को वेदते है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! वेदते है।

27. [Q.] *Bhante* ! Is it possible that even when they are capable (endowed with sentience) they undergo experience of pain with intense desire ?

[Ans.] Yes, Gautam ! They do

२८. [प्र.] कहं णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?

[उ.] गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देवलोगगयाइं रूवाइं पासित्तए एस णं गोयमा ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

।। सत्तम सए : सत्तमो उद्देसओ समत्तो ।।

२८. [प्र.] भगवन् ! समर्थ होते हुए भी जीव, प्रकामनिकरण वेदना को किस प्रकार वेदते है ?

[उ.] गौतम ! जो समुद्र के पार जाने मे समर्थ नही है, जो समुद्र के पार रहे हुए रूपो को देखने मे समर्थ नही है, जो देवलोक मे जाने मे समर्थ नही है, और जो देवलोक मे रहे हुए रूपो को देख नही सकते, हे गौतम ! वे समर्थ होते हुए भी प्रकामनिकरण वेदना को वेदते है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है, यो कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते है।

28. [Q.] *Bhante* ! In spite of being capable (endowed with sentience) why do they undergo experience of pain with intense desire ?

[Ans.] Gautam ! Those beings who are incapable of crossing a sea, who are incapable of seeing things at the other end of the sea, who are incapable of going to divine abodes, and who are incapable of seeing things existing in divine abodes, Gautam ! Such beings, although capable (sentient), undergo experience of pain with intense desire

"*Bhante*! Indeed that is so. Indeed that is so." With these words and so on up to ... ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन : असञ्ज्ञी जीव इच्छा और ज्ञान की शक्ति के अभाव में अनिच्छा से अज्ञानपूर्वक सुख–दु ख वेदते है। सञ्ज्ञी जीव इच्छा और ज्ञानशक्ति से युक्त होते हुए भी साधन सामग्री के बिना अनिच्छा से और अज्ञानपूर्वक सुख–दु ख वेदते है, जैसे अधकार में दीपक के अभाव मे पदार्थों को नही देखा जा सकता और ज्ञान एव इच्छाशक्ति से युक्त होते हुए भी प्राप्तिरूप सामर्थ्य के अभाव मे मात्र तीव्र कामनापूर्वक वेदना वेदते है। जैसे–समुद्र पार जाने के पदार्थों को देखने की इच्छा होते हुए भी समुद्र पार जाने की शक्ति न होने के कारण उस पार के पदार्थ नहीं देखे जा सकते। (वृत्ति, पत्रांक ३१२)

मनरहित जीवो मे भी सुख–दु ख का संवेदन होता है। यह सत्य वर्तमान में पेड–पौधो पर किये गये वैज्ञानिक प्रयोगो से भी सिद्ध हो गया है। देखे, तीर्थंकर (जनवरी ८६) डॉ अवधेश शर्मा का लेख)

॥ सप्तम शतक : सप्तम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—In absence of will and intellect the non-sentient beings (*asanjni jivas*) experience pleasure and pain involuntarily and out of ignorance Although equipped with will and intellect the sentient beings (*sanjni jivas*) too experience pleasure and pain involuntarily and out of ignorance due to absence of facilitating means An example is inability to see things in absence of light Thus in absence of facilitating means or capacity they only experience intense desire and the resulting pain in absence of the required ability to acquire the desired Another example is that the desire to see things across a sea cannot be fulfilled in absence of means to go across the sea (*Vritti*, leaf 312)

Living organism without mind also experience pleasure and pain. This fact has been corroborated by modern biological research done on plants (see article by Dr. Avadhesh Sharma in *Tirthankar*, January 1986)

● END OF THE SEVENTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : अष्टम उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : EIGHTH LESSON

छद्मस्थ CHHADMASTH (THE UNRIGHTEOUS)

छद्मस्थ सिद्ध नही होता **UNRIGHTEOUS CANNOT BE SIDDHA**

१. [प्र.] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं०?

[उ.] एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए (सू० १२–१८) तहा भाणियव्वं जाव अलमत्थु।

१. [प्र.] भगवन् ! क्या छद्मस्थ मनुष्य, अनन्त और शाश्वत अतीतकाल मे केवल सयम द्वारा, (केवल सवर द्वारा, केवल ब्रह्मचर्य से, तथा केवल अष्ट प्रवचनमाताओ के पालन से सिद्ध हुआ है, बुद्ध हुआ है, यावत् उसने सर्व दु खो का अन्त किया है ?)

[उ.] गौतम ! यह अर्थ उचित नही है। इस विषय मे प्रथम शतक के चतुर्थ उद्देशक (सू १२–१८) मे जिस प्रकार कहा है, उसी प्रकार यहाँ यावत् 'अलमत्थु' पाठ तक कहना चाहिए।

1. [Q.] *Bhante* ! In the endless eternal past has a *chhadmasth* person (unrighteous/ one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) been able to get perfected (*Siddha*), enlightened (*buddha*), and so on up to . and end all miseries only by ascetic-discipline (*samyam*) and so on up to (only by blocking inflow of *karmas*, only by absolute celibacy or only by observing eight *pravachan-mata*) ?

[Ans.] Gautam ! That is not possible. In this regard repeat the statement from Chapter 1, Lesson 1 (Aphorisms 12-18) up to *almastu*

विवेचन . फलितार्थ–प्रथम शतक के चतुर्थ उद्देशकोक्त पाठ का फलितार्थ यह है कि भूत, वर्तमान और भविष्य मे जितने जीव सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हुए है, होते है, होंगे, वे सभी उत्पन्न ज्ञान–दर्शन के धारक अरिहत, जिन, केवली होकर ही हुए है, होते है, होंगे।

Elaboration—The gist of the statement under reference is that whoever got perfected (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), they all have first acquired ultimate knowledge and perception to become *Arhant*, *Jina*, or *Kevali* (omniscient) Only they do that and only they will do that

हाथी और कुंथुए के समान जीव **SOUL OF ELEPHANT AND INSECT**

२. [प्र.] से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

[उ.] हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य एवं जहा रायपसेणइज्जे जाव खुड्डियं वा, महालियं वा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समे चेव जीवे।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या वास्तव मे, हाथी और कुन्थुए का जीव समान है?

[उ.] हाँ, गौतम ! हाथी और कुन्थुए का जीव समान है। इस विषय मे रायपसेणीय (राजप्रश्नीय) सूत्र मे कहे अनुसार यावत् 'खुड्डिय वा महालियं वा' इस पाठ तक कहना चाहिए।

हे गौतम ! इसी कारण से हाथी और कुथुए का जीव समान है।

2. [Q.] *Bhante* ! Is the soul of an elephant, in fact, the same as that of an insect (*kunthu*)?

[Ans.] Yes, Gautam ! The soul of an elephant is the same as that of an insect (*kunthu*) In this regard quote the statement from *Raipaseniya* (*Rajaprashniya*) *Sutra* up to '*khuddyam va mahaliyam*' Gautam ! That is why souls of elephant and insect are same

विवेचन राजप्रश्नीयसूत्र मे कहा है-समान जीवत्व की सदृष्टान्त प्ररूपणा-हाथी का शरीर बडा और कुथुए का छोटा होते हुए भी दोनो मे मूलत आत्मा (जीव) समान है, इसे सिद्ध करने के लिए राजप्रश्नीयसूत्र मे दीपक का दृष्टान्त दिया गया है। जैसे-एक दीपक का प्रकाश एक कमरे मे फैला हुआ है, यदि उसे किसी बर्तन द्वारा ढँक दिया जाये तो उसका प्रकाश बर्तन-परिमित हो जाता है, इसी प्रकार जब जीव हाथी का शरीर धारण करता है तो वह (आत्मा) उतने बडे शरीर मे व्याप्त रहता है और जब कुथुए का शरीर धारण करता है तो उसके छोटे-से शरीर मे (आत्मा) व्याप्त रहता है। इस प्रकार केवल छोटे-बडे शरीर का ही अन्तर रहता है जीव मे कुछ भी अन्तर नही है। सभी जीव समान रूप से असख्यात प्रदेशो वाले है। उन प्रदेशो का सकोच-विस्तार मात्र होता है। आत्मा सबमे समान है। *(देखे-सचित्र रायपसेणियसूत्र, पृ ३७८)*

Elaboration—*Rajaprashniya* states **Similarity of souls explained by example**—In order to establish that although an elephant has a larger body than an insect, their souls are the same, *Rajaprashniya Sutra* gives the example of a lamp The light of a lamp spreads all around a room If this lamp is covered by a bowl its light gets confined within the bowl. In the same way when a soul acquires the body of an elephant it encompasses that large body and when it acquires the body of an insect it is confined to that small body. This way the difference of large and small is in the bodies, the souls are same. All souls are same, with infinite space-points, only there is an expansion or contraction of the space occupied by these space-points. (see *Illustrated Raipaseniya Sutra*, p. 378)

चौबीस दण्डकवर्ती जीवो द्वारा कृत पापकर्म दुःखरूप **SINS ARE MISERY**

३. [प्र.] नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जति, जे य कज्जिस्सति सव्वे से दुक्खे ? जे निज्जिण्णे से णं सुहे ?

[उ.] हंता, गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे जाव सुहे।

४. एवं जाव वेमाणियाणं।

३. [प्र.] भगवन् ! नैरयिको द्वारा जो पापकर्म किया गया है, जो किया जाता है और जो किया जायेगा, क्या वह सब दु खरूप है और (उनके द्वारा) जिसकी निर्जरा की गई है, क्या वह सुख रूप है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! नैरयिको द्वारा जो पापकर्म किया गया है, वह सब दु खरूप है और (उनके द्वारा) जिन (पापकर्मो) की निर्जरा की गई है, वह सब सुखरूप है।

3. [Q.] *Bhante* ! Are all the sinful acts done (demeritorious *karmas* acquired) in the past, being done at present and to be done in future by infernal beings are (take the form of) misery ? And all (the *karmas*) that have been shed are (take the form of) happiness ?

[Ans.] Yes, Gautam ! All the sinful acts done by infernal beings are misery And all that have been shed are happiness

४. इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त चौबीस दण्डको मे जान लेना चाहिए।

4. The same should be repeated for all living beings of twenty four *Dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks*

विवेचन · निष्कर्ष–पापकर्म ससार–परिभ्रमण का कारण होने से दु खरूप है, और पापकर्मो की निर्जरा सुखस्वरूप मोक्ष का हेतु होने से सुखरूप है। यहाँ सुख और दु ख के कारण को ही सुख–दु ख कहा गया है। *(वृत्ति, पत्राक ३१३)*

Elaboration—Conclusion—Demeritorious *karmas* (*paap karma*) being the cause of continued cycles of rebirth are misery and shedding of these *karmas* being the cause of liberation is happiness Here the causes of misery and happiness have been mentioned as misery and happiness. (*Vritti*, leaf 313)

सज्ञाओ के दस प्रकार **TEN KINDS OF INCLINATIONS**

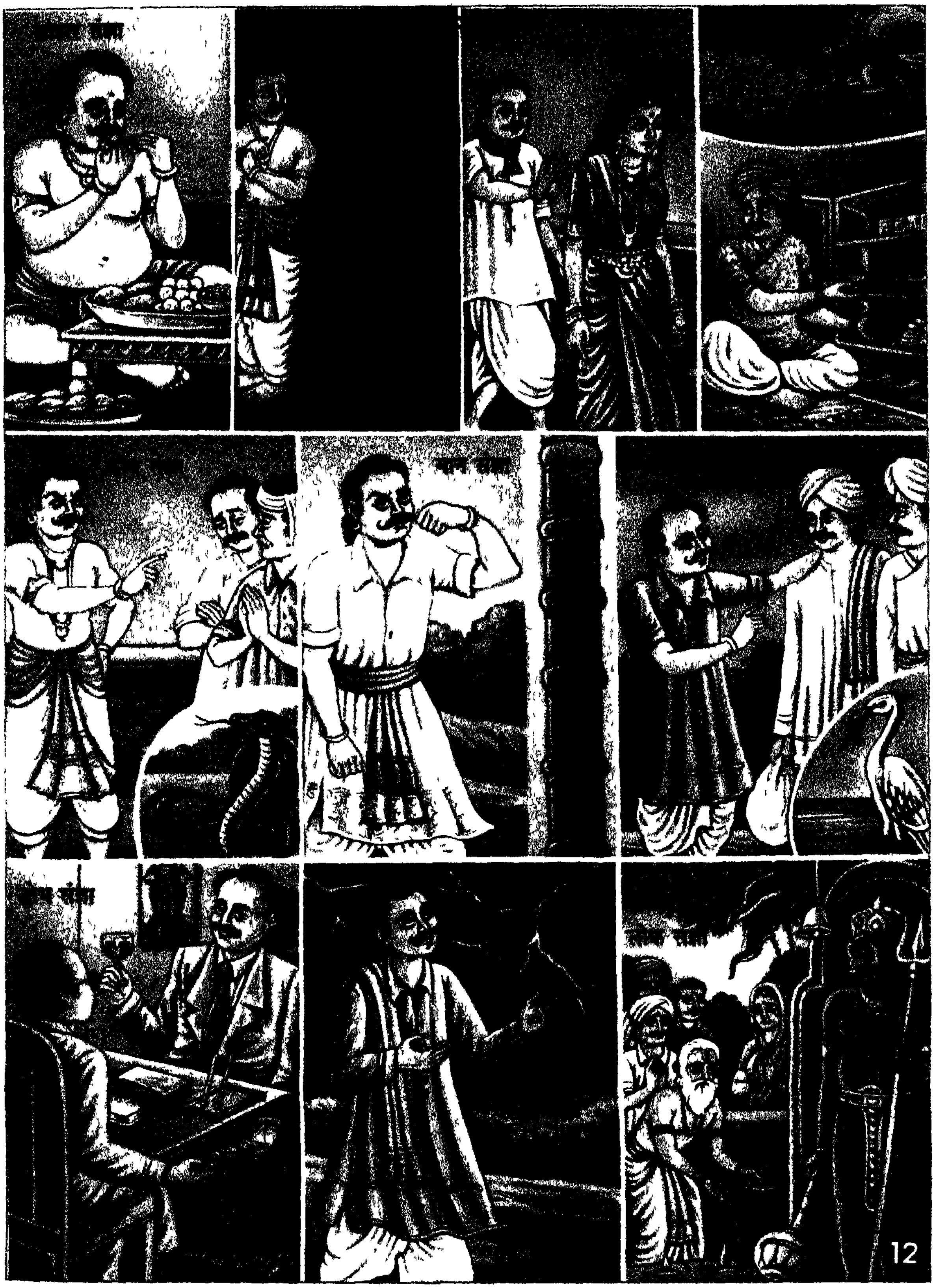
५. [प्र.] कति णं भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ?

[उ.] गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–आहारसण्णा १ भयसण्णा २ मेहुणसण्णा ३ परिग्गहसण्णा ४ कोहसण्णा ५ माणसण्णा ६ मायासण्णा ७ लोभसण्णा ८ ओहसण्णा ९ लोगसण्णा १०।

६. एवं जाव वेमाणियाणं।

५. [प्र.] भगवन् ! सज्ञाएँ कितने प्रकार की है ?

[उ.] गौतम ! संज्ञाएँ दस प्रकार की है। यथा–(१) आहारसज्ञा, (२) भयसज्ञा, (३) मैथुनसंज्ञा, (४) परिग्रहसज्ञा, (५) क्रोधसज्ञा, (६) मानसज्ञा, (७) मायासज्ञा, (८) लोभसज्ञा, (९) लोकसज्ञा, और (१०) ओघसज्ञा।


12

चित्र परिचय-१२

Illustration No. 12

दस संज्ञाएँ

वेदनीय तथा मोहनीय कर्म के उदय से भोजन आदि की इच्छा होना 'संज्ञा' है।

१ आहार संज्ञा–भोजन की प्रबल इच्छा। जिसको आहार संज्ञा प्रबल होती है उसे दिन रात खाने की इच्छा बनी रहती है।

२ भय संज्ञा–किसी भी कल्पित कारण या आशंका से भयभीत होना–जैसे अपनी ही छाया को भूत समझकर डरना।

३ मैथुन संज्ञा अपने से विपरीत लिंग के प्रति कामवासना।

४ परिग्रह संज्ञा–मन में धन आदि का संग्रह करने की आसक्ति होना जैसे चूहे में संग्रह की वृत्ति होती है।

५ क्रोध संज्ञा–मन के विपरीत काम होने पर क्रोध आदि का उदय होना जैसे साँप को छेड़ने पर फुंकारता है।

६ मान संज्ञा–पत्थर के खम्भ की तरह मन में स्तब्धता (अकड़) रूप मान का उदय होना।

७ माया संज्ञा–झूठ कपट आदि द्वारा दूसरों को ठगना जैसे बगुला वृत्ति।

८ लोभ संज्ञा–धन आदि की प्राप्ति की तीव्र लालसा होना। इसी लालसा वश व्यक्ति भ्रष्ट आचरण करता है।

९ ओघ संज्ञा–बिना विशेष उपयोग के धुन ही धुन में चलते रहना।

१० लोक संज्ञा–लोक रूढ़ि के वश देखा देखी प्रवृत्ति करना जैसे देखा देखी मिथ्यात्वी देवों की पूजा आदि करना।

शतक ७ उ. ८ सूत्र

TEN INCLINATIONS

Natural desires triggered by fruition of Vedaniya and Mohaniya karmas are called sanjna (inclinations)--

(1) Inclination for food (ahaar sanjna)—a person with intensity of this tends to eat all the time

(2) Inclination of fear (bhaya sanjna)—to be afraid of some imaginary thing like one's own shadow believing it to be a ghost

(3) Inclination of sex (maithun sanjna)—lust for persons of opposite sex

(4) Inclination of possession (parigraha sanjna)—craving for accumulating wealth and other possessions, like a mouse

(5) Inclination of anger (krodh sanjna)—rise of anger when things go against one's wishes as a snake hisses on disturbing

(6) Inclination of conceit (maan sanjna)—rise of dogmatic ego like an unyielding stone pillar

(7) Inclination of deceit (maaya sanjna)—two cheat others with lies and deceit like a heron

(8) Inclination of greed (lobh sanjna)—craving for acquiring wealth and other things, like a corrupt person takes bribe

(9) Inclination of stupor (ogh sanjna)—to move about purposeless or absentmindedly

(10) Inclination for social customs (lok sanjna)- to blindly follow social customs like worship of pagan deities

Shatak 7 lesson 8 Sutra 5

६. वैमानिकपर्यन्त चौबीस दण्डको मे ये दस सज्ञाएँ पाई जाती है।

5. *Bhante* ! How many kinds of inclinations (*sanjna*) are there ?

[Ans.] Gautam ! Inclinations (*sanjna*) are of ten kinds—(1) inclination for food (*ahaar sanjna*), (2) inclination of fear (*bhaya sanjna*), (3) inclination of sex (*maithun sanjna*), (4) inclination of possession (*parigraha sanjna*), (5) inclination of anger (*krodh sanjna*), (6) inclination of conceit (*maan sanjna*), (7) inclination of deceit (*maaya sanjna*), (8) inclination of greed (*lobh sanjna*), (9) inclination for information in general (*ogh sanjna*), (10) inclination for specific information (*lok sanjna*)

6. The same is true for all twenty four *Dandaks* up to *Vaimaniks*

विवेचन · **संज्ञा की परिभाषाएँ**–वेदनीय और मोहनीय कर्मोदय से आहारादि प्राप्ति की इच्छाविशेष को 'सज्ञा' कहा जाता है, अथवा जीव का आहारादि विषयक चिन्तन या मानसिक ज्ञान भी सज्ञा है।

सज्ञाओ की व्याख्या–(१) **आहारसंज्ञा**–कवलादि आहारार्थ पुदगल–ग्रहण की इच्छा,

(२) **भयसंज्ञा**–भयमोहनीय के उदय से व्याकुलचित्त पुरुष का भयभीत होना, काँपना आदि,

(३) **मैथुनसज्ञा**–स्त्री आदि के अगो को छूने, देखने आदि की प्रवृत्ति तथा तज्जनित कम्पनादि, जिससे मैथुनेच्छा अभिव्यक्त हो,

(४) **परिग्रहसज्ञा**–आसक्तिपूर्वक सचित्त–अचित्त द्रव्यो को ग्रहण करने की इच्छा,

(५) **क्रोधसज्ञा**–क्रोध के उदय से आवेश, दोषरूप परिणाम,

(६) **मानसज्ञा**–मान के उदय से अहकारादिरूप परिणाम,

(७) **मायासज्ञा**–माया के उदय से दुर्भावनावश दूसरो को ठगना आदि,

(८) **लोभसंज्ञा**–लोभ के उदय से सचित्त–अचित्त पदार्थ–प्राप्ति की लालसा,

(९) **ओघसज्ञा**–मतिज्ञानावरण आदि के क्षयोपशम से शब्द और अर्थ का सामान्यज्ञान, अथवा धुन ही धुन मे बिना उपयोग के की गई प्रवृत्ति, और

(१०) **लोकसंज्ञा**–सामान्य रूप से ज्ञात वस्तु को विशेष रूप से जानना, अथवा लोकरूढि या लोकदृष्टि के अनुसार प्रवृत्ति करना। ये दसो सज्ञाएँ न्यूनाधिक रूप से सभी छद्मस्थ ससारी जीवो मे पाई जाती है। इनमे प्रथम आठ सज्ञाएँ सवेगात्मक है तथा अन्तिम दो ज्ञानात्मक है। (वृत्ति, पत्राक ३१४)

Elaboration—Definition of inclination (*sanjna*)—the intrinsic desire or inclination for food etc caused by fruition of *Vedaniya* (sensation producing) and *Mohaniya* (deluding) *karmas* is called *sanjna* Thought and awareness of food etc is also *sanjna*

Details of *sanjnas*—

(1) Ahaar Sanjna—inclination of matter intake as food; like a morsel

(2) **Bhaya Sanjna**—inclination of fear due to agitated state of mind caused by fruition of *Bhaya Mohaniya karma*

(3) **Maithun Sanjna**—inclination of sex evident in acts of seeing and touching female body and the consequent excitement

(4) **Parigraha Sanjna**—inclination of owning living and non-living things with intense attachment

(5) **Krodh Sanjna**—inclination of anger expressed by agitation and other faults

(6) **Maan Sanjna**—inclination of conceit evident in expressions of pride and ego

(7) **Maaya Sanjna**—inclination of deceit expressed by cheating others

(8) **Lobh Sanjna**—inclination of greed expressed by craving to acquire living and non-living things

(9) **Ogh Sanjna**—inclination for information (words and meanings) in general This also means involuntary activities in a state of stupor.

(10) **Lok Sanjna**—inclination for specific information This also means to act according to common social customs

All these ten inclinations are found in all mundane unrighteous beings to some extant The first eight inclinations are intuitive and the last two are intellectual *(Vritti, leaf 314)*

नैरयिकों की दस वेदनाएँ TEN KINDS OF PAIN OF INFERNAL BEINGS

७. नेरइया दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा–सीतं उसिणं खुहं पिवासं कंडुं परज्झं जरं दाहं भयं सोगं।

७. नैरयिक जीव दस प्रकार की वेदना का अनुभव करते है। यथा–(१) शीत, (२) उष्ण, (३) क्षुधा, (४) पिपासा, (५) कण्डू (खुजली), (६) पराधीनता, (७) ज्वर, (८) दाह, (९) भय, और (१०) शोक।

7. Infernal beings experience ten kinds of pain—(1) cold, (2) heat, (3) hunger, (4) thirst, (5) itch, (6) slavery, (7) fever, (8) burn, (9) fear and (10) grief

अप्रत्याख्यानिकी क्रिया ACTIVITY OF NON-RENUNCIATION

८. [प्र. १] से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जति ?

[उ.] हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य जाव कज्जति।

[२] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जति?

[उ.] गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव कज्जति।

८. [प्र. १] भगवन् क्या वास्तव मे, हाथी और कुन्थुए के जीव को अप्रत्याख्यानिकी क्रिया समान लगती है ?

[उ] हाँ, गौतम ! हाथी और कुन्थुए के जीव को अप्रत्याख्यानिकी क्रिया समान लगती है।

[२] भगवन् ! ऐसा आप किस कारण से कहते है कि हाथी और कुथुए के यावत् क्रिया समान लगती है ?

[उ] गौतम ! अविरति की अपेक्षा से हाथी और कुन्थुए के जीव को अप्रत्याख्यानिकी क्रिया समान लगती है।

8. [Q. 1] *Bhante* ! Are soul of an elephant and that of an insect equally liable of involvement in *apratyakhyaniki kriya* (activity of non-renunciation) ?

[Ans.] Yes, Gautam ! Soul of an elephant and that of an insect are equally liable of involvement in *apratyakhyaniki kriya*

[2] [Q.] *Bhante* ! Why do you say that soul of an elephant and that of an insect are equally liable of involvement in *apratyakhyaniki kriya* (activity of non-renunciation) ?

[Ans.] Gautam ! In context of *avirati* (non-restraint) soul of an elephant and that of an insect are equally liable of involvement in *apratyakhyaniki kriya* In other words, as they both are unrestrained they both are liable of such involvement

आधाकर्म का फल CONSEQUENCE OF ADHAAKARMA

९. [प्र.] आहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधति ? किं पकरेति ? किं चिणाति ? किं उवचिणाति ?

[उ.] एवं जहा पढमे सए नवमे उद्देसए (सू. २६) तहा भाणियव्वं जाव सासते पंडिते, पंडितत्तं असासयं।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ सत्तम सए : अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥

९. [प्र. १] भगवन् ! आधाकर्म (साधु के निमित्त बने आहारादि) का उपयोग करने वाला साधु क्या बाँधता है ? क्या करता है ? किसका चय करता है और किसका उपचय करता है ?

[उ] गौतम ! आधाकर्म आहारादि का उपभोग करने वाला साधु आयुष्यकर्म को छोडकर शेष सात कर्मो की प्रकृतियो को, यदि वे शिथिल बन्ध से बँधी हुई हो तो, गाढ बध वाली करता है, यावत् बार-बार ससार--परिभ्रमण करता है। इस विषय का सारा वर्णन प्रथम शतक के नौवे उद्देशक (सू. २६) मे कहे अनुसार यावत् पण्डित शाश्वत है और पाण्डित्य अशाश्वत है। यहाँ तक कहना चाहिए।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है, यो कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरण करते है।

॥ सप्तम शतक : अष्टम उद्देशक समाप्त ॥

9. [Q.] *Bhante* ! What does an ascetic who indulges in *adhaakarma* (accepting food specifically prepared for an ascetic) bind ? What does he do ? What does he acquire (*chaya*) ? What does he augment (*upachaya*) ?

[Ans.] Gautam ! An ascetic indulging in *adhaakarma* turns the weak bondage of seven species of *karmas* other than *Ayu-karma* (life-span determining *karma*) into strong bondage and so on up to and continues to wander in cycles of rebirth and so on up to wise is eternal and wisdom is transitory All this should be quoted from Chapter 1, Lesson 9 (aphorism 26)

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

● END OF THE EIGHTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : नवम उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : NINTH LESSON

असंवृत ASAMVRIT (THE UNRESTRAINED)

असंवृत अनगार **UNRESTRAINED ASCETIC**

१. [प्र.] असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे।

२. [प्र.] असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं जाव।

[उ.] हंता, पभू।

१. [प्र.] भगवन् ! क्या असंवृत (संवररहित = प्रमत्त) अनगार, बाहर के पुद्गलों को ग्रहण किये बिना, एक वर्ण एक रूप की विकुर्ववणा (निर्माण) करने में समर्थ है ?

[उ.] (गौतम !) यह अर्थ समर्थ नहीं है।

२. [प्र.] भगवन् ! क्या असंवृत अनगार बाहर के पुद्गलों को ग्रहण करके एक वर्ण वाले एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! वह ऐसा करने में समर्थ है।

1. [Q.] *Bhante* ! Is an unrestrained ascetic (*asamvrit anagaar*) capable of self-mutation (*vikurvana*) into a body of single colour and single form without acquiring external matter ?

[Ans.] Gautam ! This is not possible

2. [Q.] *Bhante* ! Is an unrestrained ascetic capable of the said self-mutation (*vikurvana*) by acquiring external matter ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He is capable of doing that

३. [प्र.] से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ ? अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ ?

[उ.] गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अन्नत्थगए पोग्गले जाव विकुव्वइ।

३. [प्र.] भगवन् ! वह असंवृत अनगार यहाँ (मनुष्यलोक में) रहे हुए पुद्गलों को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है या वहाँ (देवलोक) रहे हुए पुद्गलों को ग्रहण करके अथवा इन दोनों से भिन्न अन्यत्र रहे पुद्गलों को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है ?

[उ.] गौतम ! वह यहाँ (मनुष्यलोक मे) रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है, किन्तु न तो वहाँ रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है, और न ही अन्यत्र रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है।

3. [Q.] *Bhante* ! Does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from here (the world of humans or adjoining areas) ? Does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from there (the divine realm or adjoining areas) ? Or does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from elsewhere (some area other then the said two areas) ?

[Ans.] Gautam ! He performs the said self-mutation by acquiring matter particles from here He does not perform the said self-mutation by acquiring matter particles from there (the divine realm) He also does not perform the said self-mutation by acquiring matter particles from elsewhere

४. एवं एगवण्णं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए (सू. ५) तहा इहावि भाणियव्वं।

[प्र.] नवरं अणगारे इहगए चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ। सेसं तं चेव जाव लुक्खपोग्गल निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?

[उ.] हंता, पभू। से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव (सू. ३) नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ।

४. इस प्रकार (१) एकवर्ण एकरूप, (२) एकवर्ण अनेकरूप, (३) अनेकवर्ण एकरूप, और (४) अनेकवर्ण अनेकरूप, यो चौभगी का कथन जिस प्रकार छठे शतक के नौवे उद्देशक (सू ५) मे किया है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए। किन्तु इतना विशेष है कि यहाँ रहा हुआ मुनि, यहाँ रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके विकुर्वणा करता है। शेष सारा वर्णन उसी के अनुसार यहाँ भी कहना चाहिए।

[प्र] भगवन् ! क्या रूक्ष पुद्गलो को स्निग्ध पुद्गलो के रूप मे परिणत करने मे समर्थ है ?

[उ.] हाँ, गौतम ! समर्थ है। भगवन् ! क्या वह यहाँ रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करके यावत् (सू ३) अन्यत्र रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण किये बिना विकुर्वणा करता है ? यहाँ तक कहना चाहिए।

4. In the same way four alternatives of self-mutation described in the aforesaid statement should be stated as mentioned in Chapter 6, Lesson 9 (aphorism 5)—(1) of single colour and single form (or shape), (2) of single colour and many forms (or shapes), (3) of many colours and single form (or shape), and (4) of many colours and many forms (or shapes) The only difference being that the ascetic here performs self-mutation with the help of matter available here. Rest of the details should be repeated verbatim

[Q.] *Bhante* ! Is he capable of transforming rough particles into smooth particles ?

[Ans.] Yes, Gautam ! He is capable. (Gautam—) Does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from here (the world of humans or adjoining areas) ? . and so on up to . Or does he perform the said self-mutation by acquiring matter particles from elsewhere (some area other then the said two areas) ? and the answer should be repeated as in aforesaid aphorism 3

विवेचन 'इहगए' आदि का तात्पर्य–जिस स्थान पर रहकर अनगार वैक्रिय करता है, वहाँ के पुद्गल 'इहगत' कहलाते है। वैक्रिय शरीर करके जिस स्थान पर जाता है, वहाँ के पुद्गल 'तत्रगत' कहलाते है, और इन दोनो स्थानो से भिन्न स्थान के पुद्गल 'अन्यत्रगत' है। देव तो 'तत्रगत' (देवलोकगत) पुद्गलो को ग्रहण करके विक्रिया कर सकता है, लेकिन अनगार तो मध्यलोकगत होने के कारण 'इहगत' (मनुष्यलोकगत) पुद्गलो को ही ग्रहण करके विक्रिया कर सकता है। (वृत्ति, पत्राक ३१५)

Elaboration—The matter particles of the place where the ascetic performs self-mutation are called '*ihagat*' The matter particles of the place where he goes after transmutation are called '*tatragat*' A place other than these two is called '*anyatragat*' Gods can perform self-mutation by acquiring particles from there (divine realm) but ascetics can only do that only by acquiring particles from here (the land of humans) because they dwell in the middle world (*Vritti*, leaf 315)

महाशिलाकण्टक सग्राम MAHASHILAKANTAK BATTLE

५. [प्र.] णायमेयं अरहता, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, महासिलाकंटए संगामे महासिलाकंटए संगामे। महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ?

[उ] गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था, नव मल्लई नव लेच्छई कासी–कोसलगा–अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था।

५. [प्र.] अर्हन्त भगवान ने यह जाना है, अर्हन्त भगवान ने यह सुना है–अर्थात्–सुनने की तरह प्रत्यक्ष देखा है, तथा अर्हन्त भगवान को यह विशेष रूप से ज्ञात है कि महाशिलाकण्टक सग्राम महाशिलाकण्टक सग्राम ही है। (अत) भगवन् ! जब महाशिलाकण्टक सग्राम चल रहा (प्रवर्त्तमान) था, तब उसमे कौन जीता और कौन हारा ?

[उ.] गौतम ! वज्जी (वज्जीगण का अथवा वज्री इन्द्र और) विदेहपुत्र कूणिक राजा जीते, नौ मल्लकी और नौ लेच्छकी (लिच्छवी) जो कि काशी और कौशल देश के १८ गण राजा थे, वे पराजित हुए।

5. [Q.] *Arhant Bhagavan* has known about this, *Arhant Bhagavan* has heard about this (directly seen like hearing about this) and *Arhant*

Bhagavan has specially known about this that indeed this is Mahashilakantak battle (Therefore) *Bhante* ! When Mahashilakantak battle was going on who won and who lost ?

[Ans.] Gautam ! Vajji Videhaputra (King Kunik of Vajji or Indra, the wielder of thunder, and King Kunik) won Nine Malla chiefs and nine Lichchhavi chiefs, who were the eighteen kings of republics of Kashi and Kaushal countries, lost

६. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटगं संगामं उट्ठितं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइं हत्थिरायं परिकप्पेह, हय–गय–रह–जोहकलियं चातुरंगिणिं सेणं सन्नाहेह, सन्नाहेत्ता जाव मम एतमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह।

६. उस समय महाशिलाकण्टक–सग्राम उपस्थित हुआ जानकर कूणिक राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषो (आज्ञापालक सेवको) को बुलाया। बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही 'उदायी' नामक हस्तिराज (पट्टहस्ती) को तैयार करो और अश्व, हाथी, रथ और योद्धाओ से युक्त चतुरगिणी सेना सन्नद्ध (शस्त्रास्त्रादि से सुसज्जित) करो और ये सब करके मेरी आज्ञानुसार कार्य करके शीघ्र ही मेरी आज्ञा मुझे वापस सौपो।

6. At that time, knowing that Mahashilakantak battle was about to begin, King Kunik summoned his attendants (*kautumbik purush*) and instructed them—"Beloved of gods ! At once prepare Udai, the best elephant, and get the four pronged army comprising of cavalry, elephant brigade, chariot brigade and infantry, ready to march Accomplishing my instructions, report back to me at once "

७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कूणिएणं रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव अंजलि कट्टु 'एव सामी ! तह' त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोव–एसमतिकप्पणाविकप्पेहिं सुनिउणेहिं एवं जहा उववातिए जाव भीमं संगामियं अउज्झं उदाइ हत्थिरायं परिकप्पेति हय–गय–जाव सन्नाहेति, सन्नाहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवा०, तेणेव २ करयल० कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

७. तत्पश्चात् कूणिक राजा द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर वे कौटुम्बिक पुरुष हृष्ट–तुष्ट हुए, यावत् मस्तक पर अजलि करके हे स्वामिन् ! 'ऐसा ही होगा, जैसी आज्ञा', यो कहकर उन्होने विनयपूर्वक वचन स्वीकार किया। वचन स्वीकार करके निपुण आचार्यो के उपदेश से प्रशिक्षित एव तीक्ष्ण बुद्धि–कल्पना के सुनिपुण विकल्पो से युक्त तथा औपपातिकसूत्र मे कहे गये विशेषणो से युक्त यावत् भीम (भयंकर) सग्राम के योग्य उदार (श्रेष्ठ अथवा योद्धा के बिना अकेले ही टक्कर लेने वाले) उदायी नामक हस्तीराज (पट्टहस्ती) को सुसज्जित किया। साथ ही घोडे, हाथी, रथ और योद्धाओ से युक्त चतुरगिणी सेना भी (शस्त्रास्त्रादि) से सुसज्जित की। सुसज्जित करके जहाँ कूणिक राजा था, वहाँ उसके पास आये और करबद्ध होकर उन्होने कूणिक राजा को आज्ञानुसार कार्य सम्पन्न हो जाने की सूचना दी।

7. Being instructed by King Kunik, the attendants were pleased and contented and so on up to they touched their foreheads with joined palms and said—"Sire ! Your order will, indeed, be complied with." Saying thus they humbly accepted the order and prepared Udai, the great elephant (having all attributes as mentioned in *Aupapatik Sutra* up to) with terrifying appearance and battle-ready, with the help of expert artisans who had attained all-round expertise under the guidance of accomplished art teachers. After this they also made ready the four pronged army comprising of cavalry, elephant brigade, chariot brigade and infantry, and came to King Kunik. With joined palms they reported him about successfully following his orders.

८. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, २ त्ता मज्जणघरं अणुप्पविसति, मज्जण. २ त्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोतुयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्जविमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियायुहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे मंगलजयसद्दकतालोए एवं जहा उववाइए जाव उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे।

८. तत्पश्चात् कूणिक राजा जहाँ स्नानगृह था, वहाँ आया, उसने स्नानगृह मे प्रवेश किया। फिर स्नान किया, स्नान से सम्बन्धित मर्दनादि बलिकर्म किया, फिर प्रायश्चित्तरूप (विघ्ननाशक) कौतुक तथा मगल किये। समस्त आभूषणो से विभूषित हुआ, शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित हुआ, लोहकवच को धारण किया, फिर मुडे हुए धनुर्दण्ड को ग्रहण किया। गले के आभूषण पहने और योद्धा के योग्य उत्तमोत्तम चिह्नपट बाँधे। फिर आयुध (गदा आदि शस्त्र) तथा प्रहरण (भाले आदि शस्त्र) ग्रहण किये। फिर श्वेत कोरण्टक पुष्पो की माला सहित छत्र धारण किया तथा उसके चारो ओर चार चामर डुलाये जाने लगे। लोगो द्वारा मागलिक एव जय-विजय शब्द उच्चारण किये जाने लगे। इस प्रकार कूणिक राजा औपपातिकसूत्र मे कहे अनुसार यावत् उदायी नामक प्रधान हाथी पर आरूढ हुआ।

8. After that King Kunik approached and entered his bathroom. There he took his bath after massage and then he performed various propitious rites for protection against evil eye and other bad omens. He then embellished his body with ornaments. He equipped himself with weapons, put on his armour and lifted his curved bow. He adorned himself with necklaces and best decorations suited to a warrior of his stature. Now he added weapons like mace and spears to his collection of arms. An umbrella with white Korant flowers was raised over him and four whisks were waved on his four sides. People greeted him with auspicious slogans and hails of victory. This way, as mentioned in *Aupapatik Sutra*, King Kunik rode Udai, his best elephant.

९. तए णं से कूणिए नरिंदे हारोत्थयसुकयरतियवच्छे जहा उववातिए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वामाणीहिं हय–गय–रह–पवरजोहकलिताए चातुरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता महासिलकंटयं सगामं ओयाए, पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ताणं चिट्ठति। एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेति, तं जहा–देविंदे य मणुइंदे य, एगहित्थणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए।

९. इसके बाद हारो से आच्छादित वक्षस्थल वाला कूणिक जनमन मे रति -प्रीति उत्पन्न करता हुआ औपपातिकसूत्र मे कहे अनुसार यावत् श्वेत चामरो से बार–बार बिजाता हुआ, अश्व, हस्ती, रथ और श्रेष्ठ योद्धाओ से युक्त चतुरगिणी सेना से सपरिवृत्त महान् सुभटो के विशाल समूह से व्याप्त कूणिक राजा, जहाँ महाशिलाकण्टक सग्राम (होने जा रहा) था, वहाँ आया। वहाँ आकर वह महाशिलाकण्टक सग्राम मे (स्वय) उतरा। उसके आगे देवराज देवेन्द्र शक्र वज्र के समान अभेद्य एक महान् कवच की विकुर्वणा करके खडा हुआ। इस प्रकार (उस युद्ध क्षेत्र मे मानो) दो इन्द्र सग्राम करने लगे, जैसे कि–एक देवेन्द्र (शक्र) और दूसरा मनुजेन्द्र (कूणिक राजा)। अब कूणिक राजा केवल एक हाथी से भी अथवा (एक उपकरण विशेष जिसके द्वारा ककड आदि फैके जाते है) (शत्रुपक्ष की सेना को) पराजित करने मे समर्थ हो गया।

9. Then King Kunik, his chest covered with necklaces, proceeded towards the battle ground He evoked humble and loving curiosity in masses As mentioned in *Aupapatik Sutra*, he was continuously fanned with whisks and was surrounded by his four pronged army comprising of cavalry, elephant brigade, chariot brigade and infantry Accompanied by a large group of great warriors, he arrived at the battle ground and joined the Mahashilakantak battle Ahead of him stood Shakrendra, the king of gods, after creating a great impenetrable armour This way it appeared as if two *Indras* (kings), king of gods (Shakra) and king of humans (Kunik), had joined the battle Now King Kunik became capable of defeating the opposing army just with one elephant (or a special tank-like vehicle that launched a variety of projectiles including stones)

१०. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटकं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छइ, कासी कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हयमहियपवरवीरघातियविवडियचिंधधय–पडागे किच्छप्पाणगते दिसो दिसिं पडिसेहेत्था।

१०. तत्पश्चात् उस कूणिक राजा ने महाशिलाकण्टक सग्राम करते हुए, नौ मल्लकी और नौ लेच्छकी; जो काशी और कौशल देश के अठारह गण राजा थे, उनके प्रवर वीर योद्धाओ को नष्ट किया, घायल किया और मार डाला। उनकी चिह्नाकित ध्वजा–पताकाएँ गिरा दी। उन वीरो के प्राण सकट मे पड गये, अत उन्हे युद्धस्थल से दसो दिशाओ मे भगा दिया (तितर–बितर कर दिया)।



१. वैशाली के रण क्षेत्र में
चेटक कूणिक का युद्ध



चित्र परिचय-१३ | **Illustration No. 13**

महाशिला कंटक संग्राम

(१) वैशाली गण राज्य का अध्यक्ष चेटक राजा व्रतधारी श्रावक था। उसने हल्ल विहल्ल कुमार को शरण दी, जिससे क्रुद्ध होकर मगध नरेश कूणिक अपने कालकुमार आदि दस भाइयों को साथ लेकर युद्ध करने रणभूमि में आ गया। चेटक का बाण कभी निष्फल नहीं जाता था। वह एक दिन में एक ही बाण छोड़ता। एक एक दिन के युद्ध में उसने कालकुमार आदि दसों भाइयों को परलोक पहुँचा दिया। तब कूणिक घबरा गया। उसकी सेना भी छिन्न भिन्न व व्याकुल हो उठी।

कूणिक ने अपने पूर्वजन्म के मित्र शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र की आराधना कर उनसे युद्ध में सहायता माँगी। शक्रेन्द्र ने कहा- चेटक राजा परम वीर तो है ही, साथ ही श्रावक व्रतधारी है। मैं उसे नहीं मारूँगा। किन्तु मित्रता के नाते युद्ध में तुम्हारी सहायता करूँगा। जिससे तुम विजयी बनोगे।

(२) शक्रेन्द्र ने कूणिक की रक्षा करने के लिए उसे वज्र जैसा अभेद्य कवच दिया, जिस पर शत्रु का कोई प्रहार सफल नहीं होता।

चमरेन्द्र ने महाशिलाकण्टक और रथमूसल -इन दो संग्रामों की विकुर्वणा की। इस दैव सहायता से कूणिक की सेना द्वारा फेंके गये बाण तो क्या, तिनका, पत्ता, कंकर भी बड़ी-बड़ी शिला बन जाते और चेटक की सेना पर तीव्र प्रहार करते। जिससे चेटक राजा की सेना का विनाश होने लगा। कूणिक विजयी बन गया।

—शतक ७, उ. ९, सूत्र १०-११

MAHASHILAKANTAK WAR

(1) King Chetak, the president of the Vaishali republic, was a vow abiding shravak. He gave refuge to prince Hall-vihall and invited displeasure of King Kunik of Magadh, who attacked Vaishali with his ten brothers including Kaal Kumar. Chetak used to shoot only one arrow in a day and he never missed. In ten days he killed Kaal Kumar and his nine brothers. Kunik was in panic and his army was in shambles.

Kunik invoked Shakrendra and Chamarendra, his friends from past birth, and sought their help. Shakrendra declined to kill Chetak because, although a great warrior, he was a devout shravak. However, he offered help to win the war.

(2) Shakrendra gave him a diamond hard impenetrable armour.

Chamarendra created two war machines - Mahashilakantak and Rath Musal. Even pebbles and straws launched through these machines turned into large rocks and killed enemy soldiers. Chetak's army got depleted and Kunik came close to victory.

—*Shatak 7, Lesson 9, Sutra 10-11*

10. In the battle Kıng Kunık hurt, wounded and kılled great warriors of the Nıne Malla chıefs and nıne Lıchchhavı chıefs, who were the eıghteen kıngs of republıcs of Kashı and Kaushal countrıes The flags and banners bearıng theır ensıgns and colours were brought down He put the fear of lıfe ın theır mınds and made them flee ın all the ten dırectıons

विवेचन · महाशिलाकण्टक सग्राम का कारण–'औपपातिक' एव 'निरयावलिका' आदि सूत्रो मे इस युद्ध का कारण इस प्रकार बताया है–चम्पानगरी मे कूणिक राजा राज्य करता था। हल्ल और विहल्ल उसके दो छोटे भाई थे। दोनो को उनके पिता श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल मे उनके हिस्से का एक सेचनक गन्धहस्ती और अठारहलडा वकचूड हार दिया था। दोनो भाई प्रतिदिन सेचनक गन्धहस्ती पर बैठकर गगातट पर जलक्रीडा और मनोरजन करते थे। उनके इस आमोद-प्रमोद को देखकर कूणिक की रानी पद्मावती को अत्यन्त ईर्ष्या हुई। उसने कूणिक राजा को हल्ल-विहल्लकुमार से सेचनक हाथी ले लेने के लिए प्रेरित किया। कूणिक ने हल्ल-विहल्लकुमार से सेचनक हाथी माँगा। तब उन्होने कहा-'यदि आप हाथी लेना चाहते है तो हमारे हिस्से का राज्य दे दीजिए।' किन्तु कूणिक उनकी न्यायसगत बात की परवाह न करके बार-बार हाथी माँगने लगा। इस पर दोनो भाई कूणिक के भय से भागकर अपने हाथी और अन्त पुर सहित वैशाली नगरी मे अपने नाना चेटक राजा की शरण मे पहुँचे। कूणिक ने चेटक के पास दूत भेजकर हल्ल-विहल्लकुमार को सौप देने का सन्देश भेजा। किन्तु चेटक राजा ने हल्ल-विहल्ल को नही सौपा। पुन कूणिक ने दूत के साथ सन्देश भेजा कि यदि आप दोनो कुमारो को नही सौपते है तो युद्ध के लिए तैयार हो जाइये। चेटक राजा ने न्यायसगत बात कही, उस पर कूणिक ने कोई विचार नही किया। सीधा ही युद्ध मे उतरने के लिए तैयार हो गया। यह था महाशिलाकण्टक युद्ध का कारण।

इधर जब चेटक राजा ने भी देखा कि कूणिक युद्ध किये बिना नही मानेगा। तब उन्होने भी शरणागत की रक्षा एव न्याय के लिए अठारह गणराज्यो के अधिपति राजाओ को अपनी-अपनी सेना सहित बुलाया। वे सब ससैन्य एकत्रित हुए। दोनो ओर की सेनाएँ युद्धभूमि मे आ डटी। घोर सग्राम शुरू हुआ। चेटक राजा का ऐसा नियम था कि वे दिन मे एक ही बार एक ही बाण छोडते, और उनका छोडा हुआ बाण कभी निष्फल नही जाता था। पहले दिन कूणिक का भाई कालकुमार सेनापति बनकर युद्ध करने लगा, किन्तु चेटक राजा के एक ही बाण से वह मारा गया। इससे कूणिक की सेना भाग गई। इस प्रकार दस दिन मे चेटक राजा ने कालकुमार आदि दसो भाइयो को मार गिराया। ग्यारहवे दिन कूणिक की बारी थी। कूणिक ने सोचा-'मै भी दसो भाइयो की तरह चेटक राजा के आगे टिक न सकूँगा। मुझे भी वे एक ही बाण मे मार डालेगे।' अत उसने तीन दिन तक युद्ध स्थगित रखकर चेटक राजा को जीतने के लिए अष्टम तप (तेला) करके देवाराधना की। अपने पूर्वभव के मित्र देवो का स्मरण किया, जिससे शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र दोनो उसकी सहायता के लिए आये। शक्रेन्द्र ने कूणिक से कहा-चेटक राजा परम श्रावक है, इसलिए उसे मै मारूँगा नही, किन्तु तेरी रक्षा करूँगा। अत शक्रेन्द्र ने कूणिक की रक्षा करने के लिए वज्र सरीखे अभेद्य कवच की विकुर्वणा की और चमरेन्द्र ने महाशिलाकण्टक और रथमूसल, इन दो सग्रामो की विकुर्वणा की। इन दोनो इन्द्रो की सहायता के कारण कूणिक की शक्ति बढ गयी। वास्तव में इन्द्रो की सहायता से ही महाशिलाकण्टक सग्राम मे कूणिक की विजय हुई, अन्यथा विजय मे सन्देह था।

Elaboration—In scriptures like *Aupapatik* and *Niryavlika Sutras* the cause of this war is detailed as follows—Kunik was the king of Champa city. He had two younger brothers named Halla and Vehalla When King Shrenik was alive he had given the majestic elephant Sechanak and an eighteen string necklace to these two brothers They used to ride Sechanak elephant to the banks of river Ganges and entertain themselves When Queen Padmavati, Kunik's consort, came to know of the enjoyments of the brothers, she was extremely jealous She beseeched King Kunik to take Sechanak elephant from princes Halla and Vihalla When Kunik demanded Sechanak from Halla and Vihalla they responded by saying—"If you want the elephant please give us our share of the kingdom" Not heeding to their legitimate demand, Kunik repeatedly asked for the elephant At this the two brothers, afraid of Kunik, fled with their families and the elephant to Vaishali and took refuge with their maternal grandfather King Chetak Kunik sent a message to Chetak asking him to hand over Halla and Vihalla But Chetak refused to do so Kunik sent another message that Chetak should either return the two princes or be prepared for a war Chetak tried to convince Kunik about his just decision but Kunik was not prepared even to listen He straightway launched an attack This was the cause of Mahashilakantak battle

When Chetak realized that Kunik will not stop short of a war, he too called chiefs of eighteen republics with their armies in order to lawfully protect the refugees They all joined Chetak with their armies The two armies came face to face in the battle ground and a terrible war commenced Chetak had taken a vow that he would launch only one arrow a day And that devastating arrow never missed the target On the first day the commander of Kunik's army was his brother prince Kaal He was killed by that one arrow of Chetak and his army retreated This way Chetak killed Kunik's ten brothers in ten days Eleventh day was for the king himself Kunik thought—"Like all my brothers I will also not be able to hold Chetak He will kill me with his single unstoppable arrow" So he announced cease-fire for three days In order to win the war he commenced a three day fast and evoked divine help He sought help of two friendly gods from his past birth and Shakrendra and Chamarendra appeared before him Shakrendra said to Kunik—"Chetak is a devout Jain *shravak*, so I will not kill him However, I will defend you for sure" Accordingly Shakrendra created an impenetrable

diamond-hard armour and Chamarendra created two great war machines called Mahashilakantak and Rath-musal. With the divine help from these two, Kunik's strength increased In fact, Kunik won the Mahashilakantak only due to this divine help, otherwise his victory was in doubt

महाशिलाकण्टक संग्राम का स्वरूप DETAILS OF MAHASHILAKANTAK BATTLE

११. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'महासिलाकंटए संगामे महासिलाकंटए संगामे' !

[उ.] गोयमा ! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति सव्वे से जाणति 'महासिलाए अहं अभिहते महासिलाए अहं अभिहते'; से तेणट्ठेणं गोयमा ! महासिलाकंटए संगामे महासिलाकंटए संगामे।

११. [प्र.] भगवन् ! इस 'महाशिलाकण्टक' सग्राम को महाशिलाकण्टक सग्राम क्यो कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! जब महाशिलाकण्टक सग्राम हो रहा था, तब उस सग्राम मे जो भी घोडा, हाथी, योद्धा या सारथी आदि तृण से, काष्ठ से, पत्ते से या ककर आदि से आहत होते, वे सब ऐसा अनुभव करते थे कि हम महाशिला (के प्रहार) से मारे गये है। (अर्थात्–महाशिला हमारे ऊपर आ पडी है।) हे गौतम ! इस कारण से इस सग्राम को महाशिलाकण्टक सग्राम कहा जाता है।

11. [Q.] *Bhante* ! Why this Mahashilakantak battle is called Mahashilakantak battle ?

[Ans.] Gautam ! When the battle was going on all the horses, elephants, soldiers and charioteers, though hit by straw, wood, leaf or pebble, felt that they were hit by large rocks (*mahashila*) Gautam ! That is why this battle has been called Mahashilakantak battle

१२. [प्र.] महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसतसाहस्सीओ वहियाओ ?

[उ.] गोयमा ! चउरासीतिं जणसतसाहस्सीओ वहियाओ।

१२. [प्र.] भगवन् ! जब महाशिलाकण्टक सग्राम हो रहा था, तब उसमे कितने लाख मनुष्य मारे गये ?

[उ.] गौतम ! महाशिलाकण्टक सग्राम मे चौरासी लाख मनुष्य मारे गये।

12. [Q.] *Bhante* ! How many hundred thousand men were killed in this Mahashilakantak battle ?

[Ans.] Gautam ! Eighty four hundred thousand men were killed in the Mahashilakantak battle.

१३. [प्र.] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा सारुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया ? कहिं उववन्ना ?

[उ.] गोयमा ! ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना।

१३. [प्र.] भगवन् ! शीलरहित यावत् प्रत्याख्यान एव पौषधोपवास से रहित, रोष (आवेश) मे भरे हुए, परिकुपित, युद्ध मे घायल हुए और अनुपशान्त वे युद्ध करने वाले मनुष्य मृत्यु के समय मरकर कहाँ गये, कहाँ उत्पन्न हुए ?

[उ.] गौतम ! ऐसे मनुष्य प्राय नरक और तिर्यचयोनियो मे उत्पन्न हुए है।

13. [Q.] *Bhante* ! Where did these warring men devoid of good conduct and so on up to remorse and fasting, full of bitterness, full of anger, wounded and restless, go after death and get reborn ?

[Ans.] Gautam ! Most of these men got reborn among infernal beings or animals

रथमूसल संग्राम RATH-MUSAL BATTLE

१४. [प्र.] णायमेयं अरहया, सुतमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया रहमुसले सगामे रहमुसले संगामे। रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ?

[उ.] गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था, नव मल्लई नव लेच्छई पराजइत्था।

१४. [प्र.] भगवन् ! अर्हन्त भगवान ने जाना है, इसे प्रत्यक्ष किया है और विशेष रूप से जाना है कि यह रथमूसल सग्राम है। भगवन् ! यह रथमूसल सग्राम जब हो रहा था, तब कौन जीता, कौन हारा ?

[उ.] हे गौतम (वज्जी गण या वश का विदेहपुत्र या) वज्री-इन्द्र और विदेहपुत्र (कूणिक) एव असुरेन्द्र असुरराज चमर जीते और नौ मल्लकी और नौ लिच्छवी (ये अठारह गण) राजा हार गये।

14. [Q.] *Bhante* ! *Arhant Bhagavan* has known about this, heard about this and specially known about this that indeed this is Rath-musal battle *Bhante* ! When Rath-musal battle was going on who won and who lost ?

[Ans.] Gautam ! Vajji Videhaputra (King Kunik of Vajji or Indra, the wielder of thunder, and King Kunik) and Chamar, the king of *Asurs* won Nine Malla chiefs and nine Lichchhavi chiefs, who were the eighteen kings of republics of Kashi and Kaushal countries, lost

१५. तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं., सेसं जहा महासिलाकंटए नवरं भूताणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं ओयाए, पुरतो य से सक्के देविंदे देवराया। एवं तहेव जाव चिट्ठति,



चित्र परिचय-१४

Illustration No. 14

रथ-मूसल संग्राम

महाशिला कटक सग्राम के पश्चात शत्रु सेना के विनाश के लिए शक्रेन्द्र व चमरेन्द्र की सहायता से रथ मूसल सग्राम की रचना की गई।

लोहे का एक अत्यन्त भयानक विशाल रथ बनाया गया। इस रथ म न तो घोडे जुते थ, न कोई सारथि और न ही कोई योद्धा था। सर्वथा अश्व योद्धा मानव रहित इस रथ के पहियो मे तीक्ष्ण मूसल जेसे शस्त्र लग थ, उनसे भयकर स्फुलिग-चिनगारियॉ निकल रही थी। युद्ध भूमि मे दौडता हुआ यह रथ महाकाल की तरह अत्यन्त जन सहार कर रहा था। जिधर निकल जाता उधर ही सैनिको को मारता हुआ युद्ध भूमि को रक्त कीचड से लाल कर देता। उस रथ को रोकने की क्षमता किसी मनुष्य म नही थी, अदृश्य दव शक्ति से यह चारो तरफ महाविनाश करता हुआ दौड रहा था। चेटक के अमोघ बाण भी इस रथ को नही रोक सके। इस कारण वैशाली गणराज्य की सना ध्वस्त हो गई। कूणिक ने वैशाली का विध्वस कर डाला। इस एक ही सग्राम म छियानवे लाख मनुष्य मारे गये।

—शतक ७ उ ९ सूत्र १६ १७

RATH MUSAL BATTLE

After Mahashilakantak battle another battle, Rath Musal battle, was designed with the help of Shakrendra and Chamarendra

A large chariot-like machine was created It neither had horses nor a driver or a warrior On its wheels were fitted pointed mace-like weapons that emitted terrifying sparks Moving with great speed in the battle field, it killed like the messenger of death Whichever way it moved it left the land red and slimy with blood Driven by invisible divine power it could not be stopped by any human effort Even unfaltering arrows of Chetak could not stop it Vaishali and its army both were destroyed by Kunik This war accounted for almost one million human lives

—Shatak 7, lesson-9, Sutra 16 17

मग्गतो य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयसं किढिणपडिरूवगं विउव्वित्ताणं चिट्ठति, एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेति, तं जहा–देविंदे मणुइंदे असुरिंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए तहेव जाव दिसो दिसिं पडिसेहेत्था।

१५. तदनन्तर रथमूसल सग्राम उपस्थित हुआ जानकर कूणिक राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया। इसके बाद का सारा वर्णन महाशिलाकण्टक की तरह यहाँ कहना चाहिए। इतना विशेष है कि यहाँ 'भूतानन्द' नामक हस्तिराज (पदहस्ती) है। यावत् वह कूणिक राजा रथमूसल सग्राम मे उतरा। उसके आगे देवेन्द्र देवराज शक्र है, यावत् पूर्ववत् सारा वर्णन कहना चाहिए। उसके पीछे असुरेन्द्र असुरराज चमर लोह के बने हुए एक महान् किठिन (बाँस-निर्मित तापस पात्र) जैसे कवच की विकुर्वणा करके खडा है। इस प्रकार तीन इन्द्र सग्राम करने के लिए प्रवृत्त हुए है। यथा–देवेन्द्र (शक्र), मनुजेन्द्र (कूणिक) और असुरेन्द्र (चमर)। अब कूणिक केवल एक हाथी से सारी शत्रु-सेना को पराजित करने मे समर्थ है। यावत् पहले कहे अनुसार उसने शत्रु राजाओ (की सेना) को दसो दिशाओ मे भगा दिया।

15. At that time knowing that Rath-musal battle was about to begin, King Kunik summoned his attendants (*kautumbik purush*) and so on as described about Mahashilakantak battle The difference being that the name of the elephant is Bhootanand and so on up to King Kunik joined the Rath-musal battle Ahead of him stood Shakrendra, the king of gods and so on as already described Behind him stood Chamar, the king of *Asurs*, creating an iron armour like a great *Kithin* (hermit-bowl made of bamboo) This way it appeared as if three *Indras* (kings) are ready to fight—king of gods (Shakra), king of humans (Kunik), and king of *Asurs* (Chamar) Now King Kunik became capable of defeating the opposing army just with one elephant and so on up to He put the fear of life in the minds of opposing armies and made them flee in all the ten directions (as already described)

१६. [प्र.] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति 'रहमुसले संगामे रहमुसले संगामे'?

[उ.] गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए असारहिए अणारोहए समुसले महताजणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वतो समंता परिधावित्था; से तेणट्ठेणं जाव रहमुसले संगामे।

१६. [प्र.] भगवन् ! इस 'रथमूसल सग्राम' को रथमूसल सग्राम क्यो कहा जाता है ?

[उ.] गौतम ! जिस समय रथमूसल सग्राम हो रहा था, उस समय अश्वरहित, सारथिरहित और योद्धाओ से रहित एक रथ केवल मूसल सहित, अत्यन्त जनसहार, जनवध, जन-प्रमर्दन और जनप्रलय के समान रक्त का कीचड करता हुआ चारो ओर दौडता था। इसी कारण से उस सग्राम को 'रथमूसल संग्राम' कहा गया है।

16. [Q.] *Bhante* ! Why this Rath-musal battle is called Rath-musal battle ?

[Ans.] Gautam ! When the battle was on, a chariot (*rath*) without horses, charioteers or soldiers but equipped only with a mace (*musal*) was moving all around destroying men, killing men, crushing men and causing havoc by making the ground slimy with human blood Gautam ! That is why this battle has been called Rath-musal battle

१७. [प्र.] रहमुसले णं भंते ! सगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?

[उ.] गोयमा ! छण्णउतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ।

१७. [प्र] भगवन् ! जब रथमूसल सग्राम हो रहा था, तब उसमे कितने लाख मनुष्य मारे गये ?

[उ.] गौतम ! रथमूसल सग्राम मे छियानवे लाख मनुष्य मारे गये।

17. [Q.] *Bhante* ! How many hundred thousand men were killed in this Rath-musal battle ?

[Ans.] Gautam ! Ninety six hundred thousand men were killed in the Rath-musal battle

१८. [प्र.] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव (सु. १३) उववन्ना ?

[उ.] गोयमा ! तत्थ णं दस साहस्सीओ एगाए मच्छियाए कुच्छिंसि उववन्नाओ, एगे देवलोगेसु उववन्ने, एगे सुकुले पच्चायाते, अवसेसा ओसन्नं नरग–तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना।

१८. [प्र] भगवन् ! नि शील (शीलरहित) यावत् वे मनुष्य मृत्यु के समय मरकर कहॉ गये, कहाँ उत्पन्न हुए ?

[उ.] गौतम ! उनमे से दस हजार मनुष्य तो एक मछली के उदर मे उत्पन्न हुए, एक मनुष्य देवलोक मे उत्पन्न हुआ, एक मनुष्य उत्तम कुल (मनुष्यगति) मे उत्पन्न हुआ, और शेष प्राय नरक और तिर्यचयोनियो मे उत्पन्न हुए है। (दोनो युद्धो का विस्तृत वर्णन सचित्र निरयावलिका, अध्ययन १ देखे)

18. [Q.] *Bhante* ! Where did these warring men devoid of good conduct and so on up to go after death and get reborn ?

[Ans.] Gautam ! Of these, ten thousand men were reborn in the womb of a fish, one was reborn in divine realm, one was reborn as a human being and most of the remaining got reborn among infernal beings or animals (for detailed description of the two battles refer to *Illustrated Niryavalika Sutra*, Chapter 1)

शक्र–चमरेन्द्र के सहयोग का हेतु CAUSE OF HELP FROM SHAKRENDRA AND CHAMARENDRA

१९. [प्र.] कम्हा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहज्जं दलइत्था ?

[उ.] गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए, एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहज्जं दलइत्था।

१९. [प्र.] भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र और असुरेन्द्र असुरराज चमर, इन दोनो ने कूणिक राजा को किस कारण से सहायता (युद्ध मे सहयोग) दी ?

[उ] गौतम ! देवेन्द्र देवराज शक्र तो कूणिक राजा का पूर्वसगतिक (पूर्वभव सम्बन्धी–कार्तिक सेठ के भव मे मित्र) था, और असुरेन्द्र असुरकुमार राजा चमर, कूणिक राजा का पर्यायसगतिक (पूरण नामक तापस की अवस्था का साथी तापस) मित्र था। इसीलिए, हे गौतम ! देवेन्द्र देवराज शक्र और असुरेन्द्र असुरराज चमर ने कूणिक राजा को सहायता दी।

19. [Q.] *Bhante* ! Why did Shakrendra and Chamarendra help (assist in the battle) King Kunik ?

[Ans.] Gautam ! Shakrendra was a friend of King Kunik during an earlier birth (a friend during his past birth as merchant Kartik) And Chamarendra, the king of *Asurs* was an associate during an earlier birth (a companion hermit during his past birth as Puran hermit) That is the reason, Gautam ! Shakrendra, the king of gods and Chamarendra, the king of *Asurs* came to the help of King Kunik

***क्या युद्ध करते मरने पर स्वर्ग मिलता है* HEAVEN ON DEATH IN WAR ?**

२०. [प्र. १] बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव परूवेति–एवं खलु बहवे मणुस्सा अन्नतरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भ्वंति। से कहमेथं भंते ! एव ?

[उ.] गोयमा ! जं णं से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव उववत्तारो भवंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छ ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि–

[२] एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं वेसालीए णगरीए वरुणे नामं णागनत्तुए परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते समणोवासाए अभिगतजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति।''

२०. [प्र. १] भगवन् ! बहुत–से लोग परस्पर ऐसा कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है कि–अनेक प्रकार के छोटे–बडे सग्रामो मे से किसी भी सग्राम मे सम्मुख रहकर लडते हुए आहत हुए बहुत–से मनुष्य मृत्यु के समय मरकर किसी भी देवलोक मे देवरूप मे उत्पन्न होते है। भगवन् ! ऐसा कैसे हो सकता है ?

[उ.] गौतम ! बहुत–से मनुष्य, जो इस प्रकार कहते है, यावत् प्ररूपणा करते है कि सग्राम मे मारे गये मनुष्य, देवलोको मे उत्पन्न होते है, ऐसा कहने वाले मिथ्या कहते है। हे गौतम ! मै इस प्रकार कहता हूँ यावत् प्ररूपणा करता हूँ–

[२] गौतम ! उस काल और उस समय मे वैशाली नाम की नगरी थी। उस वैशाली नगरी मे 'वरुण' नामक नागनप्तृक (नाग नामक गृहस्थ का नाती = दौहित्र या पौत्र) रहता था। वह धनाढ्य यावत् किसी के आगे न दबने वाला) व्यक्ति था। वह श्रमणोपासक था, और जीवाजीवादि तत्त्वो का ज्ञाता था, वह आहारादि द्वारा श्रमणनिर्ग्रन्थो को प्रतिलाभित करता हुआ तथा निरन्तर छठ-छठ की (बेले की) तपस्या द्वारा अपनी आत्मा को भावित करता हुआ विचरण करता था।

20. [Q. 1] *Bhante* ! Many people say and so on up to propagate that—people fighting face to face in some big or small war, and getting injured, when at the time of death abandon this body they are reborn as gods in any of the divine realms. *Bhante* ! Is it possible ?

[Ans.] Gautam ! Many people say and so on up to propagate that—people fighting in war are reborn in divine realms Those who say thus are wrong Gautam ! I say and so on up to propagate that—

[2] Gautam ! During that period of time there was a city named Vaishali In that city lived Varun, the grandson of householder Naag (Naag-naptrik) He was affluent and so on up to could not be subdued He was a *shramanopasak* (devotee of *shramans*) and had complete knowledge of fundamentals including the living and the non-living He lived enkindling his soul by serving *Shraman-nirgranths* (Jain ascetics) and observing a series of two day fasts

[३] तए णं से वरुणे णागनत्तुए अन्नया कयाई रायाभिओगेणं गणाभिओगेण बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए, अट्ठमभत्त अणुवट्टेति, अट्ठमभत्तं अणुवट्टेत्ता कोडुं बियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चातुग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेह हय–गय–रहपवर जाव सन्नाहेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चप्पिणह।

[४] तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठावेति, हय–गय–रह जाव सन्नाहेति, सन्नाहित्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए जाव पच्चप्पिणंति।

[३] एक बार राजा के आदेश से, गण के अभियोग से तथा बल (बलवान्-व्यक्ति) के अभियोग से वरुण नागनप्तृक को रथमूसल सग्राम मे जाने की आज्ञा दी गई। तब उसने षष्ठभक्त को बढाकर अष्टभक्त तप कर लिया। तेले की तपस्या करके उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रियो ! चार घण्टो वाला अश्वरथ, सामग्रीयुक्त तैयार करके शीघ्र उपस्थित करो। साथ ही अश्व, हाथी, रथ और योद्धाओ से युक्त चतुरगिणी सेना को सुसज्जित करो, यह सब सुसज्जित करके मेरी आज्ञा मुझे वापस सौपो।

[४] तदनन्तर उन कौटुम्बिक पुरुषो ने उसकी आज्ञा स्वीकार करके यथाशीघ्र छत्रसहित एव ध्वजासहित चार घण्टाओ वाला अश्वरथ, तैयार करके उपस्थित किया। साथ ही घोडे, हाथी, रथ एव

योद्धाओ से युक्त चतुरगिणी सेना को यावत् सुसज्जित किया। और ऐसा करके यावत् वरुण नागनत्तुआ को उसकी आज्ञा वापस सौपी।

[3] Once Varun Naag-naptrik was ordered by the king, the state and the administration, to go to Rath-musal battle Then he extended his two day fast to three days After concluding this fast he called his attendants and said—"Beloved of gods ! Bring a four-bell chariot drawn by horses and duly equipped and get the four pronged army comprising of cavalry, elephant brigade, chariot brigade and infantry, ready to march After doing all this report back to me

[4] His attendants accepted his order and soon prepared a fully equipped and horse-drawn four-bell chariot and brought it to him They also got the four pronged army comprising of cavalry, elephant brigade, chariot brigade and infantry, ready to march After doing all this they reported back to him

[५] तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति जहा कूणिओ (सु. ८) जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिते सन्नद्धबद्ध० सकोरेटमल्लदामेणं जाव धरिज्जमाणेणं अणेगगणनायग जाव दूयसंधिवाल० सद्धिं संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चातुघंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चातुघंटं आसरहं दुरूहइ, दुरूहित्ता हय–गय–रह जाव संपरिवुडे महता भडचडगर० जाव परिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसल सगामं ओयाए।

[५] तत्पश्चात् वह वरुण नागनप्तृक, जहाँ स्नानगृह था, वहाँ आया। इसके पश्चात् यावत् कौतुक और मगलरूप प्रायश्चित्त (विघ्ननाशक) किया, सर्व अलकारो से विभूषित हुआ, कवच पहना, कोरटपुष्पो की मालाओ से युक्त छत्र धारण किया, इत्यादि सारा वर्णन कूणिक राजा की तरह कहना चाहिए। फिर अनेक गणनायको, दूतो और सन्धिपालो के साथ परिवृत होकर बाहर की उपस्थानशाला मे आया और सुसज्जित चातुर्घण्ट अश्वरथ पर आरूढ हुआ। रथ पर आरूढ होकर अश्व, गज, रथ और योद्धाओ से युक्त चतुरगिणी सेना के साथ, यावत् महान् सुभटो के समूह से परिवृत होकर रथमूसल सग्राम मे आया।

[5] After that Varun Naag-naptrik approached and entered his bathroom . and so on up to performed various propitious rites for protection against evil eye and other bad omens He then embellished his body with ornaments He put on his armour and so on up to umbrella with white Korant flowers (as described about King Kunik) Then he came to the outer courtyard surrounded by many chieftains, ambassadors and diplomats and boarded the fully equipped and horse-

drawn four-bell chariot Surrounded by his four pronged army comprising of cavalry, elephant brigade, chariot brigade and infantry and accompanied by a large group of great warriors, he arrived at the battle ground to join Rath-musal battle

[६] तए णं से वरुणे णागनत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूव अभिग्गहं अभिगिण्हइ–कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणति से पडिहणित्तए अवसेसे नो कप्पतीति। अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता रहमुसलं संगामं संगामेति।

[७] तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं सगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए सरित्तए सरिसव्वए सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए।

[८] तए णं से पुरिसे वरणं णागणत्तुयं एवं वयासी–पहण भो ! वरुणा ! णागणत्तुया ! पहण भो ! वरुणा ! णागणत्तुया ! तए णं से वरुणे णागणत्तुए तं पुरिसं एवं वदासि–नो खलु मे कप्पति देवाणुप्पिया ! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव पुव्वं पहणाहि।

[६] उस समय रथमूसल सग्राम मे प्रवृत्त होने के साथ ही वरुण नागनप्तृक ने इस प्रकार का अभिग्रह (नियम) किया–मेरे लिए यही कल्प (उचित नियम) है कि रथमूसल सग्राम मे युद्ध करते हुए जो मुझ पर पहले प्रहार करेगा, उसे ही मुझे मारना है, (अन्य) व्यक्तियो को नही। इस प्रकार यह अभिग्रह करके वह रथमूसल सग्राम मे प्रवृत्त हो गया।

[७] उसी समय रथमूसल सग्राम मे जूझते हुए वरुण नागनप्तृक के रथ के सामने प्रतिरथी के रूप मे एक पुरुष आया, जो उसी के सदृश, उसी के समान त्वचा वाला था, उसी के समान उम्र का और उसी के समान अस्त्र-शस्त्रादि उपकरणो से युक्त था।

[८] तब उस पुरुष ने वरुण नागनप्तृक को इस प्रकार ललकारते हुए कहा–"हे वरुण नागनत्तुआ ! मुझ पर प्रहार कर, अरे, वरुण नागनत्तुआ ! मुझ पर वार कर !" इस पर वरुण नागनत्तुआ ने उस पुरुष से कहा–"हे देवानुप्रिय ! जो मुझ पर प्रहार न करे, उस पर पहले प्रहार करने का मेरा नियम नही है। इसलिए तुम (चाहो तो) पहले मुझ पर प्रहार करो।"

[6] At that time, before joining the Rath-musal battle, Varun Naag-naptrik took a vow that during the Rath-musal battle he would only kill the person who first hits him and none else After taking this resolve he joined the Rath-musal battle

[7] While fighting in the Rath-musal battle another charioteer, who was his look-alike with similar skin and similarly equipped, confronted Varun Naag-naptrik

[8] That warrior challenged Varun Naag-naptrik with these words—"O Varun Naag-naptrik ! Hit me ! O Varun Naag-naptrik ! Hit me !"

Varun Naag-naptrik responded—"Beloved of gods ! As a rule I do not hit a person who has not already hit me Therefore, hit me first if you want a fight."

[९] तए णं से पुरिसे वरुणेणं णागणत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसति, परामुसित्ता उसुं परामुसति, उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठाणं ठिच्चा आयतकण्णायतं उसुं करेति, आयतकण्णायतं उसुं करेत्ता वरुणं णागणत्तयं गाढप्पहारीकरेति।

[१०] तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसति, धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसति, उसुं परामुसित्ता आयतकण्णायतं उसुं करेति, आयतकण्णायतं उसुं करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेति।

[९] तदनन्तर वरुण नागनत्तुआ के द्वारा ऐसा कहने पर उस पुरुष ने शीघ्र ही क्रोध से लाल-पीला होकर यावत् दाँत पीसते हुए अपना धनुष उठाया। फिर बाण उठाया। फिर धनुष पर यथास्थान बाण चढाया। फिर अमुक आसन से अमुक स्थान पर स्थित होकर धनुष को कान तक खीचा। ऐसा करके उसने वरुण नागनत्तुआ पर गाढ प्रहार किया।

[१०] इसके पश्चात् उस पुरुष द्वारा किये गये गाढ प्रहार से घायल हुए वरुण नागनत्तुआ ने शीघ्र कुपित होकर धनुष उठाया। फिर उस पर बाण चढाया और उस पुरुष पर छोडा। जैसे एक ही जोरदार चोट से पत्थर के टुकडे-टुकडे हो जाते है, उसी प्रकार वरुण नागनप्तृक ने एक ही गाढ प्रहार से उस पुरुष को जीवन से रहित कर दिया।

[9] When Varun Naag-naptrik said this, that person became red with anger and gnashing his teeth he lifted his bow He then fitted an arrow properly Doing this, he stood at a specific spot in a specific posture and drew the bow-string up to his ear At last he launched the arrow at Varun Naag-naptrik with great force

[10] Wounded by this blow from the adversary Varun Naag-naptrik got enraged He lifted his bow, set an arrow and launched at his attacker Like a strong hammer-blow shatters a stone, in the same way Varun Naag-naptrik killed his adversary with just one forceful strike

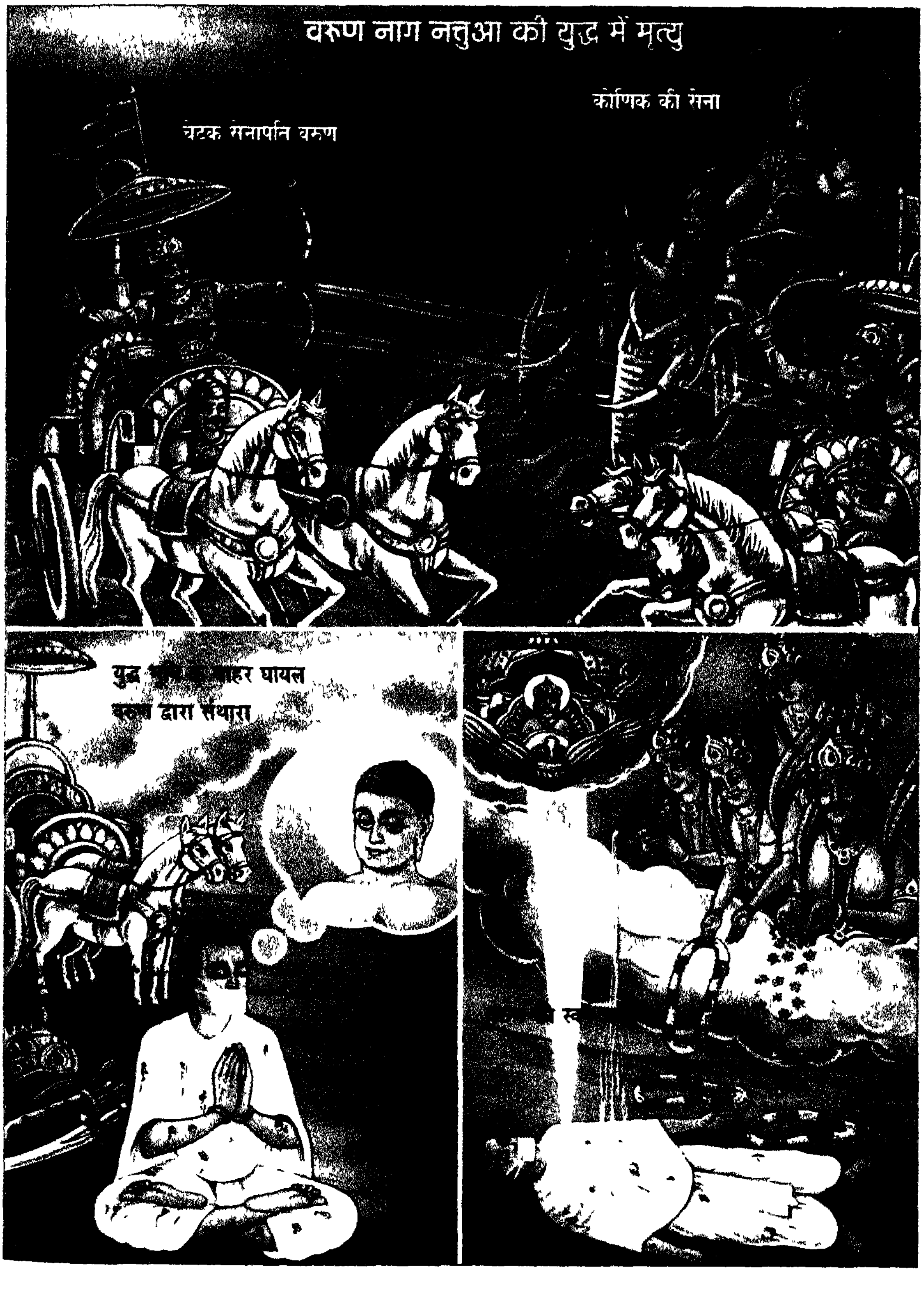
[११] तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकते समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हति, तुरए निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, २ त्ता रहमुसलातो संगामातो पडिनिक्खमति, रहमुसलाओ संगामातो पडिणिक्खमेत्ता एगंतमंतं अवक्कमति, एगंतमंतं अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हति, निगिण्हित्ता रहं ठवेति, २ त्ता रहातो पच्चोरुहति, रहातो पच्चोरुहित्ता रहाओ तुरए मोएति, २ तुरए विसज्जेति, विसज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरेति, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहति, दब्भसं० दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल जाव कट्टु एवं वयासी-

नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं। नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगतं इहगते, पासउ मे से भगवं तत्थगते; जाव वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–पुव्विं पि णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियं थूलए पाणातिवाते पच्चक्खाए जावज्जीवाए एवं जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाते जावज्जीवाए, इयाणिं पि णं अहं तस्सेव भगवतो महावीरस्स अंतियं सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, एवं जहा खंदओ (स० २, उ० १, सु० ५०) जाव एतं पि णं चरिमेहिं उस्साह–णिस्सासेहिं 'वोसिरिस्सामि' त्ति कट्टु सन्नाहपट्टं मुयति, सन्नाहपट्टं मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेति, सल्लुद्धरणं करेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगते।

[११] तत्पश्चात् उस पुरुष के गाढ प्रहार से घायल हुआ वरुण नागनप्तृक अशक्त, अबल, अवीर्य, पुरुषार्थ एव पराक्रम से रहित हो गया। अत 'अब मेरा शरीर टिक नही सकेगा' ऐसा समझकर उसने घोडो को रोका, घोडो को रोककर रथ को वापस फिराया और रथमूसल सग्राम-स्थल से बाहर निकल गया। सग्राम-स्थल से बाहर निकलकर एकान्त स्थान मे आकर रथ को खडा किया। फिर रथ से नीचे उतरकर उसने घोडो को छोडकर विसर्जित कर दिया। फिर दर्भ (डाभ) का सथारा (बिछौना) बिछाया और पूर्व दिशा की ओर मुँह करके दर्भ के सस्तारक पर पर्यंकासन से बैठा। और दोनो हाथ जोडकर यावत् इस प्रकार कहा–

अरिहन्त भगवन्तो को, यावत् जो सिद्धगति को प्राप्त हुए है, नमस्कार हो। मेरे धर्मगुरु धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीर स्वामी को नमस्कार हो, जो धर्म की आदि करने वाले यावत् सिद्धगति प्राप्त करने के इच्छुक है। यहाँ रहा हुआ मै वहाँ रहे हुए भगवान को वन्दन करता हूँ। वहाँ रहे हुए भगवान मुझे देखे। इत्यादि कहकर उसने वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार कहा–पहले मैने श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान किया था, यावत् स्थूल परिग्रह का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान किया था, किन्तु अब मै उन्ही अरिहन्त भगवान महावीर की साक्षी से सर्व प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान करता हूँ। इस प्रकार स्कन्दक की तरह (अठारह ही पापस्थानो का सर्वथाप्रत्याख्यान कर दिया।) फिर इस शरीर का भी अन्तिम श्वासोच्छ्वास के साथ व्युत्सर्ग (त्याग) करता हूँ, यो कहकर उसने **सन्नाहपट** (कवच) खोल दिया। कवच खोलकर लगे हुए बाण को बाहर खीचा। बाण शरीर से बाहर निकालकर उसने आलोचना की, प्रतिक्रमण किया, और समाधियुक्त होकर मरण प्राप्त किया।

[11] Wounded by the strong blow by that adversary, Varun Naagnaptrık lost hıs strength, power, potency, wıll and valour Realızıng that he wıll not last long, he stopped the horses turned the charıot and left the battle ground He proceeded to a secluded spot, stopped the charıot, alıghted from the charıot and released the horses Now he made a bed of hay and sat on ıt ın *Paryank* posture facıng east Joınıng hıs palms he uttered—


वरुण नाग नत्तुआ की युद्ध में मृत्यु
चेटक सेनापति वरुण
कोणिक की सेना
युद्ध ... बाहर घायल
वरुण द्वारा संथारा

चित्र परिचय-१५

Illustration No. 15

वरुण नागनत्तुआ की युद्ध में मृत्यु व स्वर्ग प्राप्ति

नाग नामक प्रसिद्ध गृहस्थ का नाती (पोत्र) वरुण नामक वीर योद्धा जिनधर्मानुयायी श्रमणोपासक था। वह महाराज चेटक का प्रधान सेनापति था। कूणिक के साथ जब रथ मूसलसग्राम होने लगा तो वरुण सेनापति सेना लेकर कूणिक की सेना के साथ घोर युद्ध करने लगा।

वरुण का नियम था- जो युद्ध मे मुझ पर पहले प्रहार करेगा मै केवल उसी पर प्रहार करूँगा। कूणिक सेना का एक सैनिक वरुण का हम शक्ल था। उसने आकर वरुण पर अचानक प्रहार किया। तीव्र प्रहार से वरुण की छाती मे गहरा घाव लगा। उसने भी शत्रु सैनिक पर प्रहार कर मार डाला।

गहरे प्रहार से घायल वरुण जब युद्ध करने मे असमर्थ हो गया तो रणभूमि से बाहर एकान्त स्थान मे गया। रथ से नीचे उतरा, घोडो को छोड दिया। धनुष कवच आदि शस्त्र सब एक ओर रखकर शरीर से बाण निकाला। एक स्वच्छ भूमि पर आसन बिछाया। पूर्व दिशा की तरफ मुख करके अपने धर्म गुरु श्रमण भगवान महावीर को नमस्कार किया और अपने व्रत, प्रत्याख्यान की आलोचना प्रतिक्रमण करते हुए समाधि पूर्ण अवस्था मे प्राण त्यागे।

निकटवर्ती वाणव्यन्तर देवो ने वरुण पर सुगन्धित जल पुष्प आदि की वृष्टि की।

DEATH OF VARUN NAAG NATTUA IN WAR

The valourous warrior Varun the grandson of renowned citizen Naag was a devout Jain He was the commander-in chief of king Chetak When the Rath musal war commenced, Commander Varun engaged Kunik in a fierce battle

Varun had taken a vow that in a battle he would fight only with the individual who hit him first A soldier from Kunik's army who was Varun's look-alike, suddenly hit Varun and deeply wounded him on the chest Varun retaliated and killed the attacker

The fatal wound made it impossible for him to continue fighting and he retreated to a lonely place He got down from the chariot and released the horses He then put his bow and armour aside and removed the arrow from his body Spreading a mattress on a clean spot, he sat down facing east He paid homage to Shraman Bhagavan Mahavir and did critical review of his vows and other religious conduct He then commenced meditation and died

Interstitial gods in the vicinity showered perfumed water and flowers on Varun

—*Shatak 7 lesson-9, Sutra-20*

"I bow and convey my reverence to the worthy ones (*Arhantanam*), and so on up to who have attained the state of ultimate perfection, known as *siddha gati* I bow and pay homage to my religious teacher and preceptor Shraman Bhagavan Mahavir, the founder of religion and so on up to the aspirant of the state of ultimate perfection From here I pay homage to *Bhagavan* seated there May *Bhagavan* see me from there" Uttering these words he paid homage and obeisance After that he uttered further—"Earlier, I had renounced, for life, any harming of beings and so on up to possessions in general (gross) before Shraman Bhagavan Mahavir But now, I once again renounce, for life, any harming of beings (both gross and subtle) before Bhagavan Mahavir" This way, like Skandak (he renounced all the eighteen places of sin). Then uttering—"I dissociate myself from this body till my last breath," he removed his armour Then he pulled out the arrow from his body He finally performed critical review (*pratikraman*) and passed away after attaining the state of total tranquillity of mind

[१२] तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलमं संगामं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले जाव अधारणिज्जमिति कट्टु वरुणं नागनत्तुयं रहमुसलातो सगामातो पडिनिक्खममाणं पासति, पासित्ता तुरए निगिण्हति, तुरए निगिण्हित्ता जहा वरुणे नागनत्तुए जाव तुरए विसज्जेति, विसज्जित्ता दब्भसंथारगं दुरुहति, दब्भसंथारंग दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी–जाइं णं भंते ! मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वताइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणपोसहोववासाइ ताइं ण ममं पि भवतु त्ति कट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ, सन्नाहपट्टं मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेति, सल्लुद्धरणं करेत्ता आणुपुव्वीए कालगते।

[१२] उस वरुण नागनत्तुआ का एक प्रिय बालमित्र भी रथमूसल सग्राम मे युद्ध कर रहा था। वह भी एक पुरुष द्वारा प्रबल प्रहार करने से घायल हो गया। इससे अशक्त, अबल, यावत् पुरुषार्थ–पराक्रम से रहित बने हुए उसने सोचा–अब मेरा शरीर टिक नही सकेगा। जब उसने वरुण नागनत्तुआ को रथमूसलसग्राम–स्थल से बाहर निकालते हुए देखा, तो वह भी अपने रथ को वापिस फिरा कर रथमूसलसग्राम से बाहर निकला, घोडो को रोका और जहाँ वरुण नागनत्तुआ ने घोडो को रथ से खोलकर विसर्जित किया था, वहाँ उसने भी घोडो को विसर्जित कर दिया। फिर दर्भ के सस्तारक को बिछाकर उस पर बैठा। दर्भसंस्तारक पर बैठकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके यावत् दोनो हाथ जोडकर यो बोला–'भगवन् ! मेरे प्रिय बालमित्र वरुण नागनप्तृक के जो शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान और पौषधोपवास है, वे सब मेरे भी हो', इस प्रकार कहकर उसने कवच खोला। कवच खोलकर शरीर मे लगे हुए बाण को बाहर निकाला। इस प्रकार करके वह भी क्रमश· समाधियुक्त होकर कालधर्म को प्राप्त हुआ।

[12] A dear childhood friend of Varun Naag-naptrik was also fighting in the Rath-musal battle He also got wounded by a strong strike from an adversary He lost his strength, power, potency, will and valour He too realized that he will not last long. When he saw Varun Naag-naptrik leaving the Rath-musal battle, he also turned the chariot and left the battle ground. He proceeded to the spot where Varun Naag-naptrik had released the horses and stopped his chariot and released the horses Now he made a bed of hay and sat on it in *Paryank* posture facing east Joining his palms he uttered—"*Bhante* ! Like my dear friend Varun Naag-naptrik, I too accept the same vows of conduct, ascetic-discipline, renunciation, critical review and fasting He removed his armour and pulled out the arrow from his body. and so on up to passed away after attaining the state of total tranquillity of mind.

[१३] तए णं तं वरुणं नागणत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहितेहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए, दिव्वे य गीयगंधव्वनिनादे कते यावि होत्था।

[१४] "तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्वं देविड्ढं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेति–एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा जाव उववत्तारो भवंति।"

[१३] तदनन्तर उस वरुण नागनत्तुआ को कालधर्म प्राप्त हुआ जानकर निकटवर्ती वाणव्यन्तर देवो ने उस पर सुगन्धित जल की वृष्टि की, पाँच वर्ण के फूल बरसाए और दिव्य गीत एव गन्धर्व-निनाद भी किया।

[१४] "तब से उस वरुण नागनत्तुआ की उस दिव्य देव ऋद्धि, दिव्य देव द्युति और दिव्य देव-प्रभाव को सुनकर और जानकर बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार कहने लगे, यावत् प्ररूपणा करने लगे कि-'देवानुप्रियो ! जो सग्राम करते हुए बहुत से मनुष्य मरते है, यावत् वे देवलोको मे उत्पन्न होते है।"

[13] Knowing that Varun Naag-naptrik had breathed his last, *Vaanavyantar* gods residing nearby sprinkled perfumed water and five coloured flowers on him. They also sang divine songs and produced sound from divine musical instruments

[14] Then having seen the divine opulence, radiance and influence of Varun Naag-naptrik, many people started saying. and so on up to propagating that—"Beloved of gods ! Many people die fighting in some war.. and so on up to. they are reborn as gods in any of the divine realms "

२१. [प्र.] वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गये ? कहिं उववन्ने ?

[उ.] **गोयमा ! सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।**

२१. [प्र.] भगवन् ! वरुण नागनत्तुआ मृत्यु के समय मे कालधर्म पाकर कहाँ गया, कहाँ उत्पन्न हुआ ?

[उ.] गौतम ! वह सौधर्मकल्प मे अरुणाभ नामक विमान मे देवरूप मे उत्पन्न हुआ है। उस देवलोक मे कतिपय देवो की चार पल्योपम की स्थिति (आयु) कही है। अत वहाँ वरुण-देव की स्थिति भी चार पल्योपम की है।

21. [Q.] *Bhante* ! After leaving this body at the time of death where did Varun Naag-naptrik go Where was he reborn ?

[Ans.] Gautam ! He has taken rebirth in Arunabh celestial vehicle in Saudharma Kalp In that divine realm (*Kalp*) the life-span of some gods is said to be four *Palyopam* Thus the life-span of Varun god is four *Palyopam*

२२. [प्र.] **से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं कहिं उववज्जिहिति?**

[उ.] **जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति।**

२३. [प्र.] **वरुणस्स णं भंते ! णागणत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गते ? कहिं उववन्ने ?**

[उ.] **गोयमा ! सुकुले पच्चायाते।**

२२. [प्र.] भगवन् ! वह वरुण देव उस देवलोक से आयु-क्षय होने पर, भव-क्षय होने पर तथा स्थिति-क्षय होने पर कहाँ जायेगा, कहाँ उत्पन्न होगा ?

[उ.] गौतम ! वह महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध होगा, यावत् सभी दु खो का अन्त करेगा।

२३. [प्र.] भगवन् ! वरुण नागनत्तुआ का प्रिय बालमित्र काल के अवसर पर कालधर्म पाकर कहाँ गया ? कहाँ उत्पन्न हुआ ?

[उ.] गौतम ! वह मनुष्यलोक मे अच्छे कुल मे उत्पन्न हुआ है।

22. [Q.] *Bhante* ! After concluding his life-span (*ayu-kshaya*), birth or the *karmas* causing specific birth (*bhava-kshaya*), and the realm-specific state (*sthiti-kshaya*), where will Varun god go descending from the realm of gods (*dev-lok*) ? Where will he reincarnate ?

[Ans.] Gautam ! He will reincarnate in Mahavideh area (a mythical area) and so on up to become perfect (*Siddha*). and so on up to . and end all miseries

23. [Q.] *Bhante* ! After leaving this body at the time of death where did Varun Naag-naptrik's dear childhood friend go Where was he reborn ?

[Ans.] He has taken rebirth in a noble family in the land of humans

२४. [प्र.] से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

[उ.] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ सत्तम सए : नवमो उद्देसो समत्तो ॥

२४. [प्र.] भगवन् ! वह (वरुण का बालमित्र) वहाँ से (आयु आदि का क्षय होने पर) काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

[उ.] गौतम ! वह भी महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध होगा, यावत् सर्वदु खो का अन्त करेगा।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', यो कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरने लगे।

24. [Q.] *Bhante* ! After concluding his life-span and so on up to where will he (Varun's friend) go ? Where will he reincarnate ?

[Ans.] Gautam ! He will also reincarnate in Mahavideh area and so on up to become perfect (*Siddha*) and so on up to and end all miseries

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन निष्कर्ष–रथमूसल सग्राम मे ९६ लाख मनुष्य मारे गये। उनमे से एक वरुण नागनत्तुआ देवलोक मे गया और उसका बालमित्र मनुष्यगति मे गया, शेष सभी प्राय नरक या तिर्यचगति मे उत्पन्न हुए।

॥ सप्तम शतक · नवम उद्देशक समाप्त ॥

Elaboration—In the Rath-musal battle 9 6 million people were killed Of these only one (Varun) was reborn in divine realm, one (Varun's friend) in the land of humans and most of the remaining were reborn as infernal beings or animals

● END OF THE NINTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

सप्तम शतक : दशम उद्देशक
SEVENTH SHATAK (Chapter Seven) : TENTH LESSON

अन्ययूथिक ANYAYUTHIK (HERETICS)

कालोदायी की चर्चा और प्रव्रज्या DISCUSSIONS AND INITIATION OF KALODAYI

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था। वण्णओ। गुणसिलए चेइए। वण्णओ। जाव पुढविसिलापट्टए।

२. तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति; तं जहा–कालोदाई सेलोदाई सेवालोदाई उदए णामुदए नम्मुदए अन्नवालए सेलवालए संखवालए सुहत्थी गाहावई।

१. उस काल और उस समय मे राजगृह नामक नगर था। उसका वर्णन करना चाहिए। वहाँ गुणशीलक नामक चैत्य था। यावत् (एक) पृथ्वीशिलापट्टक था।

२. उस गुणशीलक चैत्य के पास थोडी दूर पर बहुत से अन्यतीर्थी रहते थे। यथा–कालोदायी, शैलोदायी, शैवालोदायी, उदय, नामोदय, नर्मोदय, अन्यपालक, शैलपालक, शखपालक और सुहस्ती गृहपति।

1. During that period of time there was a city called Rajagriha. Description (as before) There was a *Chaitya* called Gunasheelak . and so on up to There was a slab of stone .

2. A little distance away from that Gunasheelak Chaitya lived many heretics (*anyatirthi*)—Kalodayi, Shailodayi, Shaivalodayi, Udaya, Naamodaya, Narmodaya, Anyapaalak, Shail-paalak, Shankh-paalak, and Suhasti householder

३. तए णं तेसिं अन्नउत्थियाणं अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविट्ठाणं सन्निसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–

''एवं खलु समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा–धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं। तत्थ णं समणे णायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, तं०–धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकायं पोग्गलत्थिकायं। एगं च समणे णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पन्नवेति। तत्थ णं समणे णायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पन्नवेति, तं जहा–धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवत्थिकायं। एगं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं पन्नवेति। से कहमे तं मन्ने एवं ?

३. तत्पश्चात् किसी समय वे सब अन्यतीर्थिक एक स्थान पर आये, एकत्रित हुए और सुखपूर्वक भलीभाँति बैठे। फिर उनमे परस्पर इस प्रकार का वार्त्तालाप प्रारम्भ हुआ–

'ऐसा (सुना) है कि श्रमण ज्ञातपुत्र पाँच अस्तिकायो का निरूपण करते है, यथा–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय। इनमे से चार अस्तिकायों को श्रमण ज्ञातपुत्र 'अजीव–काय' बताते है। जैसे कि–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और पुद्‌गलास्तिकाय। एक जीवास्तिकाय को श्रमण ज्ञातपुत्र 'अरूपी' और जीवकाय बतलाते है। उन पाँच अस्तिकायो मे से चार अस्तिकायो को श्रमण ज्ञातपुत्र अरूपीकाय बतलाते है। जैसे कि–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय। केवल एक पुद्‌गलास्तिकाय को ही श्रमण ज्ञातपुत्र रूपीकाय और अजीवकाय कहते है। उनकी यह बात कैसे मानी जाये ?

3. One day all these heretics came and sat comfortably together at one place After that they deliberated among themselves—

"It is said that Shraman Jnataputra (Bhagavan Mahavir) describes five *Astikaaya* (existent conglamorative ontological categories or entities)—*Dharmastikaaya* (motion entity), *Adharmastikaaya* (rest entity), *Akashastikaaya* (space entity), *Pudgalastikaaya* (matter entity), and *Jivastikaaya* (life entity) Of these, Shraman Jnataputra classifies four *Astikaayas* as non-living entities (*ajiva kaaya*)—*Dharmastikaaya* (motion entity), *Adharmastikaaya* (rest entity), *Akashastikaaya* (space entity) and *Pudgalastikaaya* (matter entity) According to Shraman Jnataputra, *Jivastikaaya* (life entity) is the only living entity (*jiva kaaya*) and it is formless (*arupi*) Of these five *Astikaayas* four are formless according to Shraman Jnataputra—*Dharmastikaaya* (motion entity), *Adharmastikaaya* (rest entity), *Akashastikaaya* (space entity) and *Jivastikaaya* (life entity) Only *Pudgalastikaaya* (matter entity) is with form (*rupi*) and non-living entity (*ajiva kaaya*) according to Shraman Jnataputra How to accept his proposition ?

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव गुणसिलए समोसढे जाव परिसा पडिगया।

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइ णामं अणगारे गोतमगोत्ते णं जहा बिइयसते नियंठुद्देसए (श० २, उ० ५, सू० २१–२३) जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त–पाणं पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसंभंते जाव रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीइवयति।

४. उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर गुणशीलक चैत्य मे पधारे, वहाँ उनका समवसरण लगा। परिषद् (धर्मोपदेश सुनकर) वापस चली गई।

५. उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ अन्तेवासी गौतमगोत्रीय इन्द्रभूति नामक अनगार, दूसरे शतक के निर्ग्रन्थ उद्देशक मे कहे अनुसार भिक्षाचरी के लिए पर्यटन करते हुए यथापर्याप्त आहार–पानी ग्रहण करके राजगृह नगर से यावत् त्वरारहित, चपलतारहित, सम्भ्रान्ततारहित, यावत् ईर्यासमिति का शोधन करते–करते अन्यतीर्थिको के पास से होकर निकले।

4. During that period of time Bhagavan Mahavir arrived at Gunasheelak Chaitya and a congregation took place. People came out. *Bhagavan* gave his sermon. People dispersed

5. During that period of time ascetic Indrabhuti Gautam, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, moved about to seek alms and while returning after collecting available alms and moving without any haste, hurry and eagerness, following the code of care of movement (*irya samiti*), he passed the said heretics

६. [१] तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासंति, पासेत्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्नमन्नं सद्दावेत्ता एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा, अयं च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेणं वीतीवयति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमट्ठं पुच्छित्तए" त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी–

एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा–धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं, तं चेवे रूविकायं अजीवकायं पण्णवेति, से कहमेयं भंते ! गोयमा ! एवं ?

६. [१] तत्पश्चात् उन अन्यतीर्थिको ने भगवान गौतम को थोडी दूर से जाते हुए देखा। देखकर उन्होने एक–दूसरे को बुलाया। बुलाकर एक–दूसरे से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियो ! बात ऐसी है कि पचास्तिकाय सम्बन्धी बात हमारे लिए अप्रकट–अज्ञात है। (सर्वथा नवीन है) यह (इन्द्रभूति) गौतम हमसे थोडी ही दूर पर जा रहे है। इसलिए हे देवानुप्रियो ! हमारे लिए गौतम से यह अर्थ पूछना श्रेयस्कर है, ऐसा विचार करके उन्होने परस्पर (एक–दूसरे से) इस सम्बन्ध मे परामर्श किया। परामर्श करके जहाँ भगवान गौतम थे, वहाँ उनके पास आये। पास आकर उन्होने भगवान गौतम से इस प्रकार पूछा–

हे गौतम ! तुम्हारे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्र पच अस्तिकाय की प्ररूपणा करते है। जैसे कि–धर्मास्तिकाय यावत् आकाशास्तिकाय। यावत् 'एक पुद्गलास्तिकाय को ही श्रमण ज्ञातपुत्र रूपीकाय और अजीवकाय कहते है', यहाँ तक (पहले की हुई) अपनी सारी चर्चा उन्होने गौतम से कही। फिर पूछा–'हे भदन्त गौतम ! यह बात ऐसे कैसे है ?'

6. [1] When those heretics saw Bhagavan Gautam passing nearby they called each other and said—"Beloved of gods ! We are ignorant on the subject of *Astikaaya* and that (Indrabhuti) Gautam is passing nearby Therefore, Beloved of gods ! It would be good for us to ask Gautam about this " They consulted among themselves about this idea and approached Gautam. Coming near him they asked—

"O Gautam ! Your religious teacher and preceptor Shraman Jnataputra describes five *Astikaaya* (existent conglamorative ontological categories or entities)—*Dharmastikaaya* (motion entity) . and so on up to... *Akashastikaaya* (space entity).. and so on up to Only *Pudgalastikaaya* (matter entity) is with form (*rupi*) and non-living entity (*ajiva kaaya*) according to Shraman Jnataputra " They told all about their aforesaid discussions up to this point and then asked—"O *Bhadant* Gautam ! How is it so ?"

[२] तए णं से भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–"नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं 'नत्थि' त्ति वयामो, नत्थिभावं 'अत्थि' त्ति वयामो। अम्हे ण देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं 'अत्थी' ति वयामो, सव्वं नत्थिभावं 'नत्थी' ति वयामो। तं चेयसा खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुविक्खह" त्ति कट्टु ते अन्नउत्थिए एवं वयति। एवं वइत्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे एवं जहा नियंठुद्देसए (श० २, उ० ५, सू० २५ [१]) जाव भत्त–पाणं पडिदंसेति, भत्त–पाण पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव पज्जुवासति।

[२] तब भगवान गौतम ने उन अन्यतीर्थिको से इस प्रकार कहा–'हे देवानुप्रियो ! हम 'अस्तिभाव' (विद्यमान) को 'नास्ति' (नही) नही कहते, इसी प्रकार 'नास्तिभाव' (अविद्यमान) को 'अस्ति' (है) नही कहते। हे देवानुप्रियो ! हम सभी अस्तिभावो को अस्ति (है), और समस्त नास्तिभावो को नास्ति (नही है), कहते है। अत हे देवानुप्रियो ! आप स्वय अपने ज्ञान (अथवा मन) से इस बात पर अनुप्रेक्षण (चिन्तन) करिये।' इस प्रकार कहकर श्री गौतम स्वामी गुणशीलक चैत्य मे श्रमण भगवान महावीर के पास आये। और द्वितीय शतक के निर्ग्रन्थ उद्देशक (सू० २५-१) मे बताये अनुसार आहार-पानी भगवान को दिखलाया दिखलाकर श्रमण भगवान को वन्दन नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके यथावत् उपासना करने लगे।

[2] Then Bhagavan Gautam replied to those heretics—"Beloved of gods ! We do not call existent state (*astibhaava*) as nonexistent (*naasti*) In the same way we do not call nonexistent state (*naastibhaava*) as existent (*asti*). We call all existent states as existent and all nonexistent states as nonexistent Therefore O Beloved of gods ! You should apply your own wisdom and ponder over this on your own " Saying thus Gautam Swami returned to Shraman Bhagavan Mahavir in Gunasheelak Chaitya There (as mentioned in Aphorism 25/1 of Nirgranth lesson of Chapter 2) he showed the collected alms to *Bhagavan* and commenced his worship after due homage and obeisance

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवन्ने यावि होत्था, कालोदाई य तं देसं हव्वमागए।

८. 'कालोदाई' ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वयासी-"से नूणं ते कालोदाई ! अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविट्ठाणं तहेव (सू० ३) जाव से कहमेयं मन्ने एवं ? से नूणं कालोदाई ! अत्थे समट्ठे ? हंता, अत्थि।

तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई ! अहं पंच अत्थिकाए पण्णवेमि, तं जहा-धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं। तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेमि तहेव जाव एगं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पण्णवेमि।"

७. उस काल और उस समय मे श्रमण भगवान महावीर महाकथा-प्रतिपन्न (विशाल जन-समूह को धर्मोपदेश देने मे प्रवृत्त) थे। उसी समय कालोदायी उस स्थल मे आ पहुँचा।

८. 'हे कालोदायी !' इस प्रकार सम्बोधन करके श्रमण भगवान महावीर ने कालोदायी से इस प्रकार पूछा-'हे कालोदायी ! क्या वास्तव मे, किसी समय एक जगह सभी साथ आये हुए और एकत्र सुखपूर्वक बैठे हुए तुम सबमे पचास्तिकाय के सम्बन्ध मे इस प्रकार विचार हुआ था कि यावत् 'यह बात कैसे मानी जाये ?' हे कालोदायिन् ! क्या यह बात यथार्थ है ?' (कालोदायी-) 'हाँ, यथार्थ है।'

(भगवन्-) 'हे कालोदायी ! पचास्तिकाय सम्बन्धी यह बात सत्य है। मै धर्मास्तिकाय यावत् पुद्गलास्तिकाय-पर्यन्त पच अस्तिकाय की प्ररूपणा करता हूँ। उनमे से चार अस्तिकायो को मै अजीवकाय बतलाता हूँ। यावत् पूर्व कथितानुसार एक पुद्गलास्तिकाय को मै रूपीकाय (अजीवकाय) बतलाता हूँ।'

7. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir was busy giving discourse in a large congregation At that time Kalodayi arrived there

8. 'O Kalodayi !' Addressing thus Shraman Bhagavan Mahavir asked Kalodayi—"O Kalodayi ! One day you all came and sat comfortably together at one place and deliberated about five *Astikaayas* and so on up to How to accept this proposition ?' Kalodayi ! Is that true ?" (Kalodayi—) 'Yes it is true '

(*Bhagavan*—) O Kalodayi ! This statement about five *Astikaayas* is true I propagate five *Astikaayas* including *Dharmastikaaya* (motion entity) . and so on up to *Pudgalastikaaya* (matter entity) Of these four are non-living and so on up to (as aforesaid) Only *Pudgalastikaaya* (matter entity) is with form (*rupi*) and non-living entity (*ajiva kaaya*) "

९. [प्र.] तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि अधम्मत्थिकायंसि आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीदित्तए वा तुयट्टित्तए वा ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे कालोदाई ! एगंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा।

९. [प्र.] तब कालोदायी ने श्रमण भगवान महावीर से इस प्रकार पूछा-'भगवन् ! क्या धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय, इन अरूपी अजीवकायो पर कोई बैठने, सोने, खडे रहने, नीचे बैठने यावत् करवट बदलने आदि क्रियाएँ करने मे समर्थ है ?'

[उ.] हे कालोदायिन् ! यह अर्थ (बात) समर्थ नही है। एक पुद्‌गलास्तिकाय ही रूपी अजीवकाय है, जिस पर कोई भी बैठने, सोने या यावत् करवट बदलने आदि क्रियाएँ करने मे समर्थ है।

9. [Q.] Then Kalodayı asked Shraman Bhagavan Mahavır—"*Bhante* ! When that ıs so, then ıs it possıble for someone to perform activıtıes lıke sıttıng, sleepıng, standıng, sıttıng underneath and rollıng on one's sıdes on the formless non-lıvıng entıtıes ıncludıng *Dharmastıkaaya*, *Adharmastıkaaya* and *Akashastıkaaya* ?

[Ans.] Kalodayı ! That ıs not correct. Only *Pudgalastıkaaya* (matter entıty) ıs that non-lıvıng entıty wıth form on whıch someone ıs able to perform actıvıtıes lıke sıttıng and so on up to rollıng on one's sıdes

१०. [प्र.] एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

[उ.] णो इणट्ठे समट्ठे कालोदाई !

१०. [प्र.] भगवन् ! जीवो को पापफलविपाक से सयुक्त करने वाले (अशुभफलदायक) पापकर्म, क्या इस रूपीकाय और अजीवकाय को लगते है ? क्या इस रूपीकाय और अजीवकायरूप पुद्‌गलास्तिकाय मे पापकर्म लगते है ?

[उ.] कालोदायिन् ! यह अर्थ समर्थ नही है।

10. [Q.] *Bhante* ! Does thıs *Pudgalastıkaaya*, the non-lıvıng entıty wıth form, acquıre the demerıtorıous *karmas*, whıch on fruıtıon assocıate beıngs wıth grave consequences ?

[Ans.] Kalodayı ! That ıs not correct

११. [प्र.] एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

[उ.] हंता, कज्जंति।

११. [प्र.] (भगवन् !) क्या इस अरूपी (काय) जीवास्तिकाय मे जीवो को पापफलविपाक से युक्त पापकर्म लगते है ?

[उ.] हाँ (कालोदायिन् !) लगते है। (अर्थात्-अरूपी जीवास्तिकाय मे ही जीव पापफलकर्म से सयुक्त होते है।)

11. [Q.] *Bhante* ! Does this *Jivastikaaya*, the living entity without form, acquire the demeritorious *karmas* that on fruition associate beings with grave consequences ?

[Ans.] Yes, it does (In other words—only this formless *Jivastikaaya* gets associated with the demeritorious *karmas*)

१२. एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए धम्मं निसामित्तए एवं जहा खंदए (श० २, उ० १, सू० ३२–४५) तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइं जाव विहरति।

१२. (भगवान द्वारा समाधान पाकर) कालोदायी बोधि को प्राप्त हुआ। फिर उसने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके उसने इस प्रकार कहा–'भगवन् ! मै आपसे धर्म–श्रवण करना चाहता हूँ।' भगवान ने उसे धर्म–श्रवण कराया। फिर जैसे स्कन्दक ने भगवान से प्रव्रज्या अगीकार की थी (श २, उ १, सू ३२–४५) वैसे ही कालोदायी भगवान के पास प्रव्रजित हुआ। उसी प्रकार उसने ग्यारह अगो का अध्ययन किया, यावत् कालोदायी अनगार विचरण करने लगे।

12. (On getting this answer from *Bhagavan*) Kalodayi got enlightened He then paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir and said—"*Bhante* ! I want to listen to your sermon " *Bhagavan* gave his sermon After that Kalodayi got initiated by *Bhagavan* as Skandak had got (Chapter 2, Lesson 1, Aphorisms 32-45) Likewise he studied the eleven *Angas* and so on up to ascetic Kalodayi continued his itinerant way

पापकर्म और पुण्य कर्म **DEMERITORIOUS KARMAS AND MERITORIOUS KARMAS**

१३. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं रायगिहाओ णगराओ गुणसिलओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

१४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ जाव समोसढे, परिसा जाव पडिगया।

१३. किसी समय श्रमण भगवान महावीर राजगृह नगर के गुणशीलक चैत्य से निकलकर बाहर जनपदो मे विहार करते हुए विचरण करने लगे।

१४. उस काल और उस समय मे राजगृह नामक नगर था। (नगर के बाहर) गुणशीलक नामक चैत्य था। किसी समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी पुन वहाँ पधारे यावत् उनका समवसरण लगा। यावत् परिषद् धर्मोपदेश सुनकर लौट गई।

13. Once Shraman Bhagavan Mahavir moved out from Gunasheela Chaitya and commenced his wanderings in inhabited areas away from Rajagriha

14. During that period of time there was a city called Rajagriha There was a Chaitya called Gunasheelak Later once again Bhagavan Mahavir arrived there and so on up to a congregation took place . and so on up to . After his sermon people dispersed

१५. [प्र.] तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाई जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

१५. [प्र.] तदनन्तर अन्य किसी समय कालोदायी अनगार, श्रमण भगवान महावीर के पास आये और श्रमण भगवान को वन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार पूछा-भगवान ! क्या जीवो को पापफलविपाकसयुक्त पापकर्म लगते है ?

[उ] हाँ, (कालोदायिन् !) ऐसा ही है।

15. [Q.] Later at some point of time ascetic Kalodayi came to Shraman Bhagavan Mahavir, paid homage and obeisance and asked—*Bhante* ! Do *jivas* (souls) acquire demeritorious *karmas* entailing grave consequences on fruition ?

[Ans.] Yes, Kalodayi ! It is so

१६. [प्र.] कहं णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जति ?

[उ] कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं विससंमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भद्दए भवति, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए दुग्गंधत्ताए जहा महस्सवए (स० ६, उ० ३, सु० २ [१] जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता जाव कज्जंति।

१६. [प्र] भगवन् ! जीवो को पापफलविपाकसयुक्त पापकर्म कैसे लगते है ?

[उ] कालोदायिन् ! जैसे कोई पुरुष सुन्दर स्थाली (हाडी) मे पकाने से शुद्ध पका हुआ, अठारह प्रकार के दाल, शाक आदि व्यजनो से युक्त विषमिश्रित भोजन का सेवन करता है। वह भोजन उसे आपात (प्रारम्भ) मे अच्छा लगता है, किन्तु उसके पश्चात् वह भोजन परिणमन होता-होता खराब रूप मे, दुर्गन्धरूप मे यावत् छठे शतक के महास्रव नामक तृतीय उद्देशक (सू २-१) मे कहे अनुसार बार-बार अशुभ परिणाम प्राप्त करता है। हे कालोदायिन् ! इसी प्रकार जीवो को प्राणातिपात से लेकर यावत् मिथ्यादर्शनशल्य तक अठारह पापस्थान का सेवन प्रारम्भ मे तो अच्छा लगता है, किन्तु बाद मे जब उनके द्वारा बाँधे हुए पापकर्म उदय मे आते है, तब वे अशुभरूप मे परिणत होते-होते, दुरूपपने मे,

दुर्गन्धरूप मे यावत् बार-बार अशुभ परिणाम पाते है। हे कालोदायिन् ! इस प्रकार से जीवो के पापकर्म अशुभफलविपाक से युक्त होते है।

16. [Q.] *Bhante* ! How do *jivas* (souls) acquire demeritorious *karmas* entailing grave consequences on fruition ?

[Ans.] Kalodayi ! Take for example a person who takes meals including eighteen varieties of dishes of curries, vegetables and other preparations properly cooked in good utensils but adulterated with toxic things To begin with he finds it good and tasty but with passage of time it transforms and turns into bad, stinking and so on up to increasingly harmful, as mentioned in the third lesson (aphorism 2/1), titled Mahasrava, of the sixth chapter Kalodayi ! In the same way living beings find indulgence in eighteen sources of sin (*paap sthaan*) from killing of beings (*pranatipat*) and so on up to *mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness) to be pleasant to begin with, but later, when the acquired demeritorious *karmas* come to fruition, that pleasure transforms and turns into bad, stinking. and so on up to increasingly harmful experience Kalodayi ! This way *jivas* (souls) acquire demeritorious *karmas* entailing grave consequences on fruition

१७. [प्र.] अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

[उ.] हंता, कज्जंति।

१७. [प्र] भगवन् ! क्या जीवो के कल्याण (शुभ) कर्म कल्याणफलविपाक सहित होते है ?

[उ] हाँ, कालोदायिन् ! होते है।

17. [Q.] *Bhante* ! Do jivas (souls) acquire beatific or meritorious *karmas* entailing beatific consequences on fruition ?

[Ans.] Yes, Kalodayi ! It is so

१८. [प्र.] कहं णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति ?

[उ.] कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं ओसहसम्मिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए णो भद्दए भवति, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे तस्स णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ; एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति।

१८. [प्र.] भगवन् ! जीवो के कल्याणकर्म, कल्याणफलविपाक से सयुक्त कैसे होते है ?

[उ.] कालोदायिन् ! जैसे कोई पुरुष मनोज्ञ (सुन्दर) स्थाली मे पकाने से शुद्ध पका हुआ और अठारह प्रकार के दाल, शाक आदि व्यजनो से युक्त औषधमिश्रित भोजन करता है, तो वह भोजन प्रारम्भ मे अच्छा न लगे, परन्तु बाद मे परिणत होता–होता जब वह सुरूपत्व रूप मे, सुवर्णरूप मे यावत् सुख (या शुभ) रूप मे बार–बार परिणत होता है, तब वह दु खरूप मे परिणत नही होता, इसी प्रकार हे कालोदायिन् ! जीवो के लिए प्राणातिपातविरमण यावत् परिग्रह–विरमण, क्रोधविवेक (क्रोधत्याग) यावत् मिथ्यादर्शनशल्य–विवेक प्रारम्भ मे अच्छा नही लगता, किन्तु उसके पश्चात् उसका परिणमन होते–होते सुरूपत्व रूप मे, सुवर्णरूप मे उसका परिणाम यावत् सुखरूप होता है, दु खरूप नही होता। इसी प्रकार हे कालोदायिन् ! जीवो के कल्याण (पुण्य) कर्म कल्याणफलविपाक–सयुक्त होते है।

18. [Q.] *Bhante* ! How do *jivas* (souls) acquire beatific or meritorious *karmas* entailing beatific consequences on fruition ?

[Ans.] Kalodayi ! Take for example a person who takes meals including eighteen varieties of dishes of curries, vegetables and other preparations properly cooked in good utensils and mixed with nutrient things (like herbs) To begin with he may not find it good and tasty but with passage of time it transforms and turns into good, gold-like (pure) and so on up to . increasingly pleasant, it never becomes harmful Kalodayi ! In the same way living beings find abstaining from indulging in killing of beings (*pranatipat*) and so on up to fondness for possessions and having prudence against anger . and so on up to *mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness) to be unpleasant to begin with, but later, that unpleasantness transforms into good, gold-like (pure). and so on up to increasingly pleasant experience, it never becomes harmful Kalodayi ! This way jivas (*souls*) acquire beatific or meritorious *karmas* entailing beatific consequences on fruition

विवेचन निष्कर्ष–जिस प्रकार सर्वथा सुसस्कृत एव शुद्ध रीति से पकाया हुआ स्वादिष्ट विषमिश्रित भोजन खाते समय बडा रुचिकर लगता है, किन्तु जब उसका परिणमन होता है, तब वह अत्यन्त दु खद और प्राणविनाशकारक होता है। इसी प्रकार प्राणातिपात आदि पापकर्म करते समय जीव को अच्छे लगते है, किन्तु उनका फल भोगते समय वे बडे दु खदायी होते है। जिस प्रकार औषधयुक्त भोजन करना प्रारम्भ मे कष्टकर लगता है, किन्तु उसका परिणाम सुखकर और आरोग्यकर होता है। इसी प्रकार प्राणातिपातादि से विरति कष्टकर एव अरुचिकर लगती है, किन्तु उसका परिणाम अतीव हितकर और सुखकर होता है। *(वृत्ति, पत्राक ३२६)*

Elaboration—Conclusion—Properly and hygienically cooked tasty but toxic food is enjoyable when eaten but on digestion when it takes its

effect, it becomes painful and fatal In the same way indulgence in killing of beings and other sinful activity appears to be exciting but later, when their consequences are experienced they are grave and painful Nutrient and herb mixed food is not tasty or enjoyable when eaten but when it takes its effect after digestion it becomes pleasant and healthy In the same way abstainment from indulgence in killing of beings and other sinful activities appears to be uncomfortable and uninteresting but later, when consequences are experienced they are pleasant and beatific *(Vritti, leaf 326)*

अग्नि को जलाने और बुझाने की क्रिया LIGHTING AND EXTINGUISHING FIRE

१९. [प्र. १] दो भंते ! पुरिसा सरिसया जाव सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारभंति, तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति, एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति। एतेसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कतरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेदणतराए चेव ? कतरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेदणतराए चेव ? जे वा से पुरिसे अगिणकाय उज्जालेति, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति ?

[उ.] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव जाव महावेदणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव।

१९. [प्र १] भगवन् ! (मान लीजिए) समान उम्र के यावत् समान ही भाण्ड, पात्र और उपकरण वाले दो पुरुष, एक-दूसरे के साथ अग्निकाय का समारम्भ करे, (अर्थात्-) उनमे से एक पुरुष अग्निकाय को जलाये और एक पुरुष अग्निकाय को बुझाए, तो हे भगवन् ! उन दोनो पुरुषो मे से कौन-सा पुरुष महाकर्म वाला, महाक्रिया वाला, महाआस्रव वाला और महावेदना (जीवो को महावेदना उत्पन्न करने) वाला है और कौन-सा पुरुष अल्पकर्म वाला, अल्पक्रिया वाला, अल्पआस्रव वाला और अल्पवेदना वाला होता है ?

[उ] हे कालोदायिन् ! उन दोनो पुरुषो मे से जो पुरुष अग्निकाय को जलाता है, वह पुरुष महाकर्म वाला यावत् महावेदना वाला होता है, और जो पुरुष अग्निकाय को बुझाता है, वह अल्पकर्म वाला यावत् अल्पवेदना वाला होता है।

19. [Q. 1] *Bhante* ! (Suppose) two persons of the same age and so on up to with same bowls and equipment indulge in sinful acts against fire-bodied beings, (in other words) one of them lights fire and the other extinguishes it, then, *Bhante* ! Of these two which one is with extensive *karma*, extreme activity (sinful), extensive influx of *karmas*, and extreme pain (or causes extreme pain to beings) and which one is with little *karma*, little activity (sinful), little influx of *karmas*, and little pain ?

[Ans.] Kalodayi ! Of the aforesaid two persons one who lights fire is with extensive *karma* and so on up to.. extreme pain And the other who extinguishes fire is with little *karma* and so on up to little pain

[प्र. २] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'तत्थ णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराए चेव' ?

[उ.] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविकायं समारभति, बहुतरागं आउक्कायं समारभति, अप्पतरागं तेउकायं समारभति, बहुतरागं वाउकायं समारभति, बहुतरागं वणस्सतिकायं समारभति, बहुतरागं तसकाय समारभति।

तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति से णं पुरिसे अप्पतरागं पुढविक्कायं समारभति, अप्प० आउ०, बहुतरागं तेउक्कायं समारभति, अप्पतरागं वाउकायं समारभइ, अप्पतरागं वणस्सतिकायं समारभइ, अप्पतरागं तसकायं समारभइ। से तेणट्ठेणं कालोदाई ! जाव अप्पवेदणतराए चेव।

[प्र. २] भगवन् ! ऐसा आप किस कारण से कहते है कि उन दोनो पुरुषो मे से जो पुरुष अग्निकाय को जलाता है, वह महाकर्म वाला और जो अग्निकाय को बुझाता है, वह अल्पकर्म वाला होता है ?

[उ.] कालोदायिन् ! उन दोनो पुरुषो मे से जो पुरुष अग्निकाय को जलाता है, वह पृथ्वीकाय का बहुत समारम्भ करता है, अप्काय का बहुत समारम्भ करता है, तेजस्काय का अल्प समारभ करता है, वायुकाय का बहुत समारभ करता है, वनस्पतिकाय का बहुत समारम्भ करता है और त्रसकाय का बहुत समारम्भ करता है।

जो पुरुष अग्निकाय को बुझाता है, वह पृथ्वीकाय का अल्प समारम्भ करता है, अप्काय का अल्प समारम्भ करता है, वायुकाय का अल्प समारम्भ करता है, वनस्पतिकाय का अल्प समारम्भ करता है एव त्रसकाय का भी अल्प समारम्भ करता है, किन्तु अग्निकाय का बहुत समारम्भ करता है। इसलिए हे कालोदायिन् ! जो पुरुष अग्निकाय को जलाता है, वह पुरुष महाकर्म वाला आदि है और जो पुरुष अग्निकाय को बुझाता है, वह अल्पकर्म वाला आदि है।

19. [Q. 2] *Bhante* ! Why do you say that of the aforesaid two persons one who lights fire is with extensive *karma* and the other who extinguishes fire is with little *karma* ?

[Ans.] Of the aforesaid two persons one who lights fire causes extensive harm to earth-bodied beings (*prithvi-kaaya*), causes extensive harm to water-bodied beings (*ap-kaaya*), causes little harm to fire-bodied beings (*tejas-kaaya*), causes extensive harm to plant-bodied beings (*vanaspati-kaaya*), causes extensive harm to mobile-bodied beings (*tras-kaaya*)

One who extinguishes fire causes little harm to earth-bodied beings, causes little harm to water-bodied beings, causes little harm to plant-

bodied beings, causes little harm to mobile-bodied beings but causes extensive harm to fire-bodied beings Therefore, Kalodayi ! One who lights fire is with extensive *karma* (etc) and the other who extinguishes fire is with little *karma* (etc) ?

अचित्त पुद्गलो का प्रकाश **LIGHT FROM INANIMATE MATTER**

२०. [प्र.] अत्थि णं भंते ! अचित्ता वि पोग्गला ओभासेति उज्जोवेति तवेति पभासेंति ?

[उ.] हंता, अत्थि।

२०. [प्र] भगवन् ! क्या अचित्त पुद्गल भी अवभासित (प्रकाशयुक्त) होते है, वे वस्तुओ को उद्योतित करते है, ताप करते है (या स्वय तपते) है और प्रकाश करते है ?

[उ] हाँ, कालोदायिन् ! अचित्त पुद्गल भी यावत् प्रकाश करते है।

20. [Q.] *Bhante* ! Does inanimate matter also glow (have light), make things glow, produce heat or get hot and emit light ?

[Ans.] Yes, Kalodayi ! Inanimate matter also glows and so on up to emit light

२१. [प्र] कतरे णं भंते ! ते अचित्ता पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति ?

[उ] कालोदाई ! कुद्धस्स अणगारस्स तेयलेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गंता दूर निपतति, देसं गंता देस निपतति, जहिं जहिं च णं सा निपतति तहिं तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासेंति जाव पभासेंति। एते ण कालोदायी ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासेति जाव पभासेति।

२१. [प्र.] भगवन् ! अचित्त होते हुए भी कौन-से पुद्गल अवभासित होते यावत् प्रकाश करते है ?

[उ] कालोदायिन् ! क्रुद्ध (कुपित) अनगार की निकली हुई तेजोलेश्या दूर जाकर गिरती है, जाने योग्य देश (स्थान) मे जाकर उस देश मे गिरती है। जहाँ वह गिरती है, वहाँ अचित्त पुद्गल भी अवभासित करते है यावत् प्रकाश करते है।

21. [Q.] *Bhante* ! Although inanimate, which matter glows and so on up to emit light ?

[Ans.] Kalodayi ! The fire-power (*tejoleshya*) emitted by an angry ascetic falls at a distance and it goes to the destined place and falls there Where it falls inanimate matter also shines there and so on up to emits light.

विवेचन · सचित्तवत् अचित्त तेजस्काय के पुद्गल—सचित्त तेजस्काय के पुद्गल तो प्रकाश, ताप, उद्योत आदि करते ही है, किन्तु अचित्त पुद्गल भी अवभासित होते एव प्रकाश, ताप, उद्योत आदि करते है, यह इस सूत्र का आशय है। कुपित साधु द्वारा निकाली हुई तेजोलेश्या के पुद्गल अचित्त होते है। *(वृत्ति, पत्राक ३२७)*

Elaboration—This aphorism conveys that not only animate matter of fire-bodies radiate light, heat, glow etc but inanimate matter also does so The particles of *tejoleshya* emitted by an angry ascetic are inanimate *(Vritti, leaf 327)*

२२. तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ–छट्ठऽट्ठम जाव अप्पाणं भावेमाणे जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते (स० १, उ० ९, सु० २४) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ सत्तमे सए : दसमो उद्देसओ समत्तो॥

२२. इसके पश्चात् वह कालोदायी अनगार श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार करते है। वन्दन–नमस्कार करके बहुत–से चतुर्थ (भक्त), षष्ठ (भक्त), अष्टम (भक्त) इत्यादि तप द्वारा यावत् अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरण करने लगे, यावत् प्रथम शतक के नौवे उद्देशक (सू २४) मे वर्णित कालास्यवेशी पुत्र की तरह सिद्ध, बुद्ध, मुक्त यावत् सब दु खो से मुक्त हुए।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है।'

॥ सप्तम शतक : दशम उद्देशक समाप्त ॥

॥ सप्तम शतक सम्पूर्ण ॥

22. After that ascetic Kalodayi paid homage and obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir Then he commenced his itinerant way and enkindled his soul with numerous one day, two day, three day fasts and other austerities And like Kalasyaveshi Putra (Chapter 1, Lesson 9, Aphorism 24) became perfected (*Siddha*), enlightened (*buddha*), and so on up to ended all miseries

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so "

● END OF THE TENTH LESSON OF THE SEVENTH CHAPTER ●

● END OF CHAPTER SEVEN ●

अष्टम शतक : प्रथम उद्देशक
ASHTAM SHATAK (Chapter Eight) : FIRST LESSON

पुद्गल PUDGALA (MATTER)

- व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के अष्टम शतक के दस उद्देशक है। इनमे पुद्गल, आशीविष, वृक्ष, क्रिया, आजीव, प्रासुक, अदत्त, प्रत्यनीक, बन्ध और आराधना, आदि विषयो का वर्णन है।
- The eighth chapter (*shatak*) of *Vyakhyaprajnapti Sutra* (*Bhagavati Sutra*) has ten lessons (*uddeshak*) The topics discussed include pudgala (matter), *ashivish* (the poisonous), *vriksh* (tree), *kriya* (activities), *aajiva* (Ajivaks), *prasuk* (prescribed food), *adatt* (not given), *pratyaneek* (adversaries), *bandh* (bondage), and *aradhana* (endeavour)

संग्रहणी गाथा COLLATIVE VERSE

१. पोग्गल १ आसीविस २ रुक्ख ३ किरिय ४ आजीव ५ फासुगमदत्ते ६–७।
पडिणीय ८ बंध ९ आराहणा य १० दस अट्ठमम्मि सते॥१॥

१. (१) पुद्गल, (२) आशीविष, (३) वृक्ष, (४) क्रिया, (५) आजीव, (६) प्रासुक, (७) अदत्त, (८) प्रत्यनीक, (९) बन्ध, और (१०) आराधना, आठवे शतक मे ये दस उद्देशक है।

1. The eighth chapter (*shatak*) has the following ten lessons (*uddeshak*)—(1) *Pudgala* (Matter), (2) *Ashivish* (The poisonous), (3) *Vriksh* (Tree), (4) *Kriya* (Activities), (5) *Aajiva* (Ajivaks), (6) *Prasuk* (Prescribed Food), (7) *Adatt* (Not given), (8) *Pratyaneek* (Adversaries), (9) *Bandh* (Bondage) and (10) *Aradhana* (Endeavour)

पुद्गलपरिणामो के तीन प्रकार THREE KINDS OF MATTER

२. रायगिहे जाव एव वयासी–

३. [प्र.] कइविहा णं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा–पयोगपरिणया मीससापरिणया, वीससापरिणया।

२. राजगृह नगर मे यावत् गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीन से इस प्रकार पूछा–

३. [प्र.] भगवन् ! पुद्गल कितने प्रकार के कहे है ?

[उ.] गौतम ! पुद्गल तीन प्रकार के कहे है। वे इस प्रकार है–(१) प्रयोग-परिणत, (२) मिश्र-परिणत, और (३) विस्रसा-परिणत।

2. In Rajagriha city. and so on up to (Shri Gautam Swami) submitted—

3. [Q.] *Bhante* ! How many types of matter (*pudgala*) is there ?

[Ans.] Gautam ! Matter is said to be of three types—(1) *prayoga parinat* or consciously transformed, (2) *mishra parinat* or jointly transformed and (3) *visrasa parinat* or naturally transformed

विवेचन मूलत पुद्‌गल समान लक्षण है-गलन, पूरन (मिलन) स्वभाव, अचेतन तथा मूर्तिमत। किन्तु परिणामो की दृष्टि से उसके तीन भेद होते है-(१) **प्रयोग-परिणत**-जीव की प्रवृत्ति (क्रिया) से शरीर आदि के रूप में परिणत पुद्‌गल। जैसे-एकेन्द्रियादि जीव। (२) **मिश्र-परिणत**-प्रयोग और विस्रसा (स्वभाव) इन दोनो द्वारा परिणत पुद्‌गल जैसे पचेन्द्रियादि जीवो का मृत कलेवर। और (३) **विस्रसा-परिणत**-स्वभाव से परिणत पुद्‌गल जैसे-कृष्णादि वर्ण, गध आदि के पुद्‌गल।

मिश्रपरिणत पुद्‌गलो के दो रूप-(१) प्रयोग-परिणाम को छोडे बिना स्वभाव से (विस्रसा) परिणामान्तर को प्राप्त मृतकलेवर आदि पुद्‌गल मिश्र-परिणत कहलाते है, अथवा (२) विस्रसा (स्वभाव) से परिणत औदारिक आदि वर्गणाएँ, जब जीव के व्यापार (प्रयोग) से औदारिक आदि शरीर रूप मे परिणत होती है, तब वे मिश्र-परिणत कहलाती है, जब कि उनमे प्रयोग और विस्रसा, दोनो परिणामो की विवक्षा की गई हो। केवल एक प्रकार का परिणमन होने पर प्रयोग-परिणत अथवा विस्रसा परिणत मात्र कहलाएँगी। *(वृत्ति पत्राक ३२८)*

Elaboration—All matter has same fundamental properties—disintegration (*galan*), integration (*puran* or *milan*), inanimate (*achetan*) and with a form (*murtimant*) However, in terms of transformation it has three types—(1) *prayoga parinat* or consciously transformed matter like soul acquiring matter particles and transforming into bodies with one or more sense organs, (2) *mishra parinat* or jointly (consciously-cum-naturally) transformed matter like dead bodies of five sensed beings and (3) *visrasa parinat* or naturally transformed matter like clusters of particles with varied attributes including colour and smell

Jointly transformed matter—This is of two types—(1) Naturally transformed matter without disintegration of consciously acquired form, such as a corpse (2) Naturally transformed species of *karmic* particles, such as those needed to form gross physical body etc, further transformed consciously, such as gross physical body of a being The transformation that involves both conscious and natural processes is called *mishra parinat* (jointly transformed) Where only single process is involved it is either called *prayoga parinat* (consciously transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed) *(Vritti, leaf 328)*

नौ दण्डको द्वारा प्रयोग–परिणत पुद्गलो का निरूपण

CONSCIOUS TRANSFORMATION IN LIGHT OF NINE DANDAKS

प्रयोग-परिणत पुद्गलो को विभिन्न पहलुओ से समझाने के लिए शास्त्रकार ने नौ दण्डको द्वारा निरूपण किया है।

In order to explain various facets of conscious transformation of matter the author has elaborated the process with reference to nine *Dandaks* (places of suffering)

प्रथम दण्डक **FIRST DANDAK**

(यहाँ प्रथम दण्डक मे सूक्ष्म एकेन्द्रिय से लेकर सर्वार्थसिद्ध देवो तक के जीवो की विशेषता से प्रयोग परिणत पुद्गलो का कथन है।)

(Included in the first *Dandak* is the discussion about consciously transformed matter with reference to the unique nomenclature of living beings from minute one sensed beings to gods of Sarvarth-siddhi realm)

४. [प्र] पयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियपयोगपरिणया बेइंदियपयोगपरिणया जाव पंचिंदियपयोगपरिणया।

४. [प्र] भगवन् ! प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! (प्रयोग-परिणत पुद्गल) पाँच प्रकार के है। जैसे-(१) एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत, (२) द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत, (३) त्रीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत, (४) चतुरिन्द्रिय-प्रयोग-परिणत, और (५) पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

4. [Q.] *Bhante* ! How many types of *prayoga parinat pudgala* (consciously transformed matter) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of five types—(1) *Ekendriya prayoga parinat pudgala* (consciously transformed as matter or bodies of one-sensed beings), (2) *dvindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of two-sensed beings), (3) *trindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of three-sensed beings), (4) *chaturindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of four-sensed beings), and (5) *panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed beings)

५. [प्र.] एगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! पंचविहा, तं जहा—पुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपयोगपरिणया।

५. [प्र] भगवन् ! एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! पॉच प्रकार के है। जैसे-(१) पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल, यावत् (५) वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

5. [Q.] *Bhante* ! How many types of *ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of one-sensed beings) are there ?

[Ans.] They are of five types—(1) *prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of one-sensed earth-bodied beings) and so on up to (5) *vanaspatikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of one-sensed plant-bodied beings)

६. [प्र १] पुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा-सुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया य बादरपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया य।

६. [प्र १] भगवन् ! पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के हैं ?

[उ] गौतम ! वे दो प्रकार के है, जैसे कि-सूक्ष्मपृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और बादरपृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

6. [Q. 1] *Bhante* ! How many types of *prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of one-sensed earth-bodied beings) are there ?

[Ans.] They are of two types—(1) *sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of minute one-sensed earth-bodied beings) and (2) *baadar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of gross one-sensed earth-bodied beings)

[२] आउक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया एवं चेव। [३] एवं दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइया य।

[२] इसी प्रकार अप्कायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल भी दो प्रकार के (सूक्ष्म और बादर रूप से) कहने चाहिए। [३] इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल तक के प्रत्येक के दो-दो भेद (सूक्ष्म और बादर रूप से) कहने चाहिए।

[2] The same should be repeated for *apkaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of one-sensed water-bodied beings) **[3]** and so on up to *vanaspati kaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of

one-sensed plant-bodied beings) (Which means two types, minute and gross, should be stated for all these).

७. [प्र.] बेइंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता। एवं तेइंदिय–चउरिंदियपयोगपरिणया वि।

७. [प्र] भगवन् ! अब द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल के प्रकारो के विषय मे प्रश्न है।

[उ] गौतम ! वे (द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल) अनेक प्रकार के है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गलो और चतुरिन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के प्रकार (अनेक विध) के विषय मे जानना चाहिए।

7. [Q.] *Bhante* ! How about *dvindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of two-sensed beings), *trindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of three-sensed beings), and *chaturindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of four-sensed beings) ?

[Ans.] Gautam ! They (*dvindriya prayoga parinat pudgala*) are of many types And the same is true for *trindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of three-sensed beings), and *chaturindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of four-sensed beings)

८. [प्र.] पंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

[उ] गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा–नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया, तिरिक्ख०, एवं मणुस्स०, देवपंचिंदिय०।

८. [प्र.] अब प्रश्न पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के विषय मे है।

[उ.] गौतम ! (पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल) चार प्रकार के है। यथा–(१) नारक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल, तथा (२) तिर्यञ्च-पचेन्द्रिय, (३) मनुष्य-पचेन्द्रिय, और (४) देव-पंचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

8. [Q.] *Bhante* ! Now the question is about *panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed beings) ?

[Ans.] Gautam ! They (*panchendriya prayoga parinat pudgala*) are of four types—(1) *Naarak panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings), (2) *tiryanch panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously

transformed as bodies of five-sensed animals), (3) *manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings), and (4) *dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed divine beings)

९. [प्र.] नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा–रयणप्पभापुढवि–नेरइयपचिंदिय–पयोगपरिणया वि जाव अहेसत्तमपुढवि–नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया वि।

९. [प्र.] (सर्वप्रथम) नैरयिक पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के (प्रकार के) विषय मे प्रश्न है।

[उ.] गौतम ! वे सात प्रकार के है। यथा–रत्नप्रभापृथ्वी-नैरयिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल यावत् अध सप्तमा (तमस्तमा)–पृथ्वी-नैरयिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग- परिणत पुद्गल।

9. [Q.] Bhante ! Now the question is about *naarak panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings) ?

[Ans.] Gautam ! They are of seven types—*Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell) and so on up to *Adhah-saptama prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings of Adhah-saptama or Tamastama hell)

१०. [प्र. १] तिरिक्खजोणिय–पंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–जलचरपचिंदियतिरिक्खजोणिय–पयोगपरिणया थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय० खहयरतिरिक्खपंचिंदिय०।

१०. [प्र. १] तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के (प्रकार के) विषय मे प्रश्न है।

[उ.] गौतम ! तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणतपुद्गल तीन प्रकार के है। जैसे कि–

(१) जलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल, (२) स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल, और (३) खेचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

10. [Q. 1] *Bhante* ! Now the question is about *tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed animals) ?

[Ans.] Gautam ! They are of three types—(1) *jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed

as bodies of aquatic five-sensed animals), (2) *sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed animals), and (3) *khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals)

[प्र. २] जलयरतिरिक्खजोणिय–पओगपरिणयाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–सम्मुच्छिमजलचरतिरिक्खपओगपरिणया गब्भवक्कंतियजलयर०।

[प्र. २] भगवन् ! जलचर तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! वे दो प्रकार के है। जैसे कि–(१) सम्मूर्च्छिम जलचरतिर्यञ्चयोनिक, और (२) गर्भव्युत्क्रान्तिक (गर्भज) जलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल।

[Q. 2] *Bhante* ! Now the question is about *jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals) ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—(1) *sammurchhim jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals of asexual origin) and (2) *garbhavyutkrantik jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals born out of womb)

[प्र. ३] थलचरतिरिक्ख० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–चउप्पयथलचर० परिसप्पथलचर०।

[प्र. ३] भगवन् ! स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! वे दो प्रकार के है। यथा–चतुष्पद-स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल और परिसर्पस्थलचर तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल।

[Q. 3] *Bhante* ! Now the question is about *sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed animals) ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped

animals) and *parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed reptilian animals)

[प्र. ४] चउप्पदथलयर० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिमचउप्पदथलयर० गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयर०।

[प्र. ४] अब प्रश्न है चतुष्पद-स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! वे (पूर्वोक्त पुद्गल) दो प्रकार के है। यथा-सम्मूर्च्छिम चतुष्पद-स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक- पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और गर्भज-चतुष्पद-स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

[Q. 4] *Bhante* ! Now the question is about *chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals) ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*sammurchhim chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals of asexual origin) and *garbhavyutkrantik chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals born out of womb)

[५] एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--उरपरिसप्पा य, भुयपरिसप्पा य। [६] उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिमा य, गब्भवक्कंतिया य। [७] एवं भुयपरिसप्पा वि। [८] एवं खहचरा वि।

[५] इसी अभिलाप (पाठ) द्वारा परिसर्प स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक पचेन्द्रिय भी दो प्रकार के है। यथा-उर परिसर्प-स्थलचर तिर्यञ्चयोनिक पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और भुजपरिसर्प-स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक- पचेन्द्रिय-प्रयोग- परिणत पुद्गल। [६] (पूर्वोक्त चतुष्पदस्थलचर सम्बन्धी पुद्गलवत्) उर परिसर्प (सम्बन्धी प्रयोगपरिणत पुद्गल) भी दो प्रकार के है। यथा-सम्मूर्च्छिम (उर परिसर्प-सम्बन्धी पुद्गल) और गर्भज (उर परिसर्प-सम्बन्धी पुद्गल)। [७] इसी प्रकार भुजपरिसर्प-सम्बन्धी पुद्गल के भी दो भेद समझने चाहिए। [८] इसी तरह खेचर (तिर्यञ्चपचेन्द्रियसम्बन्धी पुद्गल) के भी पूर्ववत (सम्मूर्च्छिम और गर्भज) दो भेद है।

[5] This statement continues to add matter consciously transformed as bodies of two types of *parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya* (terrestrial five-sensed reptilian animals)—*ur-parisarp*

sthalachar tiryanch-yonik panchendriya (terrestrial five-sensed non-limbed reptilian animals) and *bhuj-parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya* (terrestrial five-sensed limbed reptilian animals) [6] Two types of *ur-parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya* (terrestrial five-sensed non-limbed reptilian animals)—*sammurchhim* (of asexual origin) and *garbhavyutkrantik* (born out of womb) [7] In the same way there are two types of *bhuj-parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya* (terrestrial five-sensed limbed reptilian animals)—*sammurchhim* (of asexual origin) and *garbhavyutkrantik* (born out of womb) [8] The same also holds good for *khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals)

११. [प्र] मणुस्सपंचिंदियपयोग० पुच्छा।

[उ] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मुच्छिममणुस्स० गब्भवक्कंतियमणुस्स०।

११. [प्र] भगवन् ! मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! वे दो प्रकार के है। यथा-सम्मूर्च्छिममनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और गर्भजमनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

11. [Q.] *Bhante* ! Now the question is about *manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings) ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—(1) *sammurchhim manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings of asexual origin) and (2) *garbhavyutkrantik manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings born out of womb)

१२. [प्र.] देवपंचिंदियपयोग० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता,तं जहा—भवणवासिदेवपंचिंदियपयोग० एवं जाव वेमाणिया।

१२. [प्र.] भगवन् ! देव-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! वे चार प्रकार के है। जैसे कि—भवनवासी-देव० यावत् वैमानिकदेव-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल।

12. [Q.] *Bhante* ! Now the question is about *dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed divine beings) ?

[Ans.] Gautam ! They are of four types—*Bhavan-vaasi dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed abode dwelling divine beings) and so on up to . *Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed celestial-vehicular divine beings)

१३. [प्र.] भवणवासिदेवपंचिंदिय० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमार० जाव थणियकुमार०।

१३. [प्र.] भगवन् ! भवनवासी-देवपचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] वे दस प्रकार के है। यथा-(१) असुरकुमार-देव-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल यावत् (१०) स्तनितकुमार-देव-प्रयोग- परिणत पुद्‌गल।

13. [Q.] *Bhante* ! Now the question is about *Bhavan-vaasi dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed abode dwelling divine beings) ?

[Ans.] Gautam ! They are of ten types—(1) *Asur Kumar dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed *Asur Kumar* gods) and so on up to *Stanit Kumar dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed *Stanit Kumar* gods)

१४. एवं एएणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरा पिसाया जाव गंधव्वा।

१५. जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—चदविमाणजोइसिय० जाव ताराविमाणजोइसियदेवा।

१४. इसी अभिलाप (पाठ) से आठ प्रकार के वाणव्यन्तर देव कहने चाहिए। यथा-पिशाच से यावत् गन्धर्व तक।

१५. (इसी अभिलापवत्) ज्योतिषी देवो के भी पॉच प्रकार है। चन्द्रविमानज्योतिष्कदेव यावत् ताराविमान-ज्योतिष्क-देव।

14. This statement continues to add matter consciously transformed as bodies of eight types of *Vanavyantar devs* (interstitial gods)—*Pishaach* gods and so on up to *Gandharva* gods

15. This statement continues to add matter consciously transformed as bodies of five types of *Jyotishk devs* (stellar gods)—*Chandra Vimaan Jyotishk devs* (stellar gods of lunar celestial vehicle) gods.. and so on up to . *Tara Vimaan Jyotishk devs* (stellar gods of star celestial vehicle)

१६. [१] वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा–कप्पोवग० कप्पातीतगवेमाणिय०।

१६. [१] वैमानिकदेव के दो प्रकार है। यथा–कल्पोपपन्नक वैमानिकदेव और कल्पातीत वैमानिकदेव।

16. [1] There are two types of *Vaimanik devs* (celestial-vehicular gods)—*Kalpopapannak Vaimanik devs* (celestial-vehicular gods belonging to *Kalps* or specific divine realms) and *Kalpateet Vaimanik devs* (celestial-vehicular gods beyond the *Kalps*)

[२] कप्पोवगा दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा–सोहम्मकप्पोवग० जाव अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया। [३] कप्पाइयगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–गेवेज्जगकप्पातीयग० अणुत्तरोववाइयकप्पाईयग०। [४] गेवेज्जगकप्पातीतगा नवविहा पण्णत्ता, तं जहा–हेट्ठिमहेट्ठिम–गेवेज्जगकप्पातीतगा जाव उवरिमउवरिम–गेविज्जगकप्पातीतया।

[२] कल्पोपपन्नक वैमानिक देव बारह प्रकार के है। यथा–सौधर्म कल्पोपपन्नक से यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक देव तक। (इन बारह प्रकार के वैमानिक देवो से सम्बन्धित प्रयोग–परिणत पुद्गल १२ प्रकार के होते है।)

[३] कल्पातीत वैमानिकदेव दो प्रकार के कहे है। यथा–ग्रैवेयक–कल्पातीत–वैमानिकदेव और अनुत्तरौपपातिक–कल्पातीत–वैमानिकदेव।

[४] ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिकदेवो के नौ प्रकार है। यथा–अधस्तन–अधस्तन (सबसे नीचे की त्रिक मे नीचे का) ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव यावत् उपरितन–उपरितन (सबसे ऊपर की त्रिक मे सबसे ऊपर वाले ग्रैवेयक–कल्पातीत–वैमानिक–देव।

[2] *Kalpopapannak Vaimanik devs* (celestial-vehicular gods belonging to *Kalps* or specific divine realms) are of twelve types—*Saudharma Kalpopapannak* (belonging to the *Saudharma Kalp*) and so on up to *Achyut Kalpopapannak* (belonging to the *Achyut Kalp*)

[3] *Kalpateet Vaimanik devs* (celestial-vehicular gods beyond the *Kalps*) are of two types—*Graiveyak Kalpateet Vaimanik devs* and *Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik devs*

[4] *Graiveyak Kalpateet Vaimanik devs* are of nine types—*Adhastan-adhastan* (lowest of the lower) *Graiveyak Kalpateet Vaimanik devs* and so on up to. *Uparitan-uparitan* (highest of the higher) *Graiveyak Kalpateet Vaimanik devs*

[प्र. ५] अणुत्तरोववाइय–कप्पातीतगवेमाणियदेव–पंचिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा–विजयअणुत्तरोववाइय० जाव परिणया जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदिय जाव परिणया। १ दडगो।

[प्र. ५] भगवन् ! अनुत्तरौपपातिक कल्पातीतवैमानिक-देव-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! वे पॉच प्रकार के है। जैसे कि विजय-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीतवैमानिकदेव-पचेन्द्रिय- प्रयोग-परिणत पुद्गल यावत् सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीतवैमानिकदेव-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल। **[प्रथम दण्डक पूर्ण हुआ।]**

5. [Q.] *Bhante* ! How many types of *Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed *Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of five types—*Vijaya Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed *Vijaya Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) and so on up to *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) **[First Dandak Concluded]**

दूसरा दण्डक SECOND DANDAK

(इस दण्डक मे सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवो से लेकर सर्वार्थ सिद्ध देवो तक पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से कथन है।)

[This section describes the aforesaid beings from earth-bodied to divine in context of full development (*paryapt*) and partial development (*aparyapt*)]

१७. [प्र १] सुहुमपुढविकाइय–एगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–पज्जत्तगसुहुमपुढविकाइय जाव परिणया य अपज्जत्तगसुहुमपुढविकाइय जाव परिणया य। [केई अपज्जत्तगं पढमं भणति, पच्छा पज्जत्तगं।] [२] बादरपुढविकाइयएगिंदिय० ? एवं देव।

१८. एवं जाव वणस्सइकाइया। एक्केक्का दुविहा–सुहुमा य बादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा।

१७. [प्र. १] भगवन् ! सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है?

[उ.] गौतम ! वे दो प्रकार के है। यथा-पर्याप्तक-सूक्ष्मपृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और अपर्याप्तक-सूक्ष्मपृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल। [कई आचार्य अपर्याप्तक (वाले प्रकार) को पहले और पर्याप्तक (वाले प्रकार) को बाद मे कहते है।] [२] इसी प्रकार बादर-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल के भी (उपर्युक्तवत्) दो भेद कहने चाहिए।

१८. इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक (एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल) तक प्रत्येक के सूक्ष्म और बादर ये दो भेद और फिर इन दोनो के पर्याप्तक और अपर्याप्तक भेद कहने चाहिए।

17. [Q. 1] *Bhante* ! How many types of *sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of fully developed minute one-sensed-earth-bodied beings) and *aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped minute one-sensed-earth-bodied beings) (Many commentators state these in reverse order) [2] In the same way two types for *baadar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of gross one-sensed-earth-bodied beings) should be stated

18. In the same way two types, *paryaptak* and *aparyaptak*, should be stated for two classes, *sukshma* and *baadar*, of matter related to all one-sensed beings up to plant-bodied beings

१९. [प्र. १] बेदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगबेदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। [२] एवं तेइंदिया वि। [३] एवं चउरिंदिया वि।

१९. [प्र. १] भगवन् ! द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है?

[उ.] गौतम ! वे दो प्रकार के है। जैसे कि-पर्याप्तक द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और अपर्याप्तक द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल। [२] इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और [३] चतुरिन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के विषय मे भी समझ लेना चाहिए।

19. [Q. 1] *Bhante* ! How many types of *dvindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of two-sensed beings) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak dvindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of fully developed two-sensed beings) and *aparyaptak dvindriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped two-sensed beings) The same should be repeated for matter related to [2] three-sensed and [3] four sensed beings

२०. [प्र. १] रयणप्पभापुढविनेरइय० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगरयणप्पभापुढवि जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। [२] एवं जाव अहेसत्तमा।

२०. [प्र. १] भगवन् ! रत्नप्रभापृथ्वी-नैरयिक-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! वे दो प्रकार के है। जैसे-पर्याप्तक रत्नप्रभापृथ्वी नैरयिक-प्रयोग-परिणत पुद्गल और अपर्याप्तक रत्नप्रभा-नैरयिक-प्रयोग-परिणत पुद्गल। [२] इसी प्रकार यावत् अध सप्तमीपृथ्वी नैरयिक-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के प्रकार के विषय मे जानना चाहिए।

20. [Q. 1] *Bhante* ! How many types of *Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of fully developed five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell) and *aparyaptak Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell) [2] The same should be repeated for other hells up to *Adhah-saptami prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings of Adhah-saptami hell)

२१. [प्र. १] सम्मुच्छिमजलयरतिरिक्ख० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तग० अपज्जत्तग०। एवं गब्भवक्कंतिया वि।

२१. [प्र. १] भगवन् ! सम्मूर्च्छिम-जलचर-तिर्यञ्चयोनिक पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! वे दो प्रकार के है। जैसे कि-पर्याप्तक सम्मूर्च्छिम जलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल और अपर्याप्तक सम्मूर्च्छिम-जलचर-तिर्यञ्चयोनिक पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल। इसी प्रकार गर्भज-जलचरसम्बन्धी प्रयोगपरिणत पुद्गलो के विषय मे जान लेना चाहिए।

21. [Q. 1] *Bhante* ! How many types of *sammurchhim jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals of asexual origin) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak sammurchhim jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of fully developed aquatic five-sensed animals of asexual origin) and *aparyaptak sammurchhim jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped aquatic five-sensed animals of asexual origin) The same should be repeated for *garbhavyutkrantik jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals born out of womb)

[२] सम्मुच्छिमचउप्पदथलचर०। एवं चेव। एव गब्भवक्कंतिया य।

[३] एवं जाव सम्मुच्छिमखहयर० गब्भवक्कंतिया य एक्केक्के पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य भाणियव्वा।

[२] इसी प्रकार सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचरसम्बन्धी प्रयोग-परिणत पुद्गलो के प्रकार के विषय मे तथा गर्भज चतुष्पदस्थलचर सम्बन्धी प्रयोग-परिणत पुद्गलो के प्रकार के विषय मे भी जानना चाहिए।

[३] इसी प्रकार यावत् सम्मूर्च्छिम खेचर और गर्भज खेचर से सम्बन्धित प्रयोगपरिणत पुद्गलो के प्रत्येक के पर्याप्तक और अपर्याप्तक, ये दो-दो भेद कहने चाहिए।

[2] The same should be repeated for *sammurchhim chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals of asexual origin) and *garbhavyutkrantik chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals born out of womb)

[3] In the same way two types each, *paryaptak* and *aparyaptak*, should be stated for *sammurchhim khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals of asexual origin) and *garbhavyutkrantik khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals born out of womb)

२२. [प्र. १] सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! एगविहा पन्नत्ता–अपज्जत्तगा चेव।

२२. [प्र. १] भगवन् ! सम्मूर्च्छिम-मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! वे एक प्रकार के है। यथा–अपर्याप्तक-सम्मूर्च्छिम मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल।

22. [Q. 1] *Bhante* ! How many types of *sammurchhim manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings of asexual origin) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of just one type—*aparyaptak sammurchhim manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed human beings of asexual origin)

[प्र. २] गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदिय० पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि।

[प्र. २] भगवन् ! गर्भज मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! वे दो प्रकार के है। यथा–पर्याप्तक-गर्भज-मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल और अपर्याप्तक-गर्भज-मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल।

[Q. 2] *Bhante* ! How many types of *garbhavyutkrantik manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings born out of womb) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak garbhavyutkrantik manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of fully developed five-sensed human beings born out of womb) and *aparyaptak garbhavyutkrantik manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed human beings born out of womb)

२३. [प्र. १] असुरकुमारभवणवासिदेवाणं पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगअसुरकुमार० अपज्जत्तगअसुर०। [२] एवं जाव थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य।

२३. [प्र. १] भगवन् ! असुरकुमार-भवनवासीदेव-प्रयोग-परिणत पुद्‌गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! वे दो प्रकार के है। यथा-पर्याप्तक असुरकुमार-भवनवासीदेव-प्रयोग-परिणत पुद्गल और अपर्याप्तक-असुरकुमार-भवनवासीदेव-प्रयोग-परिणत पुद्गल। [२] इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार भवनवासीदेवो तक के पर्याप्तक और अपर्याप्तक, ये दो-दो भेद कहने चाहिए।

23. [Q. 1] *Bhante* ! Now the question is about *Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of *Asur Kumar* abode dwelling gods) ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as fully developed bodies of *Asur Kumar* abode dwelling gods) and *aparyaptak Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as underdeveloped bodies of *Asur Kumar* abode dwelling gods) [2] The same should be repeated for matter related to other abode dwelling gods up to *Stanit Kumar Bhavan-vaasi dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five-sensed *Stanit Kumar* abode dwelling gods)

२४. एव एएण अभिलावेण दुएण भेदेण पिसाया य जाव गंधव्वा, चंदा जाव ताराविमाणा, सोहम्मकप्पोवगा जाव अच्चुओ, हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जकप्पातीत जाव उवरिमउवरिमगेविज्ज०, विजयअणुत्तरो० जाव अपराजिय०।

२४. इसी प्रकार इसी अभिलाप से पिशाचो से लेकर यावत् गन्धर्वो तक (आठ प्रकार के वाणव्यन्तर देवो के) तथा चन्द्र से लेकर तारा-पर्यन्त (पाँच प्रकार के ज्योतिष्कदेवो के) एव सौधर्मकल्पोपपन्नक से यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक तक के और अधस्तन-अधस्तन ग्रैवेयककल्पातीत से लेकर उपरितन-उपरितन ग्रैवेयक कल्पातीत देव-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के, एव विजय-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत से यावत् अपराजित-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत देव-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के प्रत्येक के पर्याप्तक और अपर्याप्तक, ये दो-दो भेद कहने चाहिए।

24. In the same way two types each, *paryaptak* and *aparyaptak*, should be stated for matter consciously transformed as bodies of *Pishaach*. and so on up to *Gandharva* (eight classes of interstitial gods), *Chandra* to *Taara* (five classes of stellar gods, *Saudharma Kalpopapannak* to *Achyut Kalpopapannak* gods, *Adhastan-adhastan Graiveyak Kalpateet* to *Uparitan-uparitan Graiveyak Kalpateet Vaimanik* gods, and *Vijaya Anuttaraupapatik Kalpateet* to *Aparajit Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik* gods

२५. [प्र.] सव्वट्ठसिद्धकप्पातीय पुच्छा।

[उ.] गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो० अपज्जत्तगसव्वट्ठ जाव परिणया वि। २ दंडगा।

२५. [प्र] भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक-कल्पातीतदेव-प्रयोग-परिणत पुद्गलो के कितने प्रकार है ?

[उ] गौतम ! वे दो प्रकार के है। यथा-पर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक-कल्पातीतदेव-प्रयोग-परिणत पुद्गल और अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक-कल्पातीतदेव-प्रयोग-परिणत पुद्गल। [दूसरा दण्डक पूर्ण हुआ।]

25. [Q.] *Bhante* ! Now the question is about *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) ?

[Ans.] Gautam ! They are of two types—*paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as fully developed bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) and *aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as underdeveloped bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) **[Second Dandak Concluded]**

तृतीय दण्डक THIRD DANDAK

(इस दण्डक मे औदारिक, वैक्रिय आदि पाँच शरीरो की अपेक्षा से कथन है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of five types of bodies including *audarik* and *vaikriya*]

२६. जे अपज्जत्ता सुहुमपुढवीकाइय-एगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया। जे पज्जत्तसुहुम० जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया। एवं जाव चउरिंदिया पज्जत्ता।

नवरं जे पज्जत्तगबादरवाउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मसरीर जाव परिणया। सेसं तं चेव।

२६. जो पुद्गल अपर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकाय-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे औदारिक, तैजस और कार्मण-शरीर-प्रयोग-परिणत है। जो पुद्गल पर्याप्तक-सूक्ष्म-पृथ्वीकाय-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे भी औदारिक, तैजस और कार्मण-शरीर-प्रयोग-परिणत है।

इसी प्रकार यावत् चतुरिन्द्रियपर्याप्तक तक के (प्रयोग-परिणत पुद्गलो के विषय मे) जानना चाहिए। परन्तु विशेष इतना है कि जो पुद्गल पर्याप्त-बादर-वायुकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है,

वे औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण-शरीर-प्रयोग-परिणत है। (क्योकि वायुकाय मे वैक्रिय शरीर भी पाया जाता है।) शेष सब पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार जानना चाहिए।

26. The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as gross physical (*audarik*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are also consciously transformed as gross physical (*audarik*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies

The same should be repeated for consciously transformed matter related to beings up to fully developed four-sensed beings The only difference is that the matter particles that are consciously transformed as fully developed bodies of gross one-sensed-air-bodied beings (*paryaptak baadar vayukaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as gross physical (audarik), transmutable (*vaikriya*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies (This is because air-bodied beings also have transmutable bodies) About rest of the beings it is as aforesaid

२७. [१] जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढवि-नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मसरीरप्पयोगपरिणया। एव पज्जत्तया वि। [२] एवं जाव अहेसत्तमा।

२७. [१] जो पुद्गल अपर्याप्त-रत्नप्रभापृथ्वी-नैरयिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे वैक्रिय तैजस और कार्मण शरीर-प्रयोग-परिणत है। इसी प्रकार पर्याप्तक-नैरयिको के सम्बन्ध मे भी जानना चाहिए। [२] इसी प्रकार यावत् नीचे की सप्तमपृथ्वी-नैरयिक तक के सम्बन्ध मे कहना चाहिए।

27. [1] The matter particles (*pudgala*) that are *aparyaptak Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell) are, in fact, consciously transformed as transmutable (*vaikriya*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies The same is true for *paryaptak Ratnaprabha prithvi nairayiks* [2] The same is true for infernal beings of lower hells up to the seventh hell

२८. [१] जे अपज्जत्तगसम्मुच्छिम-जलचर जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया। एवं पज्जत्तगा वि।

२८. [१] जो पुद्‌गल अपर्याप्तक-सम्मूर्च्छिम-जलचर-प्रयोग-परिणत है, वे औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर-प्रयोग-परिणत है। इसी प्रकार पर्याप्तक-सम्मूर्च्छिम-जलचर-प्रयोग-परिणत पुद्‌गलो के सम्बन्ध मे जानना चाहिए।

28. [1] The matter particles (*pudgala*) that are *aparyaptak sammurchhim jalachar prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as underdeveloped bodies of aquatic animals of asexual origin) are, in fact, consciously transformed as gross physical (*audarik*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies The same is true for *paryaptak sammurchhim jalachar prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as fully developed bodies of aquatic animals of asexual origin)

[२] गब्भवक्कतिया अपज्जत्तया एवं चेव। [३] पज्जत्तयाणं एव चेव, नवरं सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं।

[२] गर्भज-अपर्याप्तक-जलचर के विषय मे भी इसी प्रकार कहना चाहिए। [३] गर्भज-पर्याप्तक-जलचर के विषय मे भी इसी तरह जानना चाहिए। किन्तु विशेषता यह है कि उनको पर्याप्तक बादर वायुकायिकवत् चार शरीर होते है।

[2] The same should be repeated for matter particles related to *aparyaptak garbhavyutkrantik jalachar* (underdeveloped aquatic animals born out of womb) [3] The same is also true for *paryaptak garbhavyutkrantik jalachar* (fully developed aquatic animals born out of womb) with a difference that like air-bodied beings they have four kinds of bodies

[४] एवं जहा जलचरेसु चत्तारि आलावगा भणिया एव चउप्पय-उरपरिसप्प-भुयपरिसप्पखहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा।

[४] जिस तरह जलचरो के चार आलापक कहे है, उसी प्रकार चतुष्पद, उर परिसर्प, भुजपरिसर्प एव खेचरो के भी (१ सम्मूर्च्छिम, २ गर्भज, ३ पर्याप्तक, ४ अपर्याप्तक) चार-चार आलापक कहने चाहिए।

[4] Like the four statements (regarding *sammurchhim*, *garbhaj*, *paryaptak*, and *aparyaptak*) about aquatic animals, repeat four statements each about *chatushpad*, *ur-parisarp*, *bhuj-parisarp* and *khechar* (quadrupeds, non-limbed reptiles, limbed reptiles and aerial animals)

२९. [१] जे सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया। [२] एवं गब्भवक्कंतिया वि अपज्जत्तगा वि। [३] पज्जत्तगा वि एवं चेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि।

२९. [१] जो पुद्‌गल सम्मूर्च्छिम-मनुष्य-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे औदारिक, तैजस और कार्मण-शरीर-प्रयोग-परिणत है। [२] इसी प्रकार अपर्याप्तक गर्भज-मनुष्य के विषय मे भी कहना चाहिए। [३] पर्याप्तक गर्भज-मनुष्य के विषय मे भी (सामान्यतया) इसी तरह कहना चाहिए। विशेषता यह है कि इनमे (औदारिक से लेकर कार्मण तक) पाँच शरीर कहना चाहिए।

29. [1] The matter particles (*pudgala*) that are *sammurchhim manushya panchendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as bodies of five sensed human beings of asexual origin) are, in fact, consciously transformed as gross physical (*audarik*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies. [2] The same should be repeated for matter particles related to *aparyaptak garbhavyutkrantik manushya* (underdeveloped human beings born out of womb) [3] The same is also (generally) true for *paryaptak garbhavyutkrantik manushya* (fully developed human beings born out of womb) with a difference that all the five kinds of bodies from *audarik* to *karman* should be mentioned

३०. [१] जे अपज्जत्तगा असुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव। एवं पज्जत्तगा वि। [२] एव दुयएणं भेदेणं जाव थणियकुमारा।

३०. [१] जो पुद्‌गल अपर्याप्तक असुरकुमार-भवनवासीदेव-प्रयोगपरिणत है, उनका आलापक नैरयिको की तरह कहना चाहिए। पर्याप्तक-असुरकुमारदेवो के विषय मे और [२] स्तनितकुमारपर्यन्त पर्याप्तक-अपर्याप्तक दोनो मे भी इसी तरह कहना चाहिए।

30. [1] The matter particles (*pudgala*) that are *aparyaptak Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as underdeveloped bodies of *Asur Kumar* abode dwelling gods) should be described like the statement about infernal beings That about *paryaptak Asur Kumar* gods and [2] *paryaptak* and *aparyaptak* divine beings up to *Stanit Kumar* gods also follows the same pattern

३१. एवं पिसाया जाव गंधव्वा, चंदा जाव ताराविमाणा, सोहम्मो कप्पो जाव अच्चुओ, हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्ज जाव उवरिमउवरिमगेवेज्ज०, विजय-अणुत्तरोववाइए जाव सव्वट्ठसिद्धअणु०, एक्केक्केणं दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव परिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया। दंडगा ३।

३१. इसी तरह पिशाच से लेकर गन्धर्व वाणव्यन्तर-देव, चन्द्र से लेकर ताराविमान-पर्यन्त, ज्योतिष्क-देव और सौधर्मकल्प से लेकर यावत् अच्युतकल्प-पर्यन्त तथा अध स्तन-अध स्तन-ग्रैवेयक कल्पातीतदेव से लेकर उपरितन-उपरितन ग्रैवेयककल्पातीत देव तक एव विजय-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीतदेव से लेकर यावत् सर्वार्थसिद्ध कल्पातीत वैमानिकदेवो तक पर्याप्तक और अपर्याप्तक दोनो

भेदो मे वैक्रिय, तैजस और कार्मण-शरीर-प्रयोग-परिणत पुद्गल कहने चाहिए। [**तीसरा दण्डक पूर्ण हुआ।**]

31. In the same way it should be stated that matter particles that are consciously transformed (*prayoga parinat pudgala*) as fully developed as well as underdeveloped bodies of the following divine beings are, in fact, consciously transformed as transmutable (*vaikriya*), fiery (*taijas*) and *karmic* (*karman*) bodies—*Pishaach* and so on up to *Gandharva* (eight classes of interstitial gods), *Chandra* to *Taara* (five classes of stellar gods, *Saudharma Kalpopapannak* to *Achyut Kalpopapannak* gods, *Adhastan-adhastan Graiveyak Kalpateet* to *Uparitan-uparitan Graiveyak Kalpateet Vaimanik* gods, and *Vijaya Anuttaraupapatik Kalpateet* to *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik* gods **[Third Dandak Concluded]**

चतुर्थ दण्डक FOURTH DANDAK

(इस दण्डक मे पॉच इन्द्रियो की अपेक्षा से कथन है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of five sense organs]

३२. [१] जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय-एगिंदिय-पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। [२] जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइया० एव चेव। [३] जे अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइया० एव चेव। [४] एवं पज्जत्तगा वि। [५] एव चउक्कएणं भेदेण जाव वणस्सइकाइया।

३२. [१] जो पुद्गल अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है। [२] जो पुद्गल पर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे भी स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है। [३] जो अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत और [४] पर्याप्तक बादरपृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल भी स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत समझने चाहिए। [५] इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक पर्यन्त-प्रत्येक के सूक्ष्म, बादर, पर्याप्तक और अपर्याप्तक, इन चार-चार भेदो मे स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल कहने चाहिए।

32. [1] The matter particles (pudgala) that are consciously transformed as underdeveloped bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as sense organ of touch (*sparshanendriya prayoga parinat*) [2] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak sukshma*

prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala) are also consciously transformed as sense organ of touch (*sparshanendriya prayoga parinat*) [3] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped bodies of gross one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak baadar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) and those transformed as fully developed bodies of gross one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak baadar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are also consciously transformed as sense organ of touch (*sparshanendriya prayoga parinat*) [5] In the same way all the aforesaid four classes (*sukshma, baadar, paryaptak and aparyaptak*) of one-sensed beings up to plant-bodied beings (*vanaspatikaaya*) should be stated to have been consciously transformed as sense organ of touch (*sparshanendriya prayoga parinat*)

३३. [१] जे अपज्जत्ता बेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिदिय–फासिंदियपयोगपरिणया। [२] जे पज्जत्ताबेइंदिया एवं चेव। [३] एवं जाव चउरिंदिया, नवरं एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं।

३३. [१] जो पुद्गल अपर्याप्तक द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे जिह्वेन्द्रिय एव स्पर्शेन्द्रिय प्रयोग-परिणत है। [२] इसी प्रकार पर्याप्तक-द्वीन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल भी जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय प्रयोगपरिणत है। [३] इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय जीवो तक (पर्याप्तक और अपर्याप्तक दोनो मे) कहना चाहिए। किन्तु एक-एक इन्द्रिय बढानी चाहिए। (अर्थात्-त्रीन्द्रिय जीवो के स्पर्श-जिह्वा-घ्राणेन्द्रिय है और चतुरिन्द्रिय जीवो के स्पर्श-जिह्वा-घ्राण-चक्षुरिन्द्रिय प्रयोगपरिणत है।)

33. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped bodies of two-sensed beings (*aparyaptak dvindriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as sense organs of taste and touch (*jihvendriya evam sparshanendriya prayoga parinat*) [2] In the same way the matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed bodies of two-sensed beings (*paryaptak dvindriya prayoga parinat pudgala*) are also consciously transformed as sense organs of taste and touch [3] The same should be repeated with regard to other beings (fully and under developed) up to four-sensed beings The difference is that one sense organ should added to the preceding one (touch, taste and smell for three-sensed beings and touch, taste, smell and vision for four-sensed beings)

३४. [१] जे अपज्जत्तारयणप्पभापुढविनेरइयपचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय–चक्खिदिय–घाणिंदिय–जिब्भिदिय– फासिंदियपयोगपरिणया। [२] एवं पज्जत्तगा वि।

३४. [१] जो पुद्गल अपर्याप्त रत्नप्रभा (आदि) पृथ्वी नैरयिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे श्रोत्रेन्द्रिय-चक्षुरिन्द्रिय- घ्राणेन्द्रिय-जिह्वेन्द्रिय-स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोगपरिणत है। [२] इसी प्रकार पर्याप्तक (रत्नप्रभादिपृथ्वी नैरयिक-पचेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत पुद्गल के विषय मे भी पूर्ववत् (पचेन्द्रियप्रयोगपरिणत) कहना चाहिए।

34. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed infernal beings of Ratnaprabha and other hells (*aparyaptak Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as sense organs of hearing, seeing, smelling, taste and touch (*shrotrendriya, chakshurindriya, ghranendriya, jihvendriya evam sparshanendriya prayoga parinat*) [2] The same should be repeated with regard to matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as bodies of fully developed five-sensed infernal beings of Ratnaprabha and other hells (*aparyaptak Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala*) In other words they are also transformed as five sense organs

३५. एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा, जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते सोइंदिय-चक्खिदिय जाव परिणया। दंडगा ४।

३५. पचेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिक, मनुष्य और देव, इन सबके विषय मे भी इसी प्रकार कहना चाहिए, यावत् जो पुद्गल पर्याप्तसर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिककल्पतीतदेव-प्रयोग-परिणत है, वे सब श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है। [**चौथा दण्डक पूर्ण हुआ।**]

35. The same should also be repeated for matter related to five sensed animals, human and divine beings and so on up to The matter particles (*pudgala*) that are *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Vaimanik dev prayoga parinat pudgala* (consciously transformed as bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps*) all are, in fact, consciously transformed as sense organs of hearing, seeing and so on up to touch (*shrotrendriya, chakshurindriya,* and so on up to *sparshanendriya prayoga parinat*). **[Fourth Dandak Concluded]**

पचम दण्डक FIFTH DANDAK

(इस दण्डक मे शरीर और इन्द्रिय इन दोनो की अपेक्षा से कथन है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of both body types and sense organs]

३६. [१] **जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय–तेय–कम्मसरीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम० एवं चेव। [२] बादर० अपज्जत्ता एवं चेव। एव पज्जत्तगा वि।**

३६. [१] जो पुद्गल अपर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-तैजस-कार्मणशरीर प्रयोग-परिणत है, वे स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत है। जो पुद्गल पर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-तैजस-कार्मण-शरीर-प्रयोग-परिणत है, वे भी स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत है। [२] अपर्याप्तबादरकायिक एव पर्याप्तबादर पृथ्वीकायिक-औदारिकादि शरीर तीनो के विषय मे भी इस प्रकार कहना चाहिए।

36. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped gross physical, fiery and *karmic* bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as sense organ of touch (*sparshanendriya prayoga parinat*) The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed gross physical, fiery and *karmic* bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as sense organ of touch (*sparshanendriya prayoga parinat*) [2] The same should be repeated for underdeveloped and fully developed gross physical (etc) bodies of gross earth-bodied beings

३७. **एवं एएणं अभिलावेणं जस्स जइ इंदियाणि सरीराणि य ताणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदिय–वेउव्विय–तेया–कम्मासरीरपयोगपरिणया ते सोइदिय–चक्खिदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया। दडगा ५।**

३७. इस प्रकार इस अभिलाप के द्वारा जिस जीव के जितनी इन्द्रियाँ और शरीर हो, उसके उतनी इन्द्रियो तथा उतने शरीरो का कथन करना चाहिए। यावत् जो पुद्गल पर्याप्तसर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीतदेव पचेन्द्रिय-वैक्रिय-तैजस-कार्मणशरीर-प्रयोग-परिणत है, वे श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है। [**पॉचवा दण्डक पूर्ण हुआ।**]

37. In the same way the aforesaid statement should be repeated for all beings on the basis of the number of sense organs and body types it has.. and so on up to The matter particles (*pudgala*) that are *paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet dev panchendriya vaikriya-taijas-karman sharira prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as five sensed transmutable-fiery-karmic bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* divine beings

beyond the *Kalps*) all are, in fact, consciously transformed as sense organs of hearing, seeing and so on up to touch (*shrotrendriya, chakshurindriya*, and so on up to *sparshanendriya prayoga parinat*) **[Fifth Dandak Concluded]**

छठा दण्डक SIXTH DANDAK

(इस दण्डक मे वर्ण, गध, रस, स्पर्श आदि सस्थान की अपेक्षा से कथन किया है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of constitution including appearance (colour), smell, taste and touch]

३८. [१] जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय-एगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील०, लोहिय०, हालिद्द०, सुक्किल०। गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपदि, अंबिलरसपदि, महुररसपदि। फासओ कक्खडफासपरि० जाव लुक्खफासपरि०। संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि वट्ट० तंस० चउरंस० आययसंठाणपरिणया वि। [२] जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइया एवं चेव।

३८. [१] जो पुद्‌गल अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण, नीले, रक्त, पीत (हारिद्र) एव श्वेतवर्ण रूप से परिणत है, गन्ध से सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध रूप से परिणत है, रस से तीखे, कटु, काषाय (कसैले), खट्टे और मीठे, इन पॉचो रसरूप मे परिणत है, स्पर्श से कर्कशस्पर्श यावत् रूक्षस्पर्श के रूप मे परिणत है और सस्थान से परिमण्डल, वृत्त (गोल), त्र्यस (तिकोन), चतुरस्र (चौकोर) और आयत (लम्बा), इन पॉचो सस्थानो के रूप मे परिणत है।

[२] जो पुद्‌गल पर्याप्तक-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-प्रयोग-परिणत है, उन्हे भी इसी प्रकार वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श-सस्थानरूप मे परिणत जानना चाहिए।

38. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed as attributes of five colours (black, blue, red, yellow, and white), two smells (good and bad), five tastes (bitter, pungent, astringent, sour and sweet), eight touches (hard, soft, heavy, light, cold, hot, smooth and coarse), and five constitutions (sphere, circle, triangle, square and rectangle)

[2] The matter particles (pudgala) that are consciously transformed as fully developed bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala*) are also consciously transformed as attributes of colour, taste, touch and constitution

३९. एव जहाऽऽणुपुव्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि। दंडगा ६।

३९. इसी प्रकार क्रमश सभी (पूर्वोक्त) के विषय मे जानना चाहिए। यावत् जो पुद्गल पर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक देवपचेन्द्रिय-प्रयोगपरिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण रूप मे यावत् सस्थान से आयत सस्थान तक परिणत है। [छठा दण्डक पूर्ण हुआ।]

39. All the remaining (aforesaid) follow the same pattern and so on up to The matter particles (*pudgala*) that are *paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet dev panchendriya prayoga parinat pudgala* (consciously transformed as five sensed bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* divine beings beyond the *Kalps*) all are, in fact, consciously transformed as attributes of colour, taste, touch and constitution **[Sixth Dandak Concluded]**

सप्तम दण्डक **SEVENTH DANDAK**

(इस दण्डक मे औदारिक आदि पाँच शरीर तथा वर्ण-गध आदि के साथ कथन किया गया है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of five types of bodies including *audarik* and constitution including appearance (colour), smell, taste and touch]

४०. [१] जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिण्णया वि जाव आययसंठाणपरिण्णया वि। [२] जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एवं चेव।

४०. [१] जो पुद्गल अपर्याप्तक-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-तैजस-कार्मणशरीर-प्रयोग परिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे भी परिणत है, यावत् आयत-सस्थान-रूप मे भी परिणत है। [२] इसी प्रकार पर्याप्तक-सूक्ष्म- पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-तैजस-कार्मणशरीर-प्रयोग-परिणत है, वे भी इसी तरह वर्णादि-परिणत है।

40. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped gross physical, fiery and *karmic* bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman sharira prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed also as attributes of black colour and so on up to rectangular constitution [2] In the same way the matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed gross physical, fiery and *karmic* bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya

audarik-taijas-karman prayoga parinat pudgala) are also consciously transformed as attributes including colour

४१. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए नेयव्व जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध–अणुत्तरोववाइयदेव–पंचिंदियवेउव्विय– तेया–कम्मासरीर जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि। दंडगा ७।

४१. इस प्रकार यथानुक्रम से (सभी जीवो के विषय मे) जानना चाहिए। जिसके जितने शरीर हो, उतने कहने चाहिए, यावत् जो पुद्गल पर्याप्त–सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक देव–पचेन्द्रिय–वैक्रिय–तैजस–कार्मण–शरीर प्रयोग परिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे, यावत् सस्थान से आयतसस्थानरूप मे परिणत है। [**सातवा दण्डक पूर्ण हुआ।**]

41. All the remaining (aforesaid) follow the same pattern and so on up to The matter particles (*pudgala*) that are *paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet dev panchendriya vaikriya, taijas and karman sharira prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as five sensed transmutable, fiery and karmic bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* divine beings beyond the *Kalps*) all are, in fact, consciously transformed also as attributes of black colour and so on up to rectangular constitution **[Seventh Dandak Concluded]**

अष्टम दण्डक EIGHTH DANDAK

(इस दण्डक मे इन्द्रिय तथा वर्णादि के सम्बन्ध मे कथन है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of sense organs and constitution including colour]

४२. [१] जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय–फासिंदियपयोग–परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आययसंठाणपरिणया वि। [२] जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव।

४२. [१] जो पुद्गल अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथ्वीकायिक–एकेन्द्रिय–स्पर्शेन्द्रिय–प्रयोग–परिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे परिणत है, यावत् सस्थान से आयत–सस्थान के रूप मे परिणत है। [२] जो पुद्गल पर्याप्तक–सूक्ष्म–पृथ्वीकायिक–एकेन्द्रिय–स्पर्शेन्द्रिय–प्रयोग परिणत है, वे भी इसी प्रकार जानने चाहिए।

42. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped sense organ of touch of bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya sparshanendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed also as attributes of black colour and so on up

to rectangular constitution [2] The same is true for matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed sense organ of touch of bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya sparshanendriya prayoga parinat pudgala*)

४३. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए जस्स जइ इंदियाणि तस्स तइ भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया वि ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आययसंठाणपरिणया वि। दंडगा ८।

४३. इसी प्रकार अनुक्रम से सभी आलापक कहने चाहिए। विशेष यह कि जिसके जितनी इन्द्रियाँ हो उतनी कहनी चाहिए। यावत् जो पुद्गल पर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक देव-पचेन्द्रिय-श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोगपरिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे, यावत् सस्थान से आयत सस्थान के रूप मे परिणत है। [**आठवॉ दण्डक पूर्ण हुआ।**]

43. All the remaining (aforesaid) follow the same pattern on the basis of the number of sense organs it has and so on up to The matter particles (*pudgala*) that are *paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik dev panchendriya* (*shrotrendriya* to *sparshanendriya*) *prayoga parinat pudgala* [matter consciously transformed as five sensed (hearing to touching) bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* divine beings beyond the *Kalps*] are, in fact, consciously transformed also as attributes of black colour and so on up to rectangular constitution **[Eighth Dandak Concluded]**

नौवॉ दण्डक **NINTH DANDAK**

(इस दण्डक मे शरीर, इन्द्रिय तथा वर्णादि की अपेक्षा से कथन है।)

[This section describes the aforesaid beings in context of body-types, sense organs and constitution including colour]

४४. [१] जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय-एगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरफासिंदियपयोग-परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि। [२] जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइया एवं चेव।

४४. [१] जो पुद्गल अपर्याप्तक-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-तैजस-कार्मणशरीर-स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोग- परिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे भी परिणत है, यावत् सस्थान से आयत-सस्थान के रूप मे परिणत है। [२] जो पुद्गल पर्याप्तक-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-तैजस-कार्मणशरीर-स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोगपरिणत है, वे भी इसी तरह (पूर्ववत्) जानने चाहिए।

44. [1] The matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as underdeveloped gross physical, fiery and *karmic* bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings with sense organ of touch (*aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman sharira sparshanendriya prayoga parinat pudgala*) are, in fact, consciously transformed also as attributes of black colour and so on up to . rectangular constitution [2] The same is true for the matter particles (*pudgala*) that are consciously transformed as fully developed gross physical, fiery and *karmic* bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings with sense organ of touch (*paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman sharira sparshanendriya prayoga parinat pudgala*)

४५. एवं जहाऽऽणुपुव्वीए जस्स जइ सरीराणि इंदियाणि य तस्स तइ भावियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव देवपंचिंदिय-वेउव्विय-तेया-कम्मासोइदिय जाव फासिंदिय-पयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आययसंठाणपरिणया वि। एव एए नव दंडगा १।

४५. इसी प्रकार अनुक्रम से सभी आलापक कहने चाहिए। विशेषतया जिसके जितने शरीर और इन्द्रियाँ हो, उसके उतने शरीर और उतनी इन्द्रियो का कथन करना चाहिए, यावत् जो पुद्‌गल पर्याप्तकसर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिकदेव-पचेन्द्रिय-वैक्रिय-तैजस-कार्मण-शरीर तथा श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय-प्रयोगपरिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे यावत् सस्थान से आयत सस्थान के रूपो मे परिणत है। इस प्रकार ये नौ दण्डक पूर्ण हुए।

45. All the remaining (aforesaid) follow the same pattern on the basis of the number of body-types and sense organs it has and so on up to The matter particles (*pudgala*) that are *paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik dev panchendriya vaikriya-taijas-karman sharira and shrotrendriya to sparshanendriya prayoga parinat pudgala* (matter consciously transformed as five sensed transmutable-fiery-*karmic* bodies of *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* divine beings beyond the *Kalps* with sense organs of hearing to touching) are, in fact, consciously transformed also as attributes of black colour and so on up to rectangular constitution **[All Nine Dandaks Concluded]**

***मिश्रपरिणत-पुद्‌गलो के नौ दण्डक* JOINT TRANSFORMATION IN LIGHT OF NINE DANDAKS**

४६. [प्र] मीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा-एगिंदियमीसापरिणया जाव पंचिदियमीसापरिणया।

४६. [प्र.] भगवन् ! मिश्रपरिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ] गौतम ! पाँच प्रकार के है। यथा–एकेन्द्रिय–मिश्रपरिणत पुद्गल यावत् पचेन्द्रियमिश्रपरिणत पुद्गल।

46. [Q.] *Bhante* ! How many types of *mishra parinat pudgala* (jointly transformed matter) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of five types—*Ekendriya mishra parinat pudgala* (matter jointly transformed or bodies of one-sensed beings) and so on up to *panchendriya mishra parinat pudgala* (matter jointly transformed as bodies of five-sensed beings)

४७. [प्र.] एगिंदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ.] गोयमा ! एवं जहा पओगपरिणएहिं नव दंडगा भणिया एवं मीसापरिणएहि वि नव दंडगा भाणियव्वा, तहेव सव्वं निरवसेसं, नवरं अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेसं तं चेव, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो० जाव आययसंठाणपरिणया वि।

४७. [प्र.] भगवन् ! एकेन्द्रिय मिश्रपरिणत पुद्गल कितने प्रकार के है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार प्रयोगपरिणत पुद्गलो के विषय मे नौ दण्डक कहे है, उसी प्रकार मिश्र–परिणत पुद्गलो के विषय मे भी नौ दण्डक कहने चाहिए, और सारा वर्णन उसी प्रकार करना चाहिए। विशेषता यह है कि प्रयोग–परिणत के स्थान पर मिश्र–परिणत कहना चाहिए। शेष समस्त वर्णन पूर्ववत् करना चाहिए, यावत् जो पुद्गल पर्याप्त–सर्वार्थसिद्ध–अनुत्तरौपपातिक है, वे यावत् आयत–सस्थानरूप से भी परिणत है।

47. [Q.] *Bhante* ! How many types of *ekendriya mishra parinat pudgala* (matter jointly transformed as bodies of one-sensed beings) are there ?

[Ans.] Gautam ! Like nine aforesaid sections about consciously transformed matter, nine sections about jointly transformed matter should be stated following the same pattern The only difference being that instead of 'consciously transformed matter' 'jointly transformed matter' should be stated All the remaining text is to be repeated as aforesaid up to—The matter particles (pudgala) that are *paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* and so on up to transformed also as attributes of rectangular constitution

विस्रसापरिणत पुद्गलों के भेद–प्रभेद TYPES OF NATURAL TRANSFORMATION

४८. [प्र.] वीससापरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ?

[उ] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया। जे वण्णपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवण्णपरिणया जाव सुक्किल्लवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि। एवं जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेसं जाव जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि।

४८. [प्र] भगवन् ! विस्रसा-परिणत (स्वभाव से परिणाम को प्राप्त) पुद्गल कितने प्रकार के है?

[उ] गौतम ! पॉच प्रकार के है। वे इस प्रकार है-(१) वर्णपरिणत, (२) गन्धपरिणत, (३) रसपरिणत, (४) स्पर्शपरिणत, और (५) सस्थानपरिणत। जो पुद्गल वर्ण-परिणत है, वे पाँच प्रकार के है। यथा-काले वर्ण के रूप मे परिणत यावत् शुक्ल वर्ण के रूप मे परिणत पुद्गल। जो गन्धपरिणत पुद्गल है, वे दो प्रकार के है। यथा-सुरभिगन्धपरिणत और दुरभिगन्धपरिणत पुद्गल। इस प्रकार आगे का सारा वर्णन प्रज्ञापनासूत्र के प्रथम पद के अनुसार यहाँ भी करना चाहिए, यावत् जो पुद्गल सस्थान से आयत-सस्थान-परिणत है, वे वर्ण से काले वर्ण के रूप मे भी परिणत है, यावत् (स्पर्श से) रूक्ष-स्पर्शरूप मे भी परिणत है।

48. [Q.] *Bhante* ! How many types of *visrasa parinat pudgala* (naturally transformed matter) are there ?

[Ans.] Gautam ! They are of five types—(1) *varna parinat* (transformed as attributes of colour), (2) *gandh parinat* (transformed as attributes of smell), (3) *rasa parinat* (transformed as attributes of taste), (4) *sparsh parinat* (transformed as attributes of touch), and (5) *samsthan parinat* (transformed as attributes of constitution) The *varna parinat pudgala* are of five types—transformed as black colour and so on up to transformed as white colour The *gandh parinat pudgala* are of two types—good smell and bad smell In the same way all the following matter is to be repeated here as mentioned in the first chapter of *Prajnapana Sutra* and so on up to the matter that is transformed as rectangular constitution is also transformed as black colour and so on up to rough touch

एक द्रव्य के परिणमन की प्ररूपणा **TRANSFORMATION OF ONE SUBSTANCE**

४९. [प्र] एगे भंते ! दव्वे किं पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?

[उ.] गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा।

४९. [प्र] भगवन् ! एक द्रव्य क्या प्रयोग-परिणत होता है, मिश्रपरिणत होता है अथवा विस्रसा-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! एक द्रव्य, प्रयोग-परिणत होता है अथवा मिश्रपरिणत होता है, अथवा विस्रसा-परिणत होता है।

49. [Q.] *Bhante* ! Is a single substance *prayoga parinat* (consciously transformed), *mishra parinat* (jointly transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed)?

[Ans.] Gautam ! A single substance could be *prayoga parinat* (consciously transformed), or *mishra parinat* (jointly transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed).

५०. [प्र.] जइ पयोगपरिणए किं मणप्पयोगपरिणए, वइप्पयोगपरिणए, कायप्पयोगपरिणए ?

[उ.] गोयमा ! मणप्पयोगपरिणए वा, वइप्पयोगपरिणए वा, कायप्पयोगपरिणए वा।

५०. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य प्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह मन प्रयोगपरिणत होता है, वचन-प्रयोग-परिणत होता है अथवा कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह मन प्रयोगपरिणत होता है या वचन-प्रयोग-परिणत होता है अथवा कायप्रयोगपरिणत होता है।

50. [Q.] *Bhante* ! If a substance is *prayoga parinat* (consciously transformed), then is it transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*)?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), or conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*).

५१. [प्र.] जइ मणप्पयगपरिणए किं सच्चमणप्पओगपरिणए ? मोसमणप्पयोगपरिणए ? सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए ? असच्चामोसमणप्पयोगपरिणए ?

[उ.] गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणए वा, मोसमणप्पयोग० वा, सच्चामोसमणप्प०, असच्चामोसमणप्प० वा।

५१. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य मन प्रयोग-परिणत होता है तो क्या वह सत्यमन-प्रयोग-परिणत होता है, अथवा मृषा-मन प्रयोगपरिणत होता है, या सत्य-मृषा-मन प्रयोग-परिणत होता है, या असत्यामृषा-मन प्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है, अथवा मृषामन प्रयोगपरिणत होता है, या सत्य-मृषामन प्रयोगपरिणत होता है या फिर असत्यामृषामन प्रयोग-परिणत होता है।

51. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), then is it transformed due to truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), conscious untruthful activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*), truthful-untruthful conscious activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*), or non-truthful-non-untruthful conscious activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), or untruthful conscious activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*), or truthful-untruthful conscious activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*), or non-truthful-non-untruthful conscious activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*)

५२. [प्र.] जइ सच्चमणप्पओगपरिणए किं आरंभसच्चमणप्पओगपरिणए ? अणारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए ? सारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए ? असारभसच्चमण० ? समारंभसच्चमणप्पयोगपरि० ? असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए ?

[उ.] गोयमा ! आरंभसच्चमणप्पओगपरिणए वा जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए वा।

५२. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, सत्यमन प्रयोग-परिणत होता है तो क्या वह आरम्भ-सत्यमन प्रयोग-परिणत होता है, अनारम्भ-सत्यमन प्रयोग-परिणत होता है, सारम्भ-सत्यमन प्रयोग-परिणत होता है, असारम्भ-सत्यमन प्रयोग-परिणत होता है, समारम्भ-सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है अथवा असमारम्भ-सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह आरम्भ-सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है, अथवा यावत् असमारम्भ-सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है।

52. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), then is it transformed due to truthful sinning conscious activity of mind (*aarambh satya manah-prayoga parinat*), truthful conscious activity of mind to resolve to sin (*samrambh satya manah-prayoga parinat*), truthful tormenting conscious activity of mind (*samaarambh satya manah-prayoga parinat*), truthful non-sinning conscious activity of mind (*anaarambh satya manah-prayoga parinat*), truthful conscious activity of mind not to resolve to sin (*asamrambh satya manah-prayoga parinat*), or truthful non-tormenting conscious activity of mind (*asamaarambh satya manah-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to truthful sinning conscious activity of mind (*aarambh satya manah-prayoga parinat*), or . and so on up to. untruthful non-tormenting conscious activity of mind (*asamaarambh satya manah-prayoga parinat*)

५३. [प्र. १] जइ मोसमणप्पयोगपरिणए किं आरंभमोसमणप्पयोगपरिणए वा ?

[उ] एवं जहा सच्चेणं तहा मोसेण वि। [२] एवं सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए वि। एवं असच्चामोसमणप्पयोगेण वि।

५३. [प्र. १] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, मृषामन प्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह आरम्भ-मृषामन प्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् असमारम्भ-मृषामन प्रयोग-परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! जिस प्रकार (पूर्वोक्त विशेषणयुक्त) सत्यमन प्रयोग-परिणत के विषय मे कहा है, उसी प्रकार (पूर्वोक्त विशेषणयुक्त) मृषामन प्रयोग-परिणत के विषय मे भी कहना चाहिए। [२] इसी प्रकार (पूर्वोक्त विशेषणो से युक्त) सत्यमृषा-मन प्रयोग-परिणत के विषय मे भी तथा इसी प्रकार असत्य-मृषामन प्रयोग-परिणत के विषय मे भी कहना चाहिए।

53. [Q. 1] *Bhante* ! If a substance is transformed due to untruthful conscious activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*), then is it transformed due to untruthful sinning conscious activity of mind (*aarambh mrisha manah-prayoga parinat*), and so on up to or untruthful non-tormenting conscious activity of mind (*asamaarambh mrisha manah-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! What has been said with regard to truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*) should also be repeated with regard to untruthful conscious activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*) [2] The same pattern holds good for truthful-untruthful conscious activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*), and non-truthful-non-untruthful conscious activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*)

५४. [प्र.] जइ वइप्पयोगपरिणए किं सच्चवइप्पयोगपरिणए मोसवयप्पयोगपरिणए ?

[उ.] एवं जहा मणप्पयोगपरिणए तहा वयप्पयोगपरिणए वि जाव असमारंभवयप्पयोगपरिणए वा।

५४. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, वचनप्रयोग-परिणत होता है तो, क्या वह सत्यवचन-प्रयोग-परिणत होता है, मृषावचन-प्रयोग-परिणत होता है, सत्यमृषा-वचन-प्रयोग-परिणत होता है अथवा असत्यामृषा-वचन-प्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार मन प्रयोगपरिणत के विषय मे कहा है, उसी प्रकार वचन-प्रयोग-परिणत के विषय मे भी कहना चाहिए, यावत् वह असमारम्भ-वचन-प्रयोग-परिणत भी होता है।

54. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*), then is it transformed due to truthful conscious activity of speech (*satya vachan-prayoga parinat*), untruthful conscious activity of speech (*mrisha vachan-prayoga parinat*), truthful-untruthful conscious activity of speech (*satya-mrisha vachan-prayoga parinat*), or non-truthful-non-untruthful conscious activity of speech (*asatya-amrisha vachan-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! What has been said with regard to transformation due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*) should also be repeated with regard to transformation due to conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) and so on up to transformed due to untruthful non-tormenting conscious activity of speech (*asamaarambh satya vachan-prayoga parinat*)

विवेचन प्रयोग की परिभाषा—मन, वचन और काया के व्यापार को '**योग**' कहते है अथवा वीर्यान्तरायकर्म के क्षय या क्षयोपशम से मनोवर्गणा, वचनवर्गणा और कायवर्गणा के पुद्गलो का आलम्बन लेकर आत्मप्रदेशो मे होने वाले परिस्पन्दन (कम्पन या हलचल) को भी योग कहा जाता है, इसी योग को यहाँ 'प्रयोग' कहा गया है।

प्रयोग–परिणत . तीनो योगो द्वारा—काययोग द्वारा मनोवर्गणा के द्रव्यो को ग्रहण करके मनोयोग द्वारा मनोरूप से परिणमाए हुए पुद्गल '**मन प्रयोगोपरिणत**' कहलाते है। काययोग द्वारा भाषाद्रव्य को ग्रहण करके वचनयोग द्वारा भाषारूप मे परिणत करके बाहर निकाले जाने वाले पुद्गल '**वचन–प्रयोग–परिणत**' कहलाते है। औदारिक आदि काययोग द्वारा ग्रहण किये हुए औदारिकादि वर्गणाद्रव्यो को औदारिकादि शरीररूप मे परिणमाए हो, उन्हे '**कायप्रयोगपरिणत**' कहते है।

योगो के भेद–प्रभेद और उनका स्वरूप—आलम्बन के भेद से प्रयोग के तीन भेद है–मनोयोग, वचनयोग और काययोग। ये ही मुख्य तीन योग है। फिर इनके अवान्तर भेद क्रमश ४ मनोयोग के, ४ वचनयोग के और ७ काययोग के है।

आरम्भ, सरम्भ और समारम्भ का स्वरूप—जीवो की हिसा 'आरम्भ' है, हिंसा के लिए मानसिक सकल्प करना सरम्भ (सारम्भ) है। जीवो को परिताप पहुँचाना समारम्भ है। जीवहिंसा के अभाव को अनारम्भ कहते है। हिसा मे मन प्रयोग द्वारा परिणत पुद्गल मन प्रयोग–परिणत कहलाते है। इसी तरह सभी का स्वरूप समझना चाहिए।

Elaboration—Prayoga—Activities associated with mind, speech and body are called *yoga* The vibration in the soul space-points (*atmapradesh*) taking effect due to association of *karmic* particles of mental category (*manovargana*), vocal category (*vachan-vargana*) and physical category (*kaayavargana*) triggered by destruction or destruction-cum-pacification of *Viryantaraya* (potency hindering) *karma* is also called *yoga* Here this latter activity is taken as *prayoga*

Transformation due to conscious activity through three associations (*yoga*)—The matter particles (*pudgala*) of the mental category

(*manovargana*) acquired through physical activity (*kaaya yoga*) and transformed into thoughts through mental activity (*manoyoga*) are called *manah-prayoga parinat* matter particles The matter particles (*pudgala*) of the speech category (*bhashavargana*) acquired through physical activity (*kaaya yoga*) and transformed into speech through speech activity (*vachan yoga*) are called *vachan-prayoga parinat* matter particles The matter particles (*pudgala*) of the physical categories (*kaayavargana*) including gross physical (*audarik*) acquired through physical activity (*kaaya yoga*) and transformed into bodies including gross physical are called *kaaya-prayoga parinat* matter particles

Yoga—With reference to association *prayoga* (activity) has three main categories—mental activity (*manoyoga*), vocal activity (*vachan yoga*) and physical activity (*kaayayoga*) They have various sub-categories as aforesaid—four of mental activity (*manoyoga*), four of vocal activity (*vachan yoga*) and seven of physical activity (*kaayayoga*)

Arambh (etc.)—To indulge in sinful activity that harms or kills some living being is *aarambh* To think and resolve to indulge in sinful activity is *samrambh* To torment or torture living beings is *samaarambh* The opposite of *aarambh* or not to harm beings is *anaarambh* Matter particles including the minute *karmic* particles transformed due to conscious activity of mind are called *manah-prayoga parinat pudgala* Other terms related to transformation follow the same pattern

कायप्रयोग-परिणत TRANSFORMATION DUE TO CONSCIOUS PHYSICAL ACTIVITY

५५. [प्र] जइ कायप्पयोगपरिणए किं ओरालियसरीर-कायप्पयोगपरिणए १, ओरालियमीसासरीर-कायप्पयोगपरिणए २, वेउव्वियसरीर-कायप्पयोगपरिणए ३, वेउव्वियमीसासरीर-कायप्पयोगपरिणए ४, आहारगसरीर-कायप्पओगपरिणए ५, आहारकमीसासरीर-कायप्पयोगपरिणए ६, कम्मासरीर-कायप्पओगपरिणए ७ ?

[उ] गोयमा ! ओरालियसरीर-कायप्पओगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए वा।

५५. [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह औदारिक शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, वैक्रियमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, आहारकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, आहारकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है अथवा कार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह एक द्रव्य, औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् वह कार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है।

55. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body (*audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), gross-cum-mixed physical body (*audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*), transmutable body (*vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*), transmutable-cum-mixed body (*vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*), telemigratory body (*ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*), telemigratory-cum-mixed body (*ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*), or karmic body (*karman sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to *karmic* body (*karman sharira kaaya-prayoga parinat*)

५६. [प्र] जइ ओरालियसरीर–कायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीर–कायप्पओगपरिणए एवं जाव पंचिंदियओरालिय जाव परिणए ?

[उ.] गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीर–कायप्पओगपरिणए वा बेइंदिय जाव परिणए वा जाव पंचिदिय जाव परिणए वा।

५६ [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, औदारिकशरीर–काय–प्रयोग–परिणत होता है, तो क्या वह एकेन्द्रिय–औदारिक–शरीर–काय–प्रयोग–परिणत होता है, या द्वीन्द्रिय–औदारिक–शरीर–काय–प्रयोग–परिणत होता है अथवा यावत् पचेन्द्रिय–औदारिक–शरीर–काय–प्रयोग–परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! वह एक द्रव्य, एकेन्द्रिय–औदारिकशरीर–काय–प्रयोग–परिणत होता है, या द्वीन्द्रिय–औदारिकशरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है, अथवा यावत् पञ्चेन्द्रिय–औदारिक–शरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है।

56. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body (*audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of one-sensed being (*ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of two-sensed being (*dvindriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to gross physical body of five-sensed being (*panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of gross physical body of one-sensed being (*ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of two-sensed being (*dvindriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to gross physical body of five-sensed being (*panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*)

५७. [प्र.] जइ एगिंदियओरालियसरीर-कायप्पओगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा ?

[उ.] गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय जाव पयोगपरिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा।

५७. [प्र.] भगवन् ! जो एक द्रव्य, एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-काय-प्रयोग-परिणत होता है, क्या वह पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् वह वनस्पतिकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] हे गौतम ! वह पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-काय-प्रयोग-परिणत होता है अथवा यावत् वनस्पतिकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है।

57. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of one-sensed being (*ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of earth-bodied one-sensed being (*prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to gross physical body of plant-bodied one-sensed being (*vanaspatikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of gross physical body of earth-bodied one-sensed being (*prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to gross physical body of plant-bodied one-sensed being (*vanaspatikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*)

५८. [प्र.] जइ पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीर जाव परिणए किं सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए, बादरपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?

[उ.] गोयमा ! सुहुमपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा।

५८. [प्र.] भगवन् ! यदि वह एक द्रव्य, पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा बादरपृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह सूक्ष्मपृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है अथवा बादरपृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है।

58. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of earth-bodied one-sensed being

(*prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of minute earth-bodied one-sensed being (*sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of gross earth-bodied one-sensed being (*baadar-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of gross physical body of minute earth-bodied one-sensed being (*sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of gross earth-bodied one-sensed being (*baadar-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*)

५९. [प्र. १] जइ सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए किं पज्जत्तसुहुमपुढवि जाव परिणए ? अपज्जत्तसुहुमपुढवी जाव परिणए ?

[उ.] गोयमा ! पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा। [२] एवं बादरा वि। [३] एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो।

५९. [प्र. १] भगवन् ! यदि एक द्रव्य सूक्ष्मपृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है तो क्या वह पर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अपर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! यह पर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, या वह अपर्याप्त-सूक्ष्म-पृथ्वीकायिक-एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-कायप्रयोग-परिणत भी होता है। [२] इसी प्रकार बादर-पृथ्वीकायिक (-एकेन्द्रिय-औदारिक-शरीर-काय-प्रयोग-परिणत एक द्रव्य) के विषय मे भी (पर्याप्त-अपर्याप्त-प्रकार) समझ लेना चाहिए। [३] इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक सभी के चार-चार भेद (सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त) के विषय मे (पूर्ववत्) कथन करना चाहिए।

59. [Q. 1] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of minute earth-bodied one-sensed being (*sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of fully developed minute earth-bodied one-sensed being (*paryaptak sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of underdeveloped minute earth-bodied one-sensed being (*aparyaptak sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of gross physical body of fully developed minute earth-bodied one-sensed being (*paryaptak sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of underdeveloped minute earth-bodied one-sensed being (*aparyaptak sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) [2] The same holds good for gross physical body of gross earth-bodied one-sensed being (*baadar-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) [3] The same should also be repeated for four categories (minute, gross, fully developed and underdeveloped) each of all beings up to plant-bodied one-sensed beings

६०. बेइंदिय–तेइंदिय–चउरिंदियाण दुयओ भेदो–पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य।

६०. इसी प्रकार द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय के दो-दो भेद–पर्याप्तक और अपर्याप्तक (से सम्बन्धित औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत एक द्रव्य) के विषय मे कहना चाहिए।

60. The same should also be repeated for two categories (fully developed and underdeveloped) each of two-sensed, three-sensed, and four-sensed beings

६१. [प्र.] जइ पचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालिय–सरीरकायप्पओगपरिणए, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?

[उ.] गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिदिय जाव परिणए वा।

६१. [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य पचेन्द्रिय–औदारिकशरीर–काय–प्रयोग–परिणत होता है, तो क्या वह तिर्यञ्चयोनिक–पचेन्द्रिय–औदारिकशरीर–कायप्रयोगपरिणत होता है, अथवा मनुष्य–पचेन्द्रिय–औदारिकशरीर– कायप्रयोगपरिणत होता है ?

[उ] गौतम ! या तो वह तिर्यञ्चयोनिक–पचेन्द्रिय–औदारिकशरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है, अथवा वह मनुष्य–पचेन्द्रिय–औदारिकशरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है।

61. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed being (*panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed animal (*tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of five-sensed human being (*manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of gross physical body of five-sensed animal (*tiryanch-yonik*

panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat) or gross physical body of five-sensed human being (*manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*).

६२. [प्र.] जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, थलचर, खहयर जाव परिणए वा ?

[उ.] एवं चउक्कओ भेदो जाव खहयराणं।

६२. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-काय-प्रयोग-परिणत होता है तो क्या वह जलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-काय-प्रयोग-परिणत होता है, स्थलचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-काय-प्रयोगपरिणत होता है, अथवा खेचर-तिर्यञ्चयोनिक-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह जलचर, स्थलचर और खेचर, तीनो प्रकार के तिर्यञ्चपचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग से परिणत होता है, अत यावत् खेचरो तक पूर्ववत् प्रत्येक के चार-चार भेदो (सम्मूर्च्छिम, गर्भज, पर्याप्तक और अपर्याप्तक) (के औदारिकशरीर कायप्रयोग-परिणत) के विषय मे कहना चाहिए।

62. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed animal (*tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed aquatic animal (*jalachar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), gross physical body of five-sensed terrestrial animal (*sthalachar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), or gross physical body of five-sensed aerial animal (*khechar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed due to conscious activity of gross physical body of any of the three, aquatic, terrestrial or aerial five-sensed animals (*jalachar, sthalachar, khechar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*). Therefore repeat four statements each for four categories (regarding *sammurchhim*, *garbhaj*, *paryaptak*, and *aparyaptak*) of each of these (*audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) as aforesaid

६३. [प्र.] जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए, गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?

[उ.] गोयमा ! दोसु वि।

६३. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, मनुष्यपचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह सम्मूर्च्छिममनुष्य-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा गर्भजमनुष्य-पंचेन्द्रिय-औदारिकशरीर- कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह दोनो प्रकार के (सम्मूर्च्छिम अथवा गर्भज) मनुष्यो के औदारिकशरीर-कायप्रयोग से परिणत होता है।

63. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed human being (*manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed human being of asexual origin (*sammurchhim manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of five-sensed human being born out of womb (*garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed due to conscious activity of gross physical body of any of the two (asexual origin or born out of womb)

६४. [प्र.] जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए, अपज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणए ?

[उ.] गोयमा ! पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए।१।

६४. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, गर्भजमनुष्य-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है तो क्या वह पर्याप्त-गर्भजमनुष्य-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अपर्याप्त-गर्भज-मनुष्य-पचेन्द्रिय- औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह पर्याप्त-गर्भजमनुष्य-पचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अपर्याप्त-गर्भजमनुष्यपचेन्द्रिय-औदारिकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है।

64. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed human being born out of womb (*garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross physical body of fully developed five-sensed human being born out of womb (*paryaptak garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of underdeveloped five-sensed human being born out of womb (*aparyaptak garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed due to conscious activity of either gross physical body of fully developed five-sensed human being born out of womb (*paryaptak garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross physical body of underdeveloped five-sensed human being born out of womb (*aparyaptak garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat*)

६५. [प्र.] जइ ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीर-कायप्पओगपरिणए ? बेइंदिय जाव परिणए जाव पंचेंदियओरालिय जाव परिणए ?

[उ.] गोयमा ! एगिंदियओरालिय एवं जहा ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो। नवरं बायरवाउक्काइय-गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-गब्भवक्कंतियमणुस्साण य एएसि णं पज्जत्तापज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं।२।

६५. [प्र.] यदि एक द्रव्य, औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह एकेन्द्रिय-औदारिकमिश्र-शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, द्वीन्द्रिय-औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् पचेन्द्रिय-औदारिक-मिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह एकेन्द्रिय-औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा द्वीन्द्रिय-औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् पचेन्द्रिय-औदारिकमिश्र-शरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है। जिस प्रकार पहले औदारिकशरीर-कायप्रयोगपरिणत के आलापक कहे है, उसी प्रकार औदारिकमिश्र-कायप्रयोग-परिणत के भी आलापक कहने चाहिए। किन्तु इतनी विशेषता है कि बादरवायुकायिक, गर्भज पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिक और गर्भज मनुष्यो के पर्याप्तक और अपर्याप्तक के विषय मे और शेष सभी जीवो के अपर्याप्तक के विषय मे कहना चाहिए।

65. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body (*audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body of one-sensed being (*ekendriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross-cum-mixed physical body of two-sensed being (*dvindriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to gross-cum-mixed physical body of five-sensed being (*panchendriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body of one-sensed being (*ekendriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) or gross-cum-mixed

physical body of two-sensed being (*dvindriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to. gross-cum-mixed physical body of five-sensed being (*panchendriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) Like the aforesaid statements about transformation due to conscious activity of gross physical body (*audarik sharira kaaya-prayoga parinat*), statements about gross-cum-mixed physical body (*audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) should also be mentioned The difference being fully developed and underdeveloped states should be included for gross air-bodied, five sensed animals and humans born out of womb Regarding all other beings only the underdeveloped state should be included

६६. [प्र] जइ वेउव्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए जाव पचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?

[उ.] **गोयमा ! एगिंदिय जाव परिणए वा पंचिंदिय जाव परिणए।**

६६. [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, वैक्रियशरीर-कायप्रयोगपरिणत होता है तो क्या वह एकेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् पचेन्द्रिय-वैक्रियशरीर कायप्रयोग प्रयोग-परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! वह, एकेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोगपरिणत होता है, अथवा यावत् पचेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है।

66. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of transmutable body (*vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of transmutable body of one-sensed being (*ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to transmutable body of five-sensed being (*panchendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of transmutable body of one-sensed being (*ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to. transmutable body of five-sensed being (*panchendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*)

६७. [प्र.] जइ एगिंदिय जाव परिणए किं वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए, अवाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?

[उ.] **गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइय जाव परिणए। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियव्वं जाव**

पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पाइयवेमाणिय- देवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्ध जाव कायप्पयोगपरिणए वा।३।

६७. [प्र.] भगवन् ! यदि वह एक द्रव्य, एकेन्द्रियवैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह वायुकायिक-एकेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अवायुकायिक (वायुकायिक जीवो के अतिरिक्त) एकेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! वह एक द्रव्य, वायुकायिक-एकेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, किन्तु अवायुकायिक-एकेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत नही होता। (क्योकि वायुकाय के सिवाय अन्य किसी एकेन्द्रिय मे वैक्रियशरीर नही होता।) इसी प्रकार इस अभिलाप के द्वारा प्रज्ञापनासूत्र के 'अवगाहना सस्थान' नामक इक्कीसवे पद मे वैक्रियशरीर (-कायप्रयोग-परिणत) के विषय मे जैसा कहा है, (उसी के अनुसार) यहाँ भी कहना चाहिए, यावत् पर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक-कल्पातीत-वैमानिकदेव-पचेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा वह अपर्याप्तक-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक-कल्पातीत-वैमानिकदेव-पचेन्द्रिय-वैक्रियशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है।

67. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of transmutable body of one-sensed being (*ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of transmutable body of one-sensed air-bodied being (*vayukaayik ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) or transmutable body of other than air-bodied one-sensed being (*avayukaayik ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! It is transformed due to conscious activity of transmutable body of one-sensed air-bodied being (*vayukaayik ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) and not transmutable body of other than air-bodied one-sensed being (*avayukaayik ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat*) (This is because other than air-bodied beings no one-sensed being has transmutable body) In the same way statements about transmutable body (transformation due to) should be mentioned according to what is stated in the 21st chapter titled Avagahana Samsthan of *Prajnapana Sutra* and so on up to it is consciously transformed due to conscious activity of transmutable body of fully developed five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps* (*paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya sharira kaaya prayoga parinat*) or consciously transformed due to conscious activity of transmutable body of

underdeveloped five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps* (*aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya sharira kaaya prayoga parinat*)

६८. [प्र.] जइ वेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए वा जाव पंचिंदियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए ?

[उ.] एवं जहा वेउव्वियं तहा मीसगं पि, नवरं देव–नेरइयाणं अपज्जत्तगाणं, सेसाणं पज्जत्तगाणं तहेव, जाव नो पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो जाव प०, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय–देवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओग– परिणए।४।

६८. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है, तो क्या वह एकेन्द्रिय–वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है, अथवा यावत् पचेन्द्रिय–वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोगपरिणत होता है ?

[उ] गौतम ! जिस प्रकार वैक्रियशरीर–कायप्रयोग–परिणत के विषय मे कहा है, उसी प्रकार वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोग–परिणत के विषय मे भी कहना चाहिए। परन्तु इतना विशेष है कि वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोग देवो और नैरयिको के अपर्याप्त के विषय मे कहना चाहिए। शेष सभी पर्याप्त जीवो के विषय मे कहना चाहिए, यावत् पर्याप्त–सर्वार्थसिद्ध–अनुत्तरौपपातिक–कल्पातीत–वैमानिक–देव–पचेन्द्रिय–वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोग–परिणत नही होता, किन्तु अपर्याप्त–सर्वार्थसिद्ध–अनुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकदेव–पचेन्द्रिय–वैक्रियमिश्रशरीर–कायप्रयोग–परिणत होता है, (यहाँ तक कहना चाहिए)।

68. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body (*vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of one-sensed being (*ekendriya vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to transmutable-cum-mixed body of five-sensed being (*panchendriya vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! What has been said with regard to *vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat* should also be repeated for *vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*. The difference being that only underdeveloped state should be included for divine and infernal beings For all other beings only fully developed state should be included and so on up to... It is not transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of fully developed five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings

beyond the *Kalps* (*paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya-mishra sharira kaaya prayoga parinat*) but consciously transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of underdeveloped five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps* (*aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya-mishra sharira kaaya prayoga parinat*)

६९. [प्र.] जइ आहारगसरीरकायप्पओगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए ? अमणुस्साहारग जाव प० ?

[उ.] एव जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसयमसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय जाव प०।५।

६९. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, आहारकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह मनुष्याहारकशरीर- कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अमनुष्य-आहारकशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! इस सम्बन्ध मे जिस प्रकार प्रज्ञापनासूत्र के अवगाहनासस्थान नामक (इक्कीसवे) पद मे कहा है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिए, यावत् ऋद्धि-प्राप्त प्रमत्तसयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक सख्येयवर्षायुष्क मनुष्य-आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत होता है, किन्तु अनृद्धि-प्राप्त (आहारकलब्धि को अप्राप्त) -प्रमत्तसयत-सम्यग्दृष्टि-पर्याप्तक- सख्येयवर्षायुष्क मनुष्याहारक-शरीर-कायप्रयोग-परिणत नही होता।

69. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of telemigratory body (*ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of telemigratory body of human beings (*manushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*) or telemigratory body of beings other than humans (*amanushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! In this regard what is stated in Avagahana Samsthan (the 21st chapter) of *Prajnapana Sutra* should be followed and so on up to it is transformed due to conscious activity of telemigratory body of an accomplished (having power of telemigration) negligent-disciplined righteous fully developed human being having countable years life-span (*Riddhiprapt pramatt-samyat samyagdrishti paryaptak sankhyeyavarshayushk manushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*) and not due to conscious activity of telemigratory body

of a non-accomplished (without power of telemigration) negligent-disciplined righteous fully developed human being having countable years life-span (*Anriddhiprapt pramatt-samyat samyagdrishti paryaptak sankhyeyavarshayushk manushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*)

७०. [प्र.] जइ आहारगमीसासरीरकायप्पयोगप० किं मणुस्साहारगमीसासरीर० ?

[उ.] एवं जहा आहारगं तहेव मीसग पि निरवसेसं भाणियव्वं।६।

७०. [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य आहारकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह मनुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अमनुष्याहारक-शरीर-कायप्रयोग परिणत होता है?

[उ] गौतम ! जिस प्रकार आहारकशरीरकायप्रयोग-परिणत (एक द्रव्य) के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार आहारकमिश्रशरीर-कायप्रयोग-परिणत के विषय मे भी कहना चाहिए।

70. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of telemigratory-cum-mixed body (*ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of telemigratory-cum-mixed body of human beings (*manushya ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*) or telemigratory-cum-mixed body of beings other than humans (*amanushya ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*)?

[Ans.] Gautam ! What has been stated with regard to transformation due to conscious activity of telemigratory body (*ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat*) should be repeated for transformation due to conscious activity of telemigratory-cum-mixed body (*ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat*)

७१. [प्र.] जइ कम्मासरीरकायप्पओगप० किं एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगप० जाव पंचिंदियकम्मासरीर जाव प० ?

[उ.] गोयमा ! एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओ० एवं जहा ओगाहणसंठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इहावि जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियकम्मासरीरकायप्पयोगपरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणु० जाव परिणए वा।७।

७१. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, कार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, तो क्या वह एकेन्द्रिय-कार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा यावत् पचेन्द्रियकार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है?

[उ.] हे गौतम! वह एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोग-परिणत होता है, इस सम्बन्ध मे जिस प्रकार प्रज्ञापनासूत्र के (इक्कीसवे) अवगाहनासस्थान-पद मे कार्मण के भेद कहे गये है, उसी प्रकार यहाँ भी कहने चाहिए, यावत् पर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव-पचेन्द्रिय-कार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, अथवा अपर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक-कल्पातीत-वैमानिकदेव-पचेन्द्रिय-कार्मणशरीर-कायप्रयोग-परिणत होता है, (यहाँ तक कहना चाहिए)।

71. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to conscious activity of *karmic* body (*karman sharira kaaya-prayoga parinat*), then is it transformed due to conscious activity of *karmic* body of one-sensed being (*ekendriya karman sharira kaaya-prayoga parinat*) or and so on up to *karmic* body of five-sensed being (*panchendriya karman sharira kaaya-prayoga parinat*)?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to conscious activity of *karmic* body of one-sensed being (*ekendriya karman sharira kaaya-prayoga parinat*) In this regard what is stated in Avagahana Samsthan (the 21st chapter) of *Prajnapana Sutra* with regard to types of karmic body should be followed and so on up to It is transformed due to conscious activity of *karmic* body of fully developed five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps* (*paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya prayoga parinat*) or transformed due to conscious activity of *karmic* body of underdeveloped five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps* (*aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya prayoga parinat*)

विवेचन (१) **औदारिकशरीरकाययोग**–औदारिकशरीर, पुद्गलस्कन्धो का समूह होने से 'काय' कहलाता है। इससे होने वाले व्यापार को औदारिकशरीर-काययोग कहते है। यह योग मनुष्यो और तिर्यञ्चो मे होता है।

(२) **औदारिकमिश्रशरीरकाययोग**–औदारिक के साथ कार्मण, वैक्रिय या आहारक की सहायता से होने वाले वीर्यशक्ति के व्यापार को औदारिकमिश्रकाययोग कहते है। यह योग उत्पत्ति के दूसरे समय से लेकर जब तक शरीरपर्याप्ति पूर्ण न हो, तब तक सभी औदारिकशरीरधारी जीवो को होता है। वैक्रियलब्धिधारी मनुष्य और तिर्यञ्च जब वैक्रिय शरीर का त्याग करते है, तब भी औदारिकमिश्र शरीर होता है। इसी तरह लब्धिधारी मुनिराज जब आहारक शरीर बनाते है, तब आहारकमिश्रकाययोग होता है, किन्तु जब वे आहारक शरीर से निवृत्त होकर मूल शरीरस्थ होते है, तब औदारिकमिश्रकाय योग का प्रयोग होता है। केवली भगवान जब केवली समुद्घात करते है, तब दूसरे, छठे और सातवे समय मे औदारिकमिश्रकाययोग का प्रयोग होता है।

(३) **वैक्रियकाययोग**–वैक्रियशरीर द्वारा होने वाली वीर्यशक्ति का व्यापार। यह मनुष्यो और तिर्यञ्चो के **वैक्रियलब्धिबल** से वैक्रियशरीर धारण कर लेने पर होता है। देवो और नारको के वैक्रियकाययोग '**भवप्रत्यय**' होता है।

(४) **वैक्रियमिश्रकाययोग**–वैक्रिय और कार्मण, अथवा वैक्रिय और औदारिक, इन दो शरीरो के द्वारा होने वाले वीर्यशक्ति के व्यापार को 'वैक्रियमिश्रकाययोग' कहते है। वैक्रिय और कार्मण सम्बन्धी वैक्रियमिश्रकाययोग, देवो तथा नारको को उत्पत्ति के दूसरे समय से लेकर जब तक शरीरपर्याप्ति पूर्ण न हो, तब तक रहता है। वैक्रिय और औदारिक, इन दो शरीरो सम्बन्धी वैक्रियमिश्रकाययोग, मनुष्यो और तिर्यञ्चो मे तभी पाया जाता है, जब वे लब्धिबल से वैक्रिय शरीर का आरम्भ करते है। वैक्रियशरीर का त्याग करने मे वैक्रियमिश्र नही होता, किन्तु औदारिकमिश्र होता है।

(५) **आहारककाययोग**–केवल आहारक शरीर की सहायता से होने वाला वीर्यशक्ति का व्यापार 'आहारककाययोग' होता है।

(६) **आहारकमिश्रकाययोग**–आहारक और औदारिक, इन दो शरीरो के द्वारा होने वाले वीर्यशक्ति के व्यापार को आहारकमिश्रकाययोग कहते है। आहारक-शरीर को धारण करने के समय अर्थात्-उसे प्रारम्भ करने के समय तो आहारकमिश्रकाययोग होता है और उसके त्याग के समय औदारिकमिश्रकाययोग होता है।

(७) **कार्मणकाययोग**–केवल कार्मण शरीर की सहायता से वीर्यशक्ति की जो प्रवृत्ति होती है, उसे कार्मणकाययोग कहते है। यह योग विग्रहगति मे तथा उत्पत्ति के समय अनाहारक अवस्था मे सभी जीवो मे होता है। केवलीसमुद्घात के तीसरे चौथे और पाँचवे समय मे केवली भगवान के होता है।

Elaboration—**(1)** *Audarık sharıra kaayayoga* (actıvıty of gross physıcal body)—as ıt ıs a cluster of matter partıcles, *audarık Sharıra* ıs called *kaaya* The actıvıty ıt ıs ınvolved ın ıs called *audarık sharıra kaayayoga* Thıs ıs related to human beıngs and anımals

(2) *Audarık mıshra sharıra kaaya yoga* (actıvıty of gross-cum-mıxed physıcal body)—The potency related actıvıty of *audarık sharıra* wıth the help of *karman*, *vaıkrıya* or *ahaarak* bodıes ıs called *audarık mıshra sharıra kaaya yoga* Every lıvıng beıng wıth gross physıcal body ıs ınvolved ın thıs actıvıty rıght from the second *Samaya* after ıts bırth up to the poınt when ıt attaıns fully developed state of the body (*sharıra paryaptı*) Human beıngs and anımals havıng the power of transmutatıon have thıs actıvıty when they abandon the transmutated body (*vaıkrıya sharıra*) In the same way when an accomplıshed ascetıc creates telemıgratory body (*ahaarak sharıra*) the actıvıty ınvolved ıs *ahaarak-mıshra kaayayoga* (telemıgratory-cum-mıxed actıvıty of body) However, when they leave the telemıgratory body and return to the orıgınal body the actıvıty ınvolved is *audarık-mıshra kaayayoga* (gross physıcal-cum-mıxed actıvıty of body) When an omnıscıent undergoes

Kevali Samudghat (bursting forth of soul space-points), at the second, sixth and seventh *Samayas* the activity involved is *audarik-mishra kaayayoga*

(3) *Vaikriya kaaya yoga* (activity of transmutable body)—The potency related activity of *vaikriya sharira* is called *Vaikriya kaaya yoga* This activity is possible in humans and animals when they create a transmutable body with the acquired related special power (*vaikriya labdhi bal*) In divine and infernal beings this *Vaikriya kaaya yoga* is by birth (*bhavapratyaya*)

(4) *Vaikriya-mishra kaaya yoga* (activity of transmutable-cum-mixed body)—The potency related activity of *Vaikriya sharira* with the help of *karman* and *audarik* bodies is called *vaikriya mishra kaaya yoga* The *vaikriya mishra kaaya yoga* related to *vaikriya* and *karman sharira* commences at the second *Samaya* after birth among divine and infernal beings and it lasts till they attain fully developed body The *vaikriya mishra kaaya yoga* related to *vaikriya* and *audarik sharira* is found in humans and animals only when they start creating *vaikriya sharira* with the help of special powers While abandoning *vaikriya sharira* the activity involved is not *vaikriya mishra* but *audarik mishra*

(5) *Ahaarak kaaya yoga* (activity of telemigratory body)—The potency related activity of *ahaarak sharira* is called *Ahaarak kaaya yoga*

(6) *Ahaarak-mishra kaaya yoga* (activity of telemigratory-cum-mixed body)—The potency related activity of *ahaarak sharira* with the help of *audarik sharira* is called *Ahaarak-mishra kaaya yoga* While acquiring *aharak sharira* the activity involved is *Ahaarak-mishra kaaya yoga* but while abandoning it the activity involved is *audarik-mishra kaaya yoga*

(7) *Karman kaaya yoga* (activity of *karmic* body)—The potency related activity with the help of *karman sharira* is called *karman kaaya yoga* This activity is found in all beings in the *anahaarak* (no intake) state during the oblique movement before rebirth and at the moment of birth It is also found at the third, fourth and fifth *Samaya* of *Kevali samudghat* (bursting forth of soul space-points) by an omniscient

७२. [प्र.] जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए, वयमीसापरिणए, कायमीसापरिणए ?

[उ.] गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वयमीसापरिणए वा कायमीसापरिणए वा।

७२. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, मिश्रपरिणत होता है, तो क्या वह मनोमिश्रपरिणत होता है, या वचनमिश्रपरिणत होता है, अथवा कायमिश्रपरिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह मनोमिश्रपरिणत भी होता है, वचनमिश्रपरिणत भी होता है, या कायमिश्र-परिणत भी होता है।

72. [Q.] *Bhante* ! If a substance is *mishra parinat* (jointly or consciously-cum-naturally transformed), then is it transformed due to joint activity of mind (*manah-mishra parinat*), joint activity of speech (*vachan-mishra parinat*) or joint activity of body (*kaaya-mishra parinat*)?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either due to joint activity of mind (*manah-mishra parinat*), or joint activity of speech (*vachan-mishra parinat*) or joint activity of body (*kaaya-mishra parinat*)

७३. [प्र.] जइ मणमीसापरिणए किं सच्चमणमीसापरिणए, मोसमणमीसापरिणए ?

[उ.] जहा पओगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्वं निरवसेस जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणु० जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा।

७३. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य मनोमिश्रपरिणत होता है, तो क्या वह सत्यमनोमिश्र-परिणत होता है, मृषामनोमिश्र-परिणत होता है, सत्यमृषामनोमिश्र-परिणत होता है, अथवा असत्यमृषामनोमिश्र-परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार प्रयोग-परिणत एक द्रव्य के सम्बन्ध मे कहा गया है, उसी प्रकार मिश्रपरिणत एक द्रव्य के विषय मे कहना चाहिए यावत् पर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पचेन्द्रिय कार्मण-शरीर-कायमिश्र-परिणत होता है, अथवा अपर्याप्त-सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव-पचेन्द्रियकार्मणशरीर-कायमिश्र-परिणत होता है।

73. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed due to joint activity of mind (*manah-mishra parinat*), then is it transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-mishra parinat*), untruthful activity of mind (*mrisha manah-mishra parinat*), truthful-untruthful activity of mind (*satya-mrisha manah-mishra parinat*), or non-truthful-non-untruthful activity of mind (*asatya-amrisha manah-mishra parinat*)?

[Ans.] Gautam ! What has been said with regard to conscious transformation (*prayoga parinat*) of a substance should be repeated with regard to joint transformation (*mishra parinat*) and so on up to It is transformed due to joint activity of karmic body of fully developed five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik* celestial-vehicular divine beings beyond the *Kalps* (*paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya mishra*

parinat) or transformed due to joint activity of *karmic* body of underdeveloped five-sensed *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular* divine beings beyond the *Kalps* (*aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya mishra parinat*)

७४. [प्र.] **जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए गंधपरिणए रसपरिणए फासपरिणए संठाणपरिणए ?**

[उ] **गोयमा ! वण्णपरिणए वा गंधपरिणए वा रसपरिणए वा फासपरिणए वा संठाणपरिणए वा।**

७४. [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, विस्रसा (स्वभाव से) परिणत होता है, तो क्या वह वर्णपरिणत होता है, गन्धपरिणत होता है, रसपरिणत होता है, स्पर्शपरिणत होता है, अथवा सस्थानपरिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह वर्णपरिणत होता है, या गन्धपरिणत होता है, अथवा रसपरिणत होता है, या स्पर्शपरिणत होता है, या वह सस्थानपरिणत होता है।

74. [Q.] *Bhante* ! If a substance is naturally transformed (*visrasa parinat*), then is it transformed as attributes of appearance (colour), attributes of smell, attributes of taste, attributes of touch and attributes of constitution ?

[Ans.] Gautam ! It could be transformed either as attributes of appearance (colour), attributes of smell, attributes of taste, attributes of touch or attributes of constitution

७५. [प्र.] **जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए नील जाव सुक्किल्लवण्णपरिणए ?**

[उ.] **गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किल्लवण्णपरिणए वा।**

७५. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, वर्णपरिणत होता है तो क्या वह काले वर्ण के रूप मे परिणत होता है, अथवा नीलवर्ण के रूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् शुक्लवर्ण के रूप मे परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह काले वर्ण के रूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् शुक्लवर्ण के रूप मे परिणत होता है।

75. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed as attributes of appearance (colour), then is it transformed as attributes of black colour, or as attributes of blue colour and so on up to as attributes of white colour ?

[Ans.] It could be transformed either as attributes of black colour. and so on up to as attributes of white colour

७६. [प्र] जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए, दुब्भिगंधपरिणए ?

[उ] गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए वा, दुब्भिगंधपरिणए वा।

७६. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्यगन्ध-परिणत होता है तो क्या वह सुरभिगन्ध रूप मे परिणत होता है, अथवा दुरभिगन्धरूप मे परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! वह सुरभिगन्धरूप मे परिणत होता है, अथवा दुरभिगन्धरूप मे परिणत होता है।

76. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed as attributes of smell, then is it transformed as attributes of good smell or as attributes of bad smell ?

[Ans.] It could be transformed either as attributes of good smell or as attributes of bad smell

७७. [प्र.] जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ५ पुच्छा ?

[उ.] गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा।

७७. [प्र] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, रसरूप मे परिणत होता है, तो क्या वह तीखे (चरपरे) रस के रूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् मधुररस के रूप मे परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! वह तीखे रस के रूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् मधुररस के रूप मे परिणत होता है।

77. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed as attributes of taste, then is it transformed as attributes of bitter taste, or and so on up to as attributes of sweet taste ?

[Ans.] It could be transformed either as attributes of bitter taste, or and so on up to as attributes of sweet taste

७८. [प्र.] जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?

[उ.] गोयमा ! कक्खडफासपरिणए वा जाव लुक्खफासपरिणए वा।

७८. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, स्पर्शपरिणत होता है तो क्या वह कर्कशस्पर्शरूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् रूक्षस्पर्शरूप मे परिणत होता है ?

[उ.] गौतम ! वह कर्कशस्पर्शरूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् रूक्षस्पर्शरूप मे परिणत होता है।

78. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed as attributes of touch, then is it transformed as attributes of hard touch, or and so on up to as attributes of coarse touch ?

[Ans.] It could be transformed either as attributes of hard touch, or and so on up to as attributes of coarse touch

७९. [प्र.] जइ संठाणपरिणए० पुच्छा ?

[उ.] गोयमा ! परिमंडलसंठाणपरिणए वा जाव आययसंठाणपरिणए वा।

७९. [प्र.] भगवन् ! यदि एक द्रव्य, सस्थान-परिणत होता है, तो क्या वह परिमण्डल-सस्थानरूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् आयत-सस्थानरूप मे परिणत होता है ?

[उ] गौतम ! वह द्रव्य परिमण्डल-सस्थानरूप मे परिणत होता है, अथवा यावत् आयत-सस्थानरूप मे परिणत होता है।

79. [Q.] *Bhante* ! If a substance is transformed as attributes of constitution, then is it transformed as attributes of spherical constitution, or and so on up to as attributes of rectangular constitution ?

[Ans.] It could be transformed either as attributes of spherical constitution, or and so on up to as attributes of rectangular constitution

दो द्रव्य के सयोग से निष्पन्न भग **ALTERNATIVES OF TRANSFORMATION OF TWO SUBSTANCES**

८०. [प्र.] दो भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ?

[उ.] गोयमा ! पओगपरिणया वा १। मीसापरिणया वा २। वीससापरिणया वा ३। अहवेगे पओगपरिणए, एगे मीसापरिणए ४। अहवेगे पओगपरिणए, एगे वीससापरिणए ५। अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए, एवं ६।

८०. [प्र] भगवन् ! क्या दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है, मिश्रपरिणत होते है, अथवा विस्रसापरिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! वे प्रयोगपरिणत होते है, या मिश्रपरिणत होते है, अथवा विस्रसापरिणत होते है, अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा मिश्रपरिणत होता है, या एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा द्रव्य विस्रसापरिणत होता है, अथवा एक द्रव्य मिश्रपरिणत होता है और दूसरा विस्रसापरिणत होता है।

80. [Q.] *Bhante* ! Are two substances *prayoga parinat* (consciously transformed), *mishra parinat* (jointly transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed) ?

[Ans.] Gautam ! Two substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed), or *mishra parinat* (jointly transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed) Also one of these substances

could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the other *mishra parinat* (jointly transformed), or one could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the other *visrasa parinat* (naturally transformed), or one could be *mishra parinat* (jointly transformed) and the other *visrasa parinat* (naturally transformed)

८१. [प्र.] जइ पओगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया, वइप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया ?

[उ.] गोयमा ! मणप्पयोगपरिणता वा १। वइप्पयोगपरिणया वा २। कायप्पयोगपरिणया वा ३। अहवेगे मणप्पयोगपरिणए, एगे वयप्पयोगपरिणए ४। अहवेगे मणप्पयोगपरिणए, एगे कायप्पओगपरिणए ५। अहवेगे वयप्पयोगपरिणए, एगे कायप्पओगपरिणए ६।

८१. [प्र.] भगवन् ! यदि वे दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है तो क्या मन प्रयोगपरिणत होते है, या वचन-प्रयोगपरिणत होते है अथवा काय-प्रयोगपरिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! वे (दो द्रव्य) या तो (१) मन प्रयोगपरिणत होते है, या (२) वचन-प्रयोगपरिणत होते है, अथवा (३) काय-प्रयोगपरिणत होते है, अथवा (४) उनमे से एक द्रव्य मन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा वचन-प्रयोगपरिणत होता है, अथवा (५) एक द्रव्य मन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा काय-प्रयोगपरिणत होता है, या (६) एक द्रव्य वचन-प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा काय-प्रयोगपरिणत होता है।

81. [Q.] *Bhante* ! If two substances are *prayoga parinat* (consciously transformed), then are they transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! They could be transformed either due to (1) conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), or (2) conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or (3) conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*). Also (4) one of these substances could be transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*) and the other due to conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*), or (5) one of these substances could be transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*) and the other due to conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*), or (6) one of these substances could be transformed due to conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) and the other due to conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*)

८२. [प्र.] जइ मणप्पयोगपरिणया किं सच्चमणप्पयोगपरिणया, असच्चमणप्पयोगपरिणया, सच्चामोसमणप्पयोगपरिणया, असच्चाऽमोसमणप्पयोगपरिणया ?

[उ.] गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया वा। अहवेगे सच्चमणप्पयोगपरिणए, एगे मोसमणप्पओगपरिणए १। अहवेगे सच्चमणप्पओगपरिणए, एगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए २। अहवेगे सच्चमणप्पओगपरिणए, एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ३। अहवेगे मोसमणप्पयोगपरिणए, एगे सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए ४। अहवेगे मोसमणप्पयोगपरिणए, एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणए ५। अहवेगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए, एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ६।

८२. [प्र] भगवन् ! यदि वे (दो द्रव्य) मन प्रयोगपरिणत होते है तो क्या सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, या असत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा सत्यमृषामन प्रयोगपरिणत होते है, या असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! वे (दो द्रव्य) (१-४) सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, यावत् असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत होते है, या (५) उनमे से एक द्रव्य सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा मृषामन प्रयोगपरिणत होता है, अथवा (६) एक द्रव्य सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा सत्यमृषामन प्रयोगपरिणत होता है, या (७) एक द्रव्य सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत होता है, अथवा (८) एक द्रव्य मृषामन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा सत्यमृषामन प्रयोगपरिणत होता है, या (९) एक द्रव्य मृषामन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत होता है, अथवा (१०) एक द्रव्य सत्यमृषामन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत होता है।

82. [Q.] *Bhante* ! If two substances are transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), then are they transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), untruthful activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*), truthful-untruthful activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*), or non-truthful-non-untruthful activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! They could be transformed either due to (1-4) truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), or . and so on up to non-truthful-non-untruthful conscious activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*) Also (5) one of these substances could be transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*) and the other due to untruthful activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*), or (6) one of these substances could be transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*) and the other due to truthful-untruthful activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*), or (7) one of these substances could be

transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*) and the other due to non-truthful-non-untruthful activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*), or (8) one of these substances could be transformed due to untruthful activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*) the other due to truthful-untruthful activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*), or (9) one of these substances could be transformed due to untruthful activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*) the other due to non-truthful-non-untruthful activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*), or (10) one of these substances could be transformed due to truthful-untruthful activity of mind (*satya-mrisha manah-prayoga parinat*) the other due to non-truthful-non-untruthful activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*)

८३. [प्र.] जइ सच्चमणप्पओगपरिणया किं आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणया जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणया ?

[उ.] गोयमा ! आरंभ–सच्चमणप्पयोगपरिणया वा जाव असमारंभ–सच्चमणप्पयोगपरिणया वा। अहवेगे आरंभ–सच्चमणप्पयोगपरिणए, एगे अणारंभ–सच्चमणप्पयोगपरिणए। एवं एएणं गमेणं दुयसंजोएणं नेयव्वं। सव्वे संयोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेंति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धग त्ति।

८३. [प्र.] भगवन् ! यदि वे (दो द्रव्य) सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है तो क्या वे आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होते है या अनारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा सरम्भ (सारम्भ) सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, या असरम्भ (असारम्भ) सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा समारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होते है या असमारम्भसत्यमन प्रयोग परिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! वे दो द्रव्य (१–६) आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा यावत् असमारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा एक द्रव्य आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होता है और दूसरा अनारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत होता है, इसी प्रकार इस गम (पाठ) के अनुसार द्विकसयोगी भग करने चाहिए। जहाँ जितने भी द्विकसयोग हो सके, उतने सभी यहाँ कहने चाहिए यावत् सर्वार्थसिद्ध वैमानिक देव–पर्यन्त कहने चाहिए।

83. [Q.] *Bhante* ! If two substances are transformed due to truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), then are they transformed due to truthful sinning conscious activity of mind (*aarambh satya manah-prayoga parinat*), truthful conscious activity of mind to resolve to sin (*samrambh satya manah-prayoga parinat*), truthful tormenting conscious activity of mind (*samaarambh satya manah-prayoga parinat*), truthful non-sinning conscious activity of mind

(*anaarambh satya manah-prayoga parinat*), truthful conscious activity of mind not to resolve to sin (*asamrambh satya manah-prayoga parinat*), or truthful non-tormenting conscious activity of mind (*asamaarambh satya manah-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! They could be transformed either due to (1-6) truthful sinning conscious activity of mind (*aarambh satya manah-prayoga parinat*), or and so on up to untruthful non-tormenting conscious activity of mind (*asamaarambh satya manah-prayoga parinat*) Also one of these substances could be transformed due to truthful sinning conscious activity of mind (*aarambh satya manah-prayoga parinat*) and the other due to truthful non-sinning conscious activity of mind (*anaarambh satya manah-prayoga parinat*) In the same way all possible alternatives of combination of two aforesaid alternatives should be stated and so on up to *Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Vaimanik dev*

८४. [प्र.] जइ मीसापरिणया किं मणमीसापरिणया० ?

[उ.] एवं मीसापरिणया वि।

८४. [प्र] भगवन् ! यदि वे (दो द्रव्य) मिश्रपरिणत होते है तो मनोमिश्रपरिणत होते है ? (इत्यादि पूर्ववत् प्रयोगपरिणत वाले प्रश्नो की तरह यहॉ भी सभी प्रश्न उपस्थित करने चाहिए।)

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार प्रयोगपरिणत के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार मिश्रपरिणत के सम्बन्ध मे भी कहना चाहिए।

84. [Q.] *Bhante* ! If two substances are *mishra parinat* (jointly or consciously and naturally transformed), then are they transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*) ? (include other alternative questions as aforesaid with regard to consciously transformed matter)

[Ans.] Gautam ! As has been stated with regard to consciously transformed (*prayoga parinat*) matter so should be stated with regard to jointly transformed (mishra parinat) matter

८५. [प्र.] जइ वीससापरिणया किं वण्णपरिणया, गंधपरिणया० ?

[उ.] एवं वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरंससंठाणपरिणए, एगे आययसंठाणपरिणए वा।

८५. [प्र] भगवन् ! यदि दो द्रव्य विस्रसापरिणत होते है तो क्या वे वर्ण रूप से परिणत होते है, गधरूप से परिणत होते है, (अथवा यावत् सस्थानरूप से परिणत होते है ?)

[उ.] गौतम ! जिस प्रकार पहले कहा गया है, उसी प्रकार विस्रसापरिणत के विषय मे कहना चाहिए, यावत् एक द्रव्य, चतुरस्रसस्थानरूप से परिणत होता है, एक द्रव्य आयत सस्थान से परिणत होता है।

85. [Q.] *Bhante* ! If two substances are *visrasa parinat* (naturally transformed), then are they transformed as attributes of colour ? (or and so on up to as attributes of constitution)

[Ans.] Gautam ! The aforesaid pattern should also be followed for naturally transformed matter (*visrasa parinat pudgala*) and so on up to . one substance is transformed as attributes of square constitution and the other is transformed as attributes of rectangular constitution

विवेचन प्रस्तुत छह सूत्रो (सू ८० से ८५ तक) मे दो द्रव्यो से सम्बन्धित विभिन्न विशेषणयुक्त मनोयोग आदि के सयोग से प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और विस्रसापरिणत पदो के विभिन्न भगो का निरूपण है।

तीन पदो के छह भंग–दो द्रव्यो के सम्बन्ध मे प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और विस्रसापरिणत, इन तीन पदो के असयोगी तीन भग और द्विकसयोगी तीन भग, यो कुल छह भग होते है।

मन-प्रयोगपरिणत के पॉच सौ चार भग–सर्वप्रथम सत्यमन प्रयोगपरिणत, असत्यमन प्रयोगपरिणत आदि चार पदो के असयोगी चार भग और द्विकसयोगी छह भग, इस प्रकार कुल दस भग होते है। फिर आरम्भसत्यमन प्रयोग आदि छह पदो के असयोगी छह भग और द्विकसयोगी पन्द्रह भग होते है। इस प्रकार आरम्भसत्यमन-प्रयोगपरिणत (द्रव्यद्वय) के ६ + १५ = २१ भग हुए। इसी प्रकार अनारम्भसत्यमन प्रयोग आदि शेष पॉच पदो के भी प्रत्येक के इक्कीस-इक्कीस भग होते है। यो सत्यमन प्रयोगपरिणत के आरम्भ, अनारम्भ, सरम्भ, असरम्भ, समारम्भ, असमारम्भ, इन छह पदो के साथ कुल २१ × ६ = १२६ भग हुए।

इसी प्रकार सत्यमन प्रयोगपरिणत की तरह असत्यमन प्रयोगपरिणत, सत्यमृषामन प्रयोगपरिणत, असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत, इन तीन पदो के भी आरम्भ आदि छह पदो के साथ प्रत्येक के पूर्ववत् एक सौ छब्बीस-एक सौ छब्बीस भग होते है। अत मन प्रयोगपरिणत के सत्यमन प्रयोगपरिणत, असत्यमन प्रयोगपरिणत आदि विशेषणो से चारो पदो के कुल १२६ × ४ = ५०४ भग होते है।

वचनप्रयोगपरिणत के भी पॉच सौ चार भग–जिस प्रकार मन प्रयोगपरिणत के उपर्युक्त पाँच सौ चार भग होते है, उसी प्रकार वचनप्रयोगपरिणत के भी पाँच सौ चार भग होते है।

औदारिक आदि कायप्रयोगपरिणत के एक सौ छियानवे भंग–औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत आदि सात पद है, इनके असयोगी सात भग और द्विकसयोगी इक्कीस भग, यो कुल ७ + २१ = २८ भग एक पद के होते है। सातो पदो के कुल २८ × ७ = १९६ भग कायप्रयोगपरिणत के होते है।

त्रियोगसम्बन्धी मिश्रपरिणत भग–इस प्रकार मन प्रयोगपरिणत सम्बन्धी पाँच सौ चार, वचनप्रयोगपरिणत सम्बन्धी पाँच सौ चार और कायप्रयोगपरिणत सम्बन्धी एक सौ छियानवे, यो कुल एक हजार दो सौ चार भग प्रयोगपरिणत के होते है। जिस प्रकार प्रयोगपरिणत दो द्रव्यो के कुल एक हजार दो सौ चार भग कहे गये है, उसी प्रकार मिश्रपरिणत दो द्रव्यो के भी कुल एक हजार दो सौ चार भग समझने चाहिए।

विस्रसापरिणत द्रव्यो के भग—जिस रीति से प्रयोगपरिणत दो द्रव्यो के भग कहे गये है, उसी रीति से विस्रसापरिणत दो द्रव्यो के वर्ण, गध, रस, स्पर्श और सस्थान, इन पाँच पदो के विविध पदो को लेकर असयोगी और द्विकसयोगी भग भी यथायोग्य समझ लेना चाहिए। *(वृत्ति पत्राक ३३७-३३८)*

Elaboration—In the aforesaid six aphorisms (80-85) various alternatives (*bhang*) of three kinds of transformations (mental, joint and natural) with varied associations, including that of mind (*manoyoga*), and their progressive sub-categories have been mentioned

Six alternatives of three basic transformations—With regard to two substances there are six alternatives Three individually and three with combinations of two each

Five hundred four alternatives of manah prayoga parinat—First of all there are 10 alternatives of *satya manah prayoga parinat*, *mrisha manah prayoga parinat* (etc), four individually and six with combinations of two each Then there are 21 alternatives of *aarambh satya manah prayoga parinat* (etc), six individually and fifteen with combinations of two each In the same way there are 21 alternatives each for the remaining five sub-categories including *anaarambh satya manah prayoga parinat* This way there are total 126 alternatives (21 × 6) for *aarambh*, *anaarambh*, *samrambh*, *asamrambh*, *samaarambh* and *asamaarambh*

In the same way like *satya manah prayoga parinat* there are also 126 alternatives each for *mrisha manah-prayoga parinat*, *satya-mrisha manah-prayoga parinat*, and *asatya-amrisha manah-prayoga parinat* with six sub-categories including *aarambh* This way there are 504 (126 × 4) alternatives of transformations for the four basic categories including *satya manah prayoga parinat*

Five hundred four alternatives of *vachan prayoga parinat*—Like the aforesaid 504 alternatives for *manah prayoga parinat*, there are 504 alternatives for *vachan prayoga parinat* following the same pattern

One hundred ninety six alternatives of kaaya prayog parinat—There are 7 basic categories of *kaaya prayog parinat* including *audarik sharira kaaya prayog parinat* For these seven there are 28 alternatives of seven individually and twenty one with combinations of two each For seven sub-categories the total number of alternatives becomes 28 × 7 = 196

Alternatives for *mishra parinat* for three activities—As aforesaid with regard to two substances there are 1204 alternatives for *prayog*

parinat—504 *manah prayoga* + 504 *vachan prayoga* + 196 *kaaya prayog* In the same way there are 1204 alternatives also for *mishra parinat* with regard to two substances

Alternatives of visrasa parinat—Following the pattern of *prayoga parinat* (consciously transformed), alternatives for *visrasa parinat* should also be derived with various combinations (individual and combination of two) of activities and the five attributes of colour, smell, taste, touch and constitution *(Vritti, leaf 337 338)*

तीन द्रव्यो सम्बन्धी भग **ALTERNATIVES OF TRANSFORMATION OF THREE SUBSTANCES**

८६. [प्र] तिण्णि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ?

[उ.] गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा १। अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया १। अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणया २। अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ३। अहवा दो पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए ४। अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया ५। अहवा दो मीससापरिणया, एगे वीससापरिणए ६। अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ७।

८६. [प्र] भगवन् ! क्या तीन द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है, मिश्रपरिणत होते है, अथवा विस्रसापरिणत होते है ?

[उ] गौतम ! तीन द्रव्य या तो प्रयोगपरिणत होते है, या मिश्रपरिणत होते है, अथवा विस्रसापरिणत होते है, या एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है और दो द्रव्य मिश्रपरिणत होते है, या एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है और दो द्रव्य विस्रसापरिणत होते है, अथवा दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है और एक द्रव्य मिश्रपरिणत होता है, अथवा दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है और एक द्रव्य विस्रसापरिणत होता है, अथवा एक द्रव्य मिश्रपरिणत होता है और दो द्रव्य विस्रसापरिणत होते है, अथवा दो द्रव्य मिश्रपरिणत होते है और एक द्रव्य विस्रसापरिणत होता है, या एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है, एक द्रव्य मिश्रपरिणत होता है और एक द्रव्य विस्रसापरिणत होता है।

86. [Q.] *Bhante* ! Are three substances *prayoga parinat* (consciously transformed), *mishra parinat* (jointly transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed) ?

[Ans.] Gautam ! Three substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed), or *mishra parinat* (jointly transformed) or *visrasa parinat* (naturally transformed) Also one of these substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the other two *mishra parinat* (jointly transformed), or one could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the other two *visrasa parinat* (naturally

transformed), or two of these substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the remaining one *mishra parinat* (jointly transformed), or one could be *mishra parinat* (jointly transformed) and the other two *visrasa parinat* (naturally transformed), or two could be *mishra parinat* (jointly transformed) and the remaining one *visrasa parinat* (naturally transformed), or one could be *prayoga parinat* (consciously transformed), one *mishra parinat* (jointly transformed) and one *visrasa parinat* (naturally transformed)

८७. [प्र] जइ पयोगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया, वइप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया ?

[उ.] गोयमा ! मणप्पयोगपरिणया वा० एवं एक्कगसंयोगो, दुयसयोगो तियसयोगो य भाणियव्वो।

८७. [प्र] भगवन् ! यदि वे तीनो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है तो क्या मन प्रयोगपरिणत होते है, या वचनप्रयोगपरिणत होते है अथवा वे कायप्रयोगपरिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! वे (तीन द्रव्य) या तो मन प्रयोगपरिणत होते है, या वचनप्रयोगपरिणत होते है, अथवा कायप्रयोगपरिणत होते है। इस प्रकार एकसयोगी (असयोगी), द्विकसयोगी और त्रिकसयोगी भग कहने चाहिए।

87. [Q.] *Bhante* ! If three substances are *prayoga parinat* (consciously transformed), then are they transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! They could be transformed either due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), or conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*) In the same way alternatives with singularity, combinations of two and three should be stated

८८. [प्र.] जइ मणप्पयोगपरिणया किं सच्चमणप्पयोगपरिणया ४ ?

[उ.] गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया वा ४। अहवेगे सच्चमणप्पयोगपरिणए, दो मोसमणप्पयोगपरिणया एवं दुयसयोगो, तियसंयोगो भाणियव्वो। एत्थ वि तहेव जाव अहवा एगे तंससंठाणपरिणए वा एगे चउरंससंठाणपरिणए वा एगे आययसंठाणपरिणए वा।

८८. [प्र.] भगवन् ! यदि तीन द्रव्य मन प्रयोगपरिणत होते है तो क्या वे सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है ? (असत्यमन प्रयोगपरिणत होते है) इत्यादि प्रश्न है।

[उ] गौतम ! वे तीनो द्रव्य सत्यमन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा यावत् असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत होते है, अथवा उनमे से एक द्रव्य सत्यमन प्रयोगपरिणत होता है और दो द्रव्य मृषामन प्रयोगपरिणत होते है, इत्यादि प्रकार से यहाँ भी द्विकसयोगी और त्रिक सयोगी भग कहने चाहिए।

तीन द्रव्यो के प्रयोगपरिणत की तरह ही मिश्रपरिणत और विस्रसापरिणत के भग कहने चाहिए- यावत् अथवा एक त्र्यस (त्रिकोण) संस्थानरूप से परिणत हो, एक समचतुरस्र-सस्थानरूप से परिणत हो और एक आयत-सस्थानरूप से परिणत हो, यहाँ तक कहना चाहिए।

88. *Bhante* ! If three substances are transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), then are they transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*) ? (and other questions like *mrisha manah-prayoga parinat* and so on)

[Ans.] Gautam ! They could be transformed either due to truthful conscious activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*), or and so on up to non-truthful-non-untruthful conscious activity of mind (*asatya-amrisha manah-prayoga parinat*) Also one of these substances could be transformed due to truthful activity of mind (*satya manah-prayoga parinat*) and the other two due to untruthful activity of mind (*mrisha manah-prayoga parinat*) All other alternatives with various combinations of two and three should be stated here

Like the alternatives of *prayoga parinat* (consciously transformed), those of *mishra parinat* and *visrasa parinat* should also be stated and so on up to or one substance is transformed as attributes of triangular constitution, one is transformed as attributes of square constitution and one is transformed as attributes of rectangular constitution

विवेचन प्रयोगपरिणत आदि तीन पदो के असयोगी तीन भग, द्विकसयोगी छह और त्रिकसयोगी एक भग होता है। यो कुल दस भग होते है।

सत्यमन प्रयोगपरिणत आदि चार पद है, इनके असयोगी (एक-एक) चार भग, द्विकसयोगी बारह भग और त्रिकसयोगी चार भग होते है। यो कुल ४ + १२ + ४ = २० भग हुए। इसी प्रकार मृषामन प्रयोगपरिणत के भी चार भग समझने चाहिए। इसी रीति से वचनप्रयोगपरिणत और कायप्रयोगपरिणत के भग समझ लेने चाहिए।

प्रयोगपरिणत की तरह मिश्रपरिणत के और विस्रसापरिणत के भी (वर्णादि के भेदो को लेकर) भग कहने चाहिए।

Elaboration—There are ten alternatives of the said three basic categories including *prayoga parinat* (consciously transformed)—three in singularity, six as combinations of two and one as combination of three

There are four sub-categories of *manah parinat* including *satya manah prayoga parinat*. For these there are 20 alternatives—four in singularity, twelve as combinations of two and four as combinations of three The same pattern is applicable to alternatives of *mrisha manah*

prayoga parınat etc as well as those of *vachan prayog parınat* and *kaaya prayoga parınat* Lıke *prayoga parınat* (conscıously transformed), alternatıves for *mıshra parınat* and *vısrasa parınat* should also be stated

चार आदि द्रव्यो के सयोग से निष्पन्न भग

ALTERNATIVES OF TRANSFORMATION OF FOUR AND MORE SUBSTANCES

८९. [प्र] चत्तारि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ३ ?

[उ.] गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा। अहवेगे पओगपरिणए, तिण्णि मीसापरिणया १। अहवा एगे पओगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया २। अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ३। अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ४। अहवा तिण्णि पओगपरिणया, एगे मीससापरिणए ५। अहवा तिण्णि पओगपरिणया, एगे वीससापरिणए ६। अहवा एगे मीससापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ७। अहवा दो मीसापरिणया, दो वीससापरिणया ८। अहवा तिण्णि मीससापरिणया, एगे वीससापरिणए ९। अहवेगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १, अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए २, अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ३।

८९. [प्र] भगवन् ! चार द्रव्य क्या प्रयोगपरिणत होते है, या मिश्रपरिणत होते है, अथवा विस्रसापरिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! वे (चार द्रव्य) (१) या तो प्रयोगपरिणत होते है, या (२) मिश्रपरिणत होते है, अथवा (३) विस्रसापरिणत होते है, अथवा (४) एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है, तीन द्रव्य मिश्रपरिणत होते है, या (५) एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होता है और तीन विस्रसापरिणत होते है, अथवा (६) दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है और दो मिश्रपरिणत होते है, या (७) दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है और दो विस्रसापरिणत होते है, अथवा (८) तीन द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है और एक द्रव्य मिश्रपरिणत होता है, अथवा (९) तीन द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है और एक द्रव्य विस्रसापरिणत होता है, अथवा (१०) एक द्रव्य मिश्रपरिणत होता है और तीन द्रव्य विस्रसापरिणत होते है, अथवा (११) दो द्रव्य मिश्रपरिणत होते है और दो द्रव्य विस्रसापरिणत होते है, अथवा (१२) तीन द्रव्य मिश्रपरिणत होते है और एक द्रव्य विस्रसापरिणत होता है, अथवा (१३) एक प्रयोगपरिणत होता है, एक मिश्रपरिणत होता है और दो विस्रसापरिणत होते है, अथवा (१४) एक प्रयोगपरिणत होता है, दो द्रव्य मिश्रपरिणत होते है और एक द्रव्य विस्रसापरिणत होता है, अथवा (१५) दो द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है, एक मिश्रपरिणत होता है और एक विस्रसापरिणत होता है।

89. [Q.] *Bhante* ! Are four substances *prayoga parınat* (conscıously transformed), *mıshra parınat* (jointly transformed) or *vısrasa parınat* (naturally transformed) ?

[Ans.] Gautam ! Four substances could be (1) *prayoga parinat* (consciously transformed), or (2) *mishra parinat* (jointly transformed) or (3) *visrasa parinat* (naturally transformed). Also (4) one of these substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the other three *mishra parinat* (jointly transformed), or (5) one could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and the other three *visrasa parinat* (naturally transformed), or (6) two of these substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and two *mishra parinat* (jointly transformed), or (7) two could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and two *visrasa parinat* (naturally transformed), or (8) three of these substances could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and one *mishra parinat* (jointly transformed), or (9) three could be *prayoga parinat* (consciously transformed) and one *visrasa parinat* (naturally transformed), or (10) one could be *mishra parinat* (jointly transformed) and three *visrasa parinat* (naturally transformed), or (11) two could be *mishra parinat* (jointly transformed) and two *visrasa parinat* (naturally transformed), or (12) three could be *mishra parinat* (jointly transformed) and one *visrasa parinat* (naturally transformed), or (13) one could be *prayoga parinat* (consciously transformed), one *mishra parinat* (jointly transformed) and two *visrasa parinat* (naturally transformed), or (14) one could be *prayoga parinat* (consciously transformed), two *mishra parinat* (jointly transformed) and one *visrasa parinat* (naturally transformed), or (15) Two could be *prayoga parinat* (consciously transformed), one *mishra parinat* (jointly transformed) and one *visrasa parinat* (naturally transformed)

९०. [प्र.] जइ पयोगपरिणया कि मणप्पयोगपरिणया ३ ?

[उ.] एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असखेज्जा अणंता य दव्वा भाणियव्वा। दुयासंजोएणं, तियासजोएणं जाव दससंजोएण बारससंजोएणं उवजुंजिऊण जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेंति ते सव्वे भाणियव्वा। एए पुण जहा नवमसए पवेसणए भणीहामि तहा उवजुंजिऊण भाणियव्वा जाव असंखेज्जा। अणंता एवं चेव, नवरं एक्कं पदं अब्भहियं जाव अहवा अणता परिमंडलसंठाणपरिणया जाव अणता आययसंठाणपरिणया।

९०. [प्र] भगवन् ! यदि चार द्रव्य प्रयोगपरिणत होते है तो क्या वे मन प्रयोगपरिणत होते है, या वचन-प्रयोगपरिणत होते है, अथवा काय-प्रयोगपरिणत होते है ?

[उ.] गौतम ! ये सब तथ्य पूर्ववत् कहने चाहिए तथा इस क्रम से पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, यावत् सख्यात, असख्यात और अनन्त द्रव्यो के विषय मे कहना चाहिए। द्विकसयोग से, त्रिकसयोग से,

यावत् दस के सयोग से, बारह के सयोग से, जहाँ जिसके जितने सयोगी भग बनते हो, उतने सब भग उपयोगपूर्वक (अपनी बुद्धि से उपयोग लगाकर) कहने चाहिए। ये सभी सयोगी भग आगे नौवे शतक के बत्तीसवे प्रवेशनक नामक उद्देशक मे जिस प्रकार हम कहेगे, उसी प्रकार उपयोग लगाकर यहाँ भी कहने चाहिए, यावत् अथवा अनन्त द्रव्य परिमण्डल-सस्थानरूप से परिणत होते है, यावत् अनन्त द्रव्य आयत-सस्थानरूप से परिणत होते है।

90. [Q.] *Bhante* ! If four substances are *prayoga parinat* (consciously transformed), then are they transformed due to conscious activity of mind (*manah-prayoga parinat*), conscious activity of speech (*vachan-prayoga parinat*) or conscious activity of body (*kaaya-prayoga parinat*) ?

[Ans.] Gautam ! All these should be derived following the aforesaid pattern And this way the progression should be extended to five, six, seven, eight, nine, ten and so on up to countable, innumerable and infinite substances All possible alternatives for combinations of two, three and so on up to ten, twelve and so on should be derived using one's own wisdom and application All these alternatives should be stated here as will be stated in the thirty second lesson titled Praveshanak of the ninth chapter and so on up to infinite substances are transformed as spherical constitution and so on up to infinite substances are transformed as rectangular constitution

विवेचन चार द्रव्यो सम्बन्धी भग—चार द्रव्यो के प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और विस्रसापरिणत आदि तीन पदो के असयोगी तीन भग, द्विकसयोगी नौ भग और त्रिकसयोगी तीन भग होते है। इस तरह ये सभी मिलकर ३ + ९ + ३ = १५ भग होते है। पूर्वोक्त पद्धति के अनुसार इनसे आगे के भगो के लिए पूर्वोक्त क्रम से सस्थानपर्यन्त यथायोग्य भगो की योजना कर लेनी चाहिए।

पॉच द्रव्यो के असयोगी तीन भग, द्विकसयोगी बारह भग और त्रिकसयोगी छह भग, यो कुल ३ + १२ + ६ = २१ भग होते है। इस प्रकार पाँच, छह, यावत् अनन्त द्रव्यो के भी यथायोग्य भग बना लेने चाहिए। सूत्र के मूल पाठ मे ग्यारह सयोगी भग नही बतलाया गया है, क्योकि पूर्वोक्त पदो मे ग्यारह सयोगी भग नही बनते।

नौवे शतक के बत्तीसवे उद्देशक मे गागेय अनगार के प्रवेशनक सम्बन्धी भग बताए गये है, तदनुसार यहाँ भी उपयोग लगाकर भगो की योजना कर लेनी चाहिए। *(वृत्ति, पत्राक ३३९)*

Elaboration—There are fifteen alternatives of the said three basic categories including *prayoga parinat* (consciously transformed) for four substances—three in singularity, nine as combinations of two and three as combination of three Following the aforesaid pattern other progressive alternatives should be derived up to the sub-category of constitution

There are fifteen alternatives of the said three basic categories including *prayoga parinat* (consciously transformed) for four

substances—three in singularity, twelve as combinations of two and six as combination of three In the same way alternatives should be derived for five, six and so on up to infinite substances In the original text of the book there is no mention of an alternative of combination of eleven This is because combination of eleven is not possible here

In the thirty second lesson titled Praveshanak of the ninth chapter, alternatives in context of ascetic Gangeya have been mentioned Accordingly these alternatives should be stated here *(Vritti, leaf 339)*

परिणामो का अल्पबहुत्व COMPARATIVE NUMBERS OF TRANSFORMATIONS

९१. [प्र.] एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं पयोगपरिणयाणं मीसापरिणयाणं वीससापरिणयाणं य कयरे कतरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

[उ.] गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया, अणतगुणा, वीससापरिणया अणंतगुणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति०।

॥ अट्ठम सए : पढमो उद्देसओ समत्तो ॥

९१. [प्र] भगवन् ! प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और विस्रसापरिणत, इन तीनो प्रकार के पुद्गलो मे कौन-से (पुद्गल), किन (पुद्गलो) से अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ?

[उ] गौतम ! प्रयोगपरिणत पुद्गल सबसे थोडे है, उनसे मिश्रपरिणत पुद्गल अनन्तगुणे है और उनसे विस्रसापरिणत पुद्गल अनन्तगुणे है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है, भगवन् ! यह इसी प्रकार है', ऐसा कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरण करने लगे।

91. [Q.] *Bhante* ! Of *prayoga parinat* (consciously transformed), *mishra parinat* (jointly transformed) and *visrasa parinat* (naturally transformed) particles of matter which one are comparatively less, more, equal and much more ?

[Ans.] Gautam ! *prayoga parinat* (consciously transformed) are minimum, *mishra parinat* (jointly transformed) are infinite times more then these, *visrasa parinat* (naturally transformed) are infinite times more than these

"*Bhante* ! Indeed that is so Indeed that is so " With these words and so on up to ascetic Gautam resumed his activities

विवेचन · **सबसे कम और सबसे अधिक पुद्गल**—मन-वचन-कायरूप **योगो से परिणत** पुद्गल सबसे थोडे है, क्योकि जीव और पुद्गल का सम्बन्ध अल्पकालिक है। प्रयोगपरिणत पुद्गलो से **मिश्रपरिणत** पुद्गल अनन्तगुणे

है, क्योंकि प्रयोगपरिणामकृत आकार को न छोडते हुए विस्रसापरिणाम द्वारा परिणामान्तर को प्राप्त हुए मृतकलेवरादि अवयवरूप पुद्गल अनन्तानन्त है और विस्रसापरिणत तो उनसे भी अनन्तगुणे है, क्योंकि जीव द्वारा ग्रहण न किये जा सकने योग्य परमाणु आदि पुद्गल अनन्तगुणे है।

॥ अष्टम शतक प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

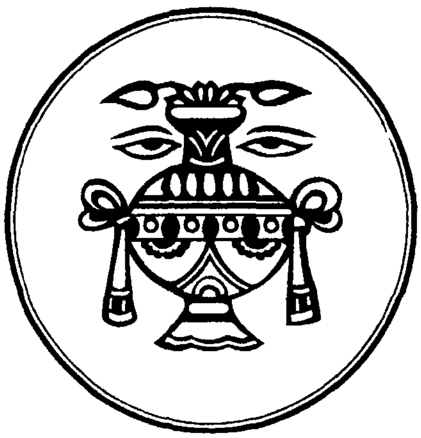
॥ भगवती सूत्र द्वितीय भाग समाप्त ॥

Elaboration—Maximum and minimum—Matter particles consciously transformed (*prayoga parinat*) due to mental, vocal and physical activities are minimum because the association of soul and matter is of comparatively short duration Jointly transformed matter particles are infinite times more than consciously transformed (*prayoga parinat*) particles This is because there are infinite matter particles in various natural transformations without any change in the consciously transformed (*prayoga parinat*) state, for example the constituent particles of dead bodies Naturally transformed particles are infinite times more than even these because the number of matter particles, ultimate particles, that cannot be acquired by living beings is infinite

● END OF THE FIRST LESSON OF THE EIGHTH CHAPTER ●

● END OF ILLUSTRATED BHAGAVATI SUTRA PART TWO ●

परिशिष्ट
APPENDIX



Appendix-1

Technical Terms

SHRI BHAGAVATI SUTRA (VYAKHYAPRAJNAPTI) Part-2

The alphabetical index of technical terms according to aphorism number. First numeral in Shatak (chapter), second is Uddeshak (lesson) and third is Sutra (aphorism) number.

(A)

A-madhya = without a middle (5/7/9, 10, 5/8/3, 4, 5)

A-pradesh = without sections (5/7/2, 3, 4, 5, 7, 8, 9)

Aabhoganirvartit = with awareness (7/6/12)

Aadaan = sense organs (5/4/34)

Aadhaakarma = food specifically prepared for an ascetic (7/1/20)

Aadhikaraniki = activity of collecting instruments of violence (5/6/10)

Aagati = birth (6/3/9)

Aagneya (6/5/36)

Aajiva = Ajivaks (8/-/-, 1/1)

Aakar = settlements near mines (7/6/31)

Aalaap = communicating (5/4/31)

Aalisandak = a kind of bean (6/7/2)

Aalu = potato (7/3/5)

Aan-paan (5/1/16)

Aan-pran = one exhalation and inhalation (5/1/21)

Aara = spokes or epochs (5/1/21)

Aarambh = sinful activity (5/7/30, 31, 33, 34, 8/1/54, 85)

Aarambh mrisha manah-prayoga parinat = transformed due to untruthful sinning conscious activity of mind (8/1/53)

Aarambh satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful sinning conscious activity of mind (8/1/52, 83, 85)

Aargat = within the range (5/4/3, 4)

Aasakt = obsessed with (7/1/17)

Aasan = seat (5/7/34)

Aayaam = length (6/5/19)

Abaadha kaal = duration of dormant state (6/3/11)

Abhang = no alternative, only one state (6/4/7, 9)

Abhashak jiva = a being not capable of speech (6/3/20, 28)

Abhavasiddhik = not destined to be liberated (6/3/7, 9, 7/3/17, 18, 6/4/8, 9, 6/10/9)

Abhavya (6/3/28, 6/4/9)

Abhavya charam (6/3/28)

Abhinibodhik ajnana = lack of sensory knowledge (6/4/14)

Abhinibodhik jnana = sensory knowledge (6/4/14)

Abhinibodhik jnani = one having sensory knowledge (6/3/22)

Abhisamnvagat = at his command (5/4/36)

Achakshudarshani = one without optical perception (6/3/18)

Acharam jiva = a being not in his final birth (6/3/28, 29)

Acharanga (5/4/16)

Acharya (5/6/19)

Achetan = inanimate (8/1/3)

Achitt = free of living organisms (6/2/1, 7/1/20), pure (7/1/9), without life (7/7/3, 8, 19)

Achyut dev-lok (5/8/19)

Achyut Kalpopapannak = belonging to the Achyut Kalp (8/1/16, 31)

Achyut Kalpopapannak dev (8/1/24)

Adada = 8 4 million Adadanga (5/1/21, 6/7/5)

Adadanga = 8 4 million Trutit (5/1/21, 6/7/5)

Adatt = not given (8/-/-, 1/1)

Adattadaan = taking without being given, stealing (5/9/16)

Addha Palyopam (6/7/8)

Addha-pratyakhyan = abstainment done for specific duration (7/2/7, 8)

Adhaakarma = food specifically prepared for an ascetic (5/6/15, 16, 17, 18, 7/8/9)

Adhah Saptam Prithvi = Tamstamah-prabha, the seventh hell (5/3/5, 6/6/1, 3, 6/8/1)

Adhah-saptama prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings of Adhah-saptama or Tamastama hell (8/1/9, 20)

Adhai Dveep (5/9/13, 6/8/35)

Adhamata = vileness (6/3/2)

Adharmastikaaya = rest entity (7/10/3, 9)

Adhastan-adhastan = lowest of the lower (8/1/16)

Adhastan-adhastan Graiveyak Kalpateet (8/1/31)

Adhastan-adhastan Graiveyak Kalpateet dev (8/1/24)

Adhikarani = anvil (6/1/14), instrument of passions (7/1/6)

Adho-avadhik = a person with limited avadhi jnana (7/7/21)

Adholok = lower world (7/1/5)

Adi-pramaan = the first of all validations (6/7/7)

Aditya Devs (6/5/36, 38, 40)

Agam = scriptural knowledge (5/4/26)

Agneya (6/5/40)

Agneya Kone = south-east (5/1/4, 22, 23, 27, 2/4)

Agni-kaya = fire-bodies (5/6/9)

Agnidhyamit = roasted in fire (5/2/13)

Agnijhushit = loose properties due to fire (5/2/13)

Agniparinamit = transformed by fire (5/2/13)

Agnisevit = cooked in fire (5/2/13)

Ahaar = intake (6/1/1), food intake (7/1/1, 4)

Ahaar Samudghat (7/5/2)

Ahaar sanjna = inclination for food (7/8/5)

Ahaar-aparyapti = underdeveloped faculty of intake (6/4/19)

Ahaar-pad (6/2/1)

Ahaarak (jivas) = living beings with intake (6/3/1, 6/4/7, 10, 20), with food intake (7/1/3, 4)

Ahaarak dvar = port of beings with intake (6/3/28, 6/4/7)

Ahaarak jiva = a being capable of intake (6/3/26, 28)

Ahaarak kaaya yoga = activity of telemigratory body (8/1/71)

Ahaarak sharira = telemigratory body (6/4/18, 8/1/71)

Ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory body (8/1/55, 69, 70)

Ahaarak-mishra kaaya yoga = activity of telemigratory-cum-mixed body (8/1/71)

Ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory-cum-mixed body (8/1/55, 70)

Ahasuttam = according to Agams (7/1/16)

Ahetu = non-cause (5/7/41, 42, 43), cause-free perception (5/7/44)

Ahoratra = 30 Muhurts, day and night (5/1/16, 21, 5/8/15, 19, 6/7/5)

Airun = anvil (6/1/14)

Airyapathiki kriya = careful movement of an accomplished ascetic or an omniscient with non-vitiating karmas (7/1/16)

Ajiva = non-living thing(5/9/2, 7/7/4, 5, 9, 10)

Ajiva kaaya = non-living entities (7/10/3, 6, 8)

Ajivas = non-souls (7/2/1)

Ajnana (6/4/14)

Akaam-nikaran = involuntary experience of pain (7/7/24)

Akaant = not beautiful (6/3/2, 7/6/33)

Akaaran (7/1/20)

Akamaniya = not adorable (6/3/2)

Akaran = without instrument (6/1/7, 8, 10)

Akarkash vedaniya karmas = karmas not causing harsh suffering or extreme anguish (7/6/19-21)

Akashaayi jivas = beings without passions (6/4/13, 17)

Akashastikaaya = space entity (7/10/3, 6, 9)

Akhyanti = say (5/3/1, 5/5/2, 5/6/13, 6/10/1, 11)

Akritakrit = not bought (7/1/20)

Aksha = Dhanush, Yuga, Nalika, Dand, Musal, 96 Anguls (6/7/7)

Alaapak = statements (5/1/17)

Alasi = linseed, Linum Usitatssium (6/7/3)

Aleshya = without complexion of soul (6/4/10)

Aleshya jivas = beings without soul complexion (6/4/15)

Almastu = perfect (5/5/1, 7/8/1)

Alok = unoccupied space (5/9/14)

Alp-asrava = mild influx of karmas (5/6/9, 6/3/3)

Alp-karma = mild karmic bondage (5/6/9)

Alp-kriya = mild involvement in activities (5/6/9, 6/3/3)

Alp-vedana = mild pain (5/6/9)

Alpabahutva = minimum-maximum (6/3/1, 29)

Alpahaari (7/1/19)

Alpakarma = less karmas (7/3/6, 7, 9)

Alpakarmaa (6/3/3)

Alpanirjara = little shedding of karmas (6/1/13)

Alpavedana (6/1/13, 7/3/3)

Amaayi-samyagdrishti = deceit-free and righteous (5/4/30)

Amanojna = not attractive (6/3/2, 7/6/33)

Amanushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory body of beings other than humans (8/1/69)

Amanushya ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory-cum-mixed body of beings other than humans (8/1/70)

Amit = infinite (5/4/4, 34)

An-ardh = without halves (5/7/9, 10, 5/8/3, 4, 5)

Anaabhog nivartit = in context of non-voluntary food intake (7/1/4)

Anaabhoganirvartit = unawares (7/6/12)

Anaadi = without a beginning (5/9/14)

Anaahoot = not an outcome of an invitation (7/1/20)

Anaakaar upayoga = perceptive involvement, darshan (6/3/25, 28, 6/4/16)

Anaarambh (5/7/30, 31, 33, 8/1/54)

Anaarambh satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful non-sinning conscious activity of mind (8/1/52, 83, 85)

Anabhidhyetata = abhorrence (6/3/2)

Anagaar = homeless (7/1/1, 7/2/7)

Anagaar-pratyakhyan = austerities done without any relaxations (7/2/8)

Anagat (7/2/7)

Anagat-pratyakhyan = to advance the observation of some austerity resolved to be observed in future (7/2/8)

Anahaarak (jivas) = beings without intake (6/4/7, 19)

Anahaarak = without food intake (7/1/3, 4)

Anahaarak jiva = a being not capable of intake (6/3/26, 28)

Anant = without an end (5/9/14)

Anantakaayik jivas = infinite souls in one body (6/3/29)

Anantar kshetravagadh = an area away from their own body (6/10/12)

Anantar-pashchaatkrit Samaya (Anantar-pachchhakadasamayamsi) = the Samaya preceding the first Samaya of the monsoon season (5/1/15, 21)

Anantar-puraskrit Samaya (Anantar-purakkhadasamayamsi) = the Samaya following the first Samaya of the monsoon season (5/1/14, 21)

Anantaragam = scriptural knowledge acquired in immediate succession (5/4/26, 28)

Anantaropapannak = born continuously without a time gap (5/4/30)

Anarthdanda viraman = abstention from needless and wanton violence (7/2/8)

Anat dev-lok (5/8/19)

Andaj = birth from an egg (7/5/2)

Andhakaar (6/5/14)

Anevambhoot = not according to acquired karmas (5/5/2, 3)

Angaar = ember (5/6/9, 7/1/20)

Angaar dosh (7/1/17, 18, 20)

Angaar-bhoot = ablaze like embers (7/6/32)

Angadesh (5/1/2)

Angas (7/10/12)

Angul (finger-width) = 8 Yavamadhyas (6/7/7)

Anil = wind (5/2/-)

Anisht = undesirable (6/3/2, 7/6/33)

Anivritti-baadar Samparaya = 9th level of purity (6/3/18, 29)

Anivrittikaran (7/1/10)

Anriddhiprapt pramatt-samyat samyagdrishti paryaptak sankhyeyavarshayushk manushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory body of a non-accomplished (without power of telemigration) negligent-disciplined righteous fully developed human being having countable years life-span (8/1/69)

Antakar = terminator of the cycles of rebirth (5/4/17, 25, 26, 28)

Antakriddashanga Sutra (5/4/16, 17)

Antar kaal = intervening period (5/7/26)

Antar-muhurt = less than forty eight minutes (6/7/1, 7/1/4)

Antar-muhurt = less than a Muhurt (5/8/18, 19, 6/3/11)

Antaraal gati = transitional movement (7/1/4)

Antaraya = energy hindering (6/3/10, 11)

Anu = particle of matter (6/7/7)

Anubhag-naam-gotra-niyukt-ayu = potency-race-status programme activated life-span (6/8/33)

Anubhag-naam-karma (6/8/34)

Anubhag-naam-nidhatt = potency programming (6/8/29)

Anubhag-naam-nidhatt-ayu = potency programmed life-span (6/8/27)

Anubhag-naam-nidhatt-ayushk = potency programmed life-span (6/8/31)

Anuddisht = not meant for (7/1/20)

Anumaan = inferential knowledge (5/4/26)

Anurdhvata = abjectness (6/3/2)

Anutatika-bhed = splitting into cracks (5/4/36)

Anuttar Vimaan = matchless celestial vehicles or divine realms (5/4/33, 6/6/2, 6/8/26)

Anuttar Vimaan kalps (6/8/25)

Anuttaraupapatik (5/4/31, 32, 33)

Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/16)

Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik devs (8/1/16)

Anuvrats = five minor vows (7/6/35, 37)

Anuyogadvar Sutra (5/4/26, 6/7/8)

Anyapaalak (7/10/2)

Anyatirthi = heretics (7/10/2)

Anyatirthik = people of other faiths or heretics (5/3/1, 5/5/2, 5/6/13, 6/10/1, 11, 7/1/1)

Anyatragat (7/9/4)

Anyatragat = existing elsewhere (6/9/7)

Anyayuthik = heretics (6/1/1)

Ap kaaya (7/10/19)

Apan = shop or marketplace (5/7/34)

Aparajit (6/6/2)

Aparajit Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev (8/1/24)

Aparajit dev-lok (5/8/19)

Apardha Avamodarika = eating a little less than half Unodari (7/1/19)

Aparigraha (5/7/30, 31, 33)

Aparitta jiva = unlimited in terms of body or cycles of birth (6/3/21)

Aparyapta = underdeveloped (5/4/30)

Aparyaptak (8/1/32, 62)

Aparyaptak Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped bodies of Asur Kumar abode dwelling gods (8/1/23, 30)

Aparyaptak baadar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped bodies of gross one-sensed-earth-bodied beings (8/1/32)

Aparyaptak dvindriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of underdeveloped two-sensed beings (8/1/19, 33)

Aparyaptak garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of underdeveloped five-sensed human being born out of womb (8/1/64)

Aparyaptak garbhavyutkrantik jalachar = underdeveloped aquatic animals born out of womb (8/1/28)

Aparyaptak garbhavyutkrantik manushya = underdeveloped human beings born out of womb (8/1/29)

Aparyaptak garbhavyutkrantik manushya panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed human beings born out of womb (8/1/22)

Aparyaptak jiva = underdeveloped being (6/3/19, 28)

Aparyaptak Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell (8/1/20, 27, 34)

Aparyaptak sammurchhim jalachar prayoga parinat pudgala = matter

consciously transformed as underdeveloped bodies of aquatic animals of asexual origin (8/1/28)

Aparyaptak sammurchhim jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of underdeveloped aquatic five-sensed animals of asexual origin (8/1/21)

Aparyaptak sammurchhim manushya panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of underdeveloped five-sensed human beings of asexual origin (8/1/22)

Aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped bodies of Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/25)

Aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya sharira kaaya prayoga parinat = consciously transformed due to conscious activity of transmutable body of underdeveloped five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/67)

Aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya-mishra sharira kaaya prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of underdeveloped five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/68)

Aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya prayoga parinat = transformed due to conscious activity of karmic body of underdeveloped five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/71)

Aparyaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya mishra parinat = transformed due to joint activity of karmic body of underdeveloped five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/73)

Aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman sharira prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped gross physical, fiery and karmic bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (8/1/36, 40)

Aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman sharira sparshanendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped gross physical, fiery and karmic bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings with sense organ of touch (8/1/44)

Aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (8/1/17, 26 32, 38)

Aparyaptak sukshma prithvikaayik ekendriya sparshanendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as underdeveloped sense organ of touch of bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (8/1/42)

Aparyaptak sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of underdeveloped minute earth-bodied one-sensed being (8/1/59)

Apashchim = final (7/2/8)

Apashchim maranantik-samlekhana-joshana-aradhana = the practice of acceptance of final ultimate vow till death (7/2/8)

Apkaayik = water-bodied (6/5/43, 7/4/2)

Apkaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of one-sensed water-bodied beings (8/1/6)

Apkaayiks = water-bodied beings (6/4/5)

Apradesh = without sections (6/4/1)

Apradeshi = non-sectional (6/4/-)

Apramaan (7/1/20)

Apramatt chhadmasth sadhu = accomplished ascetic who is short of omniscience due to residual karmic bondage (7/1/6)

Apratihat = devoid of control on sinful indulgence (7/2/1)

Apratyakhyan = non-renunciation of sinful activities (6/4/21-24), devoid of renunciation (7/2/1)

Apratyakhyani = non-renouncer (6/4/21, 7/2/10, 13, 14, 17, 23, 24, 27, 29)

Apratyakhyaniki kriya = activity of non-renunciation (5/6/5, 6, 7, 7/8/8)

Apriya = not lovable (6/3/2)

Apurvakaran = a Gunasthaan (6/3/18, 7/1/10)

Aradhana = spiritual worship (5/6/15, 16, 17, 18), practice (7/2/8), endeavour (8/-/-, 1/1)

Arahar = Satina, a type of pulse, Cajamus indicus (6/7/2)

Aram = pleasure garden (5/7/34)

Arambhiki kriya = sinful activity (5/6/5, 6, 7, 8)

Aran dev-lok (5/8/19)

Archi Vimaan (6/5/32, 33, 37)

Archimali (6/5/32)

Archimali Vimaan (6/5/38)

Ardhamaagadhi (5/4/24)

Ardhapushkar Dveep (5/9/13)

Arhantanam = the worthy ones (7/9/20)

Arthanupura (5/1/19, 21, 6/7/5)

Arthanupuranga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Arunabh (7/9/21)

Arunavar (6/5/2)

Arunodak Samudra (6/5/14)

Arupi = formless (7/10/3)

Asaata vedana = experience of pain (7/6/8)

Asaata = pain (6/10/11)

Asamaarambh mrisha manah-prayoga parinat = transformed due to untruthful non-tormenting conscious activity of mind (8/1/53)

Asamaarambh satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful non-tormenting conscious activity of mind (8/1/52, 83)

Asamaarambh satya vachan-prayoga parinat = transformed due to untruthful non-tormenting conscious activity of speech (8/1/54)

Asamrambh satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful conscious activity of mind not to resolve to sin (8/1/52, 83)

Asamvahat = devoid of application (6/9/13)

Asamvrit = unrestrained (7/1/1), devoid of blockage of inflow of karmas (7/2/1)

Asamvrit anagaar = unrestrained ascetic (7/9/1)

Asamyat = unrestrained or unrighteous (5/4/21, 6/3/14, 18, 7/2/1, 28)

Asamyat jivas = unrestrained beings (6/4/12)

Asanjni = non-sentient (6/3/16, 18, 6/4/9, 7/7/24)

Asanjni jivas = non-sentient beings (6/4/9, 7/7/28)

Asata vedaniya karmas = karmas causing unpleasant experience (7/6/27, 29)

Asatya-amrisha manah-mishra parinat (8/1/73)

Asatya-amrisha manah-prayoga parinat = transformed due to non-truthful-non-untruthful conscious activity of mind (8/1/51, 53, 82, 85)

Asatya-amrisha vachan-prayoga parinat = transformed due to non-truthful-non-untruthful conscious activity of speech (8/1/54)

Ashaashvat = non-eternal (7/3/23)

Ashadh (7/3/1)

Ashan = staple food (5/6/1, 2, 3, 4, 7/1/9, 17)

Ashanimegh = hail-bearing cloud or rock-smashing cloud (7/6/31)

Asharin jivas = soul without body (6/4/18)

Ashivish = the poisonous (8/-/-, 1/1)

Ashram = hermitage (5/7/34, 7/6/31)

Ashubh = inauspicious or dark (5/9/3, 4, 7), ignoble (6/3/2)

Ashvakarni (7/3/5)

Ashvin (7/3/1)

Asti = existent (7/10/6)

Astibhaava = existent state (7/10/6)

Astikaaya = existent conglamorative ontological categories or entities (7/10/3, 6, 8)

Asur Kumar (5/9/5)

Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of Asur Kumar abode dwelling gods (8/1/23)

Asur Kumar dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed Asur Kumar gods (8/1/13)

Atata (5/1/19, 6/7/5)

Atatanga (5/1/19, 6/7/5)

Atikrant (7/2/7)

Atikrant-pratyakhyan = to postpone for future the observation of some austerity (7/2/8)

Atimuktak (5/4/17)

Atithi Samvibhag = taking care of the guests or the needy (7/2/8)

Atma kshetravagadh = area occupied by their own body (6/10/12)

Atmagam = self-acquired scriptural knowledge (5/4/26, 28)

Atmapradesh = soul space-points (8/1/54)

Attalak = bastion on a rampart (5/7/34)

Audarik = gross physical (6/8/34, 8/1/26, 28, 29, 54)

Audarik mishra sharira kaaya yoga = activity of gross-cum-mixed physical body (8/1/71)

Audarik sharira = gross physical body (6/1/11, 6/4/18)

Audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body (8/1/55, 56, 62, 65, 85)

Audarik-mishra kaayayoga = gross physical-cum-mixed activity of body (8/1/71)

Audarik-mishra sharira = gross-cum-mixed physical body (8/1/65)

Audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body (8/1/55, 65)

Aughik = general statement (6/4/8)

Aughik jivas = beings in general (6/4/18)

Aughik jnana = knowledge in general (6/4/14)

Aupapatik Sutra (5/1/2, 7/9/7, 8, 10)

Avaanchhaniya = not covetable (6/3/2)

Avadhi jnani = endowed with extrasensory perception of the physical dimension (5/7/44, 6/3/22)

Avadhi-jnana (5/4/33, 6/4/14)

Avadhidarshani = one with extrasensory perception of the physical dimension (6/3/18)

Avagahana = accommodate (5/7/3, 5), body size (7/6/33)

Avagahana samsthan (8/1/67, 69, 71)

Avagahana-naam-karma (6/8/34)

Avagahana-naam nidhatt-ayu = space-occupation or form programmed life-span (6/8/27)

Avagahana-sthaan-ayu = period of existence in a shape (5/7/29)

Avakashantar = intervening (6/5/32)

Avalika = innumerable Samayas (5/1, 7-9, 6/7)

Avasarpini = the regressive cycle of time (5/1/20, 5/5/5), ten Kodakodi Sagaropam (5/1/21, 22, 25, 27)

Avasarpini kaal = regressive half-cycle of time (6/7/8, 9, 7/6/31)

Avasarpini Utsarpini kaal-chakra = complete progressive-regressive cycle of time (6/7/8)

Avasthit Kaal = changeless time (5/1/20, 22, 25, 27)

Avava = 8 4 million Avavanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Avavanga = 8 4 million Adada (5/1/19, 21, 6/7/5)

Avayukaayik ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable body of other than air-bodied one-sensed being (8/1/67)

Avedak jivas = non-genderic or gender transcendent beings (6/3/29, 6/4/17)

Avedi = non-genderic or gender transcendent beings (6/3/13, 18)

Avirat = devoid of detachment (7/2/1)

Avirati = non-restraint (7/8/8)

Avishuddha leshya = impure leshya (6/9/13)

Avyabadh (6/5/40)

Avyuchchhitti naya = existent material aspect (7/3/23)

Ayan = solstice or half year (5/1/18, 21), 3 Ritus, 6 months (6/7/5)

Ayogi = one having no association (6/3/24)

Ayogi jivas = beings without association (6/4/15)

Ayogikevali = omniscient without association (6/3/7, 16, 28), 14th level of purity (6/3/18)

Ayu-karma = life-span determining karma (7/8/9)

Ayu-kshaya = concluding his life-span (7/9/22)

Ayushya = life-span (5/3/-, 6/8/34, 7/1/1)

Ayushya karma = life-span determining karma (6/3/11-18, 21-28, 6/8/34, 6/9/1)

Ayushya-bandh = life-span bondage (6/8/27)

Ayut (5/1/19, 21, 6/7/5)

Ayutanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

(B)

Baadar = gross (5/7/19, 26, 6/5/10, 25, 6/8/8, 8/1/32)

Baadar agnikaaya = gross fire-bodies (6/8/26)

Baadar apkaaya = gross water-bodies (6/8/26)

Baadar jiva = gross being (6/3/27, 28)

Baadar prithvikaaya = gross earth-bodies (6/8/26)

Baadar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of gross one-sensed earth-bodied beings (8/1/6)

Baadar vanaspatikaaya = gross plant-bodies (6/8/26)

Baadar vayukaaya = gross air-bodies (6/8/26)

Baadar-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of gross earth-bodied one-sensed being (8/1/58, 59)

Baal = Balor, a bean, Canavalia gladiata and Canavalia ensiformis (6/7/2), a type of corn (6/10/1)

Baalaagra (hair-tip) of humans of Devakuru and Uttarakuru area) = 8 Ratharenu (6/7/7)

Baalaagra (hair-tip) of humans of Haimavat-Hairanyavat area) = 8 Baalaagra (hair-tip) of humans of Harivarsha-Ramyakvarsha area) (6/7/7)

Baalaagra (hair-tip) of humans of Harivarsha-Ramyakvarsha area) = 8 Baalaagra (hair-tip) of humans of Devakuru and Uttarakuru area) (6/7/7)

Baalaagra (hair-tip) of humans of Purva-videh area) = 8 Baalaagra (hair-tip) of humans of Haimavat-Hairanyavat area) (6/7/7)

Baalaagra = hair-tip (6/6/5, 6/7/7)

Baalaagra prithakatva = two to nine Baalaagras (6/6/5)

Badar prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of gross one-sensed-earth-bodied beings (8/1/17)

Baddha = captivated (7/1/17)

Bahiddhadaan = material involvements including libido and possessions (5/9/16)

Bahukarma = many karmas (6/3/1)

Bahutva = many forms (5/6/14)

Baint = Vitasti, Bitta, 12 Anguls (6/7/7)

Bal = physical strength (7/7/20)

Baladev (5/2/17, 5/5/5)

Balor = Baal, a bean, Canavalia gladiata and Canavalia ensiformis,

Balukaprabha prithvi (5/8/15, 6/6/1, 6/8/1, 12)

Bandh = bondage (8/-/-, 1/1)

Bandh dvar = ports of influx (6/3/18)

Bandh-sthiti = duration of bondage (6/3/11)

Bandhachhed = destruction of bondage (7/1/13)

Barat = a seed (6/7/3)

Bavadi = rectangular reservoir (5/7/34)

Beej = seed (7/3/3, 4)

Beej-jivas (7/3/3, 4)

Bhaand = earthenware or groceries (5/6/5, 6, 7)

Bhaava = state (7/2/36)

Bhaava-man = mind (5/4/18, 33)

Bhaava-sthaan-ayu = period of existence of properties (5/7/29)

Bhaavadesh = in context of state (5/8/4, 8)

Bhaavit = enkindling (5/8/1, 2,9)

Bhadra = noble (5/8/1, 2)

Bhadra Motha = Naagar Motha, Cyperus rotundus (7/3/5)

Bhadrapad (7/3/1)

Bhagalpur (5/1/2)

Bhagavai Bhashya (5/3/5, 5/4/18)

Bhagavati Vritti (5/3/1)

Bhajana = optional (5/6/7)

Bhambha = a type of drum (5/4/1)

Bhambhabhoot = replete with bawls (7/6/31)

Bhand = earthen pots and grocery (5/7/34)

Bhang = alternatives (6/4/6, 8/1/85)

Bhasha-manah-paryapti (6/4/19)

Bhasha-paryapti (6/4/19)

Bhashak = capable of speech (6/3/1)

Bhashak dvar (6/3/28)

Bhashak jiva = a being capable of speech (6/3/20, 28)

Bhashante = assert (5/3/1)

Bhashavargana (8/1/54)

Bhasmibhoot = ablaze like scalding ashes (7/6/32)

Bhava = birth (5/3/1)

Bhava-kshaya = conclding birth or the karmas causing specific birth (7/9/22)

Bhavan-pati = abode dwelling (6/10/11)

Bhavan-pati Devs = abode dwelling gods (5/8/16, 5/9/9, 11)

Bhavan-vaasi = abode dwelling (5/9/17)

Bhavan-vaasi dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed abode dwelling divine beings (8/1/12, 13)

Bhavapratyaya = by birth (8/1/71)

Bhavasiddhik = destined to be liberated (6/3/7, 9, 17, 18, 6/4/8, 9, 6/10/9)

Bhavasth Keval-darshani = a living omniscient (6/3/18)

Bhavya = worthy (6/4/9, 20), worthy of liberation (6/1/1, 6/3/28, 6/6/-, 7/3/1)

Bhavya dvar = port of the worthy (6/4/8, 9)

Bhaya Mohaniya karma (7/8/6)

Bhaya sanjna = inclination of fear (7/8/5)

Bhedan = cut into many pieces (5/7/3, 8)

Bheri = a large drum (5/4/1)

Bhoga = physical experiences (7/7/7, 8, 9, 19)

Bhogi = with physical experience (7/7/19, 20)

Bhoot = organisms

Bhoot = plant bodied beings, organisms (5/5/2, 5/6/10, 12, 6/5/16, 6/10/11, 7/2/1, 7/6/24)

Bhuj-parisarp (8/1/28)

Bhuj-parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya = terrestrial five-sensed limbed reptilian animals (8/1/10)

Bil-pankti = row of narrow wells or water-pits (5/7/34)

Bilak (7/6/37)

Bitta = Vitasti, Baint, 12 Anguls (6/7/7)

Brahmalok (6/5/43)

Brahmalok dev-lok (5/8/19)

Brahmalok kalp = the fifth heaven (6/5/2, 18)

Brihi = coarse paddy (6/7/1)

Buddha = enlightened (5/5/1, 7/8/1)

Bunty = a seed (6/7/3)

(C)

Chaaran (5/2/17)

Chaaritra Mohaniya karmas = conduct deluding karmas (5/4/6)

Chaaritra-viradhana = fault related to conduct (5/6/18)

Chaaritramoha karma = conduct-disturbing karma (6/4/24)

Chaitra (7/3/1)

Chaitya (5/1/2)

Chakravaal-vishkambh = circumference (5/2/17)

Chakravarti (5/2/17, 5/5/5)

Chakshudarshani = one with optical perception (6/3/18)

Chakshurindriya = sense organs of seeing (5/9/9, 7/7/13, 8/1/35, 37)

Chalan = move (5/7/1)

Chamar (7/9/14, 15)

Chamarendra (7/9/10, 19)

Champa (5/1/1, 2, 5/10/1, 7/9/10)

Champapuri Kalp (5/1/2)

Champaran (5/1/2)

Chand = excruciating (5/6/14)

Chandan-baala (5/1/2)

Chandra (8/1/24, 31)

Chandra Vimaan Jyotishk devs = stellar gods of lunar celestial vehicle (8/1/15)

Chandraabh (6/5/32)

Chandrama (5/10/1)

Charam = final (6/3/1, 29)

Charam dvar (6/3/28)

Charam jiva = a being in his final birth (6/3/28, 29)

Charam karma = last karma (5/4/27, 28)

Charam nirjara = last shedding (5/4/27, 28)

Charam shariri = with terminal body or destined to liberation (5/3/5, 5/4/17, 25, 26)

Charika = an eight cubit wide pathway between moat and rampart (5/7/34)

Chaturdash Purvadhar = scholar of fourteen Purvas (5/4/36)

Chaturindriya (5/8/18)

Chaturindriya jivas (7/7/17)

Chaturindriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of four-sensed beings (8/1/4, 7)

Chaturmukh = a temple with gates on all four sides (5/7/34)

Chaturyam dharma = four limbed religion (5/9/15, 16)

Chatushk = meeting point of four roads (5/7/34)

Chatushpad (8/1/28)

Chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals (8/1/10)

Chatvar = a square, court, circus, or plaza (5/7/34)

Chaya = assimilate (6/3/2), acquire (7/1/10, 7/8/9)

Chayati (7/1/10)

Chetak (7/9/10)

Chhaal = bark (7/3/4)

Chhadmasth = one who is short of omniscience due to residual karmic bondage (5/7/37, 38, 43, 44, 7/1/1, 7/7/20-22, 7/8/1), a person with finite cognition (5/-/-), unrighteous (5/5/-)

Chhadmasth maran = non-omniscient death (5/7/44)

Chhadmasth vitaraag = one who is detached but short of omniscience due to residual karmic bondage (6/3/18, 28)

Chhedan = cut into two (5/7/3, 8)

Chhedan-bhedan = cut and disintegrate (5/7/6)

Chhedopasthapanik Chaaritra = conduct of re-initiation after rectifying faults (6/3/18)

Chhiravidarika (7/3/5)

Chhiriya (7/3/5)

Chikkanikrit = smoothly fixed (6/1/4)

Chillal = a turbid pond (5/7/34)

Chulika (5/1/19, 21, 6/7/5)

Chulikanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Churnika-bhed = crushing or grinding into powder form (5/4/36)

Chyavan = descent (7/5/2)

(D)

Dadhivahan (5/1/2)

Dalik = clusters (6/3/11)

Dand = Dhanush, Yuga, Nalika, Aksha, Musal, 96 Anguls (6/7/7)

Dandaks = places of suffering (5/-/-)

Darshan = perception (5/4/4, 6/3/1)

Darshan-viradhana = fault related to perception/faith (5/6/18)

Darshanavaraniya = perception obscuring (6/3/10, 11)

Darshanavaraniya karma = perception deluding karma (5/4/11, 18)

Dashavaikalik Sutra (5/1/2)

Desh = section (5/7/2, 11, 13)

Desh Uttar-guna pratyakhyan = partial auxiliary-virtue enhancing renunciation (7/2/8)

Desh-mool-guna pratyakhyan = partial basic-virtue enhancing renunciation (7/2/3, 5, 8)

Desh-mool-guna pratyakhyani = partial basic-virtue enhancing renouncers (7/2/17, 23)

Desh-pratyakhyani = partial renouncers (7/2/13)

Desh-uttar-guna pratyakhyan = partial auxiliary-virtue enhancing renunciation (7/2/6)

Desh-uttar-guna pratyakhyani = partial auxiliary-virtue enhancing renouncers (7/2/24, 27)

Desh-virati = partial detachment (6/4/12)

Deshavakashik = limiting area of activity (7/2/8)

Deshi (5/4/24)

Dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed divine beings (8/1/8, 12)

Dev-gan = gods or divine realms (5/9/17)

Dev-lok = realm of gods (7/9/22)

Devakul = temples (5/7/34)

Devananda Brahmani (5/4/16)

Devandhakaar (6/5/14)

Devaparigha = like a gorge impassable even for gods (6/5/14, 29, 31)

Devapratikshobh = matter of disappointment for gods (6/5/14, 29, 31)

Devaranya = terrifying like a forest even for gods (6/5/14)

Devatamisra (6/5/14)

Devavyuha = like a labyrinth impassable even for gods (6/5/14)

Dhaatri = food prepared for a nurse (7/1/20)

Dhank = raven (7/6/37)

Dhanush = Dand, Yuga, Nalika, Aksha, Musal, 96 Anguls (6/7/7)

Dharmastikaaya = motion entity (7/10/3, 6, 8, 9)

Dhataki Khand (5/1/23, 24, 25, 27, 5/9/13)

Dhoom (7/1/20)

Dhoom dosh (7/1/17, 18, 20)

Dhoom-prabha (6/6/1, 6/8/1)

Dhoom-prabha prithvi (5/8/15)

Dhyanantarika = in between courses of meditation (5/4/19)

Digvrat = limiting movement in each direction (7/2/8)

Dirghika = large lake (5/7/34)

Dishaparimaan vrat = limiting movement in each direction (7/2/8)

Dooti = food prepared for a maid (7/1/20)

Draha = lake (5/7/34)

Dravya = entity (7/2/36), substances (5/4/36)

Dravya-man = brain (5/4/18)

Dravya-sthaan-ayu = period of existence as matter (5/7/29)

Dravyadesh = in context of substance (5/8/4, 5, 7, 8)

Dravyarthik naya = existent material aspect (7/2/38), (7/3/23)

Drishti = attitude (6/4/20), outlook or perception (7/5/2)

Drishti dvar = port of attitude (6/4/11)

Dronmukh = hamlets (7/6/31)

Duhkharupa = miserable (5/6/14)

Duhrasata = repulsive taste (6/3/2)

Duhsaha = unbearable (5/6/14)

Duhsparshata = repulsive touch (6/3/2)

Dukham-dukhama Ara = epoch of extreme sorrow (6/7/8, 7/6/31)

Dukham-sukhama Ara = epoch of more sorrow than happiness (6/7/8)

Dukhama Ara = epoch of sorrow (6/7/8)

Dundubhi = a type of drum (5/4/1)

Durahiyasam = unbearable (5/6/14)

Durbhiksh-bhakt = food prepared for distributing to beggars and destitute during a drought (5/6/15)

Durg = gripping (5/6/14)

Durgandhata = repulsive smell (6/3/2)

Durvarnata = repulsive colour (6/3/2)

Dvar = door (5/7/34), port (6/3/1), categories, headings (6/4/6, 20)

Dveep-samudra = island-seas (6/5/2)

Dvibhaag-prapt = eating half the standard quantity (7/1/19)

Dvindriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of two-sensed being (8/1/56)

Dvindriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body of two-sensed being (8/1/65)

Dvindriya jivas (5/7/33, 5/8/18, 7/7/17)

Dvindriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of two-sensed beings (8/1/4, 7, 19)

Dvipradeshiya skandh = aggregate of two ultimate particles (5/7/2)

(E)

Ejan = vibrate (5/7/1, 2)

Ekaant adand = singular abstinence from violence (7/2/1)

Ekaant baal = completely ignorant (7/2/1)

Ekaant dand = singular indulgence in violence (7/2/1)

Ekaant pundit = completely sagacious (7/2/1)

Ekatva = one form (5/6/14)

Ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of one-sensed being (8/1/56)

Ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of one-sensed being (8/1/57)

Ekendriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body of one-sensed being (8/1/65)

Ekendriya jivas = one sensed beings like earth-bodied beings (5/8/17, 6/3/28)

Ekendriya karman sharira kaaya-prayoga parinat = transformed either due to conscious activity of karmic body of one-sensed being (8/1/71)

Ekendriya mishra parinat pudgala = matter jointly transformed as bodies of one-sensed beings (8/1/46, 47)

Ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of one-sensed beings (8/1/4, 5)

Ekendriya tiryanch yoni = one-sensed animal genus (5/3/5)

Ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable body of one-sensed being (8/1/66, 67)

Ekendriya vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of one-sensed being (8/1/68)

Erand = a fruit (7/1/13)

Eshana = exploration (7/1/20)

Eshaniya (Esiyassa) = explored with proper care (7/1/20), faultless (7/1/9), prescribed (7/1/17)

Eshit = suitable for an ascetic (7/1/20)

Evambhoot = according to acquired karmas (5/5/2, 3)

(G)

Gaadhikrit = firmly adhered (6/1/4)

Galan = disintegration (8/1/3)

Ganadhar (5/4/28)

Gandh = smell (7/7/11, 12)

Gandh parinat = transformed as attributes of smell (8/1/48)

Gandh parinat pudgala (8/1/48)

Gandharva (8/1/24, 31)

Gandharva devs (8/1/14)

Gangeya (8/1/90)

Garbhaj = of placental origin (5/3/5, 8/1/62)

Garbhaj manushya = human beings born out of womb (5/8/19)

Garbhaj manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed human being born out of womb (8/1/63, 64)

Garbhaj panchendriya tiryagyonik jivas = five-sensed animals born out of womb (5/8/19)

Garbhavyutkrantik = born out of womb (8/1/10)

Garbhavyutkrantik chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals born out of womb (8/1/10, 21)

Garbhavyutkrantik jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals born out of womb (8/1/10, 21)

Garbhavyutkrantik khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals born out of womb (8/1/21)

Garbhavyutkrantik manushya panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings born out of womb (8/1/11, 22)

Gardatoya (6/5/36, 40)

Garha = slandering (5/6/3)

Gati = rebirth (6/3/9), movement (6/8/34, 7/1/11)

Gati parinaam = movement orientation (7/1/12, 13)

Gati-naam

Gati-naam-karma (6/8/34)

Gati-naam-nidhatt = genus programming (6/8/29)

Gati-naam-nidhatt-ayu = genus programmed life-span (6/8/27)

Gau = Gavyut, Kosa, 2000 Dhanush (6/7/7)

Gavyut = Gau, Kosa, 2000 Dhanush (6/7/7)

Ghan = gong like solid instruments (5/4/1)

Ghanodadhi = dense water (6/8/26)

Ghar = house (5/7/34)

Ghranendriya = sense organs of smell (7/7/13)

Gilli = howda or a seat on elephant's back (5/7/34)

Glaanabhakt = food meant for the sick (5/6/15)

Godhoom = wheat (6/7/1)

Gopur = main gate of entrance into a town (5/7/34)

Gotirtha = cow-shed (5/2/17)

Gotra = status determining (6/3/11)

Graiveyak (6/8/26)

Graiveyak dev-lok (5/8/19)

Graiveyak Kalpateet Vaimanik devs (8/1/16)

Gram = villages (7/6/31)

Granthika = knot (5/3/-)

Grasaishana = care in eating (7/1/20)

Griddha = infatuated with (7/1/17)

Grihapan = houses or shops (6/5/4, 21, 6/8/2, 15)

Grishma (ritu) = summer (5/1/21, 7/3/1)

Guna = virtues (7/2/8)

Gunamsh = unit of attribute (5/7/21)

Gunasheelak Chaitya (7/10/1, 4)

Gunasthans = levels of spiritual ascendance or level of purity of soul (5/4/28, 6/3/12, 18, 28, 29, 6/4/17, 7/1/16, 7/7/1)

Gunavrats = restraints that reinforce the practice of anuvrats (7/2/8, 7/6/35, 37)

(H)

Haath = 24 Anguls (6/7/7)

Hahabhoot = replete with wails (7/6/31)

Halla (7/9/10)

Hari = a name of Indra (5/4/16)

Harinaigameshi (5/4/15 16)

Heelana = contempt (5/6/3)

Hemachandracharya (5/1/2)

Hemant (ritu) = cold (5/1/21, 7/3/1)

Hetu = cause/who knows cause (5/7/37, 38, 44)

Hirili (7/3/5)

Horebha = a type of drum (5/4/1)

Huhuka = 8 4 million Huhukanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Huhukanga = 8 4 million Avava (5/1/19, 21, 6/7/5)

Huthihoo (7/3/5)

(I)

Ihagat = existing here (6/9/7, 7/9/4)

Indriya = sense organs (5/4/34)

Indriya-aparyapti (6/4/19)

Indriya-paryapti (6/4/19)

Irya samiti = code of care of movement (7/10/5)

Iryapathik-bandh = bondage due to passionless association (6/3/7)

Iryapathiki kriya = careful activity of an accomplished ascetic (7/1/6, 7/7/1)

Ishaan dev (5/8/19)

Ishaan kalp (6/5/2, 6/8/26)

Ishaan Kone = north-east (5/1/4, 22, 23, 27, 5/2/4)

Ishatpragbhara = Siddhashila (6/8/1)

Ishatpurovaat (5/2/-)

(J)

Jaati-kulakoti = caste-lineage (7/5/2)

Jalachar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed aquatic animal (8/1/62)

Jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals (8/1/10)

Janai-pasai = knows and sees (5/4/4)

Jati-gotra-nidhatt = race-status programming (6/8/33, 34)

Jati-gotra-nidhatt-ayu = race-status programmed life-span (6/8/33, 34)

Jati-gotra-niyukt = race-status programme activation (6/8/33, 34)

Jati-gotra-niyukt-ayu = race-status programme activated life-span (6/8/33, 34)

Jati-naam-gotra-nidhatt = race-form-status programming (6/8/33, 34)

Jati-naam-gotra-nidhatt-ayu = race-form-status programmed life-span (6/8/33, 34)

Jati-naam-gotra-niyukt = race-form-status programme activation (6/8/33, 34)

Jati-naam-gotra-niyukt-ayu = race-form-status programme activated life-span (6/8/33, 34)

Jati-naam-karma (6/8/34)

Jati-naam-nidhatt = race programming (6/8/29, 33, 34)

Jati-naam-nidhatt-ayu = race programmed life-span (6/8/27, 33, 34)

Jati-naam-nidhatt-ayushk = race programmed life-span (6/8/31)

Jati-naam-niyukt = race programme activation (6/8/33, 34)

Jati-naam-niyukt-ayu = race programme activated life-span (6/8/33, 34)

Jayant (6/6/2)

Jayant dev-lok (5/8/19)

Jayi = special variety of barley, also called yav-yav (6/7/1)

Jhallari = cymbal (5/4/1)

Jihvendriya = sense organs of taste (7/7/13)

Jihvendriya evam sparshanendriya prayoga parinat = consciously transformed as sense organs of taste and touch (8/1/33)

Jinaprabh Suri (5/1/2)

Jiva = five sensed beings, souls (5/5/2), life force or soul (6/5/16), living beings (7/1/1), sentience (6/10/2)

Jiva dravya = soul entity (5/4/35)

Jiva kaaya = living entity (7/10/3)

Jiva-ghan = clustered life forms (5/9/16)

Jivabhigam Sutra (5/2/17, 5/6/14, 6/5/41, 43, 6/8/35, 7/4/2, 7/5/2)

Jivastikaaya = life entity (7/10/3, 11)

Jnana = knowledge (5/4/4)

Jnana dvar = port of knowledge (6/3/28, 6/4/14)

Jnana Guna-Pramaan (5/4/26)

Jnana-shakti = potency of spiritual knowledge (5/-/-)

Jnana-viradhana = fault related to knowledge (5/6/18)

Jnanavaran = veil of darkness (7/7/24)

Jnanavaraniya karma = knowledge obscuring karma (5/4/18, 5/6/9, 6/3/10-12, 14-28, 6/9/1)

Jnataputra = Bhagavan Mahavir (7/10/3, 6)

Joon = louse (6/6/5, 6/10/1)

Joshana = acceptance (7/2/8)

Jyeshth (7/3/1)

Jyotishk = stellar (5/7/36)

Jyotishk Devs = stellar gods (5/8/19, 5/9/9, 13, 17, 8/1/15)

(K)

Kaaladesh = in context of time (5/8/4, 8), relative to time (6/4/1-5)

Kaalatikrant = transgression related to time (7/1/19)

Kaalatikrant paan-bhojana (7/1/19)

Kaalod (5/1/26)

Kaalodadhi (5/1/26)

Kaam = cerebral experiences (7/7/2-4, 19)

Kaam-bhoga = cerebral-physical experiences (7/7/12)

Kaam-bhogi = with cerebral and physical experience (7/7/19)

Kaangani = a millet, Setaria italica (6/7/3)

Kaaya yoga = physical activity (8/1/54)

Kaaya yogi = one having physical association (6/3/24, 28, 6/4/15)

Kaaya-mishra parinat = transformed due to joint activity of body (8/1/72)

Kaaya-prayog = physical application (6/3/5)

Kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of body (8/1/50, 55, 8/1/81, 85, 87, 88, 90)

Kaayakaran = body-instrument (6/1/6, 7)

Kaayavargana = karmic particles of physical category (8/1/54)

Kaayiki = physical activity (5/6/10, 12)

Kadachi = serving spoons (5/7/34)

Kalaaya (6/7/2)

Kalasyaveshi Putra (7/10/22)

Kalodayi (7/10/2)

Kalp = divine realm (7/9/21)

Kalpa Sutra (5/4/16)

Kalpateet Vaimanik devs = celestial-vehicular gods beyond the Kalps (8/1/16)

Kalpopapannak Vaimanik devs = celestial-vehicular gods belonging to Kalps or specific divine realms (8/1/16)

Kalyanak = auspicious events (7/6/11)

Kanan = jungle near a town or village (5/7/34)

Kand = trunk (7/3/3, 4)

Kand-jivas = living organism of the trunk class (7/3/3, 4)

Kank = white crows (7/6/37)

Kantarabhakt = emergency food packed and taken along while crossing a difficult terrain (5/6/15)

Kapot leshya = pigeon complexion of soul (6/4/10, 7/3/7)

Karan = instrument or means of indulgence (6/1/6-8, 10-12, 14, 7/2/1)

Karbat = markets (7/6/31)

Kardam = slime (6/1/4, 14)

Karkash = harsh (5/6/14)

Karkash vedaniya karmas = karmas causing harsh suffering or extreme anguish (7/6/15, 17, 29)

Karma = act (7/7/20)

Karma prakritis = species of karma (6/3/10, 6/8/34, 6/9/1)

Karma vargana = karmic particles (6/3/5)

Karma-nishesh kaal = duration of experience or effective duration (6/3/11)

Karmakaran = karma-instrument (6/1/6, 7)

Karman = karmic (8/1/26-29, 31)

Karman kaaya yoga = activity of karmic body (8/1/71)

Karman sharira = karmic body (6/4/18)

Karman sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of karmic body (8/1/55, 71)

Karmasthiti = duration of karma (6/3/1)

Karna (5/1/2)

Kartik (7/3/1, 7/9/19)

Karuna = compassion (7/6/24)

Kashaaya = passions (6/4/20, 7/3/22)

Kashaaya dvar = port of passions (6/4/13)

Kashayik = caused by passions (6/3/7)

Kashi (7/9/10)

Katuk = bitter (5/6/14)

Kaushal (7/9/10)

Kautumbik purush = attendants (7/9/6, 15)

Kavalahar = intake of morsel (7/1/4)

Keval-darshani = one with ultimate perception, that of an omniscient (6/3/18)

Keval-jnani = omniscient (5/4/4)

Kevali = omniscient (5/-/-)

Kevali Samudghat = bursting forth and withdrawal of soul-space-points by an omniscient just before his death (6/4/7, 7/1/4, 7/5/2, 8/1/71)

Kevali-pakshik = self-enlightened omniscient (5/4/26)

Khadya = general food (5/6/-, 7/1/9, 17)

Khambh = pillar (5/7/34)

Khand-bhed = breaking into pieces (5/4/36)

Khanjan = dirt of a wheel (6/1/4, 14)

Kharamuhi = small drum (5/4/1)

Khatika = trench or gully (5/7/34)

Khattamegh = alkaline water bearing cloud (7/6/31)

Khechar (8/1/28)

Khechar panchendriya tiryanch = aerial five-sensed animals or birds (7/5/2)

Khechar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed aerial animal (8/1/62)

Khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals (8/1/10)

Khet = kraals (7/6/31)

Khilibhoot = fully fused (6/1/4)

Khiluda (7/3/5)

Khimsana = reprimanding (5/6/3)

Kithin = hermit-bowl made of bamboo (7/9/15)

Kittika = Varaha-kand, Tacca leontopetaloides (7/3/5)

Kulakars = clan-founders (5/-/-)

Kodakodi Sagaropam = a metaphoric unit of time (6/3/11)

Kodon = Kodrav, Paspalum scrobiculum (6/7/3)

Kodrav = Kodon, Paspalum scrobiculum (6/7/3)

Kolahal = replete with pandemonium (7/6/31)

Kolasthik = berry seed (6/10/1)

Koop = well (5/7/34)

Koot = peak or pinnacle (5/7/34)

Korant (7/9/20)

Kosa = Gavyut, Gau, 2000 Dhanush (6/7/7)

Kotisahit (7/2/7)

Kotisahit-pratyakhyan = where the last day of one abstainment and the first day of the immediate next abstainment become common (7/2/8)

Kreetakrit = purchased for shramans (5/6/15, 16, 17, 18)

Krishna leshya = black complexion of soul (6/4/10, 7/3/6)

Krishna vivar = area of darkness (6/5/16)

Krishna-raji = cluster of darkness or agglomerative entity of earth-derived darkness (6/5/17-32, 43, 6/8/26)

Kriya = act and consequence in terms of karmic bondage (5/6/12), activities (8/-/-, 1/1)

Kriyavaad = doctrine of endeavour (5/-/-)

Krodh sanjna = inclination of anger (7/8/5)

Krodh-kashaayi jivas = beings with anger (6/4/13)

Kshapak shreni = path of destruction of karmas (5/4/33)

Kshayik = due to destruction of karmas (5/4/18)

Kshayopasham = destruction-cum-pacification (5/4/18)

Ksheen moha = destroyed attachment (5/4/33), destroyed deluding karma (6/3/7)

Ksheen-bhogi = with an emaciated body (7/7/20)

Kshetra Palyopam (6/7/8)

Kshetra-sthaan-ayu = period of existence at a place (5/7/29)

Kshetradesh = in context of area (5/8/4, 5, 8)

Kshetratikrant = transgression related to movement of the sun (7/1/19)

Kshetratikrant paan-bhojan (7/1/19)

Kshobh = get agitated (5/7/1)

Kshullak-bhava-grahan = 256 Avalikas (6/7/5)

Kuddalak (6/7/9)

Kukkuti andak = hen's egg (7/1/19, 20)

Kukkuti-and pramaan = equivalent to the size of hen's egg (7/1/20)

Kukshi = 48 Anguls (6/7/7)

Kukuti = filthy body (7/1/20)

Kulath = a kind of gray or black gram, Dolichos biflorus (6/7/2)

Kulmash = Udad, a pulse (5/2/13)

Kumar-shraman = initiated in adolescence (5/4/17)

Kumud = a type of lotus (6/8/36)

Kunik (5/1/2)

Kunimahaari = carrion eaters (7/6/35, 36, 37)

Kunthu = an insect (7/8/2)

Kusumbh = a seed (6/7/3)

(L)

Labdh = acquired (5/4/36)

Lantak dev-lok (5/8/19)

Lava = seven Stoka (5/1/16, 21, 5/9/13, 6/7/4)

Lavan Samudra = Salt Sea (5/1)

Layan = a dugout or cave on a hill (5/7/34)

Leekh = nit (6/6/5, 6/10/1)

Leshya = soul complexion (6/4/10, 20, 6/9/13, 7/5/2)

Leshya-dvar = port of soul-complexion (6/4/10)

Lichchhavi (7/9/5)

Liksha (Leekh) = 8 Baalaagra (hair-tip) of humans of Purva-videh area) (6/7/7)

Loam ahaar = intake through body hair or follicle (7/1/4)

Lobh sanjna = inclination of greed (7/8/5)

Lobh-kashaayi jivas = beings with greed (6/4/13)

Lohakatah = steel cauldron (5/7/34)

Lohi = a steel pan or concave platen (5/7/34)

Lok (5/2/17)

Lok sanjna = inclination for specific information (7/8/5), to act according to common social customs (7/8/6)

Lokaant = edge of the universe (6/5/43, 6/6/5, 8)

Lokandhakaar (6/5/14)

Lokantik Devs = gods of the edge of the universe (6/5/36, 43)

Lokantik Vimaans = celestial vehicles at the edge of the universe (6/5/32, 6/5/36, 41-43)

Lokatamisra (6/5/14)

(M)

Maagadhi (5/4/24)

Maagh (7/3/1)

Maaghavati = intensely dark like the seventh hell (6/5/29, 31)

Maahendra dev-lok (5/8/19)

Maahendra kalp = the fourth heaven (6/5/2, 6/5/18, 6/8/26)

Maan sanjna = inclination of conceit (7/8/5)

Maan-kashaayi jivas = beings with conceit (6/4/13)

Maan-pramaan = comparative measures (5/9/10, 12)

Maargatikrant = transgression related to distance (7/1/19)

Maargatikrant paan-bhojana (7/1/19)

Maas = 30 Ahoratra, month (5/1/16, 21, 6/7/5)

Maaya sanjna = inclination of deceit (7/8/5)

Maaya-kashaayi jivas = beings with deceit (6/4/13)

Maayi-mithyadrishti = deceitful and unrighteous (5/4/30)

Madamb = boroughs (7/6/31)

Madguk (7/6/37)

Magadh (5/1/2, 5/4/24)

Maghaa = dark like the sixth hell named Maghaa (6/5/29, 31)

Maha nirjara = extensive shedding of karmas (7/7/20, 23)

Maha-asrava = intense influx of karmas (5/6/9)

Maha-karma = intense karmic bondage (5/6/9), extensive activity (6/3/2), much karmas (7/3/6, 7, 9)

Maha-kriya = intense involvement in activities (5/6/9)

Maha-vedana = intense pain (5/6/9)

Mahakarmaa (6/3/2)

Mahandhakaar (6/5/14)

Mahanirjara = extensive shedding of karmas (6/1/2, 4, 13)

Mahaparyavasaan = a noble end (6/1/4, 7/7/20, 23)

Mahapath = highway (5/7/34)

Mahapundarik = a type of lotus (6/8/36)

Mahasaaman (5/4/18, 19)

Mahashila = large rocks (7/9/11)

Mahashilakantak (7/9/5)

Mahashukra dev-lok (5/8/19)

Mahashukra Kalp (5/4/18, 19)

Mahasrava = extensive influx (6/1/1, 7/3/2, 7/10/16)

Mahavaat = stormy wind, gale or tempest (5/2/2, 3, 5, 9)

Mahavedana = extensive pain (6/1/2, 4, 13)

Mahavir Charitra (5/1/2)

Maithun = libido (5/9/16)

Maithun sanjna = inclination of sex (7/8/5)

Malla (7/9/5)

Mallak = earthen pot of the shape of a conical tumbler (6/5/3, 16)

Man = mind (5/4/18)

Man-karan = mind-instrument (6/1/6, 7)

Manah parinat (8/1/88)

Manah-mishra parinat = transformed due to joint activity of mind (8/1/72, 73)

Manah-paryapti = fully developed mental faculty (6/3/18, 6/4/19)

Manah-paryav jnana = extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings (6/3/22, 6/4/14)

Manah-paryav Jnani (5/7/44)

Manah-prayoga = mental application (6/3/5)

Manah-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of mind (8/1/50, 51, 54, 81, 82, 84, 85, 87, 88, 90)

Manak (5/1/2)

Mandal = orbit (5/1/13)

Mandar = Meru (5/1/23, 24, 25, 6/6/5)

Mandavaat = zephyr or soft and gentle breeze (5/2/2, 3, 5, 9)

Manobhakshya = mental food intake (7/1/4)

Manodravya-vargana = units of mental or neuronic capacity (5/4/32)

Manovargana = karmic particles of mental category (8/1/54)

Manoyoga = mental activity (8/1/54, 85)

Manoyogi = one having mental association (6/3/24, 28), sentient beings (6/4/15)

Manushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory body of human beings (8/1/69)

Manushya ahaarak-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of

telemigratory-cum-mixed body of human beings (8/1/70)

Manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed human being (8/1/60, 63)

Manushya panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings (8/1/8, 11)

Maranantik = till death (7/2/8)

Maranantik samudghat = bursting forth of some soul-space-points before the moment of death (6/6/3-8)

Margshirsh (7/3/1)

Masoor = a small-grained pulse, Lens esculenta (6/7/2)

Mati-ajnani = one not having sensory knowledge (6/3/23)

Mati-jnani = one having sensory knowledge (6/3/22)

Mayapratyayiki kriya = activity of deceit (5/6/5)

Megh-raji = resembling a row of black clouds (6/5/29, 31)

Meru (5/1/5, 5/2/12)

Milan = integration (8/1/3)

Mishra parinat = jointly or consciously-cum-naturally transformed (8/1/3, 49, 72, 73, 80, 84-86, 88, 89, 91)

Mishra parinat pudgala = jointly transformed matter (8/1/46)

Mit = finite (5/4/4, 34)

Mithyadarshan shalya = the thorn of wrong belief or unrighteousness (7/6/16, 20, 7/10/16, 18)

Mithyadarshan-pratyayiki kriya = activity of perverted faith (5/6/5, 6, 7)

Mithyadrishti = unrighteous (5/7/44, 6/3/15)

Mithyadrishti jivas = unrighteous beings (6/4/11)

Mithyatvakriya = unrighteous activity (7/4/2)

Mithyatvi = unrighteous (6/9/13)

Mohaniya = deluding (6/3/11)

Mohaniya karma = deluding karma (6/9/1)

Mool = root (7/2/8, 7/3/3, 4)

Mool-guna pratyakhyan = basic-virtue enhancing renunciation (7/2/2, 3)

Mool-guna-pratyakhyani = basic-virtue enhancing renouncer (7/2/9, 10, 14)

Mool-jivas = living organism or souls of the root-class (7/3/3)

Moolak beej = a seed (6/7/3)

Moong = green gram (6/7/2, 6/10/1)

Mridang = a two sided drum with bulging middle and unequal ends (7/1/5)

Mrisha manah-mishra parinat (8/1/73)

Mrisha manah-prayoga parinat = transformed due to untruthful conscious activity of mind (8/1/51, 53, 82, 85, 88)

Mrisha vachan-prayoga parinat = transformed due to untruthful conscious activity of speech (8/1/54)

Mrishavaad = falsity (5/9/16)

Mudgakarni (7/3/5)

Muhurt = 77 Lava or 3773 Aan-pran or 48 minutes (5/1/7)

Muhurtantar = slightly less than Muhurt (5/1/9)

Mukta = liberated (5/5/1)

Mula = radish (7/3/4, 5)

Muraj = a tabla-like hand-drum (6/7/9)

Murchhit = fond of (7/1/17)

Murmur = cinder (5/6/9)

Murmur-bhoot = ablaze like burning cow-dung cake (7/6/32)

Murtimant = with a form (8/1/3)

Musal = Dhanush, Yuga, Nalika, Aksha, Dand, 96 Anguls (6/7/7)

Musal = mace (7/9/16)

Musundhi = Syaha Musli, Murdannia scapiflorum (7/3/5)

(N)

Naag Kumar (5/9/5)

Naam = form determining (6/3/11)

Naamodaya (7/10/2)

Naarak panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings (8/1/8, 9)

Naarakayushya = infernal life-span (7/6/5)

Naarakayushya karma = infernal life-span determining karma (7/6/2)

Naasti = nonexistent (7/10/6)

Naastibhaava = nonexistent state (7/10/6)

Nagar = cities (7/6/31)

Naigam = command (5/4/16)

Nairayik = infernal beings (5/5/3)

Nairayik jiva = infernal being (6/4/2, 4, 7/2/10)

Nairitya Kone = south-west (5/1/4, 5/2/4)

Nalika = Dhanush, Yuga, Dand, Aksha, Musal, 96 Anguls (6/7/7)

Nalin = a type of lotus (6/8/36)

Nalina (5/1/19, 21, 6/7/5)

Nalinanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Napumsak-vedak jivas = beings with neuter gender (6/3/29)

Napumsak-vedi = neuter (6/3/12, 18)

Narad-putra (5/8/3, 4, 6)

Narmodaya (7/10/2)

Navakoti vishuddha = having nine purities (7/1/20)

Nayuta (5/1/19, 21, 6/7/5)

Nayutanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Neel leshya = blue complexion of soul (6/4/10, 7/3/6, 7)

Nharu = catgut (5/6/11)

Nidhatt = partially intransigent (6/1/4, 6/8/34)

Nihsangata = non-association (7/1/12, 13)

Nihshvaas = countable Avalikas, time taken for one inhalation (6/7/4)

Nikachit = intransigent (6/1/4)

Niraagata = detachment (7/1/12, 13)

Niranjanata = detachment (7/1/12, 13)

Niravashesh (7/2/7)

Niravashesh-pratyakhyan = abstaining completely from all the four kinds of food (7/2/8)

Nirej = in the state of stillness or non-vibration (5/7/15)

Nirgranthi-putra (5/1/1, 5/8/3, 4, 6)

Nirindhanata = absence of fuel of karmas (7/1/12, 13)

Nirjara = shedding (7/1/15)

Nirjhar = mountain stream (5/7/34)

Nirlepan = cleansing (7/4/2)

Nirupachaya-nirapachaya = without augmentation and de-augmentation (5/8/21, 23, 24, 25, 27, 28)

Nirupahat = intact (7/1/13)

Niryavalika Sutra (7/9/10, 13)

Nishek (6/8/34)

Nishkamp = non-vibrating (5/7/25)

Nishthitkrit = devoid of potency (6/1/4)

Nishthur = cruel (5/6/14)

Niyantrit (7/2/7)

Niyantrit-pratyakhyan = austerity done with complete control (7/2/8)

No-asamyat = non-unrestrained (6/3/14)

No-bhavasiddhik - no-abhavasiddhik = neither worthy of liberation nor unworthy of liberation (6/3/17, 18, 6/4/8)

No-bhogi = without physical experience (7/7/19)

No-kaami = without cerebral experience (7/7/19)

No-kaami-no-bhogi = without cerebral experience and without physical experience (7/7/19)

No-karma = spent karma particles (7/3/10, 11, 13, 16, 18 22)

No-napumsak = non-neuter (6/3/12)

No-paritta-no-aparitta jiva = neither limited nor unlimited being (6/3/21, 28)

No-paryaptak-no-aparyaptak jiva = neither developed nor underdeveloped being (6/3/19, 28)

No-purush = non-male (6/3/12)

No-samyat = the non-restrained (5/4/23, 6/3/14)

No-samyatasamyat = non-restrained-unrestrained (6/3/14)

No-sanjni - no-asanjni = neither sentient nor non-sentient (6/3/16, 18, 6/4/9)

No-stree = non-female (6/3/12)

No-sukshma-no-baadar jiva = neither minute nor gross (6/3/27, 28)

Nosamyat - noasamyat - nosamyatasamyat jivas = neither restrained nor unrestrained or restrained-unrestrained beings (6/4/12)

(O)

Odan = rice (5/2/13)

Ogh sanjna = inclination for information in general (7/8/5), involuntary activities in a state of stupor (7/8/6)

Oj ahaar = energy intake (7/1/4)

(P)

Paad (foot) = 6 Anguls (6/7/7)

Paan = liquids (5/6/1, 2, 3, 4, 7/1/9, 17)

Paap sthaan = sources of sin (7/6/16, 7/10/16)

Paap-karma = demeritorious karmas (6/1/4, 7/8/3)

Paargat = beyond the range (5/4/3, 4)

Paaritapaniki = activity of inflicting pain (5/6/10)

Paataal = the underworld (5/1/6)

Padma = a number (5/1/19, 21, 6/7/5), a type of lotus (6/8/36)

Padma leshya = yellow complexion of soul (6/4/10, 6/5/43, 7/3/9)

Padmanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Padmavati (7/9/10)

Paishachi (5/4/24)

Paksha = 15 Ahoratra, a fortnight (5/1/16, 21, 6/7/5)

Pakshi = aerial beings, birds (7/1/1)

Palimanthak = round or black gram (6/7/2)

Pallal = a delightful lake (5/7/34)

Palyopam = a metaphoric unit of time (5/1/19)

Panav = small drum (5/4/1)

Panch Mahavrat = five great vows (5/9/15)

Panch Mahavrat dharma = religion of five great vows (5/9/16)

Panch-samgraha (6/3/11)

Panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed being (8/1/56, 60)

Panchendriya audarik-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross-cum-mixed physical body of five-sensed being (8/1/65)

Panchendriya karman sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of karmic body of five-sensed being (8/1/71)

Panchendriya mishra parinat pudgala = matter jointly transformed as bodies of five-sensed beings (8/1/46)

Panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed beings (8/1/4, 8)

Panchendriya tiryagyonik jivas = five-sensed animals (5/7/34)

Panchendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable body of five-sensed being (8/1/66)

Panchendriya vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of five-sensed being (8/1/68)

Pandava (5/1/2)

Pankaprabha prithvi (5/8/15, 6/8/1, 13)

Parakram = valour (7/7/20)

Param = ultimate (6/7/7)

Param-avadhi jnani = a person with perfect avadhi jnana (7/7/22, 23)

Paramanu pudgal = ultimate particle of matter (5/7/1, 3, 5, 8, 9, 11, 5/8/5, 6/7/7)

Paramanu vijnana = theory of ultimate particles (5/-/-)

Parampar kshetravagadh = an area far away from their bodies (6/10/12)

Paramparagam = scriptural knowledge acquired through lineage (5/4/26, 28)

Paramparopapannak = born with a gap of time (5/4/30)

Paribhogaishana = care in eating (7/1/20)

Parigraha = acquisition, possession (5/7/-, 5/9/16)

Parigraha sanjna = inclination of possession (7/8/5)

Parigrahan = acquires (7/1/15)

Parigrahiki kriya = activity of possession (5/6/5)

Parihar-vishuddhi Chaaritra = destroying karma through special austerities (6/3/18)

Parikha = a moat or trench with narrow bottom and wide top (5/7/34)

Parikshep = circumference (6/5/4, 19)

Parimanakrit (7/2/7)

Parimanakrit-pratyakhyan = abstainment related to specific quantity or number of things (7/2/8)

Parimit = limited (5/9/14)

Parinaam = consequence, functioning (5/9/9)

Parinam-vaad = theory of evolutionalism (5/2/16)

Paripirita = a Sitar-like instrument with gourds at both ends (5/4/1)

Parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya = terrestrial five-sensed reptilian animals (8/1/10)

Parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed reptilian animals (8/1/10)

Parishisht Parva (5/1/2)

Paritta = limited (6/3/1)

Paritta dvar (6/3/28)

Paritta jiva = limited in terms of body or cycles of birth (6/3/21, 28)

Paritta jiva-ghan = limited group of souls (5/9/16)

Parivrit = surrounded (5/9/14)

Paroksh jnani = one who perceives indirectly (5/7/44)

Parshva Naath (5/9/-)

Parshvapatya = followers of Bhagavan Parshva Naath (5/9/14)

Parush = hard (5/6/14)

Paryank = bed (5/9/14, 20)

Paryapt = fully developed (5/4/30, 6/3/1)

Paryaptak (6/3/28, 8/1/32, 62)

Paryaptak Asur Kumar Bhavan-vaasi dev prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as fully developed bodies of Asur Kumar abode dwelling gods (8/1/23)

Paryaptak Asur Kumar dev (8/1/30)

Paryaptak baadar prithvikaayık ekendrıya prayoga parınat pudgala = matter transformed as fully developed bodies of gross one-sensed-earth-bodied beings (8/1/32)

Paryaptak baadar vayukaayık ekendrıya prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as fully developed bodies of gross one-sensed-air-bodied beings (8/1/26)

Paryaptak dvar (6/3/28)

Paryaptak dvındrıya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of fully developed two-sensed beings (8/1/19, 33)

Paryaptak garbhaj manushya panchendrıya audarık sharıra kaaya-prayoga parınat = transformed due to conscious activity of gross physical body of fully developed five-sensed human being born out of womb (8/1/64)

Paryaptak garbhavyutkrantık jalachar = fully developed aquatic animals born out of womb (8/1/28)

Paryaptak garbhavyutkrantık manushya = fully developed human beings born out of womb (8/1/29)

Paryaptak garbhavyutkrantık manushya panchendriya prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as bodies of fully developed five-sensed human beings born out of womb (8/1/22)

Paryaptak jıva = fully developed being (6/3/19, 28)

Paryaptak Ratnaprabha prıthvı nairayık panchendrıya prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as bodies of fully developed five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell (8/1/20)

Paryaptak Ratnaprabha prıthvı nairayıks (8/1/27)

Paryaptak sammurchhım jalachar prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as fully developed bodies of aquatic animals of asexual origin (8/1/28)

Paryaptak sammurchhım jalachar tiryanch-yonık panchendrıya prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as bodies of fully developed aquatic five-sensed animals of asexual origin (8/1/21)

Paryaptak Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık (8/1/47)

Paryaptak Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık dev panchendrıya (shrotrendrıya to sparshanendrıya) prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as five sensed (hearing to touching) bodies of Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık divine beings beyond the Kalps (8/1/43)

Paryaptak Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık dev panchendrıya vaikrıya-taıjas-karman sharıra and shrotrendrıya to sparshanendrıya prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as five sensed transmutable-fiery-karmic bodies of Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık divine beings beyond the Kalps with sense organs of hearing to touching (8/1/45)

Paryaptak Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık Kalpateet Vaımanık dev prayoga parınat pudgala = matter consciously transformed as fully developed bodies of Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/25)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatık Kalpateet Vaımanık dev panchendrıya vaikrıya sharira kaaya prayoga parınat = consciously transformed due to conscious activity of transmutable body of fully developed five-sensed Sarvarthasıddha Anuttaraupapatık Kalpateet celestial-

vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/67)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya vaikriya-mishra sharira kaaya prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body of fully developed five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/68)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya prayoga parinat = transformed due to conscious activity of karmic body of fully developed five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/71)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya karman sharira kaaya mishra parinat = transformed due to joint activity of karmic body of fully developed five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/73)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet dev panchendriya vaikriya-taijas-karman sharira prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as five sensed transmutable-fiery-karmic bodies of Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik divine beings beyond the Kalps (8/1/37)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet dev panchendriya prayoga parinat pudgala = consciously transformed as five sensed bodies of Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik divine beings beyond the Kalps (8/1/39)

Paryaptak Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet dev panchendriya vaikriya, taijas and karman sharira prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as five sensed transmutable, fiery and karmic bodies of Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik divine beings beyond the Kalps (8/1/41)

Paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as fully developed gross physical, fiery and karmic bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (8/1/36, 40)

Paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya audarik-taijas-karman sharira sparshanendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as fully developed gross physical, fiery and karmic bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings with sense organ of touch (8/1/44)

Paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as fully developed bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (8/1/17, 26, 32, 38)

Paryaptak sukshma prithvikaayik ekendriya sparshanendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as fully developed sense organ of touch of bodies of minute one-sensed-earth-bodied beings (8/1/42)

Paryaptak sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of fully developed minute earth-bodied one-sensed being (8/1/59)

Paryapti = full development (6/4/20)

Paryapti dvar = door of full development (6/4/19)

Paryaya = mode or state (6/4/6, 7/2/36)

Paryayarthik naya = modal stand point (7/3/23), transformational aspect (7/2/38)

Patah = a large drum (5/4/1)

Patanjali's Yoga Sutra (5/3/1)

Pathyavaat = wind healthy for vegetation (5/2/2, 3, 5, 9)

Patra = feathers (5/6/11), leaf (7/3/4)

Pattan = harbours (7/6/31)

Paush (7/3/1)

Paushadhopavas = partial ascetic vow and fasting (7/2/8, 7/6/35, 37)

Pavas ritu (7/3/1)

Phal = blade or tip (5/6/11), fruit (7/3/4)

Phal-jivas = living organism of fruit (7/3/4)

Phalgun (7/3/1)

Pindaharidra = turmeric (7/3/5)

Pishaach (8/1/24, 31)

Pishaach devs (8/1/14)

Pota = large drum (5/4/1)

Potaj = birth as fully formed infants (7/5/2)

Praadveshiki = activity of harbouring aversion (5/6/10)

Praan = one inhalation and one exhalation (6/7/4)

Praan = two to four sensed beings, beings (5/5/2)

Praanatipaat = killing (5/9/16)

Prabhankar (6/5/32)

Prabhu = capable (7/7/25)

Prachala nidra = sleeping while standing (5/4/10, 11, 12)

Pradesh = ultimate particle of matter (5/7/8)

Pradesh dvar = port of sections (6/4/1)

Pradesh-naam-karma (6/8/34)

Pradesh-naam-nidhatt-ayu = space-point programmed life-span (6/8/27)

Pragadh = deep (5/6/14)

Pragbhar = leaning mountain, mountain with an overhang (5/7/34)

Prajnana = specific awareness (5/9/10, 12)

Prajnapana Sutra (6/2/1, 6/9/1, 7/2/28, 8/1/48, 67, 69, 71)

Prajnapana Vritti (5/4/36)

Prajnapayanti = elaborate (5/3/1)

Prakamarasabhoji = one who eats very sweet and rich food (7/1/19)

Prakampan = quiver (5/7/1)

Prakar = parapet wall (5/7/34)

Prakrit (5/4/24)

Prakshep ahaar = intake of morsel (7/1/4)

Pramaan = validation (5/4/26), size (7/1/20)

Pramaan-prapt = eating standard quantity (7/1/19)

Pramanatikrant = transgression related to quantity (7/1/19)

Pranat dev-lok (5/8/19)

Pranatipat = killing of beings (7/6/16, 20, 7/10/16, 18)

Pranatipatiki kriya = activity of killing a living being (5/6/10, 12)

Prapa = water-hut (5/7/34)

Prapt = possessed with some special power (5/4/36)

Prarupayanti = propagate (5/3/1, 5/5/2, 5/6/13, 6/10/1, 11)

Prasad = palace (5/7/34)

Prastritodak = level water (6/8/35)

Prasuk = prescribed food (8/-/-, 1/1), pure (7/1/17, 20)

Pratar-bhed = breaking into layers (5/4/36)

Pratihat = destroys (7/2/1)

Pratikraman = critical review (5/6/15, 16, 17, 18, 5/9/15, 16, 7/9/20)

Pratimas = special codes and resolutions (6/1/13)

Pratishthaan = situation (6/5/41)

Prativasudevs (5/5/5)

Pratyakhyan = renunciation of sinful activities (6/4/21-25, 7/2/1, 2), rules of renouncing (7/6/35, 37)

Pratyakhyan-apratyakhyan = renunciation - non-renunciation of sinful activities (6/4/21-24)

Pratyakhyani = renouncers (6/4/21, 7/2/29, 33)

Pratyakhyani-apratyakhyani = renouncer-non-unrenouncers or partial renouncers (6/4/21, 7/2/29)

Pratyaksh = direct experience or perceptual cognition (5/4/26)

Pratyaksh jnani = one who perceives directly (5/7/44)

Pratyaneek = adversaries (8/-/-, 1/1)

Pratyek Sharin = individual life forms (5/9/16)

Pravachan-mata (7/8/1)

Praval = sprout (7/3/4)

Praveshanak (8/1/90)

Prayoga = application (6/3/4, 5, 8/1/54)

Prayoga parinat = consciously transformed (8/1/3, 49, 50, 73, 80, 81, 84-91)

Prayoga parinat pudgala = consciously transformed matter (8/1/4, 31)

Prayuta (5/1/19, 21, 6/7/5)

Prayutanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Prithvi = hell (6/1/1, 3, 6/6/1), land (5/9/2), world (6/8/1)

Prithvikaaya = earth-bodied beings (5/7/30)

Prithvikaayik = earth-bodied (6/5/43, 7/4/2)

Prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of earth-bodied one-sensed being (8/1/57, 58)

Prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of one-sensed earth-bodied beings (8/1/5, 6)

Prithvikaayik jivas (6/4/5, 7/7/16)

Pudgala = particle of matter (5/8/3)

Pudgala-bhed (5/4/36)

Pudgalastikaaya = matter entity (7/10/3, 6, 8-10)

Pundarik = a type of lotus (6/8/36)

Puran (7/9/19)

Puran = integration (8/1/3)

Purnabhadra (5/1/2)

Purush-vedak jivas = beings with male gender (6/3/29)

Purush-vedi = male (6/3/18)

Purushadaniya = most respected among men (5/9/14)

Purushakar = intent to act (7/7/20)

Purva = 8 4 million Purvangas (5/1/19, 21, 6/7/5)

Purva prayogata = prior endeavour (7/1/12, 13)

Purva-koti (6/3/11)

Purvanga = 8 4 million Varsh (5/1/19, 21, 6/7/5)

Pushkar-samvartak (5/7/7)

Pushkarardh (5/1/27)

Pushkarini = lake or pond with lotuses (5/7/34)

Pushp = flower (7/3/4)

(R)

Raal = a seed (6/7/3)

Rachitak = made into balls or re-cooked specifically for an ascetic (5/6/15)

Raipaseniya (7/8/2)

Raj-pind = food from the royal kitchen (5/6/15, 16, 17, 18)

Rajagriha (5/1/1)

Rajaprashniya (7/8/2)

Rajju = a very large linear measure (7/1/5)

Rajoharan = ascetic-broom (5/4/17)

Ranasingha = war-horn (5/4/1)

Rasa = taste (7/7/11, 12)

Rasa parinat = transformed as attributes of taste (8/1/48)

Rath = chariot (5/7/34, 7/9/16)

Rath-musal (7/9/10)

Ratharenu = 8 Trasarenus (6/7/7)

Ratnaprabha Prithvi = the first hell (5/3/5)

Ratnaprabha prithvi nairayik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed infernal beings of Ratnaprabha hell (8/1/9, 20)

Ratni = cubit (7/6/33)

Ravi = the sun (5/1/1)

Riddhiprapt pramatt-samyat samyagdrishti paryaptak sankhyeyavarshayushk manushya ahaarak sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of telemigratory body of an accomplished (having power of telemigration) negligent-disciplined righteous fully developed human being having countable years life-span (8/1/69)

Riju gati = straight movement (5/3/5, 7/1/4)

Risht (6/5/18, 36, 40)

Risht Devs (6/5/39)

Risht Vimaan (6/5/34, 39)

Risht Vimaan kalp (6/5/2)

Rishtaabh Vimaan (6/5/32, 35)

Ritu = two months, season (5/1/16, 21, 6/7/5)

Rohini (7/3/5)

Ruksha = coarse (5/7/17)

Rupa = appearance or form (7/7/6, 12, 19)

Rupi = with form (7/10/3, 6, 8)

(S)

Sa-ardh = with halves (5/7/9, 10, 5/8/3, 4, 5)

Sa-eja = in the state of vibration (5/7/15)

Sa-madhya = with a middle (5/7/9, 10, 5/8/3, 4, 5)

Sa-pradesh = with sections (5/7/9, 10, 5/8/3, 4, 5, 7, 8, 9)

Saadhaaran kaaya jiva (6/3/28)

Saadi = with a beginning (6/3/1)

Saakaar upayoga = cognitive involvement, jnana (6/3/25, 28, 6/4/16)

Saamparayik = caused by passions (6/3/7)

Saamudaniya (Samudaaniyassa) = collected from various houses (7/1/20)

Saamudayik = collected from various houses (7/1/20)

Saarasvat Devs (6/5/36, 37, 40)

Saasvadan samyaktva = taste of righteousness (6/4/14)

Saata = happiness (6/10/11)

Saata vedana = experienc of pleasure (7/6/8)

Sabha = assembly hall (5/7/34)

Sachitt = infested with living organisms (6/2/1), with life (7/7/3, 8)

Sada-satat = always and continuously (6/3/2, 3)

Sadharan Shariri = clustered life forms (5/9/16)

Sagaar (7/2/7)

Sagaar-pratyakhyan = austerities done with some predetermined relaxations (7/2/8)

Sagaropam = a metaphoric unit of time (5/1/19, 21, 6/3/11), ten Kotakoti Palyopams (6/7/6, 7)

Sahasrar dev-lok (5/8/19)

Sakamp = vibrating (5/7/24)

Sakashaayi jivas = beings with passions (6/4/13, 17)

Sam-chaturasra samsthan = perfect body constitution (6/5/43)

Samaarambh satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful tormenting conscious activity of mind (8/1/52, 83)

Samadhi = equanimous serenity (7/1/9)

Samaarambh = harm or destroy (5/7/30, 31, 8/1/54)

Samavayanga (5/5/5)

Samaya = the smallest indivisible unit of time, something even beyond nanosecond (5/1/14)

Samaya kshetra = area of time (5/9/13)

Samayik = a formal Jain meditational practice (7/1/6, 7/2/8)

Samayik Chaaritra = equanimous conduct (6/3/18)

Samayopayogi = continuous transition of involvement (6/4/16)

Sambhinna-lokanaadi = slightly less then the central spine of the lok (5/4/33)

Samdani (5/1/2)

Samlaap = discussing (5/4/31)

Samlekhana = ultimate vow (7/2/8)

Sammurchchhim = birth from asexual origin (5/3/5, 7/5/2, 8/1/10, 62)

Sammurchhim chatushpad sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed quadruped animals of asexual origin (8/1/10, 21)

Sammurchhim jalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of aquatic five-sensed animals of asexual origin (8/1/10, 21)

Sammurchhim khechar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of aerial five-sensed animals of asexual origin (8/1/21)

Sammurchhim manushya = human beings of asexual origin (5/8/19)

Sammurchhim manushya panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed human being of asexual origin (8/1/63)

Sammurchhim manushya panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed human beings of asexual origin (8/1/11, 22, 29)

Sammurchhim panchendriya tiryagyonik jivas = five-sensed animals of asexual origin (5/8/19)

Samparayik kriya = passion inspired activity (7/1/6, 16, 7/7/1)

Samrambh (8/1/54)

Samrambh satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful conscious activity of mind to resolve to sin (8/1/52,83)

Samsar = cycles of rebirth (6/3/9)

Samsar mandal = the world (5/5/4)

Samsar-samapannak jivas = worldly living beings (7/4/2)

Samsthaan = structure (7/1/5)

Samsthan parinat = transformed as attributes of constitution (8/1/48)

Samsthiti kaal = period of existence (5/7/26)

Samudghat = bursting forth (7/5/2)

Samudghat-prapt Kevali = omniscient undergoing the special process of expanding and contracting sections of soul (6/3/28)

Samutthit = begin (6/5/2)

Samvahat = capable of application (6/9/13)

Samvahat-asamvahat = capable and incapable of application (6/9/13)

Samvartak vaat = whirlwinds (7/6/31)

Samvatsar = year, two Ayans (5/1/19, 21, 6/7/5)

Samvrit = blocks the inflow of karmas (7/2/1)

Samvrit Anagaar = an ascetic who has blocked the inflow of karmas (7/7/1)

Samyag-mithyadrishti jivas = righteous-unrighteous beings (6/4/11)

Samyagdarshan = right perception (7/1/10)

Samyagdrishti = righteous (5/7/44, 6/3/1, 15, 18)

Samyagdrishti jivas = righteous beings (6/4/11)

Samyak-jnana = right knowledge (5/4/30)

Samyak-mithyadrishti = the righteous-unrighteous (6/3/15)

Samyaktvakriya = righteous activity (7/4/2)

Samyam = ascetic-discipline (5/5/1, 7/8/1)

Samyat = restrained (5/4/20, 6/3/1, 14, 29, 6/4/20, 7/2/1, 28)

Samyat dvar = port of the restrained (6/4/12)

Samyat jiva = restrained being (6/3/18, 6/4/12)

Samyat-asamyat = restrained-unrestrained or partially restrained (5/4/22, 6/3/14, 18, 6/4/12, 7/2/28)

Samyat-asamyat jivas = restrained-unrestrained beings (6/4/12)

Samyojana (7/1/20)

Samyojana dosh (7/1/17, 18, 20)

Sanatkumar dev (5/8/19)

Sanatkumar kalp = a divine dimension or the third heaven (6/5/2, 18, 6/8/26)

Sanjna = inclinations (7/8/5)

Sanjni = sentient (6/3/1, 16, 6/4/9, 20)

Sanjni dvar = port of the sentient (6/4/9)

Sanjni jivas = sentient beings (6/4/9, 19, 7/7/28)

Sanket (7/2/7)

Sanket-pratyakhyan = abstainment done with specific signs or indications (7/2/8)

Sankhya (6/10/11)

Sannivesh = temporary settlement (6/5/4, 22, 6/8/4, 21)

Sanskrit (5/4/24)

Sapachaya = with de-augmentation (5/8/21, 23, 25, 27)

Sapradesh = with sections (6/1/1, 6/4/1))

Sapradesh dvar (6/4/6)

Sapradeshi = sectional (6/4/-)

Saptahik Hindustan = a Hindi weekly (6/5/16)

Sar-pankti = row of lakes (5/7/34)

Sar-sar-pankti = row of lakes connected with canals (5/7/34)

Saraag = with attachment (6/3/28)

Saraag ahaarak jiva (6/3/28)

Saraag baadar jivas = gross beings with attachment (6/3/28)

Saraag bhashak (6/3/28)

Saraag Bhavasiddhik = destined to be liberated but having attachment (6/3/18)

Saraag paritta (6/3/28)

Saraag Samyagdrishti = righteous with attachment (6/3/18)

Saran = thatched hut (5/7/34)

Sarason = mustard (6/7/3)

Sarovar = natural lake (5/7/34)

Sarva = whole (5/7/13)

Sarva Adattadan viraman = to abstain completely from taking without being given, to abstain completely from acts of stealing (7/2/4)

Sarva Maithun viraman = to abstain completely from indulgence in sexual activities (7/2/4)

Sarva Mrishavad viraman = to abstain completely from falsity (7/2/4)

Sarva Parigraha viraman = to abstain completely from acts of possession of things (7/2/4)

Sarva Pranatipat viraman = to abstain completely from harming or destroying life (7/2/4)

Sarva-mool-guna pratyakhyan = complete basic-virtue enhancing renunciation (7/2/3, 4, 8)

Sarva-mool-guna-pratyakhyani = complete basic virtue enhancing renouncer (7/2/17, 23)

Sarva-uttar-guna pratyakhyan = complete auxiliary-virtue enhancing renunciation (7/2/6-8)

Sarva-uttar-guna-pratyakhyani = complete auxiliary-virtue enhancing renouncers (7/2/24, 27)

Sarvabhaava = all modes (5/4/4)

Sarvaddha = all time (5/8/14)

Sarvakaal = all periods (5/4/4)

Sarvalpahaarata (7/1/4)

Sarvalpahaari = with minute food intake (7/1/4)

Sarvarth Siddha dev-lok (5/8/19)

Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik (8/1/31)

Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/25)

Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Vaimanik dev (8/1/83)

Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/16)

Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik Vaimanik dev prayoga parinat pudgala = consciously transformed as bodies of Sarvarthasiddha Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/35)

Sarvarthasiddha Vimaan (6/6/2)

Sarvatah = from all angles (5/4/4), every way (6/3/2, 3)

Sasharira jivas = beings with a body (6/4/18)

Sasvadan samyagdrishti jiva = one who had a fleeting taste of righteousness (6/4/11)

Sata vedaniya karmas = karmas causing pleasant experience (6/3/28, 7/6/23, 29)

Satina = Arahar, a type of pulse, Cajamus Indicus (6/7/2)

Satirek = slightly more than Muhurt (5/1/9)

Sattva = immobile beings, entities (5/5/2, 5/6/10, 12, 6/5/16, 31, 41, 6/10/11, 7/2/1, 7/6/24)

Satya manah-prayoga parinat = transformed due to truthful activity of mind (8/1/51-53, 8/1/82, 83, 85, 88)

Satya vachan-prayoga parinat = transformed due to truthful conscious activity of speech (8/1/54)

Satya-mrisha manah-prayoga parinat = transformed due to truthful-untruthful conscious activity of mind (8/1/51, 53, 54, 73, 82, 85)

Satyankaar = advance (5/6/6)

Saudharma dev (5/8/19)

Saudharma kalp (6/5/2, 6/8/26)

Saudharma Kalpopapannak = belonging to the Saudharma Kalp (8/1/16, 31)

Saudharma Kalpopapannak dev (8/1/24)

Savedak jivas = genderic beings (6/4/17)

Sayogi = with association (6/3/28)

Sayogi jivas = beings with association (6/4/15)

Sayogi Kevali = omniscient with association or action (6/3/7, 16, 28), an omniscient with non-vitiating karmas (7/1/6)

Sayogikevali Gunasthan (6/3/28)

Sechanak (7/9/10)

Shaali = paddy (6/1/1)

Shaashvat = eternal (7/2/36, 37, 7/3/23)

Shabd = sound (5/1/1, 5/7/20, 7/7/6, 12)

Shail = flat-top mountain (5/7/34, 5/9/2)

Shail-paalak (7/10/2)

Shaileshi = mountain-like (5/4/28)

Shaileshi avastha = rock-like steady state (6/1/13)

Shailodayi (7/10/2)

Shaivalodayi (7/10/2)

Shakat = bullock-cart (5/7/34)

Shakha = branch (7/3/4)

Shakrendra = the king of gods (7/9/10)

Shali = fine paddy (6/7/1, 2)

Shankarpur (5/1/2)

Shankh = conch-shell (5/4/1)

Shankh-paalak (7/10/2)

Shankhika = small conch-shell (5/4/1)

Snar = rod (5/6/11)

Sharad = autumn (5/1/21)

Sharad ritu (7/3/1)

Sharira = body (5/7/36)

Sharira dvar = port of the body (6/4/18)

Sharira paryapti = fully developed state of the body (6/4/19, 8/1/71)

Sharira-aparyapti (6/4/19)

Sharkaraprabha (6/6/1, 6/8/1, 11)

Sharkaraprabha prithvi (5/8/15)

Shastra-parinat = mechanically transformed (5/2/13)

Shastraparinanamit = made life-less (7/1/20)

Shastrateet = processed with implements (5/2/13), cooked in fire (7/1/20)

Shaurseni (5/4/24)

Shayan = bed (5/7/34)

Shayyambhav Suri (5/1/2)

Shayyatar-pind = food offered by the person who has provided place of stay (5/6/15)

Sheel-vrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (7/6/35, 37)

Sheershaprahelika = 8 4 million Sheershaprahelikanga, a number having 194 digits (5/1/19, 21, 6/7/5)

Sheershaprahelikanga = 8 4 million Chulika (5/1/19, 21)

Shikhari = mountain with a peak (5/7/34)

Shikshavrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (7/6/35, 37, 7/2/8)

Shishir = winter (5/1/21)

Shithilikrit = loosely adhered (6/1/4)

Shivika = covered palanquin (5/7/34)

Shlakshn-shlakshnika = 8 Uchchhlakshn-shlakshnikas (6/7/7)

Shlisht = assimilated (6/1/4)

Shlisht-krit = assimilated (6/1/4)

Shraman (5/2/17)

Shraman nirgranths = ascetics (6/1/3, 7/9/20)

Shramani (5/2/17)

Shramanopasak = devotee of shramans (7/1/6-8, 10, 7/9/20)

Shravak = male disciple of omniscient (5/2/17, 7/2/8)

Shravan (7/3/1)

Shravika = female disciple of omniscient (5/2/17)

Shreni = matrix (6/5/2)

Shrenik (5/1/2)

Shreya kaal = future (5/4/35)

Shringaber = ginger (7/3/5)

Shringatak = a triangular marketplace (5/7/34)

Shrivatsa (6/8/36)

Shrotrendriya = sense organs of hearing (7/7/13, 8/1/35, 37)

Shrotrendriya, chakshurindriya, ghranendriya, jihvendriya evam sparshanendriya prayoga parinat = consciously transformed as sense organs of hearing, seeing, smelling, taste and touch (8/1/34)

Shrut ajnana = lack of scriptural knowledge (6/4/14)

Shrut ajnani = one not endowed with scriptural knowledge (6/3/23)

Shrut jnana = scriptural knowledge (6/4/14)

Shrut jnani = one endowed with scriptural knowledge (6/3/22)

Shubh = auspicious or bright (5/9/3, 5, 7)

Shukla leshya = white complexion of soul (6/4/10, 7/3/9)

Shukraabh (6/5/32)

Shushir = wind instruments (5/4/1)

Shvasochhavas-aparyapti (6/4/19)

Shvasochhavas-paryapti (6/4/19)

Siddha = perfected (5/5/1)

Siddha gati = state of ultimate perfection (7/9/20)

Siddha Keval-darshani = a liberated omniscient (6/3/18)

Sihandi = a type of cactus (7/3/5)

Simhakarni = Adusa, Adhatoda vasica (7/3/5)

Sirili = Cheed, Pinus roxburghii Sargent (7/3/5)

Sissirili (7/3/5)

Skandak (5/2/12, 7/9/20, 7/10/12)

Skandh = an aggregate (5/7/21), thick branch (7/3/4)

Sopachaya = with augmentation (5/8/21, 23, 25, 27, 28)

Sopachaya-sapachaya = with augmentation and de-augmentation (5/8/21, 23, 25, 27)

Spandan = pulsate (5/7/1)

Sparsh = touch (7/7/11, 12)

Sparsh parinat = transformed as attributes of touch (8/1/48)

Sparshanendriya = sense organs of touch (7/7/13)

Sparshanendriya prayoga parinat = consciously transformed as sense organ of touch (8/1/32, 35, 36, 37)

Sprisht = touched (7/1/15)

Stanit Kumar (5/9/5)

Stanit Kumar Bhavan-vaasi dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed Stanit Kumar abode dwelling gods (8/1/23)

Stanit Kumar dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed Stanit Kumar devs (8/1/13, 30)

Sthalachar tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed terrestrial animal (8/1/62)

Sthalachar tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of terrestrial five-sensed animals (8/1/10)

Sthananga Sutra (5/7/36)

Sthapit = food kept apart for the ascetic (5/6/15)

Sthavar = immobile beings (7/1/1)

Sthavir = senior ascetic (5/4/17)

Sthiti = life-span (7/5/2)

Sthiti-kshaya = conclding the realm-specific state (7/9/22)

Sthiti-naam-karma (6/8/34)

Sthiti-naam-nidhatt-ayu = duration programmed life-span (6/8/27)

Sthula Parigraha viraman = to abstain grossly or partially from acts of possession of things (7/2/5)

Sthula Pranatipat viraman = to abstain grossly or partially from harming or destroying life (7/2/5)

Stoka = seven Aan-pran (5/1/16, 21, 6/7/4)

Streevedak jivas = beings with female gender (6/3/29)

Streevedi = female (6/3/18)

Stupa = a memorial pillar or mound (5/7/34)

Subhadra (5/1/2)

Suhasti (7/10/2)

Sukham-dukhama Ara = epoch of more happiness than sorrow (6/7/8)

Sukham-sukhama Ara = epoch of extreme happiness (6/7/8, 9)

Sukhama Ara = epoch of happiness (6/7/8)

Sukshma = minute (5/7/18, 26, 6/3/1, 8/1/32)

Sukshma Addha Palyopam (6/7/8)

Sukshma dvar (6/3/28)

Sukshma jiva = minute being (6/3/27, 28)

Sukshma Kshetra Palyopam (6/7/8)

Sukshma prithvikaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of minute one-sensed earth-bodied beings (8/1/6, 17)

Sukshma Samparaya = 10th level of purity (6/3/18)

Sukshma samparaya Chaaritra = discipline with residual subtle passions (6/3/18)

Sukshma Samparaya Gunasthan (6/9/1)

Sukshma Uddhar Palyopam (6/7/8, 6/8/36)

Sukshma-prithvikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of minute earth-bodied one-sensed being (8/1/58, 59)

Sunei = hear (5/4/4)

Supratishtaabh (6/5/32)

Supratishthit = an earthen pot of the shape of a wine glass (7/1/5)

Sura = wine (5/2/13)

Suran-kand (7/3/5)

Suryaabh (6/5/32)

Sutra = scriptures (5/4/28), Agam (7/1/16)

Svadya = savoury food (5/6/1, 2, 3, 4, 7/1/9, 17)

Svayambhuraman (6/8/35)

Swastika (6/8/36)

Syandamanika = a palanquin as long as a man (5/7/34)

(T)

Taara (8/1/24, 31)

Tadag = pond (5/7/34)

Taijas = fiery (8/1/26-29, 31)

Taijas sharira = fiery body (6/4/18)

Tam (6/5/14)

Tamah-prabha prithvi (5/8/15, 6/6/1, 6/8/1)

Tamaskaaya = body of darkness or agglomerative entity of water-derived darkness (6/1/1, 6/5/1-16, 28, 43, 6/8/26).

Tamstamah-prabha prithvi (5/8/15, 6/6/1)

Tara Vimaan Jyotishk devs = stellar gods of star celestial vehicle (8/1/15)

Tat = stringed instruments (5/4/1)

Tatharupa = conforming to the description in Agams (5/6/1, 2, 3, 4, 7/1/9, 10)

Tatragat = existing there (6/9/7, 7/9/4)

Tattvarth Rajavartika (7/1/13)

Tattvarth Sutra (7/6/29)

Tejas-kaaya (6/5/10, 7/10/19)

Tejaskayik = fire-bodied (7/4/2)

Tejo = fiery (7/3/8)

Tejoleshya = fiery complexion of soul (6/4/10), fire-power (7/3/9, 7/10/21)

Thilli = a coach driven by two horses (5/7/34)

Thiruga (7/3/5)

Til = sesame seed (6/7/2)

Tiryak Lok = transverse world (7/1/5)

Tiryanch panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed animals (8/1/8)

Tiryanch yoni = animal world (5/3/5)

Tiryanch-yonik panchendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of five-sensed animal (8/1/60, 62)

Tiryanch-yonik panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed animals (8/1/10)

Tivra = violent (5/6/14)

Tras jiva = mobile beings (5/2/15)

Tras-kaaya = mobile beings (5/7/30, 31, 7/10/19)

Tras-naadi = the central spine of the Lok or occupied space where living beings exist (7/1/4)

Trasarenu = 8 Urdhvarenus (6/7/7)

Traskaayik = mobile-bodied (7/4/2)

Trik = meeting point of three roads (5/7/34)

Trinahastak = bundle of hay (6/1/4, 14)

Trindriya (5/8/18)

Trindriya jivas (7/7/17)

Trindriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of three-sensed beings (8/1/4, 7)

Trishala Devi (5/4/16)

Trutit = 8 4 million Trutitanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Trutitanga = 8 4 million Purvas (5/1/21, 6/7/5)

Tushit (6/5/36, 40)

(U)

Uchchhavaas = countable Avalikas, time taken for one inhalation (6/7/4)

Uchchhavaas-Nihshvaas = slightly more than 17 Kshullak-bhava-grahan or 4446-2458/3773 Avalika (6/7/5)

Uchchhlakshn-shlakshnika (6/7/7)

Uchchhritodak = surging water (6/8/35)

Udad = a pulse, Phaseolus mungo (6/7/2, 6/10/1, 7/1/13)

Udaya (7/10/2)

Uddalak (6/7/9)

Uddhar Palyopam (6/7/8)

Udgam = origin (7/1/20)

Udirana = fructify or precipitate (5/2/11, 7/1/15)

Udirna moha = fruited attachment (5/4/33)

Udyan = public parks with a variety of flowering plants and fruit trees (5/7/34)

Udyot = light (5/9/3, 4, 5, 7)

Ujjhar = waterfall (5/7/34)

Ujjval = searing (5/6/14)

Umasvati (6/1/4, (7/6/29)

Unodaarika = eating less than the standard quantity (7/1/19)

Upaasak = male lay worshipper of omniscient (5/4/26)

Upaasika = female lay worshipper of omniscient (5/4/26)

Upabhoga-paribhoga-parimaan = limiting of means of subsistence and comforts (7/2/8)

Upachaya = acquisition (6/3/4-7), augment (6/3/2, 7/8/9)

Upadhi = living and non-living things (5/7/36)

Upadhyaya (5/6/19)

Upamaan = analogical knowledge (5/4/26)

Upapaat = instantaneous birth (6/4/6), genesis (7/5/2)

Uparitan-uparitan = highest of the higher (8/1/16)

Uparitan-uparitan Graiveyak Kalpateet Vaimanik dev (8/1/24, 31)

Upasham shreni = the path of pacification (6/4/13)

Upashant moha = pacified fondness (5/4/33, 6/3/12, 18), 11th level of purity (6/3/18), pacified deluding karma (6/3/7)

Upashraya = place of stay for ascetics (7/1/6)

Upayoga = involvement (6/3/1, 6/4/20), application (6/9/13), careful application of knowledge (7/1/16), cognition (7/5/2)

Upayoga dvar = door of involvement (6/3/28, 6/4/16)

Upayogarahit = without a tendency to use knowledge (5/4/30), devoid of application (6/9/13)

Upayogayukta = with a tendency to use knowledge (5/4/30)

Ur-parisarp (8/1/28)

Ur-parisarp sthalachar tiryanch-yonik panchendriya = terrestrial five-sensed non-limbed reptilian animals (8/1/10)

Urdhvalok = upper world (7/1/5)

Urdhvamridang = upturned drum (5/9/14)

Urdhvarenu = 8 Shlakshn-shlakshnikas (6/7/7)

Ushna-yoni = heat-thriving (7/3/2)

Utkarika-bhed = breaking or disintegrating of matter, natural disintegration (5/4/36)

Utpaadan = production (7/1/20)

Utpal = a type of lotus (6/8/36)

Utpala (5/1/19, 21, 6/7/5)

Utpalanga (5/1/19, 21, 6/7/5)

Utsarpini = progressive cycle of time (5/1/21, 22, 25, 27)

Utsarpini kaal = progressive cycle of time (6/7/8)

Utsarpini-Avasarpini kaal-chakra = progressive and regressive time cycle (5/-/-)

Utsutra = acting contrary to Sutra (7/1/16)

Uttar-guna pratyakhyan = auxiliary-virtue enhancing renunciation (7/2/2, 6)

Uttar-guna pratyakhyani = auxiliary-virtue enhancing renouncer (7/2/9, 10, 14)

Uttar-vaikriya sharira = secondary transmuted body (5/2/10, 12)

Utthaan = rise (7/7/20)

Uu = season (5/1/21)

(V)

Vaanavyantar = interstitial (5/9/17)

Vaasupujya Swami (5/1/2)

Vaat-parigha = dark and impassable like a storm (6/5/29, 31)

Vaat-parikshobh = dark and tormenting like a storm (6/5/29, 31)

Vachan = expression (5/4/29, 30)

Vachan prayoga parinat = transformed due to conscious activity of speech (8/1/81, 85, 87, 88, 90)

Vachan yoga = speech activity (8/1/54)

Vachan-karan = speech-instrument (6/1/6, 7)

Vachan-mishra parinat = transformed due to joint activity of speech (8/1/72)

Vachan-prayog = vocal application (6/3/5)

Vachan-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of speech (8/1/50, 54)

Vachan-vargana = karmic particles of vocal category (8/1/54)

Vachan-yogi = one having vocal association (6/3/24, 29, 6/4/15)

Vahni (6/5/36, 40)

Vaijayant (6/6/2)

Vaijayant dev-lok (5/8/19)

Vaikriya = transmutable (6/8/34, 8/1/26, 27, 31)

Vaikriya kaaya yoga = activity of transmutable body (8/1/71)

Vaikriya labdhi bal (8/1/71)

Vaikriya sharira = transmuted body (6/4/18, 8/1/71)

Vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable body (8/1/55, 66, 68)

Vaikriya-mishra kaaya yoga = activity of transmutable-cum-mixed body (8/1/71)

Vaikriya-mishra sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable-cum-mixed body (8/1/55, 68)

Vaimanik = celestial vehicular (5/3/4)

Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed celestial-vehicular divine beings (8/1/12)

Vaimanik Devs = celestial-vehicular gods (5/8/12)

Vairochan (6/5/32)

Vaishaakh (7/3/1)

Vaishali (7/9/10)

Vajji Videhaputra = King Kunik of Vajji or Indra, the wielder of thunder and King Kunik (7/9/5)

Vajra = thunderbolt (5/9/14)

Vajra-kand (7/3/5)

Vakra gati = oblique movement

Van = forest away from town or village (5/7/34)

Van-khand = forest with similar flora (5/7/34)

Van-raji = forest with rows upon rows of trees (5/7/34)

Vanaspati kaayik ekendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of one-sensed plant-bodied beings (8/1/5, 6)

Vanaspati-kaaya (7/10/19, 8/1/32)

Vanaspati-kayik jivas = plant-bodied beings (7/3/1)

Vanaspatikaaya jivas (7/7/16)

Vanaspatikaayik ekendriya audarik sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of gross physical body of plant-bodied one-sensed being (8/1/57)

Vanaspatikaayiks = plant-bodied beings (6/4/5)

Vanaspatikaayik = plant-bodied (7/4/2)

Vanavyantar = interstitial (5/7/36, 6/10/11)

Vanavyantar devs = interstitial gods (5/8/19, 5/9/9, 13, 8/1/14)

Vapi = rectangular reservoir (5/7/34)

Vapreen = estuary or a water body with gullies (5/7/34)

Vardalikabhakt = food prepared and kept for distributing during calamities (5/6/15)

Varna parinat = transformed as attributes of colour (8/1/48)

Varna parinat pudgala (8/1/48)

Varsha = monsoon (5/1/21)

Varsha ritu (7/3/1)

Varshasahasra = millennium (5/1/19, 21, 6/7/5)

Varshashat = century (5/1/19, 21, 6/7/5)

Varshashatsahasra = one hundred Varshasahasra (5/1/19, 21, 6/7/5)

Varun (6/5/36)

Varun Naag-nriptak (7/9/20)

Vasant = spring (5/1/21)

Vasant ritu (7/3/1)

Vasudevs (5/5/5)

Vayavya Kone = north-west (5/1/4, 5/2/4)

Vayu Kumar (5/2/11)

Vayu-kaaya = air-bodied beings (5/2/9-11)

Vayukaayik ekendriya vaikriya sharira kaaya-prayoga parinat = transformed due to conscious activity of transmutable body of one-sensed air-bodied being (8/1/67)

Vayukayik = air-bodied (7/4/2)

Veda = gender (6/4/20)

Veda dvar = door of gender (6/4/17)

Vedamohaniya = experienceable attachment (5/4/33)

Vedan = suffers (7/1/15)

Vedana = pain (6/1/1), suffering or experiencing (7/3/10)

Vedaniya karma = karma responsible for mundane experience of pain and pleasure (6/3/11), sensation producing karma (6/3/16, 18, 20, 26, 28, 7/6/29, 7/8/6)

Vehalla (7/9/10)

Vejan = vibrate unusually (5/7/1)

Vibhang jnana = perverse knowledge (6/4/14, 6/9/13)

Vibhang jnani = one endowed with pervert knowledge (6/3/23)

Vibhatsata = grotesqueness (6/3/2)

Vidyadhar (5/2/17)

Vidyunmegh = thundering clouds (7/6/31)

Vigrahagati Samapanna = those undergoing oblique movement (6/3/28, 6/5/10, 25, 6/8/8, 19)

Vijaya (6/6/2)

Vijaya Anuttaraupapatik Kalpateet (8/1/31)

Vijaya Anuttaraupapatik Kalpateet dev (8/1/24)

Vijaya Anuttaraupapatik Kalpateet Vaimanik dev panchendriya prayoga parinat pudgala = matter consciously transformed as bodies of five-sensed Vijaya Anuttaraupapatik celestial-vehicular divine beings beyond the Kalps (8/1/16)

Vijaya dev-lok (5/8/19)

Vikalendriya jivas = two to four-sensed beings (6/1/5, 6)

Vikalendriyas = two to four sensed beings (6/4/9, 11, 14)

Vikurvana = self-mutation (6/9/2, 3, 12, 7/9/1, 2)

Vimaan = celestial vehicle (6/5/18, 7/5/2)

Viparinamit = transformed (6/1/4)

Vipul = great (5/6/14)

Virah kaal = intervening time (6/4/6), the period when there is neither birth nor death (5/8/27)

Viraman-vrats = five minor vows (7/6/35, 37)

Virat = detached (7/2/1)

Virati = renunciation (7/1/1)

Virya = mental capacity (7/7/20)

Virya-pradhaan = potency-predominated (5/4/35)

Viryantaraya = potency hindering (8/1/54)

Vish-megh = toxic water bearing cloud (7/6/31)

Vishkambh = breadth or spread or area (6/5/4, 19)

Visrasa = naturally (6/3/4)

Visrasa parinat = naturally transformed (8/1/3, 49, 74, 80, 85, 86, 88, 89, 91)

Visrasa parinat pudgala = naturally transformed matter (8/1/48, 85)

Vitaraag = detached (6/3/28)

Vitaraag ahaarak jiva (6/3/28)

Vitaraag baadar jivas = detached gross beings (6/3/28)

Vitaraag bhashak (6/3/28)

Vitaraag Bhavasiddhik = detached ones destined to be liberated (6/3/18)

Vitaraag paritta (6/3/28)

Vitaraag Samyagdrishti = righteous without attachment (6/3/18)

Vitasti = Baint, Bitta, 12 Anguls (6/7/7)

Vitat = percussion instruments (5/4/1)

Vriksh = tree (8/-/-, 1/1)

Vyavahar Addha Palyopam (6/7/8)

Vyavahar Kshetra Palyopam (6/7/8)

Vyavahar Uddhar Palyopam (6/7/8)

Vyavaharik Palyopam (6/7/7)

Vyeshaniya (Vesiyassa) = explored with particular care (7/1/20)

Vyeshit = offered due to ascetic garb (7/1/20)

Vyuchchhinn = destroyed (7/1/16)

Vyuchchhitti naya = transformational aspects (7/3/23)

Vyutkranti kaal = the period when there is neither birth nor death (5/8/27)

(Y)

Yan = vehicle (5/7/34)

Yathabaadar = gross (6/1/4)

Yathakhyat chaaritra = conduct conforming to perfect purity (6/3/18, 7/1/16)

Yathasutra = as prescribed in scriptures (7/7/1)

Yav = barley (6/6/5, 6/7/1)

Yav-yav = special variety of barley, also called jayi (6/7/1)

Yavamadhya = 8 Yukas (6/7/7)

Yoga = association (5/4/35), methods (7/2/1)

Yoga dvar = port of association (6/3/28, 6/4/15)

Yojan = 4 Gau (6/7/7)

Yoni = genus (5/3/5), sprouting capacity (6/7/1)

Yoni samgraha = ways of birth (7/5/2)

Yug = five Samvatsars (5/1/19, 21, 6/7/5)

Yuga = Dhanush, Dand, Nalika, Aksha, Musal, 96 Anguls (6/7/7)

Yugya = palanquin (5/7/34)

Yuka = 8 Liksha (6/7/7)

परिशिष्ट-२

आगमों का अनध्यायकाल

(स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दी सूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमो मे जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रो का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल मे स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियो मे भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायो का उल्लेख करते है। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थो का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या सयुक्त होने के कारण, इनका भी शास्त्रो मे अनध्यायकाल वर्णित किया गया है।

स्थानाग सूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या। इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए है, जिनका सक्षेप मे निम्न प्रकार से वर्णन है–

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१ **उल्कापात–तारापतन**–यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२ **दिग्दाह**–जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पडे कि दिशा मे आग-सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नही करना चाहिए।

३ **गर्जित**–बादलो के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४ **विद्युत्**–बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास मे नही मानना चाहिए। क्योकि वह गर्जन और विद्युत प्राय ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नही माना जाता।

५. **निर्घात**–बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६ **यूपक**–शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनो प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

७ **यक्षादीप्त**–कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोडे-थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अत आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

८. **धूमिका–कृष्ण**–कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघो का गर्भमास होता है। इसमे धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध पडती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

९ **मिहिकाश्वेत**–शीतकाल मे श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१० **रज–उद्‌घात**–वायु के कारण आकाश मे चारो ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११–१३ **हड्डी, माँस और रुधिर**–पचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दे, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते है।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन–रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एव बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमश सात एव आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४ **अशुचि**–मल–मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५ **श्मशान**–श्मशान भूमि के चारो ओर सौ–सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६ **चन्द्रग्रहण**–चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

१७ **सूर्यग्रहण**–सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. **पतन**–किसी बडे मान्य राजा अथवा राष्ट्र–पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह–सस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ न हो, तब तक शनै - शनै स्वाध्याय करना चाहिए।

१९ **राजव्युद्‌ग्रह**–समीपस्थ राजाओ मे परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन–रात्रि स्वाध्याय नही करे।

२० **औदारिक शरीर**–उपाश्रय के भीतर पचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पडा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पडा हो तो स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२१–२८ **चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा**–आषाढ–पूर्णिमा, आश्विन–पूर्णिमा, कार्तिक–पूर्णिमा और चैत्र–पूर्णिमा ये चार महोत्सव है। इन पूर्णिमाओ के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते है। इनमे स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९–३२ **प्रात , साय, मध्याह्न और अर्ध–रात्रि**–प्रात सूर्य उगने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे, सूर्यास्त होने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे, मध्याह्न अर्थात् दोपहर मे एक घडी पहले और एक घडी पीछे एव अर्ध–रात्रि मे भी एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे स्वाध्याय नही करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन–रात्रि मे चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

Appendix-2

INAPPROPRIATE TIME FOR STUDY OF AGAMS

(Quoted from Nandi Sutra edited by Late Acharya Pravar Shri Atmaram ji M.)

Scriptures should be studied only at the appropriate time as prescribed in the *Agams* Study of scriptures at a 'time inappropriate for studies' (*anadhyaya kaal*) is prohibited

Detailed description of *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in *Smritis* (the corpus of *Sanatan Dharmashastra*) like *Manusmriti* Vedic people also mention about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) of the *Vedas* This rule is applicable to other Aryan holy books As Jain *Agams* are sermons of the Omniscient, ensconced by the *devas*, and phonetically composed, discussion about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in the scriptures For example

According to *Sthananga Sutra* there are thirty two slots of time defined as *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)—ten related to sky, ten related to the gross physical body (*audarik sharira*), four relating to *mahapratipada* (the date following a specific full moon night), four relating to the date of the said full moon night, and four relating to *sandhya* (the four junctions of parts of the day, viz morning, noon, evening and midnight) They are briefly described as follows

RELATING TO SKY

1. Ulkapat or Tarapatan—If a falling star or a comet is visible in the sky, scriptures should not be studied for three hours following the incident

2. Digdaha—As long as the sky looks crimson in any direction, as if there was a fire, then study of scriptures should not be done

3. Garjit—For three hours following thunder of clouds such studies are prohibited

4. Vidyut—For three hours following lightening such studies are prohibited

However, the prohibition related to thunder and lightening is not applicable during the four months of monsoon This is because frequent thunder and lightening is an essential attribute of that season Thus this prohibition is relaxed starting from *Ardra* till *Svati Nakshatra* (lunar mansion or 27/28 divisions of the ecliptic on the path of the moon)

5. Nirghat—For six hours following thunder without clouds (demonic or otherwise) such studies are prohibited

6. Yupak—The conjunction of solar and lunar glows at twilight hour on first, second and third days of the bright half of a month (*Shukla Paksha*) is called *Yupak* During these dates such studies are prohibited during the first quarter of the night

7. Yakshadeepti—Some times there is a lightening like intermittent glow visible in the sky This is called *Yakshadeepti* As long as such glow is visible in the sky such studies are prohibited

8. Dhoomika-krishna—The months from *Kartik* to *Maagh* are months of cloud formation During this period smoky fog of suspended water particles is a frequent phenomenon This is called *Dhoomika-krishna* As long as this fog exists such studies are prohibited

9. Mihikashvet—The white mist during winter season is called *Mihikashvet* As long as this exists such studies are prohibited

10. Raj-udghat—High speed wind causes dust storm This is called *Raj-udghat* As long as the sky is filled with dust such studies are prohibited

RELATING TO GROSS PHYSICAL BODY

11-13. Bone, flesh and blood—As long as bone, flesh and blood of five sensed animals are visible and not removed from sight such studies are prohibited According to the commentator (*Vritti*) if such things are lying up to a distance of 60 yards the prohibition is effective

This rule is applicable to human bones, flesh and blood with the amendment that the distance is 100 cubits and the effective period is one day and night The period prohibited for studies is three days in case of a women in menstruation, seven days in case of male-child birth and eight days in case of a female-child birth

14. Ashuchi—As long as excreta is visible and not removed from sight such studies are prohibited

15. Smashan—Up to a distance of hundred yards in any direction from a cremation ground such studies are prohibited

16. Chandra grahan—At the time of lunar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve or sixteen hours

17. Surya grahan—At the time of solar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve or sixteen hours

18. Patan—On the death of a king or some other nationally eminent person such studies are prohibited as long as he is not cremated Even after that, the period of study is kept limited as long as his successor does not take over

19. Raaj-vyudgraha—During a war between neighbouring states such studies are prohibited as long as peace does not prevail Studies should be resumed only 24 hours after peace is established

20. Audarik Sharira—In case a five sensed animal dies or is killed in an *upashraya* (place of stay for ascetics) such studies are prohibited as long as the dead body is not removed This prohibition also applies if a dead body is lying within 100 yards of the place of stay

21-28. Four Mahotsavas and four Mahapratipada—*Ashadh, Ashvin, Kartik* and *Chaitra purnimas* (the full moon days of these four months) are called great festival days The days after these festival days are called *Mahapratipada* On all these days such studies are prohibited

29-32. Sandhya—During the twenty four minutes preceding and following the four junctions of parts of the day, viz morning, noon, evening and midnight such studies are prohibited

Studies of scriptures or other holy books should be done avoiding all these *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)

विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नये ज्ञान युग का शुभारम्भ

(जैन आगम, हिन्दी एव अग्रेजी भावार्थ और विवेचन के साथ। शास्त्र के भावो को उद्घाटित करने वाले बहुरगे चित्रो सहित)

१ **सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र** **मूल्य ५००/-**

भगवान महावीर की अन्तिम वाणी। आदर्श जीवन विज्ञान तथा तत्त्वज्ञान से युक्त मोक्षमार्ग के सम्पूर्ण अगो का सारपूर्ण वर्णन। एक ही सूत्र मे सम्पूर्ण जैन आचार, दर्शन और सिद्धान्तो का समग्र सद्बोध।

२ **सचित्र दशवैकालिक सूत्र** **मूल्य ५००/-**

जैन श्रमण की अहिंसा व यतनायुक्त आचार सहिता। जीवन मे पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त, सयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रगीन चित्रो के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

३ **सचित्र नन्दी सूत्र** **मूल्य ५००/-**

मतिज्ञान-श्रुतज्ञान आदि पाँचो ज्ञानो का विविध उदाहरणो सहित विस्तृत वर्णन।

४ **सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र (भाग १, २)** **मूल्य १,०००/-**

यह शास्त्र जैनदर्शन और तत्वज्ञान को समझने की कुजी है। नय, निक्षेप, प्रमाण, जैसे दार्शनिक विषयो के साथ ही गणित, ज्योतिष, सगीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, प्राचीन लिपि, नाप-तौल आदि सैकडो विषयो का वर्णन है। यह सूत्र गम्भीर भी है और बडा भी है। अत दो भागो मे प्रकाशित किया है।

५ **सचित्र आचाराग सूत्र (भाग १, २)** **मूल्य १,०००/-**

यह ग्यारह अगो मे प्रथम अग है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सम्यक्त्व, सयम, तितिक्षा आदि आधारभूत तत्त्वो का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। भगवान महावीर का जीवन-चरित्र, उनकी छद्मस्थ चर्या का आँखो देखा वर्णन तथा जैन श्रमण का आचार-विचार दूसरे भाग मे है। दोनो भाग विविध ऐतिहासिक व सास्कृतिक चित्रो से युक्त।

६ **सचित्र स्थानाग सूत्र (भाग १, २)** **मूल्य १,२००/-**

यह चौथा अग सूत्र है। अपनी खास सख्या प्रधान शैली मे सकलित यह शास्त्र ज्ञान, विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल, गणित, इतिहास, नीति, आचार, मनोविज्ञान, पुरुष-परीक्षा आदि सैकडो प्रकार के विषयो का ज्ञान देने वाला बहुत ही विशालकाय शास्त्र है। भावार्थ और विवेचन के कारण प्रत्येक पाठक के लिए समझने मे सरल और ज्ञानवर्धक है।

७. **सचित्र ज्ञाताधर्मकथा सूत्र (भाग १, २)** **मूल्य १,०००/-**

भगवान महावीर द्वारा प्रवचनो मे प्रयुक्त धर्मकथाएँ, उद्बोधक, रूपक, दृष्टान्त आदि जिनके माध्यम से तत्त्वज्ञान सहज ही ग्राह्य हो गया है। विविध रोचक रगीन चित्रो से युक्त। दो भागो मे सम्पूर्ण आगम।

८. **सचित्र उपासकदशा एवं अनुत्तरौपपातिकदशा सूत्र** **मूल्य ५००/–**

सप्तम अग उपासकदशा मे भगवान महावीर के प्रमुख १० श्रावको का जीवन–चरित्र तथा उनके श्रावक धर्म का रोचक वर्णन है। नवम अग अनुत्तरौपपातिकदशा मे उत्कृष्ट तप साधना करने वाले ३३ श्रमणो की तप ध्यान–साधना का रोमाचक वर्णन है। भावो को स्पष्ट करने वाले कलात्मक रगीन चित्रो सहित।

९ **सचित्र निरयावलिका एव विपाक सूत्र** **मूल्य ६००/–**

निरयावलिका मे पाँच उपाग है। भगवान महावीर के परम भक्त राजा कूणिक के जन्म आदि का वर्णन तथा वैशाली गणतत्राध्यक्ष चेटक के साथ हुए महाशिलाकटक युद्ध का रोमाचक सचित्र चित्रण तथा भगवान अरिष्टनेमि एव भगवान पार्श्वनाथ के शासन मे दीक्षित अनेक श्रमण–श्रमणियो का चरित्र इनमे है।

विपाक सूत्र मे अशुभ कर्मों के अत्यन्त कटु फल का वर्णन है, जिसे सुनते ही हृदय द्रवित हो जाता है, तथा सुखविपाक मे दान, तप आदि शुभ कर्मों के महान् सुखदायी पुण्य फलो का मुँह बोलता वर्णन है। भावपूर्ण रोचक कलापूर्ण चित्रो के साथ।

१० **सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र** **मूल्य ५००/–**

आठवे अग अन्तकृद्दशा सूत्र मे मोक्षगामी ९० महान् आत्म–साधक श्रमण–श्रमणियो के तपोमय साधना जीवन का प्रेरक वर्णन है। यह सूत्र पर्युषण मे विशेष रूप मे पठनीय है। विविध चित्र व तपो के चित्रो से समझने मे सरल सुबोध है।

११ **सचित्र औपपातिक सूत्र** **मूल्य ६००/–**

यह प्रथम उपाग है। इसमे राजा कूणिक का भगवान महावीर की वन्दनार्थ प्रस्थान, दर्शन–यात्रा तथा भगवान की धर्मदेशना, धर्म प्ररूपणा आदि विषयो का बहुत ही विस्तृत लालित्ययुक्त वर्णन है। इसी मे अम्बड परिव्राजक आदि अनेक परिव्राजको की तप साधना का वर्णन भी है।

१२ **सचित्र रायपसेणिय सूत्र** **मूल्य ५००/–**

यह द्वितीय उपाग है। धर्मद्वेषी प्रदेशी राजा को धर्मबोध देकर परम धार्मिक बनाने वाले महान् ज्ञानी आचार्य केशीकुमार श्रमण के साथ आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म आदि विषयो पर हुई तर्कयुक्त अध्यात्म–चर्चा प्रत्येक जिज्ञासु के लिए पठनीय ज्ञानवर्द्धक है। आत्मा और शरीर की भिन्नता समझाने वाले उदाहरणो के चित्र भी बोधप्रद है।

१३. **सचित्र कल्प सूत्र** **मूल्य ५००/–**

कल्प सूत्र का पठन, पर्युषण मे विशेष रूप मे होता है। इसमे २४ तीर्थंकरो का जीवन–चरित्र है। साथ ही भगवान महावीर का विस्तृत जीवन–चरित्र, श्रमण समाचारी तथा स्थविरावली का वर्णन है। २४ तीर्थंकरो के जीवन से सम्बन्धित सुरम्य चित्रो के कारण सभी के लिए आकर्षक उपयोगी है।

१४. **सचित्र छेद सूत्र (दशा–कल्प–व्यवहार)** **मूल्य ६००/–**

आचार–शुद्धि के लिए जिन आगमो मे विशेष विधान है, उन्हे 'छेद सूत्र' कहा गया है। छेद सूत्रो मे आचार–शुद्धि के सूक्ष्म से सूक्ष्म नियमो का वर्णन है। चार छेद सूत्रो मे दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प तथा

व्यवहार-ये तीन छेद सूत्र सभी श्रमण-श्रमणियो के लिए विशेष पठनीय है। प्रस्तुत भाग मे तीनो छेद सूत्रों का भाष्य आदि के आधार पर विवेचन है। अग्रेजी अनुवाद के साथ १५ रगीन चित्रो सहित प्रकाशित है।

१५. **सचित्र भगवती सूत्र (भाग १, २)** **मूल्य १२००/-**

पचम अग व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र 'भगवती' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। इसमे जीव, द्रव्य, पुद्गल, परमाणु, लोक आदि चारो अनुयोगो से सम्बन्धित हजारो प्रश्नोत्तर है। यह विशाल आगम जैन तत्त्व विद्या का महासागर है। सक्षिप्त और सुबोध अनुवाद व विवेचन के साथ यह आगम लगभग ६ भाग मे पूर्ण होने की सम्भावना है। प्रथम भाग १ से ४ शतक तक तथा १५ रगीन चित्रो सहित प्रकाशित है। द्वितीय भाग मे ५ से ७ शतक सम्पूर्ण तथा ८वे शतक का प्रथम उद्देशक लिया गया है। साथ ही सदा की भाँति भाव पूर्ण १५ रगीन चित्रो से युक्त है।

१६ **सचित्र जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र** **मूल्य ६००/-**

यह छठा उपाग है। इस सूत्र का मुख्य विषय जम्बूद्वीप का विस्तृत वर्णन है। जम्बूद्वीप मे आये मानव क्षेत्र, पर्वत, नदियाँ, महाविदेह क्षेत्र, मेरु पर्वत तथा मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते सूर्य-चन्द्र आदि ग्रह नक्षत्र, अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी आदि के विस्तृत वर्णन के साथ ही चौदह कुलकर, प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव का चरित्र, सम्राट् भरत चक्रवर्ती की षट्खण्ड विजय आदि अनेक विषयो का वर्णन भी इस सूत्र मे आता है। इसमे दिये रगीन चित्र जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति, सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहो की गति समझने मे काफी उपयोगी सिद्ध होगे। भगवान ऋषभदेव के जीवन से जुडे सुन्दर भावपूर्ण रोचक चित्र पाठको को मुँह बोलते प्रतीत होगे। यह सूत्र जैन, भूगोल, खगोल और इतिहास का ज्ञानकोष है।

- ❑ इस प्रकार २१ जिल्दो मे २३ आगम तथा कल्प सूत्र प्रकाशित हो चुके है। प्राकृत अथवा हिन्दी का साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भी अग्रेजी माध्यम से जैनशास्त्रो का भाव, उस समय की आचार-विचार प्रणाली आदि को अच्छी प्रकार से समझ सकते है। अग्रेजी शब्द कोष भी दिया गया है।
- ❑ पुस्तकालयो, ज्ञान-भण्डारो तथा सत-सतियो, स्वाध्यायियो के लिए विशेष रूप से सग्रह करने योग्य आगमो का यह प्रकाशन कुछ समय पश्चात् दुर्लभ हो सकता है।
- ❑ इस आगममाला के पकाशन मे परम श्रद्धेय उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म की अत्यन्त बलवती प्रेरणा रही है। उनके शिष्यरत्न जैन शासन दिवाकर आगमज्ञाता उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म द्वारा सम्पादित है, इनके सह-सम्पादक है प्रसिद्ध विद्वान् श्रीचन्द सुराना। अग्रेजी अनुवादकर्त्ता है श्री सुरेन्द्र बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन।

IN THE HISTORY OF JAIN LITERATURE BEGINNING OF A NEW ERA OF KNOWLEDGE FOR THE FIRST TIME IN THE WORLD

(Jain Agams published with free flowing translation in Hind and English Also included are multicoloured illustrations vividly exemplifying various themes contained in scriptures)

1. **Illustrated Uttaradhyayan Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The last sermon of Bhagavan Mahavir Essence of the ideal way of life and path of liberation based on philosophical knowledge contained in all Angas The pious discourse encapsulating complete Jain conduct, philosophy and principles

2. **Illustrated Dashavaikalik Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The simple rule book of ahimsa and caution based Shraman conduct rendered vividly with the help of multicoloured illustrations Useful at every step in life, even of common man, as a guide book of good behaviour, balanced conduct and norms of etiquette, food and speech

3. **Illustrated Nandi Sutra** **Price Rs. 500/-**

   All enveloping discussion of the five facets of knowledge including Mati-jnana and Shrut-jnana

4. **Illustrated Anuyogadvar Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This scripture is the key to understanding Jain philosophy and metaphysics Besides philosophical topics like Naya, Nikshep and Praman it contains discussion about hundreds of other subjects including mathematics, astrology, music, poetics, ancient scripts and weights and measures The complexity and volume of this could be covered only in two volumes

5. **Illustrated Acharanga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This is the first among the eleven Angas It contains lucid description of ahimsa, samyaktva, samyam, titiksha and other fundamentals propagated by Bhagavan Mahavir Eye-witness-like description of the life of Bhagavan Mahavir and his pre-omniscience praxis as well as details about ascetic conduct and praxis form the second part Both parts contain multi-coloured illustrations on a variety of historical and cultural themes

6. **Illustrated Sthananga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,200/-**

This is the fourth Anga Sutra Compiled in its unique numerical placement style, this scripture is a voluminous work containing information about scriptural knowledge, science, astrology, geography, mathematics, history, ethics, conduct, psychology, judging man and hundreds of other topics The free flowing translation and elaboration make the contents easy to understand and edifying even for common readers

7. **Illustrated Jnata Dharma Katha Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

Famous inspiring and enlightening religious tales, allegories and incidents told by Bhagavan Mahavir presented with attractive colourful illustrations This works makes the abstract philosophical principles easy to understand This is the sixth Anga complete in two volumes

8. **Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupapatik Dasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This book contains the seventh and the ninth Angas The seventh Anga, Upasak Dasha, contains the stories of life of ten prominent Shravak disciples of Bhagavan Mahavir with a special emphasis on their religious conduct The ninth Anga Anuttaraupapatik Dasha contains thrilling description of the lofty austerities and meditation done by thirty three specific ascetics With colourful illustrations

9. **Illustrated Niryavalika and Vipaak Sutra** **Price Rs. 600/-**

Niryavalika has five Upangas that contain the story of the birth of king Kunik, a devout disciple of Bhagavan Mahavir This also contains the thrilling and illustrated description of the famous Mahashilakantak war between Kunik and Chetak, the president of the republic of Vaishali Besides these it also has life-stories of many Shramans and Shramanis of the lineage of Bhagavan Parshva Naath

Vipaak Sutra contains the description of the extremely bitter fruits of ignoble deeds This touching description inspires one towards noble deeds like charity and austerities the fruits of which have been lucidly described in its second section titled Sukha-vipaak The colourful artistic illustrations add to the attraction

10. **Illustrated Antakriddasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This eighth Anga contains the inspiring stories of the spiritual pursuits of ninety great men destined to be liberated This Sutra is specially read during the Paryushan period The illustrations related to austerities are specially informative

11. Illustrated Aupapatik Sutra **Price Rs. 600/-**

This the first Upanga This contains lucid and poetic description of numerous topics including King Kunik's preparations to go to pay homage to Bhagavan Mahavir, Bhagavan's sermon and establishment of the religious order This also contains the description of austerities observed by Ambad and many other Parivrajaks

12. Illustrated Raipaseniya Sutra **Price Rs. 500/-**

This is the third Upanga It provides an interesting and edifying reading of the discussions between Acharya Keshi Kumar Shraman and the anti-religious king Pradeshi on topics like soul, next life, and rebirth This dialogue turned him into a great religionist The illustrations of the examples showing the difference between soul and body are also instructive

13. Illustrated Kalpa Sutra **Price Rs. 500/-**

Kalpa Sutra is widely read and recited during the Paryushan festival It contains stories of life of 24 Tirthankars with more details about Bhagavan Mahavir's life It also contains the disciple lineage of Bhagavan Mahavir and detailed ascetic praxis The illustrations connected with the 24 Tirthankars add to its attraction as well as utility

14. Illustrated Chheda Sutra **Price Rs. 600/-**

The Agams that contain special procedures for purity of conduct are called Chheda Sutra These Sutras enumerate subtle rules for purity of conduct Of the four Chheda Sutras three should be specially read by all ascetics – Dashashrut-skandh, Brihatkalpa and Vyavahar This edition contains these three Chhed Sutras with elaboration based on commentaries (Bhashya) and other works It also includes English translation and 15 multicolour illustrations

15. Illustrated Bhagavati Sutra (Parts 1 and 2) **Price Rs. 1200/-**

Vyakhyaprajnapti, the fifth Anga, is popularly known as Bhagavati It contains thousands of questions and answers on various topics from four Anuyogas, such as soul, entities, matter, ultimate particle and universe This voluminous Agam is an ocean of Jain metaphysics With simple translation and brief elaboration it is expected to be completed in six volumes The first volume contains one to four Shataks and 15 illustrations The second volume contains five to seven Shataks complete

and first Uddeshak of the eighth Shatak As usual 15 colourful illustrations have also been included These will make the complex topics simple and easy to understand This is probably for the first time that an English translation of this Agam is being published

16. Illustrated Jambudveep Prajnapti Sutra Price Rs. 600/-

This is the sixth Upanga The central theme of this Sutra is detailed description of Jambudveep The list of topics discussed in this include inhabited areas of Jambudveep continent, mountains, rivers, Mahavideh area, Meru mountain, the sun, the moon, planets, and constellations moving around the Meru, regressive and progressive cycles of time, people like the fourteen Kulakars, the first Tirthankar Bhagavan Risabhadeva, and incidents like the conquest of the six divisions of the Bharat area The colourful illustrations included in this volume will be helpful in understanding the geographical conditions of Jambudveep as well as the movement of the sun, the moon and planets The readers will find the beautiful multicoloured illustrations of incidents from Bhagavan Risabhadeva's life very lively This Sutra is a compendium of Jain geography, cosmology and history

- Till date 23 Agams (including two parts of Bhagavati) and Kalpa Sutra have been published in 21 books The English translation makes it possible for those with passing knowledge of Prakrit and Hind to understand the content of Jain Agams including the religious practices as prevalent in ancient times Also included in some of these editions are glossaries of Jain terms with their meaning in English
- Due to its demand by libraries, Jnana Bhandars, ascetics and lay readers this unique series may soon go out of print
- The publication of this Agam series has been inspired by Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji M S Its editor is his able disciple Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj His team includes renowned scholar Shri Shrichand Surana as associate editor, Shri Surendra Bothara and Sushravak Shri Raj Kumar Jain, as English translators

